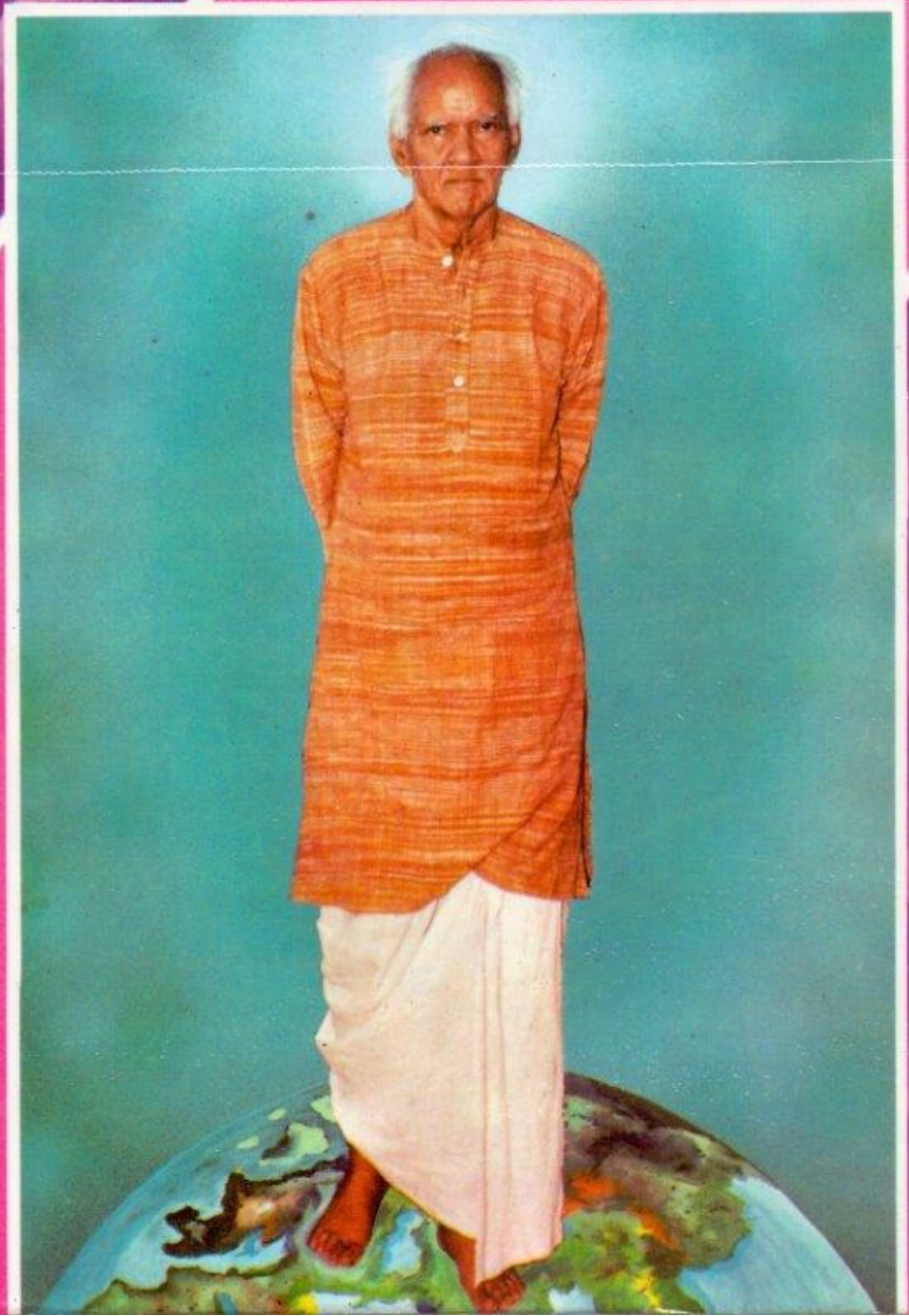
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

मर्यादा पुरुषोत्तम राम



www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

सम्पादक
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❐
प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान
मथुरा - २८१००३

❐
© सर्वाधिकार सुरक्षित

❐
द्वितीय संस्करण १९९८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



❐
मूल्य १२५)

❐
मुद्रक
जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ मातरं भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ।।

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकायुगले वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ।।

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ।।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ।।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है । परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्ज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है । परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी मां शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है । उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया । आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानी गणों के, वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है ।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगे किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देख सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये । इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबा कर लिखा गया हो । हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता मन को, विचारों को बदलता चला जाता है । लाखों करोड़ों के मनों के अंत:स्थल को छू कर उसने उनका कायाकल्प कर दिया । रूसो के प्रजातंत्र की, कार्ल मार्क्स के साम्यवाद की क्रांति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है । उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्बोधन से एक विराट गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े रहते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाय, कैसे छन्दबद्ध, लिपिबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को ।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता । वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता-श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आसपास के दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंत:करण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था । साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा । जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे । छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे । किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुत: अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी । जाति-पाँति का कोई भेद नहीं । जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवाकर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ। नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की, उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किन्तु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय, अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाय, यह सिखाया।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजा स्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में। उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में संपन्न क्रिया कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषि सत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं। चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष के चौबीस महा- पुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था। २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रांति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया। पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि "प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ। दो बातें गुरु सत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गईं, संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो विशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी। वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया। सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा।"

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने तोड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख सुन कर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था। १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद पैदल लम्बा रास्ता पारकर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भी गये । छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई । जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अंग्रेजी सीखकर लौटे । आसन- सोल जेल में वे श्री जवाहर लाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से-मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना । यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश ।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जन आक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रांतिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था । नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं । बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये । जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्य चकित रह गये । उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्त जी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधी जी के समक्ष पेश किये गये । बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए । कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुंज में सम्मानित किया । उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधान मंत्री राहत फण्ड, हरिजन फण्ड के नाम समर्पित कर दीं । वैरागी जीवन का, सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है ?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरु हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये । सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रह कर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया । प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अतः पुनः सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमशः उनके अध्यवसाय घर-घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदय स्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है ।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ, स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे । पुस्तकों का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंतः स्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही । साथ देने आ गयीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी । उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुखी था-पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं । यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रांति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी ।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ । गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परम वंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी । धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपोभूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है । १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है । १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५८ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया । कार्त्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देश भर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं । संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था । तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की अपनी रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं । हिमालय से लौटते ही उनमें महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूल थाती को पुनर्जीवन दिया । परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञान सम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं ।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ । तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तपःपूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था । तपोभूमि में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों, यज्ञायोजनों के द्वारा विचार क्रांति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए । स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों में विशेष कार्य भार सौंप, परम वंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़ कर स्वयं हिमालय चले गये । एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया पद्धति बतायी । ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्त्तन संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये ।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे । इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट् परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक । इसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी बूटी, यज्ञविज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञान सम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युग शिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- सुसंस्कारिता, आस्तिकता संवर्धन एवं जन जागृति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञा संस्थान - शक्तिपीठ-प्रज्ञामण्डल-स्वाध्याय मंडल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तप साधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी को दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नव निर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरु सत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युगसंधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेघ महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नव निर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति के निमित्त सौर ऊर्जा के दोहन द्वारा विशिष्ट प्रयोगों के माध्यम से विशिष्ट मंत्राहुतियों द्वारा सम्पन्न किये गये इन अश्वमेधों ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेध यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेध यज्ञ शिकागो (यू. एस. ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु संपन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी जा रही है। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो सत्तर खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हो रहा है। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जायेंगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़ चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेंगे' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

त्रेता की विषम परिस्थितियों को बदलने के लिये जिस अवतारी सत्ता ने जन्म लिया, उन्हें हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के नाम से जानते हैं । उनकी जीवन कथा हमारे राष्ट्र के घर-घर में गायी जाती है व औसत भारतीय के जीवन के हर पक्ष को वह प्रभावित करती देखी जाती है । महर्षि वाल्मीकि एवं गोस्वामी तुलसीदास जी दोनों ने ही भगवान श्री राम की गाथा को बड़े विस्तार से तत्कालीन परिस्थितियों से लेकर सतयुगी राम राज्य के अवतरण तक "रामायण" एवं "श्रीराम चरितमानस" में क्रमशः वर्णित किया है। अन्य पुराणों-कथाओं में भी उनके बारे में वर्णन पाया जाता है किन्तु श्री राम जैसे विराट व्यक्तित्व के बारे में जिस विस्तार और विवेचना के साथ इन दो ग्रन्थों में लिखा गया है, अन्यत्र कहीं नहीं देखा जाता ।

अवतारों-महापुरुषों-लीला-पुरुषों के जीवन प्रसंग बार-बार इसीलिए पढ़े व दुहराये जाते हैं कि लोग इनसे प्रेरणा लेकर अपने अंतःकरण में भी वैसी ही श्रेष्ठताएँ धारण करें । इस उद्देश्य को सामने रखकर ही श्रीराम के जीवन के हर पक्ष को सुग्राह्य शैली में अवधी भाषा में जिस तरह गोस्वामी तुलसीदास जी ने रखा, वैसा उदाहरण कहीं और नहीं मिलता । अपनी इसी शैली के कारण यह जन-जन के जीवन का एक अंग बन गयी । नित्य पाठ से लेकर रामायण सप्ताह, नवाह्न पारायण एवं अन्यान्य रूपों में इसे आज भी घर-घर दुहराया जाता है। प्रवचन कर्त्ताओं के उपदेशों का मूल आधार ही भारतवर्ष में रामचरितमानस है ।

परमपूज्य गुरुदेव ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन के सभी पक्षों को स्पर्श करते हुए युग निर्माण अभियान के अन्तर्गत विचार क्रांति, नैतिक क्रांति, सामाजिक क्रान्ति की पृष्ठभूमि बनाने के लिए श्री रामचरित्र के माध्यम से लोक-शिक्षण पर अत्यधिक जोर दिया । प्रस्तुत वाङ्मय में श्रीराम के जीवन चरित्र के महत्वपूर्ण पक्षों को गुणों के आधार पर वर्गीकृत कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । कुछ चुनी हुई चौपाईयों से भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की जीवन-गाथा का सार यदि प्रकट हो जाता हो तो वह उद्देश्य पूरा हो जाता है, जिसके लिए इसे लिखा गया था । जन-जन का जीवन आदर्शोन्मुख बने, पारिवारिक जीवन में आदर्श परम्पराएँ चल पड़ें, इसके लिए श्री राम से बड़े लोकनायक और कौन हो सकते हैं, यही विचार कर पूज्यपाद श्री गुरुदेव ने ग्रामीण प्रधान इस भारत की आत्मा में समाए श्रीराम को ही चुना एवं उन प्रसंगों की व्याख्या दी है, जो हमारे दैनन्दिन जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं । प्रत्येक प्रसंग के साथ उनने जीवन में उतारी जाने वाली शिक्षा भी दी है । इसमें कोई संशय नहीं कि राम चरित्र पर लिखा गया हर ग्रंथ एक नीति शास्त्र है किन्तु यदि उसमें कथा-प्रसंग भी स्थान स्थान पर जुड़े हों व युगानुकूल हों तो सरस, सुग्राह्य हो जाते हैं । रामायण का काव्य, धार्मिक उपदेश एवं कथा का प्रवाह, इन तीनों का सान्निध्य भरा सामंजस्य इस वाङ्मय में देखने को मिलता है ।

श्री रामचरित्र एक समुद्र की तरह से है ; उसमें सभी कुछ मूल्यवान है, फिर भी आज की आवश्यकता के अनुरूप एवं उपयोगी उसमें ऐसा क्या है, जिसे साधारण से साधारण व्यक्ति भी उतारना चाहे तो उतार सके, उसके लिए शोध कर ऋषि-मनीषा ने वे जीवन-प्रसंग हमारे सांस्कृतिक जीवन के आराध्य श्री राम की कथा में से लेकर इसमें प्रस्तुत किये हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

श्री राम का जीवन मर्यादाओं का वह प्रस्तुतीकरण है, जो पारिवारिकता का, बंधुत्त्व का, दाम्पत्य जीवन का एवं एक लोकनायक का आदर्श हमारे समक्ष रखता है । वे पुरुषोत्तम इस लिए कहलाते हैं कि लीला पुरुष होते हुए भी, साधारण मानव की तरह जीते हुए भी, वे उत्तम पुरुष जैसा आचरण करते देखे जाते हैं, जो हर भारतीय का अंततोगत्वा उद्देश्य है । "**जीवो ब्रह्मेव नापरः**" जीव ब्रह्म के समकक्ष बनने की पात्रता रखता है एवं पुरुष पुरुषोत्तम, लघु से महान बन सकता है, यदि वह मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन के आदर्शों को अपने समक्ष रखे । आज के इस बढ़ते आस्था-संकट में जानना जरूरी है कि पिता-पुत्र के मध्य क्या आदर्श संबंध होना चाहिए, पुत्र का कर्त्तव्य क्या है व भ्रातृ प्रेम क्या होता है ? दाम्पत्य जीवन का आदर्श तभी निभता है, जब पतिव्रत की नारी भक्ति के साथ पति भी अपना कर्त्तव्य निर्वाह करें । गुरु-शिष्य, स्वामी-सेवक सम्बन्ध क्या हो तथा कभी अनुचित सामने आ जाय तो उसका विरोध कैसे किया जाय ? उसकी शिक्षा श्री राम का जीवन देता है । श्रीराम ने वर्गहीन समाज की स्थापना की, सामाजिकता के लिए निषाद, शबरी, सुग्रीव से लेकर हर छोटे-बड़े से प्रेम किया। आदर्श राज्य संचालन-कर्त्ता के, लोक-नेतृत्व करने वालों के गुण क्या हों, शौर्य, सत्य, शील, विवेक, संयम, परमार्थ कैसे वैयक्तिक जीवन में व्यावहारिक रूप में उतरें, इसे श्री राम की गाथा के अतिरिक्त कहीं एक स्थान पर नहीं पाया जाता । गुरुभक्ति, ईश्वर-निष्ठा तथा भक्ति-समर्पण का सच्चा शिक्षण श्रीराम के जीवन में देखने को मिलता है ।

निश्चित ही वाङ्मय के इस खण्ड द्वारा लोकमानस को प्रभावित करने वाली श्री रामचरित गाथा के कई ऐसे पक्ष सामने आते हैं, जो आज भी उतने ही समयानुकूल हैं, व्यावहारिक हैं तथा इस युग के श्रीराम द्वारा वर्णित किये गये हैं ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
रामायण सप्ताह	**१.१**
श्री रामायण सप्ताह: अध्याय-१	१.४
श्री रामायण सप्ताह अध्याय-२	२.१
श्री रामायण सप्ताह-अध्याय-३	३.१
श्री रामायण सप्ताह अध्याय-४	४.१
श्री रामायण सप्ताह अध्याय-५	५.१
श्री रामायण सप्ताह अध्याय-६	६.१
श्री रामायण सप्ताह अध्याय-७	७.१
श्री रामायण सप्ताह अध्याय-८	८.१
श्री रामायण सप्ताह अध्याय -९	९.१
श्री रामायण सप्ताह अध्याय-१०	१०.१
श्री रामायण सप्ताह अध्याय-११	११.१
श्री रामायण सप्ताह अध्याय -१२	१२.१
रामायण पारायण करिये पर उसे जीवन में उतारिये भी	१२.२३
रामायण कथा	**१३.१**
उद्देश्य	१३.१
पारिवारिक जीवन का आदर्श पिता-पुत्र का आदर्श सम्बन्ध	१३.५
पुत्र का कर्त्तव्य	१३.८
धर्म	१३.१२
अर्थ	१३.१२
काम	१३.१३
स्त्री की सुशीलता एवं गुणवती होना	१३.१३
भ्रातृ-प्रेम	१३.१४
प्रजा सुख	१३.१४
पुत्र कामना	१३.१४
प्रतिक्षा	१३.१४
मोक्ष	१३.१५
बन्धुगणों का आदर्श सम्बन्ध	१४.१
दाम्पत्य जीवन का आदर्श	१५.१
पति को भी कर्त्तव्य निर्वाह अभीष्ट	१५.२
पतिव्रत और पति परायणता	१६.१
पतिव्रत की अपार शक्ति	१६.७
सास-बहू सम्बन्ध	१७.१
गुरु-शिष्य का आदर्श सम्बन्ध	१८.१
स्वामी-सेवक सम्बन्ध	१९.१
राज कर्मचारियों की स्वामिभक्ति	१९.२
स्वामी के प्रति निष्कपट व्यवहार	१९.३
रघुकुल के सेवकगण	१९.३
अनुचित का निषेध	२०.१
भरत का माता से विरोध	२०.३
लक्ष्मण का विरोध	२०.६
राक्षस समुदाय द्वारा रावण का विरोध	२०.७
मन्दोदरी का विरोध	२०.७
रावण पुत्र प्रहस्त द्वारा रावण का विरोध	२०.८
विभीषण का विरोध	२०.९
रामायण का सामाजिक आदर्श	२१.१
समानता के आधार पर वर्ग विहीन समाज	२१.२
सामाजिक समानता के प्रयत्न में किये गये उल्लेखनीय कार्य	२१.६
शबरी के बेर खाना	२१.८
सुग्रीव की मित्रता	२१.९
सुग्रीव की मिताई	२१.१०
वर्ग विहीन समाज की स्थापना	२१.१६
स्वधर्म अथवा अपने कर्त्तव्यों पर आरूढ़ रहना	२१.१७
धार्मिक दशा	२१.१८
राम भगति रत नरअरु नारी	२१.२०
आर्थिक स्थिति	२२.१
सामाजिक स्वच्छता	२३.१
स्वास्थ्य की दशा	२३.२
परिवार नियोजन	२३.२
नारी की दशा	२३.३
व्यक्ति व्यक्ति के कर्त्तव्य निष्ठ बनने पर ही समाज का आदर्श बनता है	२३.४
राजनैतिक स्थिति	२४.१
प्रजा के हित में रहना	२४.२
सद्गुण वैयक्तिक जीवन का मानदण्ड	**२५.१**
वर्तमान समय के अनुकूल विशेष गुण	२५.२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
शौर्य और धैर्य	२५.२	बुद्धि मानता अथवा दानशीलता	२५.४१
विश्वामित्र की यज्ञ रक्षा	२५.२	बुद्धि	२५.४२
सीता स्वयंवर के अवसर पर प्रदर्शित शौर्य	२५.३	सद्‌बुद्धि की प्रतीक माता कौशल्या	२५.४४
लक्ष्मण के वीरोचित वचन	२५.३	विज्ञान की महिमा और आवश्यकता को	
हनुमान का शौर्य	२५.६	स्वीकार किया जाए	२५.४५
लंका दहन	२५.७	यातायात के तीव्रगामी साधन	२५.४६
अंगद का शौर्य	२५.८	दिव्य अस्त्र-शस्त्र	२५.४७
बानर भालुओं का शौर्य	२५.१०	मन की निर्मलता और दृढ़ता	२५.४८
धैर्य	२५.१०	मन की दृढ़ता	२५.४९
सत्य और शील	२५.१४	गुरु तथा ब्राह्मणों के प्रति पूज्य भावना	
शील	२५.१७	रखना	२५.५०
बाल और विवेक	२५.२१	भक्ति योग	२६.१
शारीरिक बल	२५.२१	भक्ति की पहली कक्षा सत्संग	२६.१
हनुमान और अंगद का बल प्रदर्शन	२५.२२	भक्ति की दूसरी कथा-कथा श्रवण	२६.७
आत्मबल अथवा मनोबल	२५.२४	भक्ति की तीसरी सेवा-गुरु सेवा	२६.१०
तप-बल	२५.२४	गुरु की महिमा	२६.१०
विवेक	२५.२५	चतुर्थ सोपान-ईश्वर का गुणगान	२६.१३
दम तथा परहित भावना	२५.२९	पंचम कक्षा नाम जप एवं दृढ़ विश्वास	२६.१५
परहित भावना	२५.३२	छठवीं कक्षा-सज्जनोचित आचरण	२६.१८
क्षमा तथा दया	२५.३३	पराये धन को विष के समान मानना	२६.२०
कृपा	२५.३४	सतवीं कक्षा-भगवान के विराट रूप का दर्शन	२६.२२
आस्तिकता अथवा ईश्वर भक्ति	२५.३५	आठवीं कक्षा-सन्तोष वृत्ति	२६.२५
वैराग्य और सन्तोष	२५.३८	नवीं और अन्तिम कक्षा-सरलता तथा ईश्वर	
दान शीलता	२५.४०	परायणता	२६.२७
संकट के अवसर पर दान से शान्ति और		ईश्वर परायणता	२६.२९
कष्ट निवारण	२५.४०	भक्ति पथ का उपसंहार	२६.३०
तीर्थ स्थलों में दान की परम्परा	२५.४१	सन्त तुससी ने मानस क्यों रचा	२६.३१
स्वाभाविक अवस्था में दान	२५.४१	राम कथा का उद्देश्य लोक मंगल	२६.३२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रामायण सप्ताह
उद्देश्य

राम और कृष्ण भारतीय संस्कृति के आकाश में चमकने वाले सूर्य-चन्द्र हैं । ऋषि प्रकाश बिखेरते हैं । देवता अनुदान बिखेरते हैं और अवतार अपने चरित्र एवं कतृर्त्व से जनसाधारण को आदर्शवादी गतिविधियाँ अपनाने का अनुकरणीय पथ प्रशस्त करते हैं । कथनी से करनी कठिन है । इस कठिन मार्ग पर जो चलते हैं आपत्तियों की अग्नि परीक्षा में अपनी आदर्शवादिता को जो सुरक्षित रख सके वही सच्चे लोकनायक हैं । जन मानस को ऊँचा उठाने का, युग को बदलने का महान प्रयोजन उन्हीं के द्वारा सम्पन्न होता है ।

भगवान राम और कृष्ण के चरित्र इस कसौटी पर खरे उतरते हैं । इसीलिए उन्हें ईश्वर तुल्य सम्मान प्रदान किया गया है । उनकी हम पूजा-अर्चना करते हैं, ताकि उनके गुणों और कतृर्त्वों को अपनाने के लिए अन्त: चेतना को तत्पर कर सकें । उनकी लीला गाथाओं का बार-बार श्रद्धा-भक्ति के साथ पठन-श्रवण करते हैं ताकि पतनोन्मुख पशु प्रवृतियाँ पलट कर देव-संस्कृति को अपनाने का शौर्य साहस उपलब्ध कर सकें । अनुगमन सरल पड़ता है— अनुगमन से यह विश्वास रहता है कि इस राह पर चलते हुए पूर्ववर्ती महाभागों की तरह हम भी मानव जीवन के चरम लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं ।

भगवान राम का चरित्र चित्रण 'वाल्मीकि रामायण' और 'राम चरित मानस' में बहुत ही सुन्दर ढंग से हुआ है । यों प्राय: सभी इतिहास, पुराणों अनेकानेक रामायणों में अनेक प्रकार से उनकी कथा-गाथा लिखी मिलती है । इनमें अधिक हृदयग्राही वाल्मीकि एवं तुलसी कृत रामायण ही हैं । अस्तु, उन्हीं का प्रचलन भी अधिक है, वाल्मीकि रामायण संस्कृत में है । किसी समय संस्कृत जन-भाषा थी । तब वह जनसाधारण के लिए सुलभ थी और लोकप्रिय थी । पर अब संस्कृत देव-भाषा भर रह गई है । जन-भाषा हिन्दी है । 'रामचरित मानस' हिन्दी में होने से उसे अधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई है । दूसरे शब्दों में, यों कह सकते हैं कि इस दिनों राम-चरित्र की कथा सर्व साधारण को तुलसी कृत रामायण से ही प्राप्त होती है । 'वाल्मीकि रामायण' विद्वानों के हिस्से में चली गई है । यों प्रेरणा की दृष्टि से उसका महत्व अभी भी असाधारण है ।

कृष्ण-चरित्र ' महाभारत ' और 'भागवत' में सुव्यवस्थित रीति से जाना जाता है, यों अन्यान्य इतिहास, पुराणों में भी उसका वर्णन है । कथा चरित्रों के चित्र-विचित्र उपाख्यानों के रहते हुए भी जन-मानस में कृष्ण-चरित्र प्राय: उसी रूप में बसा हुआ है, जैसा कि 'महाभारत' एवं 'भागवत' में उल्लेख है । 'महाभारत' बहुत विशाल है, उसमें कृष्ण-चरित्र बहुत विरल है । 'भागवत' में वह चर्चा सरल भी है और हृदयग्राही भी । धर्म-प्रचारकों एवं सन्त भक्तों द्वारा अधिक प्रोत्साहन मिलने के कारण 'भागवत' प्रतिपादित कृष्ण-चरित्र जन-माधारण में अधिक उत्साहपूर्वक सुना जाता है, उसे अधिक प्रशस्ति मिली है ।

युगान्तरीय चेतना उत्पन्न करने के लिए हमें इतिहास पुराणों से आवश्यक प्रेरणा ग्रहण करके वर्तमान के लिए प्रखर एवं प्रेरक गतिविधियों का प्रकाश प्राप्त करना अधिक हृदयग्राही होगा । इस आधार पर उज्ज्वल भविष्य की रूपरेखा खड़ी करना अधिक सरल होगा । आज की समस्याओं के समाधान से कल की सम्भावनाओं को मूर्तिमान बनाने में निश्चय ही राम-चरित्र और कृष्ण-चरित्र की गाथाएँ बहुत ही प्रेरणाप्रद हो सकती हैं । शर्त यही है कि उन्हें यथार्थता की गहराई से देखा जाय और इन अवतारों ने जिस प्रयोजन के लिए अपनी लीलाएँ प्रस्तुत कीं उन्हें तात्विक दृष्टि से देखा-समझा और कहा-सुना जाय । पुरातन की सहायता से नवीन का निर्माण करना अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण है । पुरानी नीव पर नया भवन खड़ा करना हमें अभीष्ट है । इसलिए पुरातन संस्कृति के प्रकाश में युग-संस्कृति का निर्धारण करना अधिक दूरदर्शिता पूर्ण प्रतीत हुआ है ।

युग-चेतना उत्पन्न करने के लिए राम-चरित्र को तुलतीकृत रामायण के माध्यम से और कृष्ण-चरित्र को भागवत के माध्यम से जन-साधारण के सामने इस प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रखने का प्रयास किया जा रहा है कि उससे कथा श्रवण द्वारा स्वर्ग मिलने की अन्ध-मान्यता के स्थान पर जन-साधारण को प्रेरणाप्रद प्रकाश उपलब्ध करने का अवसर मिल सके । कृष्ण-चरित्र अलग से प्रकाशित किया जा रहा है, उसे 'संक्षिप्त भागवत' कहा जा सकता है । यह पुस्तक रामचरित्र प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गई है । इसे 'संक्षिप्त रामायण' कहना चाहिये ।

संक्षिप्त क्यों ? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि मूल पुस्तक अति विस्तृत है । उसमें घटनों-क्रमों की चर्चा पूरे विस्तार के साथ की गई है । विस्तृत विवरण घटनाक्रम और मनोरंजन की दृष्टि से उन सुविस्तृत विवरणों की मूल लेखक ने उपयोगिता समझी सो उचित भी था, क्योंकि उन्हें दूध भरी मथनी की व्यवस्था करके मक्खन, दही, छाछ आदि का स्वाद प्रस्तुत करना था । हमारे सामने दूसरा लक्ष्य है । राम-चरित्र वर्णन हमारा उद्देश्य नहीं वरन् आज की मानव समस्याओं के सामधान और उज्ज्वल भारतीय भविष्य के निर्माण में राम-चरित्र से प्रेरणा लेना भर है । इसके लिए उचित यही था कि कथाक्रम की क्रमबद्धता बनाये रखकर उन प्रेरणाओं का संग्रह किया जाय जो युग की आवश्यकता पूरी करने में सहायता दे सकती हैं । इन प्रेरक प्रसंगों के प्रकाश को जन-मानस में पहुँचाने के लिए उन्हें अधिक उभारना और उनकी विस्तृत चर्चा करना भी आवश्यक होगा । उसमें जो अधिक समय लगेगा उसकी पूर्ति के लिए यही उचित लगा कि सीमित समय में अधिकाधिक प्रेरणाएँ देने का प्रयोजन पूरा करने के लिए उन कथा प्रसंगों को संक्षिप्त कर दिया जाय जिनमें घटनाक्रम ही प्रधान है ।

जो पुस्तक भक्त हैं, जिन्हें परम्परा से आगे-पीछे सोचने की क्षमता नहीं, उन्हें यह संक्षिप्तीकरण अटपटा भी लग सकता है । पर हमारे सामने दूसरा मार्ग न था । राम-चरित्र की साप्ताहिक कथाओं का व्यापक प्रचलन हमें करना है । सीमित समय में अधिक प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत करने हैं । ऐसी दशा में संक्षिप्तीकरण के अतिरिक्त और कोई चारा शेष नहीं था । रामायण की लोकप्रियता, उसके प्रति जन-मानस में जमी हुई सद्-भावनाओं को युग-निर्माण का पुण्य-प्रयोजन पूरा करने के लिए प्रयुक्त करना हमारा उद्देश्य है । भगवान राम के प्रति जन-आस्था अक्षुण्ण बनी रहे, उनके चरित्र-श्रवण को सस्ता स्वर्ग टिकिट देने वाला न माना जाता रहे, उस पुण्य चरित्र का जन-मानस की आदर्शवादी परम्पराएँ सुदृढ़ बनाने के लिए प्रयोग होता रहे – यही हमें अभीष्ट है । इस दृष्टि से हम रामायण को महत्व देते हैं । तदनुसार उसका नवनीत लेकर अपना काम चला रहे हैं । रामायण सप्ताह का प्रस्तुतीकरण इसी दृष्टि से हुआ है ।

तुलसीकृत रामायण में संस्कृत और अवधी के शुद्ध और अशुद्ध शब्दों का बहुत प्रयोग हुआ है । सामान्य हिन्दी भाषी के लिए उनके अर्थ समझना कठिन पड़ता है । अस्तु, कठिन शब्दों के अर्थ भी दे दिये गये हैं ।

किसी प्रसंग में क्या प्रेरक ध्वनि निकलती है इस प्रकार के निष्कर्ष जहाँ भी आवश्यक थे, जोड़ दिये गये हैं । यह इसलिए कि कथाकार जन-मानस को प्रशिक्षित करने वाले सूत्र उपलब्ध कर सकें और विस्तारपूर्वक उनकी व्याख्या कर सकें । कठिन शब्दों का अर्थ—सामान्य टीका और निष्कर्ष — इन तीन तथ्यों का समावेश कर देने से पुस्तक सर्वसाधारण के लिए, विशेष कर कथा-प्रसंग सुनाने के लिए, अधिक उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है ।

रामायण कथा के साप्ताहिक आयोजन हर जगह पूरे उत्साह के साथ होने चाहिये । नव निर्माण अभियान में इससे बड़ी सहायता मिलेगी । बौद्धिक, नैतिक और सामजिक क्रान्ति की महती आवश्यकता को पूरा करने में इस प्रकार की कथाएँ बहुत उपयोगी सिद्ध होंगी । भारत की ७० प्रतिशत अशिक्षित और ८० प्रतिशत छोटे देहातों में रहने वाली जनता की मनोभूमि आज की समस्याओं के स्वरूप और समाधान को अन्य आधारों पर समझने जैसी विकसित नहीं हुई है । उसके मस्तिष्क में रामायण जैसे कथा प्रसंगों के लिए स्थान भी है और चिन्तन का आधार भी । उसी के साथ कड़ी जोड़कर हम कथा प्रसंगों के आधार पर युग-चेतना उत्पन्न करने का पुण्य-प्रयोजन अधिक युक्तियुक्त ढंग से पूरा कर सकते हैं ।

सप्ताह-कथा में प्रथम आधा दिन पूजा-अर्चना, स्थापना श्रीगणेश के क्रिया-कल्प में निकल जाता है, अन्तिम दिन का आधा हिस्सा पूर्णाहुति में लगता है । अन्तिम दिन गायत्री-यज्ञ होना ही चाहिए । हर दिन प्रातः दो घण्टे और सायं दो घण्टे कथा होती है । सप्ताह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

में कुल १४ बैठक होनी चाहिये । पर आदि और अन्त की एक-एक बैठक काट देने से १२ प्रवचन ही शेष रह जाते हैं । अस्तु, पुस्तक के १२ अध्याय बना दिये गये हैं ।

सर्वत्र रामायण सप्ताह की हमें व्यवस्था करनी चाहिये । संक्षिप्त रामायण का सहगान-पारायण रखना चाहिये । इसमें कीर्तन का आनन्द आता है । अन्तिम दिन गायत्री यज्ञ के साथ षोडश-संस्कार का आयोजन, दुष्प्रवृत्ति त्याग का संकल्प आदि कार्य भी जोड़े रखने चाहिये । यदि उत्साहपूर्वक रामायण-कथाओं का प्रचलन किया गया तब रामायण के माध्यम से अन्धविश्वासियों द्वारा फैलायी गयी मूढ़ता के फलस्वरूप उत्पन्न अनास्था का निराकरण हो सकता है और रामायण का उपयोग जो इन दिनों प्रतिगामिता के प्रसार में किया जा रहा है, उस विपत्ति से जन-मानस को बचाया जा सकता है । भगवान राम के अवतार और गोस्वामी तुलसीदास के महान प्रयासों को सार्थक बनाने में इसी प्रकार की प्रेरक रामायण-कथायें उपयोगी भूमिकायें प्रस्तुत कर सकती हैं ।

प्रस्तुत रामायण सप्ताह में बारह अध्याय हैं ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्री रामायण सप्ताह

अध्याय-१

वर्णानामर्थ संघानां रसानां छन्द सामपि ।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ ॥

⊗ वर्णानाम्=अक्षरों, अर्थ संघाना=अर्थ का समूह अर्थात् शब्द=वाक्य, रसानां=रसों, छन्दसामपि=छन्दों में भी, मंगलानां=कल्याण-कारक कर्त्तारौ=करने वाले दोनों, वाणी=माँ सरस्वती, विनायक=श्री गणेश जी ।

★ **अक्षरों, शब्दों, रसों और छन्दों के साथ-साथ सर्व प्रकार मंगल (कल्याण) करने वाली माँ सरस्वती एवं गणेश जी को वन्दना-नमस्कार है ।**

* भाषा, साहित्य और काव्य आदि का उपयोग मनमाने ढंग से न किया जाय । स्वार्थवश इस प्रतिभा का उपयोग अश्लील या गन्दे रूप में न किया जाय । साहित्य साधना ज्ञान की देवी सरस्वती तथा विवेक के देवता श्री गणेश जी की आराधना भावपूर्वक की जाय ।

वन्दऊं गुरु पद-कञ्ज,कृपा सिन्धु नर रूप हरि।
महा मोह तम-पुञ्ज जासु वचन रविकर निकर॥

⊗ पद=पैर चरण, कञ्ज=कमल, कृपासिन्धु=कृपा के समुद्र, तम-पुञ्ज=घना अन्धकार, रविकर=सूर्य की किरणें, निकर=समूह ।

★ **उन गुरुदेव के चरण-कमल की स्तुति करता हूँ जो दया के समुद्र हैं और मनुष्य के रूप में भगवान ही हैं । जिस प्रकार सूर्य की किरणों के समूह से घना अंधेरा नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार उनके वचनों से महामोह का निवारण होता है ।**

* सच्चा गुरु न तो स्वार्थी होता है और न स्वार्थ सिखाता है । वह भगवान का प्रतिनिधि होता है । भगवान का कार्य ही करता है और उसी की प्रेरणा देता है । उसमें मोह एवं अज्ञान दूर करने की सामर्थ्य होती है ।

वन्दऊं प्रथम महीसुर चरना ।
मोह जनित संशय सब हरना ॥

⊗ महीसुर=पृथ्वी के देवता, चरना=चरण, संशय=संदेह, हरना-हरणा=हरण करने वाले ।

★ **पहले पृथ्वी के देवता सच्चे ब्राह्मणों की चरण बन्दना करते हैं, जो मोह के कारण पैदा होने वाली शंकाओं का निवारण कर देते हैं ।**

* (१) प्रभु कार्य के लिए समर्पित जीवन जीने वाले प्रथम सम्मान के पात्र हैं । (२) ऐसे आचरण सम्पन्न श्रेष्ठ पुरुषों के जीवन को देखकर लोगों का सन्देह मिट जाता है और आदर्शनिष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है ।

सुजन समाज सकल गुन खानी ।
करउ प्रनाम सप्रेम सुवानी ॥

⊗ सुजन-सज्जन=अच्छे लोग, खानी-खान=भण्डार, सुवानी-सुवाणी=मीठी वाणी ।

★ **तदुपरान्त सम्पूर्ण गुणों के भण्डार सज्जन पुरुषों को प्रेम सहित सुन्दर वाणी से नमस्कार करता हूँ ।**

* (१) सद्गुणी के प्रति श्रद्धा का भाव । (२) सज्जन कौन बड़ा है ? जो गुणवान हो । (३) सम्मान का ढंग प्रेम और सौजन्यपूर्ण हो ।

साधु चरित सुभ सरिस कपासू ।
निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥

⊗ चरित=चरित्र, सुभ-शुभ=सुन्दर, कपासू-कपास=रुई का फल, निरस-नीरस=रस रहित, विसद-विशद=विशाल, गुनमय-गुणमय=गुणयुक्त ।

★ **सन्त सांसारिक दृष्टि से देखने में नीरस जैसे दिखाई देते हैं किन्तु उनकी उपयोगिता अद्भुत होती है । जैसे कपास के फल में रस नहीं होता परन्तु उसके धागे मनुष्य के लिए रसदार फलों से भी अधिक उपयोगी हैं ।**

* सज्जन पुरुष आकर्षक भले न हों पर जन उपयोगी अवश्य हों ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो सहि दुःख पर छिद्र दुरावा । वन्दनीय जेहि जग जस पावा ॥

⊗ सहि-सहना=सहकर, छिद्र=दोषों, दुरावा=छिपाना ।

★ **सन्त दूसरों के दोषों को ढकते हैं, दुःख सहन करके भी, जिसके कारण संसार में वे वन्दनीय तथा सम्मान योग्य स्थान पाते हैं ।**

* (१) परोपकार की भावना का विकास (२) दूसरे के दोषों को छिपाकर सद्गुण प्रकट करना (३) संसार में सम्मान के अधिकारी सज्जन पुरुषों का अभिनन्दन ।

मुद मंगलमय सन्त समाजू । जो जग जंगम तीरथराजू ॥

⊗ मुद-मोद=आनन्द, मंगल=कल्याण, समाजू-समाज=समूह, जंगम=चैतन्य, चलता फिरता, तीरथराजू-तीर्थराज=प्रयाग ।

★ **आनन्दप्रद और हितकारी सज्जनों का समाज संसार में चैतन्य तीर्थराज जैसा पुण्य-दायक होता है ।**

राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । सरसई ब्रह्म विचार प्रचारा ॥

⊗ सुरसरि=गंगाजी, सरसई=सरस्वती, ब्रह्म-विचार=आध्यात्मिक विचारधारा ।

★ **इस चैतन्य तीर्थ में आस्तिक भावना-ईश्वर भक्ति के रूप में गंगाजी सतत् बहती रहती हैं, तथा आध्यात्मिक विचारधारा (आत्म-शोधन, आत्म-विश्वास आदि) सरस्वती की तरह अप्रत्यक्ष रूप से उसमें मिलती है ।**

विधि निषेध मय कलिमल हरनी । करम कथा रवि नन्दनि वरनी ॥

⊗ विधि-निषेध=करने योग्य, न करने योग्य, कलिमल=कलियुग के दोष, हरनी=हरण करने वाली, करम कथा=कर्म की मर्यादा रविनन्दनि=सूर्य पुत्री-यमुना जी, वरनी=कही गयी हैं ।

★ **क्या करने योग्य है, क्या न करने योग्य है ? यह बोध कराने वाली, कलियुग का दोष मिटाने वाली, कर्म कथा अर्थात् धार्मिकता की मर्यादा यमुना कही गयी है ।**

बटु विश्वास अचल निज धर्मा । तीरथराज समाज सुकर्मा ॥

⊗ बटु=अक्षय बट, अचल=न डिगने वाला, सुकर्मा=श्रेष्ठ कर्म करने वाला ।

★ **अक्षय वट के रूप में अपने धर्म अर्थात् आचरण पद्धति पर अचल विश्वास है, इस प्रकार का श्रेष्ठ आचरण वाला, समाज चैतन्य तीर्थराज कहलाता है ।**

* (१) तीर्थों की स्थापना लोगों को सद्प्रेरणा तथा मार्ग-दर्शन प्रदान करने के लिये की गयी थी । (२) इस उद्देश्य से भ्रमण करने वाले व्यक्ति चैतन्य तीर्थ बन जाते हैं । (३) जिस समाज में ऐसे सद्पुरुष होते हैं, वहाँ लोगों की निष्ठायें दृढ़ रहती हैं ।

सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा । सेवत सादर समन कलेसा ॥

⊗ सुलभ=आसानी से मिल सकने वाला, देसा=देश, सेवत=सेवन करने से,अपनाने से, समन-शमन=शान्त, कलेसा-क्लेश=कष्ट ।

★ **जड़ तीर्थ तो एक स्थान पर ही रहता है, यह चैतन्य तीर्थ सब को हर स्थान पर आसानी से मिल सकता है । इसको अपनाने से सभी प्रकार के कष्ट शान्त हो जाते हैं ।**

* (१) सन्त समाज सद्प्रेरणा देने जन-जन तक स्वयं जायें । (२) दिये गये प्रेरणा तथा मार्ग-दर्शन को जीवन में अपनाना चाहिये, तभी कष्टों से मुक्ति मिलती है ।

सुनि समुझहि जन मुदित मन । मज्जहि अति अनुराग ॥ लहहि चारि फल अछत तन । साधु समाज प्रयाग ॥

⊗ मुदित=उल्लासपूर्वक, मज्जहि=स्नान करे, लहहि=प्राप्त करे, चारि=चार, अछत-अक्षत=नष्ट हुए बिना ।

★ **इस चैतन्य तीर्थराज की प्रेरणा को उल्लासपूर्वक सुनना, समझना, हृदयगम्य करना ही उसमें स्नान**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करना है । ऐसे स्नान के प्रभाव से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि चारों फल, इस शरीर में ही प्राप्त हो जाते हैं ।

* (१) कथा का केवल सुनना ही पर्याप्त नहीं । (२) यह मान्यता गलत है कि तीर्थ का पुण्य मरने के बाद मिलता है, सच्चा तीर्थ सेवन इसी शरीर में लाभ देता है ।

मज्जन फल देखिअ ततकाला ।
काक होहिं पिक बकहु मराला ।।

⊗ देखिअ=अनुभव करिये, ततकाला-तत्काल=तुरन्त, काक=कौआ, पिक=कोयल, बक=बगुला, मराला=मराल, हंस ।

★ इस प्रकार के स्नान का फल तुरन्त ही देखने को मिलता है । इसके प्रभाव से कौए जैसी प्रकृति के व्यक्ति कोयल जैसी प्रकृति के तथा बगुले जैसी प्रकृति के व्यक्ति हंस प्रकृति के बन जाते हैं ।

* (१) सही ढंग अपनाने से तुरन्त प्रभाव दिखाता है, प्रभाव न दिखाने का अर्थ है, ढंग गलत है । (२) इसका उद्देश्य बाह्य वेष-भूषा, रंग-रूप बदलना नहीं, आन्तरिक वृत्तियाँ बदलना है ।

सतसंगत मुद मंगल मूला ।
सोइ फल सिधि सब साधन फूला ।।

⊗ मुद-मोद=आनन्द, मूला-मूल=जड़, सिधि-सिद्धि=प्राप्ति, मंगल=कल्याणकारी ।

★ सत्संग ही आनन्द और कल्याण (भलाई) की जड़ है । सत्संग की सिद्धि (प्राप्ति) ही फल (परिणाम) है । अन्य सब साधन तो मात्र उसके फूल हैं ।

* (१) सत्संग वही कहा जा सकता है जो आनन्ददायक भी हो और हितकारक भी । (२) कल्याण, सब साधनों में सत्संग का महत्त्व सर्वाधिक है ।

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई ।
पारस परस कुधातु सुहाई ।।

⊗ सठ-शठ=बुरे आदमी, पाई=पाकर, परस-स्पर्श=छूना कुधातु=बुरी धातु (लोहा)

★ बुरे से बुरा आदमी भी अच्छा साथ पाकर अपना सुधार कर लेते हैं । जैसे बुरा लोहा पारस पत्थर के छूने से सोना हो जाता है ।

विधिबस सुजन कुसंगत परहीं ।
फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ।।

⊗ विधिबस=दैवयोग से, सुजन=अच्छे आदमी, परहीं=पड़ना, फनि=फणिग=साँप, मनि=मणि, सम=समान, गुन=गुण, अनुसरहीं-अनुसरण करना ।

★ किन्तु कभी यदि संयोग से सज्जन बुरे साथ में फँस जाते हैं, तो वे साँप की मणि की तरह अपने सद्गुणों का प्रकाश (फैलाने) को नहीं छोड़ते । बुरा साथ होने पर भी सन्त पर बुराई का प्रभाव नहीं पड़ता है ।

* (१) सज्जन को चाहिये कि बुरों को अपने प्रभाव से श्रेष्ठ बना दें (२) बुरे के बीच पड़कर भी अपनी श्रेष्ठ वृत्तियों को न छोड़ें ।

वन्दऊँ सन्त असज्जन चरना ।
दुःखप्रद उभय बीच कछु बरना ।।

⊗ वन्दऊँ=वन्दना करता हूँ, असज्जन=दुष्टजन, उभय=दोनों, कछु=कुछ, चरना=चरण ।

★ मैं दोनों प्रकार के पुरुषों, अच्छे स्वभाव वाले (संत प्रवृत्ति) बुरे स्वभाव (बुरे प्रवृत्ति) के लोगों के चरणों की वन्दना करता हूँ, क्योंकि दोनों ही प्रसंग विशेष में दुःख पहुँचाते हैं ।

बिछुरत एक प्रान हर लेहीं ।
मिलत एक दुःख दारुन देहीं ।।

⊗ बिछुरत-बिछुड़ना=अलग होना, प्रान=प्राण, लेहीं=ले लेना, दारुन-दारुण=असह्य ।

★ सज्जनों से बिछुड़ते समय प्राण निकलने जैसा दुःख होता है जब कि दुर्जनों से मिलने पर कष्ट होता है ।

* अपनी ओर से सबसे समान व्यवहार करना चाहिये क्योंकि दुःख सुख तो किसी प्रकार सन्त असज्जन दोनों से ही मिलता है ।

भलो भलाइहिं पै लहइ ।
लहइ निचाइहि नीचु ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुधा सराहिअ अमरता ।
गरल सराहिअ मीचु ।।

⊗ भलो=भला, भलाइहि=भलाई ही, लहइ=ग्रहण करना, निचाइहि=नीचता, सराहिअ-सराहना=प्रशंसा, गरल=विष, मीचु-मौत=मृत्यु ।

★ **जो भला होता है वह स्वभावत: भलाई ही करता है और नीच व्यक्ति नीचता की ओर ही झुकता है । अमृत की शोभा एवं प्रशंसा जिन्दा या अमर करने में, और विष की मारने में ही है ।**

* श्रेष्ठ व्यक्तियों की चाहिये कि नीच व्यक्तियों के साथ उनके जैसा आचरण न करने लगें, अपनी श्रेष्ठता श्रेष्ठ कार्यों से ही सिद्ध करें ।

जड़ चेतन गुन दोषमय, विस्व कीन्ह करतार ।
सन्त हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि विकार ।।

⊗ विस्व-विश्व=संसार, करतार=कर्ता (ब्रह्मा) विधाता, गहहिं=स्वीकार करना, पय=दूध परिहरि=छोड़कर, बारि=जल, बिकार-विकार=दोष ।

★ **विधाता ने इस संसार का निर्माण जड़-चेतन सभी अच्छाई एवं बुराई से युक्त किया, किन्तु अच्छे लोग जो हंस वृत्ति वाले हैं, विकारों को पानी की तरह छोड़कर अच्छाई रूपी दूध ही स्वीकार करते हैं ।**

* संसार में जो कुछ है सभी ग्रहण करने योग्य नहीं है । श्रेष्ठ व्यक्ति में भले-बुरे का विवेक तथा उसे अपनाने-छोड़ने का साहस होना चाहिये ।

लखि सुवेष जगवंचक जेऊ ।
वेष प्रताप पूजिअहि तेऊ ।।

⊗ लखि=देखकर, सुवेष=अच्छा वेष, वंचक=ठग, प्रताप=प्रभाव से पूजिअहि=पूजे जाते हैं ।

★ **ठग लोग अच्छा वेष बनाने से, वेष के प्रभाव से कुछ समय सम्मान पा लेते हैं ।**

उघरहिं अन्त न होइ निबाहू ।
कालनेमि जिमि रावन राहू ।।

⊗ उघरहिं=प्रकट होना, निवाह=निर्वाह, जिमि=जिस प्रकार ।

★ **किन्तु उनका सही रूप शीघ्र ही खुल जाता है और फिर उनका निर्वाह नहीं होता । कालनेमि, रावण एवं राहु की तरह उन्हें दुर्गति भोगनी पड़ती है ।**

* अच्छे का वेष बनाकर दुनिया को ठगने वालों का अन्त बुरा होता है ।

किएहु कुवेष साधु सनमानू ।
जिमि जग जामवंत हनुमानू ।।

⊗ किएहु=करने पर भी, सनमानू-सम्मान=आदर, जिमि=जिस प्रकार ।

★ **सन्त पुरुष यदि बुरा वेष बना लें तो भी उनका आदर होता है, जैसा कि जामवन्त एवं हनुमान जी का हुआ ।**

* संसार में सच्चा सम्मान पाने के लिये सतवृत्ति अपनानी चाहिए न कि केवल वेष ।

समप्रकास तम पाख दोऊ,
नाम भेद विधि कीन्ह ।
ससि पोषक सोषक समुझि,
जग जस अपजस दीन्ह ।।

⊗ पाख=पक्ष, पोषक=पुष्ट करने, बढ़ाने वाला, सोषक=क्षीण करने, घटाने वाला, जस=यश, अपजस=अपयश ।

★ **महीने के दोनों पक्षों में प्रकाश और अन्धकार समान मात्रा में रहता है, फिर भी विधाता ने नाम का भेद (शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष) रखा । क्योंकि एक पक्ष चन्द्रमा को क्रमश: बढ़ाता जाता है और दूसरा उसे घटाता जाता है, इसलिये एक को यश तथा दूसरे को अपयश दिया गया ।**

* स्थिति का नहीं दिशा का महत्त्व है । छोटा भी विकासोन्मुख, प्रशंसनीय तथा बड़ा भी पतनोन्मुख निन्दनीय है ।

सीया राममय सब जग जानी ।
करउ प्रनाम जोरि जुग पानी ।।

⊗ प्रनाम-प्रणाम=नमस्कार, जोरि=जोड़कर, जुग-युगल=दोनों, पानी-पणि=हाथ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

★ **मैं सब संसार को, सीता और रामजी से ओतप्रोत व्याप्त जानकर, दोनों हाथों को जोड़कर नमस्कार कर रहा हूँ ।**

* संसार भगवान का विराट रूप है यह जानकर संसार की सेवा सच्ची ईश्वर भक्ति मानो ।

गिरा अरथ जल बीचि सम,
कहियत भिन्न न भिन्न ।
वन्दऊँ सीता राम पद,
जिनहि परम प्रिय खिन्न ॥

⊗ गिरा=वाणी, अरथ=अर्थ, बीचि=लहर, कहियत=कहलाते हैं, खिन्न=दीन दुःखी ।

★ **उन सीता जी एवं रामचन्द्र जी के चरणों की वन्दना करता हूँ जिन्हें दीन दुःखी बहुत प्रिय लगते हैं और जो वाणी तथा उसका अर्थ और पानी एवं लहर की तरह कहने भर को भिन्न हैं, वास्तव में एक ही हैं ।**

* भगवान लिंग भेद के परे हैं, चाहे उन्हें शक्ति रूप में, चाहे ब्रह्म रूप में माना जाय, भेद कहने भर का है वास्तव में वह एक ही है ।

नामरूप दुई ईस उपाधी ।
अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥

⊗ उपाधि=प्रतीक विशेषण, अकथ=जिसका वर्णन न हो सके, अनादि=जिसका प्रारम्भ ज्ञात न हो, सुसामुझि - सुसमझ =सद्बुद्धि, साधी=साधने योग्य ।

★ **नाम और रूप दोनों ही भगवान के प्रतीक हैं, दोनों ही सदा से चले आ रहे हैं और दोनों की महिमा अनिर्वचनीय है । यह सद्बुद्धि द्वारा ही समझे जा सकते हैं ।**

* (१) भगवान को चाहे नाम के सहारे याद रखें, चाहे रूप के सहारे बात एक ही है । (२)ईश्वर को कहकर नहीं समझाया जा सकता पर सद्बुद्धि के द्वारा उसे अनुभव किया जा सकता है ।

अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी ।
उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी ॥

⊗ बिच=बीच में, साखी-साक्षी=गवाह, उभय=दोनों, प्रबोधक= समझाने वाला, दुभाखी=दो भाषा जानने वाला, मध्यस्थ ।

★ **निर्गुण और सगुण के बीच में नाम एक सुन्दर साक्षी है जो चतुर दुभाषिये की तरह रहता है ।**

* नाम से निर्गुण और सगुण दोनों तरह के उपासक प्रेरणा ले सकते हैं, इसलिये नाम को दोनों पक्षों से महत्त्व मिला है ।

जस मानस जेहि विधि भयउ,
जग प्रचार जेहि हेतु ।
अब सोई कहऊं प्रसंग सब,
सुमिर उमा वृषकेतु ॥

⊗ जस=जैसा, मानस=रामचरित मानस, सुमिर=स्मरण करके ।

★ **रामचरित मानस जैसा है, जिस प्रकार तैयार हुआ तथा जिस कारण संसार में इसका प्रचार किया गया, वह सब वर्णन उमा महेश्वर का स्मरण करके करता हूँ ।**

* रामचरित-मानस की रचना विशेष उद्देश्य से की गयी है यह भाव स्पष्ट होता है ।

संभुप्रसाद सुमति हिय हुलसी ।
रामचरित मानस कवि तुलसी ॥

⊗ प्रसाद=प्रसन्नता, हिय=अन्तःकरण, हुलसी=जाग्रत हुई ।

★ **भगवान शिव की कृपा से संत तुलसीदास के अन्तःकरण में सद्बुद्धि जाग्रत हुई फलस्वरूप रामचरित मानस की रचना हुई ।**

* ऐसे श्रेष्ठकार्य सद्बुद्धि जागरण द्वारा ही संभव होते हैं ।

करइ मनोहर मति अनुहारी ।
सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी ॥

⊗ अनुहारी=अनुसार, सुचित=अच्छा चित्त ।

★ **बुद्धि के अनुसार तो इसे सुन्दर बनाया गया ही है, साथ ही सज्जन इसे सुनकर अपने सुन्दर अंतःकरणों को निर्मल बना लें ।**

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* मानसकार चाहता है कि लोग इससे प्रेरणा लेकर अपने अन्तःकरणों को श्रेष्ठ बनायें !

जे गावहि यह चरित संभारे ।
तेई एहि ताल चतुर रखवारे ।।

⊗ संभारे=संभाल कर, तेई =वेही, एहि =इस, ताल=तालाब रखवारे=रक्षक ।

★ जो इसे अपना चरित्र संभालकर गाते हैं, वे इस मानस रूपी सरोवर के चतुर रक्षक हैं ।

* रामचरित का गान करने वालों को अपना चरित्र उज्ज्वल रखना चाहिए ।

काम क्रोध मद मोह नसावन ।
विमल विवेक विराग बढ़ावन ।।

⊗ नसावन=नष्ट करने वाला, विमल=निर्मल, विराग=वैराग्य, बढ़ावन=बढ़ाने वाला ।

★ यह रामचरित्र काम, क्रोध, मद, मोह आदि विकारों को नष्ट करता है तथा निर्मल विवेक तथा वैराग्य भावना की वृद्धि करता है ।

* यदि रामचरित्र के प्रभाव से पाठक या श्रोता के विकार न हटें और विवेक वैराग्य उदय न हो तो समझो मात्र दिखावा ही किया जा रहा है ।

राम नाम सिव सुमिरन लागे ।
जानेऊ सती जगतपति जागे ।।

⊗ सुमिरन= स्मरण, जगतपति=संसार के स्वामी ।

★ भगवान शिव जब राम नाम स्मरण करने लगे तो सती जी ने समझ लिया कि जगत के स्वामी समाधि से जग गये हैं ।

लगे कहन हरि कथा रसाला ।
दच्छ प्रजेस भये तेहि काला ।।

⊗ रसाला=रसयुक्त, दच्छ=दक्ष (सती जी के पिता), प्रजेस=प्रजापति ।

★ शिवजी श्रीरामचन्द्रजी की सरस कथा सती जी को सुनाने लगे । उसी समय दक्ष को प्रजापति पद मिला ।

* श्रेष्ठ निरर्थक समय नहीं बिताते, सुन्दर प्रेरक कथाओं द्वारा मनोरंजन तथा संवर्धन करते हैं ।

बड़ अधिकार दच्छ जब पावा ।
अति अभिमानु हृदय तब आवा ।।

⊗ अभिमानु-अभिमान=घमंड ।

★ दक्ष ने इतना महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त किया, तो उनमें बहुत अधिक अहंकार आ गया ।

नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं ।
प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ।।

⊗ अस=ऐसा, प्रभुता=बड़प्पन, जाहि=जिसे ।

★ इस संसार में अब तक कोई व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ, जिसे बड़प्पन पाकर अहंकार न आया हो ।

* मनुष्य की यह कमजोरी है कि पद पाकर अहंकार आ जाता है । सावधानी सहित प्रयास करना चाहिये कि पद के उत्तरदायित्वों, कर्तव्यों को ध्यान में रखे न कि अहंकार करे ।

सती बिलोके व्योम विमाना ।
जात चले सुन्दर विधि नाना ।।

⊗ बिलोके=देखना, व्योम=आकाश ।

★ आकाश मार्ग से अच्छे-अच्छे विमान जा रहे हैं, ऐसा सती जी ने देखा ।

पूछेउ तब शिव कहेउ बखानी ।
पिता यज्ञ सुनि कछु हरषानी ।।

⊗ बखानी=कहा

★ जब सती जी ने शिवजी से विमान जाने का कारण पूछा तो उन्होंने सब बातें बतलायीं । पिता के द्वारा किये जाने वाले यज्ञ का समाचार जानकर सती जी को प्रसन्नता हुई ।

जो महेसु मोहि आयसु देहीं ।
कछु दिन जाइ रहौं मिस एहीं ।।

⊗ जो=यदि, मोहि=मुझे, आयसु=आज्ञा, मिस=बहाना, एहीं=इसी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ सती जी ने कहा कि यदि स्वामी आज्ञा दें तो यज्ञ के बहाने से ही कुछ दिन पितृ-गृह हो आऊँ ।

कहेहूँ नीक मोरेहूँ मन भावा ।
यह अनुचित नहिं नेवत पठावा ।।

⊗ नीक=भली, मोरेहुँ=हमारे भी, भावा=अच्छा लगता, नेवत-निमंत्रण=बुलावा, पठावा=भेजा ।

★ श्री महादेव जी बोले तुमने जो सुन्दर बातें कही वे मुझे भी रुचिकर लगीं । लेकिन तुम्हारे पिताजी ने हमारे पास निमंत्रण (बुलावा) नहीं भेजा, ये अनुचित है ।

जौं बिनु बोलै जाहु भवानी ।
रहइ न सीलु सनेह न कानी ।।

⊗ बोलै=बुलायें, सीलु=शील, सनेहु=स्नेह, कानी=मर्यादा ।

★ हे सती ! यदि बिना निमत्रंण वहाँ जाओगी तो न मान न सम्मान रहेगा, न शील, प्रेम आदि का भाव रहेगा ।

* बिना बुलाने पर कहीं भी निमंत्रण उत्सव आदि में जाने से अपमान मिलकर आत्म-गौरव नष्ट होता है ।

जदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा ।
जाइअ बिनु बोलेहुँ न संदेहा ।।

⊗ जदपि=यद्यपि, गुर=गुरु, गेहा-गृह=घर, पितु=पिता ।

★ यद्यपि मित्र, स्वामी, पिता और गुरु के घर बिना निमंत्रण भी जाने का विधान है, इसमें कोई संदेह नहीं ।

तदपि विरोध मान जहँ कोई ।
तहाँ गए कल्यान न होई ।।

⊗ तदपि=तो, कल्यान=कल्याण ।

★ लेकिन जहाँ पर कोई विरोध की भावना मानने वाला हो, ऐसे स्थान पर जाने में भलाई नहीं होती ।

कहि देखा हर जतन बहु,
रहइ न दच्छकुमारि ।।
दिए मुख्य गन संग तब,
बिदा कीन्ह त्रिपुरारि ।।

⊗ जतन-यत्न=प्रयत्न, दच्छ कुमारि (दक्षकी कन्या) =सती, त्रिपुरारि=शंकर जी ।

★ भगवान, शंकर ने अनेकों प्रकार से समझा कर देखा । किन्तु सती जी किसी प्रकार रुकने को तैयार नहीं हुईं । तब उन्होंने अपने सेवकों के साथ उन्हें भेज दिया ।

* जब कोई समझाने से न माने तो उसे अनुभव से सीखने का अवसर देना ही एक मात्र उपाय रह जाता है ।

पिता भवन जब गई भवानी ।
दच्छ त्रास काहुँ न सनमानी ।।

⊗ त्रास=भय, काहुँ=किसीने, सनमानी-सन्मान=स्वागत ।

★ अपने पिता दक्ष के घर जब सतीजी गईं तो दक्ष का भय लोगों को इतना था कि किसी ने उनका स्वागत तक नहीं किया ।

सादर भलेहिं मिली एक माता ।
भगिनी मिली बहुत मुसुकाता ।।

⊗ भलेहिं=भले ढंग से, भगिनी=बहिन ।

★ माताजी ही भले ढंग से स्नेह भावना लेकर मिलीं । सती जी की बहिनें व्यंग पूर्वक मुस्कराती हुई मिलीं ।

* माता का स्नेह विपरीत परिस्थितियों में भी कम नहीं होता ।

दच्छ न कछु पूछी कुसलाता ।
सतिहिं बिलोकि जरे सब गाता ।।

⊗ कछु=कुछ, कुशलाता=कुशलता, बिलोकि=देखकर, जरे=जले, गाता= शरीर ।

★ सती जी के जाने पर पिता (दक्ष) ने तो किसी प्रकार की कुशल-क्षेम तक नहीं पूछी। बल्कि सतीजी को जैसे ही देखा कि बदन (शरीर) में जलन उठी (द्वेष भड़क उठा) ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जो व्यक्ति जिससे विरोध या दुश्मनी मानता है उसे वह फूटी आँखों भी नहीं देखना चाहता है ।

सती जाइ देखेउ तब जागा ।
कतहुँ न दीख सम्भु कर भागा ।।

⊗ जागा-यज्ञ=(यज्ञोत्सव), कतहुँ=कहीं, दीख=दिखाई देना, भागा=स्थान ।

★ **पार्वती जी ने जहाँ यज्ञ-शाला थी वहाँ जाकर देखा तो भगवान शंकर का स्थान (भाग) कहीं भी न पाया ।**

तब चित चढ़ेउ जो शंकर कहेऊ ।
प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ ।।

⊗ चित=चित्त, चढ़ेउ=स्मृतिपटल में याद आया, प्रभु= स्वामी, समुझि=समझकर, उर=हृदय, दहेऊ=जलने लगा ।

★ **भगवान शंकर ने पार्वती जी को जो सिखावन दी थी, वह उनको याद आ गई । स्वामी का यज्ञ में अपमान जान कर उनका हृदय तिलमिला उठा ।**

* उचित सलाह न मानने पर बाद में पछताना ही पड़ता है ।

पाछिल दुखु न हृदयँ अस व्यापा ।
जस यह भयउ महा परितापा ।।

⊗ पाछिल=पिछला, दुखु=दु:ख, व्यापा-व्याप्त=समाया परितापा=दु:ख, जस=जितना ।

★ **पिछला दु:ख जब कि शंकर ने उनका त्याग किया था, उतना नहीं व्यापा था जितना दु:ख पति के अपमान के कारण अनुभव हुआ ।**

अस कहि जोग अगिनि तनु जारा ।
भयउ सकल मख हाहाकारा ।।

⊗ अस=ऐसा, जोग अगिनि-योगाग्नि=योग से उत्पन्न अग्नि, तनु-तन=शरीर, जारा=भस्म किया, सकल=सम्पूर्ण, मख=यज्ञ ।

★ **ऐसा कह कर पार्वती जी ने अपने योग बल से अग्नि पैदा की और अपना शरीर भस्म कर डाला । सम्पूर्ण यज्ञशाला में हाहाकार मच गया ।**

सती मरत हरि सन बरु माँगा ।
जनम-जनम शिव पद अनुरागा ।।

⊗ सन=से, बरु-वर=वरदान, जनम=जन्म, अनुरागा= प्रेम ।

★ **अपना जीवन समाप्त होते समय श्री हरि से सतीजी ने अनेकों जन्मों तक भगवान शिव के चरणों में प्रेम बना रहने का वरदान मांगा ।**

* अनन्य प्रेम का यही प्रमाण है कि अन्त समय भी दूसरी कोई कामना मन में न आये ।

तेहि कारन हिमगिरि गृह जाइ ।
जनमी पारवती तनु पाई ।।

⊗ कारन=कारण, हिमगिरि=हिमाचल, तनु-तन=शरीर।

★ **इसी कारण सतीजी ने हिमाचल के घर में दूसरा जन्म पार्वती के रूप में लिया ।**

* पूर्व संस्कारों के अनुरूप ही नया जन्म प्राप्त होता है ।

नारद समाचार सब पाए ।
कौतुक ही गिरि गेह सिधाए ।।

⊗ कौतुकही=खेल के तरीके से, गेह-गृह=घर, सिधाये=पहुँचे ।

★ **नारद जी ने जब पार्वती के जन्म की सूचना पायी तो वे कौतुहलवश एक दिन हिमवान के घर जा पहुँचे ।**

* देवर्षि नारद उचित मार्गदर्शन देने स्वयं ही पहुँच जाते थे । सत्पुरुषों का यही लक्षण है ।

कह मुनि बिहँसि गूढ़ मृदु बानी ।
सुता तुम्हारि सकल गुन खानी ।।

⊗ बिहँसि=हँसकर, गूढ़=रहस्ययुक्त, बानी=वाणी, मृदु=मीठी, सुता=कन्या, सकल=सब, गुन=गुण, खानी=भण्डार ।

★ **श्रीनारद मुनि प्रसन्न होकर मीठी वाणी से रहस्यमय ढंग से बोले कि तुम्हारी पुत्री गुणों की खान है ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* सत् पुरुषों की वाणी में अहंकारपूर्ण रुखापन नहीं आत्मीयतापूर्ण मिठास होती है ।

जोगी जटिल अकाम मन,
नगन अमंगल वेष ।
अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि,
परी हस्त अस रेख ।।

⊗ जोगी=योगी, जटिल=कठिन, अकाम=कामना रहित हृदय, नगन-नग्न=नंगा, अमंगल वेष=अशुभ वेश वाला, स्वामी=पति, एहि कहँ=इसको, हस्त-पाणि=हाथ, रेख=भाग्य रेखा, (सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार रेखा विज्ञान ।)

★ **किन्तु इसके भाग्य में है कि इसे पति ऐसा मिलेगा जो योगी, कठिन स्वभाव वाला, कामना हीन निर्वसन तथा अशुभ वेष-भूषा वाला होगा ।**

जस बरु मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं ।
मिलिहि उमहि तस संसय नाहीं ।।

⊗ जस=जैसा, बरनेउ=वर्णन किया, पाहीं=सामने, संशय-संशय=सन्देह ।

★ **जैसे लक्षण हमने वर के प्रकट किये हैं, इस कन्या को वर तो ऐसा ही मिलेगा, इसमें सन्देह नहीं ।**

* नारद जी दृष्टा थे । पार्वती शिव के अतिरिक्त किसी का वरण नहीं करेंगी, अतः उनके बाह्य रूप को देखकर माता-पिता विरोध न करें, इसलिये पूर्व-भूमिका तैयार कर दी ।

जे जे बर के दोष बखाने ।
ते सब सिव पहि मैं अनुमाने ।।

⊗ बखाने=प्रकट किये, अनुमाने=अन्दाज करना ।

★ **पार्वती के भावी पति के जो दोष मैंने बतलाये हैं, वह सभी मेरे अनुमान से शिवजी में भी दिखाई पड़ते हैं ।**

* बाह्य वेष का महत्व नहीं, उसे किस स्थिति में धारण किया गया है इससे भले बुरे का निर्णय होता है । शिवजी लोक शिक्षण के लिए वैसा ही भेष बनाये हैं, जिसे संसार में बुरा कहते हैं, पर सदुद्देश्य के कारण वह श्रेष्ठ है । लोक मंगल के लिए गाँधी की तरह आधे वस्त्र पहनने का उदाहरण भी हमारे सामने है ।

जौ बिबाहु संकर सन होई ।
दोषउ गुन सम कह सबु कोई ।।

⊗ जौ=यदि, बिबाहु=विवाह, सन=से, सबु=सब ।

★ **यदि उमा का विवाह महादेवजी के साथ कर दिया जावे तो पार्वती के भाग्य में जो प्रकरण दोष के रूप में समझा जा रहा है उसे ही लोग गुण के रूप में मानने लगेंगे ।**

दुराराध्य पै अहहिं महेसू ।
आसुतोष पुनि किये कलेसू ।।

⊗ दुराराध्य दुर-आराध्य=कठिनाई से प्राप्त होने वाला, आसुतोष=जल्दी प्रसन्न होने वाले, किएँ=करने से, क्लेश=तपस्या ।

★ **यद्यपि शंकर जी की पूजा-अर्चना का कार्य कठिन है, तो भी तपस्या करने वाले पर वे शीघ्र प्रसन्न होते हैं ।**

* तप द्वारा कठिन कार्य भी सुगम हो जाते हैं । शिव अर्थात् कल्याण प्राप्ति तप बिना संभव नहीं ।

जौं तपु करै कुमारि तुम्हारी ।
भाविउ मेटि सकहि त्रिपुरारी ।।

⊗ भाविउ-भावी=होनहार ।

★ **तुम्हारी पुत्री यदि कठिन तपस्या करे, तो शंकर भगवान होनहार को भी बदल सकते हैं ।**

* तप के द्वारा भाग्य के अनुसार निर्धारित भावी घटनाक्रम भी बदला जा सकता है ।

करहि जाइ तपु सैलकुमारी ।
नारद कहा सो सत्य विचारी ।।

⊗ सैलकुमारी=पार्वती, विचारी=विचार कर ।

★ **समझदारों ने समर्थन किया–कहा हे उमा ! जैसा कि श्री नारद ने कहा है उसे सही मानकर तुम जाकर तप प्रारम्भ करो ।**

* सामान्य व्यक्ति सन्तों की बात का महत्व नहीं समझ पाते, समझदारों को चाहिये कि उस दिशा में समर्थन और प्रोत्साहन दें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मातु पितहिं पुनि यह मत भावा ।
तपु सुखप्रद दुःख दोष नसावा ।।

⊗ पुनि=फिर, मत=सुझाव, सुखप्रद=सुख को देने वाला, नसावा=नष्ट करने वाला ।

★ **माता-पिता को भी यह सलाह पसन्द आयी कि तप के प्रभाव से दुःख और दोष नष्ट होते हैं तथा सुख की प्राप्ति होती है ।**

* माता-पिता को सन्तान के हित को ध्यान में रखकर साधनामय जीवन की प्रेरणा देनी चाहिये । बच्चों को मोहवश आरामतलब न बना दें ।

तपबल रचइ प्रपंचु विधाता ।
तपबल विष्नु सकल जगत्राता ।।

⊗ रचइ=बनाता है, विधाता=ब्रह्मा, प्रपंचु=प्रपंच-संसार, त्राता=त्राण, रक्षा करने वाले, तपबल=तपस्या के प्रभाव से ।

★ **तपस्या के प्रभाव से ब्रह्माजी संसार का निर्माण करते हैं और तप से ही श्रीविष्णु संसार का पालन करते हैं ।**

तपबल संभु करहि संघारा ।
तपबल शेष धरइ महि भारा ।।

⊗ संभु-शंभु=शंकरजी, संघारा=संहार-विनाश, महि=पृथ्वी ।

★ **तप के द्वारा ही शंकर जी संसार का विनाश करते हैं और तप से ही शेषनागजी पृथ्वी का भार धारण किये हैं ।**

* तप शक्ति की अनेक प्रकार की महिमा है, जिससे सब कुछ हो सकता है ।

तप अधार सब सृष्टि भवानी ।
करहि जाइ तपु अस जियँ जानी ।।

⊗ अधार=आधार, जियँ=जी ।

★ **हे उमा ! यह सम्पूर्ण संसार तप के ऊपर निर्भर है, ऐसा मन मे समझकर तुम जाकर तपस्या करो ।**

मातु पितहि बहु विधि समुझाई ।
चलीं उमा तप हित हरषाई ।।

⊗ बहुविधि=अनेक प्रकार से, हरषाई=प्रसन्न होकर, हित=लिए ।

★ **पार्वती जी ने अनेक प्रकार से माता-पिता को समझाया तथा उनसे तप के लिए प्रसन्न होकर विदा ली ।**

उर धरि उमा प्रानपति चरना ।
जाइ विपिन लागीं तपु करना ।।

⊗ उर=हृदय, विपिन=वन ।

★ **भावी पति (शिव जी) के पावन चरणों को हृदय में धारण करके जंगल में जाकर तप करने लगीं ।**

* अपने इष्ट के प्रति सच्ची लगन होनी आवश्यक है, तभी तपस्या का सही परिणाम आता है ।

नित नव चरन उपज अनुरागा ।
बिसरी देह तपहि मन लागा ।।

⊗ नित-नित्य=प्रतिदिन, नव=नया, अनुरागा=स्नेह, बिसरी=भूली, तपहि=तप से ।

★ **पार्वती जी के मन में शिवजी के चरणों में प्रतिदिन नया स्नेह पैदा होने लगा, फलस्वरूप देह की सुधि भूल गयीं तथा तप में मन लग गया ।**

* किसी कार्य में मन न लगने का कारण अपने अन्दर उसके प्रति अनुराग की कमी ही होता है ।

देखि उमहि तप खीन सरीरा ।
ब्रह्मगिरा भै गगन गभीरा ।।

⊗ खीन-क्षीण=कमजोर, ब्रह्मगिरा=ब्रह्म वाणी, गगन=आकाश ।

★ **तप के कारण पार्वती जी का शरीर क्षीण होता चला गया, यह देखकर आकाश से गंभीर ब्रह्मवाणी सुनाई दी ।**

* निष्ठापूर्ण तपस्वी का सहयोग अदृश्य ईश्वरीय शक्तियाँ करती है ।

भयउ मनोरथ सुफल तब,
सुनु गिरिराज कुमारि ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिहरु दुसह कलेस सब,
अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ।।

⊗ मनोरथ=मनोकामना, तब=तुम्हारी, परिहरु=छोड़ दो, दुसह=कठिन, न सहने योग्य, कलेस-क्लेश=तप ।

★ **ब्रह्मवाणी हुई कि हे पार्वती ! सुनो, तुम्हारी इच्छा की पूर्ति हो गई । तुम सम्पूर्ण असह्य काय-क्लेशों को छोड़ दो, अब तुम्हें वर के रूप में शिवजी अवश्य मिलेंगे ।**

* सच्चे साधक की विजय होती है ।

उमा चरित मैं सुन्दर गावा ।
सुनहु संभुकर चरित सुहावा ।।

★ **पार्वती जी का सुन्दर चरित्र सुनाया गया, अब शिवजी का श्रेष्ठ चरित्र सुनिये ।**

जब ते सतीं जाइ तनु त्यागा ।
तब तें सिव मन भयउ विरागा ।।

⊗ त्यागा=छोड़ा, विरागा=वैराग्य ।

★ **इधर जब से सती जी ने दक्ष यज्ञ में अपना शरीर छोड़ा, तबसे शिवजी के मन में वैराग्य की भावना का उदय हो गया ।**

कतहुँ मुनिन्ह उपदेशहि ज्ञाना ।
कतहुँ राम गुन करहिं बखाना ।।

⊗ कतहुँ=कहीं, मुनिन्ह=मनियों को, बखाना=कहना ।

★ **शिवजी कहीं मुनिजनों से ज्ञान चर्चा करते हैं, और कहीं भगवान राम के गुणानुवाद गाते हैं ।**

* जीवन में ऐसे प्रसंग आते हैं जब मन में वैराग्य उदय होता है, ऐसे समय पर निराशावादी चिन्तन न करके परमार्थ में लग जाना चाहिए ।

नेमु प्रेमु संकर कर देखा ।
अविचल हृदय भगति कै रेखा ।।

⊗ नेमु=नियम, अविचल=न डिगने वाली, भगति=भक्ति ।

★ **भगवान राम ने शिवजी का सच्चा प्रेम तथा दृढ़ नियम सहित हृदय में अडिग भक्ति भाव को देखा ।**

प्रगटे रामू कृतग्य कृपाला ।
रूप सीलनिधि तेज बिसाला ।।

⊗ कृतग्य-कृतज्ञ =उपकार मानने वाले, सीलनिधि= शीलनिधि चरित्र के भण्डार, तेज, बिसाला=तेजपुंज ।

★ **रूप और शील के भण्डार, तेजस्वी, कृतज्ञ तथा कृपालु स्वभाव वाले श्री रामचन्द्रजी शिवजी के सामने प्रकट हुए ।**

* भगवान के सच्चे उपासक में यह गुण विकसित होने चाहिए ।

बहु प्रकार संकरहि सराहा ।
तुम्ह बिनु अस व्रत को निरबाहा ।।

⊗ निरबाहा-निर्वाह=निबाह ।

★ **भगवान राम ने शंकर जी की बहुत प्रशंसा की, और कहा कि आप जैसी कठिन तपस्या एवं व्रतों को और कौन निबाह सकता है ।**

* सच्चे व्रतशील की सभी सराहना करते हैं ।

बहु विधि राम सिवहिं समुझावा ।
पारवती कर जन्म सुनावा ।।

⊗ बहुविधि=अनेक तरह से, सुनावा=कहा ।

★ **शिवजी को भगवान राम ने बहुत प्रकार से समझाया तथा पार्वती के जन्म की बात कही ।**

अति पुनीत गिरिजा के करनी ।
बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी ।।

⊗ पुनीत=पवित्र, बिस्तार=विस्तार सहित, कृपानिधि=कृपा के भण्डार, बरनी=वर्णन किया ।

★ **भगवान राम ने शिवजी से उमाजी के पवित्र कार्यों का विस्तार सहित वर्णन किया ।**

* सती रूप में हुई भूल के प्रति शिव का रोष शान्त करने का प्रयास किया । अपराधी के प्रति सद्भाव पैदा करने का सही ढंग यही है कि उसमें आये परिवर्तन तथा किये गये श्रेष्ठ आचरण का विस्तृत विवरण बताया जाय ।

अब बिनती मम सुनहु सिव,
जौं मो पर निज नेहु ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाइ बिबाहहु सैलजहि,
यह मोहि मागें देहु ।।

⊗ नेहु=स्नेह, सैलजहि-शैलजा-शैलकुमारी=पार्वती ।

★ **भगवान राम ने शिवजी से कहा कि यदि आप को मुझसे प्रेम है, तो मेरी एक मांग पूरी करें । वह यह कि जाकर पार्वतीजी से विवाह करलें ।**

* पहले अपनी बात का औचित्य सिद्ध करके, बाद में ही अपना व्यक्तिगत आग्रह करना उचित है ।

कह सिव जदपि उचित अस नाहीं ।
नाथ बचन पुनि मेटि न जाहीं ।।

★ **शिवजी ने कहा कि यद्यपि ऐसा करना मुझे ठीक नहीं लगता, परन्तु हे प्रभु ! आपकी आज्ञा की अवहेलना भी नहीं की जा सकती ।**

सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा ।
परम धरम यह नाथ हमारा ।।

⊗ सिरधरि=शिरोधार्य कर, आयसु=आज्ञा, परम=श्रेष्ठ, नाथ=स्वामी ।

★ **आपकी आज्ञा को शिरोधार्य कर (सिर माथे) स्वीकार कर उसका निर्वाह करें, यही हमारा परम पवित्र कर्त्तव्य है ।**

तुम सब भाँति परम हितकारी ।
अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी ।।

★ **हे स्वामी ! आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य (सिर माथे) है क्योंकि आप सदैव हमारा परम हित करने वाले हैं ।**

* जो अपनी श्रद्धा का पात्र और हितचिन्तक है, उसके हाथों अपने आपको सौंप देना उचित है । उसकी आज्ञा को निष्ठापूर्वक मान लेने में ही कल्याण है ।

प्रभु तोषेउ सुनि संकर वचना ।
भक्ति विवेक धर्म जुत रचना ।।

⊗ तोषेउ=सन्तुष्ट होना, जुत-युक्त=सहित ।

★ **भगवान राम शिवजी के भक्ति, ज्ञान और धर्मयुक्त वचनों को सुनकर सन्तुष्ट हुये ।**

* उचित निर्णय सुनकर ही हितचिन्तक को सन्तोष मिलता है ।

तबहिं सप्तरिषि सिव पहिं आए ।
बोले प्रभु अति वचन सुहाए ।।

⊗ तबहिं=उसी समय, सप्तरिषि=सप्त ऋषि ।

★ **उसी समय सातों ऋषि भगवान शंकर के समीप पहुँचे, शिवजी उनसे मधुर वाणी से बोले ।**

पारबती पहि जाइ तुम्ह,
प्रेम परिच्छा लेहु ।
गिरिहि प्रेरि पठएहु भवन,
दूरि करेहु सन्देहु ।।

⊗ परिच्छा=परीक्षा, गिरिहि= हिमवान को, प्रेरि=कहकर भवन=घर, दूरि= दूर ।

★ **आप जाकर उमाजी के प्रेम की परीक्षा (पहचान) कीजिये और फिर हिमवान से कहिये कि वे पार्वजीजी को घर लिवा लायें, उनके भ्रम को भी दूर कीजिये ।**

* शिवजी पार्वतीजी को अपनाने का निर्णय ले चुके थे, किन्तु संसार उनकी पात्रता समझले इस लिये प्रामणिक व्यक्तियों द्वारा परीक्षा की मर्यादा निभाई । यही ढंग लोक व्यवहार में भी अपनाया जाना चाहिए ।

रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी ।
मूरति मंत तपस्या जैसी ।।

⊗ रिषिन्ह= ऋषियों ने, गौरि=पार्वतीजी, मूरत मंत=मूर्तिमान ।

★ **ऋषियों ने पार्वती जी को ऐसा देखा जैसे तपस्या ही साक्षात् मूर्तिमान हो गई है ।**

* सच्ची साधना का तेज दूर से ही दिखाई देता है ।

बोले मुनि सुनु सैलकुमारी ।
करहु कवन कारन तपु भारी ।।

⊗ कवन=किस कारण से ।

★ **पार्वती जी से ऋषिगण बोले कि हे उमा ! तुम किस लिये कठोर साधना कर रही हो ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू ।
हम सन सत्य मरमु किनि कहहू ।।

⊗ केहि=किसकी,अवराधहु= आराधना करना, चहहू=चाहती, हम सन=हमसे, मरमु=मर्म (भेद), किन=क्यों नहीं ।

★ **हे पार्वती ! तुम किसकी उपासना कर रही हो और तुम्हारी क्या इच्छा है ? हमसे अपने मन की भेद युक्त बात क्यों नहीं बतातीं ।**

* सज्जनों से अपने मन की बात कहकर उनकी सलाह लेने में दोष नहीं है ।

कहत बचन मनु अति सकुचाई ।
हँसिहहु सुनि हमारि जड़ताई ।।

⊗ सकुचाई=संकोच, हँसिहहु=हँसोगे, जड़ताई=मूर्खता ।

★ **पार्वती जी बोली कि कहते हुये मन बहुत संकोच करता है, आप लोग हमारी मूर्खता पर हसेंगे ।**

देखहु मुनि अविवेक हमारा ।
चाहिअ सदा सिवहि भरतारा ।।

⊗ अविवेकु-अविवेक=मूर्खता, भरतारा-भर्तार=पति ।

★ **हे मुनि जी ! मेरी मूर्खता तो देखिये कि मैं श्री शिवजी को पति रूप में पाना चाहती हूँ ।**

* अपने उच्च लक्ष्य को भी अहंकारपूर्वक न कहकर नम्रता पूर्वक प्रस्तुत करना चाहिए ।

अब मैं जन्म शम्भु हित हारा ।
को गुन दूषन करै विचारा ।।

⊗ हारा=समर्पित कर दिया, दूषन=दोष ।

★ **किन्तु अब तो मैं अपना जीवन शिवजी की सेवा में दे चुकी हूँ । अत: इस विषय में गुणों, अवगुणों पर कौन विचार करे ?**

* प्रारम्भ में ही विवेकपूर्वक निर्णय लेकर कदम बढ़ाया जाय, फिर सारी शक्ति प्रयास में लगा देनी चाहिए । बार-बार शंका-कुशंका में न पड़ें ।

जन्म कोटि लगि रगर हमारी ।
वरउं संभु न त रहउं कुआरी ।।

⊗ कोटि= करोड़ों, रगर=हठ, वरउँ=वरण करूँगी ।

★ **मेरी तो करोड़ों जन्मों तक यही हठ रहेगी कि मैं सदैव ही महादेव जी को वरूँगी अन्यथा जीवन भर कुमारी ही रहूँगी ।**

* अनन्य निष्ठा वाले दूसरे विकल्प नहीं सोचते ।

देखि प्रेमु बोले मुनि ग्यानी ।
जय जय जगदंबिके भवानीं ।।

★ **पार्वतीजी का प्रेम देखकर ज्ञानी मुनि उन्हें जगत माता कहकर उनका जय जयकार कर उठे ।**

तुम्ह माया भगवान सिव,
सकल जगत पितु मातु ।
नाइ चरन सिर मुनि चले,
पुनि पुनि हरषत गातु ।।

⊗ सकल=सम्पूर्ण, नाइ=प्रणाम, हरषत-हर्षित=प्रसन्न, गातु-गात=शरीर ।

★ **ऋषि बोले हे पार्वती ! आप माया हैं, शिवजी भगवान हैं, आप दोनों सम्पूर्ण संसार के माता पिता हैं । यह कह कर मुनिगण उनके चरणों में प्रणाम करके चले । उनके शरीर बार-बार पुलकायमान हो रहे थे ।**

* आंतरिक निष्ठा का स्तर ज्ञानवानों से भी अपना महत्त्व स्वीकार करा ही लेता है ।

बहुरि सप्तरिषि सिव पहि जाइ ।
कथा उमा कै सकल सुनाई ।।

★ **फिर ऋषियों ने शिवजी के पास जाकर पार्वतीजी की परीक्षा लेने का वर्णन सुनाया ।**

भए मगन सिव सुनत सनेहा ।
हरषि सप्तरिषि गवने गेहा ।।

⊗ मगन-मग्न=प्रसन्न, सनेहा-स्नेह=प्रेम, गवने-गमन=गये, गेहा-गृह=घर ।

★ **भगवान शिव पार्वती की प्रेम भावना जानकर अति प्रसन्न हुए और सप्त ऋषि अपने निवास को लौट गये ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनु थिर करि तब संभु सुजाना ।
लगे करन रघुनायक ध्याना ।।

⊗ थिर-स्थिर=एकाग्र करना, रघुनायक =रामचन्द्र जी ।

★ **तदुपरान्त शंकरजी मन को एकाग्र कर, भगवान राम का ध्यान करने लगे ।**

* प्रसन्नता के समाचार से भी मन को चचंल नहीं होने देना चाहिए। उसे संयत करके मुख्य कार्य में लगा देना चाहिए ।

तारक असुर भयउ तेहि काला ।
भुज प्रताप बल तेज बिसाला ।।

⊗ तारक असुर=तारक नामका राक्षस, तेहि काला=उसी समय, भुज=भुजा, बाहें ।

★ **उन्हीं दिनों तारकासुर नाम का एक राक्षस हुआ । जिसकी बाहों में ताकत, प्रताप और तेज बहुत था ।**

तेहि सब लोक लोकपति जीते ।
भए देव सुख सम्पति रीते ।।

⊗ लोकपति=लोकों के स्वामी, रीते=रहित, तेहि=उसने ।

★ **उसने सम्पूर्ण लोकों तथा उनके स्वामियों को जीत लिया । देवता सम्पति और सुख से वंचित हो गये ।**

* असावधान व्यक्ति की सुख-सुविधायें कभी भी छिन सकती हैं ।

तब बिरंचि सन जाइ पुकारे ।
देखे विधि सब देव दुखारे ।।

⊗ बिरंचि=विधाता, विधि=ब्रह्माजी ।

★ **तब सब देवताओं ने ब्रह्माजी से पुकार मचाई । उन्होंने सभी देवताओं को दुःखी देखा ।**

* कठिन समय आ पड़ने पर विचारशील हितैषियों से सलाह लेनी चाहिये ।

सब सन कहा बुझाइ विधि,
दनुज निधन तब होइ ।
शंभु सुक्र संभूत सुत,
एहि जीतइ रन सोइ ।।

⊗ बुझाइ=समझाकर, दनुज=राक्षस, सुक्र-शुक्र=वीर्य, संभूत=उत्पन्न ।

★ **ब्रह्माजी ने सब समझाकर कहा कि भगवान शिव के वीर्य से उत्पन्न पुत्र के द्वारा ही यह राक्षस मारा जा सकेगा ।**

मोर कहा सुनि करहु उपाई ।
होइहिं ईश्वर करिहि सहाई ।।

★ **मेरी बात पर आप लोग ध्यान दें और सुन कर उपाय करें, भगवान आप लोगों की सहायता करेंगे और काम सिद्ध हो जायगा ।**

* जो अपनी समस्या के समाधान के लिए स्वयं प्रयास करता है, ईश्वर भी उसकी सहायता करता हैं ।

सती जो तजी दच्छ मख देहा ।
जनमी जाइ हिमाचल गेहा ।।

⊗ तजी=त्यागना, मख=यज्ञ, गेहा=गेह, घर ।

★ **सतीजी ने जो दक्ष के यज्ञ में शरीर को छोड़ा था, उन्होंने हिमवान के घर जाकर जन्म लिया है ।**

तेहि तपु कीन्ह संभु पति लागी ।
सिव समाधि बैठे सबु त्यागी ।।

★ **पार्वतीजी ने शिवजी को पति बनाने के लिए कठोर तप किया है और शंकरजी सबसे वैराग्य लेकर समाधि लगा कर बैठ गये हैं ।**

पठबहु कामु जाइ सिव पाहीं ।
करै छोभु संकर मन माहीं ।।

⊗ पठबहु=भेजो, सिव पाहीं=शिवजी के पास, छोभु=क्षोभ ।

★ **तुम सभी लोग मिलकर कामदेव को महादेव जी के पास भेजो और उनसे कहो शिवजी के मन में उत्तेजना पैदा करें !**

तब हम जाइ सिवहि सिर नाई ।
करवाउव बिबाहु बरिआई ।।

⊗ सिरनाई=प्रणाम करना, करीवाउव=कराना, करवाना, बरिआई=हठ करके (जबर्दस्ती) ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ तब हम महादेवजी के चरणों में अपना मस्तक टेक कर उन्हें राजी करके आग्रह पूर्व विवाह करा देंगे ।

एहि विधि भलेहि देवहित होई ।
मत अति नीक कहइ सबु कोई ।।

⊗ भलेहि=भले ही, देव-हित=देवताओं का कल्याण, मत=सुझाव, नीक=अच्छा ।

★ इस तरह से भले ही देवताओं का कल्याण हो जावेगा, सभी ने इस सुझाव (सम्मति) को उचित स्वीकार किया ।

* (१) मिल जुलकर विचार करने से विवेक सम्मत रास्ता निकल ही आता है । (२) सहयोगपूर्वक कार्य आगे बढ़ाने की योजना बनानी चाहिये ।

अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू ।
प्रगटउ बिषमबान झषकेतू ।।

⊗ अस्तुति=प्रार्थना, सुरन्ह=देवताओं ने, अति हेतू=बहुत स्नेह से, झषकेतू=मछली का चिन्ह है, विषमबान= विचित्र वाण वाला ।

★ सभी देवताओं ने मिल कर बड़े अनुराग से कामदेव की प्रार्थना की तो कामदेव प्रकट हो गया ।

सुरन्ह कही निज बिपति सब,
सुनि मन कीन्ह बिचार ।
संभुबिरोध न कुसल मोहि,
बिहँसि कहेउ अस मार ।।

⊗ निज=अपनी, मार=कामदेव, विपति=विपत्ति, कुसल = कुशल

★ देवों ने अपने दुःख की बात कामदेव से कही और कामदेव ने सब सुन कर मन में सोचा । फिर हँसकर देवताओं से यों कहने लगा कि शंकरजी के साथ विरोध करने में हमारी भलाई नहीं है ।

* किसी कार्य को हाथ में लेने के पूर्व उसके पक्ष-विपक्ष पर विचार कर लेना चाहिये ।

तदपि करब मैं काजु तुम्हारा ।
श्रुति कह परम धरम उपकारा ।।

⊗ तदपि=तो भी, करब=करूँगा, श्रुति=वेद ।

★ तो भी मैं तुम्हारा कार्य अवश्य करूँगा, क्योंकि वेद में परोपकार को परम धर्म कहा गया है ।

* समाज की भलाई करने के लिए यदि स्वयं खतरा उठाना पड़े तो भी पीछे नहीं हटना चाहिये ।

पर हित लागि तजइ जो देही ।
संतत सन्त प्रसंसहि तेही ।।

⊗ लागि=लिये, सन्तत=सदैव, प्रसंसहिं=सराहना ।

★ जो व्यक्ति दूसरे के कल्याण के लिये स्वयं का बलिदान कर देते हैं, उनकी सज्जन सदैव सराहना करते हैं ।

* सन्मान और सराहना द्वारा बलिदानियों का उत्साह बढ़ाना सज्जनों का काम है ।

तब आपन प्रभाउ बिस्तारा ।
निज बस कीन्ह सकल संसारा ।।

⊗ प्रभाऊ= प्रभाव, विस्तारा= फैलाया ।

★ तब कामदेव ने अपना प्रभाव फैलाया और सारे संसार को अपने वश में कर लिया ।

* सामर्थ्य होते हुए भी जब तक प्रयास न किया जाय उसका प्रभाव दिखाई नहीं पड़ता ।

ब्रह्मचर्य ब्रत संजम नाना ।
धीरज धरम ज्ञान बिज्ञाना ।।

⊗ ब्रह्मचर्य=ब्रह्मचर्य, संजम=संयम, धीरज=धैर्य, धरम=धर्म ।

★ ब्रह्मचर्य, व्रत संयम अनेक प्रकार के धैर्य, धर्म, ज्ञान, विज्ञान आदि ।

सदाचार जप जोग बिरागा ।
सभय बिबेक कटक सबु भागा ।।

⊗ जोगु-योग, सभय=डर कर, कटक=सेना ।

★ सदाचार, जप, योग, वैराग्य, विवेक आदि सद्गुणों की सेना डर कर भाग गई ।

* काम वासना जब सबल हो उठती है तो सद्गुण लुप्त हो जाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छांड़े बिषम बिसिख उर लागे ।
छूटि समाधि संभु तब जागे ।।

⊗ बिसिख=बाण, उर=हृदय ।

★ **कामदेव ने अपने विषम बाण शिवजी की ओर छोड़े जो उनके हृदय में लगे और उनकी समाधि खुल गयी ।**

भयउ ईस मन छोभु बिसेषी ।
नयन उघारि सकल दिसि देखी ।।

⊗ ईश=शंकरजी, विशेषी=विशेष, उघार=खोलकर ।

★ **भगवान शिव के मन में बहुत बेचैनी हुई, उसका कारण जानने के लिये उन्होंने सब ओर दृष्टि दौड़ाई ।**

* अस्वाभाविक स्थिति का अनुभव होने पर तुरन्त उसका कारण खोजना चाहिये ।

सौरभ पल्लव मदनु बिलोका ।
भयउ कोपु कँपेउ त्रैलोका ।।

⊗ सौरभ=आम, पल्लव=पत्ता, मदनु= कामदेव, बिलोका= देखा, त्रैलोका=तीनों लोक ।

★ **महादेवजी ने कामदेव को जब आम्र के पत्तों में छिपा हुआ देखा तो वे बड़े क्रोधित हुये, जिसके कारण तीनों लोकों में खलबली मच गयी ।**

तब सिब तीसर नयन उघारा ।
चितवत कामु भयउ जरि छारा ।।

⊗ नयन=नेत्र, उघार=खोला, चितवत=देखते ही, जरि छारा= जलकर भस्म होना ।

★ **तब महादेव जी ने अपना तीसरा नेत्र खोला, उससे देखते ही कामदेव जलकर भस्म हो गया ।**

* अपनी स्वाभाविक शान्ति को भंग करने वाले कारण को विवेक के प्रयोग से नष्ट कर देना चाहिए ।

सब सुर बिष्णु बिरंच समेता ।
गये जहाँ सिव कृपा निकेता ।।

⊗ बिरंच= ब्रह्मा, निकेता=भण्डार ।

★ **तब सभी देवता श्रीविष्णु एवं ब्रह्माजी सहित कृपा निधान शिवजी के पास गये ।**

सकल सुरन्ह के हृदय अस,
संकर परम उछाहु ।
निज नयनन्हि देखा चहहिं,
नाथ तुम्हार बिबाहु ।।

⊗ उछाहु-उछाल=उमंग, नयनन्हि=आँखों से ।

★ **ब्रह्मा बोले "हे शिवजी सभी देवताओं के मन में यह उमंग बहुत वेग से उठ रही है कि अपनी आँखों से आपका विवाह देखें ।"**

सुन बिधि बिनय समझु प्रभु बानी ।
ऐसेइ होउ कहा सुखमानी ।।

★ **ब्रह्माजी की प्रार्थना सुनकर तथा भगवान को दिया वचन याद करके शिवजी ने प्रसन्नता सहित कहा "ऐसा ही होगा ।"**

अवसरु जानि सप्तरिषि आए ।
तुरतहिं बिधि गिरि भवन पठाए ।।

⊗ अवसरु=अवसर, गिरि=हिमालय ।

★ **समयोचित अवसर जानकर सप्तऋषि वहाँ पहुँचे । शीघ्र ही ब्रह्माजी ने उन्हें हिमाचल के घर भेज दिया ।**

* क्रमबद्ध रूप से चल रहे कार्य में ठीक समय पर पहुँचना बहुत महत्त्व रखता है । आगे पीछे पहुँचने से हानि हो सकती है ।

प्रथम गये जहँ रहीं भवानी ।
बोले मधुर बचन छल सानी ।।

⊗ छल सानी=छल से भरे हुये ।

★ **सप्तर्षि पहले वहाँ गये जहाँ पार्वती जी थीं और उनसे स्नेहपूर्ण किन्तु परीक्षा के लिए छलयुक्त वचन कहने लगे ।**

कहा हमार न सुनेहु तब,
नारद के उपदेश ।
अब भा झूठ तुम्हार पन,
जारेउ काम महेस ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ भा= हुआ, पन= प्रण-प्रतिज्ञा ।

★ ऋषियों ने पार्वती जी से कहा कि, उस समय नारद की शिक्षाओं को मानकर, हमारी बात नहीं सुनीं । अब तुम्हारी प्रतिज्ञा अधूरी (झूठी) हो गई, क्योंकि शंकर जी ने कामदेव को जला दिया ।

सुनि बोलीं मुसकाइ भवानी ।
उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी ।।

★ उपर्युक्त बातें सुन कर उमा मुस्करा कर बोलीं कि हे ज्ञानयुक्त मुनिवरों । आपने जो बातें कही हैं वे उचित ही हैं ।

तुम्हरे जान काम अब जारा ।
अब लगि संभु रहे सविकारा ।।

⊗ तुम्हरे जान=आपकी समझ,सविकारा=विकार युक्त (कामुक) ।

★ आप लोगों की समझ से शंकर जी ने कामदेव अब ही भस्म किया है, अब तक तो वे शायद काम विकारों से ग्रस्त रहे हैं ।

हमरे जान सदा शिव जोगी ।
अज अनवद्य अकाम अभोगी ।।

⊗ अज=अजन्मा (कभी जन्म न लेने वाला), अनवद्य=अनिन्द्य (निन्दा रहित), अकाम=कामना रहित, अभोगी=भोग से रहित ।

★ हमारी समझ में तो शिवजी सदैव से ही योग युक्त, जन्म रहित, दोष रहित, कामना रहित और भोगों से रहित ही हैं ।

* (१) सच्ची निष्ठा दूसरों के बहकाने से भटकती नहीं । (२) अपने इष्ट के सही स्वरूप का बोध और उस पर विश्वास सच्चे साधक के गुण हैं ।

तात अनल कर सहज सुभाऊ ।
हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ ।।

⊗ सुभाऊ=स्वभाव (आदत), अनल=अग्नि, हिम=बर्फ, पाला ।

★ हे ऋषियो ! आग का ये सहज गुण है, कि पाला उसके पास जा ही नहीं सकता है ।

गएँ समीप सो अवसि नसाईं ।
असि मन्मथ महेस की नाईं ।।

⊗ अवसि-अवश्य=निश्चय ही, मन्मथ=कामदेव, नाईं= जैसे ।

★ आग के पास जाने पर अवश्य ही पाला नष्ट हो जायेगा, वैसे ही शिवजी के पास जाने से कामदेव स्वत: ही नष्ट हो गया ।

* अग्नि जैसे तेजस्वी स्वभाव वाले के पास कामादि विकार पहुँच नहीं सकते । उसे उनके निवारण के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता, वे स्वत: मिट जाते हैं ।

हियँ हरषे मुनि वचन सुनि,
देखि प्रीति विश्वास ।
चले भवानी नाइ सिर,
गए हिमाचल पास ।।

★ ऋषि गणों ने उमाजी के वचन सुनकर, उनका प्रेम एवं विश्वास देखकर हृदय में बड़ी प्रसन्नता अनुभव की । पार्वतीजी को प्रणाम कर वे हिमाचल के पास गये ।

* आशानुरूप उत्तर पाकर परीक्षक को भी हर्ष होता है, अपनी बात कट जाने का दु:ख नहीं मानता ।

हृदय विचार संभु प्रभुताई ।
सादर मुनिवर लिए बुलाई ।।

⊗ प्रभुताई=महानता ।

★ हिमवान ने शंकर जी की महानता को हृदय में विचार कर आदर सहित ऋषियों को बुला लिया ।

सुदिन सुनखत सुघरी सोचाई ।
बेगि वेदविधि लगन धराई ।।

⊗ सुदिन=अच्छा दिन, सुघरी=सुघड़ी-शुभ समय, सुनखत= सुनक्षत्र-शुभ नक्षत्र, सोचाई=शोध करना, लगन=लग्न, धराई-निश्चित की ।

★ हिमाचल ने सुन्दर दिन, शुभ नक्षत्र, शुभ घड़ी विचार कर शीघ्र ही वेदानुसार विवाह लगन निश्चित करवायी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* शुभ कार्य की संभावना बनते ही उसे शीघ्रता से पूरा करने की व्यवस्था बनायी जानी चाहिए ।

जसि विवाह कै विधि श्रुति गाई ।
महा मुनिन्ह सो सब करबाई ।।

★ **वेद विधि के अनुसार ऋषियों ने सम्पूर्ण विधि विधान (कर्मकाण्ड) करवाया ।**

* संस्कारों को शुद्ध रूप में कराया जाना चाहिए,उनके साथ निरर्थक अलन-चलन नहीं जोड़ने चाहिए ।

गहि गिरीस कुस कन्या पानी ।
भवहि समरपी जानि भवानी ।।

⊗ गहि=पकड़ कर, कुस=कुशा, भवहि=शिवजी को, समरपी=समर्पण की, भवानी=शिवपत्नी, पानी-पाणि=हाथ

★ **हिमवान ने अपने हाथों में कुशा ली तथा कन्या (पार्वती) का हाथ पकड़ कर शंकर जी की पत्नी समझ कर शिवजी के हाथों में सौंप दिया ।**

* कुश पवित्रता और सादगी के प्रतीक हैं । विवाह के साथ अनीति तथा अपव्यय के प्रसंग न जोड़ने की भावना कुश कन्या-समर्पण के साथ जुड़ी है ।

जननी उमा बोलि तब लीन्ही ।
लै उछंग सुन्दर सिख दीन्ही ।।

⊗ जननी=माता, बोलि=बुलाकर, उछंग=गोद, लै=बिठाकर, सिख-सीख=शिक्षा ।

★ **माता मैना ने उमा को बुला कर गोदी में बिठा कर सुन्दर सीख दी ।**

* लड़की की विदा के समय माता-पिता का कर्त्तव्य हो जाता है कि कन्या को कुशल दाम्पत्य निर्वाह के लिए सुन्दर सीख दें ।

जबहिं सम्भु कैलासहि आये ।
सुर सब निज निज लोक सिधाये ।।

⊗ सिधाये=गये, कैलासहि=कैलाश पर्वत पर ।

★ **जब भगवान शंकर कैलाश पर्वत, अपने निवास स्थान को आ गये, तभी सभी देवतागण अपने-अपने लोकों को चले गये ।**

पारवती भल अवसरु जानी ।
गईं संभु पहिं मातु भवानी ।।

⊗ भल-भला=अच्छा, अवसरु=समय ।

★ **उपयुक्त समय जानकर पार्वती जी शिवजी के पास गईं ।**

* उचित अवसर देखकर प्रयास करने में सफलता मिलती है ।

जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा ।
बाम भाग आसनु हर दीन्हा ।।

⊗ बाम भाग =बायीं ओर ।

★ **पार्वती जी को अपनी स्नेहमयी पत्नी जानकर शंकर जी ने उन्हें अपने बायीं ओर उचित आसन देकर आदर सहित बैठाया ।**

* (१) पति द्वारा भी पत्नी का सम्मान किया जाना चाहिये । (२) बराबरी का आसन देना अर्थात समान अधिकार प्रदान करना चाहिये ।

पति हिय हेतु अधिक अनुमानी ।
बिहँसि उमा बोलीं प्रिय बानी ।।

⊗ हेतु=स्नेह, बिहँसि=प्रसन्न होकर ।

★ **शंकर जी (पति) के हृदय में पर्याप्त स्नेह समझकर पार्वती जी प्रसन्न होकर सुन्दर लगने वाले वचन बोली ।**

* कोई आग्रह करने के पूर्व अपने बारे में सामने वाले की भावना का अन्दाज लगा लेना चाहिये ।

अति आरति पूछेउ सुरराया ।
रघुपति कथा कहहु करि दाया ।।

⊗ अति आरति=बहुत दीन भाव से, सुरराया=देवों के स्वामी ।

★ **हे देवाधिदेव मैं बहुत विनम्रतापूर्वक आपसे प्रार्थना करती हूँ कि कृपा करके श्री रामचन्द्र जी की कथा मुझे सुनाइये ।**

राम कथा सुरधेनु सम,
सेवत सब सुख दानि ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत समाज सुरलोक सब,
को न सुनै अस जानि ।।

⊗ सुरधेनु=कामधेनु, कामना पूर्ण करने वाली गाय, सेवत=सेवा करना, दानि=देने वाली ।

★ **भगवान श्री राम का चरित्र कामधेनु के समान है । सेवा करने से सब सुखों को देने वाला है और सज्जन पुरुषों के समाज को देव लोक कहा गया है, ऐसा जानकर इसे कौन न सुनेगा ।**

* औषधि सेवन से स्वास्थ्य लाभ होता है, इसी प्रकार राम चरित्र सेवन से सब सुख प्राप्त होते हैं । इसलिये केवल सुनकर ही नहीं रह जाना चाहिये ।

राम नाम गुन चरित सुहाए ।
जनम करम अगणित श्रुति गाए ।।

⊗ गुन=गुण, श्रुति=वेद ।

★ **भगवान (श्री राम) के नाम, गुण चरित्र और कर्म अगणित हैं, जिनका वेदों ने गान किया है ।**

* केवल नाम और रूप पर ही नहीं, गुण और चरित्र पर भी ध्यान दिया जाय ।

जथा अनंत राम भगवाना ।
तथा कथा कीरति गुनगाना ।।

⊗ जथा= यथा जिस प्रकार, अनंत=अंतरहित, कीरति-कीर्ति=यश, नाना=विविध-अनेक ।

★ **भगवान श्री राम जैसे अनंत हैं, उसी प्रकार उनकी कथा कीर्ति और गुणों का भी अंत नहीं है ।**

* यह सोचना गलत है कि हमारे अंदर पर्याप्त गुण हैं, अब अधिक आवश्यकता नहीं । गुण अनन्त हैं, श्रेष्ठ व्यक्ति भी अपने सुन्दर गुणों का विकास करें ।

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा ।
गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा ।।

⊗ भेदा=भेद, पुरान=पुराण, बुध=बुद्धिमान-पंडित, सगुनहि=सगुण, अगुनहि= निर्गुण ।

★ **वेद, पुराण, पंडित और मुनि सभी कहते हैं कि सगुण और निर्गुण में कुछ भी भेद नहीं है ।**

* निराकार या साकार में से जिसे जो रुचे उस विधि से भगवान को माने ।

अगुन अरूप अलख अज जोई ।
भगत प्रेम बस सगुन सो होई ।।

⊗ अरूप=निराकार, अलख=अदृश्य, अज=जन्म रहित ।

★ **जो निराकार, निर्गुण, अव्यक्त, अजन्मा है, वही भक्त के प्रेमवश सगुण रूप धारण करता है ।**

* भावना की प्रखरता द्वारा सूक्ष्म चेतना शक्ति को स्थूल स्वरूप भी दिया जा सकता है ।

आदि अंत कोऊ जासु न पावा ।
मति अनुमान निगम अस गावा ।।

⊗ निगम=वेद, अस=इस प्रकार, गावा=गाया, अनुमान=अंदाज ।

★ **परब्रह्म परमात्मा का आदि अंत कोई जान नहीं सका है, बुद्धि से उसका अनुमान करके वेदों में इस प्रकार वर्णन किया गया है ।**

* परमात्मा को जितना समझा जा सका है, वह उससे भी बहुत अधिक है । अपनी अनुभूति को ही सब कुछ नहीं मान लेना चाहिए ।

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना ।
कर बिन करम करइ बिधि नाना ।।

⊗ बिनु=बिना, काना=कान, करम=कर्म ।

★ **वह परब्रम्ह बिना पैर के चलता है और बिना कान के सुनता है तथा अनेकों प्रकार के कर्म बिना हाथ के ही करता है ।**

आनन रहित सकल रस भोगी ।
बिन बानी बकता बड़ जोगी ।।

⊗ आनन=मुख, भोगी=भोगने वाली, बानी=वाणी, बड़=बड़ा, जोगी=योगी ।

★ **वह (ब्रह्म) मुख के बिना ही सभी रसों का आनन्द लेता है और बिना वाणी के ही बहुत बड़ा योग्य वक्ता है ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तन बिन परस नयन बिन देखा ।
ग्रहइ घ्रान बिन बास असेषा ।।

⊗ परस-स्पर्श=छूना, ग्रहइ=ग्रहण करता है, घ्रान=सूँघने की इन्द्रिय, वास=गंध, असेषा=अशेष ।

★ **वह शरीर के बिना स्पर्श करता है, नेत्र बिना ही देखता है और बिना घ्राणेन्द्रिय के अनेकानेक गंधों को सूँघता है ।**

असि सब भाँति अलौकिक करनी ।
महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ।।

⊗ असि=ऐसी, अलौकिक=दिव्य, महिमा=बड़ाई, जासु = जिसकी, बरनी=वर्णन करना ।

★ **इस प्रकार उस (ब्रह्म) की सब प्रकार से दिव्य (सांसारिक व्याख्या से परे) करनी है, जिसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता ।**

* (१) स्थूल से सूक्ष्म का अस्तित्व एवं महत्त्व बहुत बड़ा है । (२) ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं एक चेतना है, सभी इन्द्रियाँ उसी की शक्ति से सक्षम हैं (३) लौकिक उदाहरण उसके लिए पर्याप्त नहीं ।

तदपि संत मुनि वेद पुराना ।
जब कछु कहहिं स्वमति अनुमाना ।।

⊗ तदपि=फिर भी, पुराना=पुराण, स्वमति=अपनी बुद्धि से, अनुमाना=अनुमान से ।

★ **फिर भी संत, मुनि, वेद, पुराण आदि जिस प्रकार अपनी बुद्धि के अनुसार समझकर उसके सम्बन्ध में जैसा कहते हैं, वह मैं तुम्हें सुनाता हूँ ।**

तस मैं सुमुखि सुनावऊँ तोही ।
समुझि परइ जस कारन मोही ।।

⊗ तस=वैसा, सुमुखि=सुन्दर मुख वाली (पार्वतीजी), तोही=तुमको, परइ=पड़ता है, जस=जैसा, कारन=कारण ।

★ **शंकर जी कहते हैं कि हे पार्वती ! जो कुछ कारण मेरी समझ में आता है वह मैं तुमको सुनाता हूँ ।**

* अपने कहे को सब कुछ मान लेने की भूल श्रेष्ठ पुरुष नहीं करते ।

जब जब होइ धरम की हानी ।
बाढ़हि असुर अधम अभिमानी ।।

⊗ धरम-धर्म, हानी=हानि, अधम=नीच-अधर्मी ।

★ **जब-जब धर्म का पतन होता है और नीच अभिमानी असुर बढ़ जाते हैं ।**

* धर्म के पतन होने पर अभिमानी और नीच प्रकृति के राक्षस कहाने वाले लोग ही बढ़ते हैं ।

करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी ।
सीदहिं विप्र धेनु सुर धरनी ।।

⊗ सीदहिं=कष्ट पाते हैं, धरनी=पृथ्वी ।

★ **वे (राक्षसी प्रकृति वाले) ऐसी अनीति का मार्ग अपनाते हैं जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता । इससे ब्राह्मण, गौ, देवता और पृथ्वी सभी कष्ट पाते हैं ।**

* अन्याय-अनीति-अधर्म के बढ़ने से संसार में दु:खों की वृद्धि होती है ।

तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा ।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ।।

⊗ शरीरा=शरीर, हरहिं=हरण करते हैं, कृपानिधि=कृपा के भण्डार, पीरा=पीड़ा ।

★ **उस स्थिति में कृपा के निधान भगवान अनेक प्रकार के शरीर धारण कर सज्जनों के दु:ख मिटाते हैं ।**

* जब असुरता बढ़ जाती है और उसका नियंत्रण लौकिक स्तर पर नहीं होने पाता, तब भगवान की शक्ति विभिन्न रूपों में प्रकट होती है ।

असुर मारि थापहिं सुरन्ह,
राखहिं निज श्रुति सेतु ।
जग बिस्तारहिं विसद जस,
राम जन्म कर हेतु ।।

⊗ थापहिं=स्थापना करना, श्रुति=वेद, सेतु=पुल-मर्यादा, बिस्तारहिं=फैलाते हैं, विसद-विशद=विशाल ।

★ **अवतारी पुरुष राक्षसों को मारकर देवत्व की स्थापना करते हैं । अपने सनातन पवित्र यश आचरण का**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाश फैलाते हैं । यही भगवान के जन्म का उद्देश्य कहा गया है ।

* (१) पूर्वोक्त चौपाइयों में वर्णित कार्यों को करने वालों में ईश्वरी शक्ति का उदय होने लगता है । (२) यश फैलाने का उद्देश्य लोक जीवन में उस मार्ग पर चलने का उत्साह पैदा करना है । (३) भगवान का अवतार निरुद्देश्य नहीं होता ।

(मनु-शतरूपा प्रसंग)

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा ।
जिन्ह तें भै नर सृष्टि अनूपा ।।

⊗ भै=हुई, नरसृष्टि=मानवजाति की उत्पत्ति, अनूपा-अनुपम=अनोखी ।

★ **स्वायंभुव मनु और अनकी पत्नी सतरूपा, जिनसे मनुष्यों की अनुपम सृष्टि हुई ।**

दम्पति धरम आचरन नीका ।
अजहुँ गाव श्रुति जिन्हकै लीका ।।

⊗ दम्पति=पति-पत्नी, आचरन-आचरण, नीका=सुन्दर, गाव=गाते हैं, श्रुति=वेद, जिन्ह कै=जिनका, लीका=मर्यादा ।

★ **उन दोनों पति-पत्नी के धर्म और आचरण बहुत अच्छे थे । आज भी वेद उनकी मर्यादा का गान करते हैं ।**

* सदाचार सम्पन्न दम्पति ही श्रेष्ठ सन्तति पैदा कर सकते हैं, उनका यश ही अक्षय होता है ।

तेहिं मनु राज कीन्ह बहु काला ।
प्रभु आयसु सब विधि प्रतिपाला ।।

⊗ तेहि=उन, काला=समय (काल), आयसु=आज्ञा, प्रतिपाला पालन किया ।

★ **उन (स्वायम्भुव) मनुजी ने बहुत समय तक राज्य किया और सब प्रकार से भगवान की आज्ञा (शास्त्रों की मर्यादा) का पालन किया ।**

* सत्ता की शक्ति का उपयोग मर्यादापूर्वक किया जाय ।

बरबस राज सुतहि तब दीन्हा ।
नारि समेत गवन बन कीन्हा ।।

⊗ बरबस=जबदस्ती, सुतहि=पुत्र को, गवन=गमन ।

★ **तब मनुजी ने अपने पुत्र को आग्रह पूर्वक राज्य देकर स्वयं स्त्री समेत वन को गमन किया ।**

* वानप्रस्थ मर्यादा का पालन करना सांसारिक जीवन से निवृत होकर लोक मंगल में लग जाना उचित है ।

करहिं अहार साक फल कंदा ।
सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ।।

⊗ अहार=आहार, साक=शाकभाजी, कंदा=कंद ।

★ **वे साग, फल और कन्द का आहार करते हुए सच्चिदानंद ब्रह्म का स्मरण करने लगे ।**

* साधना में आहार की सात्विकता आवश्यक है ।

विधि हरि हर तप देखि अपारा ।
मनु समीप आये बहु बारा ।।

⊗ विधि=ब्रह्मा, हरि=विष्णु हर=शंकर, अपारा=अपार समीप=पास, बहुबारा=अनेक बार ।

★ **ब्रह्मा-विष्णु-महेश उनका अपार तप देखकर कई बार मनुजी के पास आये ।**

* सुपात्र के आसपास सिद्धियां स्वयं घूमती हैं ।

माँगहु वर बहु भाँति लोभाए ।
परम धीर नहिं चलहिं चलाए ।।

⊗ वर=वरदान, बहुभाँति=अनेक प्रकार, लोभाए=ललचाया, चलहिं चलाए=डिगाने से डिगना ।

★ **उन्होंने अनेक प्रकार से ललचाया और कहा वर माँगो । पर ये परम धैर्यवान डिगाने से नहीं डिगते ।**

* अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान साधक बड़े प्रलोभन से भी डिगते नहीं ।

प्रभु सर्बग्य दास निज जानी ।
गति अनन्य तापस नृप रानी ।।

⊗ सर्बग्य-सर्वज्ञ=सब कुछ जानने वाले, गति=आश्रय, तापस=तपस्वी।

★ **सर्वज्ञ प्रभु ने अनन्य गति (आश्रय) वाले तपस्वी राजा रानी को 'निज दास' जाना ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* प्रभु अनन्य निष्ठा से प्रसन्न होते हैं ।

माँगु-माँगु बरु भै नभ बानी ।
परम गंभीर कृपामृत सानी ।।

⊗ बरु=वर, भै=हुई, नभवानी=आकाशवाणी, कृपामृत=कृपारूपी अमृत, सानी=सरावोर-सनी हुई ।

★ **तब परम गम्भीर और कृपारूपी अमृत से सनी हुई यह आकाश वाणी हुई कि "वर माँगो" "वर माँगो"।**

सुन प्रभु बचन जोरि जुग पानी ।
धरि धीरज बोली मृदु-बानी ।।

⊗ जोरि=जोड़कर, जुगपानी=दोनों हाथ, मृदु=कोमल, बानी=वाणी ।

★ **प्रभु के वचन सुनकर दोनों, हाथ जोड़कर और धीरज धर कर राजा ने कोमल बाणी कही ।**

दानि सिरोमनि कृपानिधि,
नाथ कहउँ सति भाउ ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत,
प्रभु सन कवन दुराउ ।।

⊗ दानि=दानी, सिरोमनि-श्रेष्ठ, कृपानिधि=कृपा के भण्डार, सतिभाउ=सच्ची भावना से, दुराउ=भेद ।

★ **(राजा ने कहा) हे दानियों के शिरोमणि ! हे कृपा निधान ! हे नाथ ! मैं अपने मन का सच्चा भाव कहता हूँ कि मैं आपके समान पुत्र चाहता हूँ । प्रभु से भला क्या छिपाना ।**

* भगवान के सामने अपना अन्तःकरण खोल देना चाहिये ।

सतरूपहिं बिलोकि कर जोरे ।
देबि माँगु बरु जो रुचि तोरे ।।

⊗ बिलोकि=देखकर, कर जोरे=हाथ जोड़े, देबि=देवि, तोरे=तुम्हारे ।

★ **शतरूपाजी को हाथ जोड़े देखकर भगवान ने कहा हे देवि ! तुम्हारी जो इच्छा हो तुम भी वह वर माँग लो ।**

जो निज भगत नाथ तब अहहीं ।
जो सुख पावहिं जो गति लहहीं ।।

⊗ भगत=भक्त, अहहीं=हैं ,पावहिं=पाते हैं, लहही=प्राप्त करते हैं ।

★ **हे नाथ ! आपके जो निज जन हैं वे जो सुख पाते हैं और जिस परम गति को प्राप्त होते हैं ।**

सो सुख सो गति सोइ भगति,
सोइ निज चरन सनेहु ।
सो बिबेक सोई रहनि प्रभु,
हमहिं कृपा करि देहु ।।

⊗ सोइ=वही, सनेहु=स्नेह, रहनि=रहन-सहन ।

★ **हे प्रभु ! वही सुख, वही गति, वही भक्ति, वही अपने चरणों में प्रेम, वही ज्ञान, वही रहन-सहन,कृपा कर हमें दीजिए ।**

* भगवान से उनके प्रिय जनों के अनुरूप भावना तथा आचरण की क्षमता माँगना श्रेष्ठतम उपहार माँगना है ।

पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा ।
सत्य सत्य पन सत्य हमारा ।।

⊗ पुरउब=पूरी करूँगा, अभिलाष=अभिलाषा, पन=प्रण।

★ **(हे राजन्) मैं तुम्हारी अभिलाषा को पूरी करूँगा । मेरा प्रण सत्य है, सत्य है,सत्य है ।**

पुनि-पुनि अस कहि कृपा निधाना ।
अन्तरधान भए भगवाना ।।

⊗ पुनि-पुनि=बार-बार, अस=ऐसा, कहि=कहकर, अन्तरधान=अन्तर्ध्यान ।

★ **कृपा निधान भगवान बार-बार ऐसा कहकर अन्तर्ध्यान हो गये ।**

* सत्पात्र तपस्वी की पुण्य आकाँक्षा भगवान अवश्य पूरी करते हैं ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय-२

भवानी शंकरौ वन्दे,
श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ।
याभ्यां बिना न पश्यन्ति,
सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम् ।।

⊗ भवानी शंकरौ=शिव पार्वती दोनों, वन्दे=वन्दना करते हैं, रूपिणौ=रूप में, याभ्यां बिना=जिनके बिना, पश्यन्ति=देखते हैं, स्वान्तः-स्थमीश्वरम्=अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को ।

★ **शिव पार्वती, जो कि अन्तःकरण में श्रद्धा एवं विश्वास के रूप में स्थित हैं, उनकी वन्दना करते हैं, क्योंकि उनके बिना सिद्ध लोग अपने अन्तःकरण में स्थिति परमात्मा को नहीं देख पाते ।**

* (१) भगवान भावना रूप में अन्तःकरण में रहते हैं । (२) श्रद्धा विश्वास जाग्रत किये बिना उनकी अनुभूति नहीं होने पाती ।

सुनि मुनि कथा पुनीत पुरानी ।
जो गिरिजा प्रति शंभु बखानी ।।

⊗ पुनीत=पवित्र, पुरानी=प्राचीन, बखानी=कही ।

★ **हे मुनि ! वह पवित्र और प्राचीन कथा सुनो जो शिवजी ने पार्वती से कही थी ।**

जब प्रताप रवि भयऊ नृप,
फिरी दोहाई देस ।
प्रजापाल अति वेदविधि,
कतहुँ नहीं अघ लेस ।।

⊗ प्रताप रवि=राजा प्रतापभानु, फिरी दोहाई = ख्याति फैली, नृप=राजा, कतहुँ=कहीं भी, अघ=पाप, लेस=नाम मात्र का ।

★ **जब प्रतापभानु राजा बना तो सारे देश में उसकी ख्याति फैल गयी । प्रजा का पालन वह वेदों की मर्यादा के अनुसार करने लगा और कहीं नाम मात्र के लिये भी पाप कर्म नहीं रह गये ।**

नृप हितकारी सचिव सयाना ।
नाम धर्मरुचि सुक्र समाना ।।

⊗ हितकारी=भला करने वाला, सचिव=मन्त्री, सयाना=चतुर, सुक्र=शुक्राचार्य ।

★ **उसका मन्त्री धर्मरुचि नाम का था जो शुक्राचार्य के समान बुद्धिमान तथा राज का हित चाहने वाला था ।**

सचिव सयान बन्धु बलवीरा ।
आपु प्रताप पुंज रनधीरा ।।

⊗ बन्धु=भाई बलवीर=बहादुर, आपु-आप=स्वयं, प्रताप=शौर्य, पुंज=समूह ।

★ **उसका मन्त्री चतुर और भाई शक्तिशाली वीर था तथा स्वयं भी बड़ा प्रतापी तथा श्रेष्ठ योद्धा था ।**

* श्रेष्ठ व्यक्ति अपने सहायकों तथा परिजनों को भी अपने स्तर का बनाकर रखते हैं । एक व्यक्ति ही नहीं, सभी साथी भी श्रेष्ठ हों तभी बड़ा कार्य सभव होता है ।

काल पाइ मुनि सुनि सो राजा ।
भयउ निसाचर सहित समाजा ।।

⊗ काल पाइ=समय पाकर, सो=वह, भयउ=हुआ, सहित समाजा=परिवार समेत ।

★ **हे मुनि ! सुनो ! समय के प्रभाव से वह राजा अपने परिवार समेत राक्षस हो गया ।**

दस सिर ताहि बीस भुजदण्डा ।
रावन नाम बीर बरिबण्डा ।।

⊗ बरिबंडा=बड़ा ही शक्तिशाली, भुजदण्ड=हाथ ।

★ **वह रावन नाम का बड़ा ही शक्तिशाली शूरवीर था जिसके दस सिर और बीस भुजायें थीं ।**

भूप अनुज अरिमर्दन नामा ।
भयेऊ सो कुम्भकरन बलधामा ।।

⊗ अनुज=छोटा, बलधामा=बलवान ।

★ **राजा का छोटा भाई, जिसका नाम अरिमर्दन था, वह बलवान कुम्भकर्ण बना ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सचिव जो रहा धरमरुचि जासू ।
भयउ बिमात्र बंधु लघु तासू ।।

⊗ सचिव=मन्त्री, धर्मरुचि=जिसकी धर्म में रुचि थी, बिमात्र=सौतेला ।

★ **धर्म में रुचि रखने वाला उसका मन्त्री रावण का छोटा सौतेला भाई (विभीषण) हुआ ।**

* पूर्वजन्म के संस्कार नये जन्म में भी प्रकट होते हैं ।

रहे जे सुत सेवक नृप केरे ।
भए निसाचर घोर घनेरे ।।

⊗ सुत=पुत्र, घोर=भयानक, घनेरे=बहुत अधिक ।

★ **राजा के जो पुत्र और सेवक थे वे सभी बड़े भयानक राक्षस हुए ।**

कामरूप खल जिनस अनेका ।
कुटिल भयंकर बिगत बिबेका ।।

⊗ कामरूप=इच्छा के अनुसार रूप धारण करने वाले, खल=दुष्ट, जिनस=जाति, विगत=रहित ।

★ **राक्षस लोग मनमाना रूप धारण करने वाले थे । वे सब अनेकों जाति के भयंकर कुटिल, दुष्ट और विवेक रहित थे ।**

* उचित मर्यादा यह है कि अपना वाह्यरूप अपनी वास्तविक स्थिति के अनुरूप बनाया जाय, पर दुष्ट लोग मार्यादा तोड़कर स्वार्थ-पूर्ति के लिये चाहे जैसा वेष बना लेते हैं । इसी लिए वे कामरूप कहे गये ।

कृपा रहित हिंसक सब पापी ।
बरनि न जाहि विस्व परितापी ।।

⊗ विस्व=विश्व, परितापी=दुःख देने वाले ।

★ **वे पापी, हिंसा करने वाले, निर्दयी और संसार को कष्ट देने वाले हुये, उनका वर्णन नहीं किया जा सकता ।**

* (१) निशाचरों की कोई जाति विशेष नहीं होती है, वरन् जो ऊपर कहे गये दोषों से युक्त हैं, उन्हें राक्षस ही समझना चाहिए ।

कीन्ह विविध तप तीनहुँ भाई ।
परम उग्र नहिं बरनि सो जाई ।।

⊗ उग्र= कठिन, तीनहुँ=तीनों ।

★ **उन तीनों भाइयों ने नाना प्रकार की बड़ी कठिन तपस्या की थी, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता ।**

गयउ निकट तप देख बिधाता ।
माँगहु बर प्रसन्न मैं ताता ।।

⊗ बिधाता=ब्रह्मा, तात=सम्मान सूचक सम्बोधन ।

★ **उनका कठिन तप देखकर ब्रह्माजी उनके पास गये और उन्होंने कहा–हे तात ! मैं आप लोगों से प्रसन्न हूँ, जो वर माँगना हो माँगो ।**

* सही ढंग से की गयी साधना किसी की निरर्थक नहीं जाती ।

तिन्हहि देइ बर ब्रह्म सिधाए ।
हरषित ते अपने गृह आए ।।

⊗ बर-वर, हरषित-हर्षित=प्रसन्न होकर ।

★ **तीनों भाइयों को वर देकर ब्रह्माजी चले गये, उसके बाद वह लोग अपने घर वापस चले आये ।**

गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी ।
बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी ।।

⊗ गिरि=पर्वत, मझारी=बीच में, दुर्गम=जहाँ पहुँचना कठिन हो ।

★ **समुद्र के बीच त्रिकूट नामक पर्वत पर ब्रह्मा का बनाया एक दुर्गम किला था ।**

जेहि जस जोग बांट गृह दीन्हें ।
सुखी सकल रजनीचर कीन्हें ।।

⊗ जोग=योग्य, सकल=सभी, रजनीचर=राक्षस ।

★ **रावण आदि तीनों भाइयों ने उस किले में बने घर सभी राक्षसों को उनकी योग्यता के अनुसार बाँटकर प्रसन्न कर दिया ।**

कामरूप जानहिं सब माया ।
सपनेहुँ जिन्ह के धरम न दाया ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ कामरूप=अपनी इच्छानुसार रूप बनाना ।

★ **सभी राक्षस अपनी शक्ति से मनचाहा रूप बना लेते थे । वे माया को जानने वाले थे । उनके हृदय में दया और धर्म का भाव स्वप्न में भी नहीं था ।**

* दुराचारी व्यक्तियों के अन्त:करणों से सद्भावनायें समाप्त हो जाती हैं ।

जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं ।
नगर गाउ पुर आगि लगावहिं ।।

⊗ धेनु=गौ, द्विज=ब्राह्मण ।

★ **राक्षस लोग जिस-जिस स्थान में ब्राह्मणों और गौओं का निवास पाते थे उसी ग्राम, नगर और पुरवे में आग लगा दिया करते थे ।**

* सज्जन व्यक्ति जनता को दुष्टता से सावधान बनाये रखते हैं, इसलिए दुष्ट उन्हें नष्ट करने का प्रयास करते हैं ।

बाढ़े खल बहु चोर जुआरा ।
जे लंपट परधन परदारा ।।

⊗ खल=दुष्ट, लंपट=दूसरे की वस्तु के लिए लालायित ।

★ **उस समय दूसरे के धन को हरण करने वाले तथा दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार करने वाले दुष्ट, चोरी करने वाले और जुआरी बहुत बड़ी संख्या में हो गये थे ।**

* जब भले लोग दुष्टता से भयभीत हो जाते हैं तो समाज में अनैतिकता बढ़ने लगती है ।

मानहिं मातु पिता नहिं देवा ।
साधुन्ह सन करवावहिं सेवा ।।

⊗ करवावहिं=करवाते हैं ।

★ **उस समय लोग माता-पिता के साथ उचित व्यवहार नहीं करते थे और देवताओं को भी नहीं मानते थे । साधुओं की सेवा करने की अपेक्षा उल्टे उन साधुओं से सेवा लेते थे ।**

जिन्ह के यह आचरन भवानी ।
ते जानेहु निसचर सब प्रानी ।।

★ **भगवान शंकर कहते हैं कि हे पार्वती ! जिन लोगों के ऐसे आचरण होते हैं, उन सब प्राणियों को राक्षस ही समझना चाहिये ।**

* राक्षस रूप के नहीं बुरे कर्मों के कारण होते हैं ।

अतिसय देखि धर्म के ग्लानि ।
परम सभीत धरा अकुलानी ।।

⊗ अतिसय=बहुत, सभीत=भयभीत, धरा=पृथ्वी, ग्लानि=अरुचि ।

★ **इस प्रकार लोगों की धर्म के प्रति अत्यधिक अरुचि देखकर पृथ्वी बहुत ही भयभीत एवं व्याकुल हो गयी ।**

* अधर्म का भार पृथ्वी भी सह नहीं पाती है, क्योंकि धर्माचरण से ही संसार का संतुलन बना है ।

गिरि सरि सिन्धु भार नहिं मोही ।
जस मोहि गरुअ एक परद्रोही ।।

⊗ सरि-सरिता=नदी, गरुअ=भारी ।

★ **पृथ्वी कहने लगी, कि जितना भारी मुझे दूसरों का अनिष्ट करने वाला लगता है, इतना भार तो मुझको नदियों, समुद्रों और पर्वतों का भी नहीं मालुम पड़ता है ।**

* परद्रोही इस पृथ्वी पर भार स्वरूप है, उन्हें कहीं भी आश्रय नहीं मिलना चाहिए ।

बैठे सुर सब करहिं विचारा ।
कहँ पाइउ प्रभु करिअ पुकारा ।।

★ **उस समय सब देवताओं ने बैठकर विचार किया कि भगवान कहाँ मिलें, जिससे कि उनके सामने यह कष्ट कहें ।**

* अपनी ताकत के बाहर काम दिखे तो निराश होकर समर्थ व्यक्ति से सहयोग लेना चाहिये ।

पुर बैकुण्ठ जानि कह कोई ।
कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई ।।

⊗ पय=निधि, क्षीर सागर ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **कोई तो बैकुण्ठ धाम जाने के लिए कह रहा था और कोई कहता था कि नहीं भगवान क्षीर सागर में रहते हैं ।**

* बैकुण्ठ और क्षीर सागर को किसी स्थान या देश विशेष में समझ लेना मनुष्य की सबसे बड़ी भ्रान्ति है ।

तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊँ ।
अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ ।।

⊗ गिरिजा=(गिरि+जा) पर्वतराज की पुत्री अर्थात् पार्वती ।

★ **हे पार्वती जी ! उस समाज में मैं भी बैठा था, मैंने अवसर (मौका) पाकर बात कही ।**

* समझदार व्यक्ति उचित अवसर आने पर ही बोलते हैं ।

हरि व्यापक सर्वत्र समाना ।
प्रेम तें प्रगट होहि मैं जाना ।।

★ **मैं तो इस प्रकार जानता हूँ, कि प्रभु सब स्थानों पर समान रूप से विद्यमान हैं, प्रेम के वशीभूत हो प्रकट हो जाते हैं ।**

देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं ।
कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ।।

⊗ दिसि=शुद्ध रूप दिशा, बिदिसिहु=उप-दिशा ।

★ **ऐसा कौन-सा स्थान है जहाँ पर भगवान नहीं हैं, देश, काल, दिशा, विदिशा सब जगह हैं ।**

* यह ईश्वर की सर्वव्यापकता तथा प्रेम के वश में होने का प्रमाण है ।

अग जगमय सब रहित विरागी ।
प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी ।।

⊗ अग=जड़ (न चलने वाला) ।

★ **वे जड़ चेतन सब में व्याप्त होते हुये भी सबसे रहित हैं, उनका कहीं भी लगाव नहीं है । प्रेम से वह प्रकट होते हैं । जिस प्रकार अग्नि लकड़ी में दिखती नहीं पर रगड़ से प्रकट हो जाती है ।**

* स्थान विशेष के चक्कर में न पड़ कर प्रेमभावना को शुद्ध और प्रखर बनायें ।

मोर बचन सबके मन भाना ।
साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ।।

⊗ साधु साधु=अच्छा अच्छा, बखाना=वर्णन किया=कहा ।

★ **इस प्रकार मेरी बात सबको अच्छी लगी और ब्रह्माजी ने भी ''साधु साधु'' कहकर प्रशंसा की ।**

* समय पर कही गयी बात सब को अच्छी लगा करती है ।

सुनि बिरंच मन हरष तन,
पुलकि नयन बह नीर ।
स्तुति करत जोरि कर,
सावधान मति धीर ।।

⊗ विरंच=ब्रह्मा, हरष=प्रसन्न, पुलकि-तन =शरीर के रोंगटे खड़े हो जाना, मतिधीर=धैर्ययुक्त ।

★ **शिवजी के वचन सुनकर ब्रह्माजी का मन प्रसन्न हुआ, शरीर प्रेम से पुलकित हो गया और वह हाथ जोड़कर सावधानी और धैर्य के साथ भगवान की स्तुति करने लगे ।**

* अन्तर का सच्चा प्रेम उमड़ता है तो साधक में यह सब चिह्न प्रकट होते हैं ।

जानि सभय सुर भूमि सुनि,
वचन समेत सनेह ।
गगनगिरा गम्भीर भइ,
हरनि सोक सन्देह ।।

⊗ सभय=भयभीत, सनेह=स्नेह, गगनगिरा=आकाशवाणी, हरनि=दूर करने वाली ।

★ **उनकी भयजनित प्रार्थना सुनकर देवताओं और पृथ्वी को जानकर, आतंकित कष्ट और संदेह को दूर करने वाली आकाशवाणी हुई ।**

* दीन दुखी तथा स्नेह सम्पन्न व्यक्तियों की प्रार्थना भगवान को प्रभावित करती है ।

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा ।
तुम्हहि लागि धरिहऊँ नर बेसा ।।

⊗ सुरेसा=देवताओं के स्वामी, इन्द्र ।

★ **हे देवताओं के स्वामियों, मुनि, सिद्ध, भय मत करो मैं तुम सबके लिए मानव रूप धारण करूँगा ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अंसन्हसहित मनुज अवतारा ।
लेहऊँ दिनकर वंस उदारा ।।

⊗ अंसन्ह=अंशों सहित, दिनकर=सूर्य ।

★ **मैं अन्य शक्तियों सहित पवित्र सूर्य वंश में मनुष्य का अवतार लूँगा ।**

* (१) अवतारी पुरुषों के साथ उनकी सहयोगी शक्तियाँ भी अवतरित होती हैं । (२) भगवान श्रेष्ठ एवं सदाचारियों के घर अथवा अन्त:करण में अवतरित होते हैं ।

कस्यप अदिति महातप कीन्हा ।
तिन्ह कहुँ मैं पूरब वर दीन्हा ।।

⊗ पूरब=पहिले, महातप=श्रेष्ठ तपस्या ।

★ **किसी समय कश्यप ऋषि और उनकी धर्मपत्नी अदिति ने घोर तपस्या की थी, उसी के फलस्वरूप मैं उनको पहले ही वरदान दे चुका हूँ ।**

ते दसरथ कौसल्या रूपा ।
कोसलपुरी प्रगट नरभूपा ।।

★ **अयोध्यापुरी में वे ही (कश्यप ऋषि और उनकी पत्नी) महाराजा दशरथ और कौसल्या के रूप में मनुष्यों के राजा होकर प्रकट हुये हैं ।**

* कर्मों के आधार पर अच्छे कुल में जन्म होता है ।

तिन्ह कें गृह अवतरिहउँ जाई ।
रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई ।।

⊗ अवतरिहउँ=जन्म लूंगा, तिलक=टीका, श्रेष्ठ ।

★ **मैं रघुकुलों में श्रेष्ठ उन्हीं के घर जाकर चार भ्राताओं के रूप में जन्म लूँगा ।**

हरिहउँ सकल भूमि गरुआई ।
निर्भय होहु देव समुदाई ।।

⊗ गरुआई=भार, हरिहउँ=हरूँगा-मिटाऊँगा ।

★ **हे देववृन्द ! तुम भयभीत न हो, मैं पृथ्वी का भार हल्का करूँगा ।**

* दुष्ट व्यक्ति पृथ्वी पर भार रूप हैं ।

निज लोकहि बिरंच गे,
देवन्ह इहइ सिखाय ।
बानर तनु धरि धरि महि,
हरि पद सेबहु जाइ ।।

⊗ निज=अपना, महि=पृथ्वी, देवन्ह=देवताओं को, सेबहु=सेवा करो, इहइ=यही, तन=शरीर ।

★ **तब ब्रह्माजी ने देवताओं को यह सिखाया कि तुम सब बन्दरों का रूप धारण कर पृथ्वी पर जाओ और प्रभु के चरणों की सेवा करो ।**

* बुराई को समाप्त करने के लिए व्यवस्थित मोर्चाबन्दी करनी होती है ।

जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा ।
हरषे देव बिलंब न कीन्हा ।।

⊗ आयसु=आज्ञा, बिलम्ब=देरी ।

★ **ब्रह्मा जी ने जो-जो आज्ञा दी, उसको देवताओं ने प्रसन्न मन से तुरन्त पूरा किया, देरी नहीं की ।**

* नेक सलाह मानने में देरी नहीं करनी चाहिये ।

अवधपुरी रघुकुलमनि राऊ ।
बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ ।।

⊗ मनि=गणि, राऊ=राजा, बिदित=जाना हुआ, नाऊँ=नाम ।

★ **अयोध्यापुरी में रघुकुल में श्रेष्ठ दशरथ नाम के एक राजा हुए, जिनका नाम वेदों में प्रसिद्ध है ।**

* श्रेष्ठ व्यक्ति को बहुत यश मिलता है ।

एक बार भूपति मन माहीं ।
भै गलानि मोरे सुत नाहीं ।।

⊗ भै=हुई, गलानि=ग्लानि ।

★ **एक समय महाराजा के मन में बड़ी ग्लानि हुई कि मेरे कोई सन्तान नहीं है ।**

* पुत्र की कामना मनुष्य को उद्विग्न बना देती है ।

निज दुखसुख सब गुरुहि सुनायउ ।
कहि बसिष्ठ बहुबिधि समझायउ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ गुरहि=गुरु, बहुविधि=बहुत प्रकार से ।

★ राजा दशरथ ने गुरु वसिष्ठ को अपना सारा सुख दुःख सुनाया तब गुरु वसिष्ठ ने राजा को अनेक प्रकार से समझा कर कहा ।

* गुरु से मार्ग दर्शन लेने से कष्ट निवारण सुगम हो जाता है ।

धरहु धीर होइअहिं सुत चारी ।
त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी ।।

⊗ त्रिभवन=तीनों लोक, बिदित=जानना, भगत=भक्त ।

★ हे राजन् धीरज धरो, तीनों लोकों में प्रसिद्ध और भक्तों के कष्ट दूर करने वाले तुम्हारे चार पुत्र होंगे ।

सृंगी रिषिहि वसिष्ठ बोलावा ।
पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ।।

⊗ जग्य=यज्ञ, पुत्रकाम=पुत्रकामेषि यज्ञ ।

★ महर्षि वसिष्ठ जी ने श्रृङ्गी ऋषि को बुलाकर उनके द्वारा पुत्र की कामना के लिये पुत्रेष्टि यज्ञ कराया ।

* यज्ञ से लौकिक तथा पारलौकिक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं ।

भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें ।
प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें ।।

⊗ भगति=भक्ति, अगिनि=अग्निदेव, चरू=(हविष्यान्न, खीर) कर=हाथ ।

★ भक्ति भावना सहित मुनि ने आहूतियाँ दीं, तभी हाथ में हविष्यान्न लिये अग्निदेव प्रकट हुये ।

* यज्ञाहुति में भावना प्रधान है, वह हो, तभी यज्ञ का लाभ मिलता है ।

जो बसिष्ठ कछु हृदय विचारा ।
सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ।।

★ अग्नि देव ने राजा से कहा, जो कुछ ऋषि ने हृदय में विचार किया था तुम्हारा वह सब कार्य सिद्ध हो गया है ।

यह हबि बाँटि देहु नृप जाई ।
जथा जोग जेहि भाग बनाई ।।

⊗ हबि=हबिष्यान्न (खीर) जथाजोग-यथा योग्य=उचित ।

★ हे राजन् इस हबिष्यान्न (खीर) को ले जाकर, तुम जिसको उचित समझो वैसा भाग बनाकर वितरण कर दो ।

एहि बिधि गर्भ सहित सब नारी ।
भई हृदयँ हरषित सुख भारी ।।

⊗ विधि=प्रकार, हरषित=हर्षति, प्रसन्न होना ।

★ इस प्रकार तीनों रानियों ने गर्भ धारण किया और यह सब हृदय में बहुत ही प्रसन्न हुईं ।

मन्दिर मह सब राजहिं रानी ।
सोभा सील तेज की खानी ।।

⊗ मन्दिर=महल, मह=में, सील=शील, खानी=खान ।

★ तीनों रानियाँ महलों में शोभाशील और तेज की खान की तरह सुशोभित होने लगीं ।

* गर्भकाल में बच्चे पर श्रेष्ठ संस्कार डालने के लिये अपने सद्गुणों को विकसित करना चाहिये ।

सुख जुत कछुक काल चलि गयेऊ ।
जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ।।

⊗ जुत=संयुक्त

★ रानियों का इस प्रकार गर्भ काल का समय सुख-पूर्वक व्यतीत हुआ, और अवसर आ पहुँचा जिस समय में प्रभु को प्रकट होना था ।

* गर्भ-काल हर्ष एवं प्रसन्नता के वातावरण में ही बिताया जाना चाहिये ।

विप्र धेनु सुर सन्त हित,
लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु,
माया गुन गो पार ।।

⊗ विप्र=ब्राह्मण, धेनु=गाय, मनुज=मनुष्य, निर्मित=बनाया हुआ, गो=इन्द्रियाँ ।

★ भगवान ने ब्राह्मणों, गौ, देवों, सज्जन पुरुषों के भले के लिए मनुष्य रूप धारण किया । यह शरीर उनके अपने संकल्प (इच्छा) से उत्पन्न होता है, माया,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

गुण तथा इन्द्रियों से अर्थात् त्रिगुण पदार्थों से वह परे होता है ।

* भगवान का अवतरण एक दिव्य चेतना के रूप में होता है ।

दसरथ पुत्र जन्म सुनि काना ।
मानहुँ ब्रह्मानन्द समाना ।।

★ जब राजा दशरथ को पुत्र जन्म का संदेश मिला तो वह अति आनन्द में विभोर हो गये ।

गुरु बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा ।
आए द्विजन सहित नृप द्वारा ।।

⊗ हँकारा=बुलावा, द्विजन=ब्राह्मणजन, नृप द्वारा=राजद्वार पर ।

★ पुत्र जन्म का निमन्त्रण जब गुरु वसिष्ठ के पास पहुँचा तब वे ब्राह्मणों को लेकर राज महल में पहुचे ।

* सत् पुरुषों की उपस्थिति का महत्व समझने वाले सबसे पहले उन्हें ही बुलाते हैं ।

नन्दीमुख सराध करि,
जातकरम सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि,
नृप विप्रन्ह कहँ दीन्ह ।।

⊗ नंदीमुख=(बच्चा पैदा होते ही एक प्रकार का संस्कार, सराध=श्राद्ध, जातकरम=जात कर्म संस्कार, हाटक=स्वर्ण, सोना, धेनु=गाय, बसन=वस्त्र, मनि=मणि ।

★ राजा दशरथ ने प्रथम नन्दीमुख श्राद्ध किया, उसके पश्चात् जातकर्म संस्कार आदि कराये और सभी विप्रों को गौ, स्वर्ण, वस्त्र और मणियाँ दान में दीं ।

* प्रसन्नता के अवसर पर यथा शक्ति सत्कार्यों के लिये दान देना चाहिये ।

कछुक दिवस बीते एहि भाँती ।
जात न जानिअ दिन अरु राती ।।

⊗ जात=जाते हुए ।

★ कुछ दिन इस प्रकार बीत गये जैसे दिन और रात्रि जाते हुये नहीं जान पड़ते हैं ।

* हर्ष उल्लास में समय व्यतीत होने का पता नहीं लगता ।

नामकरन कर अवसरु जानी ।
भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी ।।

⊗ नामकरन=नामकरण-संस्कार ।

★ राजा ने जब देखा कि नाम करण संस्कार का समय आ गया तब ज्ञानवान मुनि श्री वसिष्ठ जी को बुलाया ।

* (१) संस्कार समय पर किये जायें (२) ज्ञानी लोक सेवी (मुनि) ही श्रेष्ठ संस्कार दे सकते हैं ।

धरे नाम गुरु हृदय विचारी ।
वेदतत्व नृप तब सुत चारी ।।

⊗ धरे=रक्खे ।

★ गुरु वसिष्ठ ने कहा कि मैंने हृदय से विचार कर ये नाम रखे हैं, ये चारों पुत्र वेद के तत्व अर्थात् साक्षात् भगवान हैं ।

* नाम विचारपूर्वक अच्छे रखे जावें ।

कछुक काल बीतें सब भाई ।
बड़े भए परिजन सुखदाई ।।

⊗ परिजन=कुटुम्बी (परिवार वाले) ।

★ चारों भाई कुछ समय पश्चात् बड़े हो गये और परिवार वालों को सुख पहुँचाने लगे ।

* सुपुत्र जैसे-जैसे बड़े होते हैं परिजनों को उनके आचरणों से प्रसन्नता ही होती है ।

चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई ।
विप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई ।।

⊗ चूड़ाकरन=चूड़ा-मुण्डन संस्कार विप्रन्ह=ब्राह्मण, पुनि=फिर, दक्षिना=दक्षिणा, बहु=बहुत ।

★ तब वसिष्ठ गुरु ने पहुँच कर चूड़ा-कर्म संस्कार सम्पन्न कराया उसके पश्चात् ब्राह्मणों को दक्षिणा दी गई ।

* मुण्डन संस्कार बुद्धि विकास का संस्कार है, गुरु इसका विशेष ध्यान रखें ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भए कुमार जबहिं सब भ्राता ।
दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ।।

★ जब चारों भाई बड़े हो गये तभी गुरु पिता और माता ने उन सबका यज्ञोपवीत-संस्कार कर दिया ।

* यज्ञोपवीत एक अनिवार्य संस्कार है गुरु और माता-पिता उसे समय पर करायें ।

गुरु गृहँ गए पढ़न रघुराई ।
अल्प काल विद्या सब आई ।।

★ श्री भगवान राम सभी भ्राताओं को साथ लेकर गुरु के आश्रम में पहुँचे, वहाँ उन्होंने अल्प समय में ही सभी विद्याएँ प्राप्त कर लीं ।

* संस्कारवान, कुशाग्र बुद्धि के लोग थोड़े ही संकेत से मार्ग-दर्शन से, अधिक सीख लेते हैं ।

जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोगा ।
करहिं कृपानिधि सो संजोगा ।।

⊗ पुर=नगर, संजोगा=संयोग ।

★ कृपा निधान, श्री भगवान राम उसी प्रकार की योजना बनाते थे जिससे कि सब नगर के लोग सुखी रहें ।

* बालकों में प्रारम्भ से ही समाज हित का दृष्टिकोण पैदा किया जाय ।

वेद पुरान सुनहिं मन लाई ।
आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई ।।

⊗ अनुजन्ह=छोटे भाई, मनलाई=ध्यान देकर ।

★ वे वेद पुराणों को मन लगाकर सुनते हैं उसके पश्चात् स्वयं ही छोटे भ्राताओं को समझा कर कहते हैं ।

* व्यक्ति को स्वयं ज्ञान उपार्जित कर अपने से पिछड़े लोगों को ऊँचा उठाने के लिये उनको प्रेरणा देना ही ज्ञान दान है ।

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा ।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा ।।

★ श्री भगवान राम सोकर उठने के पश्चात् प्रातःकाल ही प्रथम माता पिता और गुरु को मस्तक झुकाकर प्रणाम करते हैं ।

* अपने से बड़े लोगों के प्रति शिष्टता के व्यवहार का दैनिक जीवन में अभ्यास करना चाहिये ।

आयसु मांगि करहि पुर काजा ।
देखि चरित हरषइ मन राजा ।।

⊗ आयुस=आज्ञा, मांगि=मांगकर ।

★ भगवान राम माता पिता और गुरु से आज्ञा लेकर नगर के सभी कार्य करते हैं । इस प्रकार उनके शिष्ट व्यवहार को देखकर राजा दशरथ अपने मन में बहुत ही प्रसन्न होते हैं ।

* बालक बड़ों का मार्ग दर्शन लेकर सामाजिक कार्यों का अभ्यास करें तो उससे बड़ों को प्रसन्नता होती है ।

यह सब चरित कहा मैं गाई ।
आगिलि कथा सुनहु मन लाई ।।

⊗ आगिलि=आगे की, लाई=लगा कर ।

★ अब तक भगवान राम के चरित्र का वर्णन किया । अब आगे की कथा को मन लगाकर सुनिये ।

विस्वामित्र महामुनि ज्ञानी ।
बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी ।।

⊗ विपिन=वन, जंगल, शुभ=कल्याणकारी ।

★ ज्ञानी ऋषि विश्वामित्र जी वन में शुभ आश्रम समझकर रहते थे ।

* ज्ञानी अपनी साधना के लिये कोलाहल से दूर रहते हैं ।

जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं ।
अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ।।

⊗ जग्य=यज्ञ, जोग=योग, अति=बहुत ।

★ जिस स्थान पर महर्षि विश्वामित्र जी, जप और योग साधना किया करते थे, वहाँ सुबाहु और मारीच जैसे राक्षसों का भय सदैव बना रहता था ।

देखत जग्य निसाचर धावहिं ।
करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ।।

⊗ धावहिं= दौड़ आते, उपद्रव=विघ्न ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

★ राक्षस लोग यज्ञ को देखते ही दौड़ पड़ते थे और यज्ञ में विघ्न डालते थे, जिससे मुनि को बहुत कष्ट होता था ।

गाधितनय मन चिन्ता व्यापी ।
हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी ।।

⊗ तनय=पुत्र, व्यापी=छा गई ।

★ गाधि के पुत्र श्री विश्वामित्र जी बड़े ही चिन्तित हुये क्योंकि यह पापी राक्षस श्री भगवान द्वारा संहार किये बिना नहीं मारे जायेंगे ।

तब मुनिवर मन कीन्ह विचारा ।
प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा ।।

⊗ अवतरेउ=अवतार लिया, महि=पृथ्वी ।

★ तब श्रेष्ठ मुनि मन में विचार करने लगे कि भगवान राम पृथ्वी का बोझ हरण करने के लिए जन्म ले चुके हैं ।

बहुविधि करत मनोरथ,
जात लागि नहिं बार ।
करि मज्जन सरयू जल,
गए भूप दरबार ।।

⊗ बहुविधि=बहुत प्रकार से, मज्जन=स्नान ।

★ तब विश्वामित्र जी अनेक प्रकार चिंतन करते हुये तुरन्त ही अयोध्यापुरी पहुँचे और सरयू में स्नान करके राजा दशरथ के दरवार में पहुँच गये ।

* शुभ कार्य के करने में विलम्ब कैसा ।

मुनि आगमन सुना जब राजा ।
मिलन गयउ लै विप्र समाजा ।।

★ महर्षि विश्वामित्र के आने की सूचना जब राजा दशरथ को मिली तो वह ब्राह्मणजनों के समाज को साथ लेकर मिलने गये ।

करि दण्डवत मुनिहि सनमानी ।
निज आसन बैठारिन्ह आनी ।।

⊗ दण्डवत=डंडे के समान भूमि पर लेटकर किया गया प्रणाम्, सनमानी=सन्मान करके ।

★ राजा ने मुनि को साष्टांग प्रणाम किया और सम्मान करते हुये, उन्हें अपने सिंहासन पर बिठा दिया ।

* संतों-ऋषियों को समाज में उनकी महानता के कारण राजा से भी अधिक सन्मान दिया जाता था ।

तब मन हरषि बचन कह राऊ ।
मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ ।।

⊗ हरषि=हर्षित, राऊ=राजा, अस=इस प्रकार, काऊ=किसी ने ।

★ तब राजा ने मुनि से प्रसन्न होकर कहा, हे मुनि आपने मेरे ऊपर इस प्रकार की कृपा कभी नहीं की थी ।

केहि कारन आगमन तुम्हारा ।
कहहु सो करन न लावउँ बारा ।।

⊗ लावउँ=लगाना, वारा=देर ।

★ हे मुनि कहिये, आज आपका शुभ आगमन किस उद्देश्य के लिये हुआ है उसे मैं पूरा करने में विलम्ब नहीं करूंगा ।

* समाज के लिये जीने वाले व्यक्तियों (विचारकों) के लिए समझदार लोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहायता करने में अपना गौरव समझते थे ।

असुर समूह सतावहिं मोही ।
मैं जाचन आयउ नृप तोही ।।

⊗ सतावहिं=सताते हैं, जाचन=याचना, माँगना, तोही=तुम से ।

★ विश्वामित्र ने कहा, हे राजन् मुझे राक्षसों के झुंड के झुंड बहुत सता रहे हैं, इस कष्ट को दूर करने के लिये मैं तुमसे कुछ माँगने आया हूँ ।

* लोक मार्यादा के अनुसार दुष्टों को दण्ड देना राजा का उत्तरदायित्व है । अपराधियों को प्रयास पूर्वक राज सत्ता द्वारा दण्डित किया जाना चाहिये ।

अनुज समेत देहु रघुनाथा ।
निसिचर बध मैं होब सनाथा ।।

⊗ अनुज=छोटा वध=मारना, होब=हो जाउंगा सनाथा=सुरक्षित ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ भगवान राम को छोटे भाई के साथ मुझको दे दो,इन के द्वारा राक्षसों का विनाश होगा और मेरा प्रयास सार्थक हो जायेगा ।

सौंपे भूप रिषिहि सुत,
बहुबिधि देइ असीस ।
जननी भवन गए प्रभु,
चले नाय पद सीस ।।

⊗ सौंप=सौंपना-हवाले कर देना, असीस=आशीर्वाद।

★ तब राजा दशरथ ने अपने दोनों पुत्र अनेक प्रकार से आशीर्वाद देकर महर्षि विश्वामित्र जी को सौंप दिये । उसके बाद भगवान राम माता के महल में गये और उनके चरणों में साष्टांग दण्डवत करके ऋषि के साथ चल दिये ।

* (१) श्रेष्ट व्यक्ति जन-हित के लिये अपनी प्रिय वस्तु प्रसन्नता से समर्पित कर देते हैं । (२) श्रेष्ठकार्य के लिये बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त करना उचित है ।

चले जात मुनि दीन्ह दिखाई ।
सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ।।

★ रास्ते में जाते ऋषि ने श्री राम को ताड़का राक्षसी दिखायी शब्द सुनकर वह क्रोध करके उन पर झपटी ।

एकहि वान प्रान हरि लीन्हा ।
दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ।।

★ श्री रामचन्द्र जी ने एक ही वाण मारकर उसके प्राण ले लिये और उसे दीन समझ कर श्रेष्ठ गति दी ।

* (१) पापी स्त्री रूप में भी हो तो भी उसे दण्ड दिया ही जाना चाहिये । (२) ताड़का दीन थी अर्थात् राक्षस प्रमुखों के दबाब में गलत काम करती थी । गलत काम करने का दण्ड भी दिया तथा उसकी मजबूरी और कर्तव्य-पालन को ध्यान में रखकर श्रेष्ठ गति भी दी ।

तब ऋषि निज नाथहिं जिय चीन्हीं ।
विद्या निधि कहुँ विद्या दीन्हीं ।।

⊗ चीन्ही-पहचानकर, विद्यानिधि=विद्या के भण्डार ।

★ तब ऋषि विश्वामित्र ने श्रीराम की पात्रता समझकर उन विद्या सम्पन्न को और भी विद्या सिखाई ।

जाते लागन क्षुधा पिपासा ।
अतुलित बल तनु तेज प्रकासा ।।

⊗ जाते=जिससे, क्षुधा-भूख, पिपासा=प्यास, अतुलित=जिसका मुकाबला न हो सके ।

★ उन्होंने श्री राम लक्ष्मण को ऐसी विद्या सिखाई जिसके प्रभाव से भूख प्यास नहीं सताये और मनुष्य में अनौखा बल और तेज प्रकट हो जाये ।

* (१) श्री राम ने अपने कार्य से अपनी पात्रता सिद्ध की तो उन्हें आगे की विद्या मिल गयी । (२) ऋषि ने सहायता मांगी पर ज्ञान दे भी सके । कोई व्यक्ति एक विषय में सहायता मांगता है, तो दूसरे में दे भी सकता है ।

प्रात कहा मुनि सन रघुराई ।
निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई ।।

★ आश्रम पहुँचकर श्री राम ने सबेरे महर्षि विश्वामित्र जी से कहा अब आप निर्भय होकर अपना यज्ञ प्रारम्भ कीजिये ।

होम करन लागे मुनि झारी ।
आपु रहे मख की रखवारी ।।

⊗ होम=यज्ञ हवन, झारी=सब के सब, मख=यज्ञ ।

★ भगवान राम के वचनों को सुनकर समस्त मुनियों ने हवन करना प्रारम्भ कर दिया और भगवान राम यज्ञ की रक्षा (रखवाली) के लिये उपस्थति रहे ।

* (१) वीर आत्म विश्वासी भी होते हैं (२) समर्थ व्यक्तियों को चाहिये कि सत्कार्यों में विघ्न न आने देने के लिये सतर्क रहें ।

सुनि मारीच निसाचर कोही ।
लै सहाय धावा मुनिद्रोही ।।

⊗ कोही=क्रोधी, सहाय=सहायक ।

★ मुनियों के शत्रु मारीच राक्षस ने जब यह समाचार सुना तो वह क्रोधी राक्षस अपने साथियों को लेकर दौड़ पड़ा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बिनु फर बान राम तेहि मारा ।
सत जोजन गा सागर पारा ।।

⊗ फर=फल, फार, सत=सौ, जोजन=योजन, पारा=पार ।

★ **भगवान राम ने बिना फर वाले बाण के द्वारा प्रहार किया जिससे वह सौ योजन समुद्र के पार जाकर गिर गया ।**

पावक सर सुबाहु पुनि मारा ।
अनुज निसाचर कटकु सँघारा ।।

⊗ पावक=अग्नि, सर=वाण, कटकु=सेना ।

★ **भगवान राम ने पुनः अग्निवाण से सुबाहु को मार डाला और छोटे भ्राता लक्ष्मणजी ने समस्त राक्षसों की सेना का संहार कर दिया ।**

* वीर पुरुष पहले शत्रु को हानि पहुँचाये बिना अपनी शक्ति का परिचय देते हैं फिर भी न मानने पर उनका संहार कर देते हैं ।

मारि असुर द्विज निर्भयकारी ।
अस्तुति करहि देव मुनि झारी ।।

★ **इस तरह भगवान ने सब राक्षसों को मार डाला, ब्राह्मण निर्भय हो गये, तभी सब देवता मुनि भगवान का गुणगान करने लगे ।**

* दुष्टों के समाप्त होने से सज्जन सुखी होते हैं और मुक्ति दिलाने वाले को यश मिलता है ।

तब मुनि सादर कहा बुझाई ।
चरित एक प्रभु देखिउ जाई ।।

★ **इसके बाद मुनि ने भगवान राम से सम्मान पूर्वक समझाकर निवेदन किया कि हे प्रभु हमारे साथ चलकर एक चरित्र को देखिये ।**

धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा ।
हरषि चले मुनिवर के साथा ।।

★ **रघुकुल में प्रधान श्रीरामचन्द्रजी ने जब ऋषि से धनुष यज्ञ की बात सुनी तो विश्वामित्र जी के साथ हर्षित होकर चल दिये ।**

हरिषि चले मुनि बृन्द सहाया ।
बेगि विदेह नगर नियराया ।।

⊗ वृन्द=समूह, सहाया=सहायक, बेगि=शीघ्र, विदेह=राजा जनक, नियराय=निकट ।

★ **सन्तों की सहायता करने वाले श्री राम जी प्रसन्नता पूर्वक चले और शीघ्र ही जनकपुरी जा पहुँचे ।**

* उल्लासपूर्वक चलने से लक्ष्य तक जल्दी पहुँच सकते हैं ।

विश्वामित्र महामुनि आए ।
समाचार मिथिलापति पाए ।।

★ **राजा जनक को यह समाचार मिला कि महर्षि विश्वामित्र जी का आगमन हुआ है ।**

कीन्ह प्रनाम चरन धरि माथा ।
दीन्ह असीस मुदित मुनि नाथा ।।

⊗ धरि माथा=मस्तक टेक कर, मुदित=प्रसन्न ।

★ **राजा जनक ने उनके चरणों पर सिर रखकर प्रणाम किया और महर्षि ने उन्हें प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया ।**

* राजा द्वारा ज्ञानियों का सम्मान किया जाना स्वाभाविक है ।

कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक ।
मुनिकुल तिलक कि नृप कुल पालक ।।

⊗ तिलक= आभूषण, पालक=पालने वाला ।

★ **राजा जनक ने पूछा हे, नाथ ! आपके साथ जो दो यह सुन्दर बालक हैं, ये मुनि कुल के आभूषण हैं अथवा राजवंश के आश्रयदाता हैं ।**

* तेजवान् व्यक्ति अपनी विशेषता की छाप सहज ही डालते हैं ।

रघुकुल मनि दशरथ के जाये ।
मम हित लागि नरेश पठाए ।।

⊗ हित=भला, नरेश=राजा ।

★ **तब मुनि ने राजा जनक से कहा यह रघुकुलों में श्रेष्ठ महाराज दशरथ के सुपुत्र हैं, उन्होंने हमारे हित के लिये इन्हें हमारे साथ भेज दिया है ।**

रामु लखन दोउ बन्धुवर ।
रूप सील बल धाम ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मख राखेउ सबु साखि जुग ।
जिते असुर संग्राम ।।

⊗ मख=यज्ञ, साखि=साक्षी, जुग-युग=सारा जगत, संग्राम=युद्ध ।

★ **भगवान राम और लक्ष्मण दोनों ही भाई शीलवान, रूपवान और अपार बलशाली हैं । सारा संसार इस बात का साक्षी है कि इन्होंने यज्ञ की रक्षा के लिए युद्ध में राक्षसों को हरा दिया ।**

* (१) बच्चों द्वारा किये गये अच्छे कामों की प्रशंसा करके उनका उत्साह बढ़ाया जाना चाहिए । (२) समाज का हित करने वालों की प्रशंसा सब जगह होने लगती है ।

निसि प्रवेस मुनि आयसु दीन्हा ।
सबहीं सन्ध्या बन्दनु कीन्हा ।।

⊗ निसि=रात्रि, आयसु=आज्ञा ।

★ **सूर्य अस्त के उपरान्त सन्ध्या के समय मुनि ने आज्ञा दी तब सभी लोगों ने सन्ध्या वन्दन किया ।**

कहत कथा इतिहास पुरानी ।
रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी ।।

⊗ रुचिर=सुन्दर, रजनि=रात्रि, जुग=दो, जाम=पहर, प्रहर (तीन घण्टे का समय) सिरानी=बीत गयी ।

★ **फिर मुनि ने इतिहास की और प्राचीन कथाओं को सुनाया इस प्रकार कहते-कहते सुन्दर रात्रि के दो पहर व्यतीत हो गये, गुजर गये ।**

* बड़ों को चाहिये कि बच्चों को श्रेष्ठ कथाएँ सुनायें । इससे वे संस्कारवान बनते हैं ।

मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई ।
लगे चरन चापन दोउ भाई ।।

⊗ शयन=सोना, चापन=दबाना ।

★ **तब मुनि विश्वामित्र शयन करने लगे और दोनों भाई चरण दबाने लगे ।**

* बच्चों को नियमित रूप से बड़ों की सेवा करनी चाहिए ।

तेइ दोउ बन्धु प्रेम जन जीते ।
गुरूपद कमल पलोटत प्रीते ।।

⊗ तेइ=वे, जनु=से, पलोटत=दबाना, प्रीते=प्रेम से ।

★ **वे दोनों भाई मानो प्रेम द्वारा जीत लिये गये हैं, इस लिए गुरु के पैर दबा रहे हैं ।**

बार बार मुनि आज्ञा दीन्ही ।
रघुवर जाइ सयन तब कीन्ही ।।

★ **मुनि ने दोनों भाइयों से बार-बार कहा तब भगवान राम शयन के लिये चले गये ।**

* जिनका मन सेवा में लगता है वे उसे जल्दी छोड़ते नहीं ।

चापत चरन लखन उर लाए ।
सभय सप्रेम परम सचु पाए ।।

⊗ चापत=दबाना, सचु=सुख

★ **श्रीलक्ष्मण जी भगवान राम के चरणों को भय और प्रेम सहित हृदय से लगाकर बड़े सुख का अनुभव करते हुये उनको दबा रहे थे ।**

पुनि पुनि प्रभु कह सोबहु ताता ।
पौढ़े धरि उर पद जल जाता ।।

⊗ पौढ़े=लेटे, उर=हृदय, जलजाता=कमल ।

★ **श्री भगवान राम ने लक्ष्मण जी से बार-बार कहा कि हे तात अब सो जाओ, तब लक्ष्मणजी भगवान राम के चरणों को हृदय से लगाकर लेट रहे ।**

* निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा व्यक्ति को प्रेम से विह्वल कर देती है ।

उठे लखनु निसि बिगति मुनि,
अरुनसिखा धुनि कान ।
गुरु ते पहिलेहिं जगतपति,
जागे राम सुजान ।।

⊗ अरुनसिखा=मुर्गा, धुनि=आवाज, जगतपति=भगवान राम, सुजान=जानकर ।

★ **रात्रि के बीत जाने पर लक्ष्मणजी मुर्गे की बाँग सुनकर उठ बैठे और मर्यादा के जानकार भगवान श्री रामजी भी गुरु से पहिले ही जाग गये ।**

* बुद्धिमान सेवाभावी लोग सदैव ही सेवा के लिये सतर्क रहते हैं और आलस्य को दूर कर देते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकल सौच करि जाय नहाए ।
नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए ।।

⊗ सकल=सब, सौच=शौच, निबाहि=फुरसत पाना (समाप्त करना), नाए=नवाना-झुकाना ।

★ **दोनों भाइयों ने शौच क्रिया के उपरान्त स्नान किया और फिर नित्यकर्म (संध्या-हवनादि) को समाप्त करके मुनि को सिर झुकाकर प्रणाम किया ।**

* अपने नियमित कार्य समय पर करके बड़ों के पास उनकी आज्ञानुसार कार्य करने पहुँच जाना चाहिये ।

समय जानि गुरु आयसु पाई ।
लेन प्रसून चले दोउ भाई ।।

⊗ आयसु=आज्ञा, प्रसून=फूल ।

★ **मुनिवर की पूजा का समय हुआ जानकर दोनों भाई गुरु की आज्ञा लेकर फूल लेने के लिये चल पड़े ।**

* सेवा परायण व्यक्ति समय पर स्वत: कार्य प्रारम्भ कर देते हैं उनसे कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती ।

तेहि अवसर सीता तहँ आई ।
गिरिजा पूजन जननि पठाई ।।

⊗ गिरिजा=पर्वत-पुत्री-पार्वती, जननी=माता ।

★ **उसी समय सीताजी भी बाग में पहुँचीं क्योंकि उनकी माता ने आज्ञा देकर गिरिजा मन्दिर में पूजन के लिये भेजा था ।**

* पूजा, उपासना दैनिक जीवन का एक अंग है ।

देखि सीय सोभा सुख पावा ।
हृदयँ सराहत वचनु न आवा ।।

⊗ सीय=सीता जी, सराहत=सराहना ।

★ **भगवान राम ने सीताजी की सुन्दरता को देखकर मन में सुख की अनुभूति की । उसकी मन ही मन सराहना करने लगे । उन्हें अपने भाव व्यक्त करने के लिये शब्द नहीं मिल रहे थे ।**

* अन्तर की भावना व्यक्त करने में शब्द असमर्थ हो जाते हैं ।

सीय सोभा हियँ वरनि प्रभु,
आपनि दसा बिचारि ।
बोले सुचि मन अनुज सन ।
वचन समय अनुहारि ।।

⊗ हियँ=हृदय, वरनि=वर्णन, सुचि=पवित्र, अनुहारि=अनुकूल ।

★ **श्री भगवान राम ने अपनी दशा को विचार कर हृदय में सीता जी की सुन्दरता का वर्णन किया और समय के अनुरूप पवित्र मन से अपने छोटे भ्राता लक्ष्मण से कहा ।**

* बुद्धिमान आवेग आने पर भी देश काल पात्र का ध्यान रखकर ही बोलते हैं ।

तात जनक तनया यह सोई ।
धनुषजग्य जेहि कारन होई ।।

⊗ तात=भ्राता, तनया=कन्या ।

★ **हे लक्ष्मण भ्राता ! जिसके लिये धनुष यज्ञ हो रहा है, वह जनक जी की सुपुत्री यही है ।**

पूजन गौरि सखी लै आईं ।
करत प्रकास फिरत फुलबाईं ।।

⊗ गौरि=गौरी, पार्वतीजी, फुलवाईं=फुलवाड़ी ।

★ **देवी पार्वती जी के पूजन के लिये सखियों के साथ आयी हैं, उनके प्रभाव से फुलवारी प्रकाशित-सी हो उठी है ।**

* गुणी व्यक्ति जिधर जाता है, उससे उस स्थान की शोभा और बढ़ जाती है ।

रघुवंसिन्ह कर सहज सुभाऊ ।
मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ ॥

⊗ कर=का, कुपंथ=कुमार्ग, काऊ=कभी ।

★ **रघुवंश कुल वालों का यह जन्मजात स्वभाव है कि उनका मन कभी भी कुमार्ग पर पैर नहीं रखता ।**

* सभ्य समाज के व्यक्ति का मन स्वाभाविक रूप से ही अनैतिक कार्य,दुराचरण की ओर नहीं झुकता ।

मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी ।
जेहि सपनेहुँ पर नारि न हेरी ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ मोहि=मुझे, अतिसय=अत्यन्त, प्रतीत=विश्वास, हेरी=देखी ।

★ मुझे तो अपने मन पर पूर्ण विश्वास है कि उसने दूसरे की स्त्री को कभी स्वप्न में भी नहीं देखा है ।

* (१) पर-स्त्री का चिन्तन भी नहीं करना चाहिये (२) जिनका मन वश में है उनमें बड़ा आत्म-विश्वास रहता है ।

जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी ।
नहि पावहिं परतिय मन डीठी ।।

⊗ लहहिं=पाते हैं, रिपु=शत्रु, रन=युद्ध, पीठी=पीठ, डीठी=दृष्टि ।

★ जो युद्ध में लड़ाई के मैदान से पीठ दिखाकर नहीं भागते और जिनकी दृष्टि और मन को दूसरी स्त्रियाँ अपनी तरफ नहीं खींच पाती हैं ।

* बहादुरी केवल युद्ध में ही नहीं, मन को कुमार्ग पर न जाने देने में भी है ।

मंगन लहहिं न जिन्ह कै नाहीं ।
ते नरवर थोरे जग माहीं ।।

⊗ मंगन=भिखारी, नरवर=श्रेष्ठ पुरुष, थोरे=थोड़े ।

★ और जिनके यहाँ से याचक खाली साथ नहीं लौटते हैं, ऐसे श्रेष्ठ पुरुष संसार में बहुत कम मिलते हैं ।

* (१) अभावग्रस्तों की यथा शक्ति सहायता करें (२) शौर्य, संयम, सम्पन्न तथा निर्लोभ व्यक्ति कम मिलते हैं ।

राम कहा सब कौशिक पाहीं ।
सरल सुभाउ छुअत छल नाही ।।

⊗ सुभाउ=स्वभाव, छल=धोखा-कपट ।

★ श्री रामचन्द्रजी ने यह सारा वृतान्त जाकर विश्वामित्र जी को बता दिया क्योंकि वे सरल स्वभाव युक्त थे जिन्हें कपट छू भी नहीं पाता ।

* अपने मन की स्थिति गुरु के सन्मुख व्यक्त कर देनी चाहिये ।

सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही ।
पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ।।

⊗ सुमन=फूल, असीस=आशीर्वाद ।

★ मुनि ने फूलों को प्राप्त कर पूजा की, उसके बाद दोनों भ्राताओं को आशीर्वाद दिया ।

करि भोजनु मुनिवर विग्यानी ।
लगे कहन कछु कथा पुरानी ।।

★ श्रेष्ठ ज्ञानवान विश्वामित्र मुनि जी भोजन करने के पश्चात् कुछ पुरानी कथायें सुनाने लगे ।

* बुद्धिमान व्यक्ति अपना समय निरर्थक गप्पों में नहीं, उपयोगी चर्चा में बिताते हैं ।

बिगत दिवस गुरु आयसु पाई ।
सन्ध्या करन चले दोउ भाई ।।

⊗ बिगत=बीता हुआ, आयसु=आज्ञा ।

★ इतने में दिन समाप्त हो गया और गुरु से आज्ञा प्राप्त कर दोनों भ्राता संध्या करने चले गये ।

* संध्या वन्दन आत्म-विकास के लिये उपयोगी है ।

पुनि मुनिवृन्द समेत कृपाला ।
देखन चले धनुष मखसाला ।।

⊗ मुनिवृन्द=मुनियों का समूह, कृपाला=कृपालु, धनुष मखसाला=धनुष यज्ञशाला ।

★ फिर कृपालु भगवान राम समस्त मुनियों के साथ धनुष यज्ञशाला देखने चल पड़े ।

राज समाज विराजत रूरे ।
उडगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे ।।

⊗ विराजत=स्थित, रूरे=उत्तम, उडगन=तारागण, महुँ=में, जनु=मानौ, जुग=जोड़ा-दो, बिधु=चन्द्रमा ।

★ वहाँ दोनों भाई सभी राजाओं के मध्य में ऐसे शोभायमान हो रहे थे जैसे दो पूर्ण चन्द्रमा तारागणों के मध्य में हों ।

* प्रतिभावान् व्यक्तियों का अस्तित्व कभी छिप नहीं सकता ।

जिन्ह कें रहीं भावना जैसी ।
प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ।।

★ जिसकी भावना जैसी थी उसने उसी रूप में श्री राम जी को देखा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* भगवान स्थूल आँखों से नहीं भावनात्मक दृष्टि से देखे जाते हैं ।

देखहि रूप महा रन धीरा ।
मनहु बीर रसु धरे सरीरा ।।

⊗ रनधीरा=रणधीर-वीर, वीर रसु=वीर रस ।

★ **वीरों को उनका रूप मूर्तिमान वीर-रस की तरह दिखाई दिया ।**

* वीर पुरुष भगवान से प्रेरणा प्राप्त करते हैं ।

डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी ।
मनहुँ भयानक मूरति भारी ।।

★ **जो राजा कुटिल थे उन सबको भंयकर दिखाई दिये ।**

* दुराचारी व्यक्तियों को भगवान का भय ही लगा रहता है ।

रहे असुर छल छोनिप वेषा ।
तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा ।।

⊗ असुर=राक्षस, छोनिप=राजा, तिन्ह=उनको, प्रगट=प्रत्यक्ष ।

★ **वहाँ पर जो राक्षस राजा का बनावटी वेष बनाकर बैठे थे, उन्होंने प्रभु रामचन्द्र जी को प्रत्यक्ष काल के समान देखा ।**

* छल से बाहरी रूप बदला जा सकता है, आंतरिक भावना नहीं ।

बिदुषन्ह प्रभु विराटमय दीसा ।
बहु मुख कर पग लोचन सीसा ।।

⊗ बिदुषन्ह=विद्वानों को, दीसा=दिखाई दिया, कर=हाथ ।

★ **विद्वानों ने उन्हें विराट रूप में कई मुख, हाथ, पैर, आँख और कई सिर वाला देखा ।**

एहि विधि रहा जाहि जस भाऊ ।
तेहि तस देखेउ कोसलराऊ ।।

⊗ एहि विधि=इस प्रकार, जाहि=जिसका, कोसलराऊ=श्रीराम ।

★ **इस प्रकार जिसके जैसे भाव थे उसी के अनुसार उन लोगों ने श्री रामचन्द्र जी को देखा ।**

* भगवान और संसार हमें अपनी आन्तरिक स्थिति के अनुरूप ही भला-बुरा दिखाई देता है ।

सब मंचन्ह तें मंचु एक,
सुन्दर बिसद विशाल ।
मुनि समेत दोउ बन्धु तहँ,
बैठारे महिपाल ।।

⊗ मंच=बैठने का ऊँचा स्थान, बिसद=विशद-अधिक, विशाल=बड़ा, महिपाल=राजा ।

★ **वहाँ पर बने हुए मचों में जो एक अत्यन्त सुन्दर तथा बहुत बड़ा मंच था उसी पर राजा ने मुनि (विश्वामित्र) के साथ दोनों भाइयों को बैठाया ।**

जानि सुअवसरु सीय तब,
पठई जनक बोलाइ ।
चतुर सखीं सुन्दर सकल,
सादर चलीं लिवाइ ।।

⊗ सकल=सब, पठई=भेजी, सादर=आदर के साथ ।

★ **उस समय जनक जी ने अच्छा अवसर जान कर सीता जी को बुलवाया । तब चतुर तथा सुन्दर सखियाँ आदर के साथ उन्हें लेकर चलीं ।**

बोले बन्दी वचन वर,
सुनहु सकल महिपाल ।
पन बिदेह कर कहहि हम,
भुजा उठाय बिसाल ।।

⊗ वर=श्रेष्ठ, महिपाल=राजा, पन=प्रण, बिदेह=राजा जनक, विसाल=विशाल ।

★ **तब भाटों ने अपनी भुजा उठाकर घोषणा की कि हे पृथ्वी की पालना करने वाले राजागण ! सुनिये हम राजा जनक की प्रतिज्ञा बतलाते हैं ।**

रावन बानु महाभट भारे ।
देखि सरासन गवहिं सिधारे ।।

⊗ बानु=बाणासुर, महाभट=बड़े योद्धा, सरासन=धनुष, सिधारे=चले गये ।

★ **रावण और बाणासुर जैसे महायोद्धा जिस धनुष को देख कर चुपचाप चले गये ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोइ पुरारि कोदण्ड कठोरा ।
राज समाज आज जोइ तोरा ।।

⊗ सोइ=वही, पुरारि=शंकर, कोदण्ड=धनुष, कठोरा= कठोर, तोरा=तोड़ेगा ।

★ **उसी शिवजी के कठोर धनुष को आज इस राजसमाज में जो तोड़ेगा ।**

त्रिभुवन जय समेत वैदेही ।
बिनहि बिचार बरइ हठि तेही ।।

⊗ त्रिभुवन=तीनों लोकों, बिनहि बिचार=बिना सोचे, वरइ=वरण करेगा, हठि=हटपूर्वक, तेही=उसी को ।

★ **तीनों लोकों की विजय के साथ ही जानकी जी उसी को निश्चित रूप से वरण करेंगी ।**

भूप सहस दस एकहि बारा ।
लगे उठावन टरइ न टारा ।।

⊗ सहस दस=दस हजार, बारा=बार, टरइ=हिलना ।

★ **तब दस हजार राजा एक ही बार धनष को उठाने लगे तो भी वह उनके प्रयास से हिला भी नहीं ।**

डगइ न सम्भु सरासनु कैसे ।
कामी वचन सती मन जैसे ।।

⊗ डगेइ=डिगता, सरासनु-शरासन=धनुष ।

★ **शिवजी का धनुष उसी प्रकार नहीं डिगता है जैसे कामी पुरुष के वचनों से सती का मन कभी चलायमान नहीं होता ।**

* सती स्त्री का मन गलत दिशा में आकर्षित नहीं होता ।

सब नृप भये जोग उपहासी ।
जैसे बिन बिराग सन्यासी ।।

⊗ जोग=योग्य, उपहासी=उपहास के, विराग=वैराग्य ।

★ **सभी राजागण उसी प्रकार उपहास के योग्य हो गये जिस प्रकार बिना वैराग्य भावना के संन्यासी उपहास के योग्य बन जाता है ।**

* आन्तरिक स्तर वैसा न हो और वेष बनाये फिरे तो उपहास सहना पड़ता है ।

विस्वामित्र समय सुभ जानी ।
बोले अति सनेहमय बानी ।।

★ **विश्वामित्र जी शुभ समय जानकर प्रेम भरे स्वर से कहने लगे ।**

* बुद्धिमान उपयुक्त समय आने पर ही बोलते हैं ।

उठहु राम भंजहु भव चापा ।
मेटहु तात जनक परितापा ।।

⊗ भजहु=तोड़ो, भव=शंकर, चापा-चाप=धनुष परितापा= दु:ख ।

★ **हे राम ! उठो और शंकर जी का धनुष तोड़कर हे तात ! जनक जी का दु:ख दूर करो ।**

सुनि गुरु वचन चरन सिरु नावा ।
हरषु बिषाद न कछु उर आवा ।।

⊗ नावा=झुकाया, हरषु=हर्ष, प्रसन्नता, बिषाद=दु:ख ।

★ **गुरु का बचन सुनते ही श्री रामचन्द्र जी ने उनके चरणों में सिर नवाया । उस समय उनके मन में न हर्ष हुआ, न विषाद ।**

* आज्ञा निर्लिप्त भाव से मानी जानी चाहिए ।

ठाढ़ भए उठि सहज सुभाएँ ।
ठवनि जुवा मृगराज लजाएँ ।।

⊗ ठाढ़ =खड़े, भए=हुए, उठि=उठकर, ठवनि=ढंग, जुवा= जवान, मृगराज=सिंह- ।

★ **वे अपने ढ़ंग (खड़े होने की शान) से जवान सिंह को भी लजाते हुए सहज स्वभाव से उठ खड़े हुए ।**

* व्यक्ति की सहज गति में भी गौरव झलकता है ।

मन्त्र परम लघु जासु बस,
बिधि हरि हर सुर सर्व ।
महामत्त गजराज कहुँ,
बस कर अंकुस खर्व ।।

⊗ परम लघु=बहुत छोटा, जासु बस=जिसके वश, सर्व=सभी, महामत्त=मतवाला, अंकुस=अंकुश, खर्व= छोटा सा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ जिसके वश में ब्रह्मा, विष्णु, शिव और सभी देवता हैं, वह मन्त्र अत्यन्त छोटा होता है । महान् मतवाले गजराज को छोटा-सा अंकुश वश में कर लेता है ।

* गुण और प्रतिभा की तुलना शारीरिक लम्बाई चौड़ाई से नहीं की जा सकती है ।

गुरुहि प्रनामु मनहि मन कीन्हा ।
अति लाघवँ उठाय धनु लीन्हा ।।

⊗ प्रनाम=प्रणाम-अभिवादन, लाघवँ=फुर्ती से ।

★ उन्होंने मन ही मन गुरु को प्रणाम किया और बड़ी फुर्ती से धनुष को उठा लिया ।

लेत चढ़ावत, खैंचत गाढ़े ।
काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़े ।।

⊗ चढ़ावत=चढ़ाते, खैंचत=खींचते, गाढ़े =जोर से, लखा= देखा, ठाढ़े=खड़े ।

★ उन्होंने धनुष को कब उठाया, कब चढ़ाया, और कब खींचा, इसका किसी को पता नहीं लगा, सबने श्री रामजी को धनुष खीचें खड़े देखा ।

* जो कार्य साधारण लोगों के लिये असभंव जैसे दिखते हैं, उन्हें समर्थ और कुशल व्यक्ति चमत्कारी ढंग से कर दिखाते हैं ।

तेहि छन राम मध्य धनु तोरा ।
भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ।।

⊗ तोरा=तोड़ा, धुनि=ध्वनि, घोर=भयानक, कठोरा= कठोर ।

★ उसी क्षण श्री रामजी ने धनुष को बीच से तोड़ डाला । भयंकर कठोर ध्वनि से सब लोक भर गये ।

सतानन्द तब आयसु दीन्हा ।
सीता गमन राम पँह कीन्हा ।।

⊗ आयसु=आज्ञा, गमन=जाना, पँह=पास ।

★ तब सतानन्द जी ने आज्ञा दी और सीता जी भगवान राम के पास ले जायी गयीं ।

चतुर सखी लखि कहा बुझाई ।
पहिरावहु जयमाल सुहाई ।।

★ यह देखकर एक चतुर सखी ने सीता जी को समझाते हुए कहा कि सुन्दर जयमाला रामचन्द्र जी को पहना दें ।

गाबहि छवि अविलोक सहेली ।
सिय जयमाल राम उर मेली ।।

⊗ छवि=शोभा, अविलोक=देखकर, मेली=पहनायी ।

★ सखियाँ उस समय की छवि देखकर गीत गाने लगीं और श्रीसीताजी ने जयमाल श्रीरामचन्द्र जी गले में पहना दी ।

तेहि अवसर सुनि सिव धनु भंगा ।
आयउ भृगुकुल कमल पतंगा ।।

⊗ अवसर= समय, पतंगा =सूर्य ।

★ धनुष का टूटना सुन कर उसी समय भृगुकुल रूपी कमल के लिये सूर्य समान श्री परशुराम जी वहाँ आ पहँचे ।

सांत बेष करनी कठिन,
बरनि न जाई सरूप ।
धरि मुनि तन जनु वीर रस,
आयउ जहँ सब भूप ।।

⊗ सांत=शान्त, सरूप=स्वरूप ।

★ उनका (परशुरामजी का) वेश शान्त है परन्तु कठिन कार्य करने वाले हैं, उनके स्वरूप का वर्णन करते नहीं बनता । उनका आना ऐसा मालूम हुआ कि राजाओं के बीच में मानों वीर-रस स्वयं ही मुनि का शरीर धारण करके आ गया ।

* शान्त रहने पर भी वीर का प्रभाव स्वत: प्रकट होता है ।

पितु समेत कहि कहि निज नामा ।
लगे करन सब दण्ड प्रनामा ।।

⊗ समेत=सहित, दण्डप्रनामा=दण्डवत-प्रणाम ।

★ सभी राजा लोग पिता सहित अपना नाम बतलाकर परशुरामजी को दण्डवत् प्रणाम करने लगे ।

जनक बहोरि आइ सिरु नावा ।
सीय बोलाइ प्रनामु करावा ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ बहोरि=फिर, प्रनामु-प्रणाम ।

★ फिर जनक जी ने आकर सिर नवाया और सीता जी को बुला कर प्रणाम कराया ।

आसिष दीन्हि सखीं हरषानीं ।
निज समाज लै गई सयानीं ।।

⊗ आसिष=आशीर्वाद, हरषानी=प्रसन्न हुई ।

★ परशुराम जी ने सीताजी को आशीर्वाद दिया सखियाँ प्रसन्न हुईं वहाँ अधिक देर ठहरना अच्छा न समझकर सयानी सखियाँ सीताजी को अपनी अन्य सखियों के बीच ले गईं ।

* समझदार व्यक्ति वातावरण का अन्दाज लगाकर ही अपना कर्तव्य निश्चित कर लेते हैं ।

विस्वामित्र मिले पुनि आई ।
पद सरोज मेले दोउ भाई ।।

⊗ पुनि=फिर, सरोज=कमल ।

★ फिर विश्वामित्र जी आकर मिले तथा दोनों भाइयों को परशुराम जी के चरणों में डाल दिया ।

राम लखन दशरथ के ढोटा ।
दीन्हि असीस देखि भल जोटा ।।

⊗ ढोटा=लड़का, जोटा=जोड़ा, भल=सुन्दर ।

★ विश्वामित्र जी नें उनका परिचय दिया कि ये दोनों राम तथा लक्ष्मण, दशरथ जी के पुत्र हैं उनकी सुन्दर जोड़ी देखकर परशुराम जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया ।

समाचार कहि जनक सुनाए ।
जेहि कारण महीप सब आये ।।

⊗ महीप=राजा, जेहि कारण=जिस कारण से ।

★ जनक जी ने उन्हें सब समाचार सुनाया जिस कारण सब राजा वहाँ आये ।

* प्रारम्भ में आदर करने के बाद ही विवरण दिया जाता है ।

सुनत वचन फिरि अनत निहारे ।
देखे चाप खण्ड महि डारे ।।

⊗ अनत=दूसरी ओर, निहारे=देखे, महि=पृथ्वी ।

★ जनकजी के वचन को सुनकर परशुराम जी ने दूसरी ओर घूमकर देखा तो टूटे धनुष के टुकड़े पृथ्वी पर दिखाई दिये ।

अति रिस बोले बचन कठोरा ।
कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा ।।

⊗ रिस=क्रोध, जड़=मूर्ख ।

★ अत्यन्त क्रोध में आकर तब परशुराम जी ने कठोर बचन कहा– ऐ मूर्ख जनक ! बता, धनुष को किसने तोड़ा है ?

* क्रोध में व्यक्ति सन्तुलन खो देता है तथा कठोर वचन बोलने लगता है ।

सभय बिलोके लोग सब,
जानि जानकी भीरु ।
हृदयँ न हरष विषादु कछु,
बोले श्री रघुवीर ।।

⊗ सभय=भय के साथ, बिलोके=देखे, भीरु=डरने वाली, विषादु=दु:ख ।

★ सभी लोगों को भयभीत तथा सीताजी को डरी हुई जानकर हर्ष तथा विषाद लाये बिना ही श्री रामचन्द्र जी बोले ।

* भयभीत समाज को भय मुक्त करने के लिये साहसी व्यक्ति ही आगे आते हैं ।

नाथ सम्भु धनु भंजनहारा ।
होइहि कोउ एक दास तुम्हारा ।।

⊗ भंजनहारा=तोड़ने वाला, होइहि=होगा ।

★ हे नाथ ! शिवजी के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई सेवक ही होगा ।

* बड़ा कार्य करके विनय युक्त वचन वीर की शोभा है ।

आयसु काह कहिउ किन मोही ।
सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ।।

⊗ आयसु=आज्ञा, काह=क्या, मोही=मुझसे, कोही=क्रोधी ।

★ क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते ? यह सुनकर क्रोधी मुनि परशुराम अप्रसन्न होकर बोले ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* श्रीरामजी ने शिष्ट भाषा में अपने द्वारा धनुष तोड़े जाने की बात कही, पर क्रोध में विवेक खो जाने से परशुराम जी समझ न सके ।

सेवक सो जो करे सेवकाई ।
अरि करनी करि करिअ लराई ॥

⊗ अरि=शत्रु, लराई=लड़ाई ।

★ **परशुरामजी बोले "सेवा करने वाला ही सेवक कहलाता है, शत्रु जैसा काम करके तो लड़ाई ही होती है ।**

सुनहु राम जेहि सिव धनु तोरा ।
सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥

★ **हे राम सुनो, जिसने शिव जी का धनुष तोड़ा है वह सहस्रबाहु के समान ही मेरा शत्रु है ।**

* क्रोध के कारण असंतुलित व्यक्ति बिना सोचे समझे कुछ भी कह जाता है ।

सुनि मुनि वचन लखन मुसुकाने ।
बोले परसु धरहि अपमाने ॥

⊗ परसुधरहि=परशुराम, अपमाने=उपेक्षा करके ।

★ **परशुरामजी की बात सुनकर लक्ष्मणजी मुस्कराए और उनकी उपेक्षा करते हुए बोले ।**

* अहंकार युक्त बात कहने से उसकी प्रतिक्रिया रूप अपमान सहना पड़ता है ।

बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं ।
कबहु न असि रिस कीन्हि गुसाईं ॥

⊗ लरिकाईं=लड़कपन में, कबहु=कभी ।

★ **हे गोसाईं ! बचपन में मैंने बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डालीं पर आपने कभी भी इतना क्रोध नहीं किया ।**

* (१)शिव धनुष की धनुही से तुलना, (२) परशुराम की गर्वोक्ति को निरर्थक बताना (३) भगवान राम की सामर्थ्य का संकेत देकर समझाने का प्रयास ।

लखन उतर आहुति सरिस,
भृगुवर कोप कृसानु ।
बढ़त देखि जल सम बचन,
बोले रघुकुलभानु ॥

⊗ सरिस=समान, कृसानु=अग्नि ।

★ **परशुराम के क्रोध की अग्नि में लक्ष्मण जी का उत्तर आहुति के समान पड़ने से क्रोध अधिक बढ़ते देख, शांत करने के लिए श्री रामचन्द्र जी ने जल के समान शीतल बचन कहे ।**

* दो व्यक्ति एक दूसरे को अपनी बात न समझा सकें और बात बढ़े तो तीसरे समझदार को बीच में आकर उन्हें शान्त करना चाहिए ।

नाथ करहु बालक पर छोहू ।
सूध दूधमुख करिअ न कोहू ॥

⊗ छोहू=दया, सूध=सीधे ।

★ **हे नाथ बालक पर दया कीजिए इस सीधे और दूध मुहे बच्चे पर क्रोध न कीजिए ।**

जौं लरिका कछु अचगरि करहीं ।
गुर पितु मातु मोद मन भरहीं ॥

⊗ अचगरि=चंचलता, मोद=प्रसन्नता ।

★ **यदि बालक कुछ चंचलता करता है तो भी गुरु, माता, पिता प्रसन्नता पूर्वक उसे मन में रख लेते हैं ।**

* बड़े लोग छोटों की स्वाभाविक भूलों को महत्व न देकर हँस कर टाल दें ।

बोले रामहि देइ निहोरा ।
बचउ बिचार बंधु लघु तोरा ॥

⊗ देइ निहोरा=दुहाई देकर, बचउ=छोड़ता हूँ ।

★ **परशुरामजी, श्री रामजी की दुहाई देकर कहने लगे, हे राम ! तुम्हारा छोटा भाई समझ कर मैं इसे छोड़ देता हूँ ।**

* अपनी गलत बात वापिस लेने के लिए लोग किसी बहाने को खोजते हैं ।

सुनि लछिमन बिहँसे बहुरि,
नयन तरेरे राम ।
गुर समीप गवने सकुचि,
परिहिर बानी बाम ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ नयन तरेरे=तिरछी निगाह से देखना, नराजगी प्रकट करना, बानी बाम=व्यंग की भाषा ।

★ **परशुरामजी के बचन सुन कर लक्ष्मण जी मुस्कराए, तब श्री रामचन्द्रजी ने तिरछी नजर से उन्हें देख, जिससे लक्ष्मण जी सकुचा कर टेढ़ा बोलना बन्द कर गुरुजी के पास चले गए ।**

* (१)छोटों को इशारे से ही मर्यादा में रखना उचित है । (२)बड़ों के संकेत को उनकी आज्ञा जैसा मानना समझदारी है ।

अति बिनीत मृदु सीतल बानी ।
बोले राम जोरि जुग पानी ।।

⊗ अति=बहुत, बानी (वाणी)=वचन, पानी (पाणि)=हाथ ।

★ **श्री रामचन्द्र जी ने दोनों हाथ जोड़कर विनम्रतापूर्वक प्रिय लगने वाली बात कही ।**

* नम्रता के द्वारा क्रोध का निवारण किया जाना चाहिये ।

कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई ।
मुनिनायक सोई करों उपाई ।।

⊗ बेगि=शीघ्र, जेहि=जिस, रिस=क्रोध ।

★ **हे मुनियों में श्रेष्ठ ! जिस प्रकार आपका क्रोध शांत हो सके वह उपाय आप बताइये उसे मैं अवश्य पूरा करूँगा ।**

* क्रोध की प्रतिक्रियायें सहन करते रहने की अपेक्षा उसके निवारण का उपाय खोजना चाहिए ।

आजु दया दु:ख दुसह सहावा ।
मुनि सौमित्र विहंसि सिरु नावा ।।

⊗ दुसह=जो सहन न हो, सौमित्र=पुमित्रा पुत्र लक्ष्मण, सहावा=सहन कराया ।

★ **परशुरामजी का क्रोध जा नहीं रहा था और श्री राम के वचनों के प्रभाव से वह खुलकर क्रोधकर भी नहीं कर पा रहे थे इसलिए उन्हें घुटन हुई । वह कहने लगे कि आज दया भाव ने मुझे असह्य दु:ख दिलाया । यह सुन कर लक्ष्मण जी ने हँसकर सिर झुकाया और बोले ।**

* मोहवश लोग अपने दु:ख का कारण अपने दोषों को नहीं गुणों को मानने लगते हैं ।

जो पै कृपाँ जरहिं मुनि गाता ।
क्रोध भये तनु राख बिधाता ।।

⊗ जो पै=यदि, कृपाँ=दया करने से, गाता-गात=शरीर के अंग ।

★ **यदि दया करने से मुनि के शरीर में जलन होती है तो क्रोध आने पर तो शरीर की रक्षा भगवान ही करें ।**

* अविवेक पूर्ण बात कहने पर उपहास ही सहना पड़ता है ।

बन्धु कहइ कटु संमत तोरें ।
तू छल बिनय करसि कर जोरें ।।

⊗ कटु=कड़वे वचन, संमत=सहमति से, छल बिनय=बनावटी विनती ।

★ **परशुराम जी लक्ष्मण के व्यंग से झल्ला कर श्री रामजी से कहने लगे कि "तेरी सहमति से ही यह कड़वे वचन बोल रहा है और तू हाथ जोड़कर बनावटी नम्रता दिखाता है ।"**

* अविवेकी व्यक्ति सहानुभूति दिखाने वाले पर ही अपना क्रोध उतारने लगते हैं ।

भृगुपति बकहिं कुठार उठाएँ ।
मन मुसकाहि राम सिर नाएँ ।।

⊗ बकहि=निरर्थक बातें कहना, कुठार=फरसा ।

★ **परशुराम जी फरसा उठाये बकवास कर रहे हैं,और श्री रामजी मन ही मन मुसकरा रहे हैं ।**

* क्रोधी स्वयं तमाशा बन जाता है, संतुलित बुद्धि का व्यक्ति सदा प्रसन्नता का अनुभव करता है ।

गुनह लखन कर हम पर रोषू ।
कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषू ।।

⊗ गुनह=अपराध, रोषू=क्रोध, सुधाइहु=सीधापन ।

★ **श्री रामचन्द्र जी ने कहा अपराध तो लक्ष्मण का और क्रोध मुझ पर करते हैं । कहीं-कहीं अत्यन्त सरलता भी गलत सिद्ध हो जाती है ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* अधिक सीधापन जहाँ कमजोरी समझा जाने लगे वहाँ उसे कुछ समय के लिए छोड़ा भी जा सकता है ।

राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा ।
कर कुठारु आगे यह सीसा ॥

★ श्री रामचन्द्र जी ने कहा कि हे मुनीश्वर क्रोध छोड़ दीजिये आपके हाथ में फरसा है और मेरा सिर सामने है ।

प्रभुहि सेवकहि समरु कस,
तजहु बिप्रवर रोस ।
बेष बिलोकें कहेसि कछु,
बालकहू नहिं दोस ॥

⊗ समरु=युद्ध, कस=कैसा, बिलोकें=देखकर ।

★ हे मुनिवर ! आप क्रोध छोड़ दें क्योंकि प्रभु और सेवक में युद्ध होना अच्छा नहीं है । इसमें लक्ष्मण जी का भी दोष नहीं है, उन्होंने जो कुछ कहा है वह आपके वीर वेष को देख कर ही कहा है ।

* लक्ष्मण ने ब्राह्मण नहीं योद्धा की भाँति ऋषि से व्यवहार किया ।

जौं तुम्ह आतेहु मुनि की नाईं ।
पद रज सिर सिसु धरत गोसाईं ॥

⊗ जौं=यदि, औतेहु=आते, नाई=प्रकार, पद-रज=पैर की धूल, सिसु (शिशु)=बच्चा ।

★ हे स्वामी,यदि आप मुनियों के वेश में आते तब वह बालक आपके चरणों की धूल सिर पर रखता ।

* वेष भिन्न प्रकार का बनाकर ऋषियों जैसा व्यवहार मिलने की आशा करना गलत है ।

हमहि तुम्हहि सरिबरि कसि नाथा ।
कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा ॥

⊗ सरिबरि=समानता-बराबरी, कसि=कैसी, नाथ=स्वामी ।

★ हे स्वामी जिस प्रकार चरण और मस्तक में समानता नहीं है, उसी प्रकार हम आप की बराबरी नहीं कर सकते ।

* भगवान ऋषियों को सर्वोपरि सम्मान देने की अपनी भावना व्यक्त करते हैं ।

देव एक गुन धनुष हमारे ।
नव गुन परम पुनीत तुम्हारे ॥

⊗ गुन=गुण, पुनीत=पवित्र ।

★ हे देव ! हमारे तो एक गुण (धनुष) है, पर आपके परम पवित्र (शम,दम,तप,शोच,क्षमा,सरलता,ज्ञान, विज्ञान और आस्तिकता) नौ गुण हैं ।

* भगवान राम ऋषि को स्मरण दिलाते हैं कि आपने अनीति के प्रतिकार के लिए ब्राह्मण होकर भी क्षत्री रूप अपनाया था, अब वह उत्तरदायित्व हम पूरा करेंगे आप पुन: अपने ब्राह्मणोचित गुणों पर ध्यान दें ।

सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे ।
छमहु बिप्र अपराध हमारे ॥

⊗ छमहु=क्षमा कीजिए ।

★ हम सब प्रकार आप से हारे हैं आप हमारे अपराधों को क्षमा करें ।

* भगवान राम उनके कर्तव्य पालन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए स्वयं को उनका अनुयायी बताते हैं ।

बार बार मुनि विप्रवर,
कहा राम सन राम ।
बोले भृगुपति सरुष हसि,
तहू बंधु सम वाम ॥

⊗ राम सन राम=परशुराम से श्री राम ने, सरुष-सरोष=क्रोध सहित, हसि=हँसकर, बाम=कुटिल ।

★ परशुराम जी को श्री रामचन्द्र जी ने बार-बार ब्राह्मण और ऋषि कहकर संबोधित किया, तो इसे उन्होंने अपने वीर वेष की उपेक्षा करने वाला व्यंग माना और क्रोध से बोले, हे राम तू भी अपने भाई की तरह ही कुटिल है ।

मोर प्रभाउ विदित नहीं तोरे ।
बोलसि निदरि बिप्र के भोरे ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

⊗ मोर=मेरा, प्रभाउ=प्रभाव, विदित=ज्ञात, निदरि=निंदा करने, भोरे=धोखे में ।

★ तुझे मेरी वीरता का प्रभाव पता नहीं है इसीलिये मुझे कोरा ब्राह्मण समझकर मेरा निरादर कर रहा है ।

* क्रोध में विवेक नष्ट हो जाने पर सीधी बात भी उल्टी लगती है ।

भंजेउ चापु दापु अति बाढ़ा ।
अहमिति मनहु जीत जगु ठाढ़ा ।।

⊗ भंजेउ=तोड़ा, दापु=अहंकार, अहमति=घमंड से ।

★ तूने धनुष तोड़ लिया इससे तेरा अहंकार बहुत बढ़ गया है, ऐसा घमण्ड दिखा रहा है मानों तूने सारा संसार जीत लिया हो ।

राम कहा मुनि कहहु बिचारी ।
रिसि अति बड़ लघु चूक हमारी ।।

⊗ कहहु विचारी=सोच समझकर बोलें, रिसि=रोष, लघु=छोटी ।

★ श्री रामजी बोले हे ऋषिवर आप विचारपूर्वक बोलें, हमारी छोटी-सी भूल पर आप बहुत अधिक क्रोध कर रहे हैं ।

* विचार करने से स्थिति का यथार्थ रूप सामने आ जाता है और भ्रम हट जाता है ।

छुअतिहि टूट पिनाक पुराना ।
मैं केहि हेतु करौं अभिमाना ।।

⊗ पिनाक=शिवजी के धनुष का नाम, केहि हेतु=किस लिए ।

★ पुराना पिनाक धनुष तो छूते ही टूट गया, मैं अभिमान किस बात का करूं ।

* संकेत यह है कि यह काम हमारे लिये बहुत सामान्य था, अहंकार हम नहीं करते ।

जो हम निदरहिं बिप्र बदि,
सत्य सुनहु भृगुनाथ ।
तौ अस को जग सुभट जेहि,
भय बस नावहि माथ ।।

⊗ निदरहिं=निरादर करें, बदि=कहकर, सुभट=योद्धा, भय बस=डर करो, नावहि=झुकायें ।

★ हे भृगुनाथ ! सुनिये, यदि हम ब्राह्मण कह कर भी आपका निरादर करें तो फिर संसार में ऐसा कोई योद्धा नहीं जिससे डर कर हम उसे सम्मान दें ।

* बीर पुरुष को श्रद्धा से झुकाया जा सकता है भय, से झुकाने की बात सोचना भूल है ।

सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के ।
उघरे पटल परसुधर मति के ।।

⊗ मृदु=कोमल, गूढवचन=रहस्यपूर्ण बात, पटल=परदा मति=बुद्धि ।

★ श्री रामचन्द्रजी के रहस्यपूर्ण वचनों को सुन कर परशुरामजी की बुद्धि के परदे खुल गए ।

* (१)शालीनता ने अहंकार पर विजय पा ली । (२) बुद्धि पर से भ्रम का पर्दा हटे बिना सत्य समझ में नही आता ।

राम रमापींत कर धनु लेहू ।
खैंचहु मिटे मोर सन्देहू ।।

⊗ रमापति=लक्ष्मीपति ।

★ परशुराम का अहंकार दूर हो जाने पर उन्होंने श्री रामचन्द्रजी से कहा, हे राम ! हे रमापति ! मेरे धनुष को हाथ में लीजिए और इसे खींचिए जिससे मेरा सन्देह (भ्रम) दूर हो जाये ।

* अहंकार का पर्दा हटते ही भगवान का रूप समझ में आया और अपना धनुष उन्हें परीक्षा लेने के नाम पर सौंप दिया अर्थात् आपत्तिकालीन स्थिति में अपनाया हुआ क्षात्र-धर्म सुपात्र क्षत्री को पुनः सौंप दिया ।

देत चाप आपुहिं चलि गयऊ ।
परसुराम मन बिसमय भयऊ ।।

⊗ चापु= धनुष, बिसमय (विस्मय)=आश्चर्य ।

★ जब परशुराम जी रामचन्द्रजी को धनुष देने लगे तब वह आप ही रामचन्द्र के हाथ में चला गया । इसे देखकर परशुरामजी को बड़ा आश्चर्य हुआ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* सुपात्र के पास अधिकार स्वत: चला जाता है ।

जाना राम प्रभाउ तब,
पुलक प्रफुल्लित गात ।
जोरि पानि बोले बचन,
हृदयँ न प्रेम समात ।।

⊗ पुलक=प्रसन्न, पानि=पाणि-हाथ, प्रफुल्लित=खिल जाना ।

★ तब परशुराम जी ने रामचन्द्र का प्रभाव जाना । इस कारण उनका शरीर पुलकित और प्रफुल्लित हो गया । उनका हृदय प्रेम से भर गया और वे हाथ जोड़कर वचन बोले –

* सत्य का बोध होने पर अहंकार गल जाता है और प्रसन्नता तथा उत्साह जाग पड़ता है ।

अनुचित बहुत कहेउ अग्याता ।
छमहु छमा मन्दिर दोउ भ्राता ।।

⊗ अग्याता=अज्ञानवश, अनजान में, छमा=क्षमा, मंदिर=घर ।

★ अनजाने में मैंने आपको बहुत-सी अनुचित बातें कहीं हैं, मैं उसके लिए क्षमा चाहता हूँ । आप दोनों भाई (राम और लक्ष्मण) क्षमा के भंडार हैं अत:मुझे क्षमा करें ।

* अनजाने में अनुचित कार्य हो ही जाया करते हैं उसके लिए पश्चाताप करने से दूषित मन पवित्र हो जाता है (२) क्षमा मांगने का अर्थ अनुचित कर्म को दुबारा न किये जाने की प्रतिज्ञा भी है ।

कहि जय जय जय रघुकुल केतू ।
भृगुपति गए बनहि तप हेतू ।।

⊗ रघुकुल केतू=रघुवंशियों में पताका स्वरूप अर्थात् श्री राम चन्द्रजी, भृगुपति=भृंगु वंश के गौरव अर्थात् परशुरामजी हेतू=लिए ।

★ परशुराम जी रघुवंश भूषण श्री रामचन्द्र जी की जय जयकार करते हुए वन चले गये ।

* अपने श्रेष्ठ आचरण से भगवान राम रघुकुल केतु और परशुराम भृगुपति कहलाये (२) कर्म व्यक्ति की कसौटी है ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय - ३

बन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकर रूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ।।

⊗ बोधमयं=ज्ञानवान, यमाश्रितो=जिसके आश्रय में रहने से, वक्रोऽपि=टेढ़ा भी, वन्द्यते=सम्मानित होता है ।

★ **शाश्वत, ज्ञान देने वाले गुरु को शिव रूप मानकर बन्दना करता हूँ जिनके आश्रय में रहने से वक्र चन्द्रमा भी सर्वत्र सम्मानित होता है ।**

* (१) गुरु के प्रभाव से कुटिल व्यक्ति भी जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं (२) गुरु नित्य अर्थात् एक शाश्वत चेतना है जो व्यक्ति के माध्यम से प्रकट होती रहती है ।

जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा ।
प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा ।।

⊗ कौसिकहि=विश्वमित्र को, प्रसाद=कृपा, भंजेउ=तोड़ दिया ।

★ **जनकजी ने विश्वामित्र जी को प्रणाम करके यह कहा कि आपकी कृपा के फलस्वरूप ही रामचन्द्र जी ने धनुष तोड़ा है ।**

* गुरुजनों से प्राप्त मार्गदर्शन के अनुसार यदि कर्ता पुरुषार्थ करे तो लक्ष्य प्राप्ति से सफलता निश्चित ही मिलती है । ज्ञानी (राजा जनक) इसे समझ गए थे और इसीलिए पुरुषार्थ की तुलना में उन्होंने उचित मार्ग दर्शन की महत्ता को प्रतिपादित किया है ।

मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई ।
अब जो उचित सो कहिअ गोसाई ।।

⊗ कृतकृत्य=कृतार्थ करना, गोसाईं=स्वामी ।

★ **इन दोनों भाइयों ने मुझे अपनी वीरता से कृतार्थ कर दिया अर्थात् मेरा जीवन सफल हो गया । हे स्वामी, अब जो उचित हो उसकी आज्ञा दी जावे ।**

* जनक जी ने श्री राम लक्ष्मण के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और श्री विश्वामित्र जी से मार्ग दर्शन चाहा । विचारवानों का यही ढंग होता है ।

कह मुनि सुनु नरनाथ प्रवीना ।
रहा विवाहु चाप आधीना ।।

⊗ नरनाथ=नरेश, राजा, प्रवीना-प्रवीण=चतुर ।

★ **विश्वामित्र जी बोले, हे राजन् आप बड़े चतुर हैं । सुनियें, वैसे तो धनुष के टूटते ही विवाह हो गया क्योंकि विवाह तो धनुष के ही आधीन था ।**

टूटत ही धनु भयउ विवाहू ।
सुन नर नाग बिदित सब काहू ।।

★ **विवाह का कार्य तो धनुष के टूटते ही पूरा हो गया क्योंकि देवता, मनुष्य और नाग सभी को आपकी प्रतिज्ञा मालूम है ।**

तबपि जाइ तुम्ह करहु अब,
जथा बंस व्यबहारु ।
बूझि बिप्र कुलबृद्ध गुर,
बेद बिदित आचारु ।।

⊗ बंस व्यवहार=कुल की मर्यादा, बूझि=पूछकर ।

★ **(विवाह तो हो ही गया) परन्तु अब तुम अपने कुल की परम्परा के अनुसार- ब्राह्मण परिवार के बूढ़े (मुखिया) तथा गुरु से पूँछकर और वेदों में कहे गये नियमों के अनुसार आचरण करो ।**

* कार्य की मुख्य शर्त पूरी हो जाने पर अगला चरण बढ़ाने की योग्यता एवं अधिकार होने पर भी लोक-मर्यादा का पालन किया जाना उचित है ।

दूत अवधपुर पठवहु जाई ।
आनहिं नृप दसरथहि बोलाई ।।

⊗ पठवहु=भेजो, अनाहिं=लावें ।

★ **आप अयोध्या को दूत भेजिये जो राजा दशरथ को बुला लावें ।**

पहुँचे दूत राम पुर पावन ।
हरषे नगर बिलोकि सुहावन ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

⊗ राम-पुर=अयोध्या नगरी, पावन=पवित्र, सुहावन=सुन्दर ।

★ जनकजी के दूत श्रीरामचन्द्रजी की पवित्र पुरी अयोध्या पहुँचे । सुन्दर नगर देखकर वे हर्षित हुए ।

सभा समेत राउ अनुरागे ।
दूतन्ह देन निछावरि लागे ।।

⊗ अनुरागे=प्रेम मग्न हो गये, निछावर=न्यौछावर-इनाम ।

★ समाचार पाकर सभा सहित राजा प्रेम में मग्न हो गये और दूतों को निछावर देने लगे ।

कहि अनीति ते मूदहिं काना ।
धरम विचारि सबहिं सुख माना ।।

⊗ अनीति=नीति विरुद्ध, काना=कान ।

★ न्यौछावार लेना अनीति है ऐसा कहकर जनकपुरी के दूतों ने अपने कान बंद कर लिये अर्थात् पुनः आग्रह सुनने से भी इन्कार कर दिया । उनका अचारण धर्म के अनुरूप देखकर सभा वालों को प्रसन्नता हुई ।

* जिस कार्य के लिए वेतन मिलता है उसके लिये किसी से अतिरिक्त धन लेना अनीति है ।

सुनि बोले गुर अति सुख पाई ।
पुन्य पुरुष कहँ महि सुख छाई ।।

★ सब समाचार सुनकर गुरु वसिष्ठ बहुत प्रसन्न हुए और बोले-पुण्यात्मा पुरुष के लिये पृथ्वी सुखों से छाई हुई है ।

* सुख अपने ही सत् कार्यों की प्रतिक्रिया है ।

जिमि सरिता सागर महँ जाहीं ।
जद्यपि ताहि कामना नाहीं ।।

⊗ जिमि=जैसे, सरिता=नदी, जदपि=यद्यपि ।

★ जैसे नदियाँ समुद्र में जाती हैं, यद्यपि समुद्र को नदी की कामना नहीं होती ।

तिमि सुख संपति बिनहि बोलाएँ ।
धर्मशील पहिं जाहिं सुभाएँ ।।

⊗ तिमि=वैसे ही, संपति=संपत्ति, धरमशील=धर्मात्मा पुरुष, सुभाएँ=स्वभाव से ।

★ वैसे ही सुख और संपत्ति बिना ही बुलाये स्वभाव से ही धर्मात्मा पुरुष के पास जाती है ।

* सच्चा धर्मात्मा सुख वैभव की कामना नहीं करता परन्तु उसके पास उनकी कमी नहीं रहती ।

तुम्ह गुर विप्र धेनु सुर सेवी ।
तसि पुनीत कौसल्या देवी ।।

⊗ धेनु=गाय, सेवी=सेवा करने वाले, पुनीत=पवित्र ।

★ आप परमार्थ परायण जीवों (गुरु, ब्राह्मण, मनुष्यों में, पशुओं में, गाय तथा सूक्ष्म शक्तियों में देव) की सहायता करते हैं और उसी प्रकार का स्वभाव कौशल्या देवी का है ।

तुम्ह कहँ सर्व काल कल्याना ।
सजहु बरात बजाइ निसाना ।।

⊗ सर्व काल=सभी समय, निसाना-निशान=डंका ।

★ तुम्हारे लिये सभी समय कल्याण ही है, अतएव डंका बजवा कर बारात सजाओ ।

* जो पति-पत्नी दोनों ही परमार्थ कार्यों में हार्दिक सहयोग देते हैं उनका सब प्रकार भला ही होता है ।

प्रथम बरात लगन तें आई ।
तातें पुर प्रमोद अधिकाई ।।

⊗ लगन=विवाह का निर्धारित समय, प्रमोद=प्रसन्नता ।

★ बारात लग्न से पहले ही पहुँच गयी, इससे जनक पुर में प्रसन्नता की लहर फैल गयी ।

धेनुधूरि बेला बिमल,
सकल सुमंगल मूल ।
विप्रन्ह कहेउ विदेह सन,
जानि सगुन अनुकूल ।।

⊗ धेनुधूरि=गोधूलि, बेला=समय, विमल=पवित्र, सुमंगल=अच्छे कार्य ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **सभी प्रकार के शुभ कर्मों के करने के लिए उपयुक्त पवित्र गोधूलि का समय आया, उसे अनुकूल शकुन मानकर ब्राह्मणों ने जनक जी से निवेदन किया ।**

* गोधूलि की बेला सदैव पवित्र मानी गयी है । इस समय किसी काम को करने के लिए मुहूर्त सोचने की आवश्यकता नहीं होती ।

सतानन्द तब सचिव बोलाए ।
मंगल सकल साजि सब ल्याए ।।

⊗ साजि=सामग्री, सचिव=मंत्री, सतानन्द=जनक जी के पुरोहित ।

★ **सतानन्द जी ने तब मंत्रियों को बुलाया और वे संस्कार के लिए उपयुक्त साज-सामग्री तैयार कर ले आये ।**

* कर्मठ कार्यकर्ताओं को व्यवस्था करने में देरी नहीं लगती ।

समयँ समयँ सुर बरसहिं फूला ।
सांति पढ़हि महिसुर अनुकूला ।।

⊗ सांति पढ़हिं=शान्ति पाठ करता, महिसुर=ब्राह्मण ।

★ **समय-समय पर देवता फूल बरसाने लगे और ब्राह्मण समयानुकूल शान्ति पाठ करने लगे ।**

* (१)शुभ कार्य में देवता सहयोग करते हैं, (२)शांति पाठ शुभ भावनाओं का प्रतीक है, शुभ मंत्र बोलना शुभ कार्य में लाभकारी है ।

एहि विधि राम मण्डपहि आए ।
अरघ देई आसन बैठाए ।।

★ **इस प्रकार (शोभा-यात्रा के साथ) श्री रामचन्द्रजी विवाह मण्डल में पधारे और पंडितों ने अर्घ देकर उन्हें आसन पर बैठाया ।**

विप्र बधू कुलवृद्ध बोलाईं ।
करि कुल रीति सुमंगल गाईं ।।

★ **ब्राह्मणों की स्त्रियाँ तथा परिवार की वृद्धाएं बुलाई गईं, उन्होंने कुल में प्रचलित रीति-रिवाजों को पूरा कर सुन्दर मंगल गीत गाये ।**

* (१)सम्मानित वृद्धों के आशीर्वाद से जीवन मंगलमय होता है (२)श्रेष्ठ गीत वातावरण में प्रेरणा तथा सरसता भर देते है।

सीय सँवारि समाजु बनाई ।
मुदित मण्डपहि चलीं लवाई ।।

⊗ सँवारि=श्रृंगार करके, समाजु=दल-मंडली, मुदित=प्रसन्न ।

★ **रनिवास की स्त्रियों ने सीताजी का उपयुक्त श्रृंगार किया और मंडली बनाकर प्रसन्न होकर उन्हें (सीता जी को) विवाह मंडप में लिवा लाईं ।**

* संस्कार के लिये प्रसन्न मन से पहुँचना चाहिये ।

तेहि अवसर कर विधि व्यवहारू ।
दुहुं कुलगुरु सब कीन्ह अचारू ।।

⊗ विधि=रीति-नीति, अचारू=आचरण ।

★ **उस समय (विवाह की) सभी रीति-नीतियों, व्यवहार एवं कुल मर्यादा का पालन दोनों पक्षों के कुल गुरुओं ने किया ।**

* संस्कार को प्रभावशाली बनाना कुल गुरुओं का उत्तरदायित्व है ।

कुअँरु कुअँरि कल भावँर देहीं ।
नयन लाभ सब सादर लेहीं ।।

⊗ कुअँरु-राजकुमार(वर)-कुंवर, कुअँरि=कन्या, कुल सुन्दर ।

★ **वर और कन्या भाँवरों के सुन्दर फेरे लगा रहे हैं और सभी लोग उन्हें आदर के साथ देखकर अपने नेत्रों को सफल कर रहे हैं ।**

* भांवर के समय वर-वधू के हितैषियों को उपस्थित रहना पड़ता है । उनकी सद्भावना का संस्कार पर प्रभाव पड़ता है ।

प्रमुदित मुनिन्ह भावँरी फेरी ।
नेग सहित सब रात निवेरी ।।

⊗ मुदित=प्रसन्नता पूर्वक, निवेरी=सुलझाना-छुटकारा पाना ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ मुनि मण्डली ने प्रसन्नतापूर्वक परिक्रमा की सारी पद्धति नियमानुसार पूरी कराई तथा सब को अपने-अपने नेग दिलवाये ।

* विवाह के मुख्य कर्म से लेकर सामान्य नेगों तक का कार्य ऋषियों की देखरेख में किया गया ताकि संस्कारों का वातावरण कहीं बिगड़े नहीं ।

राम सीय सिर सेन्दुर देही ।
सोभा कहि न जाति बिधि केही ।।

⊗ विधि=तरह-प्रकार ।

★ श्री रामचन्द्र जी सीता जी की मांग में सिन्दूर 'भर रहे हैं' उस समय की शोभा का वर्णन किसी प्रकार भी नहीं किया जा सकता है ।

* मांग में सिन्दूर देने की क्रिया वर द्वारा कन्या के सुख सौभाग्य के प्रति अपना उत्तरदायित्व स्वीकार करने की घोषणा है ।

बहुरि वसिष्ठ दीन्हि अनुशासन ।
बरु दुलहिनि बैठे एक आसन ।।

⊗ अनुशासन=आज्ञा, बहुरि=फिर-इसके बाद ।

★ इसके बाद गुरु वशिष्ठ जी ने आज्ञा दी और दूल्हा तथा दुल्हन एक ही आसन पर बैठ गये ।

* इस क्रिया द्वारा (१) समान अधिकारों की घोषणा (२) दोनों एक ही नाव पर सवार हैं, जैसा भाव पैदा करना उचित है ।

जसि रघुवीर व्याह विधि बरनी ।
सकल कुअंर व्याहे तेहि करनी ।।

★ जिस प्रकार रामचन्द्रजी के विवाह का वर्णन किया गया उसी प्रकार सब राजकुमारों (भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न) का भी विवाह हुआ ।

* सभी भाइयों के लिए समानता का व्यवहार किया गया ।

कौसिक सतानन्द तब जाई ।
कहा विदेह नृपहिं समुझाई ।।

★ तब विश्वामित्र और सतानन्द जी महाराज जनक के पास गये और उन्हें समझाने लगे ।

अब दसरथ कहँ आयसु देहू ।
जद्यपि छाड़ि न सकहु सनेहू ।।

★ यद्यपि आप स्नेह वश उन्हें नहीं छोड़ सकते तो भी अब दशरथ जी को आज्ञा दीजिये ।

* भावनाओं की अधिकता में भी उचित कर्तव्य का ध्यान रखना चाहिए ।

चलिहि बरात सुनत सब रानी ।
बिकल मीनगन जनु लघु पानी ।।

★ 'बरात लौटने वाली है' ऐसा सुनकर सब रानियाँ इस प्रकार व्याकुल होने लगीं मानों थोड़े पानी में मछलियाँ छटपटा रही हों ।

* सीता सबको परमप्रिय थी इसलिये विछोह का दुःख हुआ ।

पुनि-पुनि सीय गोद करि लेही ।
देह असीस सिखावनु देही ।।

⊗ असीस (अशीष)=आशीर्वाद, सिखावन=शिक्षा ।

★ वे बार-बार सीताजी को गोद में उठा लेती हैं और आशीर्वाद देती हुई शिक्षाप्रद बातें बतला रहीं हैं ।

* पतिग्रह जाते समय कन्या को ऐसी कुछ आवश्यक बातें बतलाना ही चाहिए जो कि उसके भावी जीवन को सुखमय बनाने के लिए कल्याणकारी हों ।

होएहु सन्तत पियहि पियारी ।
चिरु अहिबात असीस हमारी ।।

⊗ सन्तत=सदैव, चिरु-चिर=बहुत समय, अहिबात=सुहाग ।

★ तुम सदैव अपने पति की प्यारी बनी रहो और तुम्हारा सुहाग अचल हो ऐसा हमारा आशीर्वाद है ।

* पति-पत्नी का प्रेम दाम्पत्य जीवन में स्वर्ग-सुख ला सकता है । इसीलिए उसको पति से बिछोह न होने का आशीर्वाद दिया ।

सासु ससुर गुर सेवा करेहू ।
पति रुख लखि आयसु अनुसरेहू ।।

⊗ लखि=देखकर, आयसु=आज्ञा, अनुसरहू=मानना ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **सास, ससुर और गुरु की सेवा करना तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है । तुम्हें पति के रुख को देखकर उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए ।**

* (१) गृह लक्ष्मी वहीं है जो परिवार के अन्य सदस्यों को शरीर के अंग की तरह अपना मानकर उनकी सेवा करे । (२) पत्नी को पति के स्वभाव की इतनी जानकारी रखनी चाहिए कि रूपरेखा देखकर ही उनकी इच्छा समझले और पूरी करे ।

अति सनेह सब सखी सयानी ।
नारि धरम सिखवहि मृदुवानी ।।

★ **अत्यन्त प्रेम के वशीभूत होकर चतुर सखियाँ उन्हें कोमल शब्दों में स्त्री-धर्म की शिक्षा दे रही हैं ।**

* (१) स्त्री धर्म की शिक्षा जिसे वयोवृद्ध महिलाओं की अपेक्षा अनुभवी तथा हितैषी सखियाँ अधिक अच्छी तरह दे सकती हैं । (२) शिक्षण स्नेहयुक्त मधुर हो तो अधिक प्रभावशाली होता है ।

राम विदा मांगत कर जोरी ।
कीन्ह प्रनाम बहोरि बहोरी ।।

⊗ बहोरि बहोरी=श्री राम चन्द्र जी हाथ जोड़कर विदा मांग रहे हैं और उन्हें बार-बार नमस्कार भी करते जा रहे हैं ।

★ **वर को भी वधू पक्ष के वयोवृद्धों का आदर अभिवादन करना चाहिए ।**

पाइ असीस बहुरि सिरु नाई ।
भाइन्ह सहित चले रघुराई ।।

★ **आशीर्वाद प्राप्त कर और उन्हें बार-बार मस्तक झुकाकर प्रणाम करते हुए श्री रामचन्द्रजी अपने भाइयों के साथ वहाँ से चल दिये ।**

* बड़ों द्वारा आशीर्वाद दिये जाने पर कृतज्ञता प्रकट करने के लिए पुन:प्रणाम करना उचित है ।

पुरजन आवत अकनि बराता ।
मुदित सकल पुलकावलि गाता ।।

⊗ अकनि=जानकर, मुदित=प्रसन्न, पुलकावलि=रोमांचित होना ।

★ **अयोध्यापुरी वासियों को जब बरात लौटने की जानकारी मिली तो सभी को प्रसन्नता से रोमांच हो आया ।**

* सच्ची प्रसन्नता रोम-रोम से फूट पड़ती है ।

कौसल्यादि राम महतारीं ।
प्रेम बिबस तन दशा बिसारीं ।।

★ **कौशिल्या, कैकई, सुमित्रा– रामचन्द्रजी की सभी माताएँ प्रेम से विवश हो गईं और अपने शरीर की भी सुधि भूल गई ।**

* प्रेम के आगे शरीर का महत्व भूल जाता है ।

जनक राज गुन शील बड़ाई ।
प्रीति रीति सम्पदा सुहाई ।।

⊗ शील=सज्जनता, प्रीति रीति=प्रेम व्यवहार, सम्पदा=सम्पत्ति ।

★ **महाराज जनक के गुण, सज्जनता, बड़प्पन, प्रेम, व्यवहार और श्रेष्ठ सम्पत्ति का वर्णन किया गया है ।**

* गुण, कर्म, स्वभाव, प्रेम व्यवहार की ही महिमा सर्वत्र गाई है ।

बहु विधि भूप भाट जिमि बरनी ।
रानी सब प्रमुदित सुनि करनी ।।

★ **महाराज दशरथ ने उपर्युक्त वर्णन भाट की तरह बहुत प्रकार से किया । उसको सुनकर सभी रानियाँ बहुत प्रसन्न हुईं ।**

* अच्छे कर्म और आचरण कहने सुनने वालों को भी प्रसन्नता देते हैं ।

नृप सब भाँति सबहि सनमानी ।
कहि मृदु बचन बोलाईं रानी ।।

★ **राजा दशरथ ने सबका सब प्रकार से सम्मान किया और मधुर वचन कहकर रानियों को बुलाया ।**

* (१) घर के मुखिया को सबका सम्मान रखना चाहिये। (२) पत्नियों को मधुर शब्दों द्वारा बुलाना चाहिये ।

बधू लरिकनी पर घर आईं ।
राखेहु नयन पलक की नाईं ।।

★ **राजा ने कहा बहुएँ अभी बच्ची ही हैं, दूसरे घर से आई हुई हैं, इनकी इस प्रकार चिन्ता करना जैसे**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पलकें नेत्रों की सदैव (सब प्रकार से) चिन्ता एवं रक्षा करती हैं ।

* (१) लरिकनीं शब्द में बहुओं के प्रति पुत्री का स्नेह भरा है । (२) बहुओं को सुखी रखने का उत्तरदायित्व घर की जेठी महिलाओं का होता है ।

सुन्दर बधुन्ह सासु लै सोईं ।
फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोईं ।।

⊗ बधुन्ह=बहुओं को, सोईं=सोयी, फनिकन्ह=सर्पों ने, सिर मनि=सिर की मणियों को, गोईं=छिपा लिया ।

★ सासुएँ सुन्दर बहुओं को अपने साथ लेकर सोयीं मानो सर्पों ने अपने सिर की मणियों को हृदय में छिपा लिया हो ।

* सासों द्वारा बहुओं के प्रति माता की तरह स्नेह का व्यवहार ।

प्रभु बिबाहँ जस भयउ उछाहू ।
सकेहि न बरनि गिरा अहिनाहू ।।

⊗ उछाहू=उत्साह, गिरा=सरस्वती, अहिनाहू=सर्पों के राजा शेषनाग ।

★ भगवान श्री राम के विवाह में जो आनन्द और उत्साह उमड़ा उसके वर्णन करने की शक्ति तो सरस्वती और शेषनाग में भी नहीं है ।

* उल्लास या आनन्द तो एक अनुभूति है, इसको शब्दों में नहीं कहा जा सकता है ।

राम रूप गुन सील सुभाऊ ।
प्रमुदित होइ देखि मुनि राऊ ।।

⊗ प्रमुदित=प्रसन्न होना, राऊ=राजा (दशरथ)

★ रामचन्द्रजी के सौंदर्य, गुण, आचरण और स्वभाव को देख सुनकर महाराज दशरथ बड़े प्रसन्न होते हैं ।

* पिता को चाहिये कि बच्चों के भरण-पोषण पर ही नहीं उनके गुणों के विकास पर भी ध्यान दें ।

रायँ सुभायँ मुकुरु के लीन्हा ।
बदन बिलोकि मुकट सम कीन्हा ।।

⊗ मुकुरु=दर्पण, शीशा, कर=हाथ, बदन=मुँह, बिलोकि=देखकर, सम=सीधा, ठीक ।

★ एक दिन महाराजा दशरथ ने सहज स्वभाव से हाथ में शीशा लिया और अपना मुँह देखकर मुकुट को सीधा किया ।

श्रवन समीप भए सित केसा ।
मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ।।

⊗ श्रवन=कान, सित=सफेद केसा (केश)=बाल, जरठपनु = वृद्धावस्था ।

★ (उन्होंने देखा कि) कान के पास बाल सफेद हो चले हैं । उन्हें लगा कि मानों वृद्धावस्था उन्हें उपदेश दे रही है ।

* समझदार व्यक्ति प्राकृतिक संकेतों को समझ लेते हैं ।

नृप जुवराज राम कहुँ देहू ।
जीवन जनम लाहु किन लेहू ।।

★ हे राजन् रामचन्द्रजी को युवराज पद सौंप कर अपने जीवन और जन्म को सफल क्यों नहीं बना लेते ?

* वृद्धावस्था के निकट पहुँचते ही अपने लौकिक उत्तरदायित्वों से मुक्ति लेकर परमार्थ कार्यों में लग जाने में ही जीवन की सार्थकता है ।

यह विचारु उर आनि नृप,
सुदिन सुअवसरु पाई ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन,
गुरहि सुनायउ जाइ ।।

★ यह विचार मन में आने पर राजा ने समय पाकर गुरु वशिष्ठ के पास जाकर उन्हें यह सब बतलाया । उस समय राजा का शरीर प्रेम से गद्‌गद् हो रहा था और उनके मन में प्रसन्नता छाई हुई थी ।

* शुभ कर्म करने का विचार मन में उठते ही एक अवर्णनीय आनन्द की लहर अंग-प्रत्यंग में दौड़ने लगती है ।

कहई भुआलु सुनिअ मुनिनायक ।
भए राम सब बिधि सब लायक ।।

⊗ भुआलु=भूपाल-राजा, मुनिनायक=ऋषियों में श्रेष्ठ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ राजा ने कहा– हे मुनिराज कृपा करके मेरी प्रार्थना सुनिये। अब श्री रामचन्द्रजी सब प्रकार से सब कुछ करने के योग्य हो गये हैं।

* उत्तराधिकारी में योग्यता आ जाने पर उसे उत्तरदायित्व सौंप देने चाहिये।

सेबक सचिव सकल पुरबासी।
जे हमरे अरि मित्र उदासी॥

⊗ सचिव=मंत्री, हमरे=हमारे, अरि=शत्रु, उदासी=उदासीन रहने वाले।

★ सेवक, मंत्री, सम्पूर्ण नगर निवासी और जो हमारे शत्रु मित्र अथवा हमसे उदासीन रहने वाले व्यक्ति हैं।

सबहि राम प्रिय जेहि बिधि मोही।
प्रभु असीस जनु तन धरि सोही॥

⊗ धरि=धारण करके, सोही=शोभित होना।

★ रामचन्द्रजी सभी को उसी प्रकार प्रिय हैं, जिस प्रकार मुझे। आपका आशीर्वाद ही मानो राम के रूप में शरीर धारण किये हुए शोभित हो रहा है।

* अपनी श्रेष्ठता का अहंकार न करके उसका श्रेय गुरु को देना उचित है।

नाथ राम करिअहि जुबराजू।
कहिअ कृपा करि करिअ समाजू॥

⊗ जुबराज=युवराज, करिअहि=कीजिए।

★ हे नाथ श्री रामचन्द्रजी को युवराज बना दीजिए। आप कृपा करके आज्ञा प्रदान करें तो तैयारी कर ली जाये।

* सत्ताधारी व्यक्ति अपने निर्णय का औचित्य गुरु (विचारक-मार्ग दर्शक) से पूछने के बाद ही उसे क्रियान्वित करते थे।

बेगि बिलंब न करिअ नृप,
साजिअ सबुइ समाज।
सुदिन सुमंगल तबहि जब,
राम होहिं जुबराज॥

⊗ साजिअ=सजाइये, सबुइ=सभी, समाजु=सामग्री-सामान।

★ बसिष्ठजी ने उत्तर दिया हे राजन ! अब देर न लगाइये। सभी सामग्री (सामान) को तैयार करा लीजिए। शुभ दिन और शुभ घड़ी तो वही है जब श्री रामचन्द्रजी युवराज बन जायें अर्थात् राम के अभिषेक के लिए सभी दिन शुभ और मंगलकारी हैं।

* श्रेष्ठ कार्य करने के लिए हर समय और घड़ी शुभ होती है।

मुदित महीपति मंदिर आए।
सेवक सचिव सुमन्त्रु बोलाए॥

⊗ मुदित=आनन्दित होकर, महीपति=राजा, मंदिर=महल।

★ राजा आनन्दित होकर महल में आये और उन्होंने सेवकों को तथा मन्त्री सुमन्त्र को बुलवाया।

जौ पाँचहि मत लागै नीका।
करहु हरषि हियँ रामहि टीका॥

⊗ पाँचहि=पंचों को, नीका=अच्छा।

★ यदि पंचों को यह मत अच्छा लगे तो हृदय में हर्षित होकर आए लोग श्री रामचन्द्र का युवराज तिलक कीजिए।

* मर्यादा अनुसार राजा अपने निर्णय पर जनमत की सहमति भी लेते थे।

मन्त्री मुदित सुनत प्रिय बानी।
अभिमत बिरवँ परेउ जनु पानी॥

⊗ अभिमत=मनोरथ, बिरवँ=बिरवा।

★ इस प्रिय वाणी को सुनकर मन्त्री ऐसे आनन्दित हुए मानों उनके मनोरथ रूपी पौधे को पानी से सींच दिया गया हो।

तब नरनाँह बसिष्ठ बोलाए।
रामधाम सिख देन पठाए॥

⊗ नरनाँह=राजा, पठाए=भेजे।

★ तब राजा ने बसिष्ठजी को बुलाया और शिक्षा (समयोचित उपदेश) देने के लिए श्रीरामजी के महल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

में उन्हें भेजा । उत्तरदायित्व सौंपने के पूर्व पुत्र को योग्य व्यक्ति द्वारा उचित शिक्षा दिलानी चाहिये ।

राम करहु सब संजम आजू ।
जौं बिधि कुसल निबाहै काजू ।।

⊗ संजम=संयम, आजू=आज, निबाहै=सफल कर दे, काजू=कार्य ।

★ **वसिष्ठजी ने रामचन्द्रजी से कहा हे रामजी ! आप सब प्रकार संयम कीजिए । जिससे विधाता कुशल पूर्वक इस काम को निवाह दें । (सफल कर दें)**

* संयम के द्वारा मनुष्य के अन्दर की, वह शक्तियाँ जाग पड़ती हैं,जिनके द्वारा उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह कर सकें ।

गुरु सिख देइ राय पहँ गयऊ ।
राम हृदय अस विसमय भयऊ ।।

⊗ सिख=शिक्षा, राय=राजा, अस=इससे (यह सुनकर) विसमय=आश्चर्य, भयऊ=हुआ ।

★ **गुरुजी शिक्षा देकर राजा दशरथ जी के पास चले गये । श्री राम जी के हृदय में (यह सुनकर) इस बात का आश्चर्य हुआ कि –**

बिमल बंस यहु अनुचित एकू ।
बन्धु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू ।।

⊗ बिमल=निर्मल, बंस=वंश, अनुचित=गलत, बिहाइ=छोड़कर, अभिषेकू=राज्याभिषेक ।

★ **इस निर्मल वंश में यही एक अनुचित बात हो रही है कि सब भाइयों को छोड़कर राज्याभिषेक बड़े भाई का ही (मेरा ही) होता है ।**

* राज्य मिलने की प्रसन्नता के स्थान पर श्री रामजी को भाइयों के साथ समानता न बरती जाने का दुःख हुआ ।

प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई ।
हरउ भगत मन कै कुटिलाई ।।

⊗ पछितानि=पछतावा, हरउ=हरण करे, कुटिलाई=कुटिलता को ।

★ **(तुलसीदासजी कहते हैं कि) प्रभु श्री रामजी का यह सुन्दर प्रेम पूर्वक पछतावा भक्तों के मन की कुटिलता को हरण करे ।**

* भगवान राम के वे भक्त इस चरित्र से प्रेरणा लें जो अपने वैभव के लिए अपने बराबर वालों को दुःख, कष्ट भी पहुँचाने में नहीं हिचकते ।

सारद बोलि विनय सुर करहीं ।
बारहिं बार पाय लै परहीं ।।

⊗ सारद=(शारदा) सरस्वती जी, पाय=पैरों पर, परहीं=गिरते हैं ।

★ **तभी सरस्वती जी को बुलाकर देवता विनय करने लगे और बार-बार उनके पैरों को पकड़ कर आग्रह करने लगे ।**

विपति हमारि बिलोंकि बड़,
मातु करिअ सो आज ।
राम जाहिं बन राज तजि,
होई सकल सुर काज ।।

⊗ विपति-(विपत्ति)=संकट की घड़ी, सुरकाज=देवताओं का कार्य ।

★ **वे कहते हैं- हे माता ! हमारी बड़ी विपत्ति को देखकर आज वही कीजिए जिससे श्री रामचन्द्रजी राज्य त्याग कर वन चले जायँ और देवताओं का सब कार्य सिद्ध हो ।**

* देवता राम द्वारा राक्षसों का बध जल्दी से जल्दी चाहते थे ।

नाम मंथरा मंदमति,
चेरी कैकई केरि ।
अजस पेटारी ताहि करि,
गई गिरा मति फेरि ।।

⊗ मंदमति=मूर्ख, चेरी=दासी, अजस=अपयश-बदनामी, पेटारी-पिटारी-पेटी=गठरी ।

★ **कैकेयी महारानी की मन्थरा नाम की एक दासी थी, जिसकी बुद्धि बड़ी मंद थी । बदनामी की पेटारी ढोते रहने के लिए उसे चुनकर सरस्वती जी उसी की बुद्धि को पलट कर चली गईं ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जो जिस स्तर का होता है, उसका वैसा ही उपयोग किया जाता है।

भरत मातु पहिं गई बिलखानी ।
का अनमनि हसि कह हँसि रानी ।।

⊗ बिलखानी=बिलखती हुई, अनमनि=उदास, का=क्यों, हसि=है ।

★ **वह बिलखती हुई भरत जी की माता कैकेयी के पास गई, रानी ने उससे हँसकर पूछा तू उदास क्यों है?**

* दुर्बुद्धिग्रस्त व्यक्ति सुख के प्रसंग में भी दुःखी होता है ।

ऊतरु देइ न लेइ उसाँसू ।
नारि चरित करि ढारइ आँसू ।।

⊗ ऊतरु=उत्तर, उसाँसू=लंबी-लंबी सांसें लेना, ढारइ=बहाना ।

★ **मंथरा कोई उत्तर नहीं दे रही है, केवल लंबी-लंबी सांसें ले रही है और स्त्री-चरित्र करती हुई आंसू बहा रही है ।**

* (१) स्त्रियों की भावुकता तो प्रसिद्ध ही है, वे अपने हावभाव से दूसरों की भावना को प्रभावित कर लेती है ।

भयउ कौसलहि अति बिधि दाहिन ।
देखत गरब रहत उर नाहिन ।।

⊗ दाहिन=दाहिना-अनुकूल, गरब (गर्व)=घमंड, उर=हृदय, नाहिन=नहीं ।

★ **मंथरा बोली आज विधाता कौशिल्या जी के बहुत अनुकूल हो गया है, यह देखकर उनके हृदय में घमंड नहीं समा रहा है ।**

कोउ नृप होउ हमहि का हानी ।
चेरि छाड़ि अब होब कि रानी ।।

⊗ हानी=हानि, होब=होउंगी ।

★ **कोई भी राजा बने इसमें मेरी हानि ही क्या है? दासी छोड़कर क्या अब मैं रानी बनूंगी? (अर्थात् मैं तो अब रानी होने से रही)**

* ऐसी बात मंथरा की तरह मूर्ख एवं ढोंगी ही कह सकते हैं ।

जारै जोगु सुभाउ हमारा ।
अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ।।

⊗ जारै=जलाना, जोगु=योग्य, सुभाउ=स्वभाव, अनभल=अहित ।

★ **मेरा स्वभाव तो जलाने योग्य है, क्योंकि मुझसे तुम्हारी हानि (अहित) नहीं देखी जाती ।**

* कपटी अपनी सद्भावना की दुहाई देकर ही दूसरों पर अपना प्रभाव जमाते हैं ।

चतुर गँभीर राम महतारी ।
बीच पाई निज बात सँवारी ।।

⊗ सँवारी=बना लेना संभाल लेना ।

★ **श्री रामचन्द्रजी की माता कौशिल्या बड़ी चतुर एवं गंभीर है, उन्होंने अवसर पाकर अपना सारा काम बना लिया ।**

पठए भरत भूप ननिअउरें ।
राम मातु मत जानब रउरें ।।

⊗ ननिअउरें=ननिहाल, रउरें=आप ।

★ **महाराजा ने जो इस समय भरत को ननिहाल भेज दिया है । उसे आप रामचन्द्रजी की माता कौशिल्या ही की सलाह समझिये ।**

* चतुर और कपटी किसी भी घटना का विश्लेषण अपने मन के अनुसार कर लेते हैं ।

राजहि तुम्ह पर प्रेम बिसेषी ।
सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी ।।

★ **राजा का तुम से विशेष प्रेम होने के कारण कौशिल्या सौतिया डाह से उसे नहीं देख सकती है ।**

रचि प्रपंच भूपहि अपनाई ।
राम तिलक हित लगन धराई ।।

⊗ प्रपंच=जाल, अपनाई=अपने वंश में कर लेना ।

★ **इसलिए उन्होंने जाल रचकर राजा को अपने वश में कर लिया और भरत की अनुपस्थिति में ही राम के राज तिलक का मुहूर्त, निश्चित करा लिया ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* कुटिल व्यक्ति इसी प्रकार काल्पनिक बातें रच कर लोगों में द्वेष पैदा कर देते हैं ।

भावी बस प्रतीत उर आई ।
पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई ।।

⊗ भावी=होनहार, देवाई=दिलाकर, प्रतीत=विश्वास ।

★ **होनहार वश इन निरर्थक बातों का कैकेयी के हृदय में भी विश्वास जम गया, फिर रानी मंथरा से सौगंध दिलाकर पूछने लगी ।**

* जब मनुष्य का विवेक बुद्धि की उपेक्षा करने लगे तो समझो उसके बुरे दिन आ गये ।

कहि कहि कोटिक कपट कहानी ।
धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी ।।

⊗ कोटिक=करोड़ों, प्रबोधिसि=समझाया ।

★ **ऐसी कपट की करोड़ों कहानियाँ सुना सुनाकर मंथरा ने रानी को खूब समझाया और धीरज रखने के लिए कहा ।**

* कुटिल व्यक्ति कपटपूर्ण कथायें गढ़कर लोगों को भ्रम में डाल देते हैं ।

फिरा करम प्रिय लागि कुचाली ।
बकिहि सराहइ मानि मराली ।।

⊗ कुचाली=बुरा आचरण,बकिहि=बगुली को, सराहइ=प्रशंसा करना, मराली=हंसिनी ।

★ **कैकेयी की मति पलट गई और उसे अब (मंथरा की) बुरी बात भी अच्छी लगने लगी । वह बगुली को हँसिनी समझकर उसकी प्रशंसा करने लगी ।**

* ऊपरी रूप रंग को देखकर किसी के गुण-दोष नहीं जाने जा सकते हैं ।

भामिनि करहुत कहौं उपाऊ ।
है तुम्हरीं सेवा बस राऊ ।।

★ **(मंथरा कहती है) हे भामिनी ! तुम करो तो उपाय मैं बताऊँ, राजा तुम्हारी सेवा के वश में हैं हीं ।**

परउँ कूप तुअ बचन पर,
सकउं पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुख देखि बड़,
कस न करब हित लागि ।।

⊗ तुअ-तब=तुम्हारे, पूत=पुत्र, कूप=कुआँ ।

★ **कैकेयी ने कहा, तेरे कहने से मैं कुंए में गिर सकती हूँ, पुत्र और पति को भी छोड़ सकती हूँ । जब तू मुझे बड़ी आपत्ति में फंसा हुआ देखकर मेरी भलाई की ही बात कहती है, तो भला उसे मैं क्यों न करूंगी ?**

* एक बार भ्रम में पड़ जाने पर भोला आदमी कपटी व्यक्ति की हर शर्त मान लेता है ।

लखइ न रानि निकट दुख कैसे ।
चरइ हरित तिन बलिपसु जैसे ।।

⊗ तिन=तृण, हरित=हरा, बलिपशु=वह पशु जिसे मारा जाने वाला है ।

★ **रानी आने वाले दुःख को नहीं देख पा रही है, जिस प्रकार कि बलि-पशु हरी घास खाने के पीछे अपनी मौत को नहीं समझ पाता है ।**

* तात्कालिक लाभ के पीछे हम भविष्य की हानि नहीं समझ पाते हैं ।

दुई बरदान भूप सन थाती ।
मांगहु आजु जुड़ाबहु छाती ।।

⊗ थाती=धरोहर, जुड़ाबहु=शान्त करो ।

★ **(मंथरा ने कहा) तुम्हारे दो वरदान राजा के पास धरोहर रूप में जमा हैं । आज उन्हें माँगकर अपने हृदय की पीड़ा (जलन) को शान्त करो ।**

सुतहि राज रामहि बनबासू ।
देहु लेहु सब सवति हुलासू ।।

★ **अपने पुत्र के लिये राज्य तथा राम को बनवास दिला कर अपनी सौत का सारा आनन्द छीन लो ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* कुटल व्यक्ति किसी का सुख छीन लेने में ही अपनी प्रसन्नता देखते हैं ।

भूपति राम सपथ जब करई ।
तब मागेहु जेहि बचन न टरई ।।

★ **महाराज जब राम की सौगन्ध खायें, तभी बरदान माँगना, जिससे वह अपनी बात को बदल न सकें ।**

* अगर हम झूठे हैं तो हमें दूसरों की सत्यता पर भी विश्वास नहीं होता है ।

कोप समाज साजि सब सोई ।
राज करत निज कुमति बिगोई ।।

⊗ कोप=क्रोध, बिगोई=नष्ट हो गई-डूब गई ।

★ **तब कैकेयी क्रोध प्रदर्शित करने की सारी तैयारी कर कोप भवन में जाकर सो गई । रानी होकर भी वह अपनी दुर्बुद्धि से नष्ट हो गयी ।**

* कुमति बड़ों को भी नष्ट कर देती है ।

कोप भवन सुनि सकुचेउ राऊ ।
भय बस अगहड़ परइ न पाऊ ।।

⊗ अगहड़=आगे, परइ=बढ़ना, पाऊ=पांव ।

★ **कैकेयी को कोपभवन में सुनकर महाराज सहम गये । भय के मारे उनका पैर आगे को नहीं बढ़ा ।**

* अनिष्ट का भय मनुष्य के बल को क्षीण कर देता है ।

जाइ निकट नृप कह मृदु बानी ।
प्रान प्रिया केहि हेतु रिसानी ।।

★ **राजा उनके पास गये और कोमल वाणी में कहने लगे प्रिये, तुम क्यों रूठ गई हो ?**

बिहसि मांगु मनभावति बाता ।
भूषन सजहि मनोहर गाता ।।

⊗ मनभावति=मन पसंद, मनोहर=सुन्दर, गाता=अंग ।

★ **तुम अपनी मनचाही बात प्रसन्नता से मांग लो और अपने सुन्दर अंगों को आभूषणों से सजा लो ।**

* शुभ अवसर पर किसी का अशुभ वेश अथवा दुःखी होना अच्छा नहीं ।

जौं कछु कहौं कपटु करि तोही ।
भामिनि राम सपथ सत मोही ।।

⊗ जौं=यदि, तोंही=तुझको, सपथ-शपथ=कसम, सत=शत, मोही=मुझे ।

★ **(राजा दशरथ बोले-) यदि मैं तुमसे कुछ कपट करके कहता होऊं तो हे भामिनि ! मुझे सौ बार श्री राम की सौगन्ध है ।**

* माँग का औचित्य समझे बिना ही उसकी पूर्ति का आश्वासन नीति-संगत नहीं । ऐसी भूल दुःखदायी होती है ।

यह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि,
बिहसि उठी मतिमंद ।
भूषन सजति बिलोक मृग,
मनहुं किरातिनि फंद ।।

⊗ किरातिनि=भीलनी, फंद (फंदा)=जाल, मृग=हिरन, मनहुं=मानो, मतिमंद=मूर्ख ।

★ **जब कैकेयी ने शपथ सुनी तो वह मूर्ख हँसती हुई उठ बैठी और आभूषण पहिनने लगी मानों कोई भीलनी मृग को फँसाने के लिए जाल का फंदा तैयार कर रही हो ।**

* कुटिल व्यक्ति की धोखा देने की मुस्कान सज्जनता के अर्थ में नहीं ली जानी चाहिये ।

मांग मांग पै कहहु पिय,
कबहु न देहु न लेहु ।
देन कहेहु बरदान दुई,
तेउ पावत संदेह ।।

★ **हे प्रियतम, 'आप मांग लो मांग लो' ऐसा तो हरदम कहा करते हैं परन्तु कभी कुछ भी देते लेते नहीं हैं । आपने जो पहले मुझे दो वरदान देने को कहे थे, उनके भी मिलने में मुझे संदेह दिखाई पड़ रहा है ।**

* राजा को उत्तेजित करने के लिये मनोवैज्ञानिक चाल खेली गयी अन्यथा जब मांगे ही नहीं तो दोष नहीं देना चाहिये ।

झूठेहु मोहि दोष जनि देहू ।
दुइ कै चारि माँगि किमि लेहू ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ राजा ने कहा– मुझे झूठ-मूठ दोष मत लगाओ । भले ही दो के बदले चार वरदान मांग लो ।

रघुकुल रीति सदा चलि आई ।
प्रान जाहि पर वचन न जाई ।।

★ रघुवंशियों की यही परम्परा रही है कि चाहे प्राण भले ही चले जाये पर उन्होंने अपने वचनों को नहीं जाने दिया ।

* अच्छे गुणों के कारण ही वंश का नाम चला करता है ।

नहिं असत्य समपातक पुंजा ।
गिरि सम होंहि कि कोटिक गुंजा ।।

⊗ पातक=पाप, पुंजा=समूह, गिरि=पहाड़, गुंजा=घुंघुची ।

★ झूठ बोलना इतना बड़ा पाप है कि उसकी बराबरी करोड़ों पाप मिलकर भी नहीं कर सकते हैं । क्या कभी करोड़ों घुँघचियाँ मिलकर पहाड़ की बराबरी कर सकती हैं ?

* असत्य अनेक पापों का कारण बन जाता है ।

सत्यमूल सब सुकृत सुहाए ।
बेद पुरान बिदित मनु गाए ।।

★ अच्छे कर्मों की जड़ सत्य ही है । अर्थात् सत्य के सहारे ही हम उत्तम कर्म कर सकते हैं । यह बात वेद पुराणों, में प्रसिद्ध हैं और महाराज 'मनु' ने भी यही कहा है ।

तेहि पर राम सपथ करि आई ।
सुकृत सनेह अवधि रघुराई ।।

⊗ सनेह=स्नेह, अवधि=सीमा ।

★ उस पर मेरे मुंह से राम की सौगन्ध निकल आई है । राम मेरे शुभ कर्म और प्रेम की चरम सीमा है अर्थात् मेरे लिए राम की सौगंध खाना विशेष महत्त्व रखता है ।

* राजा ने आवेश में संतुलन खो दिया ।

बात दृढ़ाई कुमति हँसि बोली ।
कुमति कुबिहग कुलह जनु खोली ।।

⊗ कुमत=बुरे विचार, कुबिहग=दुष्ट पक्षी (बाज), कुलह=पट्टी ।

★ इस प्रकार अपनी बात को पक्की करा करके वह दुर्बुद्धि कैकेयी हँसकर कहने लगी, मानों उसने शिकार करने के बुरे विचार रूपी दुष्ट बाज की आँखों की पट्टी खोल दी हो ।

* बुरे विचार बाज की तरह नृशंस होते हैं ।

सुनहु प्रानप्रिय भावत जीका ।
देहु एक वर भरतहि टीका ।।

★ हे प्राणप्रिय, आप सुनें । मेरे मन को अच्छा लगने वाला एक वरदान तो यह दें कि भरत का राजतिलक हो ।

मागउं दूसर वर कर जोरी ।
पुरबहु नाथ मनोरथ मोरी ।।

⊗ पुरबहु=पूरा करें, मनोरथ=इच्छा ।

★ और दूसरा वर भी मैं हाथ जोड़कर मांग रही हूँ । हे नाथ ! मेरे मनोरथ को अवश्य पूरा कीजिएगा ।

* अपनी गलत बात मनवाने के लिये कुटिल व्यक्ति बहुत नम्रता दिखाता है ।

तापस बेष बिसेषि उदासी ।
चौदह बरिस राम बनबासी ।।

⊗ उदासी=संसार से उदासीन होकर ।

★ (दूसरा वरदान यह माँगती हूँ कि) तपस्वी का वेष धारण कर विशेष रूप से उदासीन होकर राम चौदह वर्ष के लिए वन को जायें ।

सुनि मृदु बचन भूप हियँ सोकू ।
ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू ।।

⊗ ससि=चन्द्रमा, कर=किरणें, कोकू=चकवा ।

★ कैकेयी की कोमल वाणी सुनकर राजा के हृदय में महान शोक छा गया । जिस प्रकार चन्द्रमा की किरणों के स्पर्श से चकवा पक्षी व्याकुल हो जाता है, उसी प्रकार राजा भी व्याकुल हो गये ।

* दुष्टता भरी कोमल बानी भी भयंकर दुःख पहुँचाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कवनें अबसर का भयउ,
गयउँ नारि बिस्वास ।
जोग सिद्धि फल समय जिमि,
जतिहि अविद्या नास ॥

⊗ अविद्या=अज्ञान, जतिहि (यतिहि)=योगी को।

★ **इस अवसर पर क्या होना चाहिए था और क्या हो गया । स्त्री का विश्वास कर मैं उसी प्रकार छला गया जैसे योगी को अपनी सिद्धि का फल मिलने के समय अज्ञान उसे नष्ट (पथ भ्रष्ट) कर देता है ।**

* (१) अज्ञान हाथ में आयी सफलता को भी नष्ट कर देता है । (२) बिना सोचे वचनबद्ध हो जाने का पश्चाताप करना पड़ा ।

देन कहेहु अब जनि बरु देहू ।
तजहु सत्य जग अपजसु लेहू ॥

⊗ तजहु=छोड़ देना, अपजसु (अपयश)=बदनामी ।

★ **कैकेयी ने कहा- आपने ही वरदान देने को कहे थे अब भले ही न दीजिए । सत्य को छोड़कर संसार में अपनी बदनामी कराइये ।**

* सत्य को छोड़ देने से बदनामी झेलनी पड़ती है ।

सत्य सराहि कहेउ बरु देना ।
जानेहु लेइहि मांगि चबेना ॥

⊗ सराहि=प्रशंसा करना, चबेना=भुना हुआ अन्न ।

★ **आपने सत्य की बड़ी प्रशंसा कर वर देने का वचन दिया था परन्तु आप क्या समझते थे कि यह चबैना ही मांग लेगी ?**

* रानी दशरथ को उत्तेजित कर रही है कि कहीं बात बदल न दें ।

सिबि दधीचि बलि जौ कछु भाषा ।
तन धन तजेउ बचन पन राखा ॥

★ **महाराज शिवि, दधीचि एवं बलि ने कुछ कहा था उन वचनों को उन्होंने अपना तन और धन त्याग कर भी निभाया ।**

* उच्च सिद्धान्तों का हवाला निम्न स्वार्थों के पक्ष में देना उनका दुरुपयोग है ।

अति कटु बचन कहति कैकेई ।
मानहुँ लोन जरे पर देई ॥

⊗ कटु=कठोर, लोन=लवण-नमक ।

★ **कैकेयी ने इतने अधिक कठोर बचन कहे मानों उसने जले पर नमक छिड़का हो ।**

मरम वचन सुनि राउ कह,
कहु कछु दोष न तोर ।
लागेउ तोहि पिशाच जिमि,
काल कहावत मोर ॥

⊗ मरम =तीखे, पिसाच=प्रेत-भूत ।

★ **कैकेयी के तीखे वचनों को सुनकर राजा ने कहा- तू चाहे जो कह, इसमें तेरा कुछ भी दोष नहीं है। मेरा काल तुझे प्रेत बनकर लगा है और वही तुमसे यह सब कहला रहा है ।**

* व्यक्ति कुमति के प्रभाव में अपने प्रियजनों की हानि भी कर बैठता है ।

बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा ।
बीना बेनु संख धुनि द्वारा ॥

⊗ बिलपत्=विलाप करते-करते, भिनुसार=सुबह, बेनु=बाँसुरी, द्वारा=द्वार पर ।

★ **राजा को विलाप करते-करते सबेरा हो गया । राजद्वार पर वीणा, बाँसुरी और शंख की ध्वनि होने लगी ।**

द्वार भीर सेवक सचिव,
कहहिं उदित रवि देखि ।
जागेउ अबहुँ न अवधपति,
कारन कवन बिसेषि ॥

★ **राजद्वार पर लगी हुई सेवक और मन्त्रियों की भीड़ ने उदित हुए सूर्य को देखकर कहा- आज ऐसा कौन-सा विशेष कारण है कि राजा दशरथ जी अभी नहीं जागे ?**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पछिले पहरै भूप नित जागा ।
आजु हमहिं बड़ अचरज लागा ।।

★ **महाराज तो प्रतिदिन रात्रि के अन्तिम पहर (बड़े प्रात:काल) जाग जाया करते थे परन्तु आज (उनके न जगने से) हमें बड़ आश्चर्य हो रहा है ।**

* राजा अपनी दिनचर्या में इतने नियमित थे कि उसमें भूल होना लोगों के लिये आश्चर्य बन गयी ।

जाहु सुमन्त्र जगावहु जाइ ।
कीजिअ काज रजायसु पाई ।।

★ **हे सुमन्तजी, आप जाकर महाराज को जगायें ताकि उनकी आज्ञा पाकर कार्य प्रारम्भ किये जायें ।**

* (१) अज्ञान-निशा में सोये हुए कोई सुमन्त्र (सुन्दर मन्त्र) अर्थात् नेक सलाह देने वाला ही जगा सकता है ।

गए सुमन्त्र तब राउर माहीं ।
देखि भयावन जात डेराहीं ।।

⊗ राउर=राजमहल, भयावन=भयानक ।

★ **तब सुमन्त जी राजमहल में गये परन्तु उसकी भयानकता को देखकर उन्हें जाने में डर लगता था ।**

* जहाँ कपट का वातावरण हो वहाँ सज्जनों को अच्छा नहीं लगता ।

सोच बिकल बिबरन महि परेऊ ।
मानुहुँ कमल मूल परिहरेऊ ।।

⊗ बिबरन=विवर्ण-चेहरे का रंग उतर जाना, महि=पृथ्वी, मूल=जड़, परिहरेऊ=छोड़ देना ।

★ **सुमन्त ने देखा कि– राजा शोक से व्याकुल हैं, उनके चेहरे का रंग उड़ गया है, वे पृथ्वी पर ऐसे पड़े हुए हैं मानो कमल जड़ छोड़ कर उखड़ा पड़ा हो ।**

* शोकाकुल व्यक्ति उखड़े वृक्ष जैसा श्रीहीन हो जाता है ।

सचिउ सभीत सकई नहिं पूँछी ।
बोली असुभ भरी सुभ छूछी ।।

⊗ सभीत=डर के मारे, छूछी=खाली-रहित ।

★ **मन्त्री डर के मारे कुछ पूँछ नहीं पा रहे हैं । तब अमंगल से भरी हुई और कल्याणकारी बातों से रहित कैकेयी बोली ।**

* जिसके मन में अशुभ संकल्प भर गया उसके मन में शुभ का स्थान नहीं रह जाता ।

आनहु रामहि बेगि बोलाई ।
समाचार तब पूँछेहु आई ।।

★ **राम को तुम जल्दी बुला लाओ, तब आकर समाचार पूछना ।**

चलेउ सुमन्त्र राउ रुख जानी ।
लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी ।।

⊗ कुचालि=षड़यन्त्र, लखी=देखी-समझ ली ।

★ **राजा की इच्छा का आभास पाकर सुमन्त रामचन्द्रजी को बुलाने चले गये फिर वे यह भी समझ गये कि कैकेयी ने कुछ चाल खेली है ।**

* बातचीत और रुख से परिस्थिति का आभास हो जाया करता है ।

राम सुमंत्रहि आवत देखा ।
आदर कीन्ह पिता सम लेखा ।।

★ **श्री रामचन्द्रजी ने सुमन्त्र को आता हुआ देखा तो उनको पिता के समान समझकर आदर दिया ।**

* ज्ञानी बुजुर्ग तथा शुभ चिन्तक का सम्मान इसी प्रकार किया जाना चाहिये, भले ही वह पद में हमसे छोटा हो ।

निरखि बदन कहि भूप रजाई ।
रघुकुल दीपहि चलेउ लेवाई ।।

⊗ बदन=मुख, रजाई=आज्ञा, रघुकुलदीपहि=रघुकुल के दीपक, श्री राम ।

★ **मंत्री ने रामचन्द्रजी के मुख की शोभा को देखा– राजा की आज्ञा सुनाई और उन्हें अपने साथ लिवा ले गये ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करुनामय मृदु राम सुभाऊ ।
प्रथम दीख दुख सुना न काऊ ।।

★ रामचन्द्रजी स्वभाव से ही बड़े कोमल एवं करुण हैं । उन्होंने इस प्रकार का दुःख पहली बार ही देखा था । इसके पहले उन्होंने दुःख का नाम भी नहीं सुना था ।

तदपि धीर धरि समउ बिचारी ।
पूंछी मधुर बचन महतारी ।।

★ तो भी धैर्य को धारण कर- समय का विचार कर उन्होंने मीठे वचनों में माताजी से पूँछा-

* अचानक दुःख आ पड़ने पर भी दिमाग और वाणी का संतुलन रखा जाता है ।

मोहि कहु मातु तात दुःख कारन ।
करिअ जतन जेहिं होई निवारन ।।

★ हे माता मुझे आप पिताजी के दुःख का कारण बतलावें जिससे कि उसके दूर करने का उपाय किया जाय ।

* श्रेष्ठ व्यक्ति दुखी व्यक्ति के साथ स्वयं भी रोने नहीं बैठ जाते. दुख के निवारण का उपाय करते हैं ।

सुनहु राम सब कारन एहू ।
राजहि तुम्ह पर बहुत सनेहू ।।

★ कैकेयी ने कहा- हे राम, सारे दुःख का कारण यही है कि राजा का तुम पर बहुत अधिक स्नेह है ।

* अधिक स्नेह मोह रूप बनकर दुख का कारण बनता है ।

देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना ।
मागेउँ जो कछु मोहि सुहाना ।।

⊗ सुहाना=अच्छा लगना-सुहावना ।

★ राजा ने मुझे दो वरदान देने को कहे थे । मुझे जो अच्छे लगे वही मैने मांग लिए ।

सो सुनि भयउ भूप उर सोचू ।
छाड़ि न सकहि तुम्हार सँकोचू ।।

★ उनको सुनकर राजा के हृदय में बड़ा सोच हो गया क्योंकि वे तुम्हारा संकोच नहीं छोड़ना चाहते ।

* सज्जन व्यक्ति को जबर्दस्ती बलि का बकरा बनाया जाने वाला हो तो वहां अन्याय पूर्वक निर्णय सुनाने की स्थिति में ज्ञानेन्द्रियों का शिथिल हो जाना स्वाभाविक है ।

सबु प्रसंग रघुपतिहि सुनाई ।
बैठि मनहुँ तन धरि निठुराई ।।

⊗ सबु प्रसंग=सारा हाल, निठुराई=कठोरता ।

★ श्री रघुनाथजी को सब हाल सुनाकर कैकैयी ऐसे बैठी थी मानो निष्ठुरता ही शरीर धारण किये हुए हो ।

* जहां स्वयं का स्वार्थ सर्वोपरि हो जाता है वहाँ उदात्त मानवीय संवेदनाएँ तथा सहानुभूतियाँ समाप्त हो जाती हैं ।

मन मुसुकाय भानुकुल भानू ।
राम सहज आनन्द निधानू ।।

★ सूर्य वंशियों के सूर्य, स्वाभाविक रूप से आनन्द के भंडार श्री रामचन्द्रजी मन में मुस्कराये ।

* कर्तव्य बुद्धि से काम करने वाले को अधिकार तथा सुख छिनने का कुछ भी दुःख नहीं होता ।

बोले वचन विगत सब दूषन ।
मृदु मंजुल जसु बाग विभूषन ।।

⊗ विगत=रहित, बाग (वाक्)=वाणी, विभूषन=विभूषण ।

★ (उन्होंने) सम्पूर्ण दोषों से रहित कोमल, सुन्दर और वाणी की शोभा बढ़ाने वाले वचन कहे ।

* कठोर शब्दों के उत्तर में भी अपनी भाषा का स्तर बिगड़ने न दें ।

मुनिगन मिलनु विसेषि वन,
सबहि भांति हित मोर ।
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि,
संमत जननी तो ।।

★ मेरे लिए वन गमन सभी प्रकार से कल्याणप्रद ही है, क्योंकि वहाँ विशेष रूप से मुनियों का (मिलाप) सत्संग होगा और उसमें भी पिताजी की आज्ञा और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हे माँ, तुम्हारी सहमति सब कुछ मेरे लिए हितकारक ही है ।

* सोचने का ढंग बदला जा सके तो दु:ख के प्रसंग भी सुख के बन सकते हैं । कठोर समझी जाने वाली स्थिति में भी श्री राम ने प्रसन्न होने का मार्ग ढूँढ लिया ।

भरत प्रानप्रिय पावहिं राजू ।
बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू ।।

★ **और प्राणों से प्यारे भाई भरत राज्य पायेंगे । (इन सब बातों से तो यह मालूम होता है कि) विधाता सब प्रकार से मेरे अनुकूल ही है ।**

* अपना कुछ खो रहे हैं इसके स्थान पर प्रिय भाई को राज्य मिल रहा है यह सोचकर ही राम अपने को भाग्यवान् कह सके । यही आसन्न सहज भविष्य में प्राप्त होने वाले वैभव का त्याग भाई के हित में कर देना भ्रातृ-प्रेम तथा हृदय की विशालता का प्रतीक है ।

जों न जाउ बन ऐसेहु काजा ।
प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा ।।

⊗ काजा=कार्य, गनिअ=गिनती करना, मूढ़=मूर्ख ।

★ **यदि मैं ऐसे कामों के लिए भी वन को नहीं जाऊं तो मूर्खों के समाज में मेरी गिनती सबसे प्रथम होनी चाहिये ।**

* परहित और जीवन निर्माण का उपयुक्त अवसर मिलने पर भी जो घर का मोह नहीं त्यागते हैं, वे निश्चय ही मूर्ख हैं ।

सेवहिं अरंड कलपतरु त्यागी ।
परिहरि अमृत लेहिं विष मागी ।।

⊗ अरंड=अंडी-रेंड, परिहरि=छोड़कर ।

★ **(जो व्यक्ति) कल्पवृक्ष को छोड़कर रेंड की सेवा करते हैं और अमृत को छोड़कर विष की मांग करते हैं ।**

तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं ।
देखु विचारि मातु मन माहीं ।।

★ **वे मूर्ख भी ऐसा अवसर कभी नहीं छोड़ेंगे । हे माता ! तुम मन में विचार करके देखो ।**

* हाथ से निकला हुआ अवसर फिर दुबारा नहीं आता है ।

अम्ब एक दुखु मोहिं विसेषी ।
निपट विकल नरनायक देखी ।।

⊗ अम्ब=माँ, निपट=केवल, नरनायक=राजा ।

★ **हे माँ ! मुझे तो एक ही बात का विशेष दु:ख है और वह है (इस छोटी-सी बात के लिए) महाराज का अत्यन्त व्याकुल होना ।**

* संत स्वभाव वालों को दूसरों का दु:ख देखकर कष्ट होता है, अपने कष्ट को तो वे खेल समझते हैं ।

देस काल अवसर अनुसारी ।
बोले बचन विनीत विचारी ।।

★ **देश, काल और परिस्थिति को सोचते हुए श्री रामचन्द्र जी ने नम्र शब्दों में दशरथ जी से कहा ।**

* अपने निकटतम सम्बन्धी से भी बात करते समय उसकी मनोभूमि तथा परिस्थिति समझ कर उसी के अनुसार कुछ कहना चाहिये ।

तात कहउँ कछु करउं ढिठाई ।
अनुचित छमब जानि लरकाई ।।

⊗ छमब=क्षमा करना, लरिकाई=लड़कपन ।

★ **पिताजी मैं कुछ कहने की धृष्टता कर रहा हूँ । मेरा लड़कपन समझते हुए आप इस (कथन) की अनुचितता को क्षमा करें ।**

* अपना पक्ष नम्रता एवं वचनों की मधुरता से रखने पर सामने वाला अपनी बात से सहमत हो सकेगा, इस सम्भावना को सामने हमेशा रखना चाहिये ।

अति लघु बात लागि दुख पावा ।
काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनावा ।।

⊗ काहु=किसी ने, जनावा=जानकारी देना ।

★ **इस छोटी सी बात के लिए आपने इतना अधिक दु:ख पाया, किसी ने पहले से मुझे इसकी जानकारी ही न दी ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धन्य जनम जगतीतल तासू ।
पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ।।

⊗ जगतीतल=पृथ्वी पर, प्रमोदु=आनन्द ।

★ उन्होंने कहा– इस पृथ्वी पर उसका जीवन धन्य है, जिसके आचरण से पिता को परम आनन्द प्राप्त हो ।

* अच्छा चरित्र अपने को नाम और अपने प्रेमियों को सुख संतोष देता है ।

आयसु पालि जनम फलु पाई ।
ऐहउँ बेगहिं होउ रजाई ।।

★ आपकी आज्ञा का पालन कर और जीवन का समुचित लाभ लेकर मैं शीघ्र ही लौट आऊंगा । अतः आप दुःखी न होवें ।

* श्री राम अपने जन्म के उद्देश्य (राक्षसों का विनाश) की ओर राजा का ध्यान खींचते हैं । वन जाने को जन्म का फल पाना इसी से कहा ।

विदा मातु सन आबउँ माँगी ।
चलिहउं बनहि बहुरि पग लागी ।।

★ माताजी से विदा माँग आऊँ और फिर आपके चरण छूकर वन को चला जाऊँगा ।

* माता तथा पिता के प्रति विनयशीलता तथा उनके आशीर्वादों की सामर्थ पर पूर्ण विश्वास को श्री राम ने अभिव्यक्त किया है ।

धरम धुरीन धरम गति जानी ।
कहेउ मातु सन अति मृदु बानी ।।

⊗ धरम धुरीन=धर्म की धुरी को धारण करने वाले ।

★ धर्मपरायण श्री रामचन्द्रजी समय की गति को समझ कर, माताजी से कोमल वाणी में कहने लगे–

* धर्म का मर्म समझने वाला अपनी बात नम्रता पूर्वक कहने का अभ्यस्त होता है ।

पिता दीन्ह मोहि कानन राजू ।
जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू ।।

⊗ कानन=वन, काजू=कार्य ।

★ हे माता ! पिताजी ने मुझे वन का राज्य दिया है, जहां सब प्रकार से मेरा बड़ा काम बनेगा अर्थात् वन जाने से मुझे बड़ा लाभ होगा ।

* बोलने की कला द्वारा उसी प्रसंग को शिकायत के रूप में न रख कर अपने लिए आवश्यक और उपयोगी रूप में प्रस्तुत कर दिया ।

आयसु देहि मुदित मन माता ।
जेहिं मुद मंगल कानन जाता ।।

★ हे माँ ! तू मुझे प्रसन्न मन से वन जाने की आज्ञा दे दे, जिससे मेरी वन-यात्रा मंगलमय हो ।

जनि सनेह बस डरपसि भोरे ।
आनन्द अम्ब अनुग्रह तोरे ।।

⊗ भोरे=(भोला होना) चिन्ता करना, अनुग्रह=कृपा ।

★ मेरे प्रेम के वश होकर भूल से भी डर की चिन्ता मत करना । हे माँ आपकी कृपा से आनन्द ही आनन्द होगा ।

* जब चिन्तन प्रिय-जन के अनिष्ट की ओर घूम जाता है तो वही स्नेह भावना अपने लिए भय पैदा कर देती है और जब प्रियजन के हित की बात सोचते हैं तो वही भावना आशीर्वाद बन कर उसकी रक्षा करती है ।

धरम सनेह उभयँ मति घेरी ।
भई गति सांप छछूंदरि केरी ।।

⊗ उभय=दोनों, मति=बुद्धि ।

★ कौशिल्या जी की बुद्धि को धर्म और स्नेह ने दोनों ओर से घेर लिया, उनकी गति सांप-छछूँदर की तरह हो गई । सांप-छछूंदर की गति– अगर साँप-छछूँदर को खा लेता है तो अन्धा हो जाता है और छोड़ने पर भूखों मरना पड़ता है । इसलिए उसे न निगलते बनता है और न छोड़ते ।

* जब मोहवश धर्म पालन और स्नेह का निर्वाह एक दूसरे के विपरीत दिखने लगते हैं तो सज्जन व्यक्ति बड़ी दुविधा में पड़ जाता है ।

राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू ।
धरमु जाइ अरु बन्धु विरोधू ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ कौशिल्या जी सोचने लगीं– यदि मैं हठ करके पुत्र को यहां रख लेती हूँ तो धर्म मर्यादा टूटती है और भाइयों में आपस में विरोध उत्पन्न हो सकता है ।

* भावना के आवेग में कुछ भी न कर डालें– उसके परिणाम भी सोच लें ।

कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी ।
संकट सोच विबस भई रानी ।।

★ यदि मैं बन जाने को कहती हूँ तो बड़ी हानि हो रही है । इस प्रकार महारानी धर्म संकट में पड़ गईं और सोचने विचारने लगीं ।

* जब अपने अन्दर दो प्रकार के संकल्प कार्य करते हों, दोनों न्याय-संगत हों, और अपनी बुद्धि किसी एक का निर्णय न कर पाये तो वह स्थिति धर्म संकट कही जाती है ।

बहुरि समुझि तिय धरम सयानी ।
राम भरत दोउ सुत सम जानी ।।

★ फिर बुद्धिमती कौशल्या जी ने स्त्री-धर्म (पतिव्रत धर्म) को विचार कर राम तथा भरत दोनों को अपना ही पुत्र समझा ।

* (१) उतावली छोड़कर धैर्य पूर्वक बुद्धि को सोचने का अवसर दिया जाय तो सही मार्ग मिल जाता है । (२) परिवार के सभी बच्चों पर समान स्नेह भाव रखना स्त्री का धर्म है ।

सरल सुभाउ राम महतारी ।
बोली वचन धीर धरि भारी ।।

* श्री रामचन्द्रजी की माता कौशिल्या जी बड़े सीधे स्वभाव की हैं, उन्होंने अत्यधिक धैर्य धारण करके कहा ।

राजु देन कहि दीन्ह बन,
मोहि न सो दुख लेस ।
तुम्ह बिन भरतहि भूपतिहि,
प्रजहि प्रचण्ड कलेस ।।

⊗ लेस=किंचितमात्र-कुछ भी नहीं, प्रचण्ड=बड़ा, कलेस=क्लेश ।

★ तुम्हें राज्य देने को कहा था और अब बन दे दिया, इसका मुझे जरा भी दुःख नहीं है । (सोच तो यह रही हूं कि) तुम्हारे बिना भरत को, राजा को और प्रजा को बड़ा कष्ट पहुंचेगा ।

* माँ कौशल्या ने स्वयं के कष्ट की चिन्ता की अपेक्षा दूसरों के कष्टों की अधिक चिन्ता की । (२) राम के मन में किसी के प्रति स्नेह में कमी न आये इसलिए उनके प्रति सब का स्नेह व्यक्त किया ।

जौं केवल पितु आयसु ताता ।
तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ।।

★ यदि केवल पिता ही की आज्ञा (वन जाने की) है तो माता को (पिता से)बड़ा समझ कर तुम वन मत जाओ ।

* माता का स्थान पिता से ऊंचा होता है ।

जौं पितु मातु कहेउ बन जाना ।
तौ कानन सत अवध समाना ।।

★ और यदि माता पिता दोनों ने तुम्हें वन जाने को कहा है तो वन तुम्हें सैकड़ों अयोध्या के समान (सुखदाई) होगा ।

* माँ कौशल्या विमाता की आज्ञा को भी अपने समान सम्मान देती हैं ।

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई ।
रूप रासि गुन सील सुहाई ।।

⊗ रूप रासि=बहुत सुन्दर, सील (शील)=आचरण ।

★ फिर मैंने अत्यन्त सुन्दर, अच्छे गुण और आचरण वाली पुत्रवधू पाई है ।

नयन पुतरि करि प्रीति बढाईं ।
राखेउ प्रान जानिकिहिं लाईं ।।

★ मैंने इसे आँखों की पुतली की तरह प्रेम किया है । मेरे प्राण जानकी जी में ही समाये हुए हैं अर्थात् मैनें इन्हें प्राणों के समान रखा है ।

कलपबेलि जिमि बहुविधि लाली ।
सींच सनेह सलिल प्रतिपाली ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ कलपबेलि=कल्पलता, सलिल=पानी, प्रतिपाली=पालन किया ।

★ मैंने कल्प वृक्ष की लता के समान इसे बहुत लाड़-चाव से रखा है अपने प्रेम रूपी जल से सींच कर इसे पाला पोषा है ।

जिअनमूरि जिमि जोगवत रहउँ ।
दीप बाति नहीं टारन कहउँ ।।

⊗ जिअनमूरि=संजीवनी जड़ी, जोगवत=देखभाल करना, टारन=हटाना ।

★ मैंने इनकी (सीताजी की) सदैव संजीवनी जड़ी के समान बड़ी सावधानी से रखवाली की है । कभी दीपक की बाती को आगे हटाने को भी नहीं कहा है ।

* (१) सास को बहू के गुणों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए । (२) अगर सास यह सोच ले कि एक दिन वह भी बहू थी तो उनके व्यवहार कभी नहीं बिगड़ सकते हैं । (३) सास-बहू का सम्बन्ध कैसा होना चाहिए इसके लिए कौशिल्या माता के वचनों का अवश्य मनन कीजिए (४) पुत्र देकर बहू के रूप में पुत्री भी है और इसलिए उसे स्वयं की पुत्री से भी अधिक प्रेम तथा विश्वास दिया जाना चाहिए– यह गृह-धर्म की मर्यादा है ।

सोइ सिय चलन चहति बन साथा ।
आयसु काह होइ रघुनाथा ।।

★ वही (कोमलांगी एवं लाड़ प्यार में पली) सीता अब तुम्हारे साथ वन चलने को कह रही है । हे रघुनाथ ! उसे क्या आज्ञा है ?

जौं सिय भवन रहे कह अम्बा ।
मोहि कहँ होई बहुत अवलम्बा ।।

⊗ अम्बा=माता, अवलम्बा=सहारा ।

★ माता कौशिल्या ने कहा यदि, सीताजी घर में बनी रहें तो मुझको बहुत सहारा हो जायगा ।

* पुत्री और पुत्रबधू का स्थान समान ही है और पुत्र की अनुपस्थिति में पुत्रबधू आशा का बहुत बड़ा संबल होती है ।

कहि प्रिय बचन विवेकमय,
कीन्ह मातु परितोष ।
लगे प्रबोधन जानकिहि,
प्रगटि बिपिन गुन दोष ।।

⊗ विवेकमय=विचारयुक्त, परितोष=संतुष्ट, प्रबोधन=समझाने लगे, प्रगटि=प्रकट, विपिन=वन, गुन=गुण ।

★ श्री राम जी ने विवेकमय प्रिय वचन कहकर माता को संतुष्ट किया । फिर वन के गुण-दोष प्रकट करके वे जानकी जी को समझाने लगे ।

* किसी से यह कहना कि मैं ''कहता हूँ इसलिए मान लो'' ठीक नहीं । उस विषय के गुण-दोष बता कर बात का औचित्य समझाना चाहिए ।

एहि ते अधिक धरम नहि दूजा ।
सादर सास ससुर पद पूजा ।।

★ आदर पूर्वक सास-ससुर के चरणों की सेवा करने से बढ़कर स्त्रियों का कोई दूसरा धर्म नहीं है ।

* पत्नी केवल पति को ही महत्त्व न दें, पति को पाल-पोष कर समर्थ बनाने वाले सास-ससुर का भी महत्त्व स्वीकार करें ।

गुरु श्रुति संमत धरम फल,
पाइअ बिनहिं कलेस ।
हठ बस सब संकट सहे,
गालब नहुष नरेश ।।

★ (मेरी आज्ञानुसार घर पर रहने से) तुम्हें गुरु और वेद के द्वारा प्रमाणित धर्म मार्ग पर चलने का फल बिना किसी कष्ट के ही प्राप्त हो जायेगा । (यदि तुमने साथ में चलने की हठ की) तो संकट झेलने पड़ेंगे (क्योंकि) हठ करने के कारण गालव मुनि और राजा नहुष आदि सबको कष्ट ही उठाने पड़े थे ।

* यहां गालव और नहुष के हठ के उदाहरण दे सकते हैं ।

जौं हठ करहु प्रेम बस बामा ।
तौ तुम्ह दुख पाउब परिनामा ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ बामा=पत्नी, पाउब=पाओगी, परिनामा=परिणाम में ।

★ हे वामा ! यदि प्रेमवश हठ करोगी तो तुम परिणाम में दुःख पाओगी ।

* उचित सलाह पर ध्यान न देकर अपनी चाह पर जोर देना दुखःदायी होता है ।

उतरु न आब विकल बैदेही ।
तजन चहत सुचि स्वामि सनेही ।।

★ जानकी जी से कुछ उत्तर देते नहीं बना, वे व्याकुल हो गईं और सोचने लगीं कि मेरे पवित्र एवं प्रेमी स्वामी मुझे घर पर छोड़ जाना चाहते हैं क्या ?

बरबस रोकि बिलोचन बारी ।
धरि धीरजु उर अबनि कुमारी ।।

⊗ बिलोचन=नेत्र, बारी=पानी (यहाँ पर आंसू का अर्थ है) अबनि कुमारी=पृथ्वी पुत्री=सीताजी ।

★ आँखों में आँसुओं को जबर्दस्ती ही रोकती हुई तथा हृदय में धैर्य धारण कर पृथ्वी पुत्री सीताजी ने–(कहा)

* भावना के आवेग को धैर्य पूर्वक रोककर बात कहने का अभ्यास महिलाओं को करना चाहिये ।

भोग रोग सम भूषन भारू ।
जम जातना सरिस संसारू ।।

⊗ जमजातना (यम यातना)=नरक के कष्ट ।

★ आपके बिना मुझे सारे भोग रोग के समान हैं और आभूषण भार स्वरूप है । सारा संसार (यम-यातना) नरक के कष्टों के समान दुःखदायी है ।

प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं ।
मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ।।

★ हे प्राण नाथ ! तुम्हारे बिना मुझे संसार में कहीं कुछ भी सुखदायी नहीं दिखाई देता है ।

नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे ।
सरद विमल विधु बदन निहारे ।।

⊗ विमल=स्वच्छ, विधु=चंद्रमा, निहारे=देखकर ।

★ हे नाथ ! मुझे आपके साथ रहने से तथा निर्मल शरद ऋतु के चन्द्रमा की तरह आपका मुख देखकर (संसार के) सम्पूर्ण सुख प्राप्त होंगे ।

* जिसके प्रति सच्चा स्नेह हो उससे दूर होने पर सुख भी दुःख तथा इसके विपरीत दुःख भी सुख अनुभव होते है ।

अस कहि सीय विकल भइ भारी ।
बचन वियोग न सकी संभारी ।।

★ ऐसा कह कर सीताजी की व्याकुलता बहुत बढ़ गई । वे वियोग के वचनों को भी न संभाल सकीं । अर्थात् शरीर से विलग रहने की बात तो दूर रही वे वियोग की चर्चा करने से ही बेहोश हो गईं ।

* पति वियोग का दुःख बड़ा असहनीय होता है ।

देखि दसा रघुपति जियँ जाना ।
हठि राख नहिं राखिहिं प्राना ।।

★ सीता जी को ऐसी दशा देखकर श्री रामचन्द्रजी ने मन में जान लिया कि यदि हठपूर्वक इनको यहाँ रखा जायगा तो निश्चय ही ये प्राण त्याग देंगी ।

कहेउ कृपालु भानुकुल नाथा ।
परिहरि सोच चलहु बन साथा ।।

★ कृपा के भंडार श्री रामचन्द्रजी ने सीताजी से कहा– सोच को त्याग दो और मेरे साथ वन को चलो ।

* सीताजी कितना सहन कर सकती हैं, इसको देखकर श्री राम जी ने उचित बात के लिये भी अधिक आग्रह नहीं किया । आदर्श भी व्यावहारिक स्तर तक रखा जाता है ।

कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई ।
लगे मातु पद आसिष पाई ।।

★ श्री रामचन्द्रजी ने मीठे वचन कह प्रियतमा सीता जी को समझाया फिर माता के चरण छुए और आशीर्वाद प्राप्त किया ।

* दोनों पक्षों के स्नेह की मर्यादा निभाने की क्षमता भगवान राम से सीखें ।

तब जानकी सासु पद लागी ।
सुनिअ माय मैं परम अभागी ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ तब सीताजी ने सास के पैर पकड़ कर कहा– हे माता ! सुनिये, मैं बड़ी ही अभागिनी हूँ ।

सेवा समय दैव बन दीन्हा ।
मोर मनोरथ सफल न कीन्हा ।।

⊗ दैव=विधाता ।

★ आपकी सेवा करने का जब समय आया तो विधाता ने हमें वनवास दे दिया । मेरी मन की इच्छा सफल न हुई ।

* सास की सेवा के प्रति ऐसा ही उत्साह होना चाहिये कि यदि इसका मौका चूके तो बहू को हार्दिक पश्चाताप हो ।

सीतहि सासु असीस सिख,
दीन्हि अनेक प्रकार ।
चली नाइ पद पदुम सिर,
अति हित बारहिं बार ।।

★ सीताजी को सास ने अनेक आशीर्वाद और शिक्षाएँ दीं । फिर वे (सीताजी) बड़े प्रेम से उनके चरण कमलों में बार-बार अपना मस्तक झुकाकर चली गईं ।

* सास का कर्तव्य है कि बहू की रुचि देखकर उसे सही शिक्षा तथा प्रोत्साहन देती रहे । ऐसा करने से बहू से हार्दिक आदर प्राप्त होता है ।

समाचार जब लछिमन पाए ।
व्याकुल विलख बदन उठि धाए ।।

★ जब लक्ष्मणजी को ये सब समाचार मिले तब वे व्याकुल होकर उदास मुँह लेकर उठ दौड़े ।

* आपत्ति के समय सच्चा भाई, भाई को कैसे छोड़ सकता है ?

गुर पितु मातु न जानउँ काहू ।
कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ।।

⊗ काहू=किसी को, सुभाउ=स्वाभाव से, पतिआहू=विश्वास कीजिए ।

★ लक्ष्मण जी बोले– हे नाथ ! स्वभाव से ही कहता हूँ,आप विश्वास करें, मैं आपको छोड़कर गुरु, पिता माता किसी को भी नहीं जानता ।

* सच्चे अर्थों में भाई के प्रति प्रेम के प्रतीक के रूप में लक्ष्मणजी का व्यक्तित्व उभरना प्रारंभ होता है ।

मोरे सबइ एक तुम्ह स्वामी ।
दीनबंधु उर अन्तरजामी ।।

⊗ सबइ=सबकुछ, अन्तरजामी (अंतर्यामी)=हृदय के अन्दर की जानने वाले ।

★ हे स्वामी ! हे दीनबन्धु ! हे सबके हृदय के अन्दर की जानने वाले ! मेरे तो सब कुछ केवल आप ही हैं ।

* भगवान के प्रति सच्चा समर्पण होता है तो सारे सम्बन्ध प्रभु में ही दिखाई देते हैं, बाहर नहीं ।

मन क्रम बचन चरन रत होई ।
कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई ।।

⊗ मन क्रम बचन=मन-कर्म-वचन, रत=लगा हुआ, परिहरिअ=छोड़ना ।

★ हे प्रभु ! जो मन-वचन और कर्म से चरणों में ही प्रेम रखता हो, हे कृपा निधान ! क्या वह भी त्यागने के योग्य है ?

* जिसने मन वचन कर्म से भगवान के प्रति समर्पण कर दिया, उसे भगवान के सतत् सानिध्य का हक मिल जाता है ।

करुणासिंधु सुबंधु के,
सुनि मृदु बचन बिनीत ।
समुझाए उर लाइ प्रभु,
जानि सनेहँ सभीत ।।

⊗ करुणा सिंधु=दया के समुद्र, मृदु=कोमल, उरलाइ=हृदय से लगाकर, सभीत=डरे हुए ।

★ दया के समुद्र श्री रामचन्द्रजी ने अपने भाई के कोमल और नम्रतायुक्त वचन सुनकर और उन्हें स्नेह के कारण डरे हुए जानकर हृदय से लगा लिया और समझाया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

* भयभीत और कोमल व्यक्ति आत्मीयता पाकर ही कुछ समझने की स्थिति में आता है । इसलिये भगवान राम ने भाई को पहले हृदय से लगाया तब समझाया ।

मांगहु विदा मातु सन जाई ।
आवहु बेगि चलह बन भाई ।।

★ कि हे भाई, माताजी से विदा माँग कर आओ और शीघ्र वन को चलो ।

* लक्ष्मण जी के प्रेम को देखकर श्री राम को उन्हें साथ लेना ही पड़ा । ऐसी ही दशा भक्त और भगवान की होती है ।

मुदित भए सुनि रघुबर बानी ।
भयउ लाभ बड़ गई बड़ि हानी ।।

★ रघुवंश भूषण श्री रामचन्द्रजी के वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी बहुत प्रसन्न हुए । उनको बहुत बड़ा लाभ हुआ और बहुत बड़ी हानि दूर हो गई ।

हरषित हृदयँ मातु पहिं आए ।
मनहुँ अन्ध फिर लोचन पाए ।।

★ वे प्रसन्न चित्त होकर माता सुमित्राजी के पास गये । मानो अंधे को फिर से नेत्र (दृष्टि) मिल गये हों ।

* भक्त के लिए अपने इष्ट का विछोह सबसे बड़ी हानि तथा उसका संयोग सबसे बड़ा लाभ दिखता है ।

पूँछे मातु मलिन मन देखी ।
लखन कहीं सब कथा बिसेषी ।।

⊗ मलिन=उदास, देखी=देखकर, लखन=लक्ष्मण, बिसेषी=विस्तारपूर्वक ।

★ माता ने उदास मन देखकर उनसे कारण पूछा । लक्ष्मणजी ने सब कथा विस्तार से कह सुनायी ।

धीरज धरेउ कुअवसर जानी ।
सहज सुहृद बोली मृदु बानी ।।

⊗ कुअवसर=बुरा समय, सुहृद=भलाई चाहने वाला (हितैषी) ।

★ बुरा समय आया जानकर माता सुमित्रा जी ने धीरज धारण किया । वे बड़ी ही स्वाभाविक और हितकर वाणी में कहने लगीं ।

* माता सुमित्रा जी को अनीति देखकर रोष तो आया पर अपने को संयत करके कहा–

तात तुम्हारि मातु बैदेही ।
पिता राम सब भांति सनेही ।।

★ हे पुत्र ! सीता जी ही तुम्हारी माता हैं और सब प्रकार से प्रेम करने वाले श्री रामचन्द्रजी तुम्हारे पिता हैं ।

* पिताजी के न होने पर बड़े भाई को ही पिता और भाभी को माता समझना चाहिए ।

अवध तहाँ जहँ राम निवासू ।
जहँइँ दिवस जहँ भानु प्रकासू ।।

⊗ जहँइँ=जहाँ-उसी जगह, प्रकासू=प्रकाश ।

★ जहाँ श्री रामजी का निवास हो वही स्थान तुम्हारी अयोध्या है । जहाँ सूर्य का प्रकाश हो वहीं दिन हुआ करता है ।

जौं पै सीय राम बन जाहीं ।
अवध तुम्हार काज कछु नाहीं ।।

★ यदि श्री रामजी का सीता के साथ वन का जाना निश्चित ही है तो फिर यहाँ अयोध्या में तुम्हारा कुछ भी काम नहीं है ।

* माता के द्वारा पुत्र को कर्तव्य-पालन की प्रेरणा का अनुकरणीय आदर्श माँ सुमित्रा ने प्रस्तुत किया है ।

गुरु पितु मातु बन्धु सुर साईं ।
सेइअहिं सकल प्रान की नाईं ।।

⊗ सेइअहिं=सेवा करना, नाईं=तरह ।

★ गुरु, पिता, माता, भाई, देवता और स्वामी– इन सबकी सेवा प्राणों के समान करनी चाहिए अर्थात् पूरे मनोयोग और तत्परता से करनी चाहिये ।

राम प्रानप्रिय जीवन जी के ।
स्वारथ रहित सखा सबही के ।।

★ (फिर)श्री रामचन्द्रजी प्राणों के भी प्राण हैं वे-जीवन के भी जीवन हैं और सबके नि:स्वार्थ मित्र हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* संसार का सारा व्यापार तो स्वार्थ पर टिका हुआ है परन्तु भगवान बिना किसी स्वार्थ के सबके हितैषी हैं । भगवान के भक्त को भी वैसा ही होना चाहिये ।

पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें ।
सब मनिअहिं राम के नाते ।।

★ संसार में जितने भी परम प्रिय और सम्माननीय (पूजनीय) व्यक्ति हैं वे सब राम से ही संबंधित होने के कारण से हैं ।

* भगवान गुणधाम हैं उनके अंश गुणों के रूप में जिनमें होते हैं, वही प्रिय लगते हैं ।

अस जियँ जानि संग बन जाहू ।
लेहु तात जग जीवन लाहू ।।

★ हे तात ! हृदय में ऐसा ही सोचकर वन को जाओ और संसार में जीवित रहने का लाभ उठाओ ।

* जो ईश्वर से, ईश्वरत्व से दूर है उसका जीवन निरर्थक है ।

भूरि भाग भाजन भयहु,
मोहि समेत बलि जाउँ ।
जौं तुम्हरे मन छाँड़ि छल,
कीन्ह राम पद ठाउँ ।।

⊗ भूरि=बहुत, भाजन=पात्र, ठाउँ=स्थान ।

★ हे पुत्र ! मैं तुम पर निछावर हूँ, मेरे सहित तुम बड़े सौभाग्य के पात्र हो, जो तुम्हारे चित्त ने छल छोड़कर श्री रामचन्द्रजी के चरणों में अपना स्थान बना लिया है ।

* भगवान के निष्काम प्रेमियों के साथ उनके सम्बन्धी भी धन्य हो जाते हैं ।

पुत्रवती जुवती जग सोई ।
रघुपति भगत जासु सुत होई ।।

★ संसार में वही पुत्रवती है जिसका पुत्र श्री रामजी का भक्त हो ।

नतरु बांझ भलि बादि बिआनी ।
राम विमुख सुत तें हित जानी ।।

⊗ नतरु=नहीं तो, वादि=व्यर्थ, विआनी-(व्याना)=पुत्र प्रसव करना, (यह शब्द पशुओं के अर्थ में प्रयोग किया जाता है) ।

★ अन्यथा राम से विमुख पुत्र तो समाज की बहुत हानि करता है, ऐसा पुत्र पैदा करने वाली स्त्री से तो बंध्या (बांझ) स्त्री ही भली ।

* यदि हम अपने बालकों को राम सरीखा मर्यादाओं का पालन करने वाला, समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने वाला तथा सच्चे मानव धर्म की स्थापना में सहयोग देने वाला नहीं बनाते हैं तो फिर बिना पुत्र के ही बने रहना सार्थक तथा श्रेष्ठ है ।

तुम्हरेहिं भाग राम बन जाहीं ।
दूसर हेतु तात कछु नाहीं ।।

★ मुझे ऐसा लगता है कि राम तुम्हारे ही भाग्य से वन को जा रहे हैं । हे तात् ! उनके वन जाने का कोई और दूसरा कारण नहीं है ।

* भगवान दूसरों के हित के लिए ही कष्ट सहते हैं ।

राग रोष इरिषा मद मोहू ।
जनि सपनेहू इन्ह के वस होहू ।।

⊗ रोष=क्रोध, इरिषा=ईर्ष्या, मद=घमण्ड ।

★ राग, क्रोध, ईर्ष्या, अभिमान और मोह इनके वश में स्वप्न में भी मत होना ।

* सेवा परायण व्यक्ति को रागादि दोषों के प्रति इतना सतर्क रहना चाहिए कि वे भूल से भी मन या आचरण में न आने पावें ।

सकल प्रकार विकार बिहाई ।
मन क्रम बचन करेहु सेबकाई ।।

★ सब प्रकार के विकारों को त्याग कर मन, वचन और कर्म से श्री रामचन्द्रजी और सीताजी की सेवा करना ।

* विकारहीन होकर ही सच्ची सेवा की जा सकती है ।

तुम्ह कह बन सब भांति सुपासू ।
संग पितुमातु राम सिय जासू ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **तुम्हारे लिए वन ही सब प्रकार से आरामदायक निवास है, जहाँ श्री रामजी जैसे पिता और सीता जैसी माता का साथ है ।**

* अपने हितैषियों के साथ होने पर समस्त सुख सुविधाएँ अभाव में भी बन जाती हैं ।

गये लखन जहँ जानिके नाथू ।
भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू ।।

★ **लक्ष्मण जी (तत्काल ही) वहाँ पहुँच गये जहाँ जानकी नाथ श्री राम थे । अपने प्रिय का साथ पाकर वे मन में बड़े प्रसन्न हुए ।**

बेदि राम सिय चरन सुहाए ।
चले संग नृप मंदिर आए ।।

★ **लक्ष्मण जी ने आकर श्री रामजी के सुन्दर चरणों की वन्दना की । वहाँ से उनके साथ-साथ राज भवन को गये ।**

सकइ न बोलि बिकल नरनाहू ।
सोक जनित उर दारुन दाहू ।।

⊗ जनित=पैदा हुई, दारुन (दारुण)=घोर भयानक, दाहु=(दाह) जलन पीड़ा, नरनाहू=नर नाथ (महाराज) ।

★ **महाराज व्याकुल पड़े हैं वे बोल नहीं पाते । हृदय में शोक से उत्पन्न भयंकर पीड़ा हो रही है ।**

* शोक मग्न मनुष्य पीड़ित व्यक्ति की तरह बेहाल हो जाता है ।

नाइ सीस पद अति अनुरागा ।
उठि रघुवीर बिदा तब माँगा ।।

★ **तब रघुकुल के वीर श्री राम ने उठकर बड़े प्रेम से पिताजी के चरणों में मस्तक नवाया और उनसे विदा माँगी ।**

* आज्ञाकारी पुत्र राम अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक वन जा रहे हैं । कर्तव्यपरायण व्यक्ति ऐसे ही होते हैं ।

पितु असीस आयसु मोहि दीजै ।
हरष समय बिसमउ कत कीजै ।।

⊗ बिसमउ (विस्मय)=अचरज (यहाँ पर शोक का भाव है) कत=क्यों ।

★ **पिताजी, आप मुझे आशीर्वाद के साथ (वन जाने की) आज्ञा प्रदान करें । यह समय प्रसन्नता का है । आप शोक क्यों कर रहे हैं ?**

* अपने व्रत के पालन में शोक नहीं प्रसन्नता अनुभव करनी चाहिए ।

तात किएं प्रिय प्रेम प्रमादू ।
जस जग जाइ होइ अपवादू ।।

⊗ प्रमादू=कर्तव्य में त्रुटि, अपवादू=निन्दा ।

★ **हे तात् ! प्रेम के वशीभूत होकर कर्तव्य की अवहेलना करने से संसार में यश नष्ट होता है और निन्दा बढ़ती है ।**

* दशरथ कहते हैं– कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए क्योंकि भावना की तुलना में स्वधर्माचरण या कर्तव्य ऊँचा है ।

सुभ अरू असुभ करम अनुहारी ।
ईस देई फल हृदय बिचारी ।।

★ **मनुष्य के द्वारा किए गए शुभ और अशुभ कर्मों के अनुरूप फल ईश्वर सोच विचार कर देता है ।**

* कर्मों का फल आज नहीं तो कल भोगना ही पड़ेगा ।

करई जो करम पाव फल सोई ।
निगम नीति असि कह सब कोई ।।

⊗ जो जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है । यह वेद की नीति है और ऐसा सभी कहते हैं ।

सजि बन साज-समाज सब,
बनिता बन्धु समेत ।।
बंदि बिप्र गुरु चरन प्रभु,
चले करि सबहि अचेत ।।

⊗ वनिता=स्त्री, अचेत=बेहोश ।

★ **बन के लिए सब साज-सामान (आवश्यक) वस्तुएँ लेकर श्री रामचन्द्रजी, पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहित ब्राह्मण और गुरु के चरणों की बन्दना करके सबको बेसुध-सा करके वनको चले गये ।

* प्रिय व्यक्तियों का विछोह स्वजनों को कष्ट देता है ।

सीता सचिव सहित दोउ भाई ।
श्रृंगबेरपुर पहुँचे जाई ।।

★ दोनों भाई (राम और लक्ष्मण) सीताजी तथा मन्त्री के साथ श्रृंगवेरपुर जा पहुँचे ।

यह सुधि गुह निषाद जब पाई ।
मुदित लिए प्रिय बन्धु बोलाई ।।

⊗ सुधि=खबर ।

★ जब निषाद-राज गुह को इस बात की खबर मिली तो उसने आनन्दित होकर अपने प्रियजन और भाई बन्धुओं को बुला लिया ।

* प्रसन्नता में सबको शामिल करना चाहिए ।

लिए फल मूल भेंट भरि भारा ।
मिलन चलेउ हिय हरष अपारा ।।

★ भेंट के लिए फल मूल (कन्द) काँवरों में लादकर वह मिलने के लिए गया । उसके मन में अपार हर्ष था ।

* प्रेम में देने की इच्छा रहती है इसलिए प्रेमी लोग भेंट लेकर मिलने जाते हैं ।

करि दण्डवत भेंट धरि आगे ।
प्रभुहि विलोकत, अति अनुरागे ।।

★ दण्डवत् करके, भेंट सामने रख वह बड़े प्रेम से प्रभु की ओर देखने लगा ।

सिय सुमन्त्र भ्राता सहित,
कन्द मूल फल खाई ।
सयन कीन्ह रघुवंसमनि,
पाय पलोटत भाइ ।।

★ सीताजी, सुमंत्र और भाई लक्ष्मण जी के साथ कंद-मूल फल खाकर रघुकुल भूषण श्री रामचन्द्रजी लेट गये तथा भाई लक्ष्मण उनके पैर दबाने लगे ।

* (१) जो अकेला खाता है, वह चोर है । (२) अपने आश्रितों को खिलाये बिना भोजन नहीं करना चाहिए । (३) लक्ष्मण अपने सेवा धर्म पर तत्पर हैं ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय ४

यस्याङ्के च विभाति
भूधरसुता देवापगा मस्तके ।
भाल बाल विधुगले च
गरलं यस्योरसि व्यालराट् ॥
सोऽयं भूति विभूषणः
सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ।
शर्वः सर्वगतः शिवः
शशिनिभः श्री शङ्करः पातु माम् ॥

⊗ यस्य=जिसके, अङ्के=गोद में, विभाति=शोभा पाती है, भूधर-सुता=पर्वत-पुत्री (पार्वती), देवापगा=गंगाजी, भाल=मस्तक पर, बालविधु=द्वितीया का चन्द्रमा, गरलं=विष, यस्य-उरसि=वक्ष पर, व्यालराट्=सर्पादि, भूतिविभूषणः=भस्म से शृंङ्गार है जिनका, सुरवरः=देवों में श्रेष्ठ, सर्वाधिपः=सबके स्वामी, शर्वः=संहारकर्ता, सर्वगतः=सर्वव्यापी, शिवः=कल्याणकारी, शशिनिभः=चन्द्रमा जैसी आभा वाले, पातु माम्=मेरी रक्षा करें ।

★ **जिनकी गोद में पार्वती जी, मस्तक पर गंगा जी, माथे पर द्वितिया का चन्द्रमा, गले में कालकूट और वक्ष पर सर्पादि सुशोभित हैं, भस्म जिनका शृंगार है, देवताओं में श्रेष्ठ, सबके स्वामी, संहारकर्ता, सर्वव्यापी, कल्याणकारी, चन्द्रमा के समान आभा वाले श्री शंकर जी मेरी रक्षा करें ।**

* पार्वती से शक्ति, गंगा से ज्ञान, चन्द्रमा से विकासशील, शान्त बुद्धि, कालकूट से तथा सर्पों से समाज के विकारों के शमन, भस्म धारण से मृत्यु रूप में, अनुशासन तथा वैराग्य भावना आदि भावनात्मक संगतियाँ समझी जानी चाहिये ।

भयउ विषाद निषादहि भारी ।
राम सीय महि सयन निहारी ॥

⊗ विषाद=दुःख, सयन-(शयन)=सोना, महि=पृथ्वी ।

★ **जब निषाद ने श्री राम-जानकी को जमीन पर सोते देखा तो उसे बड़ा दुःख हुआ ।**

* पर-दुःख से दुःखी होने वाले व्यक्ति में आध्यात्मिकता प्रमाणित होती है । निषाद-राज में पात्रता देख लक्ष्मण जी ने उसे ज्ञान-दान दिया ।

बोले लखन मधुर मृदु बानी ।
ग्यान बिराग भगति रस सानी ॥

⊗ सानी=ओतप्रोत, बानी=वाणी, बिराग=वैराग्य, भगति=भक्ति ।

★ **उसका दुःख दूर करने के लिये वैराग्य और भक्ति-रस-युक्त सुन्दर, वचन लक्ष्मण जी बोले ।**

* (१) वाणी का साधक हर विषय को सरस ढंग से कह सकता है । (२) शिक्षा युक्त सरस वाणी लोगों का दुःख दूर कर सकती है ।

काहु न कोउ सुख दुख कर दाता ।
निज कृत करम भोग सब भ्राता ॥

⊗ दाता=देने वाला, कृत=किये हुए, भ्राता=भाई ।

★ **हे भैया ! दुनिया में कोई किसी को न दुःख देने में समर्थ है न सुख देने में । सभी व्यक्ति अपने किये हुए कर्मों का ही फल भोगते हैं ।**

* किसी के सुख का श्रेय स्वयं लेना अथवा अपने दुःख का दोष दूसरों को देना अनुचित है ।

जोग वियोग भोग भल मंदा ।
हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा ॥

* जोग-(योग)=संयोग-मिलना, वियोग=बिछुड़ना, भोग=फल भोगना, भल मंदा=भले-बुरे, हित=मित्रता, अनहित=शत्रुता, मध्यम=उदासीनता ।

★ **मिलना-बिछुड़ना, भला-बुरा, भोग, शत्रुता, मित्रता उदासीनता ये सब उलझनें भ्रम के कारण हैं ।**

* ये सब मन की स्थितियाँ हैं । यदि हम मन को अनुशासित कर लें तो वह प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रह सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जनम मरन जहँ लगि जग जालू ।
संपति विपति करम अरु कालू ।।

⊗ जग जालू=संसार के बन्धन, संपति=सम्पत्ति, धन=सुख-वैभव आदि, विपति (विपत्ति)=दु:ख, कालू=काल (समय), जनमु-मरनु=(जन्म-मरण)=जन्म तथा मृत्यु ।

★ **जीवन, मरण, वैभव, सुख, दु:ख, कर्म और काल सभी संसार के बन्धन हैं ।**

धरनि धाम धन पुर परिवारू ।
सरग नरक जहँ लगि व्यवहारू ।।

⊗ धरनि-(धरणि)=धरती, पुर=नगर, धामु-(धाम)=घर ।

★ **पृथ्वी, घर, धन, नगर, परिवार और स्वर्ग-नरक जहाँ तक भी व्यवहार हैं ।**

देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं ।
मोह मूल परमारथ नाहीं ।।

⊗ देखिअ=देखना, सुनिअ=सुनना, गुनिअ=मनन, मूल=जड़, परमारथु=परमार्थ ।

★ **उपरोक्त सभी व्यवहार जो देखने, सुनने एवं मन में चिन्तन करने से आते हैं, इन सबकी जड़ मोह (अविवेक) ही है । परमार्थ मार्ग में इन्हें महत्त्व नहीं मिलता ।**

* संसार के दु:ख द्वन्द्व मोह के कारण पैदा होते हैं, परमार्थी इनसे सहज ही बच जाता है ।

सपनें होइ भिखारि नृप,
रंक नाकपति होइ ।
जागें लाभ न हानि कछु,
तिमि प्रपंच जियँ जोइ ।।

⊗ सपने=स्वप्न, रंक=कंगाल, नाकपति=स्वर्ग का मालिक (इन्द्र), प्रपंच=खेल (छल) ।

★ **जैसे स्वप्न में बहुत बड़ा राजा भिखारी हो जावे, और गरीब स्वर्ग का स्वामी अर्थात् बहुत बड़ी सम्पत्ति का मालिक बन जावे, पर न तो राजा भिखारी होता है और न गरीब स्वर्ग का राजा होता है इसी प्रकार दिखने वाले संसार को सपने (स्वपन) सरीखा मानना चाहिए जिससे कि संसार के छलावे से मुक्ति मिले ।**

* निद्रा अज्ञानी की स्थिति है और जागना ज्ञानी की । सुख दु:ख को अज्ञानी यथार्थ मानता है और ज्ञानी के लिए वे मात्र स्वप्न की तरह हैं ।

अस विचारि नहिं कीजिअ रोसू ।
काहुहि बादि न देइअ दोसू ।।

⊗ रोसू=रोष (क्रोध), बादि=व्यर्थ, दोसू=दोष ।

★ **ऐसा सोचकर गुस्सा नहीं करो और न किसी पर व्यर्थ का दोषारोपण करो ।**

* सुख-दु:ख का सही रूप समझ लेने पर उसके लिये किसी पर क्रोध या दोषारोपण निरर्थक लगने लगता है ।

मोह निसाँ सब सोवनिहारा ।
देखिअ सपन अनेक प्रकारा ।।

⊗ निसाँ (निशा)=रात, सोवनि हारा = सोने वाले

★ **संसार में सभी लोग मोह रूपी रात में सोने वाले हैं, इन्हें सोते समय अनेक प्रकार के स्वप्न दिखाई देते हैं ।**

* मोहग्रस्त व्यक्ति सोये हुए की तरह है जो वास्तविक दुनिया से बेखबर तथा अवास्तविकता में खोया रहता है ।

एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी ।
परमारथी प्रपंच वियोगी ।।

⊗ जामिनि=रात्रि, जोगी=योगी, परमारथी=परोपकारी, वियोगी=अलग है, एहि=इस ।

★ **इस संसार रूपी रात्रि में, योगी परमार्थी तथा माया से भरे जगत से मुक्त लोग, सदैव जागते रहते हैं ।**

* योगी और परमार्थी यथार्थ को समझते हैं इसलिये वे जागे हुए कहे जाते हैं ।

जानिअ तबहि जीव जग जागा ।
जब सब विषय बिलास बिरागा ।।

⊗ जानिअ=जानना चाहिये, जीव=प्राणी, विषय=भोग-वृत्ति, बिरागा=वैराग्य ।

★ **प्राणी को तभी जागृत अवस्था में जानो जब वह सभी भोग-वृत्तियों पर विजय पा ले और उसमें वैराग्य भावना का उदय हो जाये ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जागृत स्थिति (ज्ञान की स्थिति) मिल गयी यह तभी मानना चाहिये जब मनुष्य की मूल प्रवृत्तियाँ बदल जायें । मात्र कहने-सुनने जाने की वह स्थिति नहीं माननी चाहिये ।

होइ बिबेक मोह भ्रम भागा ।
तब रघुनाथ चरन अनुरागा ।।

★ **विवेक का उदय होने पर मोह या अज्ञान का नाश हो जाता है और भगवान के चरणों में मन लग जाता है ।**

* (१) मन न लगने का कारण अविवेक, मोह और भ्रम है । (२) बिना विवेक जगाये भक्ति की बात करने वाले अपनी भूल को समझें ।

सखा परम परमारथु एहू ।
मन क्रम बचन राम पद नेहू ।।

⊗ एहू=यही, नेहु=-प्रेम, क्रम=कर्म।

★ **हे मित्र ! जीवन का सबसे बड़ा परमार्थ यही है, कि मन, वचन तथा सुकर्म से रामजी के चरणों में स्नेह हो ।**

* भक्त की स्थिति पाना बड़ा भारी पुरुषार्थ है, उसे चिन्ह पूजा से नहीं पाया जा सकता ।

कहत राम गुन भा भिनुसारा ।
जागे जग मंगल सुखदारा ।।

⊗ भा=हुआ, भिनुसारा=सवेरा, सुखदारा=सुख देने वाले ।

★ **इस प्रकार भगवान की चर्चा करते हुए सवेरा हो गया और सारे संसार के हितकारी और सुखकारी श्री राम जाग गये ।**

* (१) जिस प्रसंग में रस आता है उसमें समय बीतते पता नहीं लगता । (२) भगवान हित और सुख दोनों का ध्यान रखते हैं ।

अनुज सहित सिर जटा बनाए ।
देखि सुमन्त्र नयन जल छाए ।।

★ **श्री राम एवं लक्ष्मण जी को जटायें बनाये देखकर सुमन्त्रजी की आँखों में आँसू आ गये ।**

* मोह के कारण बच्चों को सात्विक जीवन बिताते देखकर भी दुःख होता है ।

मन्त्रिहि राम उठाय प्रबोधा ।
तात धरम मत तुम्ह सब सोधा ।।

⊗ प्रबोधा=समझाया, सोधा (शोधा)=खोज लिया ।

★ **भगवान राम ने सुमन्त्रजी को उठाते हुये धैर्यपूर्वक समझाया, हे तात ! आपने तो धर्म की प्रत्येक बात को अच्छी तरह समझा है ।**

* (१) समझदार व्यक्ति को मोह में पड़ते देखकर उसे उसके ज्ञान का स्मरण कराना चाहिये । (२) मन्त्री सलाहकार बड़े ज्ञानी, अनुभवी लोग रखे जाते थे ।

सिबि दधीचि हरिचन्द नरेसा ।
सहे धरम हित कोटि कलेसा ।।

★ **प्राचीन कथाओं का विवरण देते हुये, रामजी ने सुमन्त्रजी से कहा कि धर्म की रक्षा के लिये राजा शिवि, राजा हरिश्चन्द्र और दधीचि ने धर्म के लिये करोड़ों दुःख सहन किये ।**

रंति देव बलि भूप सुजाना ।
धरमु धरेउ सहि संकट नाना ।।

⊗ भूप=राजा, सुजाना=ज्ञानी, धरेउ=सहन किये ।

★ **राजा बलि, रंतिदेव आदि बुद्धिमानों ने बहुत ही दुःखों को झेलकर भी धर्म की भावना को, उसके प्रति श्रद्धा को नहीं छोड़ा ।**

* (१) निष्ठावान की सही कसौटी है कि वह अपने सिद्धान्तों, आदर्शों तथा धार्मिक भावों को किसी भी प्रतिकूलता में नहीं छोड़े । (२) जिन्होंने श्रेष्ठ जीवन जिया है उनके प्रसंग व्यक्ति का गिरा हुआ मनोबल ऊँचा उठा सकते हैं ।

धरम न दूसर सत्य समाना ।
आगम निगम पुरान बखाना ।।

⊗ आगम=वेद, निगम=शास्त्र, पुरान=पुराण ।

★ **दुनिया में सत्य के समान कोई भी धर्म नहीं है । ऐसा वेदों, पुराणों, शास्त्रों आदि धर्म-ग्रन्थों में कहा गया है ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* 'सत्य' केवल बोलने तक सीमित नहीं, उसे चिन्तन से लेकर आचरण तक अभ्यास में लाना होता है । ऐसा सत्यवान व्यक्ति भगवान का सबसे प्रिय बन जाता है ।

मैं सोइ धरम सुलभ करि पावा ।
तजै तिहूँ पुर अपजसु छावा ।।

⊗ सुलभ=आसानी से पाना, तजे=छोड़ना, तिहूँ=तीनों, अपजसु (अपयश)=बदनामी ।

★ **भगवान राम बोले कि मैंने उस धर्म को सहज ढंग से ही पा लिया है अगर हम सत्य रूप धर्म को त्यागते हैं, तो तीनों लोकों में अपयश फैल जायेगा ।**

* अपने को धार्मिक कहते तो सब हैं, पर आचरण की कसौटी उनके खरे-खोटे होने का फैसला करती है । जो कसौटी पर सच्चे सिद्ध होते हैं उनकी बदनामी होती है ।

सम्भावित कहुँ अपजस लाहू ।
मरन कोटि सम दारुन दाहू ।।

⊗ संभावित=सम्मानित, दारुन (दारुण)=भीषण-बहुत, दाहू=जलाने वाली ।

★ **सम्मानित व्यक्ति को अपयश का मिलना करोड़ों बार मृत्यु का भीषण दु:ख देने वाला होता है ।**

* सम्मानित व्यक्ति को हीन आचरण से बहुत बचकर रहना चाहिए ।

राम प्रबोध कीन्ह बहु भाँती ।
तदपि होति नहिं सीतलि छाती ।।

⊗ प्रबोधु=समझाया, सीतलि (शीतल)=ठण्डी ।

★ **भगवान राम ने सुमन्त्रजी को अनेक प्रकार से समझाया परन्तु उनके हृदय को शान्ति नहीं मिली ।**

बरबस राम सुमन्त्रु पठाए ।
सुरसरि तीर आप तब आए ।।

⊗ बरबस=जबर्दस्ती, सुरसरि=गंगा, तीर=तट-किनारा, आपु=स्वयं (राम) ।

★ **सुमन्त्रजी को श्रीरामजी ने दबाव देकर (जबर्दस्ती) वापस किया । फिर भगवान स्वयं पावन गंगा के किनारे आये ।**

* मोहग्रस्त व्यक्ति विवेक से नहीं समझे तो उसे दबाव देकर सही रास्ते पर बढ़ा देना चाहिये ।

माँगी नाव न केवट आना ।
कहइ तुम्हार मरम मैं जाना ।।

⊗ आना=लाया, मरमु (मर्म)=भेद ।

★ **गंगा के किनारे भगवान राम ने पार होने के लिये केवट (मल्लाह) से नाव माँगी पर वह नाव लाया नहीं । बोला कि मैं आपके बारे में सब जान चुका हूँ ।**

* भोले संसारी जीव अपनी थोड़ी-सी जानकारी को ही पूर्ण ज्ञान मान बैठते हैं ।

चरन कमल रज कहुं सब कहई ।
मानुष करनि मूरि कछु अहई ।।

⊗ रज=धूलि, मानुष (मनुष्य)=आदमी, करनि=बनाने वाली, मूरि (मूल)= जड़ी ।

★ **हे नाथ ! आपके चरणों की धूलि के सम्बन्ध में लोग कहते हैं कि यह कोई मनुष्य बना देने वाली जड़ी है ।**

* भगवान के स्पर्श (उपासना) से पत्थर हृदय भी मनुष्यता के भावों से भर जाता है। इस अलंकार को भोला केवट जड़ पदार्थों को मनुष्य बनाने की बात समझ बैठा ।

तरनिऊ मुनि घरिनी होई जाई ।
बाट परई मोरि नाव उड़ाई ।।

⊗ तरनिऊ=नाव, घरिनि=पत्नी, बाट परई=विघ्न पड़ जायेगा ।

★ **यदि मेरी नाव भी ऋषिपत्नी (अहिल्या उद्धार का स्मरण करके कह रहा है) बनकर उड़ गयी तो बड़ा भारी विघ्न पैदा हो जायेगा ।**

* भोला केवट भगवान राम के पैर पखारने की अपनी इच्छा सीधे शब्दों में कहने का साहस न कर सका, इसलिये बच्चों जैसे तर्क उपस्थित करने लगा ।

कृपासिन्धु बोले मुसकाई ।
सोई करु जेहि तब नाव न जाई ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **कृपासिन्धु भगवान ने मुस्कराकर कहा कि वैसा ही करो जिससे तुम्हारी नाव तुम्हारे अधिकार से चली न जाये ।**

* स्वच्छ हृदय के नादान व्यक्तियों के अटपटे तर्कों पर समझदार व्यक्ति रोष नहीं करते, हँसकर उनका भी मन रख देते हैं । भगवान ने केवट को पैर पखारने की आज्ञा दे दी ।

पद पखारि जलु पान करि,
आपु सहित परिवार ।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि,
मुदित गयउ लेइ पार ॥

⊗ पखारि=धोकर, पितर=पुरखों (पूर्वजों), पारु=उद्धार, मुदित=प्रसन्न चित्त ।

★ **केवट ने भगवान राम के चरण धोकर चरणोदक परिवार सहित पिया और अपनी कई पीढ़ियों को भवसागर से पारकर फिर भगवान को गंगा के उस पार प्रसन्न चित्त से ले गया ।**

* केवट सरल हृदय का व्यक्ति था । भगवान राम के प्रति उसका असीम प्रेम था ।

तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए ।
करत दण्डवत मुनि उर लाए ॥

★ **तदुपरान्त भगवान भरद्वाज ऋषि के आश्रम पर पहुँचे । जैसे ही श्रीरामजी ने ऋषि को दण्डवत प्रणाम किया मुनि ने वैसे ही उनको हृदय से लगा लिया ।**

* हमें लोग कितना ही बड़ा मानने लगें पर हमें भगवान राम की तरह बड़ों के सम्मान में झुकना ही चाहिये ।

कुसल प्रश्न करि आसन दीन्हे ।
पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे ॥

⊗ परिपूरन कीन्हे=सब प्रकार संतुष्ट किया ।

★ **प्रेमपूर्ण भरद्वाज जी ने श्री राम जी की कुशलता पूछी व आदर सहित बिठाया तथा पूजा (आदर-सत्कार) द्वारा उन्हें सब प्रकार से संतुष्ट किया ।**

* साधन कम भी हों तो भी प्रेमपूर्ण व्यवहार द्वारा प्रियजन अथवा प्रभु को भी संतुष्ट किया जा सकता है ।

मुनि रघुबीर परस्पर नवहीं ।
बचन अगोचर सुख अनुभवहीं ॥

⊗ परसपर (परस्पर)=आपस में, नवहीं=नम्र होना, अगोचर= अवर्णनीय-इन्द्रियों से परे, अनुभवहीं=अनुभव कर रहे हैं ।

★ **भगवान रामजी और मुनि भरद्वाज जी, दोनों आपस में एक दूसरे को नम्रता प्रकट कर रहे हैं । दोनों ऐसे सुख का अनुभव कर रहे हैं, जिसका कि वर्णन नहीं किया जा सकता ।**

* जिनमें अपना-अपना बड़प्पन बघारने के स्थान पर एक दूसरे को सम्मान देने का भाव होता है उन्हें अनुपम सुख मिलता है ।

करि प्रनाम रिषि आयसु पाई ।
प्रमुदित हृदय चले रघुराई ॥

⊗ रिषि=ऋषि, आयसु=आज्ञा, प्रमुदित=प्रसन्न होकर ।

★ **फिर रघुनाथ जी मुनि को प्रणाम करके तथा उनकी आज्ञा लेकर प्रसन्न मन से आगे चल दिये ।**

पथिक अनेक मिलहिं मग जाता ।
कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥

⊗ पथिक=मुसाफिर, मग (मार्ग)=रास्ता ।

★ **मार्ग में अनेकों राहगीर जाते हुए मिलते हैं, दोनों भाइयों को देखकर वे प्रेम पूर्वक उनसे कहते हैं ।**

अगम पंथ गिरि कानन भारी ।
तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥

⊗ अगम=जहाँ नहीं जाया जा सकता, पंथ =मार्ग, कानन = जंगल, गिरि=पहाड़ ।

★ **हे राज पुत्रो! बड़े-बड़े जंगल, न जा सकने योग्य पहाड़ों के रास्ते हैं । उस पर तुम्हारे साथ सुकुमारी स्त्री है ।**

करि केहरि बन जाइ न जोई ।
हम संग चलहि जो आयसु होई ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ करि=हाथी, केहरि=सिंह, जोई=देखना, जाइ=जाता, आयसु=आज्ञा ।

★ **हाथियों और सिंहों से भरा हुआ यह डरावना जंगल देखा तक नहीं जा सकता है । यदि आपकी आज्ञा हो तो हम आपके साथ चलें ।**

* जिन्हें रास्ता चलने का अभ्यास या जानकारी न हो, ऐसे व्यक्तियों को देखकर उनकी सहायता करना हर नागारिक का कर्तव्य है ।

जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचाई ।
फिरब बहोरि तुम्हहि सिरु नाई ।।

⊗ जाब=जायेंगे,फिरब=लौट आयेंगे, सिरु नाई=प्रणाम करें ।

★ **आप लोग जहाँ तक जायें, वहाँ तक हम आपको भेज आयें, और आपको प्रणाम कर वापस आ जायेंगे ।**

* पथिकों को मार्ग के बारे में सारी जानकारी तो दे ही देना चाहिए । साथ ही यदि आवश्यक हो तो नम्रभाव से जितनी बन सके उतनी उनकी सहायता भी कर देनी चाहिए ।

एहि बिधि पूछहिं प्रेम बस,
पुलक गात जल नैन ।
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहिं,
कह बिनीत मृदु बैन ।।

⊗ पुलक=रोमांच होना, गात=शरीर, जलनैन=आँखों में आँसू, बैन=वचन ।

★ **इस प्रकार से राहगीर प्रेम सहित शरीर से पुलकायमान होकर स्नेह के आँसू नेत्रों में भरकर पूछते हैं, किन्तु कृपालु श्री राम जी मीठे तथा विनम्रता भरे उत्तर देकर उन्हें वापस भेज देते हैं ।**

* किसी की सहायता की आवश्यकता न हो तो भी उसकी भावना की सराहना करें तथा मना करने के लिये मीठे शब्दों का प्रयोग करें ।

एक देखि बट छाँह भलि,
डासि मृदुल तृन पात ।
कहहिं गवाँइअ छिनक श्रम,
गवनब अबहिं कि प्रात ।।

⊗ तृन (तृण)=घास, डासि=बिछाकर, छिनकु=क्षण भर (थोड़ी देर), गवाँइअ=दूर कर लीजिये, गवनब=गमन करें (जायें) ।

★ **कुछ लोग बट (बरगद) की सुन्दर छाया देखकर उसी के नीचे (कोमल) घास-पात बिछाकर भगवान राम से कहते हैं, कि थोड़ी देर यहीं रुककर अपनी यात्रा की थकावट दूर कर लें । बाद में आप अभी जाना चाहें तो अभी, नहीं तो सवेरे यहाँ से चले जावें ।**

* अपने अन्दर भावना हो तो वस्तुओं के अभाव में भी हम स्नेह व्यवहार द्वारा दूसरों की सहायता कर सकते हैं ।

देखत बन सर सैल सुहाए ।
वाल्मीकि आश्रम प्रभु आए ।।

⊗ सर=तालाब, सैल=पर्वत, सुहाए=सुन्दर ।

★ **भगवान राम सुन्दर तालाब, पर्वत, जंगल देखते हुये श्री वाल्मीकि जी के आश्रम तक पहुँच गये ।**

मुनिवर अतिथि प्रानप्रिय पाए ।
कंद मूल फल मधुर मँगाए ।।

⊗ अतिथि=मेहमान जो अचानक पहुँच जाते हैं ।

★ **वाल्मीकि ऋषि ने अपने यहां आये प्राणप्रिय मेहमानों को पाकर उनके लिये मीठे कन्द-मूल फल मँगवाये ।**

* ऋषियों का आहार और स्वागत सात्विक ही रहता था ।

तब कर कमल जोरि रघुराई ।
बोले बचन श्रवन सुखदाई ।।

⊗ कर कमल=कमल के समान हाथ, श्रवन(श्रवण)=कानों को, सुखदाई=सुख देने वाले ।

★ **तब श्री रामचन्द्र जी ने कमल के समान हाथों को जोड़कर कानों को सुख देने वाले मधुर वचन कहे**

अब जहँ राउर आयसु होई ।
मुनि उद्बेगु न पावै कोई ।।

⊗ राउर=आपकी (मुनि की), उद्बेगु=उद्वेग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ हे मुनि ! अब आप की जहाँ के लिये आज्ञा हो और जहाँ कुछ समय हमारे ठहरने से किसी मुनि की साधना में विघ्न न हो ऐसा स्थान हमें बताइये ।

* नये स्थान पर अपने निवास की व्यवस्था इस प्रकार करनी चाहिये कि वहाँ पहले से रहने वालों को जरा भी कठिनाई न होने पावे ।

तहँ रचि रुचिर परन तृन साला ।
बास करौं कछु काल कृपाला ।।

⊗ रचि=बनाकर, परन=पत्ते, साला (शाला)=कुटी, काल=समय ।

★ हे दयालु मुनि ! वहाँ जाकर मैं एक सुन्दर घास एवं पत्तों की कुटी बनाकर कुछ समय ऐसे स्थान पर रहना चाहता हूँ ।

सहज सरल सुनि रघुबर बानी ।
साधु साधु बोले मुनि ज्ञानी ।

⊗ सहज=स्वाभाविक, साधु-साधु=धन्य-धन्य ।

★ भगवान राम की स्वाभाविक सरलता से भरी हुई वाणी सुनकर वाल्मीकि जी उनको धन्य-धन्य कहते हुए बोले ।

* अपने कर्तव्य की बारीकियों पर ध्यान देने वाले की सराहना करके उसका उत्साह बढ़ाना चाहिए ।

पूँछहु मोहि कि रहौं कहँ,
मैं पूछत सकुचाऊँ ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि,
तुम्हहि देखावौं ठाऊँ ।।

★ मुझे से आप पूछते हो कि "मैं कहाँ रहूँ" और मुझे यह पूछने में संकोच होता है कि वह स्थान बता दीजिये जहाँ आप नहीं हो, तो मैं आपको रहने का वह स्थान बताऊँ ।

* ऋषि भगवान की व्यापकता प्रकट करते हैं ।

बाल्मीकि हँस कहहि बहोरी ।
बानी मधुर अमिय रस बोरी ।।

⊗ अमिय=अमृत, बोरी=डूबोकर ।

★ फिर वाल्मीकि जी हँसते हुए मीठे (अमृत) रस में घोल कर सुन्दर (मीठी) वाणी बोले ।

* जब मनुष्य का अत:करण प्रेम से भरा होता है तो उसकी बोली भी उसी अमृत से सनी हुई निकलती है ।

सुनहुँ राम अब कहउँ निकेता ।
जंहाँ बसहु सिय लखन समेता ।।

⊗ निकेता=निवास स्थान, समेता=सहित ।

★ हे श्री रामजी ! सुनिये मैं आपको अब वह स्थान बता रहा हूँ जहाँ आप लक्ष्मण जी एवं सीताजी सहित निवास करें ।

* ऋषि परोक्ष रूप से साधकों को प्रभु के निवास के उपयुक्त अपना अंत:करण बनाने की दिशा देते हैं ।

लोचन चातक जिन्ह करि राखे ।
रहहि दरस जलधर अभिलाषे ।।

⊗ लोचन=नेत्र, करि राखे=बना रखा है, दरस=दर्शन, जलधर=मेघ, अभिलाषे=लालायित ।

★ जिन्होंने अपने नेत्रों को चातक बना रखा है, जो आपके दर्शन रूपी मेघ के लिये सदा लालायित रहते हैं ।

निदरहिं सरित सिंधु सर भारी ।
रूप बिंदु जल होहिं सुखारी ।।

⊗ निदरहिं=निरादर करते हैं, सरित=नदी, सिंधु=समुद्र, सर=तालाब, रूप=सौन्दर्य, सुखारी=सुखी हो जाते हैं ।

★ जो भारी-भारी नदियों, समुद्रों, और झीलों का निरादर करते हैं और आपके दिव्य रूप की एक बूँद से ही सुखी हो जाते हैं ।

* चातक नीचे का पानी नहीं पीता, इसी प्रकार साधक वैभव आदि के हीन-रस से प्रभावित न हो वरन् श्रेष्ठ भावनाओं पर ही उनका ध्यान रहे ।

जसु तुम्हार मानस बिमल,
हंसिनि जीहा जासु ।
मुकताहल गुन गन चुनइ,
राम बसहु हियँ तासु ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ जसु=यश, मानस=मान सरोवर, बिमल=निर्मल, हंसिनि=हंसनी, जीहा=जीभ, गुन गन (गुणगण)=गुणों के समूह, मुकुताहल=मोतिगों को ।

★ **आपके यश रूपी निर्मल मानसरोवर में जिसकी जीभ हंसिनी बनी हुई है और आपके गुण समूह रूपी मोतियों को चुगती रहती है, हे श्री रामजी ! आप उसके हृदय में बसिये ।**

* भक्त की जीभ से भगवान के गुणों की या उन गुणों युक्त व्यक्ति की ही प्रशंसा निकलती है, वह किसी को बुरा भी नहीं कहता तथा चापलूस बनकर बुरे को भला भी नहीं बनाता ।

तुम्हहिं निवेदित भोजन करहीं ।
प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं ।।

⊗ निवेदित=भोग लगाकर, पट=वस्त्र ।

★ **जो आप को भोग लगाकर भोजन (प्रसाद) मानकर ग्रहण करते हैं तथा वस्त्र आभूषण आदि धारण करते हैं ।**

* हमें जो भी प्राप्त है उसे भगवान को अर्पण करके ही ग्रहण करें ।

सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी ।
प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी ।।

⊗ सीस-(शीस)=मस्तक माथा, सुर=देवता, द्विज=ब्राह्मण ।

★ **जो देवता गुरु, ब्राह्मण, को देखकर मस्तक झुकाते हैं तथा प्रेम सहित नम्रता व्यक्त करते हैं ।**

* सच्चा आदर दिखावा ही नहीं, अहंकार युक्त भी नहीं, प्रेम और विनय युक्त ही होता है ।

कर नित करहि राम पद पूजा ।
राम भरोस हृदय नहिं दूजा ।।

★ **जिनेक हाथ सदैव आपके चरणों की पूजा करते हैं । जिनको राम के अलावा किसी दूसरे पर भरोसा नहीं है ।**

* (१) भक्त अपने कर्तव्य पालन को भगवान की पूजा ही मानते हैं । (२) कार्य की पूर्ति के लिये भगवान के संरक्षण पर अटूट विश्वास रखते हैं ।

तरपन होम करहिं विधि नाना ।
विप्र जेवाँइ देहि बहु दाना ।।

⊗ तरपन=तर्पण, विप्र=ब्राह्मण, जेवाँइ=भोजन कराना ।

★ **जो व्यक्ति विविध प्रकार से तर्पण, होम (यज्ञ) करते हैं, ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं और अनेक प्रकार के दान देते हैं ।**

* तर्पण (अपने कार्यों से लोगों को संतुष्ट करना), होम (त्याग एवं सामूहिकता की भावना का विकास), ब्राह्मण भोजन (लोक सेवियों को शरीर निर्वाह की व्यवस्था), दान, (श्रेष्ठ कार्यों में सहायता), मानी जाय ।

तुम्ह तें अधिक गुरुहि जियँ जानी ।
सकलभाँय सेवहि सनमानी ।।

⊗ सकलभाँय=सर्व भावना से, सेवहिं=सेवा करते, सनमानी=सन्मान (सम्मान) ।

★ **जो अपने से अधिक गुरु को हृदय में जानकर सब प्रकार से भावना संजोकर सम्मान सहित सेवा करता है ।**

* (१) मार्ग दर्शक को प्रथम स्थान देना । (२) पूरी तन्मयता से निर्देश का पालन करना ।

सबु करि माँगहि एक फल,
रामचरन रति होउ ।
तिन्ह कें मन मन्दिर बसहु,
सिय रघुनंदन दोउ ।।

⊗ मन मंदिर=मन रूपी मंदिर ।

★ **ये सब कर्म करके जो सबका एक मात्र यही फल माँगते हैं कि श्री रामचन्द्रजी के चरणों में हमारी प्रीति हो, उन लोगों के मन रूपी मंदिरों में सीताजी और रघुकुल को आनन्दित करने वाले आप दोनों बसिये ।**

* विविध कर्मकाण्डों के बदले जो सांसारिक वैभव नहीं माँगता, उनके सहारे अपनी ईश्वर निष्ठा को पक्का करता है, उसी के हृदय में भगवान का प्रकाश उदय होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काम कोह मद मान न मोहा ।
लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ।।

⊗ कोह=क्रोध, द्रोहा=द्वेष, मद=घमण्ड ।

★ **जिनके मन में काम, क्रोध, मद, अभिमान, मोह, लोभ, उत्तेजना, राग, द्वेष, आदि विकार नहीं हैं ।**

जिन्ह कें कपट दम्भु नहिं माया ।
तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया ।।

⊗ कपट=अन्दर कुछ बाहर कुछ, दम्भ=झूठी शान ।

★ **जिनके हृदय में न कपट और न दम्भ है, और न सांसारिक वैभव का आकर्षण है, ऐसे लोगों के हृदय में आप 'राम' वास करें ।**

* उपर्युक्त विकारों को जिसने मन से हटाकर मन स्वच्छ बना लिया उसके अन्तर में भगवान बसते हैं ।

सब के प्रिय सब के हितकारी ।
दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी ।।

⊗ गारी=गाली ।

★ **जो व्यक्ति सबके प्रिय, सबका हित करने वाले हैं, तथा जिनके लिए दुःख-सुख, प्रशंसा-निन्दा (गाली) आदि बराबर हैं ।**

* हित करते हुए भी प्रिय बने रहना तथा मान-अपमान में समान भाव बड़ी साधना से आता है ।

कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी ।
जागत सोवत सरन तुम्हारी ।।

★ **जो सत्य और प्रिय लगने वाले वचन विवेक पूर्वक बोलते हैं, जो जागते और सोते समय आपकी ही शरण लेते हैं ।**

* (१) सत्य और प्रिय बोलने के लिए चिन्तन आवश्यक है । (२) प्रातः नया जन्म तथा सोते समय मृत्यु की साधना का उल्लेख करें ।

जननी सम जानहिं परनारी ।
धन पराव बिष तें बिष भारी ।।

⊗ जननी=माता, परनारी=दूसरे की स्त्री ।

★ **जो दूसरे की स्त्री को माता के समान समझते हैं तथा पराया धन भयंकर विष के समान समझते हैं ।**

* नारी के प्रति पवित्र भाव तथा दूसरे के धन से विरक्ति हमें भगवान का प्रिय बना सकती है ।

जे हरषहिं पर संपति देखी ।
दुखित होंहि पर बिपति बिसेषी ।।

⊗ जे=जो, हरषहिं=हर्षित, बिपति=विपत्ति ।

★ **जो अन्य दूसरे की सम्पति (धन) देखकर प्रसन्न होते हैं और विपत्ति देखकर अत्यन्त दुःखी होते हैं ।**

* संवेदनाशील व्यक्ति ही भगवान की निकटता पा सकता है ।

स्वामि सखा पितु मातु गुरु,
जिनके सब तुम्ह तात ।
मन मन्दिर तिन्ह के बसहु,
सीय सहित दोऊ भ्रात ।।

★ **हे तात ! जिनके लिये आप ही स्वामी, मित्र, पिता, माता, गुरु आदि सब कुछ हैं उन्हीं के मन रूपी मन्दिर में आप दोनों भाई सीता सहित निवास करें ।**

* जो निष्ठावान व्यक्ति किसी भी सगे सम्बन्धी के प्रेम के बहाने भगवान के मार्ग से विचलित नहीं होता वह सबसे प्रधान सम्बन्धी भगवान को ही मानते हैं । उनमें भगवान का प्रकाश उदय होता है ।

अवगुन तजि सबके गुन गहहीं ।
बिप्र धेनु हित संकट सहहीं ।।

⊗ गहहीं=पकड़ना, सहहीं=सहन करते हैं, धेनु=गाय ।

★ **जो अवगुणों को छोड़कर अच्छाइयाँ ही पकड़ते हैं । ब्राह्मण, गौ के हितार्थ संकट सहन करते हैं ।**

* संसार में भला-बुरा, सब है उसमें से केवल गुण (वरेण्य) ही लेने योग्य है । (२) विप्र, देव, परमार्थ, परायण जीवन के प्रतीक हैं । ऐसों के हित के लिये स्वयं कष्ट उठाना पड़े तो उठाना चाहिये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नीत निपुन जिन्ह कइ जग लीका ।
घर तुम्हार तिन्ह कर मर नीका ।।

⊗ नीत=नीति, निपुन (निपुण), चतुर, दक्ष, कइ=की, लीका (लीक)=साख ।

★ **नीति की चतुरता में जिनकी संसार में साख है, ऐसे लोगों का पवित्र मन ही आपका घर है ।**

* अनैतिक तथा मर्यादाहीन व्यक्ति प्रभु को नहीं पा सकता ।

गुन तुम्हार समुझइ निज दोषा ।
जेहिं सब भाँति तुम्हार भरोसा ।।

★ **जो आपके गुणों को समझता है एवं अपने दोषों को समझता है, जिसको सब प्रकार से आपका ही एक भरोसा है ।**

* किसी काम की सफलता का श्रेय भगवान को तथा असफलता का कारण अपनी भूलों को माने वही सदाचरण युक्त रह सकता है ।

जाति पाँति धन धरम बड़ाई ।
प्रिय परिवार सदन सुखदाई ।।

★ **जाति, पाँति, धन, धरम (धर्म), प्रशंसा, सुख देने वाला घर एवं परिवार-**

सब तजि तुम्हहिं रहइ उर लाई ।
तेहि के हृदय रहहु रघुराई ।।

⊗ उरलाई=हृदय में धारण कर, तजि=छोड़कर ।

★ **जो उपर्युक्त सबको छोड़कर आपको हृदय में धारण करे, हे प्रभु राम ! आप उसके हृदय में निवास कीजिये ।**

* जब भगवान के मार्ग और सुखद लगने वाले संसार के आकर्षणों में से एक को चुनना पड़े तो भगवान के मार्ग को महत्त्व दें और इसी को सबसे बड़ी सम्पत्ति समझें । इसे भगवान स्वीकार करते हैं ।

सरग नरक अपबरग समाना ।
जहँ-तहँ देख धरे धनु बाना ।।

⊗ सरग=स्वर्ग, अपवर्ग=मोक्ष ।

★ **स्वर्ग-नरक और मोक्ष जिनकी दृष्टि में एक समान ही महत्त्व रखते हैं और जो सब जगह धनुष बाण धारी आपके रूप को देखते हैं ।**

* नर्क का भय और स्वर्गमुक्ति का लोभ सच्चे भक्त को अपने सेवा पथ से विचलित नहीं कर सकते । उसे तो सब जगह अपना इष्ट ही दिखता है ।

करम बचन मन राउर चेरा ।
राम करँहु तेहि कें उर डेरा ।।

⊗ राउर=आप, चेरा=सेवक, डेरा=वास ।

★ **जो मन, वचन और कर्म से आपका ही सेवक है, हे भगवान ! आप उसी के हृदय में निवास कीजिये ।**

* सेवा धर्म केवल कहने-सुनने पर से पूरा नहीं होता । उसमें मन-वचन और कर्म लगाना होता है ।

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु,
तुम्ह सन सहज सनेहु ।
बसहु निरन्तर तासु मन,
सो राउर निज गेहु ।।

⊗ जाहि=जिसको, चाहिअ=आवश्यकता, सहज=स्वाभाविक, तासु=उसके, गेहु=घर ।

★ **जो कभी कुछ नहीं माँगता और आप से जिसे स्वाभाविक प्रेम है (बनावटी नहीं) आप उसके हृदय में सदैव निवास कीजिये, वही आपका अपना घर है ।**

* जिसकी अपनी कोई इच्छा नहीं रह जाये, भगवान की इच्छा के अनुसार अपने कार्य चलाये, उसके मन में भगवान का स्थायी निवास रहता है ।

कह मुनि सुनहु भानुकुल नायक ।
आश्रम कहउँ समय सुखदायक ।।

★ **वाल्मीकि मुनि ने कहा- हे सूर्यकुल के स्वामी ! सुनिये अब मैं इस समय के लिये सुखदायक निवास स्थान कहता हूँ ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* अब ऋषि लौकिक मर्यादा के अनुसार निवास स्थान बताते हैं ।

चित्रकूट गिरि करहु निवासू ।
तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू ।।

⊗ गिरि=पर्वत, निवासु=निवास, सुपासू=सुविधाजनक ।

★ **आप चित्रकूट पर्वत पर निवास कीजिए, वहाँ आपके लिये सब प्रकार की सुविधा है ।**

नदी पुनीत पुरान बखानी ।
अत्रिप्रिया निज तप बल आनी ।।

⊗ पुनीत=पवित्र, बखानी=(वर्णित) प्रशंसा की हुई, अत्रिप्रिया=अत्रि ऋषि की पत्नी अनुसूइया जी ।

★ **वहाँ पवित्र नदी मन्दाकिनी है, जिसकी पुराणों ने प्रशंसा की है और जिसको अत्रि ऋषि की पत्नी अनुसूया जी अपने तपोबल से लायी थीं ।**

* कथा है कि अनुसुइया जी ने स्वर्ग से गंगा की एक धारा अपने तपोबल से आश्रम के पास प्रवाहित करायी थी ।

चित्रकूट रघुनन्दन छाए ।
समाचार सुनि सुनि मुनि आए ।।

⊗ छाए=आ बसे ।

★ **श्री रघुनाथजी चित्रकूट में आ बसे हैं, यह समाचार सुन-सुनकर बहुत से मुनि उनसे मिलने पहुँचने लगे ।**

मुनि रघुबरहि लाइ उर लेहीं ।
सुफल होन हित आसिष देहीं ।।

⊗ रघुबरहिं=राम को, उर लेहीं=हृदय से लगाना, आसिष=आशीर्वाद देने के लिये ।

★ **ऋषि लोग भगवान रामको हृदय से लगाते हैं और सफल होने का शुभ आशीर्वाद देते हैं ।**

यह सुधि कोल-किरातन्ह पाई ।
हरषे जनु नव निधि घर आई ।।

⊗ सुधि=समाचार, कोल-किरातन्ह=कोल-भीलों ने, पाई=पाया, जनु=मानों, नव निधि=नौ निधियाँ।

★ **यह समाचार जब कोल-भीलों ने पाया, तो वे ऐसे हर्षित हुए मानों नौ निधियाँ उनके घर आ गयी हों ।**

* श्री रामचन्द्रजी के प्रति ऋषियों से लेकर भीलों तक का स्नेह समान रूप से था ।

रामहि केबल प्रेम पिआरा ।
जानि लेउ जो जाननिहारा ।।

⊗ पियारा=प्यारा, लेउ=लो, जाननिहारा=जानने वाला ।

★ **श्री रामजी को केवल प्रेम ही प्यारा है । जो जानना चाहते हैं वे यह तथ्य जान लें ।**

* जिनमें सच्ची प्रेम भावना है वे चाहे भीलों जैसे अभावग्रस्त हों भगवान उन्हें भी साधु-सन्तों की तरह प्रेम देते हैं ।

राम सकल बनचर तब तोषे ।
कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे ।।

⊗ बनचर=वनवासी, तोषे=सन्तुष्ट किये, परिपोषे=परिपुष्ट हुए ।

★ **तब श्री रामचन्द्रजी ने प्रेम से भरे हुए (प्रेमपूर्ण) कोमल वचन कह कर उन सब वन में रहने वालों को सन्तुष्ट किया ।**

* वन में रहने वाले ऋषि एवं भील, सभी की भावना का उन्होंने समान रूप से आदर किया ।

राम संग सिय रहति सुखारी ।
पुर परिजन गृह सुरति बिसारी ।।

⊗ परिजन=कुटुम्बी जन, सुरति=याद, बिसारी=भुलाकर।

★ **श्री रामजी के साथ सीता जी अयोध्या नगरी के कुटुम्बी जन, और घर की याद भुलाकर सुखपूर्वक रहने लगीं ।**

* भगवान के प्रति सच्ची समर्पण भावना हो तो सांसारिक सुख भूल जाते हैं ।

सिय मन राम चरन अनुरागा ।
अवध सहस सम बन प्रिय लागा ।।

⊗ अनुरागा=अनुराग, सहस=हजारों ।

★ **सीताजी का मन श्री रामजी के चरणों में अनुरक्त है, इससे उनको वन हजारों अवध के समान प्रिय लगता है ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* भावना की प्रखरता हो तो जगत जैसा अभावग्रस्त स्थान भी हजारों नगरों की सुख-सुविधाओं के समान सुखदायी हो सकता है ।

सासु-ससुर सम मुनितिय मुनिवर ।
असन अमिअ सम कन्दमूल फर ।।

⊗ मुनितिय=मुनि की पत्नी, असन=भोजन, अमिअ=अमृत, फर=फल ।

★ **सीताजी को ऋषियों की पत्नियाँ सास के समान, ऋषि ससुर के समान और कन्द मूल फलों का आहार अमृत के समान लगता है ।**

* परिस्थितियों के अनुरूप अपने आपको ढाल लेना चाहिये ।

सुमिरत रामहि तजहिं जन,
तृनसम विषय बिलासु ।
राम प्रिया जग जननि सिय,
कछु न आचरजु तासु ।।

★ **जिन भगवान श्री राम का स्मरण करते ही साधक भोग-विलास को तिनके की तरह त्याग देते हैं तो फिर स्वयं श्री सीता राम के लिए इनका त्याग कौन से आश्चर्य की बात है ।**

* सच्चा ईश्वर स्मरण भोग-विलास के त्याग की क्षमता साधक में भर देता है । यदि ऐसा प्रभाव नहीं हो तो समझना चाहिये कि उपासना ठीक नहीं हो रही है ।

सीय लखन जेहि विधि सुख लहहीं ।
सोइ रघुनाथ करहि सोई कहहीं ।।

⊗ जेही विधि=जिस प्रकार, लहहीं=पाते हैं ।

★ **सीताजी और लक्ष्मणजी जिस प्रकार सुख पाते हैं श्री रामचन्द्रजी वही करते हैं और वही कहते हैं ।**

कहेउँ राम बन गबनु सुहावा ।
सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा ।।

★ **श्री रामचन्द्रजी का वनगमन का सुन्दर प्रसंग कहा, अब जिस तरह सुमंत्र अयोध्या लौटे, वह कथा सुनो ।**

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ ।
प्रियतम सुअन संदेस सुनाऊ ।।

⊗ पुनि-पुनि=बारम्बार, सुअन=पुत्र, संदेस (संदेश)= समाचार ।

★ **राजा दशरथ मंत्री से अपने प्रिय पुत्रों का समाचार बार-बार पूछते हैं ।**

सचिब धीर धरि कह मृदुबानी ।
महाराज तुम्ह पंडित ज्ञानी ।।

★ **मंत्री धीरज धारण कर अपने मधुर वचनों से महाराज के ज्ञान व पाण्डित्य की सराहना कर समझाने लगे ।**

* मनुष्य जब दुःख में अत्यन्त व्याकुल हो जाता है तब सज्जन पुरुष उनके ज्ञान-पुरुषार्थ-पाण्डित्य की याद दिलाते हैं कहने का तात्पर्य है कि ऐसा शोक तो ना-समझ लोग करते हैं ।

जनम मरन सब दुख सुख भोगा ।
हानि लाभ प्रिय मिलन वियोगा ।।

⊗ भोगा=संसार के भोग, वियोगा (वियोग)=बिछुड़ना ।

★ **जन्म-मरण, सुख-दुःख के भोग, प्रियजनों को आकर मिलना और बिछुड़ जाना ।**

काल करम बस होहिं गोसाईं ।
बरबस राति दिवस की नाईं ।।

⊗ काल=समय, करम=कर्म, बस=अधीन, होहिं=होते हैं, गोसाईं=स्वामी, बरबस=जिस पर अपना वश न चले, नाईं=तरह से ।

★ **हे स्वामी ये सब समय और कर्म के अनुसार ऐसे होते हैं जैसे रात के बाद दिन आता है ।**

* सुमंत्र जी सुख-दुःख को दिन-रात्रि की तरह स्वाभाविक बताकर राजा का मोह दूर करने का प्रयास करने लगे ।

सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं ।
दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ।।

⊗ हरषहिं=हर्षित होता है, जड़=मूर्ख, बिलखाहीं=बिलखना, सम=समान ।

★ **मूर्ख लोग सुख में हर्षित होकर फूल जाते हैं और दुःख आने पर आर्त होकर रोने लगते हैं । परन्तु**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धीर पुरुष दोनों अवस्थाओं में धैर्य रखकर समान भाव बनाये रहते हैं ।

* समझदार व्यक्ति को सुख-दु:ख में भी धैर्यपूर्वक संतुलन बनाये रखना चाहिये ।

बिलपत राउ विकल बहु भाँती ।
भइ जुग सरिस सिराति न राती ।।

⊗ बहुभाँति=अनेक प्रकार, जुग=युग, सरिस=समान, सिराति= खत्म होती है।

★ राजा व्याकुल होकर बहुत प्रकार से विलाप करने लगे । उस समय वह रात्रि एक युग के समान हो गई, लम्बी लगने लगी ।

* विवेक के अभाव में दु:ख के क्षण बड़े लम्बे प्रतीत होते हैं ।

तापस अन्ध साप सुधि आई ।
कौसल्यहि सब कथा सुनाई ।।

⊗ तापस=तपस्वी, अन्ध=अन्धा, साप=शाप, सुधि=याद ।

★ राजा को अंधे तपस्वी (श्रवण कुमार के पिता) की याद आयी । उन्होंने सब कथा कौशल्या को सुनायी ।

* मृत्यु के समय अपनी भूलें याद आने लगती हैं, उन्हें किसी से कहकर प्रायश्चित कर लेना चाहिए । कर्म फल का सिद्धान्त अटल है ।

राम राम कहि राम कहि,
राम राम कहि राम ।
तन परिहरि रघुवर बिरहँ,
राउ गयउ सुरधाम ।।

⊗ परिहरि=त्यागकर, बिरहँ=वियोग, सुरधाम=स्वर्ग ।

★ भगवान श्री राम के वियोग में राजा बारबार राम-राम कहते हुए शरीर को त्यागकर सुरलोक को सिधार गये ।

* अपने कर्म का फल भोगने की बात ध्यान में आने पर संसार का मोह छोड़ कर भगवान की न्यायप्रियता का स्मरण करते हुए राजा ने देह त्याग कर दिया ।

सोक विकल सब रोवहिं रानी ।
रूप सील बल तेज बखानी ।।

★ सभी रानियाँ शोक से व्याकुल होकर राजा के रूप, शील-बल और तेज का वर्णन कर रोने लगीं ।

बिलपहि बिकल दास अरु दासी ।
घर घर रुदन करहिं पुरवासी ।।

⊗ रुदन=रोना, पुरवासी=नागरिक ।

★ दास-दासीगण व्याकुल होकर विलाप कर रहे हैं । नगर निवासी घर-घर रो रहे हैं ।

* राजा दशरथ कर्तव्य परायण व्यक्ति थे, इसलिए उनकी मृत्यु का हार्दिक दु:ख सभी को हुआ ।

तब वसिष्ठ मुनि समय सम,
कहि अनेक इतिहास ।
सोक नेवारेउ सबहिं कर,
निज बिग्यान प्रकास ।।

⊗ समय सम=समय के अनुसार, नेवारेउ=दूर किया, बिग्यान= विज्ञान।

★ तब वशिष्ठ मुनि ने समय के अनुकूल अनेक इतिहास के प्रसंग सुनाकर अपने विज्ञान के प्रकाश से सबका शोक दूर किया ।

* दु:ख अज्ञान के कारण ही होता है, वशिष्ठ जी अज्ञान दूर करने की कला में प्रवीण थे, इसलिये सबका दु:ख दूर करने में सफल हुए ।

तेल नाँव भरि नृपतनु राखा ।
दूत बोलाई बहुरि अस भाषा ।।

⊗ बहुरि=फिर, अस =ऐसा, भाषा=कहा ।

★ वशिष्ठजी ने नाव के आकार के बड़े पात्र में तेल भरवाकर राजा के शरीर को उसमें रखवा दिया । फिर दूतों को बुलवा कर उनसे ऐसा कहा ।

* भरत जी के आने तक मृत देह की सुरक्षा तथा भरत को बुलाने की व्यवस्था की ।

एतनेइ कहेहु भरत सन जाई ।
गुरु बोलाइ पठयउ दोउ भाई ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ एतनेइ=इतना ही, कहेहु=कहना, सन=से, जाई=जाकर, गुर=गुरु ।

★ **मुनि वशिष्ठ जी ने दूतों को भरत जी को बुलाने के लिए भेजा और कहा कि उनसे केवल इतना ही कहना कि गुरुजी ने बुलवाया है ।**

* सत्पुरुष भयंकर दुर्घटनाओं को जन-साधारण के सामने इसलिये प्रकट नहीं करते कि कहीं जन-साधारण अपने मन का संतुलन न खो बैठें ।

अनरथु अवध अरंभेउ जबते ।
कुसगुन होहि भरत कहुँ तब ते ।।

⊗ अनरथ=अनर्थ, अरंभेउ=शुरू हुए, कुसगुन=अपशकुन, कहुँ=को ।

★ **जब से अयोध्या में अनर्थ प्रारम्भ हुए तभी से भरत जी को अपशकुन होने लगे ।**

* अपने प्रिय जनों को दु:ख हो तो बहुधा दूर रहते हुए भी व्यक्ति के अन्तर में बेचैनी-सी पैदा होने लगती है ।

मागहिं हृदय महेश मनाई ।
कुसल मातु पितु परिजन भाई ।।

★ **श्री भरत जी अपने मन में शंकर जी का स्मरण करके यह कामना करने लगे कि मेरे पिता-माता तथा भाई सब कुशल पूर्वक देखने को मिलें ।**

एहि विधि सोचत भरत मन,
धावन पहँचे आइ ।
गुरु अनुसासन श्रवन सुनि,
चले गनेसु मनाइ ।।

⊗ एहि विधि=इस प्रकार, धावन=तेज चलने वाले दूत, अनुसासन=(अनुशासन) आज्ञा, श्रवन (श्रवण)=कान ।

★ **भरत जी इसी प्रकार की बातें मन में सोच रहे थे कि दूत आ पहुँचे । गुरुदेव की आज्ञा कानों से सुनते ही गणेश जी की वन्दना करके चल पड़े ।**

* आज्ञा से परिस्थिति की गम्भीरता का अन्दाज लग जाने पर भरत ने चलने में जरा भी देरी नहीं की ।

सकल कुसल कहि भरत सुनाई ।
पूँछी निज कुल कुसल भलाई ।।

⊗ सकल=सब, कुसल=(क्षेम) कुशल ।

★ **भरत जी ने अयोध्या पहुँचकर माता से सब कुशल कह सुनायी । फिर अपने कुल की कुशल-क्षेम पूछी ।**

भरतहि बिसरेउ पितु मरन,
सुनत राम बन गौनु ।
हेतु अपनपउ जानि जियँ,
थकित रहे धरि मौनु ।।

⊗ वन-गौन=वन गमन, हेतु=कारण, अपनपउ=स्वयं को ही, जियँ=हृदय में, थकित=स्तम्भित ।

★ **जो जानकारियाँ मिलीं उनसे श्री राम का वन जाना सुनकर भरत पिता का मरण भूल गये और इसका कारण अपने को ही जानकर मौन होकर स्तम्भित रह गये ।**

* पिता के मरण का कारण राम वन गमन ही था तथा यह सब अपने कारण हुआ इस जानकारी ने भरत को सुन-सा कर दिया ।

राम बिरोधी हृदय तें,
प्रगट कीन्ह बिधि मोहि ।
मो समान को पातकी,
बादि कहउँ कछु तोहि ।।

⊗ प्रगट कीन्ह=जन्म दिया, बिधि=ब्रह्माजी, मो=मेरे, पातकी=पापी, बादि=बेकार ।

★ **भरत जी कैकेयी से कहने लगे विधाता ने मुझे राम से विरोध करने वाले हृदय से उत्पन्न किया है । मेरे समान दूसरा पापी कौन होगा, मैं बेकार ही तुझे कुछ कहता हूँ ।**

* भरत को माँ-पर क्रोध तो आया पर उसे मर्यादापूर्वक दुर्भाग्य कहकर ही व्यक्त कर दिया ।

सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई ।
जरहिं गात रिस कछु न बसाई ।।

⊗ सत्रुघुन=शत्रुघ्न, कुटिलाई=कुटिलता, जरहिं=जलने लगे, गात=शरीर, रिस=क्रोध, बसाई=वश चलना ।

★ **माता की कुटिलता सुनकर शत्रुघ्न जी के सब अंग क्रोध से जल रहे हैं, पर कुछ वश नहीं चलता ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* छोटा व्यक्ति बड़े व्यक्ति की बुराई समझ लेता है, फिर भी लोक मर्यादा के कारण वह उसे कुछ भी नहीं कह सकता ।

तेहि अवसर कुबरी तहँ आयी ।
बसन विभूषण विविध बनाई ।।

⊗ कुबरी=मंथरा दासी, बसन=वस्त्र, विभूषण=गहने ।

★ **उसी समय मन्थरा दासी अनेक प्रकार के वस्त्र और गहने पहन कर आई ।**

* बुराई करने वाला व्यक्ति मन्थरा दासी के समान अपने भीतर की बुराई को छिपाने के लिए बाहर से सजधज करके रहता है, ताकि दूसरों के सामने उसकी बुराई प्रकट न हो ।

हुमगि लात तकि कूबर मारा ।
परि मुह भरि महि करत पुकारा ।।

⊗ हुमगि=जोर से, तकि=तककर, परी=गिर पड़ी, मुहभरि=मुँह के बल ।

★ **शत्रुघ्न जी ने जोर से तककर कूबर पर एक लात जमा दी । वह चिल्लाती हुई मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ी ।**

* शत्रुघ्न जी ने कुबरी को अनर्थ का मूल कारण समझकर तुरन्त सजा दे दी, ताकि इस अनीति से सम्बन्धित सभी व्यक्ति अपने कुकर्म को महसूस कर सकें ।

भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई ।
कौसल्या पहिं गे दोउ भाई ।।

⊗ दयानिधि=दयालु स्वभाव के, गे=गये ।

★ **तब स्वभाव से दयालु श्री भरत जी ने उसको छुड़ा दिया और दोनों भाई (तुरन्त) कौशल्या जी के पास गये ।**

* शत्रुघ्न जी सबका रोष अकेली मन्थरा पर ही न उतारने लगें । इसलिये भरत जी ने उसे छुड़ा दिया और माँ कौशल्या के पास अपनी सफाई व्यक्त करने गये ।

सरल सुभाय मायँ हियँ लाए ।
अति हित मनहुँ राम फिरि आए ।।

⊗ सुभाय=स्वभाव, मायँ=माता, अति हित=बड़े प्रेम से ।

★ **तब निश्छल सरल स्वभाव वाली माता ने बड़े प्रेम से उन्हें छाती से लगा लिया मानों श्री राम ही फिर से लौट आये हों ।**

* भेद कपटी हृदय में होता है । माँ कौशल्या को भरत और राम समान रूप से प्रिय थे ।

भेटेउ बहुरि लखन लघु भाई ।
सोक सनेह न हृदयँ समाई ।।

⊗ भेटेउ=मिली (हृदय से लगायी) लखन-लघु, भाई=लक्ष्मण के छोटे भाई-(शत्रुघ्न जी), सोक=शोक, सनेह (स्नेह)=प्रेम, समाई=समाता है, बहुरि=पुनः फिर।

★ **फिर लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्न जी को हृदय से लगाया उस समय शोक (दशरथजी का मरण तथा राम वन गमन) और स्नेह (भरत, शत्रुघ्न मिलन) उनके हृदय में समाता नहीं था ।**

* लक्ष्मण जी केवल राम के प्रेम वश बन गये थे । शत्रुघ्न को देखकर माँ को उनकी याद आ गयी ।

देखि सुभाउ कहत सब कोई ।
राम मातु अस काहे न होई ।।

⊗ काहे न होई=क्यों न हो, अस=ऐसा ।

★ **कौशल्याजी का स्वभाव देखकर सब लोग कहने लगे कि श्री राम की माता का स्वभाव ऐसा क्यों न हो ।**

* माँ कौशल्या ने अपने हृदय को निर्मल बना लिया था तभी भगवान ने उन्हें माँ के रूप में स्वीकार किया । श्रेष्ठ सन्तानें सदाचारिणी माताओं से ही उत्पन्न होती हैं ।

माता भरत गोद बैठारे ।
आँसु पोंछि मृदु बचन उचारे ।।

★ **माता कौशल्या ने भरत जी को गोद में बैठा लिया और उनके आँसू पोंछ कर कोमल वचन बोलीं ।**

अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू ।
कुसमउ समुझि सोक परिहरहू ।।

⊗ अजहूँ=अब, बच्छ - (वत्स)=प्यारे पुत्र, कुसमय=बुरा समय, परिहरहू=त्याग दो ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **हे पुत्र ! मैं तुम्हारी बलैया लेती हूँ । अब धीरज धारण करो और कुसमय जानकर शोक त्याग करो ।**

* सब लोग दु:ख में अपना सन्तुलन खो बैठें, तब समझदार व्यक्ति अपने दु:ख को भूल कर उन्हें सभालें यह उचित है ।

जनि मानहु हिय हानि गलानी ।
काल करम गति अघटित जानी ।।

⊗ जनि=मत (नही), गलानी=ग्लानि, करम गति=कर्म की गति, अघटित=अमिट ।

★ **समय और कर्म की गति अमिट जानकर हृदय में इस हानि का दु:ख मत मानों ।**

* भरत स्वयं को अनर्थ का कारण मानकर दु:खी थे, माँ ने उसे समय की न टाली जा सकने वाली घटना कहकर उनकी आत्म-ग्लानि को दूर किया ।

पितु आयसु भूषन बसन, तात तजे रघुबीर ।
बिसमउ हरष न हृदय कछु, पहिरे बलकल चीर ।।

⊗ आयसु=आज्ञा से, बलकल चीर=पेड़ों की छाल से तैयार वस्त्र, बिसमउ=विषाद ।

★ **हे तात ! पिता की आज्ञा से श्री रामजी ने भूषण-वस्त्र त्याग दिये और मन में किसी प्रकार का हर्ष-विषाद का ख्याल किये बिना बलकल-वस्त्र पहन लिये ।**

* मां भरत को राम का प्रसंग सुनाकर सहज भाव से अपना कर्तव्य पालन करने की सीख दे रही हैं ।

मुख प्रसन्न मन रंग न रोषू ।
सब कर सब बिधि करि परितोषू ।।

⊗ रंग=आसक्ति, रोषू=द्वेष करी=करके, परितोषू=सन्तुष्ट करके ।

★ **उनका मुख प्रसन्न था, मन में किसी प्रकार की आसक्ति या द्वेष का भाव न था । सबको सब प्रकार से सन्तोष कराकर ।**

राम लखनु सिय बनहि सिधाए ।
गइउ न संग न प्रान पठाए ।।

⊗ सिधाए=गये, गइउन=मैं न गई, न प्रान पठाए=न प्राण ही गये ।

★ **इस प्रकार श्री राम, लक्ष्मण और सीता वन को चले गये, पर न मैं ही साथ गई और न प्राण ही गये ।**

* भरत तथा अयोध्या वासियों के प्रति अपना कर्तव्य ध्यान में रखकर माँ कौशल्या ने धीरज रखा ।

मोह न लाज निज नेहु निहारी ।
राम सरिस सुत मैं महतारी ।।

⊗ नेह (स्नेह)=प्रेम, सरिस=समान, महतारी=माता ।

★ **अपने स्नेह की कमी की कल्पना से मुझे लाज भी नहीं आती, क्योंकि राम जैसे पुत्र की मैं माता हूँ ।**

* माँ ने कर्तव्य को प्रधानता दी, स्नेह वश न साथ गयीं और न शरीर त्यागा । इससे कोई उनके स्नेह को कम कहेगा, इसकी चिन्ता भी उन्हें नहीं हुई क्योंकि विचारशील व्यक्ति जग उपहास को नहीं, विवेक के निर्णय को महत्व देते हैं ।

भांति अनेक भरत समुझाए ।
कहि बिबेकमय बचन सुहाए ।।

★ **अनेकों प्रकार से भरतजी को समझाया और बहुत सी विवेक भरी बातें उन्हें बताई ।**

* केवल दु:ख दूर करना ही पर्याप्त नहीं माना भविष्य के लिये मार्ग दर्शन भी दिया ।

भरतहुँ मात सकल समुझाईं ।
कहि पुरान श्रुति कथा सुहाईं ।।

⊗ पुरानश्रुति (पुराण-श्रुति)=वेद पुराण ।

★ **भरत जी ने भी सब माताओं को वेद-पुराणों की सुन्दर-सुन्दर कथाएँ कहकर समझाया ।**

* माँ कौशल्या के विवेक से भरत को सही रास्ता दिखाई दिया और वह भी विवेक पूर्वक दूसरों का दु:ख निवारण करने लगे ।

जे पातक उपपातक अहहीं ।
करम बचन मन भव कवि कहहीं ।।

⊗ पातक=पाप, उप पातक=छोटे पाप, अहहीं=है, भव=संसार के ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* भरतजी कहने लगे कर्म-वचन और मन से होने वाले जो छोटे-बड़े पाप विचारकों ने बतायें हैं ।

ते पातक मोहि होहुँ विधाता ।
जौं यह होइ मोर मत माता ।।

⊗ ते=वे, होहुँ=होवें, जौं=यदि ।

★ हे विधाता ! वे सभी पाप मुझे लगें, हे माता ! यदि इस कार्य में मेरा मत हो ।

* स्वयं राज्य लेने तथा राम को वन भेजने में भरत का कोई मत नहीं था, यह वे सबको विश्वास दिला रहे हैं ।

जे परिहरि हरि हर चरन,
भजहिं भूतगन घोर ।
तेहिं कइ गति मोहि देउ बिधि,
जौं जननी मत मोर ।।

⊗ परिहरि=छोड़कर, भूतगन-(भूतगण)=भूत-प्रेतों के समूह, तेहि=उसकी, कइ=की, देउ=देवें, मोर=मोरा ।

★ जो लोग विष्णु और शंकर के चरणों को छोड़कर भयानक भूत-प्रेतों का भजन करते हैं, हे माता ! यदि इसमें मेरा मत हो तो विधाता मुझे उनकी गति दे ।

* भरत जी भूत-प्रेतों की ओछी साधनाओं को भयंकर पापों में गिनते हैं क्योंकि इससे मनुष्य जीवन लक्ष्य से ही भटक जाता है ।

बेचहिं वेद धरम दुहि लेहीं ।
पिसुन पराय पाप कहिं देहीं ।।

⊗ धरम=धर्म, पिसुन (पिशुन)=चुगलखोर, पराय=औरों के ।

★ जो लोग वेदों को (ज्ञान को) बेचते हैं और धर्म को दुह लेते हैं । जो चुगल खोर दूसरों के पाप कहते फिरते हैं ।

* ये भारी पाप माने जाते हैं क्योंकि यह समाज को पतन की राह पर ठेल देते हैं ।

कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी ।
वेद बिदूषक विस्व बिरोधी ।।

⊗ कलह=झगड़ा, वेद बिदूषक=वेद की निन्दा करने वाला, विस्व=विश्व ।

★ जो कपटी, कुटिल, कलह-प्रिय और क्रोधी हैं तथा जो वेदों की निन्दा करने वाले और विश्व भर के विरोधी हैं ।

लोभी लंपट लोलुप चारा ।
जें ताकहि परधन परदारा ।।

⊗ लोलुप=लालची, चारा=आचरण करने वाले, ताकहिं=लालच की दृष्टि से देखते हैं, परदारा=परायी स्त्री ।

★ जो लोभी लम्पट और लालची हैं, जो पराये धन और स्त्री की घात में रहते हैं ।

पाबौं मैं-तिन्ह कै गति घोरा ।
जो जननी यह संमत मोरा ।।

★ हे माता ! यदि यह मेरी सम्मति हो तो मैं उन सब की गति को प्राप्त होऊँ ।

* उपरोक्त सभी पापों को वर्तमान लोक व्यवहार में लोग महत्व नहीं देते जबकि वह भयंकर पाप माने गये हैं । तभी तो भरतजी ने इनको महत्व दिया ।

जे नहिं साधु संग अनुरागे ।
परमारथ पथ विमुख अभागे ।।

★ जो सज्जनों की निकटता से प्रेम नहीं रखते, जो अभागे परमार्थ के मार्ग से विमुख हैं ।

* जिनकी समझ में परमार्थ तथा सज्जनों की संगति का महत्व नहीं आया, वे जीवन निरर्थक गवां देते हैं इसलिये उन्हें अभागा कहा गया ।

तजि श्रुति पंथु बाम पथ चलहीं ।
बंचक बिरचि बेष जगु छलहीं ।।

⊗ तजि=त्यागकर, श्रुति=वेद, बाम पंथु=उल्टा मार्ग, बंचक=ठग, बिरचि=रचकर ।

★ जो वेद मार्ग को छोड़कर वेद प्रतिकूल मार्ग पर चलते हैं वे ठग हैं और भेष बनाकर दुनियाँ को छलते हैं ।

* प्रामाणिक रास्ता छोड़कर सस्ते रास्ते ढूँढना तथा अन्त:करण वैसा बनाये बिना ऊपरी वेष बनाना भी गहन पापों में गिना जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तिन्ह कै गति मोहि संकर देऊ ।
जननी जौं यह जानौं भेऊ ।।

⊗ संकर=शंकर, भेऊ=भेद ।

★ **हे माता! यदि मैं राम वन गमन के भेद को जानता होऊँ तो शंकर जी उन पापियों की गति मुझे देवें ।**

* सच्चा व्यक्ति अपनी सचाई के प्रमाण से बड़े से बड़ा दाँव लगा देता है ।

मातु भरत के बचन सुनि,
साँचे सरल सुभायँ ।
कहति राम प्रिय तात तुम्ह,
सदा बचन मन कायँ ।।

⊗ साँचे=सच्चे, सुभायँ=स्वाभाविक, कायँ (काया से)=शरीर से (कर्म से) ।

★ **माता कौशल्या भरत जी के स्वाभाविक सच्चे और सरल वचनों को सुनकर कहती हैं । हे तात ! तुम सदा ही मन, वचन और शरीर से श्री राम के प्रिय हो ।**

* श्री राम का प्रिय बनना हो तो मन, वचन और शरीर से उनके प्रति प्रेम प्रकट करना होगा तभी वह अपना प्रेम लुटाते हैं ।

राम प्रानहु तैं प्रान तुम्हारे ।
तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तें प्यारे ।।

⊗ प्रानहु=प्राणों से ।

★ **श्री राम प्राणों से भी तुम्हें प्यारे हैं और तुम श्री राम को भी प्राणों से भी प्यारे हो ।**

* माँ कौशल्या दोनों भाइयों के सच्चे प्रेम को समझती है ।

बिधु बिष चवै स्रवै हिम आगी ।
होइ बारिचर बारि बिरागी ।।

⊗ बिधु=चन्द्रमा, चवै=टपकाने लगे, स्रवै=बरसाने लगे, बारिचर=पानी के जीव, बिरागी=विरक्त ।

★ **चन्द्रमा चाहे विष टपकाने लगे और पाला आग बरसाने लगे, जलचर जीव चाहे पानी का त्याग कर दें ।**

भएँ ग्यान बरु मिटै न मोहू ।
तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू ।।

⊗ बरु=फिर भी ।

★ **और ज्ञान उत्पन्न हो जाने पर भी चाहे मोह न मिटे, परन्तु तुम श्री राम के प्रतिकूल कभी भी नहीं हो सकते ।**

* भरत के प्रति माँ कौशल्या का इतना विश्वास है कि प्राकृतिक नियमों से भी अधिक राम के प्रति भरत के स्नेह को मानती है ।

मत तुम्हार यह जो जग कहहीं ।
सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं ।।

★ **इसमें तुम्हारी सम्मति है, जगत् में कोई भी ऐसा कहने वाला स्वप्न में भी सुख और शुभ गति नहीं प्राप्त कर सकता ।**

* सुख और सद्गति उन्हें मिलती है जो भले और बुरे का विवेक कर सकते हैं । भरत का प्रेम राम के प्रति इतना स्पष्ट है कि उसे न समझने वाला अपने भले-बुरे को भी नहीं समझ सकेगा और दुःख पाता रहेगा ।

अस कहि मातु भरत हियँ लाए ।
थन पय स्रवहि नयन जल छाए ।।

⊗ अस=ऐसा, थन=छाती, पय=दूध, स्रवहि=बहता है, नयन-जल छाए=आँखें भर आईं ।

★ **ऐसा कहकर माता कौशल्या ने भरत जी को हृदय से लगा लिया । उनकी छाती से दूध बहने लगा और आँखे भर आईं ।**

* माता कौशल्या जी भरत जी के प्रति कितना अनुराग रखती थीं यह इससे प्रकट होता है ।

बामदेउ बसिष्ठ तब आए ।
सचिव महाजन सकल बोलाए ।।

★ **तब वामदेव जी और वशिष्ठ जी वहाँ पहुँचे और उन्होंने सब मंत्रियों को और महाजनों को बुलवाया ।**

* कठिन समस्याओं की घड़ी में पण्डित एवं विचारक इकट्ठे होकर उनको सुलझाने का उपाय निकालते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे ।
कहि परमारथ बचन सुदेसे ।।

⊗ सुदेसे-(सुदेशे)=अच्छा उपदेश ।

★ **फिर मुनि वशिष्ठ जी ने भरत जी को समयानुकूल बहुत प्रकार से उपदेश दिया और परमार्थ से भरे वचन कहे ।**

* कुल गुरु, पंडित, ब्राह्मण, पुरोहित, जनसाधारण को उपदेश तथा परमार्थ भरे वचन कहकर उनकी चिन्ता को दूर करते हैं और दु:ख के समय सही कर्तव्य बतलाते हैं ।

तात हृदयँ धीरज धरहु,
करहु सो अवसर आज ।
उठे भरत गुरु बचन सुनि,
करन कहेउ सब साज ।।

⊗ साज=तैयारी ।

★ **(वशिष्ठ जी ने कहा)- हे तात ! हृदय में धीरज धरो और आज जिस कार्य के करने का अवसर है, सो करो । गुरुजी के वचन सुनकर भरत जी उठे और सब तैयारी करने के लिये कहा ।**

* भरतजी गुरु की आज्ञा सुनकर अपने धैर्य और विवेक का परिचय देते हुए सारे कार्य संभाल लेते हैं ।

एहि विधि दाह क्रिया सब कीन्हीं ।
विधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्हीं ।।

⊗ न्हाइ=नहाकर, तिलांजुलि=तिल से तर्पण, कीन्हीं=की गयी ।

★ **इस प्रकार सब दाह-क्रिया की गयी और सबने विधिवत् स्नान करके तिलांजलि दी ।**

* सारे कर्मकाण्ड गुरु के निर्देशानुसार किए गये, व्यर्थ के प्रपंचों में कोई नहीं पड़ा ।

भए बिसुद्ध दिए सब दाना ।
धेनु बाजि गज बाहन नाना ।।

⊗ बिसुद्ध (विशुद्ध)=परम पवित्र, दाना=दान, धेनु=गाय, बाजि=घोड़ा, गज=हाथी, बाहन=सवारी, नाना=अनेक प्रकार ।

★ **शुद्ध हाने पर सबने गायें, घोड़े तथा हाथी आदि अनेक प्रकार की सवारियाँ दान दिये ।**

* मृत व्यक्ति की सम्पत्ति में से समाज हित के कार्यों के लिये दान देना ही श्राद्ध कर्म है । भरत ने वही किया ।

पितु हित भरत कीन्ह जसि करनी ।
सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी ।।

⊗ जसि=जैसी, करनी=कार्य, सो=वह।

★ **पिता के लिए भरत जी ने जैसी करनी की वह लाखों मुखों से भी वर्णन नहीं की जा सकती ।**

* भरत ने पिता की आत्म शान्ति के लिये धनादि का मोह छोड़कर लोक मंगल के कार्यों में जिस उदारता से धन लगाया वह अद्वितीय कहा गया ।

सुदिन सोधि मुनिवर तब आए ।
सचिव महाजन सकल बोलाए ।।

★ **तब शुभ दिन विचार कर मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठ जी आये और मन्त्री और सभी महाजनों को बुलवाया ।**

* महत्वपूर्ण निर्णय के समय सभी लोग मिलकर विचार करते थे ।

बैठे राजसभा सब जाई ।
पठए बोलि भरत दोउ भाई ।।

⊗ पठए बोलि=बुलावा भेजा ।

★ **सब लोग राजसभा में जाकर बैठ गये तब मुनि ने भरत, शत्रुघ्न दोनों भाइयों को बुलवाया ।**

भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे ।
नीति धरममय बचन उचारे ।।

⊗ बैठारे=बैठाये, धरममय=धर्म से पूर्ण ।

★ **भरत जी को वशिष्ठ जी ने अपने पास बैठा लिया और नीति और धर्म से भरे वचन कहे ।**

* वशिष्ठ जी भरत का दु:ख समझते हैं इसलिये बड़ी आत्मीयता से बात प्रारम्भ करते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुनहु भरत भावी प्रबल,
बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभु जीवनु मरनु,
जसु अपजसु विधि हाथ ।।

⊗ भावी=होनहार, प्रबल=बलवान, विधि हाथ=विधाता के हाथ में ।

★ मुनिराज वशिष्ठ जी ने विलखकर कहा– हे भरत जी सुनो ! होनहार बहुत बलवान है । हानि-लाभ, जीवन-मृत्यु यश और अपयश ये सब विधाता के हाथ में हैं ।

* मनुष्य केवल अपने कर्तव्य का निर्णय ले सकता है किये हुए कर्म के अनुसार फल निश्चित विधान के अनुसार चलता है ।

अस बिचारि केहि देइअ दोषू ।
व्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू ।।

⊗ देइअ=देना, दोषू=दोष, व्यरथ=व्यर्थ, कीजिअ=करना, रोसू=रोष।

★ ऐसा सोचकर किसे दोष दिया जाय और व्यर्थ ही किस पर क्रोध किया जाय ?

* सभी पूर्व कर्मानुसार फल पाते हैं इसलिये दूसरों को दोषी ठहराना अथवा क्रोध करना अनुचित है ।

तात विचार करहु मन माहीं ।
सोच जोगु दशरथ नृपु नाहीं ।।

★ हे तात ! मन में विचार करके देखो, राजा दशरथ सोच करने योग्य नहीं हैं ।

* जो व्यक्ति श्रेष्ठ जीवन जिये तथा कर्तव्य पालन के लिए प्राण दे, वह प्रेरणा लेने योग्य है, उसका दुःख नहीं करना चाहिये । दुःख करने योग्य कैसे व्यक्ति होते हैं यह वे आगे समझाते हैं ।

सोचिअ बिप्र जो बेद विहीना ।
तजि निज धरम विषय लयलीना ।।

⊗ सोचिअ=सोचने योग्य, बिप्र=ब्राह्मण, बेद-विहीना=वेद के ज्ञान से हीन, तजि=छोड़कर, विषय=बुरे आचरण, लयलीना=डूबा हुआ ।

★ सोच उस ब्राह्मण का करना चाहिए जो वेद नहीं जानता और अपना धर्म छोड़कर विषय-भोग में लीन रहता है ।

* ऐसे ब्राह्मण चिन्ता योग्य हैं क्योंकि वे समाज को सही दिशा नहीं दे सकते ।

सोचिअ नृपति जो नीति न जाना ।
जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना ।।

★ उस राजा का सोच करना चाहिए जो नीति नहीं जानता और जिसको अपनी प्रजा प्राणों के समान प्यारी नहीं है ।

* इन गुणों से हीन शासक राष्ट्र को कभी भी गड्ढे में डाल सकता है इसलिये शोचनीय है ।

सोचिअ बयसु कृपन धनवानू ।
जो न अतिथि सिब भगति सुजानू ।।

⊗ बयसु=वैश्य, कृपन (कृपण)=कंजूस, सिब (शिव)=कल्याणकारी, सुजानू=चतुर, कुशल ।

★ उस वैश्य का सोच करना चाहिए जो धनवान होकर भी कृपण है और जो अतिथि की सेवा नहीं करता तथा शंकर जी की भक्ति करने में कुशल नहीं है ।

* जो धनवान है पर शिव अर्थात् कल्याणकरी कार्य में कंजूसी दिखाता है वह समाज की प्रगति में बाधक बन जायेगा ।

सोचिअ सूद्र विप्र अवमानी ।
मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी ।।

⊗ सूद्र=शूद्र, अवमानी=अपमान करने वाला, मुखर=बहुत बोलने वाला, मानप्रिय=सम्मान चाहने वाला, ग्यान गुमानी=ज्ञान का घमण्ड रखने वाला ।

★ वह शूद्र सोचने योग्य है जो ब्राह्मणों का अपमान करने वाला, अधिक बोलने वाला, सम्मान चाहने वाला और ज्ञान का घमण्ड रखने वाला है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जिसमें उपर्युक्त दोष हैं वह व्यक्ति सेवा परायण नहीं रह सकता ।

सोचिअ पुनि पति बंचक नारी ।
कुटिल कलह प्रिय इच्छाचारी ।।

⊗ बंचक=छली, इच्छाचारी=मनमानी करने वाली ।

★ फिर उस स्त्री का सोच करना चाहिए जो पति को छलने वाली, कुटिल, झगड़ा करने वाली और बिना सोचे मनमानी करती हो ।

* समाज में यदि ऐसी स्त्रियाँ बढ़ जायें तो परिवारों के सन्तुलन ही बिगड़ने लगें ।

सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई ।
जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई ।।

⊗ बटु=ब्रह्मचारी, परिहरई=उपेक्षा कर देता है, अनुसरई=अनुसार चलता है ।

★ वह ब्रह्मचारी सोचने योग्य है जो अपना ब्रह्मचर्य-व्रत का त्याग कर देता है और गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करता ।

* अपने व्रत तथा गुरु आज्ञा की उपेक्षा करने वाला ब्रह्मचारी अपने लक्ष्य को नहीं पा सकता ।

सोचिअ गृही जो मोह बस,
करइ करम पथ त्याग ।
सोचिअ जती प्रपंच रत,
विगत विवेक विराग ।।

⊗ गृही=गृहस्थ, करम=कर्म, प्रपंच=माया-जाल, सांसारिकता, रत=लीन, विगत=त्यागकर, विराग=वैराग्य ।

★ वह गृहस्थ सोचने योग्य है जो मोह वश कर्म-पथ का त्याग कर देता है । वह संन्यासी सोच करने योग्य है जो दुनिया के प्रपंच में फँसा हुआ, ज्ञान-वैराग्य से हीन है ।

* कर्म त्यागने वाला गृहस्थ और विवेक तथा वैराग्य से हीन, संन्यासी न अपना भला कर सकते हैं और न समाज का ।

बैखानस सोइ सोचै जोगू ।
तप बिहाई जेहि भावइ भोगू ।।

⊗ बैखानस=वानप्रस्थ, भावइ=अच्छे लगते हैं, भोगू=भोग-विलास ।

★ वही वानप्रस्थ सोचने योग्य है जिसको तपस्या छोड़कर भोग विलास अच्छे लगते हैं ।

* वानप्रस्थ की आयु प्राप्त होने पर भी जिन्हें, समाज-सेवा को छोड़कर सांसारिक भोग अच्छे लगते हों वे व्यक्ति चिन्ता के योग्य हैं ।

सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी ।
जननि जनक गुरु बंधु बिरोधी ।।

⊗ पिसुन=चुगलखोर, अकारन=अकारण, जननि-जनक=माता-पिता ।

★ सोच उसका करना चाहिए जो चुगलखोर है, बिना किसी कारण के क्रोध करने वाला है, जो माता-पिता गुरु और अपने भाई-बन्धुओं से विरोध रखने वाला है ।

* उक्त दोषों वाले व्यक्ति स्वयं अपने लिये तथा समाज के लिए भी सिर दर्द ही सिद्ध होते हैं ।

सब बिधि सोचिअ पर अपकारी ।
निज तन पोषक निरदय भारी ।।

⊗ सब विधि=सब प्रकार, पर अपकारी=दूसरों की हानि करने वाला, पोषक=पालन करने वाला, निरदय (निर्दय)=दयाहीन ।

★ दूसरों की हानि करने वाला सब प्रकार से सोचने योग्य है, जो अपने शरीर के तो पोषण में लगा रहता है और दूसरों के प्रति निर्दयता का भाव रखता है ।

* अपने शरीर को प्रधानता देने वाला स्वार्थी हर प्रकार शोचनीय है क्योंकि वह किसी के काम का नहीं होता ।

सोचनीय सबही बिधि सोई ।
जो न छाँड़ि छल हरि जन होई ।।

⊗ सोचनीय=सोच करने योग्य, हरिजन=भगवान का भक्त (सज्जन) ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ वह सब प्रकार से सोच करने योग्य है जो भगवान का भक्त होकर भी छल का त्याग नहीं करता ।

* स्वार्थी की ही तरह वह व्यक्ति भी शोचनीय है जो भक्त तो कहलाता है पर छल नहीं छोड़ पाता ।

सोचनीय नहिं कोसलराऊ ।
भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ।।

⊗ कोसलराऊ=राजा दशरथ, चारिदस=चौदह, प्रगट=प्रकट, प्रभाऊ=प्रभाव, भुवन=लोक ।

★ कोसलराज दशरथ जी सोच करने योग्य नहीं हैं, जिनका प्रभाव चौदहों लोकों में व्याप्त है ।

* राजा दशरथ अपने आदर्श जीवन से लोगों को प्रेरणा दे गये हैं, इसलिए उनके लिए शोक नहीं करना चाहिए ।

भरत कमल कर जोरि,
धीर धुरन्धर धीर धरि ।
वचन अमिऊँ जनु वारि,
देत उचित उत्तर सबहि ।।

⊗ धुरन्धर=धुरी को धारण करने वाला, अमिऊ=अमृत, बोरि=ओत-प्रोत कर ।

★ धैर्य की धुरी को धारण करने वाले भरत जी धीरज धर कर अपने कमल के समान दोनों हाथों को जोड़कर, वचनों को अमृत में डुबाकर सबको समुचित उत्तर देने लगे ।

* समुचित उत्तर देने के लिये धैर्य और वाक्य कुशलता दोनों आवश्यक हैं ।

मोहि समान को पाप निबासू ।
जेहि लगि सीय राम बनवासू ।।

★ भरत जी कहते हैं कि मेरे समान कौन पापी होगा ? जिसके कारण श्री राम और सीताजी को वन में रहने जाना पड़ा ।

* अपने कारण अनीति हुई इसलिये स्वयं को भरत जी ने पापों का आवास कहा । यहाँ से आगे सब वचन भरत की निष्कपटता तथा राम के प्रति सच्चे प्रेम के प्रतीक हैं ।

रायँ राम कहुँ कानन दीन्हा ।
बिछुरत गमन अमरपुर कीन्हा ।।

⊗ रायँ=राजा दशरथ, कानन=वन, बिछुरत=वियोग होते ही, गमन=जाना, अमरपुर=स्वर्ग।

★ राजा ने श्री रामजी को वन जाने की आज्ञा दी और उनका वियोग होते ही स्वर्ग को सिधार गये ।

मैं शठ सब अनरथ कर हेतू ।
बैठ बात सब सुनउं सुचेतु ।।

⊗ सठ (शठ)=दुष्ट, अनरथ=अनर्थ, कर=का हेतू (हेतु)=कारण, सुचेतू (सचेत)=सतर्क ।

★ और मैं दुष्ट, सभी अनर्थों का कारण हूँ कि होश-हवास में बैठा हुआ सब बातें सुन रहा हूँ ।

बिनु रघुबीर बिलोकि अबासू ।
रहे प्रान सहि जग उपहासू ।।

⊗ बिलोकि=देखकर, अबासू=अवास, सहि=सहकर, उपहासू (उपहास)=हँसी ।

★ श्री राम के बिना सूने घर को देखकर भी मेरे प्राण संसार को उपहास सहने को जीवित रह गये ।

राम पुनीत विषय रस रुखे ।
लोलुप भूमि भोग के भूखे ।।

⊗ पुनीत=पवित्र, लोलुप=लालची ।

★ श्री रामरूपी पवित्र-रस में मेरे (भरत) प्राण आसक्त नहीं हैं । ये लालची भूमि और भोगों के ही भूखे हैं ।

* भरत गहरा आत्म चिन्तन करते हैं तथा यह निष्कर्ष निकालते हैं कि शायद मेरे अन्दर राम की अपेक्षा संसार के भोगों के प्रति अधिक लगाव है इसीलिए राम वियोग में भी जीवित हूँ ।

ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस,
तेहि पुनि बीछी मार ।
तेहि पिआइअ बारुनी,
कहहु काह उपचार ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ ग्रह-ग्रहीत=बुरीग्रह दशा में पड़ा हुआ पिशाच ग्रस्त, बात बस=वायु रोग से पीड़ित, बीछी=बिच्छू, मार=डंक मारा हुआ, पिआइअ=पिलाना, बारुणी=मदिरा, काह=कैसा ।

★ **बुरी परिस्थिति में फँसा हो और वायुरोग से पीड़ित हो उस पर भी फिर बिच्छू डंक मार दे । उसको यदि मदिरा पिलायी जाय तो कहिये यह कैसी चिकित्सा है ।**

* यह अलंकार उक्ति है, भरत के लिए विपरीत परिस्थितियाँ ग्रह दशा, राम वियोग– वायु रोग तथा पिता का मरना बिच्छु काटने जैसा है ऐसी स्थिति में राज्यरूपी शराब न पिलाने का वह आग्रह करते हैं ।

आपनि दारुन दीनता,
कहउँ सबहि सिर नाइ ।
देखें बिनु रघुनाथ पद,
जिय कै जरनि न जाइ ।।

⊗ आपनि=अपनी, दारुन (दारुण)=असह्य, जिय=हृदय, कै=की, जरनि=जलन ।

★ **सबको सिर झुकाकर मैं अपनी असह्य दीनता कहता हूँ । श्री रामजी के चरणों को देखे बिना मेरे हृदय की जलन शान्त नहीं होगी ।**

* भरत कहते हैं कि उन्हें शान्ति के लिए वैभव नहीं भगवान का प्रेम और संरक्षण चाहिए ।

आन उपाय मोहि नहिं सूझा ।
को जिय कै रघुबर बिन बूझा ।।

⊗ आन (अन्य)=दूसरा, जिय=हृदय, बूझा=समझ जाना ।

★ **भरत जी बोले मुझे कोई दूसरा उपाय दिखाई नहीं देता क्योंकि श्री रामचन्द्रजी के अलावा कोई मेरे हृदय के भाव नहीं समझ सकता है ।**

* दुनिया बाह्य आचरण देखती है जबकि प्रेमी और भगवान अन्तःकरण की स्थिति को समझते हैं । भरत का राम पर अनन्य विश्वास प्रकट होता है ।

एकहिं आँक इहइ मन माहीं ।
प्रातःकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं ।।

⊗ आंक=चिन्ह (इच्छा), इहइ=यही, प्रभुपाहीं=प्रभु के पास ।

★ **मन में एक इच्छा है कि प्रातःकाल होते ही मैं श्री भगवान रामचन्द्र जी के पास चला जाऊँ इसके अलावा दूसरी कोई बात मेरी समझ में नहीं आती है ।**

तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी ।
आयसु आसिष देहु सुबानी ।।

⊗ पाँच=पंच, आयसु=आज्ञा, मोर भलमानी=मेरा हित समझ कर ।

★ **आप सभी लोग मिलकर भी इसी में मेरा हित मान लें तथा सुन्दर वाणी से (प्रसन्नतापूर्वक) मुझे आज्ञा तथा आशीर्वाद दीजिए ।**

* दुःख कातर स्थिति में भी भरत ने लोक मर्यादा को ध्यान में रखकर बड़ों का आशीर्वाद माँगा ।

जेहिं सुनि बिनय मोहि जनु जानी ।
आवहिं बहुरि राम रजधानी ।।

⊗ जनु=दास, बहुरि=फिर से ।

★ **जिससे कि मुझे अपना सेवक मानकर भगवान राम मेरी विनय मान लें और राजधानी को लौट आवें ।**

* सच्चे प्रेम से कैसा विश्वास पैदा होता है । भरत समझ रहे हैं कि माता-पिता की आज्ञा के विपरीत भी भगवान राम मेरी बात मान लेंगे ।

जद्यपि जनम कुमातु ते,
मैं सठ सदा सदोस ।
आपन जानि न त्यागिंहहिं,
मोहि रघुबीर भरोस ।।

⊗ जद्यपि=यद्यपि, सठ(शठ)=बुरा व्यक्ति, सदोसी=(सदोष) दोषी ।

★ **यद्यपि मेरा जन्म कुमाता से हुआ है, मैं मूर्ख तथा दोष युक्त हूँ तो भी मुझे भरोसा है कि श्रीराम मुझे अपना जानकर छोड़ेंगे नहीं ।**

* अपनत्व जिसके प्रति होता है । उसे सुधारा तो जाता है, त्यागा नहीं जाता ।

भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे ।
राम सनेह सुधा जनु पागे ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ भरत जी की वाणी, जो श्री रामजी के प्रति प्रेम से भरी थी, सभी को अमृत जैसी लगी ।

* सच्चे मन से जो प्रेम भरे शब्द निकलते हैं वे सुनने वाले के लिए अमृत का ही काम करते हैं ।

चलत प्रात लखि निरनउ नीके ।
भरत प्रानप्रिय भे सब ही के ।।

⊗ लखि=देखना, नीके=अच्छे, प्रानप्रिय=प्रानों से प्यारे ।

★ भरत जी ने दूसरे दिन प्रात:काल चलने का सुन्दर निर्णय किया, इसलिए वे सभी के प्राणप्रिय हो गए ।

* स्वार्थ त्यागकर जनहित की बात सोचने वाला सबका प्यारा बन जाता है ।

कोउ कह रहन कहिअ नहिं काहू ।
को न चहइ जग जीवन लाहू ।।

★ कुछ नागरिक कहने लगे कि घर पर रुकने को किसी से भी मत कहो । भगवान राम के दर्शनों का लाभ इस जगत में कौन जीव नहीं उठाना चाहता ?

भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू ।
नगर बाजि गज भवंन भँडारू ।।

⊗ कीन्ह=किया, बिचारू=विचार, भंडारू=खजाना।

★ घर जाकर भरत जी ने विचार किया कि, अयोध्या नगर, घोडे, हाथी, घर, महल और भंडार-

संपति सब रघुपति कै आही ।
जो बिन जतन चलौं तजि ताही ।।

⊗ सम्पति=धन दौलत, जतन=हिफाजत, तजि=छोडना, ताही=उसको ।

★ यह सारी सम्पति भगवान राम की है । इसकी सुरक्षा की समुचित व्यवस्था किये बिना यदि ऐसे ही चल दूँ ।

तौं परिनाम न मोरि भलाई ।
पाप सिरोमनि साईं दोहाई ।।

⊗ परिनाम=नतीजा, सिरोमनि (शिरोमणि)=श्रेष्ठ, साईं=स्वामी, दोहाई=दुहाई देना ।

★ तो नतीजे में मेरा हित नहीं होगा क्योंकि स्वामी के विरुद्ध द्रोह करना सबसे बड़ा पाप है ।

* सारी सम्पत्ति भगवान की है ऐसा मान उसकी सुरक्षा करना हर भक्त का कर्तव्य है । मेरी नहीं, मुझे क्या करना यह भाव कर्तव्य को गिरा देता है ।

करइ स्वामि हित सेबक सोई ।
दूषन कोटि देइ किन कोई ।।

★ चाहे कोई भी कितने ही दोष क्यों न निकाले, पर सेवक तो वही है जो अपने स्वामी का हित करे ।

* नगर सुरक्षा के लिए किसी को रोकने से वह बुरा मानेगा इस बात को भरत ने महत्व नहीं दिया, बल्कि राष्ट्रीय सम्पत्ति की सुरक्षा की बात सोची, भले ही कोई उन्हें बुरा कहले ।

करि सब जतनु राखि रखबारे ।
राम मातु पहि भरत सिधारे ।।

⊗ जतनु (यत्न)=व्यवस्था, राखि=रखके, रखवारे=रखवाले, सिधारे=गए ।

★ देखभाल की सब व्यवस्था करके भरत जी राजमाता कौशल्या जी के पास पहुँचे ।

* विवेक पूर्ण विचार का अभ्यास होने से भरत ने दु:ख की स्थिति में भी हर पक्ष पर सही निर्णय लिया ।

आरत जननी जानि सब,
भरत सनेह सुजान ।
कहेउ बनावन पालकी,
सजन सुखासन जान ।।

⊗ आरत (आर्त)=दु:खी, सनेह=स्नेह, सजन=सजाने को ।

★ सुजान भरत जी ने सभी माताओं के दु:ख को जानकर पालकियाँ तथा सुखासन यान सजाने के आदेश दिये ।

अरुंधती अरु अगिनि समाऊ ।
रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ ।।

⊗ अगिन समाऊ=अग्नि होत्र की सामग्री, मुनिराऊ (मुनिराज)= वशिष्ठजी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ अग्निहोत्र की सब सामग्री लेकर सबसे पहले मुनिराज वशिष्ठजी अपनी पत्नी अरुन्धती के साथ रथ पर सवार होकर चले ।

* (१) गुरु को प्रथम सम्मान प्राप्त था इसलिये उन्हें पहले चलाया गया । (२) ऋषि नित्य अग्निहोत्र करते थे अत: उसका सामान साथ रखते थे ।

नगर लोग सब सजि सजि जाना ।
चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना ।।

⊗ कीन्ह=किया, पयाना (प्रयाण)=चल पड़े ।

★ रथों को सजाकर नगर के सभी लोग चित्रकूट की ओर चल पड़े ।

पय अहार फल असन एक,
निसि भोजन एक लोग ।
करत राम हित नेम ब्रत,
परिहरि भूषन भोग ।।

⊗ पय=दूध, फलअसन=फलाहर, निसि (निशि)=रात, भूषण=जेवर ।

★ कोई लोग दूध पीते, कोई फल खाते और कुछ लोग रात को एक समय ही भोजन करते थे । जेवर तथा भोग विलास को त्याग कर सभी लोग भगवान श्री राम के हित के लिए नियम व व्रत करते थे ।

* भगवान राम के वियोग में नगर वासियों ने इच्छित लक्ष्य पाने के लिए संयम-नियम तपस्या तथा त्याग को जरूरी समझा ।

सई तीर बसि चले बिहाने ।
सृङ्गवेरपुर सब नियराने ।।

⊗ सई=एक नदी, बिहाने=सबेरे, सृङ्गवेरपुर=एक ग्राम का नाम, नियराने=नजदीक-समीप ।

★ सई नदी के किनारे रात भर निवास करके प्रात:ही वहां से चल दिये तथा शृंङ्गवेरपुर ग्राम के समीप पहुँचे ।

समाचार सब सुने निषादा ।
हृदयँ बिचार करई सबिषादा ।।

★ समाचार सुनकर निषादराज बड़े दुखी हुए और अपने मन में विचार करने लगे ।

कारन कवन भरत बन जाहीं ।
है कछु कपट भाउ मन माहीं ।।

★ भरत के वन जाने के कारण उनके मन में कुछ कपट अवश्य है ।

जौ पै जियँ न होति कुटिलाई ।
तौ कत लीन्ह संग कटकाई ।।

★ यदि मन में कोई कुटिलता न होती तो साथ में सेना लेकर क्यों चलते ?

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय - ५

मूलं धर्मतरोर्विवेक जलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं ।
वैराग्याम्बुज भास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहम् ॥
मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ। ख: सम्भवं शंकरं ।
बन्दे ब्रह्मकुलं कलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥

⊗ धर्मतरो=धर्मरूपी वृक्ष, जलधे=समुद्र के लिये, पूर्णेन्दु=पूरा चन्द्रमा, अम्बुज=कमल, भास्कर=सूर्य, अघ=पाप, तापहम्=तापों को नष्ट करने वाले, माहाम्भोधर=मोह रूपी बादल, पूग=समूह, स्व:सम्भवं=आकाश से उत्पन्न, कलकं शमनं=कर्लकों के नाशक ।

★ धर्मरूपी वृक्ष के मूल, विवेक रूपी समुद्र के लिये पूर्ण चन्द्र की तरह आनन्द दायक, वैराग्य रूपी कमल को विकसित करने वाले सूर्य, पाप रूप अन्धकार तथा तीनों प्रकार के तापों को मिटाने वाले, मोह रूपी बादलों के समूह को छिन्न-भिन्न करने के लिये वायु रूप, ब्रह्मा के वंशज, कलंकों के नाशक, श्रीरामचन्द्रजी के प्रिय शंकर जी की वन्दना करता हूँ ।

* धर्म, विवेक एवं वैराग्य भावना आदि को बढ़ाने और पाप, ताप, मोह आदि का निवारण का लक्ष्य उपासना द्वारा पाया जा सकता है ।

देखि दूरि तें कहि निज नामू ।
कीन्ह मुनीसहि दण्ड प्रनामू ॥

★ निषादराज ने मुनिराज वशिष्ठ जी को दूर से ही देखकर अपना नाम बताते हुए दण्डवत प्रणाम किया ।

जानि राम प्रिय दीन्ह असीसा ।
भरतहि कहेउ बझाइ मुनीसा ॥

⊗ जानि=जानकर, दीन्ही=दिया, असीसा=आशीर्वाद, बुझाइ = समझाकर ।

★ मुनि वशिष्ठ ने उसको राम का प्रिय समझ कर आशीर्वाद दिया और भरत को समझाते हुए कहा कि यह राम का मित्र है ।

* ऋषि दृष्टा थे, पहले भी सुमन्त्र द्वारा निषाद का विवरण पा चुके थे । उसे आशीर्वाद देने के साथ ही भरत को उसके बारे में बता दिया कि यह राम का प्रिय है । इतना संकेत भरत के लिये पर्याप्त था ।

करत दण्डवत देखि तेहि, भरत लीन्ह उर लाइ ।
मनहु लखन सन भेंट भई, प्रेम न हृदय समाइ ॥

★ निषादराज को दण्डवत करते देखकर भरत जी ने उन्हें उठाकर छाती से लगा लिया । भरत जी के हृदय में प्रेम समा नहीं रहा है । उन्हें लगा कि मानों लक्ष्मण जी से ही उनकी भेंट हो गई है ।

* भरत जैसे सन्त के लिये राम का प्रिय व्यक्ति अपने भाई जैसा लगना स्वाभाविक है ।

लोक बेद सब भाँतिहि नीचा ।
जासु छांह छुइ लेइअ सींचा ॥

⊗ भांतिहि=भांति से, जासु=जिसकी, छांह=छाया, छुई=छू जाने से, लेइअ सींचा=स्नान करना पड़ता है ।

★ जिसे लोग सांसारिक व्यवहार और वेद दोनों में सभी प्रकार से नीचा मानते हैं, और जिसकी छाया छू जाने से भी स्नान करना आवश्यक समझते हैं ।

तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता ।
मिलत पुलक परिपूरित गाता ॥

⊗ भरि अङ्क=छाती से चिपटाकर, गाता=शरीर ।

★ भरत जी उसी निषाद को पूरी प्रसन्नता के साथ हृदय से चिपटाकर मिल रहे हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* भरत जी ने न तो छुआछूत को महत्व दिया और न स्तर की भिन्नता को ।

करमनास जल सुरसरि परई ।
तेहि को कहहु सीस नहिं धरई ।।

⊗ करमनास=कर्मनाशा नदी, सुरसरि=गंगा, परई=मिल जाती है, कहहु=कहिए, धरई=धारण करता है ।

★ **कर्मनासा नदी का जल गंगाजी के अमृत सदृश जल में पड़ जाने पर उसको कौन ऐसा होगा जो सिर पर धारण नहीं करेगा ।**

* जो व्यक्ति अपना व्यक्तित्व प्रभु के समर्पित कर देता है वह प्रभुमय हो जाने से सबका सम्मान पाता है ।

उलटा नाम जपत जग जाना ।
बालमीकि भए ब्रह्म समाना ।।

★ **यह सम्पूर्ण संसार जानता है कि राम के नाम को (मरा-मरा) उल्टा जपते-जपते वाल्मीकिजी ब्रह्म के समान हो गये ।**

* महत्व कर्मकाण्ड का नहीं है, गहन भावना का है ।

सृंगवेरपुर भरत दीख जब ।
भे सनेह सब अंग सिथिल तब ।।

★ **जब भरत जी ने शृंगवेरपुर को देखा, तो प्रेम वश उनके सभी अंग-प्रत्यंग शिथिल हो गये ।**

* निषादराज ने शृंगवेरपुर की व्यवस्था भगवान राम के निर्देशानुकूल बनाली थी । उसने भरत को वह दिखायी । गुह की भक्ति और श्रीराम का स्नेह स्मरण कर भरत जी मग्न हो गये ।

साहत दिएँ निषादहि लागू ।
जनु तन धरें विनय अनुरागू ।।

⊗ लागू=कन्धे का सहारा, जनु=जिस प्रकार, अनुरागू=प्रेम ।

★ **जब भरत जी निषाद के कन्धे पर हाथ रखकर चल रहे थे, उस समय वे ऐसी शोभा को प्राप्त थे मानो साक्षात् विनय और प्रेम शरीर धारण कर चल रहे हों ।**

* निषादराज विनय की तथा भरत जी प्रेम की मूर्ति थे ।

एहि बिधि भरत सेन सब संगा ।
दीखि जाइ जग पावनि गंगा ।।

⊗ एहि विधि=इस प्रकार, संगा=साथ, जग=संसार, पावनि=पवित्र ।

★ **इस प्रकार सम्पूर्ण सेना के साथ भरत जी ने संसार को पवित्र करने वाली गंगाजी के दर्शन किए ।**

प्रात क्रिया करि मातु पद,
बंदि गुरुहि सिर नाई ।
आगे किये निषाद गन,
दीन्हेउ कटक चलाई ।।

⊗ बंदि=प्रणाम करके, कटक=समूह ।

★ **गंगा किनारे प्रात:काल की क्रिया करके माताजी की चरण वन्दना तथा गुरुजी को सिर नवाकर भरजी ने निषाद गणों को रास्ता दिखाने के लिये आगे कर लिया और सारे समूह को रवाना कर दिया ।**

गबने भरत पयादेहि पाए ।
कोतल संग जाहि डुरियाए ।।

⊗ गवने=चले, पयादेहि=पैदल, कोतल=घोड़े, डुरियाए=रस्सी में बांध कर चलाना ।

★ **भरत जी पैदल ही चले । सेवक लोग घोड़ों की डोरी पकड़े हुए उनके साथ चले जा रहे हैं ।**

* भरत जी ने सबको आगे कर दिया ताकि पैदल देखकर कहीं सब लोग पैदल न चल दें ।

कहहिं सुसेवक बारहिं बारा ।
होइअ नाथ अश्व असवारा ।।

⊗ सुसेवक=अच्छे सेवक, बारहिं बारा=बार-बार, अश्व=घोड़ा, असवारा=सवार हो लीजिए ।

★ **भरतजी से उनके साथ रहने वाले सेवक कह रहे हैं कि हे नाथ ! घोड़े पर बैठ जाइए, पैदल मत चलिए ।**

* सच्चे सेवक स्वामी की सुविधा का ध्यान बिना किसी के कहे ही रखते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राम पयादेहि पायँ सिधाए ।
हम कहँ रथ गज बाजि बनाए ।।

⊗ सिधाए (सिधारे)=गये, हम कहँ=हमारे लिये, गज=हाथी ।

★ **भगवान श्रीराम तो पैदल ही वन को गए हैं और हमारे लिए रथ, हाथी, घोड़े बनाये हैं ।**

सिर भर जाउँ उचित अस मोरा ।
सबतें सेवक धर्म कठोरा ।।

⊗ सिरभर=सिर के बल, मोरा=मेरे लिए, सबतें=सबसे ।

★ **मेरे लिए तो उचित यही है कि मैं सिर के बल जाऊँ, क्योंकि श्रीरामजी का सेवक हूँ और सेवक का धर्म अति कठिन है ।**

* सेवक को स्वामी की अपेक्षा कम सुविधाओं से काम चलाना चाहिये । अन्यथा वह सेवा का ढोंग भर कर सकेगा । आज के समाज सेवियों को समाज के औसत स्तर से कम सुविधायें लेकर कार्य करने का अभ्यास करना चाहिए ।

भरत तीसरे पहर कहँ,
कीन्ह प्रबेसु प्रयाग ।
कहत राम सिय राम सिय,
उमगि उमगि अनुराग ।।

⊗ तीसरे पहर =दोपहर बाद, कीन्ह=किया प्रबेसु=प्रवेश, उमगि-उमगि=उमंग भर-भर कर, अनुराग=प्रेम ।

★ **भरत जी ने उमंगों से परिपूर्ण होकर सीता-राम सीता-राम कहते हुए प्रयाग में तीसरे पहर में प्रवेश किया ।**

झलका झलकत पायन्ह कैसे ।
पंकज कोस ओस कन जैसे ।।

⊗ झलका=छाले, झलकत=चमकते हैं, पायन्ह=चरणों में, कोस=कली पर, कन (कण)=बूँदें ।

★ **पैदल चलने के कारण उनके चरणों पर जो छाले पड़े हैं वे ऐसे चमक रहे हैं मानो कमल की कली पर ओस की बूंदे चमकती हों ।**

* भरत का सारा ध्यान श्रीरामजी के चरणों में है, इसलिये शारीरिक पीड़ाओं का ध्यान ही नहीं रहता । महापुरुष जीवन की असुविधाओं की उपेक्षा इसी प्रकार लक्ष्य में तन्मय हो जाने के कारण कर लेते हैं ।

भरत पयादेहिं आए आजू ।
भयउ दुखित सुनि सकल समाजू ।।

⊗ पयादेहि=पैदल ही, आजू=आज, भयउ=हुए, समाजू=समाज ।

★ **भरत जी आज पैदल ही आये हैं, यह सुनकर सारा समाज दुखित हुआ ।**

* भरत ने कष्ट साधना द्वारा सारे समाज की भावनायें जीत लीं ।

देखत स्यामल धबल हलोरे ।
पुलकि सरीर भरत कर जोरे ।।

⊗ स्यामल=श्याम, धबल=शुक्ल, हलोरे=लहरें सरीर=शरीर, पुलकि=प्रसन्न चित होकर, कर=हाथ ।

★ **यमुना और गंगा की श्याम एवं श्वेत लहरों को देख पुलकित शरीर से भरत जी ने हाथ जोड़ कर कहा—**

* श्रीराम (श्याम) और श्री लक्ष्मण (गौर) गंगा यमुना की लहरों की तरह एकाकार होकर कार्य कर रहे हैं यह स्मरण करके भरत भाव-विभोर हो गये ।

सकल काम प्रद तीरथराऊ ।
वेद बिदित जग प्रकट प्रभाऊ ।।

⊗ सकल=सम्पूर्ण, काम प्रद=कामना पूर्ण करने वाले, तीरथ राऊ =तीर्थराज, प्रभाऊ=प्रभाव ।

★ **वे कहने लगे हे तीर्थराज ! आप समस्त कामनाओं को पूरी करने वाले हैं । आपका प्रभाव वेदों में वर्णित है और संसार में भी प्रकट है ।**

* भरत भाव विभोर हैं तथा तीर्थराज को प्रत्यक्ष पुरुष की तरह सम्बोधित करके बोल पड़ते हैं ।

मागउँ भीख त्यागि निज धरमू ।
आरत काह न करइ कुकरमू ।।

⊗ आरत=आर्त, काह न करइ=क्या नहीं करता ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ भरत जी कहते हैं कि मैं अपने क्षत्रिय धर्म को छोड़कर भिक्षा मांगता हूँ, क्योंकि आरत मनुष्य कौन सा कुकर्म नहीं करता ।

* परमार्थ भावना से आध्यात्मिक अनुदान मांगना बुरा नहीं है, भरत ने मांगा भी वही । किन्तु मांगने की सहज परिपाटी अच्छी नहीं इसीलिये वे अपने को बुरा कहते हुए ही मांगते हैं ।

अरथ न धरम न काम रुचि,
गति न चहउँ निरवान ।
जनम जनम रति रामपद,
यह बरदान न आन ।।

⊗ अरथ=अर्थ, धरम=धर्म, चहउँ=चाहता हूँ, निरबान= निर्वाण, जनम-जनम=जन्म-जन्म, रति=प्रेम, बरदान= वरदान ।

★ भरतजी कहते हैं कि मुझे न धर्म में रुचि है, न अर्थ की, काम की और न मैं मोक्ष ही चाहता हूँ । जन्म-जन्म तक मेरा श्रीरामजी के चरणों में प्रेम भाव हो, यही वरदान मांगता हूँ । इसके अलावा और कुछ नहीं चाहता ।

* भरत की नि:स्वार्थ प्रेम भावना का यह प्रत्यक्ष उदाहरण है । बड़े से बड़े आकर्षण को भी वे अपने प्रेम के सामने छोटा सिद्ध कर देते हैं । आगे तो उनकी प्रखरता और भी उभरती है ।

जानहुँ राम कुटिल करि मोही ।
लोग कहउ गुर साहिब द्रोही ।।

⊗ जानहु=जान, कुटिल=बुरा, मोही=मुझे, कहउ=कहें, साहिब = स्वामी ।

★ रामचन्द्रजी भले ही मुझे कुटिल समझें तथा लोग भले ही मुझे गुरु और स्वामी का द्रोही कहें ।

सीता राम चरन रति मोरें ।
अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें ।।

⊗ रति =प्रेम, अनुदिन=प्रतिदिन, अनुग्रह=कृपा ।

★ भरत जी कहते हैं कि हे तीर्थराज आपकी कृपा से मेरा प्रेम सीता एवं राम के चरणों में प्रतिदिन बढ़ता ही रहे ।

* सच्चा प्रेम कोई प्रतिदान नहीं चाहता । भरत अपने प्रेम भाव को बराबर बढ़ाना चाहते हैं, भले ही श्रीरामजी भी सारे संसार सहित उन्हें बुरा मान लें ! लोग हमें बुरा कहते हैं, इसलिये भला बने रहने से क्या लाभ ? ऐसा सोचना भूल है ।

जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ ।
जाचत जल पवि पाहन डारउ ।।

⊗ जलदु (जलद)=बादल, सुरति=याद, जाचत (याचत)= माँगने पर, पाहन=पत्थर, डारऊ=गिरावें ।

★ बादल चाहे जनम भर चातक की सुध भुला दें, और जल माँगने पर वह चाहे वज्र और पत्थर ही गिरावें ।

* यहाँ आदर्श प्रेम के एक पक्षीय निर्वाह के उदाहरण तुलसी दास जी प्रस्तुत कर रहे हैं ।

चातक रटनि घटें घट जाई ।
बढ़ें प्रेम सब भांति भलाई ।।

★ किन्तु चातक की रटन शरीर शिथिल हो जाने से भले ही घट जाये पर अंदर का प्रेम बढ़ने से सब प्रकार लाभ ही है ।

* सच्चा प्रेमी दूसरे के द्वारा विपरीत व्यवहार होने पर भी अपनी प्रेम साधना यथावत् रखता है ।

कनकहिं बान चढ़इ जिमि दाहें ।
तिमि प्रियतम पद नेम निबाहें ।।

⊗ कनकहिं=सोने पर, बान=आब जिमि=जैसे, दाहें=तपाने से ।

★ जिस प्रकार तपाने से सोने पर चमक आ जाती है, वैसे ही प्रियतम के चरणों में प्रेम का बन्धन निवाहने से प्रेमी एवं सेवक का गौरव बढ़ जाता है ।

* अपनी साधना कष्ट उठाकर भी चलाते रहने से साधक की आव तपे हुए सोने जैसी हो जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भरत बचन सुनि माझ त्रिबेनी ।
भइ मृदु बानि सुमंगल देनी ।।

⊗ माझ=मध्य में, त्रिवेनी=त्रिवेणी, भइ=हुई ।

★ **भरत जी के वचन सुनकर त्रिवेणी में से सुन्दर मंगल देने वाली कोमल वाणी हुई ।**

तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू ।
राम चरन अनुराग अगाधू ।।

⊗ अनुराग=प्रेम, अगाधू=अत्यधिक ।

★ **हे तात ! भरत तुम सब प्रकार से सज्जन हो और श्रीराम जी के चरणों में तुम्हारा अथाह प्रेम है ।**

* भरत की उच्चतम भावना से क्षेत्र की सूक्ष्म शक्तियाँ भी प्रभावित हुईं तथा उनकी सराहना करने लगीं ।

बादि गलानि करहु मन माहीं ।
तुम्ह सम रामहि कोउ प्रिय नाहीं ।।

⊗ बादि=व्यर्थ में, गलानि=ग्लानि, करहुँ=करते हो, सम=समान ।

★ **हे भरत ! तुम व्यर्थ में ही ग्लानि कर रहे हो तुम्हारे समान राम को अन्य कोई भी प्रिय नहीं ।**

* भरत जैसे निस्पृह सेवक भगवान को सर्वाधिक प्रिय होते हैं ।

सुनत राम गुन ग्राम सुहाए ।
भरद्वाज मुनिवर पहिं आए ।।

⊗ गुन-ग्राम=गुण-समूह, पहि=पास ।

★ **श्रीरामचन्द्र जी के गुण-समूहों को सुनते हुए वे मुनि श्रेष्ठ भरद्वाज जी के पास आये ।**

* मनुष्य महान् पुरुषों के गुणों को सत्संग द्वारा सुनता रहे , तो एक दिन उसके जीवन पर उनके किसी श्रेष्ठ गुण का प्रभाव आ जाता है जिससे जीवन सुधर जाता है ।

दंड प्रनाम करत मुनि देखे ।
मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ।।

⊗ मूरतिमंत=मूर्तिमान, लेखे=समझा ।

★ **भरद्वाज मुनि ने भरत जी को दण्डवत्-प्रणाम करते देखा और उन्हें अपना मूर्तिमान सौभाग्य समझा ।**

* भरत जैसे मन, वचन और कर्म से श्रेष्ठ कर्तव्य परायण भक्त का सान्निध्य भाग्य से ही मिलता है ।

सुनहु भरत हम सब सुधि पाई ।
बिधि करतब पर किछु न बसाई ।।

⊗ सुधि=समाचार, बिधि=विधाता, करतब=कर्तव्य, बसाई=वश ।

★ **ऋषि बोले- हे भरत ! सुनो, हम सब समाचार पा चुके हैं । विधाता के कर्तव्य पर कुछ वश नहीं चलता ।**

* समाज को मार्ग दर्शन देने के लिये ऋषि जंगल में रहते हुए भी महत्वपूर्ण घटनाओं की पूरी जानकरी रखते थे । (२) विधि कर्तव्य से उनका तात्पर्य ईश्वरीय योजना से है जो सबके कल्याण के लिये होती है । उसमें कुछ व्यक्तियों को कष्ट भी उठाना पड़े तो उसे सहर्ष उठाना चाहिये ।

सुनहु भरत रघुबर मन माहीं ।
पेम पात्र तुम्ह सम कोउ नाहीं ।।

⊗ माही=में, पेम=प्रेम, पात्र=योग्य, सम=समान ।

★ **हे भरत ! सुनो श्रीरामचन्द्र जी के मन में तुम्हारे समान प्रेमपात्र दूसरा कोई नहीं है ।**

* भरत की ग्लानि दूर हो इसलिए ऋषि उनके प्रति श्रीराम के अनुपम स्नेह की चर्चा करने लगे ।

लखन राम सीतहि अति प्रीती ।
निसि सब तुम्हहि सराहत बीती ।।

⊗ सराहत=प्रशंसा करते ।

★ **लक्ष्मणजी, श्रीरामजी और सीता जी—तीनों की सारी रात उस दिन अत्यन्त प्रेम के साथ तुम्हारी सराहना करते ही बीती ।**

* भरत की निष्कपटता का सभी को विश्वास था ।

तुम्ह कहँ भरत कलंक यह,
हम सब कहँ उपदेसु ।
राम भगत रस सिद्धि हित,
भा यहु समउ गनेसु ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ गनेसु (गणेश)=शुभ, रस सिद्धिहित=भक्ति में रस प्राप्ति का मर्म समझने के लिये ।

★ हे भरत ! तुम तो इसे अपने लिये कलंक समझ रहे हो, किन्तु वस्तुत: यह हम सबके लिये उपदेश है । श्री राम भक्ति रूपी रस की सिद्धि के लिये यह समय बड़ा शुभ हुआ है ।

* ऋषि का तात्पर्य है कि यदि यह प्रसंग न खड़ा होता तो भरत जी के श्रेष्ठतम प्रेम का स्वरूप लोगों के सामने नहीं आ सकता था । (२) घटनाओं से सीख लेना जीवन साधना का महत्वपूर्ण अंग है ।

सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं ।
उदासीन तापस बन रहहीं ।।

⊗ उदासीन=पक्षपात रहित, तापस=तपस्वी ।

★ हे भरत ! सुनो, हम झूठ नहीं कहते । हम उदासीन हैं (किसी का पक्ष नहीं करते) तपस्वी हैं (किसी की मुंह देखी नहीं कहते) और वन में रहते हैं, (किसी से कुछ प्रयोजन नहीं रखते) ।

* उदासीन और तपस्वी (साधु पुरुष) किसी का पक्ष लेकर बात नहीं करते हैं । सदा निष्पक्षता पूर्वक न्याय सम्मत बात का समर्थन करते हैं ।

सब साधन कर सुफल सुहावा ।
लखन राम सिय दरसनु पावा ।।

★ सब साधनों का उत्तम फल हमें लक्ष्मणजी, श्रीरामजी और श्री सीताजी के दर्शन के रूप में प्राप्त हुआ ।

* विविध साधनों का श्रेष्ठफल सांसारिक कामनाओं की पूर्ति नही, ईश्वर साक्षात्कार है ।

तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा ।
सहित प्रयाग सुभाग हमारा ।।

★ उस महान् फल का परमफल यह तुम्हारा दर्शन है । प्रयागराज समेत हमारा यह सौभाग्य है ।

* इससे प्रकट होता है कि ऋषि की दृष्टि में भरत जैसे नैष्टिक साधक का सान्निध्य कितना मूल्यवान है, क्योंकि उससे सही राह का बोध भी होता है तथा उस पर चलने की प्रेरणा भी मिलती है ।

भरत धन्य तुम्ह जसु जग जयऊ ।
कहि अस पेम मगन मुनि भयऊ ।।

⊗ जयऊ=जीत लिया, पेम मगन=प्रेममग्न ।

★ हे भरत ! तुम धन्य हो, तुमने अपने यश से जगत को जीत लिया है । ऐसा कहकर मुनि प्रेम मग्न हो गये ।

* (१) यश मांगा नहीं जाता, श्रेष्ठ आचरण वाला व्यक्ति यश पर विजय पा लेता है । अर्थात् उसका अधिकारी हो जाता है । (२) सत् पुरुष दूसरे की सच्ची प्रगति देख हर्ष से भर जाते हैं ।

राम बिरह व्याकुल भरत,
सानुज सहित समाज ।
पहुनाई करि हरहु श्रम,
कहा मुदित मुनिराज ।।

⊗ सानुज=भाई सहित, पहुनाई=अतिथि सत्कार, हरहु श्रम=थकावट दूर करो।

★ मुनिराज ने प्रसन्न होकर आश्रमवासियों से कहा— छोटे भाई शत्रुघ्न और समाज सहित भरत जी, श्रीराम जी के विरह में व्याकुल है, (इनका अतिथिवत् सत्कार) करके इनके श्रम को दूर करो ।

* सत् पथ पर चलने वालों को प्रोत्साहन देना, उनकी थकावट मिटाना सत् पुरुषों का धर्म है ।

सब समाजु सजि सिधि पल माहीं ।
जे सुख सुरपुर सपनेहुँ नाहीं ।।

⊗ समाज=सामग्री, सजि=सजा दिये, पलमाही=क्षण मात्र में ।

★ जो सुख के सामान स्वर्ग में भी नहीं हैं, ऐसे सब सामान सिद्धियों ने क्षणमात्र में सजा दिये ।

* सिद्ध अर्थात् कुशल व्यक्ति को व्यवस्था करते देर नहीं लगती ।

मुनि प्रभाब जब भरत बिलोका ।
सब लघु लगे लोकपति लोका ।।

⊗ प्रभाब=प्रभाव, बिलोका=देखा, लोकपति =लोकपाल, लोका=लोक ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ जब भरतजी ने मुनि के प्रभाव को देखा, तो उसके सामने उन्हें (इन्द्र, वरुण, कुबेर, यम आदि) सभी लोकपालों के लोक तुच्छ जान पड़े ।

* ऋषि लोग सर्व समर्थ होते थे पर स्वयं सादगी से रहते थे तथा सभी विभूतियों को जन हित के लिए सुरक्षित रखते थे । ऐसे जीवन बिताने वाले समर्थ व्यक्ति ऋषि तुल्य कहे जा सकते हैं ।

संपति चकई भरतु चक,
मुनि आयसु खेलवार ।
तेहि निसि आश्रम पिंजरां,
राखे भा भिनुसार ।।

⊗ संपति=संपत्ति (भोग विलास की सामग्री), चकई=चकवी, चक्र=चकवा, आयसु=आज्ञा, खेलवार=खेल है, भिनुसार=सबेरा ।

★ भोग-विलास की सामिग्री चकवी है और भरतजी चकवा हैं और मुनि की आज्ञा खेल है, जिसने उस रात को आश्रमरूपी पिंजड़े में दोनों को बन्द कर रक्खा और ऐसे ही सवेरा हो गया ।

* यदि खेल-खेल में चकवा-चकवी को रात भर एक पिंजड़े में बन्द रखा जाये तो भी वे परस्पर मिलते नहीं क्योंकि उनका सारा ध्यान चन्द्रमा पर रहता है । भरत सारी सुख सामग्री के बीच रहकर भी इसके प्रति इसी तरह उदासीन बने रहे ।

कीन्ह निमज्जन तीरथराजा ।
नाइ मुनिहि सिर सहित समाजा ।।

⊗ कीन्ह=किया, निमज्जन=स्नान, तीरथ राजा=त्रिवेनी, नाई=नम्रता पूर्वक, मुनिहि= मुनि के लिए ।

★ भरत जी ने सबेरे तीर्थराज त्रिवेणी में स्नान किया और समाज के सहित मुनि जी को नम्रता से सिर झुकाकर प्रणाम किया ।

* सहज शिष्टाचार भरत ने उस स्थिति में भी भुलाया नहीं ।

पथ गति कुसल साथ सब लीन्हें ।
चले चित्रकूटहिं चित दीन्हें ।।

⊗ पथ=रास्ता, गति=चाल, कुसल=प्रवीण ।

★ रास्ते की पहचान रखने वालों को साथ लेकर सबके साथ भरत जी चित्रकूट में मन लगाये हुए चले ।

राम सखा कर दीन्हें लागू ।
चलत देह धरि जनु अनुरागू ।।

⊗ राम सखा=निषादराज गुह, जनु=जिस प्रकार ।

★ भरत जी राम सखा गुह के हाथ में हाथ रख कर इस प्रकार चल रहे हैं मानो साक्षात् प्रेम ही शरीर धारण किये चल रहा हो ।

* भरत श्रेष्ठ वंश के सम्राट के पुत्र तथा गुह नीच समझी जाने वाली जाति का व्यक्ति, उसके साथ वे हाथ में हाथ मिला कर चले। इससे यह सिद्ध करते हैं कि सज्जनों को मनुष्य मात्र के साथ समान प्रेम करना चाहिए ।

देखि प्रभाव सुरेसहि सोचू ।
जगु भल भलेहि पोच कहुँ पोचू ।।

* प्रभाउ=प्रभाव, सुरेसहि=इन्द्र को, सोचू=चिन्ता, पोचू= बुरा ।

★ भरत के प्रेम का प्रभाव देखकर इन्द्रदेव विचार मग्न हो गये, कि कहीं ऐसा न हो जाय कि प्रेम वश रामजी अयोध्या लौट जायँ और बना बनाया काम बिगड़ जाय । संसार भले के लिए भला है और बुरे के लिए बुरा है ।

* अपने स्वार्थ में विघ्न आने की शंका के कारण मनुष्य अच्छी बात देखकर भी दुःखी होने लगता है ।

गुर सन कहेहु करिअ प्रभु सोई ।
रामहि भरतहि भेंट न होई ।।

★ देवराज इन्द्रदेव अपने गुरु बृहस्पति से कहते हैं कि आप वही उपाय कीजिए कि राम से भरत न मिल पायें ।

* इन्द्र यह कहते हैं कि श्रीराम द्वारा असुरों के विनाश के काम में रुकावट न आने पावे तो बात समझदारी की होती, पर अपने मन का ओछापन भाई भाई को न मिलने देने की सलाह के रूप में प्रकट हो गया ।

बचन सुनत सुरगुरु मुसकाने ।
सहसनयन बिन लोचन जाने ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ सुर गुरु=बृहस्पति, मुसकाने=मुस्कराये, सहस नयन=हजारों आँखों वाले-इन्द्र ।

★ **इन्द्रदेव के वचनों को सुनकर देव गुरु बृहस्पति जी मुस्कराये और उन्होंने हजार नेत्रों वाले इन्द्र को नेत्रों से हीन समझा ।**

* इन्द्र राम और भरत के प्रेम की उपयोगिता न देख सके, इसलिये देवगुरु ने उन्हें अंधा माना । जिसके विवेक चक्षु नहीं खुले वह अन्धा ही है चाहे हजार आंखों वाला ही क्यों न हो ।

मायापति सेवक सन माया ।
करइत उलटि परइ सुरराया ।।

⊗ मायापति=भगवान, सन=साथ, उलटि=उलटकर

★ **वे कहने लगे— मायापति रामचन्द्र जी के सेवक के साथ जो कोई माया करता है वह माया उलट कर स्वयं उस करने वाले पर ही आ पड़ती है ।**

* भगवान का काम करने वाले के मार्ग में रुकावट डालने वाले का स्वत: ही अहित होने लगता है ।

तब किछु कीन्ह राम रुख जानी ।
अब कुचालि करि होइहि हानी ।।

★ **उस समय (मन्थरा और केकैयी की बुद्धि बदलने के समय) रामचन्द्र जी का रुख जानकर कुछ किया था, किन्तु इस समय उनके साथ छल करने से हानि ही होगी लाभ नहीं ।**

* अपनी बुद्धि, चतुराई या शक्ति भगवान की इच्छा के अनुरूप चलने से सफल होती देखकर व्यक्ति जब उसका उपयोग अपनी मनमानी करने में करने लगता है तो दु:ख भोगता है ।

सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ ।
निज अपराध रिसाहिं न काऊ ।।

⊗ सुभाऊ=स्वभाव, निज=अपना, रिसाहिं=रुष्ट ।

★ **देवराज इन्द्र ! तुम रामचन्द्र जी के स्वभाव को सुनो, वे अपने प्रति किए गये अपराध से कभी भी रुष्ट नहीं होते हैं ।**

जो अपराधु भगत कर करई ।
राम रोष पावक सो जरई ।।

⊗ करई=करता है, रोष=क्रोध, पावक=अग्नि, सो=वह, जरई=जल जाता है ।

★ **किन्तु जो श्रीराम के भक्त का अपमान करता है वह उनकी क्रोधाग्नि में जल जाता है, अर्थात् नष्ट हो जाता है ।**

* भगवान अथवा सन्त पुरुष अपना अपमान सहन कर लेते हैं किन्तु उनके कहे अनुसार जनहित के लिये कार्य करने वालों के अपमान को सहन नहीं करते हैं ।

लोकहुँ वेद बिदित इतिहासा ।
यह महिमा जानहिं दुरबासा ।।

⊗ लोकहुँ=संसार में, बिदित=प्रसिद्ध ।

★ **संसार में तथा शास्त्रों में भी भगवान की इस मर्यादा के प्रमाण प्रसिद्ध हैं । इस महिमा को दुर्वासा ऋषि जी जानते हैं ।**

* एक बार दुर्वासा ऋषि ने अहंकार में आकर भक्त अम्बरीष का अहित करना चाहा था तो भगवान ने उन पर सुदर्शन चक्र छोड़ दिया और जब ऋषि ने अम्बरीष से क्षमा मांगी तभी उन्हें मुक्ति मिली ।

भरत सरिस को राम सनेही ।
जगु जप राम रामु जप जेही ।।

⊗ सरिस=समान, सनेही=प्रेमी, जेहि=जिनको ।

★ **सम्पूर्ण जगत श्रीराम जी को जपता है, वे श्रीराम जी भरत जी को जपते हैं । अत: श्रीराम जी को भरत के समान प्यारा और कौन होगा ?**

* भरत की तरह कर्तव्य परायण व्यक्ति का स्मरण भगवान स्वयं किया करते हैं ।

मनहुँ न आनिअ अमरपति,
रघुबर भगत अकाजु ।
अजस लोक परलोक दुख,
दिन दिन सोक समाजु ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ अमरपति=देवराज इन्द्र, अकाजु=अहित, अजस=अपयश ।

★ **बृहस्पति जी देवराज इन्द्र से कहते हैं कि रघुकुल श्रेष्ठ रामचन्द्र जी के भक्त का काम बिगाड़ने की बात मन में भी न लाइये । ऐसा करने से संसार में अपयश और परलोक में कष्ट होगा और दुःख दिनों दिन बढ़ता ही जायेगा ।**

* सत्कार्य में विघ्न डालने का साहस इन्द्र की तरह समर्थ और सम्पन्न को भी नहीं करना चाहिये ।

जद्यपि सम नहिं राग न रोषू ।
गहहिं न पाप पुन्न गुन दोषू ॥

⊗ जद्यपि =यद्यपि, गहहिं = ग्रहण करते हैं, पुन्न=पुण्य ।

★ **यद्यपि भगवान के मन में न राग है, न रोष है और न वे किसी का गुण दोष ही ग्रहण करते हैं ।**

* भगवान की उपासना करने वालों में भी यह विशेषतायें क्रमशः बढ़नी चाहिये ।

करम प्रधान विश्व करि राखा ।
जो जस करइ सो तस फल चाखा ॥

★ **उन्होंने विश्व को कर्म प्रधान बना रखा है, जो जैसा करता है वैसा ही फल पाता है ।**

* कर्म प्रधान से तात्पर्य यह है कि भाग्य आदि भी है तो, किन्तु वह कर्म की ही प्रतिक्रियायें हैं । संसार की व्यवस्था में कर्म को पहला स्थान प्राप्त है ।

अगुन अलेप अमान एकरस ।
रामु सगुन भए भगत प्रेम बस ॥

⊗ सगुन=गुण रहित, अलेप=निर्लेप, अमान=मान रहित, एकरस = सदा एक जैसे रहने वाले ।

★ **गुण हीन, निर्लेप, मान रहित, सदा एक से रहने वाले चेतना रूप प्रभु भक्त के प्रेम वश सगुण-साकार रूप धारण कर लेते हैं ।**

* सच्ची प्रेम भावना का प्रभु इतना सम्मान करते हैं कि उसके कारण निराकार से साकार हो जाते हैं ।

राम सदा सेवक रुचि राखी ।
बेद पुरान साधु सुर साखी ॥

⊗ रुचि=इच्छा, राखी=रखते हैं, पुरान=पुराण, साधु=सज्जन, सुर=देवता, साखी=साक्षी।

★ **श्रीराम जी सदा अपने भक्तों की रुचि रखते आये हैं । वेद, पुराण, साधु, देवता ये सब इसके साक्षी हैं ।**

* सेवक की कोई अपनी स्वार्थपूर्ण इच्छा नहीं रह जाती । वह केवल जनहित की इच्छायें करता है, इसलिये भगवान उन्हें पूरा करते हैं ।

अस जियँ जानि तजहु कुटिलाई ।
करहुँ भरत पद प्रीति सुहाई ॥

⊗ अस=ऐसा, जियं=हृदय में, जानि=जानकर, तजहु=छोड़ दो, कुटिलाई=कुटिलता, सुहाई=सुन्दर ।

★ **इस प्रकार हृदय में जान कर कुटिलता छोड़ दो और भरत जी के चरणों में सुन्दर प्रीति करो ।**

* देवगुरु, इन्द्र को समझाते हैं कि भक्त सदा जनहित की ही बात सोचते हैं, भरतजी भक्त श्रेष्ठ है, इसलिये वे आप सबका ही हित करेंगे, ऐसा विश्वास रखों, शंका छोड़ो तथा प्रेम का आनन्द लो ।

सुनि सुरबर सुरगुर बर बानी ।
भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥

⊗ सुनि=सुनकर, सुर-गुर=बृहस्पति, बर=श्रेष्ठ, बानी=वाणी, प्रमोदु=आनन्द, ग्लानि=दुःख

★ **श्रेष्ठ गुरु बृहस्पति जी की श्रेष्ठ वाणी सुनकर इन्द्र के मन में बड़ा ही आनन्द हुआ ।**

* मनुष्य को सच्चा आनन्द तब आता है, जब गुरु, हितैषी मार्गदर्शक के कहे अनुसार जीवन में काम करने लग जाते हैं ।

एहि बिधि भरत चले मग जाहीं ।
दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥

⊗ मग=रास्ता, सिहाही=दूसरों की अच्छाई देखकर प्रसन्न होना ।

★ **भरत जी मार्ग में इस प्रकार चल रहे हैं कि उनकी प्रेममयी दशा को देखकर मुनि एवं सिद्ध लोग भी सिहाते हैं ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जीवन में जब प्रेम ही प्रेम छा जाता है तब उसका आनन्द प्रेम करने वाले को ही नहीं मिलता बल्कि उसके आस-पास के लोग भी उस प्रेम रस में डूब जाते हैं ।

चलत पयादे खात फल,
पिता दीन्ह तज राजु ।
जात मनावन रघुबरहिं,
भरत सरिस को आजु ।।

⊗ पयादें=पैदल, तजि=छोड़कर, जात=जाते हैं, रघुबरहिं=राम को, सरिस=समान, को=कौन, आजु=आज ।

★ श्री भरत जी पिता के द्वारा दिये हुए राज्य को छोड़ कर पैदल एवं फलाहार करते हुए राम जी को मनाने के लिए जा रहे हैं । इनके समान संसार में आज कौन है ?

* दुनिया में लोग स्वयं वैभव पाने के लिये अनीति भी कर बैठते हैं, पर भरत नीति के अनुसार प्राप्त वैभव को भी बड़े भाई को सौंपने के लिये तपस्वी और सात्विक भाव से जाते हैं । यह चरित्र अद्वितीय है ।

सुनत सुमंगल बैन,
मन प्रमोद तन पुलक भर ।
सरद सरोरुह नैन,
तुलसी भरे सनेह रस ।।

⊗ बैन=वचन, पुलक=प्रसन्न, सरोरुह=कमल, सनेह=स्नेह ।

★ भरत के चित्रकूट आगमन का समाचार सुनकर श्रीराम के मन में बड़ी प्रसन्नता हुई । शरीर में पुलकावली छा गई और शरद ऋतु के कमल के समान नेत्र प्रेम के अश्रु से भर गये ।

* सच्चे प्रेम का प्रभाव दोनों ओर होता है । भरत राम का स्मरण करके जिस प्रकार भाव विभोर हो जाते हैं, भरत का स्मरण करके भगवान राम की भी वही अवस्था होती है ।

बहुरि सोचबस भे सियरवनू ।
कारन कवन भरत आगवनू ।।

⊗ बहुरि=फिर, सियरवनू=सीतापति श्रीरामजी, कारन=कारण, कवन = क्या, आगवनू=आना ।

★ सीता पति श्रीराम जी फिर सोचवश हो गये कि भरत जी के आने का क्या कारण है ?

* भरत आ रहे हैं इससे तो प्रसन्नता हुई, किन्तु उनके आने का उद्देश्य श्रीराम को लौटा ले जाने के अतिरिक्त और कुछ हो नहीं सकता । फिर राक्षसों का संहार कैसे हो ? भगवान यह सोचने लगे ।

एक आइ अस कहा बहोरी ।
सेन संग चतुरंग न थोरी ।।

⊗ बहोरी=फिर, सेन=सेना, चतुरंग=चतुरंगिणी, थोरी=कम ।

★ तब तक एक भील ने आकर ऐसा कहा कि उनके साथ में बड़ी भारी चतुरंगिणी सेना भी है ।

लखन लखेउ प्रभु हृदयँ खभारूँ ।
कहत समय सम नीति बिचारू ।।

⊗ लखन=लक्ष्मण, लखेउ=देखा, खभारुँ=चिन्ता, समय सम=समयानुसार ।

★ लक्ष्मण जी ने देखा कि प्रभु के हृदय में चिन्ता है तो वे समय के अनुसार अपना नीतियुक्त विचार कहने लगे ।

* लक्ष्मण ने समझा कि भरत सेना सहित आ रहे हैं यह जानकर भगवान चिंतित हो उठे, अत: उसी स्थिति के अनुरूप वचन कहने लगे ।

विषई जीव पाइ प्रभुताई ।
मूढ़ मोह बस होहि जनाई ।।

⊗ विषई=विषयी, पाइ=पाकर, प्रभुताई=अधिकार, मूढ़=मूर्ख, मोहवस=कामना-वासना में फँसे, जनाई=अपने असली स्वरूप को प्रकट करना ।

★ लक्ष्मण जी बोले— विषयों में फँसा मूर्ख व्यक्ति अधिकार पाकर मोहवश अपने असली स्वरूप को प्रकट कर देता है ।

* ओछी मनोभूमि के व्यक्तियों को श्रेष्ठ अधिकार मिल जाये तो वे उसका श्रेष्ठ उपयोग करने की जगह अपने ओछापन का ही प्रदर्शन करने लगते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जौं जियँ होति न कपट कुचाली ।
केहि सोहाति रथ बाजि गजाली ।।

⊗ कुचाली=बुरी चाल, बाजि=घोड़े, गजाली=हाथियों की पाँति ।

★ **यदि इनके हृदय में कपट एवं कुचाल न होती, अच्छे भाव से आ रहे होते तो रथ, घोड़े और हाथियों की पंक्ति किसे सुहाती ?**

भरतहि दोस देइ को जाएँ ।
जग बौराइ राज पद पाएँ ।।

⊗ दोस=दोष, को=कौन, बौराइ=पागल।

★ **परन्तु भरत को ही व्यर्थ कौन दोष दे? राजपद पाकर सारी दुनिया ही पागल (मतवाली) हो जाती है ।**

* लक्ष्मणजी उत्तेजना वश भरत के स्वभाव को भूल गये और उन्हें भी संसार के कामी मनुष्यों के समान मानने लगे ।

सहसबाहु सुरनाथ त्रिसंकू ।
केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ।।

⊗ सहसबाहु=सहस्रबाहु, सुरनाथ=इन्द्र, कलंकू=कलंक, त्रिसंकू=त्रिशंकु ।

★ **सहस्रबाहु देवराज इन्द्र और राजा त्रिशंकु आदि किसको राजमद ने कलंक नहीं दिया ?**

* यह सभी अपनी पात्रता बढ़ाकर राजा बने, पर राजा बनने पर अहंकार वश अनीति करके हानि में पड़ गये ।

भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ ।
रिपु रिन रंच न राखब काऊ ।।

⊗ रिन=ऋण=कर्ज, रिपु=शत्रु, रंच=थोड़ा-जरा भी, राखब = रखना चाहिए ।

★ **भरत ने अपनी समझ से यह उचित ही उपाय किया है, क्योंकि शत्रु और ऋण को थोड़ा भी बाकी नहीं रखना चाहिए । अर्थात् बिल्कुल समाप्त कर देना चाहिए ।**

* लक्ष्मण जी यह मान कर चल रहे है कि भरत राम को अपने राज्य मे बाधक शत्रु मान रहे है इसलिये सेना सहित चढ़कर उन्हे मार डालना चाहते है ।

एक कीन्ह नहिं भरत भलाई ।
निंदरे राम जानु असहाई ।।

⊗ भलाई=अच्छी बात, निंदरे=निरादर किया, जानि= जानकर, असहाई=असहाय ।

★ **किन्तु भरत ने एक बात अच्छी नहीं की, जो श्रीराम जी को असहाय जानकर उनका निरादर किया ।**

* लक्ष्मण जी यह कहना चाहते हैं, कि भरत को गर्व्यमद हुआ यहाँ तक तो बात मनुष्य स्वभाव के अनुसार क्षम्य है, किन्तु अपने अहंकार का प्रदर्शन वे संसारियों में ही करते हैं । भगवान को अपना वैभव दिखाकर अपना बड़प्पन दिखाने की धृष्टता अवश्य ही दण्डनीय है ।

आजु राम सेवक जसु लेऊँ ।
भरतहि समर सिखावन देऊँ ।।

⊗ लेऊँ=लूँ, भरतहि=भरत को, समर=संग्राम मे, सिखावन =शिक्षा ।

★ **आज मैं श्रीराम (आप) का सेवक होने का यश लूँगा और भरत को संग्राम में शिक्षा दूँगा ।**

* ऐसी स्थिति समझकर लक्ष्मण राम के सेवक के नाते अपना कर्तव्य निर्धारित करते है, पहले स्वयं खुतग उठाने को तैयार होते हैं ।

राम निरादर कर फलु पाई ।
सोवहुँ समर सेज दोऊ भाई ।।

⊗ निरादर=अपमान, समर=युद्ध, सेज=शैय्या ।

★ **लक्ष्मण कहते हैं - श्रीराम के अपमान का फल दोनों भाई (भरत-शत्रुघ्न) पायेंगे । मैं उन्हें युद्ध-शैय्या पर सुला दूंगा, अर्थात् मार डालूँगा ।**

* भक्त श्रेष्ठ लक्ष्मणजी की दृष्टि में अनीति करने के इच्छुक अपने भाई भी वध किये जाने योग्य है ।

जौं सहाय कर सकरु आई ।
तौ मारउँ रन राम दोहाई ।।

⊗ जौं=यदि, सकरु=शंकरजी, आई=आकर, रन=युद्ध, दोहाई=शपथ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **यदि शंकर जी भी भरत की रक्षा के लिए आयें तो भी मैं (लक्ष्मण) उन्हें युद्ध में अवश्य मार डालूँगा ।**

* लक्ष्मण जी का यह दृढ़ विश्वास है कि अनीति करने वाले की रक्षा बड़ी से बड़ी शक्ति भी नहीं कर सकती ।

जगु भय मगन गगन भई बानी ।
लखन बाहुबल बिपुल बखानी ।।

⊗ जगु=संसार, लखन=लक्ष्मण, बाहुबल=शक्ति, बिपुल=अपार ।

★ **लक्ष्मण के रोष से सम्पूर्ण जगत भय में डूब गया । तब लक्ष्मण जी के अपार बाहुबल की प्रशंसा करती हुई आकाशवाणी हुई ।**

* अनीति निवारण के लिय किए गये संकल्प तथा पुरुषार्थ की देवशक्तियाँ भी प्रशंसा करती हैं ।

तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा ।
को कहि सकइ को जाननिहारा ।।

⊗ प्रभाउ=प्रभाव, सकई=सकता, को जाननिहारा=कौन जान सकता है ।

★ **हे लक्ष्मण तुम्हारे प्रताप और प्रभाव को कौन कह सकता है, और कौन जान सकता है ।**

* भगवान के प्रति समर्पित जीवन जीने वाले की शक्ति अपार हो जाती है ।

अनुचित उचित काज किछु होऊ ।
समुझि करिअ भल कह सब कोऊ ।।

⊗ काजु=कार्य, समुझि=समझ कर, भल=अच्छा ।

★ **कोई भी कार्य हो उसे उचित एवं अनुचित खूब सोच समझ कर किया जाय तो सब लोग अच्छा कहते हैं ।**

* देवता लक्ष्मण जी को सावधान करते हैं, कि केवल जोश और बलिदान की भावना ही सब कुछ नहीं, पहले कार्य के औचित्य की परीक्षा भी कर लेनी चाहिए ।

सहसा करि पाछें पछिताहीं ।
कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं ।।

⊗ सहसा=अचानक, करि=करके, बुध=विद्वान, नाही=नहीं है ।

★ **वेदों और विद्वानों का मत है कि जो लोग बिना विचारे जोश में आकर सहसा कार्य कर देते हैं वे पीछे पछताते हैं और वे बुद्धिमान नहीं कहलाते ।**

* देवताओं का संकेत है कि शौर्य और साहस के साथ विवेक भी जुड़ा रहना चाहिये अन्यथा परिणाम दुखदायी होते हैं ।

सुनि सुर बचन लखन सकुचाने ।
राम सीयँ सादर सनमाने ।।

⊗ सुर बचन=देव वाणी, लखन=लक्ष्मण, सकुचाने=संकोच युक्त, सादर=आदर सहित ।

★ **लक्ष्मण देव वाणी सुन कर (अपनी भूल समझ कर) संकोच करने लगे तब राम एवं सीता ने उनका उत्साह बढ़ाने के लिये उनकी भावना का सम्मान किया ।**

* सत्कार्य के लिए उतावला व्यक्ति भूल करने लगे तो उसे रोकना तो चाहिए (देव वाणी की तरह) किन्तु उनकी श्रेष्ठ भावना का आदर (राम एवं सीता की तरह) करके उसका सत्कार्य के प्रति उत्साह बनाये रखना चाहिए ।

कही तात तुम्ह नीति सुहाई ।
सब तें कठिन राजमद भाई ।।

⊗ सुहाई=सुन्दर, सब तें=सबसे, राजमद=राज्य का नशा ।

★ **श्रीराम जी कहने लगे— हे तात ! तुमने बड़ी सुन्दर नीति कही कि राज्य का नशा सबसे बड़ा नशा होता है ।**

* श्रीराम जी का तात्पर्य है कि लौकिक पक्ष से तुम्हारी बात नीति युक्त है, पर वह एकांगी हो गयी ।

जो अचवँत नृप मातहिं तेई ।
नाहिन साधुसभा जेहिं सेई ।।

⊗ अचवँत=आचमन करना (पीना), नाहिन=नहीं, मातहिं=मतवाली हो जाती है, सेई=सेवन करना ।

★ **जिन्होंने सज्जनों की सभा का सेवन नहीं किया, वे ही राजा राजमद रूपी मदिरा का आचमन करते ही (पीते ही) मतवाले हो जाते हैं ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जिनका आत्मबल कमजोर है उनको ही सांसारिक वैभव पागल बना सकता है । सत्संग और आध्यात्मिक साधना द्वारा जिन्होंने मर्म करके आत्मबल बढ़ा लिया वे वैभव का उपयोग तो कर लेते हैं पागल नहीं बनते ।

सुनहु लखन भल भरत सरीसा ।
बिधि प्रपंच महँ सुना न दीखा ।।

⊗ भल=सज्जन, सरीसा=समान-सदृश, प्रपंच=सृष्टि, महँ=में ।

★ **श्रीराम जी बोल— हे लक्ष्मण ! सुनो भरत के जैसा उत्तम पुरुष ब्रह्मा की सृष्टि में न तो कहीं सुना गया न देखा ही गया है ।**

* श्रीराम की दृष्टि में भरत की सज्जनता की साधना इतनी श्रेष्ठ है जिसकी बराबरी संसार में अन्य कोई नहीं कर सका— अतः उन्हें राजमद नहीं हो सकता यह विश्वास है ।

कहत भरत गुन सील सुभाऊ ।
पेम पयोधि मगन रघुराऊ ।।

⊗ पेम पयोधि =प्रेम के समुद्र में, मगन=मग्न ।

★ **भरत जी के गुण, शील और स्वभाव को कहते-कहते श्री रघुनाथ जी प्रेम समुद्र में मग्न हो गये ।**

* सज्जन पुरुषों के सद्गुणों को, उनके सच्चरित्र को तथा उनके मीठे स्वभाव को याद करने एवं उनकी चर्चा करने से व्यक्ति उन्हीं गुणों, चरित्र तथा स्वभावों का आनन्द अनुभव करने लगता है ।

जौं न होत जग जनम भरत को ।
सकल धरम धुर धरनि धरत को ।।

⊗ जौं=यदि, न होत=नहीं होता, सकल=सम्पूर्ण, धरनि=पृथ्वी ।

★ **तुलसीदास जी कहते हैं कि यदि संसार में भरत का जन्म न होता तो पृथ्वी पर सम्पूर्ण धर्म की धुरी को कौन धारण करता ।**

* संसार में महान पुरुषों का जन्म नहीं हो तो धर्म की रक्षा कौन करे ? लोगों को सन्मार्ग पर कौन चलावे ?

चले भरत जहँ सिय रघुराई ।
साथ निषादनाथु लघु भाई ।।

★ **भरत जी, निषादराज और छोटे भाई शत्रुघ्न जी को साथ लेकर वहाँ चले, जहाँ श्री सीता जी और श्री राम जी थे ।**

ईति भीति जनु प्रजा दुखारी ।
त्रिबिध ताप पीड़ित ग्रह मारी ।।

⊗ ईति=प्राकृतिक बाधायें, भीति=भय, ग्रह मारी=ग्रहों की सताई हुई ।

★ **अति वृष्टयादि के भय से और आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक आदि से तथा ग्रह दशा से प्रजा को पीड़ा होती है ।**

* आधिभौतिक पीड़ायें शरीर सम्बन्धी नियमों के उल्लंघन से होती हैं । आधिदैविक पीड़ायें आसुरी स्वभाव बनाने से होती हैं, तथा आध्यात्मिक पीड़ायें आत्म शक्तियों के दुरुपयोग से होती हैं ।

जाइ सुराज सुदेस सुखारी ।
होहिं भरत गति तेहि अनुहारी ।।

★ **ऐसी प्रजा किसी भी अच्छे देश एवं अच्छे शासन में जाकर सुखी हो जाय, भरतजी की गतिविधि ठीक उसी प्रकार की हो रही है ।**

* अच्छे राज्य में प्रजा अर्थ, धर्म, शिक्षा, व्यवस्था आदि से सुखी होती है । दुःख जिन कारणों से होता है वह कार्य अच्छे राज्य में करने नहीं दिये जाते ।

राम बास बन संपति भ्राजा ।
सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ।।

⊗ भ्राजा =सुशोभित, जनु=जैसे ।

★ **राम जी के निवास से वन ऐसा सुशोभित है जैसे श्रेष्ठ शासन को पाकर प्रजा सुखी हो ।**

* श्रेष्ठ शासन व्यवस्था होने पर प्रजा हर प्रकार की सुविधाओं से सुखी हो जाती है । यह श्रेष्ठ शासन कैसे सम्भव हो सकता है- वर्णन में आता है ।

सचिव बिराग बिबेक नरेसू ।
बिपिन सुहावन पावन देसू ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ पवित्र देश (राष्ट्र) सुन्दर उपवन जैसा हो विवेक बान-उसका राजा है, और वैराग्य उसका मन्त्री है ।

* (१) सुराज में विवेक का राज्य हो अर्थात् सर्वोपरि महत्व किसी व्यक्ति को न देकर विवेक को महत्व दिया जाता हो । (२) सलाह सग द्वेष के प्रभाव में नहीं वैराग्य के साथ अर्थात् निष्पक्ष दी जाती हो ।

भट यम नियम सैल रजधानी ।
शान्ति सुमति शुचि सुन्दर रानी ।।

⊗ यम=अहिंसा सत्य, अस्तेय, (चोरी न करना) ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह (जमाखोरी न करना), नियम=शौच (शुद्धता) तप, सन्तोष, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान (ईश्वर उपासना), सुचि=शुचि ।

★ यम, नियम आदि जहाँ योद्धा हैं । पर्वत राजधानी है । शान्ति एवं सुमति रूपी रानियाँ हैं ।

* अच्छे राज्य की रक्षा यम-नियम आदि श्रेष्ठ अभ्यासों से होती है, राजधानी पर्वत की तरह सम्पन्न और अजेय हो, तथा विवेक (राजा) के साथ शान्ति और सुमति (रानी की तरह) सदा रहें ।

जीति मोह महिपाल दल,
सहित बिबेक भुआलू ।
करत अकंटक राज पुर,
सुख सम्पदा सुकालू ।।

⊗ महिपाल=राजा, भुआल=सम्राट, अंकटक=निष्कण्टक ।

★ मोह रूपी राजा को सेना सहित जीत कर विवेक रूपी राजा निष्कण्टक राज्य कर रहा है उसके नगर में सुख, सम्पत्ति, और अच्छा समय वर्तमान है ।

* विवेक जब मोह को उसके सहयोगियों सहित जीत ले तभी बिना विघ्न के अच्छे राज्य का लाभ मिल सकता है ।

खगहा करि हरि बाघ बराहा ।
देखि महिष वृष साज सराहा ।।

⊗ खगहा=गेंडा, करि=हाथी, हरि=सिंह, बराहा=सुअर, महिष= भैंसा, वृष=बैल ।

★ गेंडा, हाथी, सिंह, बाघ, सुअर, भैंसे और बैलों आदि पशुओं को देखकर राजा के साज को सराहते ही बनता है ।

बयरु बिहाइ चरहिं एक संगा ।
जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ।।

⊗ बयरु=वैर, बिहाइ=छोड़कर, सेन चतुरंगा=चतुरंगिणी सेना ।

★ सब आपस का वैर भाव त्यागकर जहाँ-तहाँ एक साथ विचरते हैं, यही मानो चतुरंगिणी सेना है ।

* राजा (सत्ताधारी) राज्य में लोगों को इस प्रकार की निर्भयता उत्पन्न कर दें कि छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, ऊँच-नीच सभी एक स्थान पर रहते हुए देश को ऊँचा उठाने में हाथ बँटा सकें ।

अलिगन गावत नाचत मोरा ।
जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा ।।

⊗ अलिगन=भौंरों का समूह, मोरा=मोर, चहुँ ओरा=चारों तरफ ।

★ भौंरों का समूह गुंजार कर रहा है, मोर नाच रहे हैं, मानो अच्छे राज्य में सब तरफ मंगल मनाये जाते हैं ।

* श्रेष्ठ राज्य में रहने वाले सभी लोग निर्भय होते हैं और चारों ओर आनन्द ही दिखाई देता है, ईर्ष्या शिकायत आदि नहीं रहती ।

बेलि बिटप तृन सफल सफूला ।
सब समाज मुद मंगल मूला ।।

⊗ बेलि=बेल (लता), बिटप=वृक्ष, तृन=तृण, सफल=फले हुए, (फल युक्त), सफूला=फूले हुए (फूलों से युक्त)।

★ बेल (लता) वृक्ष, तृण सब फल और फूलों से युक्त हैं । सारा समाज आनन्द और मंगल का मूल बन रहा है ।

* सबको पूरा विकसित होने का अवसर मिलता है किसी का अधिकार छिनता नहीं ।

तब केवट ऊँचे चढ़ि धाई ।
कहेउ भरत सन भुजा उठाई ।।

★ तब केवट दौड़कर ऊँचे स्थान पर चढ़ गया और भुजा उठाकर हाथ के इशारे से भरत जी से कहने लगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ए तरु सरित समीप गोसाई ।
रघुवर परनकुटी जहँ छाई ।।

⊗ सरित=नदी, समीप=निकट, परनकुटी=पर्णकुटी ।

★ **हे स्वामी ! ये वृक्ष नदी के निकट हैं, जहाँ श्रीरामजी की पर्णकुटी छायी है ।**

तुलसी तरुबर बिबिध सुहाए ।
कहुँ कहुँ सियँ कहुँ लखन लगाए ।।

⊗ तुलसी तरुबर=तुलसी के सुन्दर पौधे, बिबिध=बहुत से, सुहाए=सुशोभित हो रहे हैं ।

★ **तुलसी के सुन्दर पौधे बहुत से सुशोभित हो रहे हैं । कहीं सीताजी ने और कहीं लक्ष्मणजी ने उन्हें लगाये हैं ।**

* तुलसी की महत्ता समझकर उन्हें स्वयं अपने निवास के पास के स्थान पर लगाना चाहिए ।

बट छायाँ बेदिका बनाई ।
सियँ निज पानि सरोज सुहाई ।।

⊗ बट=बरगद, बड़, बेदिका=वेदी, पानि (पाणि)=हाथों से, सरोज=कमल ।

★ **बड़ की छाया में सीताजी ने अपने कर-कमलों से सुन्दर वेदी बनाई है ।**

* (१) भगवान राम जंगल वासियों में भी यज्ञीय भावना का प्रसार करते थे, वेदी इसीलिये बनी थी । (२) सीताजी हर प्रकार के गृहकार्य में निपुण थीं । महिलाओं को ऐसा ही होना चाहिए ।

करत प्रबेश मिटे दुख दावा ।
जनु जोगी परमारथ पावा ।।

⊗ दावा=दाह-जलन, पावा=प्राप्त किया ।

★ **आश्रम में प्रवेश करते ही दुःख और दाह (जलन) सब मिट गये । मानो योगी को परमार्थ (परमतत्व) की प्राप्ति हो गयी ।**

* घर (आश्रम) इतने साफ, सुथरे, सजे हुए और सुसंस्कार-युक्त रखने चाहिए जहाँ पहुँचते ही मन में प्रसन्नता और पवित्रता का उदय होने लगे ।

सानुज सखा समेत मगन मन ।
बिसरे हरष सोक सुख दुख गन ।।

⊗ बिसरे=भूल गये, हरष=हर्ष, गन=(गण)=समूह ।

★ **छोटे भाई शत्रुघ्न जी और सखा निषादराज समेत भरत जी का मन प्रेम में मग्न हो रहा है । वे हर्ष-शोक, सुख-दुःख आदि सब भूल गये ।**

* स्नेह जनित आनन्द सुख दुःख से परे श्रेष्ठ स्थिति है ।

पाहि नाथ कहिं पाहि गोसाईं ।
भूतल परे लकुट की नाईं ।।

⊗ पाहि=त्राहि=रक्षा करो, लकुट=लाठी, भूतल=पृथ्वी पर ।

★ **हे नाथ ! रक्षा कीजिए, हे गुसाईं रक्षा कीजिए ऐसा कहकर वे धरती पर (दण्ड) लाठी के समान गिर पड़े ।**

बरबस लिए उठाइ उर,
लाए कृपानिधान ।
भरत राम की मिलन लखि,
बिसरे सबहि अपान ।।

⊗ बरबस=जबर्दस्ती, अपान=अपनत्व (सुध-बुध) ।

★ **कृपा निधान श्रीरामचन्द्र जी ने उनको जबर्दस्ती उठाकर हृदय से लगा लिया । भरतजी और श्रीरामजी का मिलन देखकर सब कोई अपनत्व भूल गये अर्थात् सुध-बुध न रही ।**

* आदर्श यही है कि आयु में छोटा बड़े के प्रति आदर एवं नम्रता का भाव रखे तथा बड़ा छोटे के प्रति स्नेहपूर्ण समता का ।

परम प्रेम पूरन दोउ भाई ।
मन बुधि चित अहमिति बिसराई ।।

⊗ पूरन=पूर्ण, अहमिति=अहंकार, बुधि=बुद्धि, चित=चित्त ।

★ **दोनों भाई मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार भुलाकर परम प्रेम से परिपूर्ण हो रहे हैं ।**

* प्रेम के वातावरण में मन की गन्दगी नष्ट हो जाती है, और मनुष्य का थोड़ा घमण्ड दूर हो जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिलि सपेम रिपुसूदनहिं,
केबटु भेंटेउ राम ।
भूरि भायँ भेंटे भरत,
लछिमन करत प्रनाम ।।

⊗ सपेम=सप्रेम, रिपुसूदन=शत्रुघ्न जी, भूरि भायँ=श्रेष्ठ भावना से ।

★ तब श्रीरामजी प्रेम के साथ शत्रुघ्न से एवं फिर केवट से मिले । प्रणाम करते हुए लक्ष्मणजी से भरतजी बड़े प्रेम से मिले ।

* राम ने निषाद को भाइयों के समान स्नेह दिया । लक्ष्मणजी और भरत ने आयु की मर्यादा के अनुसार आदर तथा स्नेह प्रकट किया ।

गुरहि देखि सानुज अनुरागे ।
दंड प्रणाम करन प्रभु लागे ।।

⊗ गुरहि=गुरुजी के, अनुरागे=प्रेम में भर गये ।

★ गुरुजी के दर्शन करके लक्ष्मण जी सहित प्रभु श्रीरामचन्द्र जी प्रेम में भर गये और दण्डवत् प्रणाम करने लगे ।

* समर्थ पुरुष होते हुए भी गुरुजनों को उन्हें प्रणाम करना चाहिए, जिससे शिष्टता की मर्यादा बनती है और छोटे लोग उनका अनुकरण करते हैं ।

मुनिबर धाइ लिए उर लाई ।
प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ।।

⊗ उरलाई =हृदय से लगा लिया, उमगि =उमंग में भरकर ।

★ मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठजी ने दौड़कर उन्हें हृदय से लगा लिया और प्रेम में उमँग कर वे दोनों भाईयों से मिले ।

* गुरु जन भी शिष्यों को इसी प्रकार असीम प्रेम गले से लगाकर देवें, जिससे शिष्यों में भी प्रेम का जागरण हो ।

राम सखा रिषि बरबस भेंटा ।
जनु महि लुठत सनेह समेटा ।।

⊗ राम-सखा=निषादराज, भेंटा=हृदय से लगाकर मिले, महि=पृथ्वी, लुठत=लोटते हुए, सनेह=स्नेह (प्रेम), समेटा= समेट लिया ।

★ ऋषि वशिष्ठ जी ने राम सखा जानकर निषादराज को जबर्दस्ती हृदय से लगा लिया । मानो जमीन पर बिखरे हुए प्रेम को समेट लिया हो ।

* गुह वशिष्ठ जी के साथ ही आये थे, अपने साथ आने वालों से मिलने की कोई परम्परा नहीं है किन्तु पहले वशिष्ठजी ने उसे दूर से ही आशीर्वाद दिया था, श्रीराम को सबसे गले मिलते देख उन्हें अपनी भूल का अनुभव हुआ तथा उसका प्रायश्चित करने के लिए उन्होंने उसे बिना प्रसंग के ही जबरदस्ती हृदय से लगा लिया ।

जो जेहि भाँय रहा अभिलाषी ।
तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी ।।

⊗ भायँ=भाव से, अभिलाषी=इच्छा रखता था, राखी=रखते हुए, रुख=दिशा (यहाँ भावना)।

★ जो जिस भावना से मिलने का अभिलाषी था, उस-उसकी उसी प्रकार की रुचि प्रभु ने रखी ।

* सबकी तुष्टि एक से व्यवहार से नहीं हो जाती, मनुष्य की भावना के अनुरूप व्यवहार देने में महापुरुष निपुण होते हैं ।

देखीं राम दुखित महतारीं ।
जनु सुबेलि अबलीं हिम मारीं ।।

⊗ महतारी=माता, सुबेली =सुन्दर लतायें, अबलीं=पंक्ति, हिम=पाला ।

★ श्रीरामचन्द्र जी ने सब माताओं को दुखी देखा, मानो सुन्दर लताओं की पंक्तियों को पाला मार गया हो ।

* दुख में मनुष्य मरे के समान ही हो जाता है ।

प्रथम राम भेंटी कैकेई ।
सरल सुभायँ भगति मति भेई ।।

⊗ सरल सुभायं=सरल स्वभाव, भगति=भक्ति, मति=बुद्धि, भेई=सराबोर कर दिया ।

★ सबसे पहले रामजी कैकेयी से मिले और अपने सरल स्वभाव तथा भक्ति से उसकी बुद्धि को सराबोर कर दिया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* भगवान जानते थे कि कैकेयी की भावना उनके प्रति कम नहीं है, देवताओं के कार्य के लिए उन्हें संयोग से अपयश का भागी बनना पड़ा इसलिए उनका दुख घटाने तथा लोगों की दृष्टि में सम्मान बढ़ाने के लिए उन्हें प्राथमिकता दी ।

भेंटी रघुबर मातु सब,
करि प्रबोधु परितोषु ।
अंब ईस आधीन जगु,
काहु न देइअ दोषु ।।

⊗ प्रबोध=समझाकर, परितोषु=संतोष, अंब=माता, देइअ=देना चाहिए ।

★ फिर श्री रघुनाथ जी सब माताओं से मिले । उन्होंने सबको समझा बुझाकर संतोष कराया कि हे माता! जगत ईश्वर के आधीन है, किसी को भी दोष नहीं देना चाहिए ।

* राम चाहते हैं कि उनके प्रति स्नेह के कारण माताओं के प्रेम व्यवहार में कमी न आने पावे इसलिए उन्हें परस्पर दोष न देने का मर्म समझाते हैं ।

पुरजन नारि मगन अति प्रीती ।
बासर जाहिं पलक समबीती ।।

⊗ पुरजन=नगर के लोग, अति प्रीती=अत्यन्त प्रेम में बासर=दिन, पलक=पल।

★ अयोध्यापुरी के पुरुष और स्त्री सभी प्रेम में अत्यन्त मग्न हो रहे हैं । उनके दिन पल के समान बीतने लगे ।

* जहाँ मन रम जाता है वहाँ समय बीतने का पता ही नहीं लगता ।

यहु संसउ सब के मन माहीं ।
राम गवन विधि अवध कि नाहीं ।।

⊗ संसउ=संदेह, गवन (गमन)=जाना, विधि=विधाता ।

★ सबके मन में यह संदेह हो रहा है कि हे विधाता! श्रीरामचन्द्र जी का अयोध्या जाना होगा या नहीं ?

एकउ जुगुति न मन ठहरानी ।
सोचत भरतहि रैनि बिहानी ।।

⊗ जुगुति=युक्ति, ठहरानी=ठहरी, सोचत=सोचते-सोचते, रैनि=रात्रि, बिहानी=बीत गई ।

★ श्रीराम से अयोध्या लौटने का आग्रह कैसे करें इस पक्ष में एक भी युक्ति भरत जी के मन में न ठहरी । सोचते ही सोचते रात बीत गयी ।

प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई ।
बैठत पठए रिषयँ बोलाई ।।

⊗ प्रात=प्रात:काल, नहाइ=स्नानकर, पठए=बुलावा, रिषयँ=ऋषि वशिष्ठजी ।

★ भरतजी प्रात:काल स्नान करके और भगवान के चरण में सिर नवाकर बैठे ही थे कि ऋषि वशिष्ठ जी ने बुलावा भेजा ।

* प्रात:काल संध्यावन्दन का क्रम भरत ने वन में भी बनाये रखा ।

बोले मुनिबर समय समाना ।
सुनहु सभासद भरत सुजाना ।।

⊗ समय समाना=यथोचित-समय के अनुसार, सुजाना =सुयोग्य ।

★ श्रेष्ठ मुनि वशिष्ठ जी समय के अनुसार वचन बोले- हे सभासदो ! हे सुयोग्य भरत ! सुनो ।

धरम धुरीन भानुकुल भानू ।
राजा राम स्वबस भगवानू ।।

⊗ धरमधुरीन=धर्म के धुरी-धर्म के आधार, भानु=सूर्य, स्वबस= जिसको अपने ऊपर स्वयं नियंत्रण हो ।

★ सूर्य कुल के सूर्य राजा श्रीराम जी धर्म धुरन्धर और स्वयं में मर्यादित (मर्यादा पुरुषोत्तम) भगवान हैं ।

* भगवान धर्म का मर्म समझते हैं तथा उसकी स्थापना के लिये आते हैं, इसलिये उन्हें धर्म धुरीन कहा । मर्यादा पालने लिये उन्हें किसी दूसरे के दबाव की आवश्यकता नहीं पड़ती इसलिए वे स्ववश हैं ।

सत्यसंध पालक श्रुति सेतू ।
राम जनम जग मंगल हेतू ।।

⊗ सत्यसंध=सत्यप्रतिज्ञ, श्रुतिसेतु=वेद की मर्यादा, हेतू=कारण ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ वे सत्य प्रतिज्ञ और वेद की मर्यादा का पालन करने वाले हैं । श्रीरामजी का अवतार संसार के कल्याण के लिये होता है ।

* भगवान का अवतरण संसार के भले के लिए होता है जिनमें भगवान का प्रकाश उदय होता है उन्हें भी ऐसा ही करना चाहिए ।

नीति प्रीति परमारथ स्वारथ ।
कोउ न राम सम जान जथारथ ।।

⊗ नीति=नैतिक सिद्धान्त, प्रीति=स्नेह का ढंग, परमार्थ (परमार्थी)=दूसरों की भलाई, स्वारथ (स्वार्थी)=अपनी भलाई, जथारथ (यथार्थ)=वास्तव में ।

★ नीति, प्रेम, परमार्थ और स्वार्थ का सच्चा रूप भगवान राम के समान कोई और नहीं जानता ।

* भगवान से अपने लाभ के लिये प्रार्थना करने वाले यह तथ्य भूल जाते हैं कि हमारी अपेक्षा भगवान यह बात अधिक अच्छी तरह जानते हैं कि हमारा हित-अहित कैसे होगा ।

केहि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ ।
कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ ।।

⊗ केहि बिधि=किस प्रकार, उपाऊ=उपाय।

★ श्रीरामजी किस प्रकार अयोध्या चलें ? विचार करके कहिये, वही उपाय किया जाय ।

* ऊपर कहे हुए तथ्य को ध्यान में रखकर, अर्थात् अपनी हठधर्मी (जिद्द) छोड़कर सही मार्ग खोजने का आग्रह श्री वशिष्ठ जी ने किया ।

कहहिं भरत मुनि कहा सो कीन्हे ।
फल जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे ।।

⊗ कहहिं=कहने लगे, जीवन्ह=जीवों को, अभिमत=इच्छित ।

★ भरतजी ने कहा, मुनि की आज्ञानुसार काम करने से सारे जगत के जीवों को उनकी इच्छित वस्तु देने का फल प्राप्त होगा ।

* भरत ऋषि की बात का मर्म समझते हैं, अत: उनके कथन के अनुसार चलने में प्राणिमात्र की भलाई होगी यह घोषणा करते हैं ।

कानन करउ जनम भरि बासू ।
एहि तै अधिक न मोर सुपासू ।।

⊗ कानन=वन, बासू=वास, एहिते=इससे, मोर=मेरा, सुपासू = सुख ।

★ यदि भगवान राम पिता के वचन की मर्यादा के लिये वन में रहने का आग्रह करें तो मैं जन्म भर वन में वास करूँगा । मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई सुख नहीं है ।

* श्री भरतजी जनहित में बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार हैं । ऐसे व्यक्ति जिस समाज में हों वहाँ स्वर्ग निवास करेगा ही ।

भरतु मुनिहि मन भीतर भाए ।
सहित समाज राम पहिं आए ।।

⊗ मन भीतर=अन्तरात्मा में, भाए=अच्छे लगे ।

★ मुनि वशिष्ठजी के मन को भरतजी बहुत अच्छे लगे और वे समाज सहित भगवान श्रीराम के पास आए ।

* भरत की निष्ठा का सही मूल्यांकन अनुभवी वशिष्ठ पूरी तरह कर सके और इसी आधार पर भगवान राम से आग्रह करने उनके पास पहुँच गये ।

बोले मुनिबर बचन बिचारी ।
देस काल अवसर अनुहारी ।।

★ मुनि श्रेष्ठ वशिष्ठजी देश, समय और मौके के अनुसार विचार कर बोले ।

* हर व्यक्ति को स्थान, समय और परिस्थिति के अनुकूल ही अपनी बात कहनी चाहिए ।

सुनहु राम सरबग्य सुजाना ।
धरमनीति गुन ग्यान निधाना ।।

⊗ सरबग्य (सर्वज्ञ)=सब कुछ जानने वाले, ग्यान=ज्ञान, निधान=भण्डार ।

★ हे सुजान! सब कुछ जानने वाले धर्म, नीति, गुण और ज्ञान के भण्डार राम ! सुनिये –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जो भगवान श्रीराम को अपना इष्टदेव मानते हैं उनमें ये विशेषतायें धीरे-धीरे आनी ही चाहिए ।

सबके उर अन्तर बसहु,
जानहु भाउ कुभाउ ।
पुरजन जननी भरत हित,
होइ सो कहिअ उपाउ ।।

⊗ अन्तर=भीतरी, भाउ-कुभाउ=भले बुरे भाव, पुरजन = नगरवासी ।

★ **आप सबके हृदय में बसने वाले हैं और सबके भले-बुरे भाव जानते हैं । जिसमें अयोध्या नगर निवासियों, माताओं और भरत का हित हो वही उपाय बताइये ।**

* हम सबका हित जिस प्रकार हो यही प्रार्थना वशिष्ठजी ने की, किसी क्रिया विशेष का आग्रह नहीं किया क्योंकि सबका हित तथा उसको पूरा करने का ढंग भगवान अधिक अच्छी तरह जानते हैं ।

आरत कहहि बिचारि न काऊ ।
सूझ जुआरिहि आपन दाऊ ।।

⊗ आरत=दुखी, काऊ=कभी भी, सूझ=सूझता है, जुआरिहि=जुआरी को; आपन=अपना, दाऊ=दाँव।

★ **दु:खी लोग कभी भी विचार कर नहीं बोलते हैं जैसे कि जुआरी को सदा अपना ही दाँव सूझता है ।**

* अर्थ की कामना वाला तथा व्यसनी व्यक्ति समस्या का केवल एक ही अंग देख पाता है ।

सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ ।
नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ।।

★ **श्रीरघुनाथजी ने मुनि के वचन सुनने के बाद उनसे कहा कि हे नाथ, उपाय तो आपके ही हाथ है ।**

* विनम्र पुरुष (श्रीराम जैसे) कहीं भी अपनी बात थोपना नहीं चाहते, वे तो अन्य लोगों से ही अपनी इच्छानुसार कहलाते हैं ।

सब कर हित रुख राउरि राखें ।
आयसु किएँ मुदित फुर भाषें ।।

⊗ मुदित=आनन्दित, फुर=सत्य, भाषें=बोलें ।

★ **आपका रुख रखने में और आपकी आज्ञा को सत्य मानकर प्रसन्नता से पालन करने में ही सबका हित है ।**

* सुबिज्ञ एवं श्रेष्ठ (वशिष्ठजी जी जैसे) व्यक्तियों की आज्ञा का पालन करने पर अनिष्ट की आशंका नहीं रहती, वरन सदा हित ही होता है ।

प्रथम जो आयसु मो कहुं होई ।
माथें मानि करौं सिख सोई ।।

⊗ मो=मुझे, माथें मानि =मस्तक पर चढ़ाकर (आदर पूर्वक), सिख (शिक्षा)=परामर्श ।

★ **पहले तो मुझे जो आज्ञा हो वही परामर्श मस्तक पर चढ़ाकर मानूँगा ।**

* जो कार्य सबके लिये हितकारी कहा जाता है उसे स्वयं पहले करना श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए उचित है ।

पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाईं ।
सो सब भाँति घटिहि सेवकाईं ।।

⊗ घटिहि=घटित होगा, सेवकाई=सेवा में ।

★ **फिर हे स्वामी ! आप जिसको जैसा कहेंगे वह सब तरह से आपकी आज्ञा का पालन करेगा ।**

कह मुनि राम सत्य तुम भाषा ।
भरत सनेहँ बिचारु न राखा ।।

⊗ भाषा=कहा, सनेहँ=स्नेह, राखा=रखा ।

★ **मुनि वशिष्ठजी ने उत्तर दिया कि हे राम, तुमने सत्य कहा, पर भरत के प्रेम ने विचार नहीं रहने दिया ।**

* भरत ने अपने प्रेम से सबको इतना प्रभावित कर लिया था कि उस भावना के बाहर होकर कुछ सोचने की क्षमता समाप्त हो गयी थी ।

मोरें जान भरत रुचि राखी ।
जो कीजिअ सो सुभ सिव साखी ।।

⊗ जान=समझ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **मेरी समझ में तो भरत की रुचि के अनुसार जो कुछ किया जायगा, शिवजी साक्षी हैं, वह शुभ ही होगा ।**

* भरत की तरह सज्जन व्यक्ति द्वारा शुभ निर्णय ही लिया जाने का विश्वास सभी को हो जाता है ।

भरत विनय सादर सुनिअ,
करिअ बिचारि बहोरि ।
करब साधुमत लोकमत,
नृपनय निगम निचोरि ।।

⊗ विनय=विनती, नृपनय=राजनीति, निगम=वेद, निचोरि= सार लेकर ।

★ **पहले भरतजी की विनती आदरपूर्वक सुन लीजिये, फिर उस पर विचार कीजिये । तब साधुमत, जनता, राजनीति और वेदों का निचोड़ निकालकर जैसा उचित हो वैसा कीजिए ।**

* अपने प्रियजनों का मन रखना अच्छी बात है, किन्तु उसे उक्त सभी मर्यादाओं के अन्तर्गत ही पूरा किया जाना चाहिए । किसी का मन रखने के लिए सब सिद्धान्तों की उपेक्षा नहीं की जा सकती ।

भरतु कहहिं सोइ किऐं भलाई ।
अस कहि राम रहे अरगाई ।।

★ **भरतजी जो कुछ कहें उसी के अनुसार करने में भलाई है, ऐसा कहकर श्रीराम चुप हो रहे ।**

* (१) छोटे भाई के धर्म एवम् नीति के अनुसार ही निर्णय देने के संस्कारों पर श्रीराम को पूरा विश्वास था । (२) छोटों को महत्वपूर्ण निर्णय अपने सामने लेने देने की छूट देना उनके आत्म विश्वास को बढ़ाता है ।

तब मुनि बोले भरत सन,
सब सँकोच तजि तात ।
कृपासिन्धु प्रिय बन्धु सन,
कहहु हृदयँ कै बात ।।

★ **तब मुनि वशिष्ठ जी भरत जी से बोले– हे तात, सब संकोच छोड़कर कृपा के समुद्र अपने प्यारे भाई से अपने हृदय की बात कहो ।**

* जब सब लोग शुद्ध भाव से विश्वासपूर्वक बात पूछें तो उसे निःसंकोच होकर बता देना चाहिए ।

पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े ।
नीरज नयन नेह जल बाढ़े ।।

★ **भरतजी का शरीर रोमांचित हो उठा, वे सभा में खड़े हो गये । उनके कमल के समान नेत्रों में प्रेमाश्रुओं की बाढ़ आ गयी ।**

* सबका अपने प्रति विश्वास देखकर भरत का हृदय भावना से भर आया ।

कहब मोर मुनिनाथ निबाहा ।
एहि तें अधिक कहौं मैं काहा ।।

⊗ कहब=कहना, निबाहा=निभाना, काहा=क्या ।

★ **भरत जी बोले– मुनिनाथ वशिष्ठजी ने तो मेरे मन की बात पहले ही कह दी है, इससे अधिक मैं क्या कहूँ ?**

मैं जानब निज नाथ सुभाऊ ।
अपराधिहु पर कोह न काऊ ।।

⊗ अपराधिहु=अपराधियों पर भी, कोह=क्रोध ।

★ **अपने स्वामी (श्रीरामजी) का स्वभाव मैं जानता हूँ । वे तो अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं करते ।**

* भरत को निर्णय का जो अधिकार दिया गया उसे वे अपनी विशेषता न मान कर गुरु और प्रभु की कृपा मानते हैं ।

मो पर कृपा सनेह बिसेषी ।
खेलत खुनिस न कबहूँ देखी ।।

⊗ बिसेषी=विशेष, खुनिस=अप्रसन्नता ।

★ **मुझ पर तो वह विशेष कृपा और स्नेह रखते हैं । मैंने खेल में भी कभी उनको अप्रसन्न होते नहीं देखा ।**

* खेल में भी अप्रसन्न न होने का अर्थ है, दिखावे के लिये भी अथवा नाम मात्र के लिये भी अप्रसन्न न होना । दोनों भाई कभी खेल में भी नहीं झगड़े उनमें ऐसा प्रेम था ।

सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू ।
कबहूँ न कीन्ह मोर मन भंगू ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ सिसुपन=शिशुपन=बचपन, संगू=साथ, भंगू=तोड़ा।

★ **बचपन से ही मैंने उनका साथ नहीं छोड़ा । उन्होंने भी मेरे मन को कभी भी नहीं तोड़ा ।**

* अधिक समय साथ रहने में कभी कोई न कोई अप्रिय प्रसंग आ जाता है, पर भरत कहते हैं कि बचपन से अब तक कभी राम ने भाई का मन नहीं दुखाया ।

मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही ।
हारेऊँ खेल जितावहिं मोही ।।

⊗ रीति=ढंग, जियँ=हृदय में, जोही =देखा है, जितावहिं = जिता देते रहे हैं ।

★ **मैंने प्रभु की कृपा की रीति को हृदय में अच्छी तरह से देखा है । खेल में मेरे हारने पर भी वे मुझे जिता देते थे ।**

* अपने छोटों का मन बढ़ाने के लिए स्वयं हारने में जीत से भी अधिक प्रसन्नता होती है तथा परस्पर स्नेह बढ़ता है सो अलग ।

महीं सकल अनरथ कर मूला ।
सो सुनि समुझि सहिउँ सब सूला ।।

⊗ महीं=मैं ही, सहिउँ=सहा है, सूला (शूल)=दुःख ।

★ **मै ही सारे अनर्थों की जड़ हूँ । यह सुनकर और समझकर मैं सब दुख सह रहा हूँ ।**

* भरत को ग्लानि इस बात की है कि जो राम उनके सुख का इतना ध्यान रखते थे, उन्हें मेरे कारण जंगल का कष्टसाध्य जीवन जीना पड़ा ।

सुनि अति विकल भरत बर बानी ।
आरति प्रीति बिनय नय सानी ।।

⊗ बर बानी=श्रेष्ठ वचन, आरति=दुःख नय=नीति, सानी= भरी हुई ।

★ **अत्यन्त व्याकुल तथा दुःख, प्रेम, विनय और नीति में सनी हुई भरत जी की श्रेष्ठ वाणी सुनकर —**

* दुःख की अवस्था में जबकि लोग होश हवास खो बैठते हैं, भरत नीति, प्रेम तथा विनयशीलता का निर्वाह कर सके यह उनकी महानता है ।

बोले उचित बचन रघुनन्दू ।
दिनकर कुल कैरव बन चन्दू ।।

⊗ दिनकर=सूर्य, रघुनन्दू =श्रीराम जी, कैरव बन=कुमुदवन, चन्दू=चन्द्रमा ।

★ **फिर सूर्यकुलरूपी कुमुदवन को खिला देने वाले चन्द्रमा श्रीरघुनन्दन ने समयानुसार उचित वचन कहे ।**

* भरत भावुकता वश समस्या का समाधान कहने के स्थान पर बार-बार स्वयं को बुरा कहने लगते थे इसलिए श्रीरामजी ने उनके चिन्तन की दिशा बदलने के लिये कहा —

तात कुतरक करहु जनि जाएँ ।
बैर प्रेम नहिं दुरह दुराएँ ।।

⊗ कुतरक=कुतर्क, जाएँ=व्यर्थ

★ **हे तात ! व्यर्थ में कुतर्क न करो । शत्रुता और प्रेम छिपाये नहीं छिपते ।**

* भगवान राम का आशय यह है कि जब भरत के मन की स्वच्छता पर सभी विश्वास कर रहे हैं तो उन्हें स्वयं अपने आपको दोष देने में समय नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि मन की भावना की झलक सबको मिल ही जाती है ।

मुनिगन निकट बिहग मृग जाहीं ।
बाधक बधिक बिलोकि पराहीं ।।

⊗ मुनिगण=मुनियों का समूह, बिहग=पक्षी, बाधक=हिंसा करने वाले, बधिक=हत्यारे, पराही=भाग जाते हैं ।

★ **पशु पक्षी मुनियों के पास बिना डर के चले जाते हैं पर हिंसा करने वाले वधिकों को देखते ही भाग जाते हैं ।**

हित अनहित पसु पच्छिउ जाना ।
मानुष तन गुन ग्यान निधाना ।।

⊗ हित=भलाई (मित्र), अनहित=बुराई, पसु=पशु, पच्छिउ= पक्षी, जाना=जानते हैं, गुन=गुण ।

★ **मित्र और शत्रु को पशु पक्षी भी पहचान लेते हैं । मनुष्य शरीर तो गुण और ज्ञान का भंडार है ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* भगवान राम उदाहरण द्वारा अपने कथन की पुष्टि करते हैं ।

तात तुम्हहि मैं जानउँ नीकें ।
करौं काह असमंजस जीके ।।

★ हे तात् ! मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ । क्या करुँ ? जी में बड़ी दुविधा है ।

* भरत का स्नेह तथा पिता के वचन की मर्यादा दोनों पक्ष उचित होने से किस दिशा में निर्णय लिया जाय यह कठिनाई है ।

ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा ।
अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा ।।

⊗ तापर=उस पर, अवसि (अवश्य) =निश्चय, चहउँ=चाहता हूँ ।

★ उस पर भी गुरु जी ने मुझे आज्ञा दी है । इसलिये अब तुम जो कुछ भी कहोगे, मैं निश्चित रूप से वही करना चाहता हूँ ।

* स्वयं अपने को असमंजस की स्थिति में कह कर श्रीराम पुन: भरत जी पर निर्णय का भार डाल कर उनके प्रति अपने अटल प्रेम और विश्वास का परिचय देते हैं ।

कीन्ह अनुग्रह अमित अति,
सब बिधि सीतानाथ ।
करि प्रनाम बोले भरत,
जोरि जलज जुग हाथ ।।

⊗ अनुग्रह=कृपा अमित=अपार, जुग (युग)=दोनों ।

★ सीतापति श्रीराम ने सब प्रकार से मुझ पर अत्यन्त अपार अनुग्रह किया । ऐसा समझ कर भरत जी ने कमलवत दोनों हाथों को जोड़कर प्रणाम किया और बोले –

* भगवान प्रेम तो दे ही रहे थे, सही ढंग से विचार करने का मार्गदर्शन देकर भरत की मोह बुद्धि भी दूर कर दी यह भरत समझ गये ।

कहौं कहावौं का अब स्वामी ।
कृपा अम्बनिधि अन्तरजामी ।।

⊗ अम्बुनिधि=समुद्र, अन्तरजामी (अन्तर्यामी)=अन्तर की बात जानने वाले ।

★ हे स्वामी, कृपा के समुद्र, अन्तर्यामी ! अब मैं क्या कहूँ और क्या कहलवाऊं ।

गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला ।
मिटी मलिन मन कलपित सूला ।।

⊗ मलिन=मैली, कलपित=कल्पित, सूला (शूल)=पीड़ा ।

★ गुरु महाराज को प्रसन्न और स्वामी को अनुकूल जान मेरे मलिन मन की कल्पित पीड़ा मिट गयी है ।

* श्रीराम के उद्बोधन से भरत की समझ में आ गया कि वे अकारण अपनी कल्पना से दुखी हो रहे हैं । अकारण दोष देना दूसरों को हो या स्वयं को दु:ख का कारण ही बन जाता है ।

अपडर डरेउँ न सोच समूलें ।
रविहि न दोस देव दिसि भूलें ।।

⊗ अपडर=मिथ्या भय से , समूलें=जड़, रविहिं=सूर्य को, दिसि=दिशा ।

★ मैं मिथ्या भय से ही भयभीत था । मेरे सोच की जड़ ही न थी । दिशा भूल जाने पर हे देव ! सूर्य का दोष नहीं है ।

* भरत समझे थे कि श्रीराम उन्हें कुटिल मानते होगें, पर उनकी वह कल्पना निर्मूल थी। श्रीराम का स्वभाव सूर्य की तरह निश्चित दिशा में चलता है, वे उसे समझ न सके तो उसमें दोष उन्हीं का था श्रीराम का नहीं ।

देव दीन्ह सब मोहि अभारू ।
मोरे नीति न धरम बिचारू ।।

⊗ अभारू=भार-जिम्मेदारी, बिचारू=विचार ।

★ हे देव ! आपने सारी जिम्मेदारी मुझ पर डाल दी है, पर मुझ में न तो नीति का विचार है न धर्म का ।

* अपनी कमजोरी, अज्ञान तथा कमी को जो व्यक्ति सभी के सामने बिना संकोच के स्वीकार कर लेता है, वह सदैव लाभ में ही रहता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू ।
रहत न आरत कें चित चेतू ।।

⊗ स्वारथ=स्वार्थ, हेतू=कारण, चेतू=चेत-(विवेक), चित=चित्त।

★ **मैं तो अपने स्वार्थ के लिये सब बातें कह रहा हूँ । क्योंकि (दुःखी) मनुष्य के चित्त में विवेक नहीं रहता है ।**

* भरत के मन में अब तक यह आग्रह प्रधान था कि श्रीराम अयोध्या लौटें- पर उसके प्रतिक्रिया स्वरूप श्रीराम को क्या संकोच होगा इसे वे भूले थे, अतः अब तक अपने कहे हुए को स्वार्थपरक मान लिया ।

अब कृपाल मोहि सो मत भावा ।
सकुच स्वामि मन जाइ न पावा ।।

★ **हे दयालु ! अब तो वही मत मुझे पसन्द आती है, जिसको कहने में (स्वामी) आपके मन मे कोई संकोच न हो ।**

* भरत अपने आर्त-भाव मोहग्रस्त स्थिति से बाहर आ गये तथा भगवान के प्रति किसी प्रकार का आग्रह या अपनी इच्छा का दबाव देना छोड़ दिया ।

जनक दूत तेहि अवसर आए ।
मुनि बसिष्ठ सुनि बेगि बोलाए ।।

★ **उसी समय, राजा जनक जी के दूत आए । यह सुनकर मुनि वशिष्ठ जी ने उन्हें तुरन्त ही बुलवा लिया ।**

आए निकट देखि अनुरागे ।
सादर मिलन परस्पर लागे ।।

★ **राजा जनक जी भी वहाँ पहुँचे, उन्हें निकट आये देखकर सब प्रेम में भर गये और आदरपूर्वक आपस में मिलने लगे ।**

लगे कहन उपदेश अनेका ।
सहित धरम नय बिरति बिबेका ।।

⊗ कहन=कहने, बिरति=वैराग्य ।

★ **वे सब धर्म, नीति, वैराग्य तथा विवेकयुक्त उपदेश देने लगे ।**

* यह ज्ञान सब भ्रान्तियों को मिटाकर सही निर्णय लेने की क्षमता पैदा करता है । इसलिये इनकी चर्चा एवं श्रवण सत् पुरुष करते रहते हैं ।

कौसिक कहि कहि कथा पुरानी ।
समुझाई सब सभा सुबानी ।।

⊗ कौसिक=विश्वामित्र, सुबानी=सुन्दर वाणी से ।

★ **विश्वामित्र जी ने पुराना इतिहास बताकर सारी सभा को सुन्दर वाणी से समझाया ।**

* जन साधारण सिद्धान्त की अपेक्षा कथा-प्रसंगों द्वारा बात आसानी से समझ लेते हैं ।

सीय मातु कह बिधि बुधि बांकी ।
जो पय फेनु फोर पबि टाँकी ।।

⊗ बिधि=विधाता, बुधि=बुद्धि, फेनु (फेन)=झाग, फोर=फोड़ पबि=वज्र ।

★ **चर्चा की शृंखला में श्री जानकी जी की माता सुनयना जी ने कहा कि विधाता की बुद्धि भी कितनी तिरछी है, कि वह दूध के झाग जैसी कोमल वस्तु को भी वज्र की टांकी से तोड़ रहा है ।**

* सुनयना जी प्रेमवश श्रीराम एवं जानकी जी के वन गमन को उनकी कोमलता के अनुपात में भयंकर कष्ट मानने लगीं ।

सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल,
सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काक उलूक बक,
मानस सकृत मराल ।।

⊗ सुधा=अमृत, गरल=विष, करतूति=कार्य, कराल=भयंकर, जहँ तहँ=जहाँ तहाँ, काक=कौआ, उलूक=उल्लू, बक=बगुला, मराल=हंस।

★ **विधाता की सभी करतूतें भयानक हैं । अमृत केवल सुनने में आता है और विष हर स्थान पर मिल जाता है । कौवे, उल्लू और बगुले सभी स्थानों पर दिखते हैं पर हंस तो मान सरोवर में ही हैं ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* (१) सुनयना जी मोहवश एक पक्षीय चिन्तन कर रहीं हैं । (२) श्रेष्ठ वस्तु हर जगह नहीं मिलती उसे प्रयासपूर्वक प्राप्त करना चाहिए ।

कौशल्या कह दोष न काहू ।
करम बिबशदुख सुख छति लाहू ।।

⊗ बिबस=अधीन, छति(क्षति)=हानि ।

★ **उनकी बात सुनकर कौशल्या जी कहने लगीं कि किसी का यह दोष नहीं है । सब कर्मवश दुःख-सुख हानि और लाभ पाते हैं ।**

* हमारे सुख दुःख हमारे कर्मों की प्रतिक्रियायें हैं ।

कठिन करम गति जान बिधाता ।
जो सुभ असुभ सकल फल दाता ।।

★ **शुभ और अशुभ सभी फलों को देने वाला विधाता ही कर्म की कठिन गति को जानता है ।**

* कठिन गति से तात्पर्य किसी के पक्ष में न झुकने वाली व्यवस्था तथा सामान्य मनुष्य की समझ के बाहर गति से है ।

ईस रजाइ सीस सबही कें ।
उतपति थिति लय बिषहु अमी कें ।।

⊗ रजाइ=आज्ञा, सीस=शीश, उतपति=उत्पत्ति, थिति (स्थिति)=पालन, लय=संहार, अमी=अमृत ।

★ **ईश्वर की आज्ञा सभी के सिर पर है । उत्पत्ति, पालन और संहार तथा अमृत और विष ये सभी उसी के अधीन कार्य करते हैं ।**

* सभी शुभ-अशुभ क्रियायें ईश्वर के निर्धारित नियमों के अनुसार ही चलती हैं ।

देबि मोह बस सोचिअ बादी ।
बिधि प्रपंचु अस अचल अनादी ।।

★ **मोह के कारण ऐसी चिन्ता करना व्यर्थ है, विधाता का क्रम सदैव से एक सा चला आ रहा है ।**

* भला बुरा हमारे कर्मों की प्रतिक्रियायें हैं इसके लिये उसे दोष नहीं दिया जा सकता ।

जानउँ सदा भरत कुलदीपा ।
बार बार मोहिं कहेउ महीपा ।।

⊗ कुलदीपा=कुल का दीपक , महीपा=राजा (दशरथ)।

★ **श्री कौशल्या माता ने कहा मैं भरत को हमेशा से कुल को उजागर करने वाला ही समझती हूँ । मुझे महाराज ने भी यही अनेक बार कहा है ।**

* भरत के प्रति जनक पुर वालों के भ्रम को माता कौशल्या मिटा देना चाहती हैं । स्पष्ट है कि कुल दीपक समझा जाने वाला पुत्र अनीति नहीं कर सकता ।

कसें कनकु मनि पारिखि पाएँ ।
पुरुष परिखिअहिं समयँ सुभाएँ ।।

⊗ कनकु (कनक)=सोना, मनि=मणि, पारिखि=जौहरी, सुभाएँ=स्वभाव ।

★ **सोना कसौटी पर कसे जाने पर और मणि जौहरी (पारखी) द्वारा परखे जाने पर ही पहचाना जाता है । वैसे हो पुरुष की परीक्षा समय पड़ने पर उसके स्वभाव से व उसका चरित्र देखकर हो जाती है ।**

* माता का संकेत यह है कि भरत समय की परीक्षा की कसौटी पर भी खरे उतर चुके हैं । माता कौशल्या का भरत के प्रति यह भाव संयुक्त परिवारों के लिये आदर्श है ।

अनुचित आज कहब अस मोरा ।
सोक सनेह सयानप थोरा ।।

⊗ कहब=कहना, सयानप=सयानापन, विवेक=चतुराई ।

★ **किन्तु आज मेरा ऐसा कहना भी अनुचित है क्योंकि शोक और स्नेह में विवेक कम हो जाता है ।**

* माँ कौशल्या विवेक मूर्ति हैं । अपनी परम प्रामाणिक उक्ति को भी किसी पर थोपती नहीं हैं । भरत राम के पक्ष में अपना निर्णय ले रहे हैं, इसलिये कौशल्या उनका पक्ष ले रही हैं ऐसा भ्रम लोगों को हो सकता है यह वे समझती हैं ।

सनि सुरसरि सम पावनि बानी ।
भई सनेह बिकल सब रानी ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **कौशल्या जी की गंगाजी के समान पवित्र करने वाली वाणी सुनकर सभी रानियाँ स्नेह से विकल हो उठीं ।**

* माँ कौशल्या के छल हीन स्नेह युक्त वचनों ने केकैयी सहित सभी रानियों को प्रभावित किया । हृदय की शुद्धता में ऐसी ही शक्ति है ।

लखि सनेह सुनि बचन बिनीता ।
जनक प्रिया गह पाय पुनीता ।।

⊗ जनक प्रिया=जनक जी की पत्नी (सुनयनाजी), गह=पकड़ लिये, पाय=चरण।

★ **कौशल्याजी के प्रेम को देखकर और उनके विनम्र वचनों को सुनकर जनक जी की प्रिय पत्नी (सुनयना जी) ने उनके पवित्र चरण पकड़ लिये ।**

* विवेक युक्त आदर्श का इतना कुशल निर्वाह देखकर सभी के मन में सम्मान जागना स्वाभाविक है । सुनयना जी ऐसा ही सम्मान कौशल्या जी को देती हैं ।

देबि उचित असि बिनय तुम्हारी ।
दशरथ घरिनि राम महतारी ।।

⊗ घरिनि=पत्नी, महतारी=माता ।

★ **सुनयना जी कहने लगीं— हे देवि ! आप राजा दशरथ जी की पत्नी और श्री रघुनाथ जी की माता हैं । आपकी ऐसी नम्रता उचित ही है ।**

* कौशल्या जी ने अपने श्रेष्ठ आचरण से स्वयं अपना तथा पति एवं पुत्र का भी सम्मान बढ़ाया । परिवार के हर सदस्य का आचरण उसके परिवार के गौरव से जुड़ा रहता है ।

प्रभु अपने नीचहु आदरहीं ।
अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं ।।

⊗ आदरहीं=आदर करते हैं, अगिनी=अग्नि, धूम=धुँआ, तिनु=तृण, घास, धरहीं=धरते हैं ।

★ **ईश्वर अपने नीच जनों का भी मान करते हैं । (उसके अंशधर) अग्नि धुऐं को और पहाड़ घास को अपने सिर पर धारण करते हैं । (अत: आप क्यों न इतनी उदार होगीं ?)**

* महान व्यक्ति अपने छोटों को भी आदर देते हैं ।

तापस बेष जनक सिय देखी ।
भयउ प्रेम परितोष बिसेषी ।।

⊗ तापस=तपस्विनी, परितोष=सन्तोष, बिसेषी=विशेष ।

★ **सीताजी को तपस्विनी के वेश में देखकर जनक जी को विशेष प्रेम और सन्तोष हुआ ।**

* जनक ज्ञानी थे मोह आदि से मुक्त थे, अत: पुत्री को कर्तव्य पर दृढ़ देखकर उन्हें प्रसन्नता हुई, उसके कष्ट की कल्पना से वे दु:खी नहीं हुए ।

पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ ।
सुजस धबल जगु कह सबु कोऊ ।।

★ **राजा जनक ने कहा— बेटी ! तूने दोनों कुल पवित्र कर दिये। तेरा निर्मल यश संसार में फैल रहा है और सभी लोग सराह रहे हैं ।**

* पुत्र सुपुत्र निकले तो एक कुल का यश बढ़ता है तथा पुत्री सुपुत्री हो तो वह दोनो कुलों का यश बढ़ाती है । अत: लड़कियों को संस्कारवान बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए ।

जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी ।
गबन कीन्ह बिधि अंड करोरी ।।

⊗ जिति=जीतकर, सुरसरि=देवनदी गंगा, कीरति=कीर्ति, सरि=नदी, गबन कीन्ह=बहने लगीं, बिधि अंड=ब्रह्माण्ड, करोरी=करोड़ों ।

★ **तेरी कीर्ति रूपी नदी, देवताओं की नदी गंगा जी को भी जीतकर करोड़ों ब्रह्माण्डों में बह चली है ।**

* कर्तव्य निष्ठापूर्वक पालन करने का बहुत महत्व है । सराहना से आदर्श पालन करने वाले का उत्साह और भी बढ़ता है ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय-६

ब्रह्माम्भोधसमुद्भवं कलिमल
प्रध्वंसनं चाव्ययं ।
श्रीमच्छम्भु मुखेन्दु सुन्दर
वरे संशोभितं सर्वदा ॥
संसारामय भेषजं सुखकरं
श्रीजानकी जीवनं ।
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति
सततं श्रीरामनामामृतम् ॥

⊗ ब्रह्म अंबुधि=ब्रह्म ज्ञान रूपी समुद्र, समुद्भव=उत्पन्न, प्रध्वंसेन=नष्ट करने वाले, अव्ययम्=अविनाशी, भेषजं=औषधि, कृतिन = सुकृती (श्रेष्ठ कर्म परायण ।)

★ **वे श्रेष्ठ कर्म परायण व्यक्ति धन्य हैं जो कलियुग के मल को नष्ट कर देने वाले, ज्ञान समुद्र के मन्थन से उत्पन्न सार रूप भगवान शंकर के मुख रूपी चन्द्रमा में शोभा पाने वाले, संसार चक्र रूपी रोग की औषधि, सबको सुख देने वाले श्री सीता जी के जीवन स्वरूप श्रीरामनाम रूपी अमृत का पान करते रहते हैं ।**

* श्रीराम के सच्चे भक्त सत्कर्म परायण, कलि के प्रभाव से मुक्त, भोगों के बन्धन से मुक्त एवं सबके हितैषी होने चाहिए ।

राम बचन गुरु नृपहि सुनाए ।
साल सनेह सुभाय सुहाए ॥

★ **गुरु वशिष्ठजी ने राजा जनक जी को (चित्रकूट में अब तक की चर्चा का सारांश सुनाते हुए) श्रीरामचन्द्र जी के शील, स्नेह युक्त स्वाभाविक वचन सुनाये ।**

* सही निर्णय लेने के लिए जनक जैसे ज्ञानी का संयोग लेना उचित था । अस्तु उन्हें घटना क्रम की पूरी जानकारी दी गयी ।

महाराज अब कीजिअ सोई ।
सब कर धरम सहित हित होई ॥

★ **हे महाराज ! अब वही कीजिए, जिसमें हम सभी का धर्म भी निभे और हित भी हो ।**

* जो कार्य सभी के हित के स्थान पर स्वयं के सुख-भोग की दृष्टि से किये जाते हैं उन्हें धर्म युक्त कार्य नहीं कहा जा सकता ।

सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी ।
बोले भरत धीर धरि भारी ॥

⊗ तन=शरीर, बारी=पानी।

★ **(राजा जनक ने जब भरत से सलाह माँगी तब) भरत जी उनकी बात सुनकर पुलकित शरीर से आँखों में पानी भर कर बड़े धैर्य के साथ कहने लगे ।**

* भावों की अधिकता में कहीं मर्यादा के प्रतिकूल शब्द न निकल जायें इसलिये ऐसे प्रसंग में विशेष रूप से धैर्य रखना होता है ।

प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू ।
कुल गुरु सम हित माय न बापू ॥

⊗ आपू=आप, माय=माता, बापू (बाप)=पिता ।

★ **हे प्रभु, आप हमारे लिए पिता के समान प्रिय तथा पूजनीय हैं, तथा कुलगुरु श्री वशिष्ठजी के समान हमारा हित चाहने वाले तो माता-पिता भी नहीं होते ।**

* (१) भाई के श्वसुर को पिता तुल्य पूज्य मानकर भरत ने आदर्श पारिवारिक भावना का स्वरूप प्रकट किया । (२) गुरु अपने ज्ञान और अनुभव के कारण माता-पिता से भी अधिक हित कर सकते हैं ।

स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू ।
बैरु अन्ध प्रेमहि न प्रबोधू ॥

⊗ बिरोधू =विरोध, बैरु=बैर, अन्ध=अन्धा, प्रबोधू=ज्ञान ।

★ **स्वामी के प्रति कर्तव्य-पालन करने में और स्वयं के स्वार्थ में विरोध है (दोनों एक साथ नहीं निभ सकते) । बैर अन्धा होता है और प्रेम को ज्ञान नहीं रहता (बात स्वार्थ वश कही जा रही हो या प्रेमवश, दोनों में ही भूल होने का भय है) ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* बैरी क्रोध वश तथा प्रेमी मोहवश सही स्थिति नहीं देख पाता । ऐसी स्थिति में यदि स्वार्थपूर्ण निर्णय हो गया तो सेवक धर्म खण्डित होगा, इसलिये भरत सतर्कता बरत रहे हैं ।

राखि राम रुख धरमु ब्रतु,
पराधीन मोहि जानि ।
सबके संमत सर्वहित,
करिअ पेम पहिचानि ।।

★ भरत कहते हैं मै पराधीन हूँ ऐसा मानकर मेरे से कुछ मत पूछिये । श्रीराम की रुचि, धर्म और सत्यव्रत रखते आप सभी का प्रेम पहिचानते हुए जो सबके सम्मत तथा सबके लिए हितकारी हो वही कीजिये ।

* पराधीन का अर्थ है बुद्धि प्रेमभाव के अधीन है अत: निष्पक्ष निर्णय नहीं ले सकती । राजा जनक को उस मोह से मुक्त समझ भरत जी उन्हें उचित निर्णय लेने का आग्रह करते हैं ।

भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ ।
सहित समाज सराहत राऊ ।।

★ भरतजी के वचन सुनकर, उनका स्वभाव देखकर, समाज सहित राजा जनक जी उनकी प्रशंसा करने लगे ।

* निश्छल स्वभाव लोगों पर जादू जैसा असर करता है ।

धरम धुरीन धीर नय नागर ।
सत्य सनेह सील सुख सागर ।।

⊗ धरम धुरीन=धर्म धुरन्धर, धीर=धैर्यवान, नय नागर=नीति में चतुर ।

★ धर्म के आधार, धीर नीति में चतुर, सत्य, स्नेहशील और सुख के समुद्र ।

देसु काल लखि समउ समाजू ।
नीति प्रीति पालक रघुराजू ।।

⊗ लखि= देखकर, समउ=समय, समाजू=समाज-परिस्थितियाँ ।

★ नीति पूर्वक प्रीति का पालन करने वाले श्रीरामचन्द्रजी देश, काल अवसर और समाज देखकर—

बोले बचन बानि सरबसु से ।
हित परिनाम सुनत ससि रसु से ।।

⊗ बानी सरबस=बाणी के सर्वस्व अर्थात् बोलने के ढंग में श्रेष्ठतम, परिनाम=परिणाम, ससि रस (शशि रस)=चन्द्रमा का रस (अमृत) ।

★ ऐसे वचन बोले जो मानों वाणी के सर्वश्रेष्ठ प्रयोग कहे जा सकते हैं । परिणाम में हितकारी और सुनने में चन्द्रमा के रस (अमृत) के समान थे ।

* श्रेष्ठ व्यक्ति वाणी में हितकारी— प्रभाव तथा सरसता दोनों का समावेश करने में कुशल होते हैं ।

तात भरत तुम्ह धरम धुरीना ।
लोक बेद बिद प्रेम प्रबीना ।।

⊗ बिद=जानने वाले, प्रबीना=प्रवीण (चतुर) ।

★ हे तात भरत! तुम धर्म की धुरी को धारण करने वाले लोक और वेद दोनों को जानने वाले और प्रेम में प्रवीण हो ।

* धर्म को सँभालने के लिए शास्त्र ज्ञान तथा व्यावहारिकता दोनों की ही आवश्यकता होती है ।

तुम्हहि बिदित सबही कर करमू ।
आपन मोर परम हित धरमू ।।

⊗ बिदित=जानकर, करमू=कर्म, आपन=अपना, मोर=मेरा, धरमू=धर्म ।

★ तुम्हें सभी के कर्तव्यों का ज्ञान है, हमारे तथा अपने हित और धर्म को समझते हो ।

* भगवान परोक्ष रूप से अपने उत्तरदायित्व (राक्षस वध) तथा उनके कर्तव्य (राज्य-रक्षा) का संकेत दे रहे हैं ।

मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा ।
तदपि कहउँ अवसर अनुसारा ।।

★ जो भी हो मुझे सब प्रकार से तुम्हारा भरोसा है, फिर भी अवसर के अनुसार कुछ कहता हूँ ।

* अपने छोटों की योग्यता पर भरोसा भी करना उचित है, पर उनकी योग्यता बढ़ाते रहने के लिये समय देखकर अपना मार्गदर्शन भी देते रहना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राजकाज सब लाज पति,
धरम धरनि धन धाम ।
गुरु प्रभाउ पालिहि सबहिं,
भल होहहिं परिनाम ।।

⊗ लाज=लज्जा, पति=प्रतिष्ठा, गुरु प्रभाउ=गुरु का प्रभाव अर्थात् सामर्थ्य ।

★ **राज्य के सभी कार्य, लज्जा, प्रतिष्ठा, धर्म, पृथ्वी, धन और मकान इन सभी की रक्षा गुरुदेव की शक्ति से हो जायेगी और हमारे लिये परिणाम शुभ ही होगा ।**

* अनुभव की कमी से राज्य की रक्षा कैसे होगी इस प्रश्न का समाधान गुरु की सामर्थ्य का ध्यान दिलाकर कर दिया । श्रेष्ठ मार्गदर्शन के आधार पर तत्परता से चलें तो अनुभव हीन व्यक्ति भी बड़े कार्य संभाल सकता है । यहाँ गुरू की सामर्थ्य का भी स्पष्ट संकेत है ।

सो तुम्ह करहु करावहु मोहू ।
तात तरनिकुल पालक होहू ।।

⊗ करावहु=करवाओ, मोहू=मुझ से भी, तरनिकुल=सूर्य कुल, होहू=हो जाओ ।

★ **वही तुम करो और मुझसे भी करवाओ । हे तात तुम सूर्यकुल के पालनकर्ता बनो ।**

* श्रीराम की तथा दशरथ जी की प्रतिष्ठा की रक्षा भरत द्वारा तत्परता से अपना कर्तव्य पालन करने से ही सम्भव है, अत: उन्हें सूर्यवंश का पालक कहा ।

सो बिचार सहि संकट भारी ।
करहु प्रजा परिवार सुखारी ।।

★ **इसे विचार कर भारी कष्ट सहकर भी प्रजा और परिवार को सुखी करों ।**

* श्रीराम का विछोह और स्वयं राज्य की व्यवस्था सँभालना भरत को भावनात्मक पीड़ा पहुँचाने वाला था, पर भगवान राम कष्ट सहकर भी प्रजा का हित करने के राजकर्तव्य का स्मरण दिलाकर उन्हें इसके लिये तैयार करते हैं ।

जानि तुम्हहि मृदु कहऊँ कठोरा ।
कुसमयँ तात न अनुचित मोरा ।।

⊗ कठोरा=कठोर (वियोग की बात), कुसमयँ=बुरा समय ।

★ **हे तात्! तुमको कोमल जानकर भी मैं कठोर वियोग की बात कहता हूँ, पर खराब समय में मेरे लिए यही उचित बात है ।**

* किसी व्यक्ति की भावनाओं की मृदुलता समझते हुए भी उसे कठोर कर्तव्य पालन की प्रेरणा देनी पड़ती है । समय की माँग देखते हुए उसे अनुचित नहीं कहा जाता ।

होहिं कुठायँ सुबन्धु सहाए ।
ओड़िअहिं हाथ असनिहु के घाए ।।

⊗ कुठायँ=कुअवसर, सुबन्धु=अच्छे भाई, सहाए= सहायक, ओड़िअहिं=रोके जाते हैं, असनिहु=वज्र, घाए =आघात ।

★ **खराब समय में श्रेष्ठ भ्राता ही सहायक होते हैं । वज्र के आघात को भी हाथ से रोका जाता है ।**

* भाई का महत्व शरीर में हाथ की तरह है । शरीर पर वज्र भी गिरे तो पहले हाथ आगे आकर उसे यथा शक्ति रोकता है ।

सेवक कर पद नयन से,
मुख सो साहिब होइ ।
तुलसी प्रीति की रीति सुनि,
सुकबि सराहहिं सोइ ।।

⊗ कर=हाथ, पद=पैर, नयन=आँख, साहिब=मालिक, सुकबि = श्रेष्ठ कवि।

★ **सेवक हाथ, पैर और नेत्र के समान और स्वामी मुख के समान होना चाहिए । तुलसी दास जी कहते हैं कि सेवक-स्वामी की प्रीति की रीति सुनकर सुकवि उसकी प्रशंसा करते हैं ।**

* सेवक शरीर के अंगों की तरह तालमेल से काम करने वाले हों तथा स्वामी मुख (सिर) की तरह विचारशील हों तभी सराहनीय हैं ।

भरतहि भयउ परम संतोषू ।
सनमुख स्वामि बिमुख दुख दोषू ।।

⊗ संतोषू=संतोष, सनमुख=सन्मुख(अनुकूल), विमुख=मुँख मोड़ लेना, दोषू=दोष ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ भरत जी को परम सन्तोष हुआ । स्वामी के पक्ष में होते ही उनके दु:ख और दोषों ने मुँह मोड़ लिया (वे उन्हें छोड़कर भाग गये)।

* भगवान की ओर मुख करते ही दु:ख और दोषों की ओर से पीठ हो जाती है, अर्थात् उनका प्रभाव नहीं रहता । ऐसी स्थिति में साधक को भरत की तरह सन्तोष प्राप्त होता है ।

सो अवलम्ब देव मोहि देई ।
अवधि पारु पावौं जेहि सेई ।।

⊗ अवलम्ब=सहारा, देई=दें, अवधि=निश्चित समय, पारु=पार, पावौं=पा जाऊं, सेई=सेवा कर, जेहि=जिसकी ।

★ हे देव ! आप मुझे वह आसरा दें, जिसके आधार पर मैं इस समय को बिता सकूँ ।

* भरत ने राम द्वारा दिये गये संकेत अर्थात् स्वयंसेवक भाव से गुरु के मार्गदर्शन में राज्य की रक्षा का उत्तरदायित्व स्वीकार कर लिया, किन्तु कर्तव्य का बोध होता रहे तथा प्रेरणा मिलती रहे इसके लिये आधार (सहारा) माँगा ।

मुखिआ मुख सो चाहिए,
खान पान कहुँ एक ।
पालइ पोषइ सकल अंग,
तुलसी सहित बिबेक ।।

⊗ मुखिया=प्रधान, सो=समान, खान-पान कहुँ=खाने पीने को, पालइ पोषइ=पालन पोषण करने वाला ।

★ (श्रीराम जी ने कहा) प्रधान को मुख के समान होना चाहिए जो खाने पीने में तो एक (अकेला) है, परन्तु न्याय पूर्वक सब अंगों का पालन पोषण करता है ।

* जैसे खाना केवल मुँह खाता है पर अन्न का पोषण शरीर के सारे अंगों को उचित अनुपात से मिल जाता है, उसी प्रकार मुखिया द्वारा नियन्त्रण तथा वितरण किया जाना चाहिए ।

राजधरम सरबस एतनोई ।
जिमि मन माहँ मनोरथ गोई ।।

⊗ राजधरम=राजधर्म, एतनोई=इतना ही, सरबस=सर्वस्व (सार), जिमि=जैसे ।

★ जैसे एक मन के अन्दर असंख्य मनोरथ छिपे रहते हैं, उसी प्रकार राजधर्म सूत्र रूप में इतना ही है, उसी की अनेक धारायें हो जाती हैं ।

* मुखिया का यह सिद्धान्त परिवार, समाज तथा राष्ट्र सभी पर लागू होता है, इस सूत्र के सहारे पर सही व्यवस्था सम्भव है ।

बन्धु प्रबोध कीन्ह बहु भाँती ।
बिन अधार मन तोष न साँती ।।

⊗ प्रबोध=समझाना (आश्वासन देना), बिन अधार=बिना आधार, तोष=सन्तोष, साँती=शान्ति ।

★ श्री रघुनाथ जी ने भाई भरत को अनेक प्रकार से सान्त्वना दी, परन्तु बिना अवलम्बन के मन में न संतोष हुआ न शान्ति मिली ।

* भरत ने आधार माँगा था । सबसे श्रेष्ठ आधार सही मार्गदर्शन है जो श्रीराम जी ने सबसे पहले दिया, किन्तु भरत का सन्तोष किसी स्थूल चिन्ह के बिना नहीं हो रहा था ।

भरत सील गुर सचिव समाजू ।
सकुच सनेह बिबस रघुराज ।।

⊗ सील=शील, सचिव=मंत्री ।

★ इधर तो भरत जी का शील प्रेम और इधर गुरुजनों, मंत्रियों तथा समाज की उपस्थिति ! यह देखकर श्री रघुनाथ जी संकोच तथा स्नेह के विशेष वशीभूत हो गये ।

* भरत प्रभु का कोई चिन्ह चाहते हैं— गुरुजनों एवं समाज के सामने अपना बड़प्पन दिखाते हुए वह देने में श्रीराम को संकोच होता था ।

प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्हीं ।
सादर भरत सीस धरि लीन्हीं ।।

⊗ पाँवरी=खड़ाऊँ, दीन्हीं=दिया ।

★ प्रभु श्रीरामचन्द्र जी ने कृपाकर खड़ाऊँ दे दीं और भरत जी ने उन्हें आदर पूर्वक सिर पर रख लिया ।

* संकोच पर भावना ने विजय पायी और श्रीराम ने भरतजी को अपना प्रतीक चिन्ह दे दिया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भरत मुदित अबलंब लहे ते ।
अस सुख जस सिय राम रहे ते ।।

⊗ मुदित=उल्लसित (आनन्दित), लहे=पाये, अस=ऐसा, जस=जैसा, रहे ते=रहने से ।

★ **भरत जी इस अविलम्ब के मिल जाने से आनन्दित हैं । उन्हें ऐसा ही सुख हुआ जैसे श्री सीताराम जी के रहने से होता ।**

* प्रभु ने जन संकोच होते हुए भी भरत की इच्छा पूरी करने के लिए पादुकायें दीं, इस भाव को भरत ने परख लिया, अत: पादुकाओं में उन्हें श्रीराम का पूर्ण स्नेह दिखने लगा ।

जथा जोग करि विनय प्रनामा ।
बिदा किए सब सानुज रामा ।।

⊗ जथा जोग=यथायोग्य, सानुज=भाई लक्ष्मण जी सहित ।

★ **सबको यथायोग्य विनय एवं प्रणाम करके श्रीराम तथा लक्ष्मण जी ने सब लोगों को चित्रकूट से विदा किया ।**

* विदा करते समय जो जैसा स्थान रखता हो उसके अनुसार उसे नम्रता पूर्वक प्रणाम करने से विदा होने वाले के हृदय में आत्मीयता अधिक बढ़ती है ।

नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे ।
सब सनमानि कृपानिधि फेरे ।।

⊗ सनमानि=सम्मान करके, फेरे =लौटाया ।

★ **कृपानिधान श्रीरामचन्द्र जी ने छोटे, मध्यम और बड़े सभी श्रेणी के पुरुष एवं महिलाओं को सम्मान करके लौटाया ।**

* भगवान राम का व्यवहार सबके साथ लिंग-भेद, पदभेद, जाति-भेद आदि से परे था ।

जनकु रहे पुर बासर चारी ।
राज काज सब साज सँभारी ।।

⊗ पुर=नगर (अयोध्या), बासर=दिन, चारी=चार, संभारी= सँभालकर ।

★ **जनक जी चार दिन अयोध्या में रहे और राज-काज एवं सब साज-समान को सँभाल दिया ।**

* बच्चों पर उत्तरदायित्व आ पड़ने पर अनुभवी सम्बन्धियों को उनकी व्यवस्था जमाने में अपने अनुभव का लाभ देना चाहिए ।

सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू ।
तेरहुति चले साजि सबु साजू ।।

⊗ सौंपि=सौंपकर, सचिव=मंत्री, राजू=राज्य, तेरहुति (तिरहुत)= मिथिलानगरी ।

★ **मंत्री, गुरुजी तथा भरत जी को राज्य सौंपकर सारा साज समान ठीक करके जनक जी तिरहुत को चले ।**

* परोपकारी व्यक्ति सारी व्यवस्था बनाकर उचित अधिकारियों को सौंपकर निस्पृह भाव से चल देते हैं ।

नगर नारि नर गुर सिख मानी ।
बसे सुखेन राम रजधानी ।।

⊗ सिख=शिक्षा, मानी=मानकर, सुखेन=सुखपूर्वक ।

★ **नगर के स्त्री-पुरुष गुरु वशिष्ठ की शिक्षा मानकर श्रीराम जी की राजधानी अयोध्या जी में सुख पूर्वक रहने लगे ।**

* नगर के पुरोहित (गुरु अथवा ब्राह्मण) को निस्वार्थ भाव से नगर वासियों को धर्म का सही रूप समझाते रहना चाहिए, ताकि नगर वासी उस पर चलकर सुख पूर्वक रह सकें ।

सुनि सिख पाइ असीस बड़ि,
गनक बोलि दिनु साधि ।
सिंहासन प्रभु पादुका,
बैठारे निरुपाधि ।।

⊗ गनक=गणना करने वाले, दिनसाधि=अच्छा मुहूर्त साधकर, निरुपाधि=निर्विघ्नता पूर्वक, बैठारे=विराजित्र कराया ।

★ **भरत जी ने गुरु की शिक्षा और आशीर्वाद पाकर विचारकों से दिन निश्चित करके प्रभु की चरण पादुकाओं को निर्विघ्नता पूर्वक सिंहासन पर विराजमान कराया ।**

* भरत स्वयं सिंहासन पर नहीं बैठे उस पर भगवान की पादुकायें रखदीं तथा स्वयं सेवक की तरह अपना कर्तव्य पूरा करने लगे । निस्पृह सेवा का ऐसा उदाहरण विश्व भर में मिलना कठिन है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राम मातु गुर पद सिरु नाई ।
प्रभु पद पीठ रजायसु पाई ।।

⊗ राममातु=कौशल्याजी,पद-पीठ=सिंहासन स्थित पादुकायें ।

★ **श्रीराम जी की माता कौशल्या जी व गुरु वशिष्ठ जी को सिर नवाकर और प्रभु श्रीराम जी की खड़ाऊँ की राजाज्ञा पाकर–**

नंदिगांव करि परन कुटीरा ।
कीन्ह निवास धरम धुरधीरा ।।

⊗ करि =बनाकर, नंदिगाँव=नन्दिग्राम, धरमधुर धीरा=धर्म की धुरी धारण करने वाले ।

★ **धर्म की धुरी धारण करने वाले (धर्म रक्षक) भरत जी ने नंदिग्राम में पर्णकुटी बनायी और उसमें निवास किया ।**

* भगवान राम वन में हैं, अत: भरत भी वनवासी तपस्वी की तरह रहने लगे ।

जटाजूट सिर मुनि पट धारी ।
महि खनि कुस साँथरी सँवारी ।।

⊗ जटाजूट=बँधी जटा, मुनिपट=मुनियों के वस्त्र (बल्कल), खनि=खोदकर, साँथरी=आसनी, सँवारी=बिछायी ।

★ **सिर पर जटाजूट और शरीर में बल्कल धारण कर पृथ्वी को खोदकर उसके अन्दर कुश की आसनी बिछायी ।**

* भगवान से अपनी आसनी नीची रहे इस दृष्टि से धरातल से भी नीचे भरत ने अपनी आसनी बिछाई ।

असन बसन बासन व्रत नेमा ।
करत कठिन रिषिधरम सप्रेमा ।।

⊗ असन=भोजन, बसन=वस्त्र, बासन=बर्तन, व्रत=उपास, नेमा=नियम, रिषिधरम=ऋषि-धर्म, सप्रेमा= प्रेम के साथ ।

★ **भोजन, वस्त्र, बर्तन, व्रत, नियम – सभी बातों में वे ऋषियों के कठिन धर्म का आचरण करने लगे ।**

* तप से शक्ति का जागरण होता है यह भरत जानते थे । अत: अपने उत्तरदायित्व सँभालने के लिए सुविधायें एकत्रित नहीं कीं, बल्कि तपस्वी की स्थिति बनायी । छोटी बड़ी हर वस्तु उसी के अनुरूप रखी ।

भूषन बसन भोग सुख भूरी ।
मन तन बचन तजे तिन तूरी ।।

⊗ भूषन=गहने, बसन=कपड़े, भोगसुख भूरी=अनेकों प्रकार के भोग-सुख, तिन=तृण, तूरी=तोड़कर (प्रतिज्ञाकर)।

★ **गहने, कपड़े और अनेक प्रकार के भोग सुखों को तन, मन और वचन से तृण तोड़कर, तिनके के समान महत्वहीन घोषित करके – प्रतिज्ञा लेकर त्याग दिया ।**

* जिन भोगों के लिए दुनिया लालायित रहती है उन्हें मनोबल सम्पन्न व्यक्ति तृण की तरह छोड़ देते हैं ।

अवध राजु सुर राजु सिहाई ।
दसरथ धन सुनि धनदु लजाई ।।

⊗ अवधराज=अयोध्या के राज्य को, सुरराज=देवराज इन्द्र, धनदु =कुबेर, लजाई=लजाते हैं ।

★ **अयोध्या के राज्य को देखकर इन्द्र सिहाते हैं । दशरथ के धन को सुनकर धनपति कुबेर लज्जा करते हैं ।**

तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा ।
चंचरीक जिमि चम्पक बागा ।।

⊗ बिनु रागा=अनासक्त, चंचरीक=भौंरा, चम्पक=चम्पा का फूल ।

★ **उसी नगर में भरत जी अनासक्त होकर इस प्रकार निवास कर रहे हैं जैसे चम्पा के बाग में भौंरा ।**

* चम्पा की सुगन्धि सबको लुभाती है पर भौंरा उससे दूर रहता है । कहते हैं उस गंध से उसे कष्ट होता है । जब चित्त भगवान में लग जाता है तो संसार के भोग साधक को हर्षदायक नहीं कष्टदायक लगने लगते हैं ।

रमा बिलासु राम अनुरागी ।
तजत बमन जिमि जन बड़भागी ।।

⊗ रमा बिलास=लक्ष्मी के विलास (भोगैश्वर्य), बमन- वमन (उल्टी की हुई), बड़भागी=बड़े भाग्यशाली ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ श्रीरामचन्द्र जी के भक्त भाग्यवान पुरुष लक्ष्मी के विलास (धन) को वमन किये हुए पदार्थ की भांति त्याग देते हैं ।

* भौतिक दृष्टि वाले जिसे देख ललचाते हैं आध्यात्मिक दृष्टि वालों को वह वमन की तरह विकारयुक्त दिखते हैं ।

देह दिनहुँ दिन दूबरि होई ।
घटइ तेज बल मुख छबि सोई ।।

⊗ दिनहु दिन=दिन प्रतिदिन, दूबरि=दुर्बल, छबि=शोभा ।

★ भरत जी का शरीर दिन प्रतिदिन दुर्बल होता जाता है । अत: उसका तेज और बल भी घट रहा है, किन्तु मुख की आभा वैसी ही बनी हुई है ।

* तपस्या से शरीर दुर्बल हो भी सकता है पर मुख की कान्ति (ओज) कभी नहीं जाती ।

नित नव राम प्रेम पन पीना ।
बढ़त धरम दल मन न मलीना ।।

⊗ पीना=पुष्ट, धरम =धार्मिक क्रियायें , दल=समूह, मलीना (मलीन)=उदास ।

★ राम-प्रेम का प्रण नित्य नया और पुष्ट होता जा रहा है । धर्म-दल अर्थात् धार्मिक क्रियायें बढ़ रही हैं और मन उदास नहीं है ।

* जो कार्य आन्तरिक रुचि से किया जाता है उसके प्रति प्रेम और उत्साह बढ़ता ही जाता है हमारे मन का ऊबना तथा काम का स्तर गिरना प्रेम में कमी होने का ही प्रमाण है ।

जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे ।
बिलसत बेतस बनज बिकासे ।।

⊗ निघटत=घटता है, सरद=शरदऋतु प्रकासे=विकास से, बिलसत=शोभा पाते हैं, बेतस=बेत, बनज=कमल, बिकासे=विकसित ।

★ जिस प्रकार वर्षा के बाद शरदऋतु के विकास से जल घटता है, किन्तु बेत शोभा पाते हैं और कमल विकसित होते हैं ।

* शरद में बाहर से दिखने वाला जल घटता है, किन्तु अंतर का रस पुष्ट होता है साधक की स्थिति भी ऐसी होती है ।

सम दम संजम नियम उपासा ।
नखत भरत हिय बिमल अकासा ।।

⊗ सम=(शम), संजम=संयम, उपासा=उपवास, नखत=नक्षत्र ।

★ शम, दम, संयम , नियम और उपवास आदि भरत जी के हृदय रूपी निर्मल आकाश के नक्षत्र हैं ।

* निर्मल आकाश में नक्षत्र स्पष्ट दिखते हैं । भरत जैसे स्वच्छ हृदय साधक के अन्दर शम-दम आदि गुण अपनी पूरी प्रतिभा के साथ उभरते हैं ।

नित पूजत प्रभु पाँवरी,
प्रीति न हृदयँ समाति ।
मागि मागि आयुस करत,
राज काज बहु भांति ।।

★ वे नित्य प्रति प्रभु की पादुकाओं का पूजन करते हैं, हृदय में प्रेम नहीं समाता है । पादुकाओं से आज्ञा मांग-मांग कर बहुत प्रकार से राजकार्य कर रहे हैं ।

* प्रेम भावना की प्रखरता के कारण जड़ प्रतीकों से भी भरत प्रत्यक्ष राम जैसी प्रेरणा प्राप्त कर लेते हैं । भावना यदि सही दिशा पा जाये तो ऐसी ही लाभकारी सिद्ध होती हैं ।

लखन राम सिय कानन बसहीं ।
भरत भवन बसि तप तनु कसहीं ।।

⊗ बसहीं=बसते हैं, बसि =रहकर, कसहीं=कसते हैं ।

★ श्री लक्ष्मण जी, राम जी और सीता जी तो वन में निवास करते हैं और भरत जी घर में ही रह कर तप के द्वारा शरीर को कस रहे हैं ।

* साधना के लिये वन जाना आवश्यक नहीं साधक चाहें तो भरत की तरह, अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए भी प्रखर साधना कर सकते हैं ।

रघुपति चित्रकूट बसि नाना ।
चरित किए श्रुति सुधा समाना ।।

⊗ श्रुति=कान, सुधा=अमृत (सुनने में अमृत-सी लगे) ।

★ चित्रकूट में रहकर श्री रघुनाथ जी ने बहुत से चरित्र किए जो कानों को सुनने में अमृत के समान (प्रिय) थे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बहुरि राम अस मन अनुमाना ।
होइहि भीर सबहिं मोहि जाना ।।

⊗ बहुरि=फिर (कुछ समय पश्चात्), अनुमाना=अनुमान किया ।

★ **कुछ समय पश्चात् श्रीराम जी ने मन में ऐसा अनुमान किया कि मुझे सब लोग जान गये हैं, इससे यहाँ बड़ी भीड़ हो जायेगी ।**

* कौतूहल के कारण एकत्रित भीड़ कार्य की गति में बाधक बन जाती है । इसीलिये जहाँ संसारी लोग अपना प्रचार करते हैं, श्रेष्ठ जन अपने आपको छिपा कर रखते हैं ।

सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई ।
सीता सहित चले द्वौ भाई ।।

★ **इसलिए सभी मुनियों से विदा लेकर सीता सहित दोनों भाई वहाँ से चले ।**

* ऋषिगण श्रीराम की उपयोगिता जानते थे अत: उनसे अपनी योजना उन्होंने न तो छिपायी और न ऋषियों ने उनको रोका ।

अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ ।
सुनत महामुनि हरषित भयऊ ।।

★ **जब प्रभु अत्रिजी के आश्रम में गये तो उनका आगमन सुनते ही महामुनि हर्षित हो गये ।**

* सत् पुरुषों का परस्पर मिलन उन्हें संसार की किसी भी मूल्यवान सम्पत्ति से अधिक प्रसन्नता देता है ।

करत दंडवत मुनि उर लाए ।
प्रेम वारि द्वौ जन अन्हवाए ।।

⊗ प्रेम-वारि=प्रेमाश्रुओं से, द्वौ जन=दोनों जनों को (दोनों भाइयों को), अन्हवाए=नहला दिया ।

★ **दण्डवत् करते हुए ही श्रीरामजी को उठाकर मुनि ने हृदय से लगा लिया और प्रेमाश्रुओं के जल से दोनों भाइयों को नहला दिया ।**

* अतिथि को साधनों की अपेक्षा सच्चा प्रेम पाकर अधिक संतोष होता है । प्रेमाश्रु निकलना प्रेम की अधिकता का ही प्रतीक है । यह सच्चा स्वागत है ।

करि पूजा कहि बचन सुहाए ।
दिए मूल फल प्रभु मन भाए ।।

★ **पूजन करके सुन्दर वचन कहकर मुनि ने मूल और फल दिये जो प्रभु के मन को बहुत रुचे ।**

* श्रद्धा सहित आदर सत्कार ही पूजा है । जिस स्तर का अतिथि हो उसी स्तर का सत्कार किया जाता है । अपने पास जो हो वह निश्छल भाव से प्रभु को समर्पित करना उचित है ।

अनुसुइया के पद गहि सीता ।
मिली बहोरि सुसील बिनीता ।।

⊗ सुसील=परम शीलवती, बिनीता=विनम्र ।

★ **परम शीलवती और विनम्र श्री सीता जी अनुसुइया जी के पैर पकड़ करके उनसे मिलीं ।**

* ऋषि पत्नी नारी धर्म की श्रेष्ठ जानकार थीं, अत: सीता जी ने उनका उचित सम्मान किया ।

रिषि पतिनी मन सुख अधिकाई ।
आसिष देई निकट बैठाई ।।

★ **ऋषि पत्नी अनुसुइया जी के मन में बड़ा सुख हुआ । उन्होंने अशीष देकर सीता जी को पास बैठा लिया ।**

* सीता जी यथाशक्ति कर्तव्य परायण जीवन बिता रही थीं, यह देखकर अनुसुइया जी को प्रसन्नता हुई और स्वाभाविक स्नेह एवं अशीष दिया ।

कह रिषिबधू सरस मृदु बानी ।
नारि धर्म कछु व्याज बखानी ।।

⊗ रिषिवधू=ऋषिपत्नी, ब्याज बखानी=बहाने से, नारिधर्म = स्त्रियों के कर्तव्य ।

★ **ऋषिपत्नी अनुसुइया उनके बहाने मीठी और कोमल वाणी से स्त्रियों के कुछ धर्म कर्तव्य वर्णन कर कहने लगीं ।**

* सुपात्र को सामने पाकर जानकार व्यक्ति उसके बहाने सारे समाज को मार्गदर्शन देते हैं ।

मातु पिता भ्राता हितकारी ।
मितप्रद सब सुनि राजकुमारी ।।

⊗ भ्राता=भाई, मितप्रद=सीमा तक ही (सुख) देने वाले हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **हे राजकुमारी ! सुनिये ! माता, पिता भाई सभी भला करने वाले हैं परन्तु ये सब एक हद तक ही सुख देने वाले हैं ।**

* नारी को माता, पिता तथा भाई जीवन भर साथ नहीं दे पाते हैं । एक आयु विशेष तक साथ दे पाते हैं ।

अमित दानि भर्ता बयदेही ।
अधम सो नारि जो सेव न तेही ।।

⊗ अमित दानि=अपार देने वाला, भर्ता=पति, बयदेही (बैदेही)=जानकी, अधम=नीच, सेव =सेवा करना ।

★ **हे जानकी ! पति तो अपार (जीवन भर) अनुदान देता रहता है । वह स्त्री नीच है, जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती ।**

* पति पत्नी को आते ही अपने समान हक दे देता है और जीवन भर अनुदान देता है । अपने बफादार जीवन साथी का सहयोग न करने वाली स्त्री नीच कही जाती है ।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी ।
आपद काल परिखिअहिं चारी ।।

⊗ अरु=और, आपद काल=विपत्ति की घड़ी में, परिखिअहिं =परीक्षा होती है ।

★ **धैर्य, धर्म, मित्र और नारी इन चारों की परीक्षा संकट के समय ही होती है ।**

* यह चारों वैसे तो हर मनुष्य के साथ रहते हैं पर यदि आपत्ति के समय भी साथ दें तभी वह सच्चे हैं, अन्यथा दिखावटी कहे जाते हैं ।

छन सुख लागि जनम सत कोटी ।
दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ।।

⊗ लागि=के लिये, सत कोटी=सौ करोड़, खोटी=दुष्टा।

★ **पल भर के सुख के लिये जो सौ करोड़ जन्मों के कष्टों को नहीं समझती, उसके समान दुष्ट नारी कौन होगी ।**

* थोड़ा से सुख की कल्पना से कठिन समय में जो स्त्री पति का साथ छोड़ दे उसे सच्चे अर्थों में नारी नहीं कहा जा सकता — वह खरी नहीं खोटी सिद्ध होती है ।

सुनि जानकी परम सुख पावा ।
सादर तासु चरन सिरु नावा ।।

★ **जानकी जी ने यह सुनकर परमसुख अनुभव किया और आदरपूर्वक उनके चरणों में सिर नवाया ।**

* जो भी व्यक्ति उपदेश दे तथा सही मार्ग बतावें उसके प्रति आदर अवश्य प्रकट करना चाहिए ।

तब मुनि सन कह कृपानिधाना ।
आयसु होइ जाउ बन आना ।।

★ **तब अत्रि मुनि से दयालु स्वभाव के श्रीराम जी बोले— आप आदेश दें तो अब दूसरे वन में जाऊँ ।**

पुनि रघुनाथ चले बन आगे ।
मुनिवर बृन्द बिपुल संग लागे ।।

⊗ बृन्द=समूह, लागे=लग गये, बिपुल=अधिक संख्या में ।

★ **ऋषि की आज्ञा लेकर श्रीरामचन्द्र जी दूसरे वन के लिये चल पड़े। उनके साथ (स्नेह वश)बड़ी संख्या में मुनि समुदाय भी चल पड़ा ।**

अस्थि समूह देखि रघुराया ।
पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया ।।

⊗ अस्थि-समूह=हड्डियों के ढेर ।

★ **हड्डियों का ढेर देखकर श्रीराम जी को बड़ी दया उत्पन्न हुई । उन्होंने मुनियों से पूछा ।**

* सज्जन पुरुष किसी को कष्ट में नहीं देखना चाहते । अनीति किये जाने का कोई चिन्ह देखकर उसकी उपेक्षा न करके उसका विवरण जानना चाहिये ताकि उसके निवारण का प्रयास हो सके ।

निसिचर निकर सकल मुनि खाए ।
सुनि रघुवीर नयन जल छाए ।।

⊗ निकर=दल, सकल=सब, छाए=भर आये ।

★ **राक्षसों के झुण्डों ने सब मुनियों को भक्षण कर डाला है (ये सब उन्ही की हड्डियाँ हैं) यह सुनते ही श्री रघुवीर के आँखों में जल (आँसू) छा गये ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* सत् पुरुष दुष्टों द्वारा सताये जाते हैं, यह जानकर जिनकी संवेदना न जागे वे व्यक्ति भी असुर कोटि के कहे जाने योग्य हैं ।

निसिचर हीन करउँ महि,
भुज उठाय पन कीन्ह ।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि,
जाइ जाइ सुख दीन्ह ।।

⊗ हीन=रहित, भुज=भुजा (हाथों को) ।

★ श्रीरामचन्द्र जी ने हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की कि मैं धरती को राक्षसों से रहित कर दूँगा । फिर समस्त मुनियों के आश्रमों में जा-जाकर उनको सुख दिया ।

* जन कष्ट देखकर केवल ऊपरी दया ही न दिखावें बल्कि मिटाने के लिए साहस भी दिखावें । (२) ऐसे व्यक्ति मूल कष्ट दूर होने तक घर-घर जाकर अपनी स्नेह सद्भावना से लोगों को सुख पहुँचा सकते हैं ।

पंथ कहत निज भगति अनूपा ।
मुनि आश्रम पहुँचे सुर भूपा ।।

★ मार्ग में मुनियों के बीच अपनी अनूठी भक्ति का वर्णन करते हुए देवताओं के राजा श्रीराम अगस्त्य के आश्रम पर पहुँचे ।

* सत्पात्रों को साधना का सही स्वरूप समझाना भगवान को अच्छा लगता है ।

सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए ।
हरि बिलोकि लोचन जल छाए ।।

⊗ धाए=दौड़े, बिलोकि=देखकर, लोचन=नेत्रों में ।

★ यह सुनते ही अगस्त्य जी शीघ्र ही उठ दौड़े । भगवान श्रीराम को देखकर उनकी आँखों में (आनन्द और प्रेम के आँसुओं का) जल भर आया ।

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं ।
तुम्ह सन प्रभु दुराब कछु नाहीं ।।

⊗ मुनि पाहीं=मुनि से, तुम्हसन=आपसे, दुराब=छिपाव ।

★ तब श्रीरामजी ने मुनि से कहा— हे प्रभो ! आप से तो तनिक भी छिपाव नहीं है ।

* अपने शुभचिन्तकों से छिपाव न करना ही उचित है ।

अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही ।
जेहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही ।।

⊗ मंत्र=विचार, (परामर्श), द्रोही=बैरी ।

★ हे प्रभो! अब आप मुझे वही सलाह दीजिये, जिस भाँति मैं मुनियों के वैरी राक्षसों को मार सकूँ ।

* स्वयं समर्थ होते हुए भी किसी बड़े कार्य को करते समय अनुभवी विचारकों से सलाह लेनी उचित है । इससे कार्य का स्तर तथा उसकी सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है ।

मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी ।
पूछेहु नाथ मोहि का जानी ।।

⊗ मुसुकाने=मुस्काये, जानी=जानकर(समझ कर)।

★ प्रभु की वाणी सुनकर मुनि हँस दिये और बोले— हे नाथ ! आपने क्या सोच कर मुझसे यह प्रश्न किया ।

* ऋषि जानते थे कि भगवान का जन्म ही असुर संहार के लिये हुआ है, यह प्रश्न पूछकर हमारी परीक्षा ले रहे हैं । अत: अगली चौपाइयों में अपनी निष्ठा उनके प्रति प्रकट करने लगे ।

तुम्हरेइँ भजन प्रभाव अघारी ।
जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी ।।

⊗ अघारी=(अघ+अरि) पापों को नाश करने वाले, कछुक=कुछ ।

★ हे पापों का नाश करने वाले श्रीराम ! मैं तो आप ही के भजन के प्रभाव से आपकी कुछ महिमा जानता हूँ ।

* ईश्वर की उपासना के प्रभाव से मनुष्य ईश्वर के बारे में बहुत कुछ जानने और समझने लग जाता है । इसलिए जीवन के लिए उपासना भी आवश्यक है ।

ऊमरि तरु बिसाल तब माया ।
फल ब्रह्माण्ड अनेक निकाया ।।

⊗ ऊमरि=गूलर, निकाया=समूह ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ मुनि कहते हैं– हे श्रीराम ! आपकी लीला गूलर के विशाल पेड़ के समान है, अनेक ब्रह्माण्डों के समूह ही जिसके फल हैं ।

* ऋषि जनसाधारण को भगवान की महिमा समझाने के लिये उदाहरणों द्वारा अपनी बात कह रहे हैं ।

जीव चराचर जन्तु समाना ।
भीतर बसहिं न जानहिं आना ।।

⊗ जन्तु =छोटे-छोटे जन्तु जो गूलर के फल के अन्दर रहते हैं, आना=अतिरिक्त ।

★ चर और अचर प्राणी गूलर के फल के अन्दर रहने वाले छोटे-छोटे जन्तुओं के समान उन ब्रह्माण्ड रूपी फलों के अन्दर बसते हैं और वे अपने उस छोटे से संसार के सिवाय अन्य कुछ नहीं समझते हैं ।

* सृष्टि बहुत है किन्तु जो व्यक्ति अपने आपको छोटे घेरे में सीमित रखता है वह उसी घेर में विचार कर सकता है ।

ते फल भक्षक कठिन कराला ।
तब भयँ डरत सदा सोउ काला ।।

⊗ ते=वे, भक्षक=खाने वाले, कराला (कराल)=भयानक, काला = काल, सोउ=वह ।

★ उन फलों को खाने वाला ही कठिन और कराल काल है । वह काल भी आप से डरता रहता है ।

* भगवान पर विश्वास करने वाले को मौत का भय नहीं सताता ।

ते तुम्ह सकल लोकपति साईं ।
पूँछेहु मोहि मनुज की नाईं ।।

⊗ लोकपति=लोकों के स्वामी, नाईं=तरह ।

★ उन्हीं के सम्बन्ध में आपने, समस्त ब्रह्माण्डों के स्वामी होकर भी मुझ से मनुष्य की तरह प्रश्न किया ।

* महान् एवं समर्थ व्यक्ति को अपने समस्त व्यवहार जन सामान्य जैसे ही रखना चाहिए । जिससे वे सामान्य लोग उसकी अच्छी बात सुन सकें ।

सन्तत दासन्ह देहु बड़ाई ।
तातें मोहि पूँछेहु रघुराई ।।

⊗ सन्तत=सदैव, दासन्ह=दासों को ।

★ आप सेवकों को हमेशा बड़ाई दिया करते हैं । इसी से हे श्रीराम ! आपने मुझ से पूछा है ।

* महान् व्यक्ति हमेशा अपने से छोटों को ही हर कार्य की सफलता का श्रेय दिया करते हैं ।

है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ ।
पावन पंचवटी तेहि नाऊँ ।।

⊗ मनोहर=मन को मोह लेने वाला (सुन्दर), ठाऊं=स्थान, पावन=पवित्र, नाऊँ=नाम का ।

★ हे श्रीराम ! एक परम सुन्दर और पवित्र पंचवटी नाम का स्थान (पास ही) है ।

* ऋषि भगवान को समयानुकूल स्थान बताते हैं जहाँ से राक्षसों की गतिविधियों पर नियन्त्रण किया जा सके ।

बास करहु तहँ रघुकुल राया ।
कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया ।।

⊗ बास=निवास, राया=स्वामी, कीजे=करिये ।

★ हे श्रीराम ! आप सब मुनियों पर कृपा करके वहीं निवास कीजिए ।

चले राम मुनि आयसु पाई ।
तुरतहिं पंचवटी निअराई ।।

⊗ तुरतहिं =शीघ्रही, निअराई=निकट पहुँचे ।

★ मुनि की आज्ञा पाकर श्रीराम वहां से चल दिये और जल्दी ही पंचवटी के पास पहुँच गये ।

* श्रीराम ने कार्य पूरा करने के लिए अपने प्रयास में जरा भी देर नहीं होने दी ।

गीधराज सैं भेंट भइ,
बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ ।
गोदावरी निकट प्रभु,
रहे परन गृह छाइ ।।

⊗ गीधराज=गृधराज जटायु, भइ=हुई, छाइ=बनाकर ।

★ वहाँ गृधराज जटायु से मिलना हुआ । उसके साथ अनेक प्रकार से प्रीति बढ़ाकर प्रभु श्रीरामचन्द्र जी गोदावरी जी के निकट पर्णकुटी बनाकर रहने लगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जब श्रीराम पशुओं तक से मिले और उनसे बहुत प्यार किया तब प्राणीमात्र के प्रति सहानुभूति रखना मनुष्य का परम धर्म है ।

जब ते राम कीन्ह तहँ वासा ।
सुखी भए मुनि बीती त्रासा ।।

⊗ बीती=समाप्त हो गई, त्रासा=डर, भय ।

★ **जब से श्रीराम जी ने वहाँ वास किया तब से सब मुनिगण प्रसन्न रहने लगे उनका भय समाप्त हो गया ।**

* क्षत्री का कार्य समाज को दुष्टता से निर्भय बनाना है । श्रीराम के शौर्य पर ऋषियों को विश्वास था । अत: वे निर्भय हो गये ।

गिरि बन नदीं ताल छबि छाए ।
दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाए ।।

⊗ ताल=तालाब, छबि=शोभा, सुहाये=सुहावने ।

★ **पर्वत, वन, नदी, तालाब शोभा से भर गये । वे दिनों दिन अधिक सुन्दर मालूम होने लगे ।**

* पुरुषार्थी व्यक्ति जहाँ रहते हैं । आस-पास के सभी स्थानों को स्वच्छ और सुन्दर बनाते हैं ।

खग मृग वृंद अनंदित रहहीं ।
मधुप मधुर गुंजत छबि लहहीं ।।

⊗ खग=पक्षी, मृग-वृंद=हरिणों के समूह, अनंदित= आनन्दित, मधुप=भौंरे, गुंजत= गुंजार करते हैं, लहहीं =पाते हैं ।

★ **पक्षी और हिरणों के झुण्ड आनन्दित रहते हैं और भौंरे मधुर गुंजार करते हुए शोभा पा रहे हैं ।**

* प्रकृति के आंगन में जाकर पशु, पक्षी, हरियाली, नदी, झरने, पहाड़ आदि देखने से मन प्रसन्न होता है तथा स्वास्थ्य का लाभ भी होता है ।

एक बार प्रभु सुख आसीना ।
लछिमन बचन कहे छल हीना ।।

⊗ आसीना=बैठे हुए थे, छल हीना=छल रहित ।

★ **एक बार प्रभु श्रीराम आनन्द पूर्वक बैठे हुए थे । उस समय लक्ष्मणजी ने उनसे कपट रहित वचन कहे ।**

* बुद्धिमान पुरुष खाली समय में ज्ञान-चर्चा द्वारा उस समय का लाभ उठाते हैं ।

सुर नर मुनि सचराचर साईं ।
मैं पूँछहुँ निज प्रभु की नाईं ।।

⊗ सचराचर=(सर+चर+अचर) चलने वाले तथा स्थिर जीवों सहित ।

★ **हे देवता, मनुष्य, मुनि और चलने तथा नहीं चलने वाले सभी जीवों के स्वामी ! मैं अपने प्रभु की भाँति आप से पूछता हूँ ।**

* प्रश्न पूछने वाले के मन में ज्ञाता के प्रति आदर भाव होना चाहिए अन्यथा पूछना, बताना दोनों व्यर्थ जाते हैं ।

कहहु ग्यान बिराग अरु माया ।
कहहु सो भगति करहु जेहि दाया ।।

★ **(हे प्रभु) आप ज्ञान वैराग्य और माया का वर्णन कीजिए और उस भक्ति का वर्णन कीजिए जिसके कारण आप कृपा करते हैं ।**

ईश्वर जीव भेद प्रभु,
सकल कहौं समुझाइ ।
जातें होइ चरन रति,
सोक मोह भ्रम जाइ ।।

★ **हे प्रभो ! ईश्वर और जीव का अन्तर भी सब समझाकर कहिये । जिससे आपके चरणों में मेरा प्रेम हो और शोक, मोह तथा सन्देह नष्ट हो जावें ।**

* अज्ञान ही शोक और मोह का कारण बनता है । सद्ज्ञान प्राप्ति के लिए हर व्यक्ति को अपनी ओर से प्रयास करना चाहिए ।

थोरेहि महँ सब कहहुँ बुझाई ।
सुनहु तात मति मन चित लाई ।।

⊗ थोरेहि=थोड़े ही (संक्षेप), महँ=में, बुझाई=समझाकर, मति=बुद्धि, चित=चित्त ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ श्रीराजी बोले– हे भाई! मैं संक्षेप में ही सब समझा कर कहता हूँ । तुम मन, चित्त और बुद्धि लगाकर सुनो ।

* जानकार व्यक्ति संक्षेप में भी तत्व की बात कह लेते हैं, किन्तु वह समझ में तभी आती है जब मनोयोग पूर्वक सुना, समझा जाय । यहाँ मन, बुद्धि और चित्त का अन्तर भी समझ लेना चाहिए ।

मैं अरु मोरि तोर तैं माया ।
जेहिं बस कीन्हें जीव निकाया ।।

⊗ मोरि=मेरी, तोर=तेरी, तैं=तू, निकाया=समूह (समस्त) ।

★ मैं और मेरा, तू और तेरा– यही माया है, जिसने समस्त जीवों को अधिकार में कर लिया है ।

* अपने पराये का भेद मनुष्य को माया के बन्धन में बाँधता है ।

गो गोचर जहँ लगि मन जाई ।
सो सब माया जानेहु भाई ।।

⊗ गो=इन्द्रियाँ, गोचर =विषयों को, जहँ लगि =जहाँ तक, जानेहु=जानो ।

★ इन्द्रियों के सारे विषय और जहाँ तक मन जाता है, हे भाई ! उस सबको माया समझो ।

* माया के बंधनों से मुक्ति पाने के लिये मन की वासनाओं से ऊपर उठना पड़ता है । बुद्धि मन से परे है अतः निर्णय का काम बुद्धि से लेना चाहिए ।

तेहि कर भेद सुनहु तुम सोऊ ।
बिद्या अपर अबिद्या दोऊ ।।

⊗ तेहिकर=उसका, अपर=दूसरा ।

★ उसमें भी एक विद्या (ज्ञान) और दूसरी अविद्या (अज्ञान परक) है, इन दोनों के अन्तर को तुम सुनो ।

* माया के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन किया जा रहा है । माया अहंकार के रूप में ज्ञानी और अज्ञानी दोनों को बाँध लेती है ।

एक दुष्ट अतिशय दुखरूपा ।
जा बस जीब परा भवकूपा ।।

⊗ एक=(अविद्या), दुष्ट=दोषयुक्त, अतिशय=अत्यन्त, भवकूपा=संसार रूपी कुएँ में ।

★ एक (अविद्या) दोष सहित और अत्यन्त दुःख का कारण है जिसके वश में होकर जीव सँसार रूपी कुएँ में पड़ा हुआ है ।

* संसार को भव सागर कहा जाता है, पर यहाँ कुआ कहा गया । अर्थात् अज्ञान युक्त अहंकारी कूप मंडूक ही रह जाता है । उसे संसार की विशालता का बोध ही नहीं हो पाता ।

एक रचइ जग गुन बस जाकें ।
प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें ।।

⊗ रचई=रचता है, गुन=गुण, निजबल=अपना बल, ताकें= उसमें

★ एक (विद्या) है जिसके अधिकार में गुण है और जो जगत की रचना करती है, वह प्रभु से ही प्रेरित होती है उसमें अपनी शक्ति कुछ भी नहीं है ।

* प्रभु की प्रेरणा से ज्ञान (विद्या) के द्वारा सारा संसार बनता है किन्तु इनका भी मैं-मेरे का अहंकार आ जाने से लोग भ्रम में पड़ जाते हैं ।

ज्ञान मान जहं एकऊ नाहीं ।
देख ब्रह्म समान सब माहीं ।।

★ सच्चा ज्ञान वह है जहाँ अभिमान का थोड़ा भी- एक भी (दोष) नहीं है और जो सबमें समान रूप से ब्रह्म को देखता है ।

* अभिमान तभी बढ़ता है जब व्यक्ति अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है, किन्तु सच्चे ज्ञान द्वारा जब सबमें परमात्मा ही दिखाई देता है तो छोटे बड़े का प्रश्न ही नहीं रहता और अभिमान नहीं बढ़ता ।

कहिअ तात सो परम बिरागी ।
तृन सम सिद्धि तीन गुन त्यागी ।।

⊗ परम=सर्व श्रेष्ठ, बिरागी=वैरागी, तृन=तृण ।

★ हे तात ! उसी को परम त्यागी कहना चाहिए जो सारी सिद्धियों को और तीनों गुणों को तिनके के समान त्याग देते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* सामान्य त्यागी संसार के वैभव को ही त्याग पाते हैं, किन्तु सिद्धियों आदि के मोह में फँस जाते हैं । श्रेष्ठ त्यागी उनको भी महत्व नहीं देते ।

माया ईस न आपु कहुँ,
जान कहिअ सो जीव ।
बंध मोच्छप्रद सर्वपर,
माया प्रेरक सीव ।।

⊗ ईस=ईश्वर , बंध=बंधन, सर्वपर=सबसे परे, सीव=ईश्वर।

★ जो माया को, परमात्मा को और अपने आपको नहीं जानता, उसे जीव कहना चाहिए । जो (कर्मानुसार) बन्धन और मोक्ष देने वाला सबसे परे और माया का प्रेरक है वह परमात्मा है ।

* जीव भी ईश्वर का अंश है, पर अपना बोध न होने से माया के वश में रहता है, आत्म बोध की स्थिति में वही आत्म ईश्वर रूप होकर माया को भी आदेश देने वाली सर्वोच्च सत्ता बन जाती है ।

धर्म तें विरति जोग तें ज्ञाना ।
ग्यान मोच्छप्रद वेद बखाना ।।

★ धर्म से वैराग्य भाव और योग से ज्ञान होता है तथा ज्ञान मुक्ति देने वाला है ऐसा वेदों ने वर्णन किया है ।

* भव बन्धनों से मुक्ति बिना सच्चे ज्ञान के नहीं मिलती । ज्ञानयोग अर्थात् ईश्वर के साथ अपने आपको (उपासना आदि द्वारा) जोड़ने से प्राप्त होता है, किन्तु यह योग संसार के प्रति वैराग्य भावना के बिना संभव नहीं । वैराग्य धर्माचरण अर्थात् श्रेष्ठ कर्मों द्वारा प्राप्त हो सकता है ।

जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई ।
सो मम भगति भगत सुखदाई ।।

⊗ बेगि=शीघ्रतापूर्वक, द्रवउँ=प्रसन्न होता हूँ, जातें =जिससे, सुखदाई=सुख देने वाली ।

★ जिससें मैं तुरन्त प्रसन्न होता हूँ, हे भाई! वह मेरी भक्तों को आनन्द देने वाली है ।

* भक्ति में प्रेम मिला रहता है । प्रेम की भावना में मनुष्य इस जगत को अपना मानकर चलता है । जब सारा जगत अपना हो जाता है तो ईश्वर तो अपने आप अपना हो गया । इसी प्रेम के कारण मन में प्रसन्नता अधिक बनी रहती है ।

सो सुतंत्र अवलम्ब न आना ।
तेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना ।।

⊗ सुतन्त्र=स्वतन्त्र, अवलम्ब=आधार(सहारा), आना=दूसरा ।

★ वह भक्ति स्वतन्त्र है, उसको (ज्ञान विज्ञान आदि किसी) दूसरे साधन का आधार नहीं है । ज्ञान और विज्ञान तो उसके वश में है ।

* भक्ति जिसमें प्रेम भरा रहता है, उसमें सब एक हो जाता हैं । संसार भर की सारी वस्तुऐं उस प्रेम भावना की प्रखरता होने से उपलब्ध हो सकती हैं ।

भक्ति तात अनुपम सुख मूला ।
मिलइ जो संत होइँ अनुकूला ।।

⊗ अनुपम=अनूठी, सुख मूला=सुख की जड़ ।

★ हे भाई ! वह भक्ति अनूठी तथा आनन्द की मूल है और वह तभी मिलती है जब संत अनुकूल होते हैं ।

* भक्ति जीवन में आनन्द ले आती है, किन्तु यह जागृत तब होती है जब मनुष्य सन्तों (सज्जनों) की तरह जीवन जीने लगता है ।

भगति के साधन कहउँ बखानी ।
सुगम पंथ मोहि पावहि प्रानी ।।

★ अब मैं भक्ति के उपाय को विस्तार पूर्वक कहता हूँ । यही आसान मार्ग है जिससे जीव मुझको सहज में पा जाता है ।

* किसी विषय की केवल महत्ता ही नहीं, उसका मार्ग भी बताया जाना चाहिए तभी लाभ होता है ।

प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती ।
निज निज कर्म निरत श्रुति रीती ।।

⊗ निरत=लगे हुए, श्रुति रीति=वेद की रीति से ।

★ पहले तो ब्राह्मणों के चरणों में बहुत प्रेम हो और वेद की रीति के अनुसार अपने-अपने (वर्णाश्रम) कर्मों में लगा रहे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* भक्ति की पहली सीढ़ी समाज का हित करने वालों के प्रति स्नेह सम्मान का भाव रखना तथा अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करना है ।

एहि कर फल पुनि विषय विरागा ।
तब मम धर्म उपज अनुरागा ।।

⊗ एहिकर=इसका, मम धर्म=मेरे धर्म (भागवत् धर्म) ।

★ इसका फल फिर सासांरिक वस्तुओं से वैराग्य होगा तब मेरे धर्म (भागवत-धर्म) में प्रेम उत्पन्न होगा ।

* कर्तव्य को महत्व देना आ जाता है तो इन्द्रियों के ओछे विषयों को महत्व मिलना बन्द हो जाता है । तब भगवान का मार्ग समझने योग्य दृष्टि पैदा होती है । जब वह श्रेष्ठ मार्ग दिखता है तो उसके प्रति प्रेम भी बढ़ जाता है ।

सन्त चरन पंकज अति प्रेमा ।
मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा ।।

⊗ पंकज=कमल, नेमा=नियम, क्रम=कर्म ।

★ जिसका महात्माओं के चरणकमलों में बहुत प्रेम हो, मन वचन और कर्म से भजन का दृढ़ नियम हो ।

* सज्जनों के प्रति जिसके मन में सच्चा प्रेम होगा वही उनके बताये मार्ग का मन वचन और कर्म से पालन करने के लिए दृढ़ नियम बना सकेगा । अन्यथा नियम बार-बार टूटते रहेंगे ।

गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा ।
सब मोहि कह जानै दृढ़ सेवा ।।

★ और जो मुझको ही गुरु, पिता, माता, भाई, स्वामी और देवता सभी कुछ जाने और सेवा में दृढ़ता से लगा रहे ।

* जो भगवान के नाते ही सब सम्बन्धों को मानता है उसे कोई दबाव सत्पथ से विचलित नहीं कर सकता ।

मम गुन गावत पुलक सरीरा ।
गद गद गिरा नयन बह नीरा ।।

★ मेरे गुणों को गाते समय जिसका शरीर प्रसन्न हो जाय और नेत्रों से प्रेमाश्रुओं का जल बहने लगे ।

* यहाँ नाम लेने और गुणों का गान करने का अन्तर समझ लेना चाहिए । भगवान के गुणों के प्रति जिसके मन में अपार स्नेह है उसमें वह गुण स्वत: बढ़ते चले आते हैं ।

काम आदि मद दंभ न जाके ।
तात निरन्तर बस मैं ताके ।।

★ और इच्छा, घमण्ड और दम्भ आदि जिसमें न हों, हे भाई ! मैं सदा उसके वश में रहता हूँ ।

* धीरे-धीरे जिस मनुष्य के मन से बेकार की इच्छाएँ निकल जाती हैं और मन में घमण्ड नहीं रहता है तब वह ईश्वर उसमें अपना स्थान बना लेता है, क्योंकि ईश्वर निर्मल मन में ही आता है ।

बचन कर्म मन मोरि गति,
भजनु करहिं निष्काम ।
तिनके हृदय कमल महँ,
करउँ सदा विश्राम ।।

⊗ गति=आशा, निष्काम=बिना फल की प्राप्ति के, इच्छा के, विश्राम=निवास ।

★ जिनको कर्म वचन और मन से मेरी ही इच्छा है और जो निष्काम होकर मेरा भजन करते हैं, उनके हृदय कमल में मैं सदा रहता हूँ ।

* लौकिक कामनाओं की दुर्गन्ध जब तक साधक में रहती है, तब तक भगवान दूर ही रहता है, जब निष्काम अन्त:करण हो जाता है तो प्रभु कमल के लोभी भौंरे की तरह उसमें स्वत: आ जाता है ।

भगति जोग सुनि अति सुख पावा ।
लछिमन प्रभु चरननि सिर नावा ।।

★ इस प्रकार भक्तियोग का मर्म सुनकर लक्ष्मणजी ने बहुत सुख पाया और उन्होंने प्रभु के चरणों में मस्तक नवाया ।

* जिस प्रकार प्रश्न पूछते समय अपना सम्मान का भाव व्यक्त किया जाता है अन्त में भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए ।

एहि बिधि गए कछुक दिन बीती ।
कहत बिराग ग्यान गुनि नीती ।।

★ इस प्रकार वैराग्य, ज्ञान गुण और नीति की बात करते हुए कुछ दिन बीत गए ।

* खाली समय का उपयोग परस्पर ज्ञान संवर्धन में किया जाना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूपनखा रावन कै बहिनी ।
दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी ।।

⊗ अहिनी=सर्पिणी, शूपनखा=सूर्पणखा, बहिनी=बहिन, दारुन (दारुण)=भयंकर ।

★ **शूर्पणखा नाम की रावण की बहिन सर्पिणी के समान भयानक और दुष्ट हृदय की थी ।**

* राक्षसों का बाह्य स्वरूप नहीं अन्त:करण भयानक होता है ।

पंचबटी सो गइ एक बारा ।
देखि बिकल भइ जुगल कुमारा ।।

⊗ एक बारा=एक बार, बिकल=बेचैन, जुगल कुमारा= दोनों राजकुमारों को ।

★ **वह एक बार पंचवटी में गई । वहाँ दोनों राजकुमारों को देखकर काम से पीड़ित हो गई ।**

* लोग अपने अंत:करण की परछाईं ही बाहर देखते हैं । जिन राम लक्ष्मण को देखकर ऋषियों में भक्ति भावना जागती थी, उन्हें ही देखकर शूर्पणखा में काम वासना जागने लगी ।

रुचिर रूप धरि प्रभु पहि जाई ।
बोली बचन बहुत मुसकाई ।।

★ **वह सुन्दर रूप धारण करके प्रभु के पास गयी और हँसकर बोली—**

* प्राय:दुष्ट व्यक्ति सुन्दर रूप एवं मीठे वचनों द्वारा लोगों का अहित करते हैं । 'रुचिर रूप धरि' और बहुत 'मुसकाई' से स्पष्ट होता है कि वह सब स्वाभाविक नहीं बनावटी थी ।

तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी ।
यह सँयोग बिधि रचा बिचारी ।।

⊗ मो=मेरे, संयोग-जोड़ा, रचा=रचना की, बिचारी=विचार करके ।

★ **तुम्हारे समान न तो कोई नर है न मेरे समान कोई नारी, विधाता ने यह जोड़ा विचार करके रचा है ।**

* समाज की उच्छृंखल नारियाँ निर्लज्ज बातें करके पर पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित किया करती हैं । उन्हें उपेक्षापूर्वक टाल देना ही उचित है ।

सीतहि चितइ कही प्रभु बाता ।
अहइ कुमार मोर लघु भ्राता ।।

⊗ चितई=देखकर, बाता=बात, अहई=है ।

★ **सीता की ओर देखकर प्रभु बोले— मेरा छोटा भाई कुंवारा है ।**

* भगवान ने उसे बात बनाकर टाल देने का प्रयास किया ।

गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी ।
प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी ।।

⊗ भगिनी=बहिन, रिपु=शत्रु, बिलोकि=देखकर ।

★ **तब वह लक्ष्मणजी के पास गयी। लक्ष्मण जी ने पहचान लिया कि वह रावण की बहिन है, किन्तु प्रभु की ओर देखकर कोमल वाणी से बोले—**

* लक्ष्मण उसे सम्भवत: दण्डित करने पर नीति के अनुसार पहले समझाने का प्रयास करना उचित है, ऐसा संकेत भगवान का पाकर अपने रोष पर संयम करके मीठे वचन ही बोले ।

सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा ।
पराधीन नहि तोर सुपासा ।।

⊗ सुंदरि=सुन्दरी, उन्ह कर=उनका, दास=सेवक, पराधीन= दूसरे के अधीन, तोर=तुम्हारा, सुपासा=सुभीता ।

★ **हे सुन्दरी ! सुनो मैं उनका सेवक हूँ और पराधीन के साथ तुम्हें सुख नहीं होगा ।**

* लक्ष्मणजी ने उसे परोक्ष रूप से यह बता दिया कि हम सिद्धान्तवादी व्यक्ति हैं और तुझे स्वेच्छा-चारिणी समझ गये हैं ।

सेबक सुख चह मान भिखारी ।
ब्यसनी धन सुभ गति ब्यभिचारी ।।

⊗ चह=चाहे, व्यसनी=विषय भोग में रत, सुभ गति= शुभगति, व्यभिचारी=दुराचारी ।

★ **वे कहने लगे कि यदि सेवक सुख चाहे, भिखारी सम्मान चाहे, व्यसनी धन चाहे और शुभगति व्यभिचारी चाहे ।**

* लक्ष्मण जी परोक्ष रूप से उसे समझाने का प्रयास कर रहे हैं । अपने बहाने से उसे कह दिया कि तू व्यभिचार और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यसन के लिये भीख-सी माँग रही है तुझे सम्मान और शुभगति नहीं मिल सकती ।

लोभी जस चह चार गुमानी ।
नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी ।।

⊗ गुमानी=अभिमानी, चार=चार फल (अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष), नभ दुहि दूध चहत (आकाश को दुह कर दूध चाहना)= असंभव की इच्छा रखना ।

★ लोभी कीर्ति चाहे और घमण्डी धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष–ये चार फल चाहे, तो ये लोग आकाश को दुहकर दूध पाना चाहते हैं अर्थात् असम्भव की इच्छा रखते हैं ।

* ऊपर दोनों चौपाइयो में जिन दुर्गुणों के कारण मनुष्य जिन लाभों को खो देता है उनकी व्याख्या सहज ही हो सकती है । सेवक को सुख नहीं का तात्पर्य यह कि जिसे अपने शरीर को आराम देने की आदत है वह सेवा कर ही नहीं सकता ।

पुनि फिरि राम निकट सों आई ।
प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई ।।

★ वापस आकर श्रीरामजी के पास गयी प्रभु ने उसे फिर लक्ष्मण के पास भेज दिया ।

* दोनों भाई उसे बार-बार टालने का प्रयास करते रहे । लेकिन वासना में अन्धी होने के कारण वह बेशरमी दिखाती ही रही ।

लछिमन कहा तोहि सो बरई ।
जो तृन तोरि लाज परिहरई ।।

⊗ बरई=वरण करना, परिहरई=त्याग देना ।

★ लक्ष्मणजी ने कहा– तुमको वही स्वीकार करेगा जो तृण तोड़कर अर्थात् प्रतिज्ञा करके लज्जा को छोड़ देगा अर्थात् जो बिल्कुल ही निर्लज्ज होगा ।

* संकेत से न समझने पर खरे शब्दों में लक्ष्मणजी ने उसके प्रति अपनी मान्यता प्रकट कर दी। जो सीधे न माने उससे कड़ाई से पेश आना उचित है ।

तब खिसियान राम पहि गई ।
रूप भयंकर प्रगटत भई ।।

⊗ खिसियान=उत्तेजित होकर, प्रगटत भई=प्रकट किया ।

★ तब वह क्रोधित होकर श्रीराम के पास गई और उसने अपना भयंकर रूप प्रकट कर लिया ।

* ऊपर से शिष्ट बना व्यक्ति उत्तेजित होते ही अपने असली रूप को प्रकट कर देता है ।

सीतहि सभय देखि रघुराई ।
कहा अनुज सन सयन बुझाई ।।

★ सीताजी को डरी हुई देखकर रघुनाथ जी ने लक्ष्मणजी को इशारा देकर समझा दिया ।

* शूर्पणखा लज्जित होने की जगह अपनी गलत बात मनवाने के लिए शक्ति प्रयोग के लिये तैयार हुई तो भगवान राम ने लक्ष्मणजी को भी वैसा ही प्रतिकार करने का संकेत किया ।

लछिमन अति लाघवँ सो,
नाक, कान, बिनु कीन्ह ।
ताके कर रावन कहँ,
मनौं चुनौती दीन्ह ।।

⊗ लाघवँ=फुर्ती, सो=उसे, मनौ=मानो ।

★ लक्ष्मणजी ने शीघ्रता से उसको बिना नाक-कान की कर दिया । मानों उसके हाथों रावण को चुनौती दे दी हो ।

* निर्लज्ज नारी या पुरुष जब अपने भ्रष्ट आचरण से बाज नहीं आवे तो ऐसा ही पाठ सिखाना चाहिए कि फिर उसी प्रकार वह अपनी निर्लज्जता द्वारा दूसरों को न ठग सकें ।

खरदूषन पहिं गइ बिलपाता ।
धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता ।।

⊗ बिलपाता=विलाप करती हुई, धिग-धिग=धिक्कार है, पौरुष= पुरुषार्थ (वीरता)।

★ वह रोती हुई खर-दूषण के पास गयी और बोली– हे भाई तुम्हारे पुरुषार्थ एवं बल को धिक्कार है-धिक्कार है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* गलत आचरण वाला व्यक्ति अपनी गलत बात रखने के लिये अपने सहयोगियों और सम्बन्धियों को भी उत्तेजित करता है ।

तेहिं पूछा तब कहेसि बुझाई ।
जातुधान सुनि सेन बनाई ।।

⊗ जातुधान (यातुधान)=राक्षस, सेन=सेना, बनाई=तैयार की।

★ **उन्होंने विवरण पूछा तब शूर्पणखा ने सारी बात बताई । यह सुनकर राक्षसों ने सेना तैयार की ।**

गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं ।
देखि कटक भट अति हरषाहीं ।।

⊗ गर्जहिं=गरजते हैं, तर्जहिं=ललकराते हैं, उड़ाहीं=उड़ते हैं कटक=सेना, भट=योद्धा ।

★ **(वे राक्षस) गर्जन करते हैं, ललकारते हैं, आकाश में उड़ते हैं, सेना देखकर योद्धा बहुत प्रसन्न हो रहे हैं ।**

देखि राम रिपुदल चलि आवा ।
बिहँसि कठिन कोदण्ड चढ़ावा ।।

⊗ रिपुदल=शुत्रओं की सेना, बिहँसि=हँसकर, कोदण्ड=धनुष ।

★ **दुश्मनों की सेना (समीप) चली आयी है, यह देखकर श्रीराम ने हँसकर कठिन धनुष को चढ़ाया ।**

* अकेले राम राक्षसों की समस्त सेना को देखकर न डरे, न उत्तेजित हुए, स्वाभाविक रूप से तैयारी करने लगे । आत्म विश्वासी धीर पुरुषों का यही ढंग है ।

सचिव बोलि बोले खर दूषन ।
यह कोउ नृप बालक नर भूषन ।।

★ **इन्हें देखकर सलाहकारों को बुलाकर खर-दूषण ने कहा— यह राजकुमार कोई मनुष्यों का भूषण है ।**

* व्यक्ति की महानता शत्रु को भी प्रभावित कर लेती है ।

देहु तुरत निज नारि दुराई ।
जीवत भवन जाहु द्वौ भाई ।।

⊗ दुराई=छिपाई हुई , जीयत=जीते जी, द्वौ=दोनों ।

★ **उनसे कहो कि छिपायी हुई अपनी स्त्री हमें जल्दी दे दो, और दोनों भाई जीवित अवस्था में घर लौट जाओ ।**

* अधिकांश दुष्ट व्यक्ति सदा नारियों पर कुदृष्टि रखते हैं ऐसे दुष्ट व्यक्तियों को उचित दण्ड सज्जनों द्वारा दिया जाना चाहिये ।

दूतन्ह कहा राम सन जाई ।
सुनत राम बोले मुसुकाई ।।

★ **दूतों ने जाकर यह समाचार श्रीरामजी से कहा। उसे सुनते ही वे (श्रीरामजी) मुस्कुराकर बोले—**

* दुष्टों की मूर्खतापूर्ण बात सुनकर धीर पुरुष उत्तेजित नहीं होते । सहज भाव से उचित उत्तर दे देते हैं ।

हम छत्री मृगया बन करहीं ।
तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं ।।

⊗ छत्री=क्षत्रिय, मृगया=शिकार, खल=दुष्ट, मृग=पशु ।

★ **हम क्षत्रिय हैं, वन में शिकार करते हैं और तुम्हारे समान दुष्ट— पशुओं को तो खोजते ही फिरते हैं ।**

* (१) वीर पुरुष दुष्ट व्यक्तियों से भयभीत न होते हुए, उनसे डटकर संघर्ष करते हैं । (२) जो खल हैं असल में वे मनुष्य रूप में भी पशु हैं ।

रिपु बलबन्त देखि नहीं डरहीं ।
एक बार कालहु सन लरहीं ।।

⊗ बलबन्त=बलवान, लरहीं=लड़ सकते ।

★ **श्रीराम ने कहा— हम ताकतवर शत्रु को देखकर नहीं डरते हैं । एक बार मृत्यु भी आ जाये तो उससे लड़ सकते हैं ।**

* वीर पुरुष समाज से अनीति मिटाने के लिये बड़े से बड़ा खतरा उठाने को तैयार रहते हैं ।

यद्यपि मनुज दनुज कुल घालक ।
मुनि पालक खल सालक बालक ।।

⊗ दनुज=राक्षस, घालक=नाश करने वाले, सालक =दण्ड देने वाले ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **यद्यपि हम मनुष्य हैं, परन्तु राक्षस-कुल का विनाश करने वाले और मुनियों की रक्षा करने वाले हैं। हम बच्चे हैं, परन्तु दुष्टों को सजा देने वाले हैं।**

* मनुष्य वही हैं जो समाज में फैले हुए बुरे कर्मों को नष्ट करें तथा सज्जन पुरुषों की रक्षा करें। समाज के नौजवानों को सदा ऐसे कार्यों के लिए तैयार रहना चाहिये।

तब चले बान कराल,
फुंकरत जनु बहु ब्याल।
कोपेउ समर श्री राम,
चले बिसिख निसित निकास॥

⊗ कराल=भयानक, फुंकरत=फुफकारते हुए, व्याल=सर्प, कोपेउ=क्रुद्ध हुए, समर=संग्राम, बिसिख=तीक्ष्ण।

★ **तब युद्ध प्रारम्भ हो गया और दोनों ओर से डरावने बाण ऐसे चले, मानों फुंफकारते हुए बहुत से साँप जा रहे हैं। श्रीराम युद्ध में क्रुद्ध हुए और अत्यन्त तीक्ष्ण बाण चले।**

* अनीति के प्रति संघर्ष में अपने क्रोध की शक्ति का भी उपयोग करना उचित है।

जब रघुनाथ समर रिपु जीते।
सुर नर मुनि सब के भय बीते॥

⊗ बीते=नष्ट हो गये।

★ **जब श्री रघुनाथ जी ने संग्राम में शत्रुओं को जीत लिया तब देवता, मुनि और मनुष्य सबका डर नष्ट हो गया।**

* अनीति का कारण मिट जाने पर सभी लोग प्रसन्न हो जाते हैं।

धुआँ देखि खर दूषन केरा।
जाइ सुपनखाँ रावन प्रेरा॥

⊗ धुआं=विध्वंस, केरा=का, प्रेरा=भड़काया।

★ **खर-दूषण का विनाश देखकर शूर्पणखा ने जाकर रावण को भड़काया।**

* अहंकारी व्यक्ति इसी प्रकार नुकसान उठाकर भी सचेत नहीं होता और एक के बाद एक गलतियाँ करने लगता है।

बोली बचन क्रोध करि भारी।
देस कोस कै सुरति बिसारी॥

⊗ देस=देश, कोस (कोष)=खजाना, कै=की, सुरति=सुधि, बिसारी=भुलादी।

★ **वह बड़ी क्रोधित होकर वचन बोली- तूने देश और खजाने की सुधि ही भुला दी।**

* दोषी व्यक्ति अपनी झूठी शान रखने के लिए आदर्शवादिता का झूठा हवाला देकर समझदारों को अपने पक्ष में लाने का प्रयास करते हैं। शूर्पणखा रावण को ऐसा ही भ्रान्त उपदेश करने लगी।

करसि पान सोवसि दिन राती।
सुधि नहिं तब सिर पर आराती॥

⊗ पान=मदिरापान (शराब पीना), सोवसि=सोता रहता है, आराती=शत्रु।

★ **कहने लगी तू शराब पी लेता है और दिन-रात पड़ा सोता रहता है। तुझे मालूम नहीं है कि शत्रु तेरे सिर पर खड़ा है ?**

* आलस्य और नशे में ग्रस्त शासक अपने राज्य की व्यवस्था तथा रक्षा से बेखबर हो जाता है।

राज नीति बिन धन बिन धर्मा।
हरिहि समर्पे बिन सतकर्मा॥

⊗ राज=राज्य, धर्मा=धर्म, समर्पे=समर्पण, सतकर्मा=सत्कर्म।

★ **नीति के बिना राज्य और धर्म के बिना धन प्राप्त करने से, भगवान को अर्पण किये बिना बड़े कर्म करने से।**

* (१) सही नीति न जानने से राज्य नष्ट हो जाते हैं। (२) धर्म न जानने से धन का दुरुपयोग होकर वह व्यर्थ ही खर्च हो जाता है। (३) सतकर्म किये भी और उन्हें भगवान की कृपा न मानकर स्वयं श्रेय लेने से अहंकार किया तो वे भी व्यर्थ हो जाते हैं।

बिद्या बिन बिबेक उपजाएँ।
श्रम फल पढ़ें किएँ अरु पाएँ॥

⊗ बिबेक=विवेक, श्रम=परिश्रम, उपजाएँ=उत्पन्न किये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **विवेक उत्पन्न किये बिना विद्या पढ़ने अथवा पाने से परिणाम में श्रम ही हाथ लगता है उसका लाभ नहीं होता ।**

* विद्या मिल जाय पर उसे कहाँ किस प्रकार उपयोग में लाया जाय यह विवेक न जागे तो विद्या बेकार ही रह जाती है ।

संग तें जती कुमन्त्र ते राजा ।
मान ते ग्यान पान तें लाजा ।।

⊗ जती (यती)=संन्यासी, कुमन्त्र=बुरी सलाह, मान=सम्मान।

★ **विषयों के साथ रहने से संन्यासी, बुरी सलाह से राजा, अभिमान से ज्ञान, मंदिरापान से लज्जा (नष्ट होते हैं)।**

प्रीति प्रनय बिन मद ते गुनी ।
नासहिं बेगि नीति अस सुनी ।।

⊗ प्रनय=नम्रता, मद=अहंकार ।

★ **विनम्रता के अभाव में प्रेम और घमण्ड से गुणवान् शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं, इस प्रकार की नीति मैंने सुनी है ।**

* प्रेम के वातावरण में विनम्रता के स्थान पर भय और आनन्द रखा जावे तो वह प्रेम का वातावरण समाप्त हो जाता है । घमण्ड के कारण व्यक्ति अपने गुणों का उपयोग अपने तथा दूसरों के लिये नहीं कर पाता अत: वह नष्ट हो जाते हैं ।

रिपु रुज पावक पाप प्रभु,
अहि गनिअ न छोट करि ।
अस कहि विविध विलाप,
कर लागी रोदन करन ।।

⊗ रिपु=शत्रु, रुज =रोग, अहि=सर्प, प्रभु=स्वामी ।

★ **हे प्रभु ! शत्रु, रोग, आग, पाप और सर्प को कभी छोटा नहीं समझना चाहिए । ऐसा कह करके शूर्पणखा अनेक प्रकार से रावण के सामने रोने लगी ।**

* शत्रु और सर्प छोटा हो तो भी रुष्ट होने पर अनिष्ट कर सकता है, तथा रोग आग एवं पाप उपेक्षा के कारण बड़े हो जाते हैं और व्यक्ति को नष्ट कर देते हैं ।

सूपनखहि समुझाइ करि,
बल बोलेसि बहु भाँति ।
गयउ भवन अति सोच वस,
नींद परइ नहिं राति ।।

★ **रावण ने शूर्पणखा को समझाकर बहुत प्रकार से अपने बल का वर्णन किया, किन्तु (मन में) वह बहुत ही चिन्तावश होकर अपने महल में गया, उसे रात भर नींद नहीं आयी ।**

* रावण स्थिति की गम्भीरता समझ गया था अत: ऊपर से निश्चिन्तता का दिखावा भर कर सका, अन्दर से चिंतित ही रहा ।

दसमुख गयउ जहाँ मारीचा ।
नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ।।

★ **स्वार्थ से भरा हुआ और नीच रावण वहाँ गया जहाँ मारीच था और उसको मस्तक नवाया ।**

* मारीच रावण का सेवक था, पर स्वार्थवश रावण ने उसे मस्तक झुकाया । खोटे व्यक्ति स्वार्थ वश ऐसी ही अव्यावहारिक नम्रता दिखाते हैं ।

नवनि नीच कै अति दुखदाई ।
जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ।।

⊗ नवनि=झुकना (नम्रता), अति=अत्यंत, अंकुस= अंकुश, धनु=धनुष, उरग=सर्प, बिलाई=बिल्ली ।

★ **दुष्ट का झुकना (नम्रता) बहुत ही दु:खदायी होता है जैसे-अंकुश, धनुष, सर्प और बिल्ली का झुकना ।**

* अंकुश और धनुष चोट करते समय ही झुकते हैं । सर्प और बिल्ली हमले के लिये झुकते हैं, इसी प्रकार दुष्ट व्यक्ति अपनी घात लगाने के लिये ही झुकते हैं ।

भयदायक खल कै प्रिय बानी ।
जिमि अकाल के कुसुम भवानी ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ भयदायक =डरावनी, खल=दुष्ट, प्रिय बानी=मधुर बोली, अकाल=बिना ऋतु के, कुसुम=फूल ।

★ **हे भवानी ! दुष्ट की मीठी वाणी भी बड़ी भयानक होती है जैसे बिना ऋतु के फूल !**

* जो सदा दुष्टता करते हैं वे अचानक मीठी वाणी बोलने लगें तो वह खतरे का चिन्ह ही समझा जाय ।

दसमुख सकल कथा तेहि आगें ।
कही सहित अभिमान अभागें ।।

★ **दुर्भाग्यशाली रावण ने सारी कथा घमण्ड सहित उसके सामने कही।**

* घमंड में डूबा व्यक्ति बातें भी बड़ी शान से कहता है, जिन्हें सुनकर भी भले आदमी को शर्म लगने लगे ।

होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी ।
जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी ।।

⊗ छलकारी=छल करने वाले, हरि आनौं=चुरा लाऊं, नृपनारी=राजबधू (सीता) ।

★ **(और फिर कहा) तुम छल करने वाले नकली मृग बनो, जिस उपाय से मैं उस राजवधू सीता को चुरा लाऊँ ।**

* दुष्टजन अपना मतलब सिद्ध करने के लिए समाज के दूसरे लोगों को भी नीच कर्म करने के लिए प्रोत्साहन देते हैं ।

तेहिं पुनि कहा सुनहु दससीसा ।
ते नर रूप चराचर ईसा ।।

★ **तब मारीच ने कहा— हे रावण ! सुनिये ! वे मनुष्य रूप में चराचर के प्रभु हैं ।**

जौं नर तात तदपि अति सूरा ।
तिन्हहिं बिरोध न आइहि पूरा ।।

⊗ जौ=यदि, तदपि=फिर भी, सूरा=शूर, विरोध=बैर, पूरा=भला, (सफलता) ।

★ **और हे भाई! यदि वे मनुष्य हैं, तो भी बड़े वीर पुरुष हैं । उनसे विरोध करने में पूरा न पड़ेगा अर्थात् सफलता नहीं मिलेगी ।**

* मारीच गलत कार्य करने का फल पा चुका था अत: उसने रावण को भी गलत कार्य से रोकने का प्रयास किया । ऐसा हर समझदार को करना चाहिये ।

जाहु भवन कुल कुसल बिचारी ।
सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी ।।

⊗ कुल-कुसल=कुल की कुशलता, जरा=ईर्ष्या, गारी=गाली ।

★ **अत: अपने कुल का भला विचार कर लौट जाइये । यह सुनकर रावण जल उठा और उसने बहुत-सी गालियाँ दीं । (दुर्वचन कहे)।**

* अहंकारी व्यक्ति को दूसरे की नेक सलाह पर भी क्रोध आता है ।

गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा ।
कहु जग मोहि समान को जोधा ।।

⊗ जिमि=जैसे (तरह) मूढ़=मूर्ख, बोधा=उपदेश, जोधा=योद्धा ।

★ **अरे मूढ़ ! तू गुरु के समान मुझे ज्ञान सिखाता है । बता तो संसार में मेरे समान बहादुर कौन है ?**

* अपने समान किसी को न मानने वाला अहंकार से अन्धा हुआ ही कहा जाता है ।

तब मारीच हृदयँ अनुमाना ।
नवहि बिरोधे नहिं कल्याना ।।

⊗ अनुमाना=अनुमान किया, नवहिं =नौ से, विरोधे=बैर करने में, कल्याना=कल्याण ।

★ **तब मारीच ने मन में अनुमान किया कि इन नौ व्यक्तियों से विरोध करने से भला नहीं होता ।**

सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी ।
बैद बन्दि कबि भानस गुनी ।।

⊗ सस्त्री=शस्त्री=(शस्त्रधारी), मर्मी=भेद जानने वाला, बन्दि=भाट, कवि=कवि, भानस=रसोइया।

★ **शस्त्र को धारण करने वाला, भेद जानने वाला, समर्थ, स्वामी, मूर्ख, धनवान, वैद्य, भाट-कवि, रसोइया और गुणी व्यक्ति ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अस जिय जानि दसानन संगा ।
चला राम पद प्रेम अभंगा ।।

⊗ ऐसा मन में विचार कर, भगवान के चरण में अखण्ड प्रेम रखकर वह रावण के साथ चल पड़ा ।

★ **मारीच रावण का नौकर था अत:वह मर्यादा मानकर उसके साथ तो चला पर उसका हार्दिक भाव श्रीराम के प्रति था । अनाचारी रावण और सदाचारी राम के प्रभाव का स्पष्ट भेद यही है ।**

तेहि बन निकट दसानन गयऊ ।
तब मारीच कपट मृग भयऊ ।।

★ **रावण उस वन के (जहाँ रघुनाथ जी रहते थे) पास गया । तब मारीच माया का हिरन बन गया ।**

अति विचित्र कछु बरनि न जाई ।
कनक देह मनि रचित बनाई ।।

★ **वह अत्यन्त ही अनूठा था, कुछ वर्णन नहीं किया जा सकता । सोने का शरीर (मानो) मणियों से रचकर (जड़कर) बनाया गया था ।**

* नकली वस्तु संसार में असली से भी अधिक चमकीली और आकर्षक लगा करती है ।

सीता परम रुचिर मृग देखा ।
अंग अंग सुमनोहर वेषा ।।

⊗ रुचिर=सुन्दर, सुमनोहर=अत्यन्त मनोहर, वेषा=वेश (छटा), मृग=हिरन ।

★ **सीता जी ने उस परम सुन्दर हिरण को देखा, जिसके अंग-अंग की छवि अत्यन्त मनोहर थी ।**

सुनहु देव रघुबीर कृपाला ।
एहि मृग करि अति सुन्दर छाला ।।

⊗ देव=देव, कृपाला=कृपालु, एहि=इस, छाला= मृगछाला (मृगचर्म) ।

★ **सीता श्रीराम से कहने लगीं— हे प्रभु ! हे कृपालु रघुवीर सुनिये ! इस मृग का चर्म बहुत ही सुन्दर है ।**

सत्यसंघ प्रभु बध करि एही ।
आनहु चर्म कहति बैदेही ।।

⊗ सत्यसंघ=सत्य प्रतिज्ञ, बध करि=मार कर, आनहु=ला दीजिए ।

★ **हे सत्यप्रतिज्ञ प्रभु ! इसको मारकर इसकी चर्म लाकर दीजिए ।**

* सीताजी प्रभु समर्पित जीवन जी रही थीं । उन्होंने अपनी आकांक्षा पूर्ति के लिये प्रभु को कहा । यहाँ वे डिग गयीं— और गलत प्रतिक्रिया चालू हो गयी ।

मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा ।
करतल चाप रुचिर सर साँधा ।।

⊗ कटि=कमर में, परिकर =फेंटा (कमर में बाँधने का वस्त्र), करतल=हाथों में, चाप=धनुष, सर=बाण, साँधा=चढ़ाया ।

★ **हिरण को देखकर श्रीराम जी ने कमर में फेंटा बाँधा और हाथों में धनुष धारण कर उस पर सुन्दर (दिव्य) बाण चढ़ाया ।**

प्रभु लछमनहिं कहा समुझाई ।
फिरत बिपिन निसिचर बहु भाई ।।

⊗ बिपिन=वन में, निशिचर=राक्षस, बहु =बहुत से ।

★ **फिर श्रीराम ने लक्ष्मणजी को समझाकर कहा— हे भाई! वन में बहुत से राक्षस घूमा करते हैं ।**

सीता केरि करहु रखबारी ।
बुधि बिबेक बल समय बिचारी ।।

⊗ केरि=की, रखबारी=रखवाली, बुधि=बुद्धि ।

★ **तुम बुद्धि और विवेक के द्वारा शक्ति और समय का विचार करके सीताजी की रक्षा करना ।**

* (१) घर छोड़ते समय अपने से छोटों को उत्तरदायित्व के प्रति सचेत कर देना चाहिए । (२) उत्तरदायित्व केवल शारीरिक शक्ति से पूरे नहीं होते उसके लिए विवेक, बुद्धि तथा समयानुसार निर्णय की क्षमता भी चाहिए ।

प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी ।
धाये रामु सरासन साजी ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ भाजी=भागा, सरासन=धनुष, साजी=चढ़ाकर।

★ भगवान को देखकर हिरण भाग चला। श्रीरामचन्द्र जी भी धनुष चढ़ाकर उसके पीछे दौड़े।

प्रगटत दुरत करत छल भूरी।
एहि बिधि प्रभुहि गयउ लै दूरी॥

⊗ प्रगटत=प्रकट होता, दुरत=छिपता, भूरी=बहुतेरे, गयउ=गया।

★ प्रकट होता हुआ और छिपता हुआ तथा अनेक छल करता हुआ वह श्रीराम को दूर ले गया।

* दुष्ट व्यक्ति अपना रूप बदल करके लोगों को छला करते हैं। ऐसे समय सावधानी से परिस्थिति का सामना करना चाहिए।

तब तकि राम कठिन सर मारा।
धरनि परेउ करि घोर पुकारा॥

* तकि=(तककर) निशाना साधकर, घोर=भयानक, पुकारा=शब्द करके।

★ तब श्रीराम जी ने निशाना लगाकर कठोर बाण मारा, (जिसके लगते ही) वह जोर का शब्द करके जमीन पर गिर पड़ा।

लछिमन कर प्रथमहि लै नामा।
पाछे सुमरेसि मन महँ रामा॥

⊗ नामा=नाम, पाछे=पीछे, सुमरेसि= सुमिरण किया, महँ=में, रामा=श्रीरामजी।

★ पहले लक्ष्मण जी का नाम लिया उसके पीछे मन में श्रीरामजी का ध्यान किया।

* मारीच की श्रद्धा दोनों भाइयों के प्रति थी अत: दोनों का स्मरण किया। राम का ध्यान बाद में इसलिये कि उन्हीं के ध्यान की स्थिति में प्राण निकल जायें।

आरत गिरा सुनी जब सीता।
कह लछिमन सन परम सभीता॥

⊗ आरत=दु:ख भरी, सभीता=भयभीत।

★ इधर सीता ने दु:ख भरी आवाज (मरते समय मारीच का 'हा लक्ष्मण' की आवाज) सुनी तो वे बहुत ही डर करके लक्ष्मण जी से कहने लगीं।

* प्रेम के कारण अति शंकालु हो उठने से सही बात समझ में नही आती। सीता राम और मारीच की आवाज का अन्तर न समझ सकीं।

जाहु बेगि संकट अति भ्राता।
लछिमन बिहँसि कहा सुन माता॥

⊗ हे लक्ष्मण तुम तुरन्त जाओ, तुम्हारे भाई बड़ी विपत्ति में हैं। लक्ष्मण जी ने हँसकर कहा हे माता ! सुनो—

भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई।
सपनेहु संकट परइ कि सोई॥

⊗ भृकुटि बिलास=भौंहो के इशारे से, सृष्टि=संसार, लय=प्रलय (विनाश), सपनेहु=स्वप्न में भी, परइ=पड़ना, कि=क्या।

★ जिसके भौंहो के संकेत मात्र से सारी सृष्टि का नाश हो जाता है, वे श्रीराम जी क्या कभी स्वप्न में भी संकट में पड़ सकते हैं ?

* समर्थ व्यक्ति संकट में गिरता नहीं है। यदि गिर भी गया तो उसका सामना करने का बल उसमें रहता है।

मरम बचन जब सीता बोली।
हरि प्रेरित लछिमन मति डोली॥

⊗ मरम बचन=मर्म बचन (चुभने वाले वचन), मति=मन, डोली=चंचल हो उठा, हरिप्रेरित=भगवान की प्रेरणा से।

★ इस पर जब सीता जी कुछ कटु वचन कहने लगीं, तब भगवान की प्रेरणा से लक्ष्मण जी का मन भी हिल उठा।

* कटु वचन अपने प्रियजनों को चोट पहुँचाते हैं। अत: उनका प्रयोग नहीं करना चाहिए। सीता ने यह भूल की इसका उन्हें बाद में पश्चात्ताप करना पड़ा।

बन दिसि देव सौंपि सब काहू।
चले जहाँ रावन ससि राहू॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ दिसि=दिशाओं के, देव=देवता, सिसि=शशि, सौंपि=सौंपकर ।

★ वे सीताजी को जंगल और दिशाओं के देवताओं को सुपुर्द कर वहाँ चले, जहाँ रावण रूपी चन्द्रमा के लिये राहूरूप श्रीराम जी थे ।

सून बीच दसकन्धर देखा ।
आवा निकट जती के बेषा ।।

★ रावण सुनसान अवसर देखकर संन्यासी के वेश में श्री सीताजी के पास आया ।

* व्यभिचारी व्यक्ति वेश बदल कर नारियों के चरित्र भंग करने का अवसर ढूंढ़ा करते हैं । इसलिए ऐसे व्यक्तियों से घर की नारियों को सावधान रहना चाहिए ।

जाकें डर सुर असुर डेराहीं ।
निसि न नींद दिन अन्न न खाहीं ।।

⊗ जाकें=जिसके, डर=भय से, सुर=देवता, असुर=दैत्य डेराहीं=डरते हैं, निसि-निशि=रात्रि, खाहीं=खाते हैं ।

★ रावण के भय से देवता और राक्षस तक इतना डरते हैं कि रात को नींद नहीं आती और दिन में (भर पेट) अन्न नहीं खाते ।

सो दससीस स्वान की नाईं ।
इत उत चितइ चला भडिहाईं ।।

⊗ सो=वह, स्वान=कुत्ता, नाईं=की तरह, इत-उत=इधर-उधर, चितइ=देखता हुआ, भड़िहाई=चोरी (सूनाघर पाकर कुत्ता चुपके से बर्तन भाडों में मुँह डालकर कुछ चुरा ले जाता है उसे ''भड़िहाई'' कहते हैं) ।

★ वह ऐसा प्रभावशाली वीर रावण कुत्ते के समान इधर-उधर देखता हुआ भड़िहाई करने चला ।

इमि कुपन्थ पग देत खगेसा ।
रह न तेज तन बुधि बल लेसा ।।

⊗ खगेसा=गरुण, लेसा=लेश ।

★ (काक भुशुण्ड जी कहते हैं) हे गरुड़ जी ! इस प्रकार बुरे मार्ग पर पैर रखते ही मनुष्य में तेज, बुद्धि एवं शक्ति का लेश मात्र भी नहीं रहता है ।

* अच्छे से अच्छा व्यक्ति भी यदि संयोग वश गलत मार्ग पर चल पड़ता है तो उसका सारा तेज, उसकी अकल तथा उसकी शक्ति नष्ट हो जाते हैं ।

नाना विधि करि कथा सुहाई ।
राजनीति भय प्रीति देखाई ।।

★ रावण ने अनेक प्रकार की मनोहर कथाएँ रचकर सीताजी को राजनीति, भय और प्रेम दर्शाया ।

* दुराचारी व्यक्ति अपनी बात मनवाने के लिए ऊपर बताई अनेक चालें चलते हैं, सावधान स्त्री–पुरुषों को उनके प्रभाव में नहीं आना चाहिए ।

कह सीता सुनि जती गोसाईं ।
बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं ।।

★ सीताजी ने कहा– हे साधू स्वामी ! तुम तो दुष्ट की तरह बात कर रहे हो ।

* सतर्क नारी व्यभिचारी व्यक्ति की बात तक से उसकी नीयत का अनुमान लगा लेती है, और उसे वैसा ही कड़ुआ उत्तर देती है ।

क्रोधवन्त तब रावन,
लीन्हिसि रथ बैठाइ ।
चला गगनपथ आतुर,
भयँ रथ हाँकि न जाइ ।।

⊗ क्रोधवन्त=क्रोध में भरकर, लीन्हिसि=लिया, गगनपथ=नभ-मार्ग, आतुर=उतावली पूर्वक, भयँ=डर से ।

★ फिर क्रोधित होकर रावण ने सीताजी को रथ में बैठा लिया और वह बड़ी शीघ्रता के साथ नभ मार्ग से चला, किन्तु भय के मारे उससे रथ हाँका नहीं जाता था ।

* (१) दुष्ट व्यक्ति अपनी पोल खुल जाने पर मर्यादा भूलकर हाथा पाई पर उतर आते हैं । (२) गलत आचरण का भय आदमी की शक्ति कम कर देता है ।

हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा ।
सो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोसा ।।

★ सीताजी विलाप करने लगी– हा लक्ष्मण ! तुम्हारा अपराध नहीं है । मैंने क्रोध किया उसी का फल पाया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* क्रोध के वशीभूत होकर जो भी काम किया जाता है उसका परिणाम प्रतिकूल होता है और पीछे पछताना पड़ता है ।

सीता कै विलाप सुनि भारी ।
भये चराचर जीव दुखारी ।।

★ सीताजी का भारी रुदन सुनकर जड़-चेतन सभी जीव दुखी हो गये ।

* किसी का भी दु:ख भरा जीवन देखकर उसके प्रति सहानुभूति जाग्रत हो जाना मानवीय स्वभाव है ।

गीधराज सुनि आरत बानी ।
रघुकुल तिलक नारि पहिचानी ।।

★ गृद्धराज जटायु ने सीताजी की दु:ख से भरी वाणी सुनकर पहचान लिया कि ये रघुवंशियों में श्रेष्ठ श्रीराम की पत्नी हैं ।

धावा क्रोधवन्त खग कैसें ।
छूटइ पवि परबत कहुँ जैसें ।।

⊗ खग=पक्षी, पवि=वज्र, परबत=पर्वत, कहुँ =की ओर ।

★ जटायु क्रोधित होकर ऐसे दौड़ा जैसे पर्वत की ओर वज्र छूटता है ।

* जटायु की तरह अनीति देखकर उसके प्रतिकार के लिये तुरन्त प्रयास करना चाहिए ।

रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही ।
निर्भय चलेसि न जानहि मोही ।।

⊗ ठाढ़=खड़ा रहे ।

★ पक्षी बोला रे-रे दुष्ट ! खड़ा रह ! निर्भय होकर जा रहा है । मुझे नहीं जानता ।

* नैतिक बल जिसके साथ होता है वह वृद्ध जटायु जैसा होकर भी राक्षस राज रावण को निर्भयता पूर्वक ललकार देता है ।

धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा ।
सीतहि राखि गीध पुनि फिरा ।।

⊗ धरि=पकड़ कर, कच=बाल, बिरथ=बिना रथ का ।

★ उसने रावण के बाल पकड़ कर रथ के नीचे धरती पर गिरा दिया। गीध सीताजी को एक ओर बैठाकर फिर वापस आया ।

* गीधराज ने यह समझदारी की कि रावण सम्हले इसके पूर्व ही उसे चोट मार कर सीताजी को सुरक्षित स्थान पर बिठाकर तब पुन:युद्ध के लिए तैयार हो गया ।

चोचन्ह मारि बिदारेसि देही ।
दण्ड एक भइ मुरुछा ते ही ।।

⊗ चोचन्ह=चोंचों से, मारि=मारकर, बिदारेसि=विदीर्ण कर दिया, देही=शरीर को, दण्ड एक=एक घड़ी ।

★ चोंचों से मार-मार कर रावण के शरीर को छिन्न-भिन्न कर डाला । इससे उसको एक घड़ी के लिये मूर्च्छा हो गयी ।

* दुष्ट या व्यभिचारी व्यक्ति द्वारा जबरन कुकर्म किये जा रहे हों तो जटायु के समान उसका तन-मन से मुकाबला करना चाहिए, जिससे समाज में ऐसे व्यक्ति बढ़ नहीं पायें ।

तब सक्रोध निसिचर खिसियाना ।
काढ़ेसि परम कराल कृपाना ।।

⊗ सक्रोध=क्रोध करके, खिसियाना=खीझकर काढ़ेसि=निकाली, कराल=भयानक, कृपाना=तलवार ।

★ तब क्रोधित होकर उस राक्षस (रावण) ने खिसियाना होकर भयानक, तलवार निकाली ।

* दुष्ट व्यक्ति अपनी हार होते देखता है तो मर्यादा तोड़कर अनीति पर उतर आता है । निहत्थे के साथ शस्त्र लेकर लड़ना अनुचित होते हुए भी रावण कृपाण का उपयोग करने लगा ।

काटेसि पंख परा खग धरनी ।
सुमिरि राम करि अद्भुत करनी ।।

⊗ सुमिरि=स्मरण कर, करि=की, अद्भुत=अनोखी, करनी=लीला ।

★ और उसने जटायु के पंख काट डाले। पक्षी श्रीरामजी की अनूठी लीला का स्मरण कर जमीन पर गिर पड़ा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* दुष्टता का सामना करने में यदि प्राणों की बाजी भी लगानी पड़े तो जटायु पक्षी के समान मनुष्य को पीछे नहीं हटना चाहिए । तभी समाज से दुष्टता दूर हो सकती है ।

सीतहि जान चढ़ाई बहोरी ।
चला उताइल त्रास न थोरी ।।

⊗ जान (यान)=रथ पर, उताइल=उतावली के साथ, त्रास=भय, थोरी=थोड़ी ।

★ सीताजी को रथ पर चढ़ाकर रावण फिर शीघ्रता के साथ चला । उसे भय भी कम न था ।

* अनीति का प्रतिरोध करने से अनीति करने वाले का मनोबल टूटता है । जटायू के प्रतिरोध से रावण का भी आत्म विश्वास डिग गया ।

करति बिलाप जाति नभ सीता ।
व्याध बिबस जनु मृगी सभीता ।।

⊗ जाति=जाती, व्याध=बहेलियाँ, बिबस=वश में, मृगी=हिरिनी, सभीता=डरी हुई ।

★ सीताजी रोती हुई आकाश में जा रही हैं, जैसे बहेलिया के वश में पड़ी हुई कोई भयभीत हिरणी हो ।

गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी ।
कहि हरिनाम दीन्ह पट डारी ।।

⊗ निहारी=देखकर, पट=वस्त्र, डारी=डालना ।

★ पर्वत पर बैठे हुए वानरों को देखकर सीताजी ने भगवान का नाम कहकर वस्त्र डाल दिया ।

* सीता ने अपना मानसिक सन्तुलन नहीं खोया, श्रीराम को अपने हरण का समाचार मिल सके इसके लिये बन्दरों को उनका नाम भी सुना दिया तथा प्रमाण चिन्ह भी छोड़ दिये ।

एहि विधि सीतहि सो लै गयऊ ।
बन अशोक महँ राखत भयऊ ।।

★ इस प्रकार रावण सीताजी को ले गया और अशोक बन में ले जाकर रखा ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय-७

कुन्देन्दीवर सुन्दरावतिबलौ विज्ञान धामावुभौ।
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्र वृन्दप्रियौ ।।
माया मानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ ।
सीतान्वेषणतत्परौ पथगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ।।

⊗ कुन्देन्दीवर=कुन्द और नील कमल, शोभाढ्यौ=शोभा में अग्रणी, श्रुतिनुतौ=वेदों द्वारा वन्दित, सद्धर्मवर्मौ=सद् धर्म के लिए कवच रूप, पथिगतौ=पथिक रूप ।

★ **जो कुन्द के पुष्प (श्वेत) तथा नील-कमल की तरह आशा वाले, बड़े बलवान्, विज्ञान के भण्डार, शोभायुक्त श्रेष्ठ धनुर्धर, वेदों द्वारा वन्दित, गौ एवं ब्राह्मणों के प्रिय, माया से मनुष्य रूप में दिखने वाले, सच्चे धर्म के लिए कवच रूप, सबका भला करने वाले, सीता जी की खोज में लगे हुए पथिक रूप में दोनों भाई निश्चय ही भक्ति देने वाले हों ।**

* सद्धर्म की स्थापना के लिए भगवान मनुष्य रूप धारण करते हैं, उसके लिए कष्ट उठाते हैं, तथा उसमें समर्थ हैं ऐसा समझने वाले अवश्य सच्चे भक्ति मार्ग पर चल पड़ते हैं ।

रघुपति अनुजहि आवत देखी ।
बाहिज चिंता कीन्हि बिसेषी ।।

⊗ आवत=आता हुआ, बाहिज=बाह्य रूप से, विसेषी=विशेष ।

★ **इधर श्रीराम जी ने छोटे भाई लक्ष्मण को आते देख-कर बाहरी रूप से बहुत चिंता की ।**

* अन्तर्यामी भगवान यथार्थ तो जानते थे पर बाहर नर-लीला करते थे ।

जनकसुता परिहरेहू अकेली ।
आयहु तात बचन मम पेली ।।

⊗ जनकसुता=जानकी, परिहरेहू=छोड़कर, बचन मम पेली=मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके ।

★ **हे तात ! तुमने जानकी जी को अकेली छोड़ दिया और मेरे आदेश का उल्लंघन कर यहाँ चले आये ।**

* बड़ो की आज्ञा का उल्लंघन करने से परिणाम बुरे ही निकलते हैं ।

निसिचर निकर फिरहि बन माहीं ।
मम मन सीता आश्रम नाहीं ।।

⊗ निकर=झुंड, मम मन=मेरे मन में ऐसा आता है ।

★ **राक्षसों के समूह वन में फिरते रहते हैं । मेरे मन में ऐसा आता है कि सीता जी अब आश्रम में नहीं हैं ।**

* जहाँ दुष्ट व्यक्ति अधिक संख्या में हों वहाँ विशेष सावधानी ओवश्यक होती है ।

गहि पद कमल अनुज कर जोरी ।
कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी ।।

⊗ अनुज=छोटा भाई, खोरी=दोष ।

★ **छोटे भाई लक्ष्मण जी ने श्रीराम जी के चरण कमलों को पकड़कर हाथों को जोड़कर कहा– हे नाथ ! मेरा कोई अपराध नहीं है ।**

* लक्ष्मण जी ने नम्रता पूर्वक सीताजी के आग्रह पर आश्रम छोड़ने की बात भगवान को बताई ।

अनुज समेत गए प्रभु तहबाँ ।
गोदावरि तट आश्रम जहवाँ ।।

⊗ तहबाँ=वहाँ, जहवाँ=जहाँ पर ।

★ **छोटे भाई लक्ष्मण जी के साथ प्रभु श्रीराम जी वहाँ गये जहाँ गोदावरी नदी के किनारे पर आश्रम था ।**

आश्रम देखि जानकी हीना ।
भए विकल जस प्राकृत दीना ।।

⊗ प्राकृत=स्वाभाविक रूप से मनुष्य की तरह, दीना=दीन (दुःखी) ।

★ **आश्रम को जानकी जी के बिना देखकर श्री रामजी सामान्य मनुष्य की तरह व्याकुल और दीन हो गये ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हा गुन खानि जानकी सीता ।
रूप शील ब्रत नेम पुनीता ।।

★ रामचन्द्र जी विलाप करने लगे– हे जानकी ! गुणों की खान, ज्ञान, रूप, शील व्रत तथा नियमों में पवित्र सीता तुम कहाँ हो ?

* श्रीराम की तरह पत्नी के केवल रूप को ही नहीं गुण, शील एवं सदाचार परायणता को अधिक महत्व देना चाहिए ।

लछमन समझाये बहु भाँती ।
पूछत चले लता तरु पाँती ।।

⊗ लता=बेल, पाँती=पाँत ।

★ लक्ष्मण जी ने अनेक प्रकार से श्रीराम को समझाया । तब श्रीराम लताओं और वृक्षों की पंक्तियों से पूछते हुए चले ।

* दु:खी व्यक्ति अपने दु:ख निवारण के लिए इतना व्याकुल होता है कि जड़ पदार्थों से भी चैतन्य की तरह सहायता की आशा करता है ।

आगें परा गीधपति देखा ।
सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा ।।

⊗ गीधपति=गृध्रपति जटायु, सुमिरत=स्मरण कर रहा था, रेखा=संजा, कुलिश आदि की रेखाएँ ।

★ आगे पहुँचने पर उन्होंने गृध्रपति जटायु को पड़ा देखा । वह श्रीरामजी के चरणों का स्मरण कर रहा था ।

* चरण रेखा से तात्पर्य भगवान के मार्ग से है । घायल अवस्था में भी उसे स्वयं को भगवान के कार्य में लगा देने का गौरव अनुभव हो रहा था

कर सरोज सिर परसेउ,
कृपासिंधु रघुवीर ।
निरखि राम छबि धाम मुख,
बिगत भई सब पीर ।।

⊗ कर सरोज=कर कमल, परसेउ=स्पर्श किया, धाम=भंडार, बिगत=जाती रही, पीर=पीड़ा।

★ दया सागर श्रीरामचन्द्र जी ने उसके सिर पर अपने कर कमलों को फेर दिया। शोभा-धाम श्रीराम जी का परम सुन्दर मुँह देखकर उसकी सब पीड़ा जाती रही ।

* सीता के सम्बन्ध में जटायु को जो जानकारी थी उसे किसी को बताये बिना ही न मर जाऊँ इसकी उसे चिन्ता थी । स्वयं श्रीराम आ गये इस प्रसन्नता में वह अपना सारा कष्ट भूल गया ।

नाथ दसानन यह गति कीन्हीं ।
तहि खल जनकसुता हरि लीन्हीं ।।

⊗ गति=हालत-(दशा), हरि=हरण करना ।

★ जटायु बोला– हे नाथ ! रावण ने मेरी यह हालत की है । उसी दुष्ट ने जानकी जी का हरण किया है ।

लै दच्छिन दिसि गयउ गौसाईं ।
बिलपति अति कुररी की नाईं ।।

⊗ दिसि (दिशि)=दिशा, गौसाईं=स्वामी, कुररी=कुर्ज (एकपक्षी) ।

★ हे गोसाईं ! वह उन्हें लेकर दक्षिण दिशा को गया है । सीता जी कुर्ज की तरह अत्यन्त विलाप कर रही थीं ।

* जटायु के प्राण मुश्किल से रुके हुए थे अत: उसने थोड़े शब्दों में ही सारी जानकारी दे दी ।

दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना ।
चलन चहत अब कृपा निधाना ।।

⊗ दरस=दर्शन, प्राना=प्राण ।

★ हे प्रभो ! मैंने आपके दर्शनों के लिये ही प्राण रोक रखे थे । हे कृपा निधान अब ये (प्राण) चलना ही चाहते हैं ।

राम कहा तन राखहु ताता ।
मुख मुसुकाइ कही तेहि बाता ।।

⊗ मुसुकाइ=मुस्कुराकर, बाता=बात ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ श्रीरामचन्द्र जी ने कहा– हे तात ! शरीर को बनाये रखिये । तब उसने मुस्कुराते हुए मुख से यह बात कही–

* अन्तिम समय में प्रभु का साक्षात्कार हो जाने के बाद शरीर का मोह कौन रखेगा ?

जा कर नाम मरत मुख आबा ।
अधमउ मुकुत होइ श्रुति गाबा ।।

⊗ जाकर=जिसका, अधमउ=अधर्मी भी, मुकुत=मुक्त ।

★ मरते समय जिस प्रभु का नाम मुख में आ जाने से अधम भी मुक्त हो जाता है, ऐसा वेद गाते हैं ।

* अन्तिम समय जो इच्छा होती है उसी के अनुरूप आगामी जन्म का जीवन बनता है । यदि केवल प्रभु का ध्यान रहे तो मुक्ति मिल जाती है ऐसा शास्त्रों का मत है ।

सो मम लोचन गोचर आगें ।
राखौं देह नाथ केहि लागें ।।

⊗ लोचन=आँखों से दिखने वाले रूप में ।

★ वही (आप) मेरे नेत्रों से दिखाई दे सकने योग्य रूप में सामने हैं । हे नाथ ! अब मैं किस लाभ की कामना से देह को रक्खूँ ?

* जटायु का तात्पर्य है कि सत्कार्य में शहीद होना वैसे ही बहुत बड़ा सम्मान है, फिर स्वयं भगवान के सामने वह स्थिति मिले तो उससे अधिक देह की और कोई सार्थकता नहीं हो सकती, जिसके लिए जीवित रहा जाय ।

जल भरि नयन कहहिं रघुराई ।
तात कर्म निज तें गति पाई ।।

⊗ नेत्रों में जल भर श्री रघुनाथ जी कहने लगे– हे तात् ! आपने अपने श्रेष्ठ कर्मों से दुर्लभ गति पायी है ।

★ लोकहित में बलिदान होने वालों का परम गति पर अधिकार हो जाता है यह भगवान स्वयं स्वीकार करते हैं ।

परहित बस जिन्ह के मन माहीं ।
तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ।।

⊗ परहित=परोपकार, बस=बसता है, दुर्लभ=अप्राप्य ।

★ जिसके मन में दूसरों की भलाई की भावना रहती है उसके लिये संसार में कुछ भी अप्राप्य नहीं है ।

* परमार्थी के ऊपर लोक श्रद्धा तथा प्रभु कृपा भरपूर रहती है । स्वयं तो वह पुरुषार्थी होता ही है । ऐसे व्यक्ति के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं रह जाता ।

तन तजि तात जाहु मम धामा ।
देउँ काह तुम्ह पूरनकामा ।।

⊗ जाहु=जाओ, मम धामा=परमधाम, काह=क्या, पूरनकामा=(पूर्ण काम)=जिसकी कोई इच्छा शेष न हो ।

★ हे तात! शरीर छोड़कर आप मेरे परमधाम को जाइये मैं आपको क्या दूँ, आप तो पूर्णकाम हैं, अर्थात् आपको कोई कामना नहीं है ।

* जिसने अपनी सारी इच्छाएँ त्याग दीं ऐसे व्यक्ति के प्रति भगवान भी श्रद्धा व्यक्त करते हैं ।

ताहि देइ गति राम उदारा ।
सबरी कें आश्रम पगु धारा ।।

⊗ उदारा=उदार, सबरी=शबरी, पगु धारा=पधारे ।

★ उदार श्रीरामजी उसे सद्गति देकर शबरी के आश्रम में पधारे ।

* गीध को परम गति दी, तथा शबरी भीलनी के यहाँ स्वयं गये, इसलिए भगवान को परम उदार कहा गया ।

प्रेम मगन मुख बचन न आवा ।
पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा ।।

★ वे प्रेम में ऐसे मग्न हो गयीं कि मुख से वचन नहीं निकला । बार-बार श्रीरामचन्द्रजी के चरण-कमलों में सिर झुकाने लगीं ।

* प्रेम की अधिकता में प्रेमी की स्थिति कुछ समय के लिए विचित्र सी हो जाती है ।

सादर जल लै चरन पखारे ।
पुनि सुन्दर आसन बैठारे ।।

⊗ सादर=आदर पूर्वक, बैठारे=बैठाया ।

★ फिर उन्होंने जल लेकर आदर पूर्वक दोनों भाइयों के चरण धोये और फिर उन्हें सुन्दर आसनों पर बैठाया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कन्द मूल फल सरस अति,
दिए राम कहुँ आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खाए,
बारम्बार बखानि ।।

⊗ सरस=रसयुक्त (स्वादिष्ट), बखानि=प्रशंसा करके ।

★ **उन्होंने अत्यन्त रसीले और स्वादिष्ट कन्द, मूल और फल लाकर श्रीरामजी को दिये । प्रभु ने बार-बार प्रशंसा करके उन्हें प्रेम सहित खाया ।**

* सच्चा सत्कार साधनों से नहीं प्रेम भावना से होता है । भावना जन्य व्यंजनों की अपेक्षा भाव भरे कन्द मूल भगवान को अधिक रुचते हैं।

पानि जोरि आगें भइ ठाढ़ी ।
प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी ।।

⊗ पानि=पाणि (हाथ), ठाढ़ी=खड़ी, बाढ़ी=बढ़ गयी ।

★ **फिर वे हाथ जोड़कर आगे खड़ी हो गयीं । प्रभु को देखकर उनका प्रेम अत्यन्त बढ़ गया ।**

* भगवान को देखकर शबरी का प्रेम और भी अधिक उमड़ पड़ा ।

केहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी ।
अधम-जाति मैं जड़मति भारी ।।

⊗ अस्तुति=स्तुति, अधम=नीच, जड़मति=मूढ़बुद्धि ।

★ **उन्होंने कहा– मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ ? मैं नीच जाति की और अत्यन्त मूढ़ बुद्धि हूँ ।**

* भक्त अपने आपको हमेशा छोटा और दीन ही मानकर चलता है ।

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता ।
मानउँ एक भगति कर नाता ।।

⊗ भामिनी=महिला, मानउँ=मानता हूँ ।

★ **श्रीरघुनाथ जी ने कहा– हे भामिनि ! मेरी बात सुन ! मैं तो केवल एक भक्ति का ही सम्बन्ध मानता हूँ ।**

* भगवान जाति अथवा बुद्धि की हीनता हो तो भी उसे महत्व न देकर भक्त की भावना के अनुरूप अपना स्नेह उसे देते हैं ।

जाति-पाँति कुल धर्म बड़ाई ।
धन बल परिजन गुन चतुराई ।।

★ **जाति, पाँति, कुल, धर्म, बड़प्पन, धन, बल, कुटुम्ब गुण, चतुरता आदि ।**

भगति हीन नर सोहइ कैसा ।
बिन जल बारिद देखिअ जैसा ।।

⊗ भगति हीन=भक्ति हीन, बारिद=बादल ।

★ **उक्त श्रेष्ठताओं युक्त, पर भक्ति के बिना मनुष्य ऐसा लगता है, जैसे जल हीन बादल (शोभा हीन) दिखायी पड़ता है ।**

* यदि सांसारिक बड़प्पन व्यक्ति में हो पर भावना श्रेष्ठ न हो तो वह सूखे बादल जैसा निरर्थक है ।

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं ।
सावधान सुनु धरु मन माहीं ।।

★ **मैं तुझसे अब अपनी नवधा भक्ति कहता हूँ । तू सावधान होकर सुन और मन में धारण कर ।**

* महत्वपूर्ण बात सावधान होकर सुनी जाय और मन में धारण कर ली जाय तभी उसका लाभ उठाया जा सकता है ।

प्रथम भगति सन्तन्ह कर संगा ।
दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ।।

⊗ सन्तन्ह=सन्तों का, संगा=संग, रति=प्रेम, कथा प्रसंगा=कथा प्रसंग ।

★ **पहली भक्ति है सन्तों का सत्संग । दूसरी भक्ति है मेरे कथा-प्रसंग में प्रेम !**

* (१) सन्तों की संगति का अर्थ है अपने जीवन की गति विधियाँ भी उन्हीं की तरह हो जावें । (२) कथा प्रसंग में रुचि का अर्थ है-भगवान के श्रेष्ठ आचरण से प्रेम और वैसा ही बनने में सुख की अनुभूति ।

गुरु पद पंकज सेवा,
तीसरि भगति अमान ।
चौथि भगति मम गुन गन,
करइ कपट तजि गान ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ भगति=भक्ति, अमान=अभिमान रहित ।

★ **तीसरी भक्ति है-- अभिमान रहित होकर गुरु के चरणों की सेवा और चौथी भक्ति यह है कि कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान करे ।**

* (१) गुरुपद सेवा से अर्थ गुरु के निर्देशों का निष्ठापूर्वक पालन है । (२) कपट छोड़कर गुणगान करने का तात्पर्य यह है कि दिखावे के लिए नहीं अतःकरण से भगवान के चरित्र एवं गुण की प्रशंसा करे । सच्ची प्रशंसा का भाव होने से अनुकरण भी स्वतः होने लगता है ।

मन्त्र जाप मम दृढ़ विस्वासा ।
पंचम भजन सो वेद प्रकासा ।।

★ **मेरे (राम) मन्त्र का जाप और मुझ में दृढ़ विश्वास- यह पाँचवी भक्ति है, जो वेदों में प्रसिद्ध है ।**

* (१) मन्त्र जप दृढ़ विश्वास से किया जाना चाहिए । मन्त्र का अर्थ सूत्र रूप में परामर्श भी होता है । मन्त्रों में जीवन की दिशा के संकेत होते हैं उन्हें विश्वास पूर्वक अपनाना चाहिए । (२) सूत्र है 'भज सेवायाम्' भजन का अर्थ सेवा है, अथवा सेवन जिसका तात्पर्य जीवन में उसे आत्मसात कर लेना है ।

छठ दम सील बिरति बहु करमा ।
निरत निरन्तर सज्जन धरमा ।।

⊗ दम=इन्द्रियों का निग्रह, सील=शील, बहु करमा=बहुत से कर्मों, से निरत-लगा रहना, धरमा (धर्म) ।

★ **छठी भक्ति है इन्द्रियों का निग्रह, सच्चरित्रता, बहुत से कर्मों से वैराग्य, और सदैव सज्जनों जैसे आचरण में लगा रहना ।**

* बहुत से कर्म ऐसे होते हैं जो मनुष्य के लिये अनुचित होते हैं– पर आकर्षण वश लोग उन्हें करते हैं, ऐसे कर्मों से विरक्ति होनी चाहिये । 'दम' इसी संदर्भ में युक्त हैं । 'शील' सज्जनोचित कर्मों के पालन के लिए है ।

सातवँ सम मोहि मय जग देखा ।
मोतें सन्त अधिक करि लेखा ।।

⊗ सातवँ=सातवाँ, सम=सम भाव से, मोहि मय=मुझ में ओत-प्रोत (राममय), मोतें=मुझ से भी, लेखा=मानना ।

★ **सातवीं भक्ति जगत भर को समभाव से मुझ में ओत-प्रोत (ईश्वर मय) देखना और सन्तों को मुझ से भी अधिक मानना है ।**

* सन्त जन साधारण के स्तर पर आकर उन्हें भगवान तक पहुँचाने में सहायक होते हैं अतः उन्हें भगवान से भी अधिक मानना भक्ति का चिन्ह कहा गया ।

आठवँ जथालाभ सन्तोषा ।
सपनेहुँ नहिं देखइ पर दोषा ।।

⊗ आठवँ=आठवीं, जथा लाभ=यथा लाभ (जो कुछ मिल जाय), सन्तोषा=सन्तोष, पर दोषा=दूसरे का दोष ।

★ **आठवीं भक्ति है जो कुछ मिल जाय, उसी में सन्तोष करना और स्वप्न में भी पराये दोष को न देखना ।**

* पुरुषार्थ पूरा करे, किन्तु सन्तोष थोड़े में भी कर ले । जो न मिल सके उसके लिये दूसरे को दोष न देकर अपने प्रयास की कमी माने ।

नवम सरल सब सन छल हीना ।
मम भरोस हियँ हरष न दीना ।।

⊗ नवम=नवीं भक्ति, छलहीना=छल रहित, भरोस=भरोसा, दीना=दीनता (विषाद) ।

★ **नवीं भक्ति है सरलता और सबके साथ कपट रहित बर्ताव करना, हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष और दीनता का न होना ।**

* अन्तःकरण को इतना स्वच्छ बनालें कि कोई छल कपट किसी के भी प्रति न रह जाय । भगवान पर इतना विश्वास कि हर शुभ अथवा अशुभ प्रसंग के पीछे भगवान के उद्देश्य को समझ सकें तभी हर्ष विषाद से परे हो पाते हैं ।

नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई ।
नारि पुरुष सचराचर कोई ।।

⊗ महुँ=में से, एकउ=एक भी, जिन्ह कें=जिनके ।

★ **इन नौ भक्तियों में से जिनके एक भी होती है, वह स्त्री हो या पुरुष जड़ हो या चेतन ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोइ अतिसय प्रिय भामिन मोरें ।
सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें ।।

★ **हे भामिन ! मुझे वही अत्यन्त प्रिय हैं । तेरे में तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ हैं ।**

* भक्ति भावना सच्ची हो उसका रूप भले ही कुछ भी हो वह साधक को भगवान की निकटता प्राप्त करा सकती है ।

जोगि बृन्द दुरलभ गति जोई ।
तो कहुँ आज सुलभ भइ सोई ।।

★ **अतएव जो गति योगियों को भी कठिनाई से मिलती है आज तेरे लिय सहज हो गई है ।**

* भगवान का रूप सब में देखते हुए उनके प्रति अपने उचित कर्तव्य की पूर्ति करने में चित्तवृत्तियों का शोधन और तप दोनों हो जाते हैं । अत: यह भक्ति साधना उच्च स्तरीय योग भी बन जाती है ।

मम दरशन फल परम अनूपा ।
जीव पाव निज सहज सरूपा ।।

⊗ दरशन=दर्शन, अनूपा=अनुपम, सरूपा=स्वरूप ।

★ **मेरे दर्शन का परम श्रेष्ठ फल यही है कि जीव अपने सहज स्वरूप को प्राप्त कर लेता है ।**

* भगवान के दर्शन से लौकिक लाभ उठाना स्वर्ग मोक्ष प्राप्ति की कामना पूरी होने की बात सोचने वाले भ्रम में हैं । प्रभु दर्शन का लाभ आत्म-बोध है । आत्मा परमात्मा का ही अंश है एक का सही बोध हो जाने पर दूसरे का भी बोध हो जाता है ।

जनकसुता कइ सुधि भामिनी ।
जानहि कहु करिबर गामिनी ।।

⊗ करिबर गामिनी=गजगामिनी ।

★ **हे भामिनी! अब यदि तुम गजगामिनी श्री जानकी जी की कुछ खबर जानती हो तो मुझे बता दो ।**

* श्रीराम ने अपनी आवश्यकता को प्राथमिकता नहीं दी । शबरी की भावना सन्तुष्ट करने के बाद अपनी पूछताछ प्रारम्भ की । श्रेष्ठ पुरुषों को ऐसा ही गम्भीर तथा धैर्यवान् होना चाहिए ।

पंपा सरहि जाहु रघुराई ।
तहँ होइहि सुग्रीव मिताई ।।

⊗ सरहि=सरोवर को, जाहु=जाइये, मिताई=मित्रता ।

★ **शबरी ने कहा– हे रघुनाथ जी ! आप पम्पा नामक सरोवर को जाइये । वहाँ आपकी सुग्रीव से मित्रता होगी ।**

* अपने न्याय सम्मत कार्य के लिए छोटे-बड़े हर व्यक्ति का परामर्श लिया जाना उचित है । पता नहीं किससे क्या महत्वपूर्ण सूत्र मिल जाय ।

सो सब कहिहि देव रघुबीरा ।
जानतहूँ पूछहु मतिधीरा ।।

⊗ सो=वह, मतिधीरा=धीर बुद्धि ।

★ **हे देव ! हे-रघुवीर ! सुग्रीव आपको सब हाल बतायेगा । हे धीर बुद्धि ! आप सब जानते हुए भी मुझसे पूछते हैं ।**

कहि कथा सकल बिलोकि,
हरिमुख हृदय पद पंकज धरे ।
तजि जोग पावक देह हरिपद,
लीन भई जहँ नहिं फिरे ।।

⊗ सकल=पूरी, जोग पावक=योगाग्नि ।

★ **शबरी ने श्रीरामचन्द्रजी को सीता, सुग्रीव के सम्बन्ध में सारी जानकारी दी तथा भगवान की छवि हृदय में रखकर योगाग्नि से अपना शरीर भस्म कर दिया और वह गति पाई जहाँ से संसार चक्र में लौटना नहीं पड़ता ।**

* शबरी को अपनी निष्काम सेवा साधना के कारण योगी तपस्वियों की सिद्धियाँ प्राप्त थीं । योगाग्नि में शरीर जला देना तथा अविचल पद पाना इसीलिए सम्भव हुआ ।

चले राम त्यागा बन सोऊ ।
अतुलित बल नर केहरि दोऊ ।।

⊗ सोऊ=वह भी, नर केहरि=मनुष्यों में सिंह के समान ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ श्रीरामचन्द्र जी उस वन को भी छोड़ कर आगे चले । दोनों भाई अतुलनीय बलवान् और मनुष्यों में सिंह के समान हैं ।

बिरही इव प्रभु करत विषादा ।
कहत कथा अनेक संवादा ।।

⊗ बिरही (विरही)=दु:ख से व्याकुल, इव=समान, संवादा (संवाद)=कथोपकथन ।

★ मार्ग में प्रभु (श्रीराम) बिरही की तरह विषाद करते हुए अनेकों कथायें और संवाद कहते हैं ।

* अपने दु:खी होने के बहाने भगवान उस स्थिति के व्यक्तियों के लिए अनेक उपदेश देते हैं ।

नारि सहित सब खग मृग वृन्दा ।
मानहु मोरि करत हहिं निन्दा ।।

★ श्री रामचन्द्र जी पशुपक्षियों को देखकर लक्ष्मणजी से कहने लगते हैं कि सारे पशु पक्षी अपनी पत्नियों सहित मेरी निन्दा कर रहे हैं ।

* उन्हें लगता है मानों पशु-पक्षी पूछते हों— अरे तुमने अपनी पत्नी कहाँ खो दी है ?

तुम आनन्द करहु मृग जाये ।
कंचन मृग खोजन ए आये ।।

★ लगता है वे व्यंग करते हैं कि हे हिरनों तुम ! आनन्द से विचरो, यह तुम्हें नहीं मारेंगे, क्योंकि यह तो सोने के हिरन की खोज में आये हैं ।

* लोभ वश लोग सोने के हिरन जैसी असम्भव बात पर विश्वास कर लेते हैं । ऐसे लोभ के कारण उनकी दुर्गति होती है और दुनिया उनकी हँसी उड़ाती है ।

बिरह विकल बल हीन,
मोहि जानेसि निपट अकेल ।
सहित विपिन मधुकर खग,
मदन कीन्ह बगमेल ।।

⊗ निपट=बिलकुल, मदन=कामदेव, कीन्ह बगमेल=हमला कर दिया ।

★ श्रीराम जंगल की शोभा देखकर कहते हैं मुझे विरह से व्याकुल तथा दुर्बल हुआ जानकर कामदेव ने जंगल की शोभा, भौरों तथा पक्षियों की सेना सहित मेरे ऊपर धावा बोल दिया है ।

* (१) व्यक्ति अपनी आन्तरिक स्थिति के अनुसार हर दृश्य का तात्पर्य निकालता है । श्रीराम को सुखकारी दृश्य भी अपने विरुद्ध दिखते । (२) काम अस्थिर तथा दुर्बल मनोभूमि के व्यक्तियों पर हमला करता है ।

लछिमन देखत काम अनीका ।
रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका ।।

⊗ अनीका (अनीक)=सेना, काम=कामदेव, लीका=प्रतिष्ठा ।

★ कामदेव की सारी सेनाओं और शक्तियों का वर्णन करते हुए श्रीराम कहते हैं, हे लक्ष्मण ! कामदेव की इस सेना को देखकर जो धीर बने रहते हैं, जगत में उन्हीं की प्रतिष्ठा होती है ।

* काम वासना किस प्रकार मनुष्य पर विभिन्न पक्षों से हमला करके हावी होती है, उसका वर्णन कामदेव की सेना के रूप में श्रीराम करते हैं । जो उनके प्रभाव से बच रहे वह सराहनीय हैं ।

एहि के एक परम बल नारी ।
तेहि ते उबर सुभट सोइ भारी ।।

⊗ परम बल=बड़ा भारी बल, उबर=बच जाय ।

★ इस कामदेव को स्त्री का एक बड़ा भारी बल है । उससे जो बच जाय वही श्रेष्ठ योद्धा है ।

* जीवन भी एक संग्राम है, इससे काम, क्रोधादि शत्रुओं की मार से अपने आपको बचाता हुआ जो लक्ष्य की ओर बढ़ता चले वह सच्चा बहादुर है ।

तात तीनि अति प्रबल खल,
काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि बिग्यान धाम मन,
करहिं निमिष महुँ छोभ ।।

⊗ प्रबल खल=प्रचंड दुष्ट, निमिष=पल भर, छोभ=उद्वेग ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **हे तात ! काम, क्रोध और लोभ– ये तीन अत्यन्त प्रबल दुष्ट हैं । ये विज्ञान के धाम मुनियों के भी मन में क्षण भर में क्षोभ उत्पन्न कर देते हैं ।**

* यह खल हैं, लगता है कि इन्हें हमने जीत लिया और इनने हार मान ली, पर थोड़ी असावधानी होते ही तुरन्त चोट कर बैठते हैं ।

गुनातीत सचराचर स्वामी ।
राम उमा सब अन्तरजामी ।।

⊗ गुनातीत (गुणातीत)=तीनों गुणों से परे, अन्तरजामी (अन्तरयामी)=सबके अन्त:करण की बात जानने वाले ।

★ **शिवजी माता पार्वतीजी से कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र जी तीनों गुणों से परे हैं, चराचर जगत के स्वामी हैं तथा सबके अन्तर की जानने वाले हैं ।**

* शिवजी पार्वतीजी के बहाने संसार को बताते हैं कि भगवान का यह स्वरूप देखकर भ्रम में न पड़े । वे तो लोक शिक्षण के लिये नाटक किया करते हैं ।

कामिन्ह कै दीनता देखाई ।
धीरन्ह कै मन बिरति दृढ़ाई ।।

⊗ कामिन्ह=कामी लोगों, कै=की, दृढ़ाई=दृढ़ किया है ।

★ **यह सब लीला करके उन्होंने कामी लोगों की बेवसी दिखलायी है और निष्ठावान पुरुषों के मन में वैराग्य को दृढ़ किया है ।**

क्रोध मनोज लोभ मद माया ।
छूटहि सकल राम की दाया ।।

⊗ मनोज=काम , मद=अहंकार ।

★ **क्रोध, काम, लोभ, अहंकार और माया ये सभी श्रीराम की कृपा से छूट जाते हैं ।**

* भगवान उन पर कृपा करते हैं जो भगवान के मार्ग पर चलते हैं । इससे मनुष्य में इन दोषों को अपने से दूर करने की सामर्थ्य आ जाती है ।

सो नर इन्द्रजाल नहिं भूला ।
जा पर होई सो नट अनुकूला ।।

⊗ इन्द्रजाल=माया, नट=नटराज (भगवान), अनुकूला=प्रसन्न ।

★ **वे नटराज भगवान जिस मनुष्य पर प्रसन्न होते हैं, वह माया के चक्कर में नहीं फँसता है ।**

* भगवान माया के संचालक हैं,जो व्यक्ति उनकी भावनात्मक निकटता पर जाते हैं वे माया का मर्म समझने लगते हैं ।

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना ।
सत हरि भजन जगत सब सपना ।।

★ **शंकर जी कहते हैं– हे उमा ! मैं अपना अनुभव कहता हूँ– भगवान का भजन ही सत्य है, यह सारा जगत तो स्वप्न की भाँति झूँठा है ।**

* भजन का अर्थ उपासना, साधना आदि है जिससे अपने अन्दर भगवान के गुण विकसित होने लगते हैं,जो सदा साधु करते हैं, अत: वही सत् है । सांसारिक विशेषतायें तो नष्ट करती हैं, अत: वह स्वप्न है ।

पुनि प्रभु गए सरोबर तीरा ।
पंपा नाम सुभग गंभीरा ।।

⊗ तीरा=तट पर, सुभग=सुन्दर, गंभीरा=गहरा ।

★ **फिर प्रभु श्रीरामजी पंपा नामक सुन्दर और गहरे सरोवर के तट पर गये ।**

* सरोवर की उपमा द्वारा आगे की चौपाइयों में कुछ उपयोगी दार्शनिक तथ्य समझाये गये हैं ।

सन्त हृदय जस निर्मल बारी ।
बाँधे घाट मनोहर चारी ।।

★ **उसका जल सन्तों के हृदय जैसा निर्मल है । मन को हरने वाले चार घाट बँधे हुए हैं ।**

* निर्मल जल सभी के लिए उपयोगी होता है और उसमें हर चीज अपने सही रूप में दिखती है । संत हृदय भी ऐसा ही होता है । वह चार घाट अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की मर्यादा में रहता है ।

जहँ तहँ पिअहिं बिबिध मृग नीरा ।
जनु उदार गृह जाचक भीरा ।।

⊗ पिअहिं=पी रहे हैं, विविध=भाँति-भाँति के, मृग=पशु, नीरा=जल, जाचक=याचक, भीरा=भीड़ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ भाँति-भाँति के पशु जहाँ-तहाँ जल पी रहे हैं । ऐसा लगता है मानो उदार दानी पुरुष के घर याचकों की भीड़ लगी हो ।

* उदार व्यक्ति की सम्पत्ति का लाभ उचित आवश्यकतानुसार सबको मिल जाता है ।

पुरइन सघन ओट जल,
बेगि न पाइअ मर्म ।
माया छन्न न देखिऐ,
जैसे निर्गुन ब्रह्म ।।

⊗ पुरइन=कमल के पत्ते , सघन=घने, बेगि=जल्द ही, मर्म=रहस्य, छन्न=ढके हुए ।

★ घने कमल के पत्तों की आड़ में जल का जल्दी पता नहीं मिलता । जैसे माया से ढके रहने के कारण निर्गुण ब्रह्म नहीं दीखाता ।

* भगवान का स्वरूप समझने के लिये माया का निवारण प्रयास पूर्वक करना पड़ता है ।

सुखी मीन सब एक रस,
अति अगाध जल माहिं ।
जथा धर्मसीलन्ह के,
दिन सुख संजुत जाहिं ।।

⊗ एक रस=एक समान, अगाध=अथाह, जथा=यथा, संजुत (संयुक्त)=सहित ।

★ उस सरोवर के बहुत गहरे पानी में सभी मछलियाँ सदा एक समान सुखी रहती हैं । जैसे धर्मशील पुरुषों के सब दिन सुख पूर्वक ही बीतते हैं ।

* जो लोग सांसारिक चतुराई से सुख पाना चाहते हैं उनका सुख उथले पानी की तरह होता है, जिसमें जल घटने अथवा पकड़े और मारे जाने का भय रहता है । धर्माचरण द्वारा प्राप्त सुख सदा एकसा रहता है ।

फल भारन नमि बिटप सब,
रहे भूमि निअराइ ।
पर उपकारी पुरुष जिमि,
नवहिं सुसम्पति पाइ ।।

⊗ भारन=बोझ से, नमि=झुककर, बिटप=वृक्ष ।

★ फल के बोझों से सभी वृक्ष झुककर पृथ्वी के पास आ लगे हैं जैसे परोपकारी पुरुष श्रेष्ठ सम्पत्ति पाकर झुक जाते हैं ।

* (१) सम्पत्ति पाकर अहंकार नहीं करना चाहिये नम्र बनना चाहिए (२) परोपकार, सुसम्पत्ति अच्छी कमाई से ही होता है– बुरी सम्पत्ति तो बुरे कामों में ही लग जाती है ।

विरहवंत भगवन्तहि देखी ।
नारद मन भा सोच बिसेषी ।।

⊗ विरहवंत=विरहयुक्त, भगवन्त=भगवान, भा=हुआ ।

★ विरहयुक्त भगवान को देखकर नारदजी के मन में विशेष रूप से यह विचार उत्पन्न हुए ।

मोर साप करि अंगीकारा ।
सहत राम नाना दुख भारा ।।

⊗ अंगीकारा (अंगीकार)=स्वीकार, सहत=सह रहे हैं ।

★ उन्होंने विचार किया कि मेरे ही शाप को स्वीकार करके श्रीराम जी अनेक प्रकार के दुःखों का भार सहन कर रहे हैं ।

* नारद जी ने मोहवश भगवान को स्त्री के विछोह में दुखी होने का श्राप दिया था । उन्हें उसी का स्मरण हो आया ।

यह बिचारि नारद कर बीना ।
गए जहाँ प्रभु सुख आसीना ।।

★ यह विचार कर नारदजी हाथ में वीणा लिये हुए वहाँ गये, जहाँ प्रभु श्रीरामजी सुख-पूर्वक विराजमान थे ।

* नारद जी को उस समय अपने द्वारा हुई भूल का अनुभव हुआ तथा उससे सम्बन्धित अपनी शंका समाधान के लिए भगवान के पास पहुँचे ।

करत दण्डवत लिए उठाई ।
राखे बहुत बार उर लाई ।।

⊗ बार=समय, उर लाई=हृदय से लगाकर ।

★ दण्डवत् करते देखकर श्रीरामचन्द्र जी ने नारद जी को उठा लिया और बहुत समय तक हृदय से लगाये रखा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* (१) नारद जी हमेशा लोगों का सच्चा मार्गदर्शन करते रहते हैं। इससे भगवान के प्रिय हैं। (२) अपने प्रसंग में उनसे जो भूल नारद जी से हुई उसे भगवान ने महत्व नहीं दिया। श्रेष्ठ पुरुषों का यही ढंग है।

अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी।
पुनि नारद बोले मृदु बानी॥

★ श्री रघुनाथ जी को अत्यन्त प्रसन्न जानकर नारद जी फिर कोमल वाणी में बोले।

* नारद जी अपनी भूल के कारण स्वयं शंकित थे, किन्तु भगवान का रुख देखकर मर्यादापूर्वक अपनी जिज्ञासा प्रकट करने लगे।

राम जबहि प्रेरेउ निज माया।
मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया॥

⊗ प्रेरेउ=प्रेरित किया, मोहेहु=मोहित किया।

★ हे रामजी ! हे रघुनाथ जी ! जब आपने माया को प्रेरित करके मुझको मोहित किया था।

* नारद जी को एक बार काम विजय का अभिमान हो गया था। उसके निवारण के लिए भगवान ने उन्हें माया द्वारा भ्रम में डाल दिया था। वे विवाह करने के लिये व्याकुल हो उठे थे।

तब बिबाह मैं चाहउँ कीन्हा।
प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा॥

★ तब मैं विवाह करना चाहता था। हे प्रभु ! आपने मुझे किस कारण विवाह नहीं करने दिया ?

* नारद जी विवाह का आग्रह तो करते रहे पर भगवान के प्रति समर्पण का भाव भी छोड़ा नहीं था। सब आँकाँक्षा प्रकट करने के बाद कह दिया "जिस प्रकार मेरा हित हो वैसा ही करें"। अतः भगवान ने उन्हें माया में फंसने नहीं दिया था।

सुनु मुनि ताहि कहहुँ सहरोसा।
भजहिं जे मोहिं तजि सकल भरोसा॥

⊗ सहरोसा (सहर्ष)=हर्ष के साथ।

★ प्रभु बोले- हे मुनि ! सुनो, मैं तुम्हें हर्ष के साथ कहता हूँ कि जो समस्त आशा-भरोसा को त्याग कर मुझको ही भजते हैं।

करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी।
जिमि बालक राखइ महतारी॥

★ मैं सदा उनकी ऐसे रक्षा करता हूँ जैसे माता बालक की रक्षा करती है।

* अर्थात् संसारी भक्त विवेक की दृष्टि से बच्चा होता है और बचकाने आग्रह करता रहता है।

गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई।
तहं राखइ जननी अरगाई॥

⊗ गह=पकड़ता है, सिसु (शिशु)=छोटा बच्चा, बच्छ=वत्स, अनल=आग, अहि=साँप, अरगाई=अलग करके।

★ जब छोटा-सा बच्चा आग और साँप को पकड़ने जाता है तो माता उसको अलग करके रक्षा करती है।

* संसार के विषय अग्नि और सर्प जैसे खरतनाक होते हैं साधक उन्हें बच्चे की तरह खिलवाड़ मानकर पकड़ने को आतुर हो उठता है।

प्रौढ़ भएँ तेहि सुत पर माता।
प्रीति करइ नहिं पाछिलि बाता॥

★ सयाना होने पर उस पुत्र पर माता प्रेम तो करती है, परन्तु पिछली बात नहीं रहती अर्थात् उसको बचाने की चिन्ता नहीं करती क्योंकि वह माता पर निर्भर न रहकर अपनी रक्षा आप करने योग्य हो गया है।

मोरे प्रौढ़ तनय सम ग्यानी।
बालक सुत सम दास अमानी॥

⊗ तनय=पुत्र, ग्यानी=ज्ञानी, सुत सम=पुत्र समान, अमानी=अभिमान रहित।

★ ज्ञानी मेरे प्रौढ़ पुत्र के समान हैं और अपने बल का मान न करने वाला सेवक मेरे शिशु पुत्र के समान है।

* अर्थात् जो समर्पण भाव रखता है उसे यदि अपने भले बुरे की समझ नहीं है तो भी भगवान उसकी हानि नहीं होने देते।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जनहि मोर बल निज बल ताही ।
दुहु कह काम क्रोध रिपु आही ।।

⊗ जनहि=सेवक को, ताही=उसको (ज्ञानी को), दुहुकहँ=दोनों के लिए, रिपु=शत्रु , आही=हैं ।

★ मेरे सेवक को केवल मेरा ही बल रहता है और उसे (ज्ञानी को) अपना बल होता है । पर काम क्रोध रूपी शत्रु तो दोनों के लिये हैं ।

* भक्त हो या ज्ञानी, काम, क्रोध आदि से तो दोनों को ही बचना चाहिए ।

यह बिचारि पंडित मोहि भजहीं ।
पाएहु ज्ञान भगति नहिं तजहीं ।।

★ यह विचार कर बुद्धिमान व्यक्ति मुझको ही भजते हैं । वे ज्ञान प्राप्त करने पर भी भक्ति को नहीं छोड़ते ।

* भक्त भी ज्ञान प्राप्त करते हैं पर जो समझदार हैं वे ज्ञान के अहंकार में भक्ति की उपेक्षा नहीं करते । ज्ञान और भक्ति परस्पर पूरक हैं ।

काम क्रोध लोभादि मद,
प्रबल मोह कै धारि ।
तिन्ह महँ अति दारुन,
दुखद माया रूपी नारि ।।

⊗ पद=घमंड, कै=की, धारि=सेना, दारुन=भयंकर ।

★ साधकों को भ्रष्ट करने के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि की विकट सेना है, किन्तु उनमें मायारूपी स्त्री बड़ी भंयकर होती है ।

* माया रूपी नारि का अर्थ है काम वासना पूर्ति के साधन के रूप में दीखने वाली स्त्री ।

अवगुन मूल सूल प्रद,
प्रमदा सब दुख खानि ।
ताते कीन्ह निवारन,
मुनि मैं यह जियँ जानि ।।

⊗ सूलप्रद (शूलप्रद)=पीड़ा देने वाली, प्रमदा=कामोत्तेजक रूप में नारी ।

★ कामिनी रूप में स्त्री अवगुणों की जड़, पीड़ा देने वाली और सब दुःखों की खान है । इसलिये हे मुनि ! मैंने जी में ऐसा जानकर तुमको विवाह करने से रोका था ।

* विवाह जब केवल स्त्री के रूप अथवा अपनी काम वासना के प्रभाव से किया जाता है तब वह मनुष्य को भयंकर बंधन में डालता है । भक्त को भगवान उससे बचाते हैं ।

सुनि रघुपति के बचन सुहाए ।
मुनि तन पुलक नयन भरि आए ।।

★ श्री रघुनाथ जी के सुहावने वचन सुनकर मुनि का शरीर पुलकित हो गया और नेत्र प्रेमाश्रुओं के जल से भर आये ।

* नारद की तरह हम भी उन नेक सलाहकारों से वैर मानने लगते हैं जो हमें गलत काम से रोकते हैं । पर जब सही स्थिति समझ में आती है तो अपनी भूल पर पश्चाताप होता है ।

पुनि सादर बोले मुनि नारद ।
सुनहु राम बिग्यान बिसारद ।।

⊗ विज्ञान विशारद=ज्ञान को जीवन में उतारने की कला के विशेषज्ञ ।

★ फिर नारद मुनि आदर सहित बोले ! हे विज्ञान विशारद श्रीरामजी सुनिये ।

* भगवान राम ज्ञान के अनुसार आचरण की कला में प्रवीण हैं उनके उपासक उनसे यह गुण सीख सकते हैं ।

सन्तन्ह के लच्छन रघुबीरा ।
कहहु नाथ भव भंजन भीरा ।।

⊗ संतन्ह=संतों के, लच्छन=लक्षण, भव=सांसारिकता (जन्ममरण), भंजन=नाश करने वाले , भीरा (भीर)=भय ।

★ हे रघुवीर! हे संसार के जन्म-मरण रूपी भय का नाश करने वाले ? अब कृपाकर संतों के लक्षण कहिये ।

* संत भगवान को प्रिय हैं, अतःजो व्यक्ति संत बनना चाहे वे बन सकें इसके लिए नारद जी सन्तों के लक्षण समझने लगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ ।
जिन्ह ते मैं उन्ह के बस रहऊँ ।।

★ **(श्रीरामचन्द्र जी बोले) हे मुनि ! सुनो, मैं संतों के गुणों को कहता हूँ, जिनके कारण मैं उनके वश में रहता हूँ ।**

* भगवान किसी व्यक्ति के मोह अथवा चढ़ावे के लोभ से भक्त के वश में नहीं होते। वे कुछ मर्यादाओं के पालन से प्रसन्न होते हैं । भगवान राम द्वारा बतायी जाने वाली उन मर्यादाओं को हम भली प्रकार समझकर जीवन में ला सकें तो धन्य हो जायें ।

षट बिकार जित अनघ अकामा ।
अचल अकिंचन शुचि सुखधामा ।।

⊗ षट बिकार=छ:विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर), जित=जीते हुए । अनघ=निष्पाप, अकामा=निष्काम, अचल=निश्चल (स्थिर-बुद्धि), अकिंचन=सर्वत्यागी, शुचि=पवित्र ।

★ **वे संत काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर इन छ:विकारों को जीतने वाले निष्पाप, निष्काम, निश्चल, सर्व त्यागी, पवित्र एवं सुख के धाम होते हैं ।**

* संत का वेष नहीं संत जैसा अत:करण बनाया जाना चाहिए ।

अमित बोध अनीह मित भोगी ।
सत्यसार कबि कोबिद जोगी ।।

⊗ अमित बोध=असीम ज्ञानवान, अनीह=इच्छा रहित, सत्यसार=सत्यनिष्ठ, कोबिद-(कोविद)=विद्वान ।

★ **वे असीम ज्ञानवान, इच्छा रहित, मित भोगी सत्यनिष्ठ, कवि, विद्वान और योगी होते हैं ।**

* मितभोगी का अर्थ अपनी सांसारिक आवश्यकताओं को कम से कम बना लेने वाले हैं । कवि का अर्थ दूरदर्शी होता है । योगी वह है जो अपने को भगवान से जोड़ दें । संत ऐसे ही होने चाहिए ।

सावधान मानद मदहीना ।
धीर धर्म गति परम प्रबीना ।।

⊗ मानद=दूसरों को मान देने वाले, मदहीना=अभिमान रहित, धर्म गति=धर्म के आचरण में ।

★ **वे सावधान, दूसरों को मान देने वाले, अभिमान रहित, धैर्यवान्, धर्म, ज्ञान आदि के आचरण में अत्यन्त निपुण होते हैं ।**

* संत केवल उपदेश ही नहीं करते, कहे हुए आदर्शों को अपने तथा दूसरों के जीवन में प्रविष्ट कराने में निपुण होते हैं ।

गुनागार संसार दुख,
रहित बिगत सन्देह ।
तजि मम चरन सरन प्रिय,
तिन्ह कहुँ देह न गेह ।।

⊗ गुनागार=गुणागार (गुणों के घर), बिगत=विमुक्त, (छूटे हुए), गेह=घर ।

★ **वे गुणों के घर, सांसारिक दु:खों से रहित और संदेहों से सर्वथा छूटे हुए होते हैं । उनको मेरे चरण-कमलों को छोड़कर न देह प्रिय हैं, न घर ही प्रिय होते हैं ।**

* सच्चे सन्त अपने शरीर तथा साधनों को प्रभु की इच्छानुसार प्रयुक्त करते हैं वे उनके अपने नहीं रह जाते ।

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं ।
पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं ।।

★ **कानों से अपना गुण सुनते ही सकुचित होते हैं, और दूसरों के गुण सुनने में खूब हर्षित होते हैं ।**

* हमेशा अपनी प्रशंसा तथा दूसरों की बुराई सुनने से आदमी बिगड़ जाता है ।

सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती ।
सरल सुभाउ सबहिं सन प्रीती ।।

⊗ सम=समत्व, बुद्धि वाले, सीतल=शीतल (शीतलता प्रदान करने वाले) ।

★ **वे सदैव सम (भेद हीन बुद्धि वाले, शीतल, उत्तेजित न होने वाले) होते हैं, न्याय का कभी त्याग नहीं**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते । सरल स्वभाव वाले और सभी से प्रेम रखने वाले होते हैं ।

जप तप ब्रत दम संजम नेमा ।
गुरु गोबिन्द बिप्र पद प्रेमा ।।

★ वे जप, तप, व्रत, दम, संयम और नियम में सदा रत रहते हैं और गुरु, गोविन्द तथा ब्राह्मणों के चरणों में निष्कपट प्रेम होता है ।

* (१) जप—ईश्वर स्मरण, (२) तप—श्रेष्ठ लक्ष्य प्राप्ति के लिये कष्ट स्वीकार करना, (३) वृत्तियों के शोधन और विकास के लिये संकल्पबद्ध आचरण, (४) दम—हीन प्रवृत्तियों का दमन, (५) संयम—शक्तियों का अपव्यय न होने देना, (६) नियम—अपने लिए आचार संहिता का निर्धारण और पालन ।

श्रद्धा छमा मयत्री दाया ।
मुदिता मम पद प्रीति अमाया ।।

⊗ छमा=क्षमा, मयत्री (मैत्री)=मित्रता, मुदिता=प्रसन्नता, अमाया=निष्कपटता ।

★ उनमें श्रद्धा, क्षमा, मैत्री, दया, प्रसन्नता और मेरे चरणों में निष्कपट प्रेम होता है ।

* अपने से श्रेष्ठ के प्रति श्रद्धा, पराजित के प्रति क्षमा, समान स्तर वाले से मित्रता, छोटों पर दया तथा सबके प्रति प्रसन्नता का भाव रखा जाता है ।

बिरति बिबेक बिनय बिग्याना ।
बोध जथारथ बेद पुराना ।।

⊗ जथारथ (यथार्थ)=सही, बोध=जानकारी (ज्ञान) ।

★ उनमें वैराग्य, विवेक, विनय, विज्ञान (परमात्मा के तत्व का ज्ञान) और वेद पुराण का यथार्थ ज्ञान रहता है ।

* (१) वैराग्य—संसार के आकर्षणों से रुचि हट जाना, (२) विवेक—सही गलत के निर्णय की क्षमता, (३) विनय—नम्रता पूर्वक अपनी बात समझाना, (४) विज्ञान—ज्ञान को आचरण में लाने की योग्यता यथार्थ ज्ञान का अर्थ परस्पर अथवा अपनी मान्यता के अनुरूप नहीं वरन् समय की आवश्यकता के अनुरूप शास्त्र ज्ञान का उपयोग है ।

दम्भ मान मद करहिं न काऊ ।
भूल न देहि कुमारग पाऊ ।।

⊗ मान=अभिमान, कुमारग=कुमार्ग, पाऊ=पाँव, काऊ=कभी भी ।

★ वे दम्भ, अभिमान और मद कभी भी नहीं करते और भूलकर भी कुमार्ग पर पैर नहीं रखते ।

* (१) दम्भ—शेखी खोरी, (२) अभिमान—अपनी किसी अच्छाई के कारण अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझना, (३) मद—अपने बड़प्पन की कल्पना में शराबी की तरह यथार्थ को समझ ही न पाना ।

गावहिं सुनहिं सदा मम लीला ।
हेतु रहित परहित रत शीला ।।

⊗ हेतु रहित=बिना कारण, परहित=दूसरों के हित में, रत शीला=(रतशील)=लगे हुए ।

★ सदा मेरी लीलाओं को गाते-सुनते हैं और बिना कारण ही दूसरों के हित में लगे रहते हैं ।

* सन्त, भगवान के चरित्र से प्रेरणा लेते रहते हैं और बिना अपने स्वार्थ अथवा यश की कामना के ही सेवारत रहते हैं ।

सिरु नाइ बारहिं बार,
चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गए ।
ते धन्य तुलसीदास,
आस बिहाइ जे हरि रंग रँए ।।

⊗ बिहाइ=छोड़कर, रँए=रंग गए ।

★ सन्तों के गुण समझकर भगवान श्रीराम के चरणों में सिर नवाकर नारद मुनि ब्रह्मलोक को गये । गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि वे पुरुष धन्य हैं जो सब आशायें छोड़कर केवल श्रीहरि के रंग में ही रंग गए हैं ।

* सच्चा ज्ञान मिलते ही स्वभाव में विनय आ जाती है । जिनने सब भौतिक आशाएँ छोड़कर स्वयं को श्रीहरि के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रंग में रंग लिया है उनकी सभी उचित तथा आवश्यक इच्छायें भगवान बिना कहे पूरी करते ही हैं ।

आगें चले बहुरि रघुराया ।
रिष्यमूक पर्वत निअराया ।।

⊗ बहुरि=फिर से, रिष्यमूक=ऋष्यमूक पहाड़, निअराया=निकट आ गया ।

★ श्रीरामचन्द्रजी फिर आगे चले तो ऋष्यमूक पर्वत निकट आ गया ।

* जीवन की सार्थकता बस आगे बढ़ने में ही है ।

तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा ।
आवत देखि अतुल बल सींवा ।।

⊗ तहँ=वहाँ, रह=रहता था, सींवा=सीमा (प्रमाण) ।

★ वहाँ मन्त्रियों के सहित सुग्रीव रहते थे । उन्होंने अतुलनीय शक्ति सम्पन्न श्रीरामजी को आते देखा–

अति सभीत कह सुनु हनुमाना ।
पुरुष जुगल बल रूप निधाना ।।

★ सुग्रीव अत्यन्त भयभीत होकर बोले-हे हनुमान ! सुनो, ये दोनों पुरुष बल और रूप के स्वामी हैं ।

धरि बटु रूप देखु तैं जाई ।
कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ।।

⊗ धरि=धरकर, बटु=ब्रह्मचारी, तैं=तुम, सयन=इशारा, बुझाई=समझाकर ।

★ तुम ब्रह्मचारी का रूप धारण करके जाकर देखो । अपने हृदय में यथार्थ बात जानकर मुझे इशारे से समझाकर कह देना ।

* किसी व्यक्ति को देखते ही उसके उद्देश्य के बारे में अपनी मान्यता नहीं बना लेनी चाहिए, पहले नीति पूर्वक उसके मन की थाह लेनी चहिए ।

पठए बालि होहिं मन मैला ।
भागौं तुरत तजौं यह सैला ।।

★ यदि वे मन के मलिन बालि के भेजे हुए हों तो मैं तुरन्त ही इस पर्वत को छोड़कर भाग जाऊँ ।

* भय मनुष्य की संघर्ष की क्षमता समाप्त करके उसे कायर बना देता है । सुग्रीव ऐसी ही स्थिति में थे ।

बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ ।
माथ नाइ पूछत अस भयऊ ।।

⊗ बिप्ररूप=ब्राह्मण का स्वरूप, गयऊ=गये, माथ नाइ=माथा नवाकर, अस=ऐसा ।

★ यह सुनकर हनुमानजी ब्राह्मण का रूप बनाकर वहाँ गये और मस्तक नवाकर इस प्रकार पूछने लगे–

* विनयशील स्वभाव शत्रु के मन को भी पिघला देता है ।

को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा ।
छत्री रूप फिरहु बन बीरा ।।

⊗ को=कौन, स्यामल (श्यामल) साँवले, गौर=गोरे, सरीरा=शरीर वाले, छत्री=क्षत्रिय ।

★ हे वीर! साँवले और गोरे शरीर वाले आप कौन हैं ? जो क्षत्रिय के रूप में वन में फिर रहे हैं ।

कोसलेस दसरथ के जाए ।
हम पितु बचन मानि बन आए ।।

⊗ कोसलेस (कोशलेश)=कोशलराज, जाए=पुत्र, मानि=मानकर ।

★ श्रीरामचन्द्रजी ने उत्तर दिया–हम कोशलराज दशरथ जी के पुत्र हैं और पिता का वचन मानकर वन आये हैं ।

नाम राम लछिमन दोउ भाई ।
संग नारि सुकुमारि सुहाई ।।

⊗ सुकुमारि=कोमल स्वभाव वाली ।

★ हमारे राम लक्ष्मण नाम हैं, हम दोनों भाई हैं । हमारे साथ सुन्दर सुकुमारी स्त्री थी ।

इहाँ हरी निसिचर बैदेही ।
बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही ।।

⊗ इहाँ=यहाँ (वन में), हरी=हर लिया, निसिचर=राक्षसों ने ।

★ यहाँ वन में राक्षस ने (मेरी पत्नी) जानकी को हर लिया । हे ब्राह्मण ! हम उसे ही खोजते फिरते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* श्रीरामजी ने प्रत्यक्ष रूप से सीता की खोज तथा परोक्ष रूप से राक्षसों के वध के अपने उद्देश्य को प्रकट कर दिया ।

आपन चरित कहा हम गाई ।
कहहु बिप्र निज कथा बुझाई ।।

⊗ आपन=अपना, चरित=चरित्र, गाई=गाकर, (सुना दिया) ।

★ हमने तो अपना चरित्र कह सुनाया अब हे ब्राह्मण अपनी कथा समझाकर कहो।

* कोई व्यक्ति निरुद्देश्य कुछ भी नहीं पूछता । अत: श्रीराम जी ने अपना विवरण देने के बाद हनुमानजी से इस प्रकार पूछ-ताछ करने का उद्देश्य पूछा ।

प्रभु पाहिचानि परेउ गहि चरना ।
सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ।।

⊗ पहिचानि=पहचान कर, परेउ=गिर पड़े, गहि=पकड़कर, चरना=चरण ।

★ अपने स्वामी को पहचान कर हनुमानजी उनके चरण पकड़ कर पृथ्वी पर गिर पड़े । हे पार्वती ! वह सुख वर्णन नहीं किया जा सकता ।

* हनुमानजी विद्वान् और बुद्धिमान थे । ऋषियों ने उन्हें भगवान राम के बारे में पहले से बता रखा था । अपने जीवन की सार्थकता वे भगवान के साथ असुरता के उन्मूलन में ही मानते थे । भगवान के संकेत से उन्हें अपना संकल्प भी याद आ गया तथा भगवान को पहचान लिया ।

तब रघुपति उठाइ उर लावा ।
निज लोचन जल सींचि जुड़ावा ।।

⊗ सींचि=सींचकर, जुड़ावा=शीतल किया, लोचन=नेत्र ।

★ तब रघुनाथजी ने उठाकर हृदय से लगा लिया । और अपने नेत्रों के जल से सींच कर शीतल किया ।

* भगवान सामने वाले की भावना के अनुसार ही व्यवहार करते हैं । जब हनुमान जी सारा भेद छोड़कर चरणों पर पड़े तो उसी स्नेह से उन्हें गले लगा लिया ।

सुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना ।
तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना ।।

⊗ ऊना=हीन (ओछा), लछिमन=लक्ष्मण ।

★ फिर कहा– हे कपि सुनो, मन में ग्लानि मत मानना (मन छोटा न करना) । तुम मुझे लक्ष्मण से भी दुगुने प्रिय हो ।

* श्री हनुमान जी को ग्लानि हुई कि अनजाने में भगवान से ब्राह्मण बनकर छल करने का प्रयास किया, किन्तु भगवान भूल को नहीं मूल भावना को महत्व देते हैं, अत: उन्होंने हनुमानजी को अपने प्रेम के प्रति आश्वस्त कर दिया ।

देखि पवनसुत पति अनुकूला ।
हृदयँ हरष बीती सब सूला ।।

★ स्वामी को प्रसन्न देखकर पवन पुत्र हनुमानजी के हृदय में हर्ष छा गया और उनके सब दु:ख जाते रहे ।

* मन की दुविधा मिट जाने पर ऐसा सुख स्वाभाविक रूप से मिल जाता है ।

नाथ सैल पर कपि पति रहई ।
सो सुग्रीव दास तब अहई ।।

★ हे नाथ ! पर्वत पर वानर राज सुग्रीव रहते हैं, वे आपके सेवक हैं ।

* बुद्धिमान हनुमानजी सुग्रीव और भगवान राम दोनों के हित पर ध्यान रखकर परामर्श देना प्रारम्भ करते हैं ।

तेहि सन नाथ मयत्री कीजे ।
दीन जानि तेहि अभय करीजे ।।

⊗ सन=से, कीजे=कीजिए ।

★ उसके साथ मित्रता कीजिए और दीन जानकर उसे निर्भय कर दीजिए ।

* भय की स्थिति समर्थ को भी पंगु बना देती है । भयमुक्त करने से वह उपकार भी मानता है तथा स्वयं सहयोग करने योग्य हो भी जाता है ।

सो सीता कर खोज कराइहिं ।
जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहिं ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ सो=वह कराइहि=करायेगा, मरकट=बन्दर, पठाइहि=भेजेगा, कोटि=करोड़ों ।

★ वह सीताजी की खोज करायेगा और जहाँ-तहाँ करोड़ों बन्दरों को भेजेगा ।

* श्रीराम तथा सुग्रीव को एक दूसरे की सहायता में समर्थ बता, उनकी मैत्री की पृष्ठभूमि हनुमान जी ने बना दी ।

एहि बिधि सकल कथा समुझाई ।
लिए दुऔ जन पीठ चढ़ाई ।।

★ इस प्रकार सब कथा समझाकर उन्होंने दोनों भाइयों को पीठ पर चढ़ा लिया ।

जब सुग्रीवँ राम कहुँ देखा ।
अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ।।

★ जब सुग्रीव ने श्रीरामचन्द्र जी को देखा तो अपने जन्म को धन्य समझा ।

* श्रीराम न्यायपक्ष का साथ देते हैं । अपने समर्थन में उन्हें पाकर सुग्रीव को भरोसा हो गया कि वह अभी तक न्यायपथ पर चल रहा है तथा आगे भी श्रेष्ठ कार्यों में जीवन लगा सकेगा । इस प्रकार दोनों ओर जीवन की सार्थकता सिद्ध हुई ।

सादर मिलउ नाइ पद माथा ।
भेटेउ अनुज सहित रघुनाथा ।।

★ सुग्रीव चरणों में मस्तक नवाकर आदर सहित मिले । श्री रघुनाथजी भी छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित उनसे गले लग कर मिले ।

तब हनुमन्त उभय दिसि की,
सब कथा सुनाइ ।
पावक साखी देइ करि,
जोरी प्रीति दृढ़ाई ।।

⊗ उभय=दोनों, दिसि (दिशि)=दिशा (तरफ), पावक=आग, साखी=साक्षी ।

★ तब हनुमान जी ने दोनों ओर की सब कथा सुनाकर अग्नि को साक्षी देकर प्रतिज्ञा पूर्वक उनकी मैत्री करवा दी ।

* मित्रता के लिए पहले दोनों पक्षों की सही स्थिति का ज्ञान आवश्यक है । इस प्रकार सोच समझकर की गयी मित्रता स्थायी और शुभ होती है ।

कीन्ह प्रीति कछु बीच न राखा ।
लछिमन रामचरित सब भाषा ।।

★ सुग्रीव और राम ने परस्पर प्रेम किया । उन्होंने अन्तर थोड़ा भी नहीं रखा । इसके बाद लक्ष्मण ने श्रीराम का सारा इतिहास कहा ।

* जब दो हृदयों में परस्पर सच्चा प्रेम उत्पन्न हो जाता है तो वहाँ संशय, दुख, विवाद या कपट आदि नहीं रहते ।

कह सुग्रीव नयन भरि बारी ।
मिलिहि नाथ मिथिलेस कुमारी ।।

★ सुग्रीव ने आँखों में आँसू लाते हुए श्रीराम से कहा– हे नाथ ! मिथिलेश कुमारी– सीता जी मिलेंगी ।

* परस्पर प्रेम स्थापित होने से राम तथा सुग्रीव एक दूसरे के सुख दुःख के सहभागी हो गये । राम की पीड़ा सुग्रीव की आँखों में आ गई और राम का आत्मबल सुग्रीव की वाणी से बोल पड़ा ।

मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा ।
बैठ रहेउ मैं करत बिचारा ।।

★ एक समय सुग्रीव अपने मंत्रियों के साथ बैठे हुए विचार विमर्श कर रहे थे ।

गगन पंथ देखी मैं जाता ।
परबस परी बहुत बिलपाता ।।

⊗ गगन=आकाश, पंथ=मार्ग, परबस (परवश)=पराये वश में ।

★ तब सुग्रीव ने सीता जी को पराये वश में पड़ी बहुत रोती हुई आकाश मार्ग से जाते देखा था ।

राम राम हा राम पुकारी ।
हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी ।।

⊗ पुकारी=आवाज देकर, पट=वस्त्र, डारी (डाली)=गिरा दिया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ हमें देखकर ''राम ! राम ! हे राम !'' की आवाज लगाकर सीताजी ने अपना वस्त्र नीचे गिरा दिया ।

* वानरों को देखकर राम का नाम लेकर चिन्ह छोड़ने की सीता की समझदारी काम आ गयी ।

मागा राम तुरत तेहिं दीन्हा ।
पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ।।

★ श्रीराम ने सीताजी के वस्त्र को माँगा तब शीघ्र ही सुग्रीव ने दिया । वस्त्र को हृदय से लगाकर श्रीराम बहुत दुःख करने लगे ।

कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा ।
तजहु सोच मन आनहु धीरा ।।

⊗ आनहु=लाइये, धीरा=धैर्य ।

★ सुग्रीव ने कहा– हे रघुवीर ! सुनिये ! चिन्ता छोड़िये और मन में धीरज लाइये ।

* दुःखी व्यक्ति को सान्त्वना देना हर मित्र का कर्तव्य है ।

सब प्रकार करिहउँ सेवकाई ।
जेहि बिधि मिलहि जानकी आई ।।

★ सुग्रीव ने कहा– मैं सब प्रकार की सेवा करूँगा जिस उपाय से सीता जी आकर आपको मिलें ।

* सच्चा मित्र केवल धीरज ही नहीं देता स्वयं को मित्र की सच्ची सेवा में खपा देता है ।

सखा बचन सुनि हरषे,
कृपासिन्धु बलसींव ।
कारन कबन बसहु बन,
मोहि कहहु सुग्रीव ।।

⊗ कृपा सिन्धु=दया के सागर ।

★ दया के सागर और बल की सीमा श्रीराम सुग्रीव की बात सुनकर प्रसन्न हुए । तब श्रीराम ने पूछा– हे सुग्रीव ! मुझे यह बताओ कि तुम जंगल में किस कारण से रहते हो ?

* मित्र परस्पर कठिनाई सुनकर एक दूसरे की कठिनाई को दूर करने का प्रयत्न करते हैं ।

नाथ बालि अरु मैं द्वौ भाई ।
प्रीत रही कछु बरनि न जाई ।।

★ सुग्रीव ने कहा– हे नाथ श्रीराम ! बालि और मैं दोनों भाई हैं । हम दोनों में ऐसा प्रेम था कि वर्णन नहीं किया जा सकता ।

मयसुत मायावी तेहि नाऊँ ।
आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ ।।

★ सुग्रीव ने आगे कहा– हे श्रीराम ! मय दानव का एक पुत्र था, उसका नाम मायावी था । एक बार वह हमारे गाँव में आया ।

* जहाँ प्रेम की दैविक शक्तियाँ काम कर गृहस्थी को स्वर्ग तुल्य बनाती हैं वहाँ आसुरी शक्तियाँ आकर विघ्न उत्पन्न करती ही हैं और इसलिए हमें सदैव इनसे सावधान रहना ही चाहिए ।

अर्ध राति पुर द्वार पुकारा ।
बाली रिपु बल सहै न पारा ।।

⊗ पुर=नगर, रिपु=शत्रु, सहै=सहन करना, पारा=उत्तेजना ।

★ उस मायावी नामक दानव ने आधीरात को नगर के फाटक पर आकर बालि को ललकारा । बाली स्वभाव वश शत्रु की ताकत और उत्तेजना को सहन न कर सका ।

* सहन शक्ति के अभाव के कारण व्यक्ति उतावली में अविचार पूर्ण ढंग से काम कर बैठता है ।

धावा बालि देखि सो भागा ।
मैं पुनि गयउँ बन्धु संग लागा ।।

★ बाली दौड़ा, उसे देखकर वह दानव मायावी भागा । मैं (सुग्रीव) भी भाई (बाली) के पीछे-पीछे चला गया ।

* प्रेम की परीक्षा तो प्रतिकूल परिस्थितियों में स्वयं ही हो जाती है । सुग्रीव के मन में बाली के प्रति अगाध प्रेम व श्रद्धा नहीं होती तो वह किसी के बिना कहे ही खतरा उठाकर साथ न जाता ।

गिरबर गुहाँ पैठ सो जाई ।
तब बाली मोहि कहा बुझाई ।।

⊗ गिरवर=पर्वत, गुहाँ=गुफा, पैठ=घुसा, बुझाई=समझाकर ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **वह मायावी एक पर्वत की गुफा में जा घुसा । तब बाली ने मुझे (सुग्रीव को) समझाकर कहा ।**

* स्नेह वश सुग्रीव साथ जाना चाहते थे पर बालि ने उन्हें नगर वासियों के प्रति कर्तव्य का ध्यान दिलाकर समझाया ।

परखेसु मोहि एक पखबारा ।
नहिं आवौं तब जानेसु मारा ।।

⊗ परिखेसु=प्रतीक्षा करना, पखबारा (पखवाड़ा)=पन्द्रह दिन ।

★ **बाली ने कहा– पन्द्रह दिन तक तुम (सुग्रीव) मेरी प्रतीक्षा करना । यदि उतने दिनों में न लौट सकूँ तो समझ लेना कि मैं (बाली) मारा गया ।**

* अपनी शक्ति पर विश्वास होते हुए भी बुरी से बुरी परिस्थिति के लिए अपने को तैयार रखना चाहिए ।

मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी ।
निकरी रुधिर धार तहँ भारी ।।

⊗ खरारी-खर+अरि=दुष्टों के शत्रु श्रीराम, रुधिर=खून ।

★ **हे दुष्टों के शत्रु श्रीराम ! मैं (सुग्रीव) उस गुफा के बाहर महीने भर तक रहा । इसके बाद उस गुफा में से रक्त की बड़ी धारा निकली ।**

बालि हतेसि मोहि मारिह आई ।
सिला देइ तहँ चलेउँ पराई ।।

⊗ हतेसि=मार डाला, मारिह=मारेगा, सिला (शिला)=चट्टान, पराई=भाग आया ।

★ **मैंने (सुग्रीव) समझा कि उस मायावी दानव ने बाली को मार डाला, अब आकर मुझे (सुग्रीव) मारेगा । इसलिए मैं वहाँ (गुफा के द्वार पर) एक चट्टान लगाकर भाग आया ।**

* सुग्रीव भयभीत हो गया– इससे विवेक नष्ट हो गया– अन्यथा छिप कर यथार्थ का पता थोड़ी देर में ही लगा सकता था ।

मन्त्रिन्ह पुर देखा बिनु साईं ।
दीन्हेउ मोहि राज बरि आई ।।

★ **मंत्रियों ने नगर को बिना स्वामी (राजा) का देखा, तो मुझको जबर्दस्ती राज्य दे दिया ।**

* राज्य वासियों को सुग्रीव पर सब प्रकार भरोसा था, किन्तु सुग्रीव भय तथा दुःख से विवेक शून्य हो गये थे । मन्त्रियों को भरत की तरह जल्दबाजी करने से रोक न सके ।

बाली ताहि मारि गृह आवा ।
देखि मोहि जियँ भेद बढ़ावा ।।

★ **बाली उस मायावी दानव को मार कर घर आ गया । मुझे राजा के रूप में देखकर उसने (बाली ने) मन में शंका को बढ़ावा दिया (राज्य के लोभ से ही मैं गुफा के द्वार पर शिला दे आया था, जिससे बाली बाहर न निकल सके और यहाँ आकर राजा बन बैठा– ऐसा बाली ने समझा)**

* मन में भले बुरे दोनों प्रकार के विचार आते हैं जिसे बढ़ावा दे दिया जाय वह सक्रिय हो जाता है । बाली विवेक से काम लेता तो पूछताछ करके सही स्थिति जान सकता था ।

रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी ।
हरि लीन्हेसि सर्वस अरु नारी ।।

⊗ सर्वस=सर्वस्व ।

★ **उसने (बाली ने) मुझे (सुग्रीव को) शत्रु के समान बहुत अधिक मारा और मेरा सर्वस्व तथा मेरी स्त्री को भी छीन लिया ।**

* शंका को महत्व देने वाला व्यक्ति सारी मर्यादायें भूलकर अनर्थ कर बैठता है ।

ताकें भय रघुबीर कृपाला ।
सकल भुवन में फिरेउँ बिहाला ।।

⊗ सकल=समस्त, भुवन=लोक, बिहाला=बेहाल ।

★ **हे कृपालु श्रीराम ! मैं बाली के भय से समस्त संसार में बेहाल होकर फिरता रहा ।**

* शंका, स्वार्थ और असंतुलन भाइयों-भाइयों को कैसी नारकीय यातना में ढकेल देता है ।

इहाँ साप बस आवत नाहीं ।
तदपि सभीत रहउँ मन माहीं ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ साप=श्राप, बस=वश, तदपि=फिर भी, सभीत=भय से पूर्ण ।

★ **वह (बाली) श्राप के कारण यहाँ (इस पर्वत पर) नहीं आता, तो भी मैं (सुग्रीव) भयभीत रहता हूँ । (बाली को ऋष्यमूक पर्वत पर न जा सकने का ऋषियों का श्राप था) ।**

* भयभीत व्यक्ति की स्थिति ऐसी ही विचित्र हो जाती है ।

सुनि सेवक दुख दीनदयाला ।
फरक उठीं द्वै भुजा बिसाला ।।

⊗ दीनदयाला=गरीबों पर दया करने वाले श्रीराम, बिसाला=विशाल ।

★ **सेवक (मित्र सुग्रीव) का दुख सुनकर गरीबों पर दया करने वाले श्रीराम की दोनों विशाल भुजाएँ फड़क उठीं ।**

* सच्चा वीर किसी के साथ अनीति होने की जानकारी पाकर निष्क्रिय नहीं रह सकता ।

सुनु सुग्रीव मारिहउँ,
बालिहि एकहि बान ।
ब्रह्म रुद्र सरनागत,
गएँ न उबरिहिं प्रान ।।

⊗ बान=बाण, सरनागत-(शरणागत)=शरण में आये हुए, उबरिहिं=बचेंगे, प्रान=प्राण, रुद्र=शंकर ।

★ **श्रीराम ने कहा– हे सुग्रीव ! सुनों मैं (श्रीराम) एक ही बाण से बाली को मार डालूंगा ! ब्रह्मा और शंकर की शरण में जाने पर भी उसके प्राण न बचेंगे ।**

* श्रीराम ने सुग्रीव को अपनी सामर्थ्य का विश्वास दिलाकर निर्भय कर दिया ।

जे न मित्र दुख होहि दुखारी ।
तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी ।।

⊗ बिलोकत=देखने से, पातक=पाप, भारी=बड़ा ।

★ **जो लोग मित्र के दु:ख से दुखी नहीं होते, उन्हें देखने से ही बड़ा पाप लगता है ।**

* ढोंगी मित्र को देखकर देखने वाले के मन में भी वैसे भाव आ सकते हैं और वह पाप के रास्ते पर बढ़ सकता है, अत: देखने में भी पाप लगने की बात कही गयी है ।

निज दुख गिरि सम रज करि जाना ।
मित्र के दुख रज मेरु समाना ।।

⊗ रज=धूल, मेरु=बड़ा भारी पर्वत (सुमेरु) ।

★ **अपने पर्वत के समान दु:ख को धूल के समान और मित्र के धूल के समान दु:ख को बड़े भारी पर्वत के समान जाने ।**

* जो ऐसा मानता और उसके अनुरूप आचरण करता है वही सच्चा मित्र है । ऐसा मित्र दुर्लभ होता है ।

जिन्ह के असि मति सहज न आई ।
ते सठ कत हठि करत मिताई ।।

⊗ असि=ऐसी, मति=बुद्धि, सहज=स्वभाव से, सठ (शठ)=मूर्ख, कत=क्यों ।

★ **जिन्हें स्वभाव से ही ऐसी बुद्धि प्राप्त नहीं है, वे मूर्ख हठ करके क्यों किसी से मित्रता करते हैं ।**

* मित्रता करने के 'पहले अपने अन्दर सच्चे मित्र की संवेदना पैदा कर लेनी चाहिए ।'

कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा ।
गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा ।।

★ **मित्र का धर्म है कि वह मित्र को बुरे मार्ग से रोक कर अच्छे मार्ग पर चलावें । उसके गुण प्रकट करें और अवगुणों को छिपावें ।**

* बुरे मार्ग से रोकने और अच्छे मार्ग पर चलाने के सूत्र यही हैं– गुण प्रकट करना अर्थात् सराहना तथा उत्साह वर्धन द्वारा उस पथ पर बढ़ावा देना । अवगुण छिपाना अर्थात् समाज में मित्र की प्रतिष्ठा घटने न देना ।

देत लेत मन संक न धरई ।
बल अनुमान सदा हित करई ।।

⊗ संक=शंका ।

★ **मित्र को देने-लेने में शंका न रक्खे । अपने बल के अनुसार सदा हित ही करता रहे ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

* यह मित्रता निर्वाह के सूत्र हैं– (१) लेना देना उतना ही करे जिससे परस्पर शंका को स्थान न मिले, (२) सामर्थ्य से अधिक न तो मित्र से आशा करे और न वैसा आश्वासन ही दे ।

विपति काल कर सतगुन नेहा ।
श्रुति कह सन्त मित्र गुन एहा ।।

⊗ काल=समय, सतगुन (शतगुण)=सौ गुना, नेहा=प्रेम, श्रुति=वेद, सन्त=उत्तम ।

★ **मित्र विपत्ति के समय अपने मित्र से सौ गुना प्रेम करे । वेद का कहना है कि उत्तम मित्र के गुण (लक्षण) यही हैं ।**

* विपत्ति काल मित्रता की कसौटी है और विपत्ति के समय प्रेम पाने की भूख भी बढ़ जाती है, अत: वह समय अधिक प्रेम करने के लिये उपयुक्त भी है ।

आगें कह मृदु बचन बनाई ।
पाछे अनहित मन कुटिलाई ।।

⊗ मृदु=मीठे, अनहित=बुराई, कुटिलाई=कुटिलता ।

★ **खोटा मित्र सामने तो बना-बनाकर कर मीठे वचन बोलता है और पीछे बुराई करता है तथा मन में कुटिलता रखता है ।**

* मित्र की मिठास और नम्रता दिखावटी नहीं होनी चाहिए ।

जाकर चित अहि गति सम भाई ।
अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई ।।

⊗ चित्त=मन, अहि=साँप, गति=चाल, अस=ऐसा, कुमित्र=खोटा मित्र, परिहरेहिं=त्यागने में ।

★ **जिस मित्र का मन साँप की चाल के समान टेढ़ा है ऐसे खोटे मित्र को त्यागने में भलाई है ।**

* मित्रता उसी से करनी चाहिए जिसके स्वभाव में टेढ़ापन न हो भूल से गलत व्यक्ति से मित्रता हो जाये तो उसे छोड़ने में मोह न करे ।

सेवक सठ नृप कृपन कुनारी ।
कपटी मित्र सूल सम चारी ।।

⊗ सूल-(शूल)=काँटा, कृपन (कृपण)=कंजूस ।

★ **मूर्ख नौकर, कंजूस राजा, कुलटा स्त्री, कपटी मित्र कांटें के समान पीड़ा देने वाले होते हैं ।**

* काँटा शरीर में दिखाई नहीं देता पर थोड़ी सी हरकत से ही भारी पीड़ा देता है । ऐसा ही कष्ट ऊपर कहे व्यक्तियों से मिलता है । इनके दोषों से होने वाली हानियाँ समझायी जानी चाहिये ।

सखा सोच त्यागहु बल मोरें ।
सब विधि घटब काज मैं तोरें ।।

⊗ घटबकाज=काज घटित करुँगा अर्थात् यथार्थ में कर दिखाऊँगा ।

★ **श्रीराम सुग्रीव से कहते हैं कि हे मित्र ! मेरी शक्ति के भरोसे तुम अपनी चिन्ता छोड़ दो । मैं सब प्रकार से तुम्हारे काम आऊँगा ।**

* झूठी शेखी तो नहीं मारनी चाहिए किन्तु अपनी शक्ति का विश्वास दिलाकर मित्र को निश्चिन्त करना उचित है ।

कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा ।
बालि महाबल अति रनधीरा ।।

★ **सुग्रीव ने कहा– हे श्रीराम! सुनिये, बालि बहुत ताकत वर है और अत्यन्त ही योद्धा है ।**

* अपने सहायक को विपक्षी के सम्बन्ध में पूरी जानकारी दे देनी चाहिए ताकि सही व्यवस्था बनाई जा सके ।

दुंदुभि अस्थि ताल देखराए ।
बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए ।।

⊗ अस्थि=हड्डी, ताल=ताड़ वृक्ष, ढहाए=गिरा दिये ।

★ **फिर सुग्रीव ने श्रीराम को दुन्दभि राक्षस की हड्डियाँ और ताड़ के वृक्ष दिखलाये । श्रीराम ने बिना प्रयत्न के ही उन्हें सरलता से गिरा दिया ।**

* दुंदुभि राक्षस की हड्डियों के निकट जो ताड़ के वृक्ष उगे थे उन्हें गिरा देने वाला बालि को मार सकता है ऐसी मान्यता थी । उन्हें गिराकर राम ने अपने पौरुष का परिचय दिया ।

देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती ।
बालि बधब इन्ह भइ परतीती ।।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ अमित=बहुत, बाढ़ी=बढ़ गई, बधव=वध करेंगे ।

★ **श्रीराम का बहुत बल देखकर सुग्रीव का प्रेम बढ़ गया और उन्हें विश्वास हो गया कि श्रीराम बालि का वध अवश्य करेंगे ।**

* आतंकित व्यक्ति केवल बातों से भरोसा नहीं करता उसके लिये प्रमाण भी देने पड़ते हैं ।

बार बार नावइ पद सीसा ।
प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा ।।

⊗ नावइ=नवाना, सीसा (शीष)=मस्तक, कपीसा=सुग्रीव ।

★ **सुग्रीव श्रीराम के चरणों में बार बार मस्तक नवाने लगे । भगवान को पहिचान कर सुग्रीव मन में प्रसन्न होने लगे ।**

* भगवान की दिव्य शक्तियों पर विश्वास न होने से ही हम प्रसन्नता से वंचित रह जाते हैं ।

उपजा ज्ञान बचन तब बोला ।
नाथ कृपाँ मन भयउ अलोला ।।

⊗ उपजा=पैदा हुआ, कृपा=कृपा से, अलोला=स्थिर ।

★ **सुग्रीव के मन में जब ज्ञान उत्पन्न हो गया तब कहने लगे– हे श्रीराम ! आपकी कृपा से मेरा मन (सुग्रीव का) स्थिर हो गया है ।**

* विश्वास होते ही बुद्धि का भ्रम समाप्त हो जाता है, भ्रम हटते ही ज्ञान प्रकाशित हो उठता है और फिर विचार करने का, कहने का ढंग ही बदल जाता है ।

सुख संपति परिवार बड़ाई ।
सब परिहरि करिहउँ सेवकाई ।।

★ **सुग्रीव कहता है– सुख, धन, परिवार, बड़प्पन सबको त्यागकर मैं (सुग्रीव) आपकी सेवा ही करूँगा ।**

* ज्ञान उदय होते ही जो सुग्रीव बालि द्वारा अपने अधिकार के हरण की शिकायत कर रहे थे वही स्वयं उन सुख सुविधाओं से दूर रहने की कामना करने लगे ।

ए सब राम भगति के बाधक ।
कहहिं संत तब पद आराधक ।।

⊗ बाधक=विरोधी, आराधक=आराधना करने वाले ।

★ **क्योंकि आपके चरणों की आराधना करने वाले संत ऐसा कहते हैं कि यह सब भोग सामग्री भगवान की भक्ति में बाधक होती है ।**

* समझदार व्यक्ति दूसरे श्रेष्ठ पुरुषों के अनुभव का लाभ उठाकर उल्लेखनीय प्रगति थोड़े समय में ही कर लेते हैं ।

शत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं ।
मायाकृत परमारथ नाहीं ।।

⊗ मायाकृत=माया द्वारा रचित, वस्तुतः=वास्तव में ।

★ **संसार में जितने शत्रु-मित्र, सुख-दुःख हैं यह सब के सब माया द्वारा रचे हुए हैं, वस्तुतः (वास्तव) में नहीं हैं ।**

* सुख दुःख आदि अपने ही दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया हैं । यह तथ्य भली प्रकार समझ में आ जाने पर मनुष्य की आकांक्षायें बदल जाती हैं ।

बालि परम हित जासु प्रसादा ।
मिलेहु राम तुम्ह समन विषादा ।।

⊗ जासु=जिसकी, प्रसादा=कृपा, विषादा=शोक ।

★ **सुग्रीव कहता है– हे श्रीराम ! बालि तो मेरा परम हितकारी है जिसकी कृपा से शोक का नाश करने वाले आप मुझे मिले है ।**

* सुग्रीव की कोई स्थूल परिस्थिति नहीं बदली केवल भ्रम हटा और सबसे बड़ा, शत्रु लगने वाला बालि सबसे बड़ा हितैषी दिखने लगा ।

अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती ।
सब तज भजन करौं दिन राती ।।

⊗ एहि=इस ।

★ **सुग्रीव कहता है– हे प्रभु ! अब तो इस प्रकार कृपा कीजिए कि सब छोड़कर दिन रात आपका भजन ही करता रहूँ ।**

* भजन का अर्थ सेवा होती है । निष्क्रिय बैठकर जप या कीर्तन नहीं । जब श्रेष्ठ मार्ग दिख जाता है तो सांसारिक कामनाएँ समाप्त हो जाती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो कछु कहेहु सत्य सब सोई ।
सखा बचन मम मृषा न होई ।।

⊗ मम=मेरा, मृषा=झूठ ।

★ **श्रीराम कहते हैं- हे सुग्रीव ! जो कुछ तुमने कहा है, वह सब सत्य है, परन्तु मेरा वचन झूठ नहीं होगा । (अर्थात् बाली मारा जावेगा और राज्य तुम्हें मिलेगा) ।**

* सुपात्र व्यक्ति को वैभव पाने अथवा बदला लेने की आकांक्षा नहीं होती, किन्तु भगवान दुष्ट का वध और सुपात्र को वैभव प्रदान करते हैं ताकि समाज की व्यवस्था बनी रहे ।

लै सुग्रीव संग रघुनाथा ।
चले चाप सायक गहि हाथा ।।

⊗ चाप=धनुष, सायक=बाण ।

★ **इसके पश्चात श्री रघुनाथजी सुग्रीव को साथ लेकर और हाथों में धनुष-बाण धारण करके चले ।**

तब रघुपति सुग्रीव पठावा ।
गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ।।

⊗ पठावा=भेजा, गर्जेसि=गरजा, निकट=पास ।

★ **तब श्रीराम ने सुग्रीव को बालि के पास भेजा । वह श्रीराम का बल पाकर बालि के निकट जाकर गरजा ।**

* समर्थ व्यक्ति का सहारा पाकर निर्बल भी सशक्त हो जाता है । इससे निर्बल को अपना हक तथा बलवान को यश मिलता है ।

सुनत बालि क्रोधातुर धावा ।
गहि कर चरन नारि समुझावा ।।

★ **बालि सुग्रीव की गर्जना सुनते ही क्रोध में भरकर वेग से दौड़ा । उसकी स्त्री तारा ने चरण पकड़ कर उसे समझाया–**

* बालि में उत्तेजना में आकर उतावली करने का दोष था, अत: उसकी पत्नी उसे विनय पूर्वक विचार कर कदम उठाने के लिए समझाने लगी ।

कोसलेस सुत लछिमन रामा ।
कालहु जीति सकहिं संग्रामा ।।

⊗ कोसलेस (कोशलेश)=दशरथ, सुत=पुत्र, कालहु=मृत्यु को, संग्रामा=युद्ध में ।

★ **तारा कहने लगी- सुग्रीव ने जिनका सहारा लिया है वे कौशलाधीश दशरथजी के पुत्र राम और लक्ष्मण हैं । वे मृत्यु को भी युद्ध में जीत सकते हैं ।**

* तारा श्रीराम की शक्ति बताकर बालि को भाई के साथ लड़ने से रोकना चाहती थी।

कह बाली सुन भीरु,
प्रिय समदर्शी रघुनाथ ।
जौं कदाचि मोहि मारहिं,
तौ पुनि होउँ सनाथ ।।

⊗ भीरु=डरपोक, कदाचि (कदाचित)=यदि ।

★ **बालि ने अपनी पत्नी से कहा, हे डरपोक प्रिये ! सुनो, श्रीराम समान दृष्टि रखने वाले हैं । कदाचित् वे मुझे मार ही डालेंगे तो मैं (बालि) सनाथ हो जाऊँगा अर्थात् परमपद प्राप्त कर लूँगा ।**

* बाली आवेश और अहंकारवश जानकर भी अनजान बन गया । उसे यह ध्यान नहीं आया कि भगवान जब सुग्रीव का पक्ष ले रहे हैं तो निश्चित रूप से भूल मेरी है और मुझे उसे सुधारना चाहिए ।

अस कहि चला महा अभिमानी ।
तृन समान सुग्रीवहि जानी ।।

⊗ तृन=तिनके, जानी=समझकर ।

★ **ऐसा कहकर महा अभिमानी बाली सुग्रीव को तिनके के समान समझकर चला ।**

* अहंकार मनुष्य को अन्धा बना देता है, जिसके कारण बाली समर्थ प्रभु द्वारा रक्षित सुग्रीव को भी कमजोर मानने लगा ।

भिरे उभौ बाली अति तर्जा ।
मुठिका मारि महाधुनि गर्जा ।।

⊗ भिरे=भिड़ गये, तर्जा=धमकाया, मुठिका=घूँसा, महाधुनि=जोर से ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ बालि और सुग्रीव दोनों भिड़ गये । बालि ने सुग्रीव को बहुत धमकाया और घूँसा मार कर बड़े जोर से गरजा ।

तब सुग्रीव बिकल होइ भागा ।
मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा ।।

⊗ बिकल=व्याकुल, प्रहार=चोट, बज्र=बहुत भारी ।

★ मुष्टिका की चोट बहुत भारी वज्र के समान सुग्रीव को लगी, तब सुग्रीव व्याकुल होकर भागा ।

मैं जो कहा रघुवीर कृपाला ।
बंधु न होई मोर यह काला ।।

★ सुग्रीव ने लौटकर कहा- हे दयालु श्रीराम बालि मेरा भाई नहीं है यह तो मेरे लिये काल के समान है ।

एक रूप तुम भ्राता दोऊ ।
तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ ।।

★ श्रीराम ने कहा तुम दोनों भाइयों का एक समान रूप देख मैं बाली को पहचान नहीं पाया और इसलिए उसको मैंने नहीं मारा ।

* दोनों भाई का एक रूप देखकर नहीं मारा, यह कथन दूसरा अर्थ भी रखता है । सुग्रीव भी अहंकार तथा बदले की भावना से भरकर गरजा था । भावनात्मक दृष्टि से वह भी बाली के समान दोषी था । पुनः उसे अपने आपको अनीति मिटाने के लिए भगवान द्वारा भेजा गया सैनिक मानना चाहिए था ।

कर परसा सुग्रीव शरीरा ।
तनु भा कुलिस गई सब पीरा ।।

⊗ परसा (स्पर्श किया)=छुआ, कुलिस=वज्र, पीरा=पीड़ा, भा=हुआ ।

★ श्रीराम ने सुग्रीव के शरीर को हाथ से स्पर्श किया जिससे उसका शरीर वज्र के समान हो गया और सारी पीड़ा जाती रही ।

* भगवान के मार्ग में चलने से व्यक्ति को जो कष्ट अथवा शक्ति की कमी का अनुभव होता है उस अभाव को भगवान दूर करते हैं ।

मेली कंठ सुमन कै माला ।
पठवा पुनि बल देइ बिसाला ।।

★ तब श्रीराम ने सुग्रीव के गले में फूलों की माला डाली और फिर उसे बड़ा भारी बल देकर बालि से युद्ध करने भेजा ।

* पहचान के लिये माला गले में डाली, यह एक भाव है, दूसरा यह भाव कि स्वयं कर्तापन का अभिमान न आये, यह स्मरण रखने के लिए चिन्ह दे दिया ।

पुनि नाना बिधि भई लराई ।
बिटप ओट देखहिं रघुराई ।।

⊗ बिटप=वृक्ष, ओट=आड़ ।

★ सुग्रीव और बाली में फिर अनेक प्रकार से युद्ध हुआ । श्रीराम वृक्ष की आड़ से देख रहे थे ।

* इस बार सुग्रीव ने अहंकार पूर्ण गर्जन नहीं किया अतः प्रभु की शक्ति का उपयोग करते हुए अनेक प्रकार से पुरुषार्थ पूर्वक युद्ध कर सका ।

बहु छल बल सुग्रीव कर,
हियँ हारा भय मानि ।
मारा बालि राम तब,
हृदय माँझ सर तानि ।।

⊗ हियँ=हृदय, माँझ=बीच, तानि=खींचकर ।

★ सुग्रीव ने बहुत से छल-बल किये किन्तु वह भय मानकर हृदय में हार गया । तब श्रीराम ने बालि के हृदय में बाण मारा ।

* प्रभु के कार्य में अपनी शक्ति का घमण्ड न करे परन्तु अपनी सारी शक्ति लगा दे, यदि फिर भी कमी रह जाती है तो प्रभु अपनी शक्ति लगा देते हैं ।

परा बिकल महि सर के लागें ।
पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगें ।।

★ श्रीराम द्वारा छोड़े गये बाण के लगते ही बालि व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा किन्तु प्रभु श्री रामचन्द्रजी को आगे देख कर वह फिर उठ बैठा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* बालि को प्रभु के प्रति प्रेम था अत: उन्हें देखकर उसमें उत्साह आ गया ।

पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा ।
सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा ।।

⊗ चितइ=देखकर, चीन्हा=पहिचान कर ।

★ **बालि ने बार बार भगवान की ओर देखकर अपने चित्त (मन) को उनके (श्रीराम) चरणों में लगा दिया । श्रीराम को पहिचान कर अपने जन्म को सफल माना ।**

* मारे जाने पर भी बालि ने भगवान के प्रति अपनी आस्था डिगने नहीं दी । सांसारिक कृत्यों का दण्ड भगवान दें तो भी उनकी न्यायप्रियता और स्नेह पर शंका न करें ।

हृदयँ प्रीति मुख बचन कठोरा ।
बोला चितइ राम की ओरा ।।

⊗ ओरा=तरफ ।

★ **बालि के हृदय में प्रेम था । परन्तु उसके मुँह में कठोर वचन थे । वह श्रीराम की ओर देखकर बोला ।**

* बालि को भगवान के प्रति अपने ज्ञान का अहंकार अभी था । अत: उसके शब्दों में उसकी झलक दिखने लगी ।

धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं ।
मारेहु मोहि ब्याध की नाईं ।।

⊗ हेतु=के लिए, अवतरेहु=अवतार लिया, ब्याध=शिकारी ।

★ **बालि कहता है- हे श्रीराम ! आपने धर्म की रक्षा के लिए जन्म लिया है । परन्तु मुझे व्याध की तरह (छिपकर) मारा है ।**

* भगवान के जन्म का उद्देश्य समझते हुए भी अहंकार वश उसके प्रश्न में व्यंग का भाव आ गया ।

मैं बैरी सुग्रीव पिआरा ।
अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ।।

⊗ बैरी=दुश्मन, पिआरा=प्यारा, कवन=किस ।

★ **मैं (बालि) आपका दुश्मन और सुग्रीव आपका प्यारा ? हे श्रीराम आपने मुझे किस दोष से मारा ?**

* पुन: उसके विवेक ने जोर मारा तथा वह सहज भाव से अपना दोष पूछने लगा ।

अनुज बधू भगिनी सुत नारी ।
सुनु सठ कन्या सम ए चारी ।।

⊗ अनुज=छोटा भाई, बधू=पत्नी, भगिनी=बहिन ।

★ **श्रीराम ने कहा- हे मूर्ख बालि ! सुन, छोटे भाई की पत्नी, बहिन, पुत्र की स्त्री और कन्या ये चारों समान हैं ।**

* (१) सहज जिज्ञासा का समधान भगवान करते हैं । (२) पारिवारिक मर्यादा का यह स्वरूप अंगीकार करने वाले व्यक्ति घर के आदर्श मुखिया बन सकते हैं ।

इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई ।
ताहि बधें कछु पाप न होई ।।

⊗ कुदृष्टि=बुरी दृष्टि, बिलोकइ=देखता है, जोई=जो बधें=मारने में ।

★ **श्रीराम ने कहा- इनको जो कुदृष्टि से देखता है, उसे मारने से कुछ भी पाप नहीं होता है ।**

* उपरोक्त पवित्र सम्बन्धों के प्रति बुरी निगाह किसी भी कीमत पर सहन नहीं की जानी चाहिए । उसके निवारण के लिए समझाने से लेकर वध तक के हर प्रयास को धर्म संगत कहा जाता है ।

सुनहु राम स्वामी सन,
चल न चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूँ मैं पापी,
अन्तकाल गति तोरि ।।

⊗ सन=सामने, चातुरी=चतुराई, अजहूँ=अब भी, अन्तकाल=मृत्यु के समय ।

★ **बालि ने कहा- हे श्रीराम ! सुनिये, स्वामी (श्रीराम) के सामने मेरी चतुराई नहीं चल सकती । हे प्रभु ! मृत्यु के समय आपकी शरण पाकर भी मैं पापी ही रहा क्या ?**

* अपनी भूल समझ कर भी दुनिया की निगाह में अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये लोग तरह-तरह के तर्क करते हैं- पर उनका प्रभाव भगवान पर नहीं पड़ता उसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिये तो सच्ची भावना से पश्चात्ताप करना पड़ता है । बालि ने भी वही किया ।

जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं ।
अन्त राम कहि आवत नाहीं ।।

⊗ जतन=यत्न, कराहीं=करते रहते, अन्त=मृत्यु के समय, आवत=आता ।

★ बालि कहता है– मुनिगण जन्म-जन्म में अनेक प्रकार के साधन करते रहते हैं, फिर भी मृत्यु के समय उनके मुँह से राम नहीं निकल पाता ।

* अन्त समय वही प्रकरण ध्यान में आता है जिसके प्रति अंत:करण में सच्ची भावना हो । ऊपरी उपचार जप, तप जीवन भर करते रहने पर भी अन्त:करण में भगवान के प्रति सच्ची निष्ठा पैदा नहीं होती ।

मम लोचन गोचर सोइ आवा ।
बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा ।।

⊗ लोचन=नेत्र, बहुरि=फिर, अस=ऐसा ।

★ बालि कहता है– वह श्रीराम स्वयं मेरे नेत्रों के सामने आ गये हैं । प्रभो ! ऐसा संयोग क्या फिर बन पड़ेगा ।

* बालि ने जीवन भर भगवान के प्रति प्रेम साधना की थी, अन्त समय में वह उभर आयी तथा मोहवश हुई भूल का उसने पश्चात्ताप किया ।

रामचरन दृढ़ प्रीति करि,
बालि कीन्ह तन त्याग ।
सुमन माल जिमि कंठ ते,
गिरत न जानइ नाग ।।

⊗ कीन्ह=दिया, जिमि=जैसे, नाग=हाथी ।

★ श्रीराम के चरणों में दृढ़ प्रीति करके बालि ने शरीर को वैसे ही त्याग दिया जैसे हाथी अपने गले से फूलों की माला गिरना नहीं जान सकता है ।

* भगवान अर्थात्– उनके आदर्शों के प्रति प्रेम तथा अपने अहंकार की खींचतान में बालि ने अपना समर्थन प्रेम भावना को देकर उसे दृढ़ बना लिया । अत: उसे अपनी आत्मा का बोध हो गया और शरीर छूटने का पता ही नहीं लगा ।

ooo



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय-८

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये ।
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ॥
सत्यं भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे ।
कामादि दोषरहितं कुरु मानसं च ॥

⊗ स्पृहा=कामना, वदामि=कहता हूँ, भवान=आप, निर्भरां=पूर्ण, कुरु=करिये ।

★ **मैं सत्य कहता हूँ, हे रघुनाथ जी ! मेरे मन में अन्य कोई इच्छा नहीं है । बस आप मेरे मन को कामादि दोषों से मुक्त करके अपनी भक्ति प्रदान करिये ।**

* भगवान की सच्ची एवं पूर्ण भक्ति तभी प्राप्त होती है जब सभी कामनायें त्याग दी जायें तथा कामादि दोषों को हटाकर मन निर्मल कर लिया जाय ।

तारा बिकल देखि रघुराया ।
दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ॥

★ **बालि के मरने पर उसकी पत्नी तारा को व्याकुल देखकर श्रीराम ने उसे ज्ञान दिया और उसकी माया (अज्ञान) को हरण कर लिया ।**

* भगवान की कृपा का प्रमाण अज्ञान नाश ही है, सुख-सुविधायें प्राप्त होना नहीं ।

छिति जल पावक गगन समीरा ।
पंच रचित अति अधम सरीरा ॥

⊗ छिति (क्षिति)=पृथ्वी, पावक=अग्नि, समीरा=वायु ।

★ **श्रीराम ने कहा- पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु- इन पाँचों तत्वों से बना यह शरीर बहुत अधम है ।**

* आत्मा के पाँच कोष कहे गये हैं, (आनन्दमय, विज्ञानमय, मनोमय, प्राणमय तथा अन्नमय) उन सबकी तुलना में यह स्थूल (अन्नमय) सबसे हीन है । यह बराबर गन्दगी भी विसर्जित करता रहता है, अत: इसे अधम कहा गया ।

प्रगट सो तनु तव आगें सोवा ।
जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा ॥

⊗ प्रगट=प्रत्यक्ष, सोवा-सोया (पड़ा हुआ), नित्य=हमेशा रहने वाला (शाश्वत), केहि लगि=किसके लिये ।.

★ **श्रीराम कहते हैं- हे तारा ! तुम्हारे पति का वह पंच तत्वों से मिश्रित शरीर तो प्रत्यक्ष तुम्हारे सामने पड़ा हुआ है और जीव नित्य है । फिर किसके लिए विलाप कर रही हो ।**

* अर्थात्— मृत्यु से कुछ गया नहीं जीव तो कुछ मरता नहीं और देह कहीं गयी नहीं । फिर दु:ख किस बात का ?

उपजा ग्यान चरन तब लागी ।
लीन्हेसि परम भगति बर मांगी ॥

★ **श्रीराम के सत्संग से तारा के मन में ज्ञान उत्पन्न हुआ । तब वह भगवान् के चरणों से लगी और उनसे परम भक्ति का वर माँग लिया ।**

* सद्ज्ञान से दुख का नाश और श्रद्धा भक्ति का उदय होता है । फिर प्राणी सांसारिकता की नहीं ईश्वरत्व की इच्छा करने लगता है ।

तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा ।
मृतक कर्म विधिवत सब कीन्हा ॥

⊗ मृतक कर्म=मृत्यु सम्बन्धी कर्मकाण्ड, विधिवत=विधान पूर्वक ।

★ **इसके पश्चात् श्रीराम जी ने सुग्रीव को आज्ञा दी और सुग्रीव ने विधान पूर्वक बालि का मृत्यु सम्बन्धी कर्म पूरा किया ।**

* अन्त्येष्टि और मरणोत्तर संस्कार जीवात्मा की शान्ति के लिये तथा समाज को प्रेरणा देने के लिये किये जाते हैं ।

राम कहा अनुजहि समुझाई ।
राज देहु सुग्रीवहि जाई ॥

★ **तब श्रीराम ने छोटे भाई लक्ष्मण को कहा कि तुम जाकर सुग्रीव को राज्य दे दो ।**

* भारतीय परम्परा यही रही है कि समर्थ व्यक्ति अनीति करने वालों से राज्य छीन लेते थे, पर स्वयं अपने अधिकार में न लेकर उसी समाज के सत्पात्र व्यक्ति को सोंप देते थे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रघुपति चरन नाइ करि माथा ।
चले सकल प्रेरित रघुनाथा ।।

★ श्रीराम की प्रेरणा (आज्ञा) से सब लोग श्रीराम के चरणों में मस्तक नवाकर चले ।

लछिमन तुरत बोलाए,
पुरजन विप्र समाज ।
राज दीन्ह सुग्रीव कहँ,
अंगद कहँ जुबराज ।।

⊗ तुरत (तुरन्त)=शीघ्र, पुर जन=नगर के लोग, विप्र=ब्राह्मण ।

★ लक्ष्मण जी ने तुरन्त ही सब नगर के लोगों को और ब्राह्मणों के समाज को बुला लिया और (उनके सामने) सुग्रीव को राज्य और अंगद को युवराज पद दिया ।

* (१) राजा का परिवर्तन जनता की सहमति से किया जाय यही उचित ढंग है । (२) बालि पुत्र अंगद सदाचारी था अत: उसे राज्य के अधिकार से वंचित नहीं किया ।

उमा राम सम हित जग माहीं ।
गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ।।

★ हे पार्वती! संसार में श्रीराम के समान हित करने वाला गुरु, पिता, माता, बन्धु और स्वामी कोई नहीं हैं ।

* संसार में गुरु, पिता, माता, बन्धु तथा स्वामी में मनुष्य होने के कारण थोड़ी बहुत स्वार्थ की गन्ध आ भी जाती है, जबकि श्रीराम नि:स्वार्थ भाव से सबका हित करते हैं ।

बालि त्रास व्याकुल दिन राती ।
तन बहु ब्रन चिंता जर छाती ।।

⊗ त्रास=भय, ब्रन=घाव, जर=जला करती थी ।

★ जो सुग्रीव दिन-रात बालि के भय से व्याकुल रहता था, जिसके शरीर में बहुत से घाव हो गये थे और जिसकी छाती चिन्ता के मारे जला करती थी ।

सोइ सुग्रीव कीन्ह कपि राऊ ।
अति कृपालु रघुबीर सुभाऊ ।।

★ उसी सुग्रीव को श्रीराम ने वानरों का राजा बना दिया, श्रीराम का स्वभाव अत्यन्त ही दयालु है ।

* ईश्वर उपासना तथा उसके नियमों का पालन करके मनुष्य दीन स्थिति से उठकर परम सामर्थ्यवान बन सकता है ।

पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई ।
बहु प्रकार नृपनीति सिखाई ।।

⊗ लीन्ह बोलाई=बुला लिया, नृपनीति=राज्य नीति ।

★ फिर श्रीराम ने सुग्रीव को बुला लिया और बहुत प्रकार से उन्हें राजनीति की शिक्षा दी ।

* सदाचारी व्यक्ति को सत्ता सोंप देना ही काफी नहीं, उसे उस अधिकार के सही उपयोग के ढंग भी बताये, सिखाये जाने चाहिए । यह मार्ग-दर्शन समकालीन विचारकों से प्राप्त किया जाना चाहिए ।

कह प्रभु सुन सुग्रीव हरीसा ।
पुर न जाउँ दस चारि बरीसा ।।

⊗ हरीसा (हरि+ईसा)=वानरों के स्वामी, दस चारि=चौदह, बरीसा=वर्ष ।

★ फिर श्रीराम ने कहा– हे वानरपति सुग्रीव ! सुनो मैं चौदह वर्ष तक गाँव में नहीं जाऊँगा ।

* श्रीराम ने पिता को दिए गये वचन की मर्यादा पूरी निष्ठा से निभाई ।

गत ग्रीषम बरषा रितु आई ।
रहिहउँ निकट सैल पर छाई ।।

⊗ ग्रीषम=गरमी, सैल=पर्वत, छाई=रहूँगा ।

★ ग्रीष्म रितु बीत गई है वर्षा रितु आ गई है । अत: मैं (श्रीराम) यहाँ पास ही पर्वत पर रहूँगा ।

* वर्षा ऋतु में खोज कार्य संभव नहीं अत: उतने समय प्रतीक्षा करनी पड़ी ।

अंगद सहित करहु तुम राजू ।
संतत हृदयँ धरेहु मम काजू ।।

⊗ संतत=सदा, धरेहु=ध्यान रखना, काजू=काम ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ श्रीराम ने कहा- हे सुग्रीव ! तुम अंगद सहित राज्य करो । परन्तु मेरे काम का हृदय में सदा ध्यान रखना ।

* राज्य भोग मिल जाने पर बहुधा लोग प्रतिज्ञा, नियम, वचन भुला देते हैं, इसलिए श्रीराम ने सुग्रीव को सतर्क कर दिया ।

जब सुग्रीव भवन फिरि आए ।
राम प्रबरषन गिरि पर छाए ।।

⊗ प्रबरषन (प्रवर्षण)=पर्वत का नाम, छाए=निवास करने लगे ।

★ इसके पश्चात् जब सुग्रीव घर लौट आये । तब श्रीराम प्रवर्षण नामक पर्वत पर जाकर निवास करने लगे ।

मंगलरूप भयउ बन तब ते ।
कीन्ह निवास रमापति जब ते ।।

⊗ रमापति=श्रीराम ।

★ जब से श्रीराम ने उस पर्वत पर निवास किया तब से वन मंगलस्वरूप हो गया ।

* संत पुरुष अपनी उपासना तथा साधना के प्रकाश से किसी भी स्थान को सुरम्य बना देते हैं ।

फटिक सिला अति सुभ सुहाई ।
सुख आसीन तहाँ द्वौ भाई ।।

⊗ फटिक=स्फटिक मणि, सुभ (शुभ्र)=उज्ज्वल, आसीन=विराजमान ।

★ सुन्दर स्फटिक मणि जैसी एक अत्यन्त उज्ज्वल शिला पर दोनों भाई (श्रीराम और लक्ष्मण) सुख-पूर्वक विराजमान हैं ।

कहत अनुज सन कथा अनेका ।
भगति बिरति नृपनीति बिबेका ।।

★ श्रीराम छोटे भाई लक्ष्मण से भक्ति, वैराग्य, राज नीति और ज्ञान की अनेक कथाऐं कहते हैं ।

* श्रेष्ठ पुरुष अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाते । वर्षा के दिनों में स्थूल क्रियाकलाप रोक देने पड़ते हैं तो उस समय को ज्ञान संवर्धन में लगाते हैं, कथा चर्चा द्वारा अधिक रोचक ढ़ंग से ज्ञान का आदान-प्रदान किया जा सकता है ।

बरषा काल मेघ नभ छाए ।
गरजत लागत परम सुहाए ।।

⊗ मेघ=बादल, नभ=आकाश ।

★ श्रीराम कहते हैं- वर्षा काल में आकाश में छाये हुए बादल गरजते हुए बहुत ही सुहावने लगते हैं ।

* समझदार व्यक्ति सामान्य प्रसंगों में भी रोचकता पैदा करके उसमें सद्ज्ञान की पुट लगा देते हैं । श्रीराम वर्षा वर्णन के साथ श्रेष्ठ सिद्धान्त भाई लक्ष्मण को सिखाने लगे ।

लछिमन देखु मोर गन,
नाचत बारिद पेखि ।
गृही बिरति रत हरष जस,
बिष्नुभगत कहुँ देखि ।।

⊗ गन=झुण्ड, बारिद=बादल, पेखि=देखकर, गृही=गृहस्थ, रति=अनुरक्त ।

★ श्रीराम ने कहा- हे लक्ष्मण ! देखो, मोरों के झुण्ड बादलों को देखकर नाच रहे हैं, जैसे वैराग्य में अनुरक्त गृहस्थ विष्णु भक्त को देखकर हर्षित होते हैं ।

* गृहस्थ लोग गृहस्थाश्रम का पालन करते हुए त्यागमय जीवन जीना सीखें । ऐसे गृहस्थों को लौकिक पदार्थों की प्राप्ति जैसा सुख श्रेष्ठ पुरुषों के संग से ही अनुभव होता है ।

दामिनि दमक रह न घन माहीं ।
खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ।।

⊗ दामिनि=बिजली, दमक=चमक, जथा=जैसे, थिर=स्थिर ।

★ श्रीराम कहते हैं- बादलों में बिजली ऐसे चमक रही है जैसे दुष्ट की प्रीति स्थिर नहीं रहती ।

* दुष्ट व्यक्ति स्वार्थ के लिए प्रेम का प्रदर्शन करते हैं पर वह बिजली की चमक की तरह थोड़ी देर तो बहुत तेज दिखता है पर फिर अन्धकार हो जाता है ।

बरषहिं जलद भूमि नियराएँ ।
जथा नवहिं बुध विद्या पाएँ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ जलद=बादल, नियराऐं=समीप आकर, बुध=विद्वान ।

★ **बादल पृथ्वी के समीप आकर बरस रहे हैं । जैसे विद्या पाकर विद्वान नम्र हो जाते हैं ।**

* सच्ची विद्या वही है जिसे पाकर मनुष्य के जीवन में विनम्रता आ जावें । ऐसा विद्वान समाज में घुल-मिलकर अपने ज्ञान का लाभ सबको स्वयं देता रहता है ।

बूँद अघात सहहिं गिरि कैसें ।
खल के बचन सन्त सह जैसें ।।

⊗ अघात=चोट, सहहिं=सहते हैं ।

★ **बूँदों की चोट पर्वत कैसे सहते हैं जैसे दुष्टों के वचन सन्त सहते हैं ।**

* बूँद के आघात से कच्ची मिट्टी बह जाती है, दृढ़ पर्वतों का कुछ नहीं बिगड़ता । इसी प्रकार दुष्टों के कठोर शब्दों से कच्ची मनोभूमि वालों का संतुलन बिगड़ता है, साधना द्वारा पुष्ट मनोभूमि बना लेने वाले संतों का नहीं ।

छुद्र नदी भरि चलीं तोराई ।
जस थोरेहुँ धन खल इतराई ।।

⊗ छुद्र (क्षुद्र)=छोटी, तोराई=तुड़ाती हुई, इतराई=अहंकार से फूल उठते हैं ।

★ **श्रीराम कहते हैं- छोटी नदियाँ भर कर (किनारों को) तुड़ाती हुई चलीं, जैसे थोड़े धन से भी दुष्ट इतरा जाते हैं (मर्यादा त्याग कर देते हैं) ।**

* जिनके हृदय में अध्यात्म की गहराई नहीं आ पाती है वहाँ संसार का थोड़ा-सा वैभव उन्हें अहंकारी तथा असंयमी बना देता है । ये फिर मर्यादाओं को तोड़कर समाज को हानि पहुँचाने लगते हैं ।

भूमि परत भा डाबर पानी ।
जनु जीवहि माया लपटानी ।।

⊗ डाबर=गँदला हो गया, लपटानी=लिपट गई ।

★ **पृथ्वी पर पानी गिरते ही गँदला हो गया जैसे शुद्ध जीव से माया लिपट गई हो ।**

* आत्मा परमात्मा का रूप है, परन्तु संसार के विषयों को छूते ही वे उससे लिपट जाते हैं और जीव मलीन हो जाता है ।

समिटि समिटि जल भरहिं तलावा ।
जिमि सद्गुन सज्जन पहिं आवा ।।

⊗ समिटि=एकत्र होना, पहिं आवा=पास चले आते हैं ।

★ **श्रीराम कहते हैं- जल एकत्र हो-हो कर तालाबों में भर रहा है जैसे सद्गुण एक-एक करके सज्जन के पास चले आते हैं ।**

* यदि मनुष्य में सज्जनता है तो गुणी लोग स्वतः उसे गुण सिखाते रहते हैं । हमारी दुर्जनता ही हमें गुण से वंचित रखती हैं ।

सरिता जल जलनिधि महुँ जाई ।
होइ अचल जिमि जिव हरि पाई ।।

⊗ सरिता=नदी, जलनिधि=समुद्र, महुँ=में, अचल=स्थिर ।

★ **श्रीराम कहते हैं- नदी का जल समुद्र में जाकर वैसे ही स्थिर हो जाता है, जैसे जीव भगवान को पाकर स्थिर (मुक्त) हो जाता है ।**

* ईश्वर साक्षात्कार न होने तक ही मनुष्य में बेचैनी रहती है, उसके बाद वह शान्त हो जाता है ।

हरित भूमि तृन संकुल,
समुझि परहिं नहिं पन्थ ।
जिमि पाखंड विवाद ते,
लुप्त होहि सद्ग्रन्थ ।।

⊗ हरित=हरी, संकुल=परिपूर्ण, परहिं=पड़ते, पंथ=रास्ता, पाखण्ड=आडम्बर, बाद=मत ।

★ **पृथ्वी घास से ढककर हरी हो गई है, जिससे रास्ते समझ नहीं पड़ते, जैसे पाखण्ड मत के प्रचार से सद्ग्रन्थ लुप्त हो जाते हैं ।**

* जब विद्वान लोग स्वार्थवश ज्ञान का दुरुपयोग करने लगते हैं तब इतने भिन्न-भिन्न प्रकार के सिद्धान्त पैदा कर दिए जाते हैं कि सही रास्ता लोगों की समझ में नहीं आता ।

दादुर धुनि चहुं दिसा सुहाई ।
बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ।।

⊗ दादुर=मेंढक, धुनि=ध्वनि, दिसा=दिशा, सुहाई=सुहावनी, बटु=विद्यार्थी, समुदाई=समुदाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ चारों दिशाओं में मेंढ़कों की ध्वनि ऐसी सुहावनी लगती है मानो विद्यार्थियों के समुदाय वेद पढ़ रहे हों ।

* अभ्यास के समय विद्यार्थी भिन्न-भिन्न मंत्रों को भिन्न स्वरों और लयों में बोलते हैं ।

नव पल्लव भए बिटप अनेका ।
साधक मन जस मिलें बिबेका ।।

⊗ नव=नया, पल्लव=पत्ते, बिटप=वृक्ष ।

★ अनेक वृक्षों में नये पत्ते आ गये हैं, जिससे वे ऐसे हरे-भरे एवं सुशोभित हो गये हैं जैसे साधक का मन ज्ञान प्राप्त करने पर हो जाता है ।

* विवेक जागृत होने पर साधक के मन में नये-नये सुविचार पैदा होने लगते हैं ।

अर्क जवास पात बिनु भयऊ ।
जस सुराज खल उद्यम गयऊ ।।

⊗ अर्क=मदार (एक पौधे का नाम), जवास=जवासा (एक पौधे का नाम), सुराज=श्रेष्ठ राज्य, उद्यम=चलन ।

★ मदार एवं जवास नामक पौधे पत्तों से रहित हो गये जैसे श्रेष्ठ राज्य में दुष्टों का धंधा जाता रहता है ।

* श्रेष्ठ राज्य व्यवस्था होने पर दुष्टों के धंधे, काला बाजारी, मिलावट, भ्रष्टाचार आदि समाप्त हो जाते हैं ।

खोजत कतहुँ मिलइ नहि धूरी ।
करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी ।।

⊗ धूरी=धूल, कतहुँ=कहीं भी ।

★ धूल कहीं खोजने पर भी नहीं मिलती, जैसे क्रोध का आवेश होने पर धर्म का ज्ञान नहीं रह जाता ।

* धर्म उचित और संतुलित आचरण होता है । क्रोध में विवेक और संतुलन दोनों नष्ट हो जाते हैं अतः धर्म का स्वरूप ही समझ में नहीं आता ।

ससि सम्पन्न सोह महि कैसी ।
उपकारी के सम्पति जैसी ।।

⊗ उपकारी=दूसरों की भलाई करने वाला, ससि=अन्न ।

★ अन्न से युक्त पृथ्वी कैसी शोभित हो रही है जैसी उपकारी की सम्पत्ति शोभा देती है ।

* खेत में जो अन्न पैदा होता है वह खेत अपने पास नहीं रखता, वह भूखों की भूख मिटाने के लिये बट जाता है । ऐसे ही उपकारी व्यक्ति सम्पत्ति कमाता तो स्वयं है, पर समाज के हित में खर्च करता रहता है ।

निसि तम घन खद्योत बिराजा ।
जनु दम्भिन्ह कर मिला समाजा ।।

⊗ निसि=रात, तम=अधंकार, खद्योत=जुगनू, बिराजा=स्थित है, दंभिन्ह=दम्भियों का ।

★ रात के घने अन्धकार में जुगनू शोभा पा रहे हैं, मानो दम्भियों का समाज आ जुटा हो ।

* जुगनू अंधेरे में अपनी-अपनी चमक दिखाते हैं, प्रकाश में इनका कोई महत्व नहीं । इसी प्रकार शेखीखोर अज्ञानियों के बीच अपनी-अपनी शेखी मारते रहते है ।

कृषी निरावहिं चतुर किसाना ।
जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ।।

⊗ कृषी=खेती, निरावहिं=निराई कर रहे हैं, माना=अहंकार ।

★ चतुर किसान खेतों की नराई कर (साफ कर) रहे हैं । जैसे विद्वान लोग मोह मद और अहंकार का त्याग कर देते हैं ।

* गुणों की तुलना अन्न से तथा दोषों की तुलना बेकाम के घास-पात से की गयी है । अन्न को पूरा रस मिले इसलिये उनके आस-पास उगे घास-पात उखाड़ दिये जाते हैं, उसी प्रकार दोषों का उन्मूलन करते रहने से गुण पुष्ट होते हैं ।

ऊसर बरषइ तृन नहिं जामा ।
जिमि हरिजन हिय उपज न कामा ।।

⊗ ऊसर=अनुपजाऊ भूमि, जामा=उगना, कामा=काम (वासना) ।

★ अनुपजाऊ भूमि में वर्षा होती है, पर वहाँ घास तक नहीं उगती, जैसे हरिभक्त के हृदय में काम नहीं उत्पन्न होता ।

* भक्त की मनोभूमि ही ऐसी बन जाती है कि वहां विकार के बीज आ पड़ें तो भी पनप नहीं सकते ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बिबिध जन्तु संकुल महि भ्राजा ।
प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा ।।

⊗ जन्तु=जीव, भ्राजा=भरी हुई, बाढ़=वृद्धि ।

★ **पृथ्वी अनेक तरह के जीवों से भरी हुई उसी तरह शोभायमान है जैसे सुराज्य पाकर प्रजा की वृद्धि होती है ।**

* अच्छी राज्य व्यवस्था जहाँ होती है वहाँ प्रजा रहना चाहती है, अव्यवस्था वाले स्थान को छोड़ देती है ।

जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना ।
जिमि इन्द्रिय गन उपजें ग्याना ।।

⊗ पथिक=राहगीर, थकि=थक कर ।

★ **श्रीराम कहते हैं- जहाँ तहाँ अनेक पथिक थककर ठहरे हुए हैं, जैसे ज्ञान उत्पन्न होने पर इन्द्रियाँ शिथिल होकर विषयों की ओर जाना छोड़ देती हैं ।**

* इन्द्रियों में विषयों के प्रति उत्साह मन की संगति से ही होता है । ज्ञान उत्पन्न होने पर मन विषयों से हटकर उच्च आदर्शों की ओर लग जाता है अत: इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं ।

कबहुँ प्रबल बह मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूत के ऊपजें, कुल सधर्म नसाहिं ।।

⊗ कबहुँ=कभी, मारुत=वायु, बिलाहिं=गायब होते, नसाहिं=नष्ट होते हैं ।

★ **कभी-कभी वायु बड़े जोर से चलने लगती है, जिससे बादल जहाँ-तहाँ गायब हो जाते हैं, जैसे कुपुत्र के उत्पन्न होने से कुल के उत्तम धर्म (श्रेष्ठ-आचरण) नष्ट हो जाते हैं ।**

* बच्चों में श्रेष्ठ संस्कार पैदा किए जाने चाहिएँ यदि उनमें कुसंस्कार पनप जाते हैं तो वह कुल का नाम बढ़ाने के स्थान पर सारी श्रेष्ठता पर पानी फेर देते हैं ।

कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम, कबहुक प्रगट पतंग ।
बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि, पाइ कुसंग सुसंग ।।

⊗ निबिड़=घोर, पतंग=सूर्य, बिनसइ=नष्ट होता है ।

★ **कभी बादलों के कारण दिन में घोर अंधकार छा जाता है और कभी सूर्य प्रकट हो जाता है, जैसे कुसंग पाकर ज्ञान नष्ट हो जाता है और सुसंग पाकर ज्ञान उत्पन्न हो जाता है ।**

* ज्ञान संगति के प्रभाव से जागृत और नष्ट होता रहता है । अत: प्रयासपूर्वक अच्छी संगति ही करनी चाहिए ।

बरषा बिगत सरद रितु आई ।
लछिमन देखहु परम सुहाई ।।

⊗ सरद=शरद ऋतु ।

★ **श्रीराम कहते हैं- हे लक्ष्मण ! देखो वर्षा बीत गई है और परम सुन्दर शरद ऋतु आ गई है ।**

* अब आगे शरद ऋतु की प्राकृतिक स्थिति के उदाहरण के द्वारा श्रीरामचन्द्रजी भाई लक्ष्मण को सीख देते हैं ।

फूले कांस सकल महि छाई ।
जनु बरषा कृत प्रगट बुढ़ाई ।।

★ **फूले हुए कास (सफेद रेशों से) सारी पृथ्वी पर छा गये हैं मानो वर्षा ऋतु ने अपना बुढ़ापा प्रकट किया है ।**

* संसार में हर वस्तु का समय परिवर्तनशील है । अस्तु अपने शरीर में सामर्थ्य रहते निरन्तर सत्कर्म करते रहना चाहिए ।

उदित अगस्ति पन्थ जल सोषा ।
जिमि लोभहि सोषइ सन्तोषा ।।

★ **अगस्त्य तारे ने उदय हो कर मार्ग के जल को सोख लिया, जैसे संतोष को लोभ सोख लेता है ।**

* मनुष्य लोभवश अनीति में पड़कर अपयश और दु:ख पाता है । संतोष की वृत्ति का उदय होते ही लोभ समाप्त हो जाता है और व्यक्ति शान्ति पाता है ।

सरिता सर निर्मल जल सोहा ।
संत हृदय जस गत मद मोहा ।।

⊗ सर=तालाब ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **नदियों और तालाबों का निर्मल जल ऐसी शोभा पा रहा है, जैसे मद और मोह से रहित संतों का हृदय ।**

* अहंकार एवं मोह आदि मनुष्य की मनोभूमि को मलीन बनाये रहते हैं । सन्त लोग मदमोह को अपने अन्त:करण से हटा देते हैं अत: मन निर्मल हो जाता है ।

रस रस सूख सरिस सर पानी ।
ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ।।

⊗ रस-रस=धीरे-धीरे, ममता=संसार के साथ अपनत्व का भाव ।

★ **नदी और तालाबों का जल धीरे-धीरे सूख रहा है, जैसे ज्ञानी (विवेकी) पुरुष धीरे-धीरे ममता का त्याग करते हैं ।**

* समाज के बड़े कार्य करने के लिये अपने आस-पास के व्यक्तियों के प्रति अपना लगाव कम करना पड़ता है । विवेकवान पुरुष इसे धीरे-धीरे कम करते चलते हैं ।

जानि सरद रितु खंजन आए ।
पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ।।

⊗ खंजन=एक पक्षी का नाम, सुकृत=अच्छे कर्म (पुण्य कर्म) ।

★ **शरद ऋतु जानकर खंजन पक्षी आ गये, जैसे समय पाकर सुन्दर पुण्य प्रकट हो जाते हैं ।**

* जो व्यक्ति परिस्थितियों के दबाव के कारण शुभ कर्म नहीं कर पाते, अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त होने पर उनकी भावना कार्य रूप में प्रकट होने लगती है ।

पंक न रेनु सोह अस धरनी ।
नीति निपुन नृप कै जस करनी ।।

⊗ पंक=कीचड़, रेनु=धूल, करनी=कार्य-कलाप ।

★ **श्रीराम कहते हैं- न कीचड़ है न धूल, इससे धरती (निर्मल होकर) ऐसी शोभा दे रही है जैसे नीति निपुण राजा की करनी ।**

* नीतिवान शासक का प्रशासन धूल और कीचड़ रहित मार्ग जैसा स्वच्छ और संतोषप्रद होता है ।

जल संकोच बिकल भइँ मीना ।
अबुध कुटुम्बी जिमि धनहीना ।।

⊗ संकोच=कम हो जाने से, मीना=मछलियाँ, अबुध=मूर्ख, कुटुम्बी=गृहस्थी ।

★ **जल के कम हो जाने से मछलियाँ व्याकुल हो रही हैं जैसे मूर्ख (विवेक शून्य) गृहस्थ धन के बिना व्याकुल होता है ।**

* जो गृहस्थ आय की घटा-बढ़ी के अनुसार संतुलित बजट बनाकर चलना नहीं जानता वह थोड़ी-सी आय घटने अथवा अतिरिक्त खर्च आ पड़ने पर दुख उठाता रहता है ।

बिनु धन निर्मल सोह अकासा ।
हरिजन इब परिहरि सब आसा ।।

⊗ इब=समान, परिहरि=छोड़कर ।

★ **बिन बादलों का निर्मल आकाश ऐसा शोभित हो रहा है, जैसे भगवान का भक्त सब आशाओं, कामनाओं को छोड़कर सुशोभित होते हैं ।**

* कामनायें मन पर बदली की तरह छायी रहने से जीवन में अध्यात्म का प्रकाश फैल नहीं पाता ।

कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी ।
कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ।।

⊗ बृष्टि=वर्षा, सारदी=शरद ऋतु की, थोरी=थोड़ी, पाव=पाता है ।

★ **कहीं-कहीं शरद ऋतु की थोड़ी बरसात हो रही है जैसे कि कोई बिरले ही मेरी भक्ति पाते हैं ।**

* भगवान की भक्ति पाने के लिये जैसा स्वच्छ मन तथा समर्पण का भाव चाहिए, वह शर्त बिरले लोग ही पूरी कर पाते हैं, अत: सच्ची भक्ति किसी-किसी को ही प्राप्त हो पाती है ।

सुखी मीन जे नीर अगाधा ।
जिमि हरि सरन न एकहु बाधा ।।

⊗ मीन=मछली, अगाधा(अगाध)=अथाह, बाधा=विघ्न (कठिनाई) ।

★ **अथाह जल में रहने वाली मछलियाँ सुखी रहती हैं वैसे ही भगवान की शरण में चले जाने पर एक भी बाधा नहीं रहती ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* भगवान की सत्ता सर्वोपरि है । उसके बनाये नियमों का पालन करने वाला सभी बाधायें पार कर सकता है । जो लोग अन्य हथकंडे काम में लाते हैं वे कहीं न कहीं फँस जाते हैं ।

फूलें कमल सोह सर कैसा ।
निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा ।।

⊗ सोह=शोभा देता है, सर=तालाब ।

★ **कमल के फूलने पर जैसा तालाब शोभा देता है, वैसा ही निर्गुण ब्रह्म सगुण हो जाने पर शोभित होता है ।**

* कमल में शोभा जल, प्रकाश तथा वायु से आती है । किन्तु बिना कमल का रूप पाये वह दिखती नहीं । ऐसे ही संसार के रूप में ब्रह्म साकार होकर सबको दिखने लगता है । इस विराट ब्रह्म की सेवा हर कोई कर सकता है ।

चक्रबाक मन दुख निसि पेखी ।
जिमि दुर्जन पर सम्पति देखी ।।

⊗ चक्रबाक=चकवा, निसि (निशि) रात्रि, पेखी=देखकर ।

★ **रात देखकर चकवा दुखी होता है जैसे कि दुर्जन दूसरों की सम्पत्ति देखकर दुखी होता है ।**

* दूसरों की उन्नति से प्रसन्न होने वाला संत हृदय तथा दुखी होने वाला दुष्ट हृदय कहा जाता है । इसीलिये संत सबकी उन्नति चाहता है और दुर्जन केवल अपनी ।

चातक रटत तृषा अति ओही ।
जिमि सुख लहइ न संकर द्रोही ।।

⊗ चातक=पपीहा, तृषा=प्यास, ओही=उसे ।

★ **जैसे पपीहा रट लगाता है कि उसको बड़ी प्यास लगी है । वैसे ही भगवान शिव का द्रोही सुख के लिए झीखता रहता है ।**

* शंकर का अर्थ है कल्याण करने वाला । दूसरों के कल्याण से विरोध रखने वाला व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकता ।

सरदातप निसि ससि अपहरई ।
सन्त दरस जिमि पातक टरई ।।

* सरदातप (शरद+आतप) शरदऋतु की गर्मी, ससि=चन्द्रमा, अपहरई=अपहरण कर लेता है, (छीन लेता है), दरस=दर्शन, पातक=पाप, टरई=दूर हो जाते हैं ।

★ **शरद ऋतु की गर्मी को रात के समय चन्द्रमा हरण कर लेता है जैसे संतों के दर्शन से पाप दूर हो जाते हैं ।**

* स्वार्थवश अथवा दुष्टों को देखकर लोगों के मन में पाप जगते हैं पर सच्चे संतों को देखकर जीवन की सार्थकता का ध्यान आ जाता है और पापों से मन हट जाता है ।

देखि इन्दु चकोर समुदाई ।
चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ।।

⊗ इन्दु=चन्द्रमा, चितवहिं=देखकर, हरिजन=भक्त ।

★ **चकोरों का झुण्ड चन्द्रमा को देखकर इस प्रकार टकटकी लगाये है जैसे भक्त भगवान को पाकर उनके दर्शन करते रहते हैं ।**

* भक्त का चित्त भगवान की ओर सतत् लगा रहता है और उसे संसार के आकर्षण दिखाई ही नहीं देते ।

भूमि जीव संकुल रहे,
गए सरद रितु पाइ ।
सद्गुरु मिलें जाहिं जिमि,
संसय भ्रम समुदाई ।।

⊗ संकुल रहे=भर गये थे, संसय=संदेह ।

★ **वर्षाऋतु के कारण पृथ्वी पर जो जीव भर गये थे वे शरद ऋतु को पाकर वैसे ही नष्ट हो गये जैसे सद्गुरु के मिलने पर संदेह और भ्रम के समूह नष्ट हो जाते हैं ।**

* सद्गुरु में मनुष्यों के संशय और भ्रम दूर करने की क्षमता होती है ।

बरषा गत निर्मल रितु आई ।
सुधि न तात सीता कै पाई ।।

★ **श्रीराम जी लक्ष्मण जी से कहने लगे कि वर्षा बीत गई और निर्मल शरदऋतु आ गई । लेकिन हे तात ! सीता के समाचार नहीं मिल पाये ।**

* वर्षा में खोज संभव नहीं थी पर वातावरण निर्मल हो जाने पर तो वह प्रयास सुग्रीव द्वारा चालू किया जाना चाहिए ।

एक बार कैसेहूँ सुधि जानौं ।
कालहु जीति निमिष महुँ आनौं ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ कालहु=मृत्यु को, निमिष=क्षण

★ **एक बार कैसे भी पता हो जावे तो मृत्यु को भी जीत कर पल भर में सीता को ले आऊँ ।**

* पुरुषार्थी व्यक्ति को लक्ष्य दिख भर जाये, फिर वह कठिनाइयों से नहीं डरता ।

सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी ।
पावा राज कोस पुर नारी ।।

⊗ बिसारी=भुलादी, सुधि=याद, कोस (कोष)=खजाना ।

★ **इसलिए सुग्रीव भी मेरी बात को भूल गया । उसे राज्य, खजाना, नगर और स्त्री मिल गये ।**

* सुख मिल जाने पर सामान्य मनुष्य अपने दिये गये वचन को भूल जाया करता है । यह उचित नहीं ।

लछिमन क्रोधवन्त प्रभु जाना ।
धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ।।

⊗ गहे=ले लिया, बाना=बाण ।

★ **लक्ष्मण जी ने जब श्रीराम को क्रोध से भरे समझा, तब उन्होंने धनुष चढ़ाया और बाण हाथ में ले लिये ।**

* बड़े भाई के रुख के अनुरूप छोटे को मदद के लिए तैयार रहना ही चाहिए ।

तब अनुजहि समुझाबा,
रघुपति करुना सींव ।
भय देखाइ लै आवहु,
तात सखा सुग्रीव ।।

★ **तब दया की सीमा श्रीराम जी ने छोटे भाई लक्ष्मण जी को समझाया कि हे भाई ! सुग्रीव हमारा मित्र है, उसे दण्ड नहीं देना है केवल भय दिखाकर ले आओ ।**

* (१) जो काम केवल भय से ही पूरा हो सकता है वहाँ किसी को मारने की क्या आवश्यकता ? (२) मित्र की भूल होने पर उसे पहले सुधारने का मौका देना चाहिए ।

इहाँ पवनसुत हृदयँ बिचारा ।
राम काज सुग्रीव बिसारा ।।

★ **यहाँ (किष्किन्धा नगरी में) पवनकुमार श्री हनुमान जी ने सोचा कि सुग्रीव ने श्रीराम के कार्य को भुला दिया है ।**

* हनुमान की तरह, भक्त अपने उत्तरदायित्वों के प्रति सजग रहें यह आवश्यक है ।

निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा ।
चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा ।।

⊗ चारिहु बिधि=चारों प्रकार (साम, दाम, दण्ड, भेद) ।

★ **उन्होंने (श्री हनुमान जी ने) सुग्रीव के पास जाकर चरणों में मस्तक झुकाया और चारों प्रकार की नीति कहकर उन्हें समझाया ।**

* हनुमान जी नीति निपुण थे, अत: परिस्थिति देखकर विभिन्न ढंग से अपनी बात समझाने लगे ।

सुनि सुग्रीवँ परम भय माना ।
विषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ।।

★ **हनुमान जी के वचन सुनकर सुग्रीव भयभीत हुआ (और कहा) विषय भोगों ने मेरे ज्ञान का हरण कर लिया ।**

* (१) समझदार व्यक्ति को चाहिए कि विषय भोगों से दूर रहे । (२) अपनी भूल को इशारे से समझ लेने वाला समय पर उसे सुधार लेता है और हानि से बच जाता है ।

अब मारुत सुत दूत समूहा ।
पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ।।

★ **अब हे पवनसुत! जहाँ जहाँ वानरों के झुण्ड रहते हैं वहाँ दूतों के झुण्डों को भेजो ।**

* सुग्रीव ने तुरन्त अपने कर्तव्य के अनुसार आचरण प्रारम्भ कर दिया । भूल संभालने का यही ढंग है ।

कहहु पाख महुँ आव न जोई ।
मोरे कर ता कर बध होई ।।

⊗ पाख (पक्ष)=(पंद्रह दिन), ता कर=उसका, बध=मार डालना ।

★ **और कहला भेजो कि एक पक्ष में जो न आवेगा, वह मेरे हाथों मारा जायगा ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* पशुवत आचरण करने वाला आदमी आतंक तथा भय की भाषा जल्दी ही समझ लेता है ।

तब हनुमन्त बोलाए दूता ।
सब कर करि सनमान बहूता ।।

★ तब हनुमान जी ने दूतों को बुलाया और सबका सम्मान किया ।

* जो प्रधान हों उसे जिन छोटे व्यक्तियों से काम लेना है उनका आदर भी करना चाहिए ।

भय अरु प्रीति नीति दिखराई ।
चले सकल चरनन्हि सिर नाई ।।

★ सबको भय, प्रीति और नीति बताई गई । सभी बंदर चरणों में सिर नवाकर चले ।

* दुनिया में सभी काम भय और आतंक से पूरे नहीं हो सकते, प्रेम से दिल जीता जाता है तथा नीति से सही दिशाऐं दी जाती हैं । सबसे बड़ा भय प्रेम टूट जाने के खतरे का रहता है ।

एहि अवसर लछिमन पुर आए ।
क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाए ।।

★ इसी अवसर पर लक्ष्मण जी नगर में आए । उनका क्रोध देखकर सभी बंदर इधर-उधर भाग चले ।

* भूल करने वालों को भयभीत होना ही पड़ता है ।

पवन तनय सब कथा सुनाई ।
जेहि विधि गए दूत समुदाई ।।

★ लक्ष्मण जी को पवनपुत्र हनुमानजी ने सारी कथा सुनाई और बताया कि किस प्रकार सभी दिशाओं में दूतों के समूह गए थे ।

* क्रोध के कारण को विनय तथा चतुराई, दूर करने के बाद क्रोध दूर हट जाता है अथवा कम हो जाता है ।

हरषि चले सुग्रीव तब,
अंगदादि कपि साथ ।
रामानुज आगें करि,
आए जहँ रघुनाथ ।।

⊗ रामानुज (राम+अनुज)=लक्ष्मण जी ।

★ लक्ष्मण जी का क्रोध शान्त हो जाने पर सुग्रीव प्रसन्न होकर अंगद आदि वानरों के सहित श्री लक्ष्मण जी को आगे करके जहाँ रघुनाथ जी थे, वहाँ पहुँचे ।

नाइ चरन सिर कह कर जोरी ।
नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी ।।

⊗ नाइ=नवाकर, नाहिन=नहीं है, खोरी=दोष ।

★ सुग्रीव ने श्रीराम के चरणों में मस्तक नवाकर, हाथ जोड़कर कहा— हे नाथ मेरा कुछ दोष नहीं है ।

* भूल समझ में आने पर अपनी बात विनयपूर्वक प्रस्तुत करनी चाहिए ।

बिषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी ।
मैं पावँर पसु कपि अति कामी ।।

⊗ बस्य (वश)=अधीन, पसु=पशु ।

★ हे नाथ, देवता, मनुष्य और मुनि सभी, विषयों के वश में हैं । फिर मैं तो पामर पशु और पशुओं में भी अत्यंत कामी बंदर हूँ ।

* सुग्रीव को भारी आत्मग्लानि हुई और वह उसे प्रकट करने लगे ।

नारि नयन सर जाहि न लागा ।
घोर क्रोध तम निसि जो जागा ।।

★ नारी की आँखों के बाण जिसको नहीं लगे, जो भयंकर क्रोधरूपी रात में भी जागता रहता है ।

लोभ पाँस जेहिं गर न बँधाया ।
सो नर तुम्ह समान रघुराया ।।

⊗ पाँस=फाँसी, गर=गला, रघुराया=रघुनाथ ।

★ लोभ की फाँसी में जिसने अपना गला नहीं बँधाया, हे भगवान श्रीराम वह मनुष्य आप ही के समान है ।

* काम, क्रोध, लोभादि शत्रुओं को जो जीत लेता है, वह भगवान के सामने हो सकता है— अर्थात् ईश्वर साक्षात्कार कर सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तब रघुपति बोले मुसकाई ।
तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ।।

★ **तब श्रीराम मुस्कराकर बोले– हे भाई, तुम मुझे भरत के समान प्रिय हो ।**

* भगवान के प्रति निष्ठा रखने वाला जो व्यक्ति अपने दोषों को दूसरे पर नहीं थोपता भगवान को प्रिय है ।

अब सोइ जतन करहु मन लाई ।
जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई ।।

⊗ जतन (यत्न)=उपाय, मन लाई= मन लगाकर, सुधि= खबर ।

★ **अब मन लगाकर वही उपाय करो जिससे कि सीता की खबर मिले ।**

* मन लगाकर काम करने से वह जल्दी और अच्छे ढंग से पूरा होता है । पिछली भूल की कमी इसी प्रकार पूरी की जाती है ।

एहि बिधि होत बतकही,
आए बानर जूथ ।
नाना बरन सकल दिसि,
देखिअ कीस बरूथ ।।

⊗ होत=होते समय, बतकही=बातचीत, जूथ=झुंड, बरन= रंग, बरूथ=दल ।

★ **जब इस प्रकार बातचीत हो रही थी तब बन्दरों के झुंड आ गए । अनेक रंगों के बन्दरों के दल सभी दिशाओं में दिखायी देने लगे ।**

अस कपि एक न सेना माहीं ।
राम कुशल जेहि पूछी नाहीं ।।

★ **सेना में एक भी बन्दर ऐसा नहीं था जिससे श्री रघुनाथ जी ने कुशल न पूछी हो ।**

* कुशल लोक— नेता, परिवार के मुखिया, किसी भी संस्था के प्रधान में यदि यह गुण होगा तो वह सभी संबंधित लोगों के दिलों पर राज्य करेगा, उसके साथी उसकी आज्ञा पर हँसत-हँसते प्राण तक निछावर कर देंगे ।

यह कछु नहिं प्रभु कइ अधिकाई ।
बिस्वरूप व्यापक रघुराई ।।

⊗ कइ= के लिए, बिस्वरूप=सर्वव्यापी ।

★ **प्रभु के लिए यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है, क्योंकि श्री रघुनाथ जी सारे रूपों और सब स्थानों में हैं ।**

* भगवान का भावनात्मक प्रकाश जिसके अन्दर आ जाता है वह भी अपने परिजनों का ऐसा ही ध्यान रखने में समर्थ हो जाता है ।

ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई ।
कह सुग्रीव सबहि समुझाई ।।

★ **जब आज्ञा पाकर सभी बन्दर जहाँ तहाँ खड़े हो गए, तब सुग्रीव ने सबको समझाकर कहा कि —**

* अपने साथियों को कोई बात कहनी हो, समझानी हो, उन्हें कोई काम सौंपना हो तो सबसे पहले उन्हें व्यवस्थित तथा अनुशासित कर देना चाहिए ।

राम काज अरु मोर निहोरा ।
बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ।।

⊗ मोर निहोरा=मेरा व्यक्तिगत अनुरोध ।

★ **यह श्री रघुनाथजी का काम है तथा मेरा अनुरोध है तुम चारों ओर जाओ ।**

* लौकिक और पारलौकिक दोनों तरह के हित वाला कोई काम सौंपा जाए तो उसे पूरी ईमानदारी से हर कोई करता है ।

जनकसुता कहुँ खोजहु जाई ।
मास दिवस महँ आएहु भाई ।।

★ **हे भाई आप सबही जाकर जानकी जी को खोजो तथा एक माह में वापस आ जाना ।**

* काम करने वालों की शक्ति का ठीक-ठीक अनुमान लगाकर काम पूरा करने का समय बाँध देने से काम में निश्चित गति आ जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बचन सुनत सब बानर,
जहँ-तहँ चले तुरन्त ।
तब सुग्रीवँ बोलाए,
अंगद नल हनुमन्त ।।

★ **सुग्रीव के वचन सुनते ही सभी बन्दर तुरन्त ही भिन्न-भिन्न दिशाओं में चल दिये । तब सुग्रीव ने अंगद, नल, हनुमान आदि प्रमुख योद्धाओं को बुलाकर कहा—**

* कार्य को बाँटते समय, हर एक को उसकी रुचि तथा शक्ति के अनुसार काम देना चाहिए ।

सुनहु नील अंगद हनुमाना ।
जामवन्त मतिधीर सुजाना ।।

★ **हे धीर बुद्धि तथा चतुर नील, अंगद, हनुमान, जामवन्त सुनो ।**

सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू ।
सीता सुधि पूछेहु सब काहू ।।

★ **तुम सब श्रेष्ठ योद्धा मिलकर दक्षिण दिशा को जाओ और सभी से सीता जी का पता पूछना ।**

* (१) रावण सीता को दक्षिण दिशा की ओर ले गया था अत: उस ओर श्रेष्ठ दूतों को भेजना ही उचित था । (२) बहुत बार सामान्य सूत्र से भी बड़े काम की सूचना मिल जाती है, इसलिए पूछताछ में शर्म नहीं करनी चाहिए ।

मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु ।
रामचन्द्र कर काज सँवारेहु ।।

⊗ जतन (यत्न)=उपाय, सँवारेहु=सम्पन्न करना ।

★ **मन, वाणी तथा कर्म से उसी का (सीताजी का पता लगाने का) उपाय सोचते रहना और श्रीरामचन्द्र जी का कार्य पूरा करना ।**

* मनुष्य के हाथ जो भी कार्य हो, उसे ईश्वर का काम समझते हुए तत्पर होकर पूरा करना उच्च स्तरीय उपासना है ।

भानु पीठि सेइअ उर आगी ।
स्वामिहि सर्ब भावु छल त्यागी ।।

★ **सूर्य का सेवन पीठ से और आग का हृदय से (सामने से) किया जाता है । लेकिन स्वामी की सेवा तो कपट छोड़कर पूर्ण भावना से करनी चाहिए ।**

* अपने स्वार्थ के कार्य तो एक-एक पक्ष से भी पूरे हो जाते हैं, भगवान का कार्य सारी सामर्थ लगाकर करना चाहिये ।

तजि माया सेइअ परलोका ।
मिटहि सकल भव संभव सोका ।।

⊗ भव संभव=संसार के प्रभाव से पैदा होने वाले ।

★ **माया (इच्छाओं के प्रति ममता) त्याग कर परलोक का सेवन किया जाता है, इससे सांसारिक सारे शोक मिट जाते हैं ।**

* जब तक संसार के प्रति मोह रहता है प्रयास भी उसी के लिये होते रहते हैं । वह मोह हटने पर ही परलोक की पात्रता पैदा होती है ।

देह धरे कर यह फल भाई ।
भजिअ राम सब काम बिहाई ।।

★ **हे भाई ! देह लेने का यही फल है कि सब कामनाओं को त्यागकर श्रीरामजी का भजन करना चाहिए ।**

* मनुष्य के जीवन की सार्थकता पुरुष से पुरुषोत्तम बनने में है । यह उद्देश्य ईश्वर को ध्यान में रखने से ही याद रहता है । कामनायें इसे भुलाती हैं अत: उन्हें छोड़ देना चाहिए ।

सोइ गुनग्य सोई बड़भागी ।
जो रघुबीर चरन अनुरागी ।।

⊗ गुनग्य (गुणज्ञ)=गुणवान, अनुरागी=प्रेमी ।

★ **सद्गुणों को जानने वाला (गुणवान्) तथा भाग्यशाली वही है जो श्रीरामजी के चरणों से प्रेम करता है ।**

* भगवान के प्रति प्रेम न होने से ही व्यक्ति दोषों और दुर्भाग्य के चक्कर में पड़ जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आयसु माँगि चरन सिर नाई ।
चले हरषि सुमिरत रघुराई ।।

★ **सभी वीर आज्ञा माँगकर और चरणों में मस्तक झुकाकर श्रीरामजी का स्मरण करते हुए प्रसन्न हो कर चले ।**

* नेक सलाह तुरन्त मान लेनी चाहिए । वानर वीरों ने पूरे मन से तथा प्रभु का स्मरण रखते हुए काम करने का सूत्र अपना लिया ।

पाछे पवन तनय सिरु नावा ।
जानि काज प्रभु निकट बोलावा ।।

★ **सबके बाद पवन पुत्र श्री हनुमानजी ने सिर झुकाया । कार्य सोचकर प्रभु ने उन्हें अपने निकट बुलाया ।**

* जिसमें पात्रता होती है उसे प्रभु स्वयं अपनी निकटता प्रदान करते हैं ।

परसा सीस सरोरुह पानी ।
कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी ।।

⊗ परसा=स्पर्श किया, सरोरुह=कमल, मुद्रिका=अंगूठी ।

★ **उन्होंने (श्रीराम ने)अपने हाथ रूपी कमल से उनके सिर का स्पर्श किया तथा अपना सेवक समझकर उन्हें अपने हाथ की अंगूठी उतार कर दी ।**

* हनुमान जी की प्रतिभा देखकर श्रीरामजी को भी उन्हीं से आशा थी, अत: उन्हें अपनी मुद्रिका चिन्ह रूप में दे दी ।

बहु प्रकार सीतहि समझाएहु ।
कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आएहु ।।

⊗ बेगि=शीघ्र, आएहु=लौट आना ।

★ **श्रीराम ने कहा बहुत प्रकार से सीता को समझाना और मेरी शक्ति तथा उनके बिछोह के कारण मेरा दु:ख कहकर तुम शीघ्र वापस आ जाना ।**

* दुखी को अनेक प्रकार से समझाने तथा उसके दुख निवारण की अपनी क्षमता पर विश्वास दिलाने से उसका दु:ख कम हो जाता है ।

हनुमत जन्म सुफल करि माना ।
चलेउँ हृदयँ धरि कृपानिधाना ।।

★ **हनुमानजी ने अपना जन्म सफल माना और श्रीराम को हृदय में धारण करके चले ।**

* हनुमान जी ने भगवान के कार्य के योग्य बनने के लिए साधना की थी । भगवान ने उन्हें योग्य समझकर काम सौंपा इससे उनके प्रयास की सार्थकता सिद्ध हुई ।

जद्यपि प्रभु जानत सब बाता ।
राजनीति राखत सुरत्राता ।।

⊗ सुरत्राता=देवताओं की रक्षा करने वाले ।

★ **यद्यपि प्रभु सब बात समझते हैं फिर भी राजनीति की रक्षा करते हैं ।**

* महान् व्यक्ति सब काम खुद करने की सामर्थ रखते हैं फिर भी दूसरों को श्रेय पाने तथा सेवा का अवसर देते हैं ।

चले सकल बन खोजत,
सरिता सर गिरि खोह ।
राम काज लयलीन मन,
बिसरा तन कर छोह ।।

⊗ खोह=गुफा, काज लयलीन=काम में पूरी तरह डूब जाना, छोह (मोह)=ममता ।

★ **सभी वानर वन, नदी, तालाब, पर्वत और गुफाओं में खोजते जा रहे हैं । मन श्रीरामजी के कार्य में लबलीन है और शरीर तक का मोह चला गया है ।**

* कार्य करने की यह आदर्श स्थिति है ।

सब मिलि कहहिं परस्पर बाता ।
बिन सुधि लएँ करब का भ्राता ।।

★ **(प्रयास सफल न होने पर) सभी मिलकर आपस में बात करने लगे कि हे भाई ! अब सीताजी का समाचार लिये बिना वापस कैसे लौटेंगे ?**

कह अंगद लोचन भरि बारी ।
दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ।।

★ **अंगद ने नेत्रों में आँसू भरकर कहा कि दोनों ही प्रकार से हमारी मृत्यु हो गई ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* सुग्रीव ने कहा था कि बिना सीता का पता लगाये लौटने वाले को वे मार डालेंगे । अपने आत्म-विश्वास को खो देना भी मृत्यु तुल्य ही है ।

छन एक सोच मगन होइ रहे ।
पुनि अस बचन कहत सब भए ।।

★ एक क्षण भर के लिए सब सोच में लीन हो गये । फिर सब ऐसा वचन कहने लगे–

* विचार कर बोलने से बात प्रामाणिक और सही निकलती है ।

हम सीता कै सुधि लीन्हें बिना ।
नहिं जैहें जुबराज प्रबीना ।।

⊗ जुबराज=युवराज, प्रवीना=सुयोग्य ।

★ हे सुयोग्य युवराज ! हम लोग सीताजी की खोज लिए बिना वापस नहीं लौटेंगे ।

* काम करने में यदि दृढ़ संकल्प है तो वह काम अवश्य ही पूरा होता है, दृढ़ संकल्प पैदा कर लेना जीवन को सफलता की ओर बढ़ा लेना है ।

जामवन्त अंगद दुख देखी ।
कही कथा उपदेस बिसेषी ।।

★ जाम्बवान् ने अंगद का कष्ट देखकर विशेष उपदेश की कथाएँ कहीं –

* जामवन्त वयोवृद्ध थे । छोटे यदि हतोत्साह और दुःखी होते हों तो बड़ों को चाहिए कि प्रेरक प्रसंग सुनाकर उन्हें मार्ग दर्शन तथा प्रेरणा प्रदान करें ।

हम सब सेवक अति बड़भागी ।
सतत सगुन ब्रह्म अनुरागी ।।

★ श्री जामवन्तजी कहने लगे– हम सब सेवक बड़े भाग्यशाली हैं जो निरन्तर सगुण ब्रह्म (श्रीरामजी) में प्रेम रखते हैं ।

* अपने कार्य की श्रेष्ठता तथा उसे पाने का सौभाग्य याद दिलाने से करने वालों को उत्साह मिलता है ।

निज इच्छाँ प्रभु अवतरइ,
सुर महि गौ द्विज लागि ।
सगुन उपासक संग तहँ,
रहहिं मोच्छ सब त्यागि ।।

★ देवता, पृथ्वी, गौ और ब्राह्मणों के लिए प्रभु अपनी इच्छा से अवतार लेते हैं । तब सगुण रूप की उपासना करने वाले सब प्रकार के मोक्ष को त्याग कर उनकी सेवा में साथ रहते हैं ।

* जिन्हें भगवान से प्रेम है वे उनके कार्य के लिये बड़े से बड़े आकर्षण छोड़कर आगे आ जाते हैं ।

एहि विधि कथा कहहिं बहु भाँती ।
गिरि कन्दरां सुनी सम्पाती ।।

⊗ कन्दरां=गुफा, सम्पाती=गिद्ध जटायु का भाई ।

★ इस प्रकार जाम्बवान् बहुत प्रकार से कथाएँ कह रहे थे कि इनकी बातें पर्वत की गुफा में सम्पाती ने सुनीं ।

बाहर होइ देखि बहु कीसा ।
मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ।।

⊗ बाहर होइ=बाहर निकल कर, कीसा=वानर ।

★ बाहर निकल कर उसने (सम्पाती ने) बहुत से बन्दर देखे तो उसने कहा कि प्रभु ने मेरे लिए घर बैठे बहुत सा भोजन भेज दिया ।

डरपे गीध बचन सुनि काना ।
अब भा मरन सत्य हम जाना ।।

⊗ डरपे=डर गये, भा=हो गया ।

★ गीध के वचन सुनते ही सभी भयभीत हो गये कि अब सचमुच ही मरना हो गया ।

* चिन्ता की स्थिति में मनुष्य अपनी क्षमतायें भूल जाता है । वानर चिन्तित थे अतः परिस्थिति जानने का कुछ प्रयास किये बिना ही डरने लगे ।

कह अंगद बिचारि मन माहीं ।
धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **अंगद ने मन में सोचकर कहा, अहा ! जटायु के समान धन्य कोई नहीं है ।**

* अंगद ने समझदारी की । सम्पाती गीध था, एक दूसरे गीध के सत्कार्य की सराहना करने लगे ताकि वह हमें गीधों का मित्र समझे ।

राम काज कारन तन त्यागी ।
हरि पुर गयउ परम बड़भागी ।।

⊗ हरिपुर=भगवान के धाम ।

★ **श्रीराम के काम के लिए शरीर छोड़कर वह भाग्यशील, भगवान के धाम को चला गया ।**

* भगवान के कार्य का वर्णन करके यह भी प्रकट कर दिया कि जटायु और हम एक ही कार्य के करने वाले हैं ।

सुनि खग हरष सोकजुत बानी ।
आवा निकट कपिन्ह भय मानी ।।

⊗ सोकजुत=शोक में युक्त ।

★ **हर्ष और शोक से युक्त समाचार सुनकर वह पक्षी वानरों के समीप आया । कुछ बन्दर उसका भाव न समझकर डर गये ।**

* अंगद का प्रयोग सफल हुआ तथा सम्पाती उनसे पूछताछ करने पास आया ।

तिन्हहि अभय करि पूछेसि आई ।
कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ।।

⊗ अभय=निर्भय, तिन्ह=उन्होंने ।

★ **उनको निर्भय करके उसने समीप जा कर जटायु का हाल पूछा तब उन्होंने सारी कथा उसे कह सुनाई ।**

सुनि संपाति बंधु कै करनी ।
रघुपति महिमा बहु बिधि बरनी ।।

⊗ बरनी =वर्णन की ।

★ **भाई जटायु की करनी सुनकर सम्पाती ने अनेक प्रकार से श्रीराम की महिमा का वर्णन किया ।**

* जटायु का भाई सम्पाती भी भगवान का भक्त था । अत: जटायु की सराहना करते हुए स्वयं भी बन्दरों की सहायता को तैयार हो गया ।

गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका ।
तहँ रह रावन सहज असंका ।।

⊗ गिरि त्रिकूट=त्रिकूट नामक पहाड़ ।

★ **त्रिकूट पर्वत पर लंकापुरी बसी है, वहाँ पूर्ण रूप से निर्भय होकर रावण रहता है ।**

* गिद्ध की दृष्टि बड़ी तेज होती है । संपाती ने देखकर सीता का पता बताना प्रारम्भ कर दिया ।

तहँ असोक उपबन जहँ रहई ।
सीता बैठि सोच रत अहई ।।

★ **वहाँ अशोक नाम का बगीचा है, जहाँ सीताजी सोच में बैठी हैं ।**

मैं देखउँ तुम्ह नाही,
गीधहि दृष्टि अपार ।
बूढ़ भयउँ न त करतेउँ,
कछुक सहाय तुम्हार ।।

★ **सम्पाती ने कहा मैं उन्हें देख रहा हूँ, तुम नहीं देख सकते, क्योंकि गीध की दृष्टि असीमित होती है । मैं बूढ़ा हो गया हूँ अन्यथा और भी कुछ सहायता करता ।**

* जिसमें सच्ची भावना होती है उसे सहायता देने के बाद भी यह लगता है कि अच्छा हो और अधिक सहायता दे सकूँ ।

जो नाघइ सत योजन सागर ।
करइ सो राम काज मति आगर ।।

⊗ नाघइ=लाँघ जाये, योजन=चार कोस के बराबर दूरी, आगर=अग्रणी (बुद्धिमान)।

★ **जो सौ योजन (चार सौ कोस) समुद्र पार कर सकता है और बुद्धिमान भी होगा वही श्रीराम का कार्य कर सकेगा ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* बड़े कामों को वही सफलता पूर्वक कर सकता है जिसमें बल और बुद्धि दोनों हैं ।

पापिउ जाकर नाम सुमिरही ।
अति अपार भव सागर तरहीं ।।

★ **पापी भी जिनका नाम स्मरण करके संसार रूपी अनन्त समुद्र पार कर जाते हैं ।**

तासु दूत तुम तजि कदराई ।
राम हृदयँ धरि करहु उपाई ।।

★ **इसलिए कायरता छोड़ करके श्रीरामजी को हृदय में धारण करके उपाय करो ।**

* (१) सम्पाती ने वानरों को उनके गौरव का बोध कराया ताकि वे उत्साहित होकर पुरुषार्थ करें (२) भगवान सब कर लेंगे यह भाव गलत है, उनका काम करने वालों को अपनी शक्ति भर उपाय करना पड़ता है तभी भगवान की शक्ति सहायक होती है ।

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना ।
का चुप साधि रहेहु बलवाना ।।

★ **और वानरों का समर्थन पाकर जाम्बवान् ने श्री हनुमान जी से कहा– हे हनुमान ! हे शक्तिवान ! सुनो, तुमने यह क्या चुप साध रखी है ।**

* जामवन्त जी हनुमान जी की क्षमता जानते थे, अतः उन्हें आत्म शक्ति का स्मरण कराने लगे ।

पवन तनय बल पवन समाना ।
बुधि बिबेक बिग्यान निधाना ।।

★ **तुम पवन के पुत्र हो और ताकत में पवन के समान हो । तुम बुद्धि-विवेक और विज्ञान की खान हो ।**

* सम्पाती ने जो गुण आवश्यक बताये थे वे सब हनुमान जी में हैं यह सोचकर जामवन्त ने उन्हें उद्‌बोधन दिया ।

कवन सो काज कठिन जग माहीं ।
जो नहिं होइ तात तुम पाहीं ।।

★ **संसार में ऐसा कौन सा कठिन काम है जो हे तात! तुम नहीं कर सकते हो ?**

* सामान्य व्यक्ति अपनी प्रशंसा सुनकर जोश में आ जाते हैं– पर हनुमान जी अपनी प्रशंसा सुनकर भी चुप ही रहे ।

राम काज लगि तब अवतारा ।
सुनतहिं भयेउ पर्वताकारा ।।

⊗ पर्वताकारा=पर्वत के समान आकार के ।

★ **श्रीराम के काम पूरे करने के लिए ही तुम्हारा जन्म हुआ है । यह सुनते ही हनुमान जी पर्वत के आकार के हो गये ।**

* श्रेष्ठ व्यक्ति अपने कर्तव्य का स्मरण करके ही उत्साहित होते हैं । राम का कार्य करने के लिए ही यह शरीर बना है । यह सुनते ही हनुमान एकदम तैयार हो गये ।

कनक बरन तन तेज बिराजा ।
मानहु अपर गिरिन्ह कर राजा ।।

⊗ कनक=सोना, बरन (वर्ण)=रंग, अपर=दूसरा, गिरिन्हकर राजा=सुमेरु पर्वत ।

★ **हनुमान जी का रंग सोने के समान हो गया । शरीर पर तेज शोभा देने लगा मानो दूसरा सुमेरु पर्वत हो ।**

* श्रेष्ठ संकल्प की आभा शरीर पर भी दिखने लगती है ।

सिंहनाद करि बारहिं बारा ।
लीलहिं नाघउ जलनिधि खारा ।।

⊗ सिंहनाद =शेर की तरह गर्जना, लीलहिं=खेल में ही ।

★ **हनुमान जी ने बार-बार सिंह के समान गर्जना की– मैं इस खारे सागर को खेल में ही लाँघ सकता हूँ ।**

* जब मनुष्य का आत्मबल जाग जाता है तब वह खेल-खेल में बड़े-बड़े काम कर लेता है ।

इतना करहु तात तुम्ह जाई ।
सीतहि देखि कहहु सुधि आई ।।

★ **जाम्बवान् ने कहा– हे तात ! तुम जाकर इतना मात्र करो कि अभी सीताजी को देखकर लौट आओ और उनका समाचार लाकर दे दो ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जामवन्त जी ने उन्हें प्रभु की आज्ञा की मर्यादा के अन्दर ही रहकर कार्य करने की सलाह दी ।

कपि सेन संग संघारि
निसिचर राम सीतहिं आनिहैं ।
त्रैलोक पावन सुजस सुर
मुनि नारदादि बखानिहैं ।।

★ वानरों की सेना साथ लेकर राक्षसों को मार करके श्रीरामजी सीताजी को ले आवेंगे । तब देवता और नारदादि मुनि श्रीराम का तीनों लोकों को पवित्र करने वाले सुन्दर यश का बखान करेंगे ।

* समाज के दुष्टों को नष्ट कर देने पर समाज के लोग नष्ट करने वाले के यश को फैला देते हैं, उसे महान पुरुष मानते हैं ।

जामवन्त के बचन सुहाए ।
सुनि हनुमन्त हृदय अति भाए ।।

★ जाम्बवान् के सुन्दर वचन सुनकर हनुमान जी के हृदय को वह वाणी बहुत अच्छी लगी ।

* जामवन्त ने श्रीराम द्वारा वानर सेना सहित जाकर राक्षसों के वध की बात कही, ताकि समाज में असुरता से संघर्ष करने की भावना पुष्ट हो सके और दीर्घ काल तक असुरता पनप न सके । यही बात हनुमानजी को रुची ।

तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई ।
सहि दुख कन्द मूल फल खाई ।।

⊗ परिखेहु=प्रतीक्षा करना ।

★ हे भाई ! तुम लोग दुःख सहन करके कन्द, मूल, फल खा करके तब तक मेरी प्रतीक्षा करना ।

जब लगि आवौं सीतहि देखी ।
होइहि काज मोहि हरष बिसेषी ।।

★ श्री हनुमानजी कहते हैं- जब तक मैं सीताजी को देखकर न लौटूँ । काम अवश्य ही पूरा होगा क्योंकि मुझे बहुत ही प्रसन्नता हो रही है ।

* जिस काम में अन्दर से सच्चा उल्लास उमड़ पड़े वह पूरे मनोयोग से किया जाता है अत: सफल भी हो जाता है ।

यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा ।
चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा ।।

★ ऐसा कह करके और सबको मस्तक नवा करके तथा हृदय में श्रीराम को धारण करके श्री हनुमान हर्षित होकर चले ।

* सबको मस्तक झुकाने का अर्थ है हनुमानजी सबमें भगवान का ही स्वरूप देख रहे थे । हृदय में भगवान के प्रति निष्ठा लेकर चलने वाले दुर्लभ कार्य कर जाते हैं ।

जल निधि रघुपति दूत विचारी ।
तैं मैनाक होहु श्रम हारी ।।

⊗ जलनिधि=समुद्र, मैनाक=पर्वत का नाम ।

★ समुद्र ने उन्हें (हनुमानजी को) श्रीरामजी का दूत समझ कर मैनाक पर्वत से कहा- हे मैनाक ! तू इनकी थकान दूर करने वाला बन (अर्थात् अपने ऊपर इन्हें विश्राम दे) ।

* भगवान का कार्य करने वालों को सभी सहायता देना चाहते हैं ।

हनूमान तेहि परसा,
कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।
राम काज कीन्हे बिना,
मोहि कहाँ विश्राम ।।

★ हनुमानजी ने उसे हाथ से छू दिया । फिर प्रणाम करके कहा- भाई श्रीराम का काम किये बिना मुझे चैन, विश्राम कहाँ !

* सहायता करने वाले का मन न टूटे इसलिए हनुमानजी ने उसे स्पर्श किया तथा फिर उसकी भावना का सम्मान करते हुए प्रणाम किया । साथ ही कार्य के बीच में विश्राम न करने की श्रेष्ठता का परिचय दिया ।

गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी ।
कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ।।

★ समुद्र पार करके पर्वत पर चढ़ कर श्री हनुमान जी ने लंका देखी । बहुत ही बड़ा किला है । उसका कुछ भी वर्णन नहीं किया जा सकता ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जहाँ प्रवेश करना है पहले उसकी स्थिति परख लेना नीतियुक्त है ।

पुर रखवारे देखि बहु,
कपि मन कीन्ह विचार ।
अति लघु रूप धरौं निस,
नगर करौं पइसार ।।

⊗ निसि (निशि)=रात, पइसार=प्रवेश करें ।

★ **नगर में बहुसंख्यक रखवालों को देखकर हनुमान जी ने मन में विचार किया कि अत्यन्त ही छोटा रूप धर करके रात के समय वहाँ प्रवेश करूँगा ।**

* यदि शत्रु भी बहुसंख्यक हों तो कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए गुप्त ढंग से शत्रु को परखना चाहिए ।

मसक समान रूप कपि धरी ।
लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ।।

⊗ मसक=मच्छर, नरहरी=मनुष्य रूप में भगवान-श्रीराम ।

★ **हनुमान जी मच्छर के समान छोटा-सा रूप धारण करके श्रीराम का नाम स्मरण करके लंका को चले ।**

नाम लंकिनी एक निसिचरी ।
सो कह चलेसि मोहि निंदरी ।।

★ **(लंका के द्वार पर) लंकिनी नाम की एक राक्षसी रहती थी । वह बोली– मेरा अपमान करके (बिना मुझसे पूछे) कहाँ चला जा रहा है?**

* लंका की रक्षा व्यवस्था बहुत अच्छी थी । छोटा रूप रखकर भी हनुमान जी रक्षकों की दृष्टि से बच न सके ।

मुठिका एक महा कपि हनी ।
रुधिर बमत धरनी ढनमनी ।।

⊗ मुठिका=घूँसा, हनी=मारा, रुधिर=खून, बमत =उल्टी करती हुई, ढनमनी=लुढ़क पड़ी ।

★ **महा-वानर श्री हनुमान जी ने उसे घूँसा मारा, जिससे वह खून की उल्टी करती हुई पृथ्वी पर लुढ़क गई ।**

* अपना भेद पा जाने वाले को संभलने से पहले ही बेकाम कर देना रणनीति है ।

पुनि संभारि उठी सो लंका ।
जोरि पानि कर बिनय ससंका ।।

⊗ संभारि=संभाल कर,ससंका (सशंक)=भयभीत स्थिति में ।

★ **फिर वह लंकिनी अपने आपको संभाल कर उठी और भय के मारे हाथ जोड़ कर विनती करने लगी ।**

* चोट से मारने वाले की शक्ति का परिचय मिल जाने पर लंकिनी नम्र बन गयी ।

तात मोरि अति पुन्य बहूता ।
देंखेउँ नयन राम कर दूता ।।

★ **(लंकिनी कहती है)– हे तात ! मेरे बड़े भाग्य हैं जो मैं श्रीराम के दूत को अपनी आँखों से देख पाई ।**

* संयोगवश दुष्ट पुरुष के साथ रहने वाले संस्कारी व्यक्ति भी जनहित के लिए अपने को खतरे में डालने वाले के प्रति आदर प्रकट करते हैं ।

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख,
धरिअ तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि,
जो सुख लव सतसंग ।।

⊗ अपवर्ग=मोक्ष, तुला=तराजू, अंग=पलड़ा, लव=क्षण ।

★ **हे तात ! स्वर्ग और मोक्ष के सब सुखों को तराजू के एक पलड़े में रखा जावे तो भी वे सब मिलकर उस आनन्द के बराबर नहीं हो सकते जो क्षण भर के सत्संग से होता है ।**

* सतसंग से जीवन की बिगड़ी हुई दशा संभल जाती है तभी व्यक्ति स्वर्ग मोक्षादि का अधिकारी बनता है । इसीलिए सत्संग को सर्वोपरि कहा गया ।

प्रबिसि नगर कीजै सब काजा ।
हृदयँ राखि कोसलपुर राजा ।।

★ **लंकिनी ने कहा अयोध्या पुरी के राजा श्रीरामजी को हृदय में धारण करके नगर में प्रवेश करके सब काम कीजिए ।**

* लंकिनी सत्कार्य में बाधक न बन कर हनुमानजी का उत्साह-वर्धन करने लगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई ।
गोपद सिंधु अनल सितलाई ।।

⊗ गरल=विष, सुधा=अमृत, मिताई=मित्रता, गोपद=गाय का खुर, अनल=अग्नि ।

★ उसके लिए विष अमृत के समान हो जाता है, शत्रु मित्रता करने लग जाते हैं, समुद्र गाय के खुर के समान हो जाता है, आग में शीतलता आ जाती है ।

गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही ।
राम कृपा करि चितवा जाही ।।

⊗ सुमेरु=सुमेरु पर्वत, रेनु=धूल ।

★ काकभुशुंडि जी बोले हे गरुड़जी ! सुमेरु पर्वत उसके लिए धूल के समान हो जाता है, जिसे श्रीराम जी ने दया करके एक बार देख लिया ।

* परमात्मा की कृपा हर काम की भयंकर कठिनाइयों को हल्का कर देती है । इसीलिए परमात्मा की कृपा पाने की अपनी पात्रता बढ़ानी चाहिए ।

अति लघु रूप धरेउ हनुमाना ।
पैठा नगर सुमिरि भगवाना ।।

★ तब हनुमानजी ने छोटा रूप धारण करके और भगवान को याद करके नगर में प्रवेश किया ।

मन्दिर मन्दिर प्रति करि सोधा ।
देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ।।

⊗ मन्दिर=महल, सोधा=शोधा (खोजकी), अगनित=असंख्य ।

★ श्री हनुमान जी ने सीताजी को एक-एक महल में खोजा, वहाँ उन्होंने जहाँ-तहाँ अनेक योद्धा देखे ।

गयउ दसानन मन्दिर माहीं ।
अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ।।

★ फिर वे रावण के महल में गये । वह बहुत ही अनौखा था जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता ।

* रावण के पास इतना वैभव था जिसकी कल्पना भी सामान्य लोग नहीं कर सकते ।

सयन किएँ देखा कपि तेही ।
मन्दिर महुँ न दीखि बैदेही ।।

★ श्री हनुमानजी ने उस (रावण) को सोते हुए देखा, परन्तु महल में सीताजी नहीं दिखाई दीं ।

भवन एक पुनि दीख सुहावा ।
हरि मन्दिर तहँ भिन्न बनावा ।।

★ फिर एक सुन्दर महल दिखाई दिया । उसमें भगवान का एक मन्दिर अलग से बना हुआ था ।

* पूजास्थली को उठने-बैठने के स्थान से अलग ही रखना चाहिए ।

रामायुध अंकित गृह,
सोभा बरनि न जाइ ।
नव तुलिसिका बृन्द तहँ,
देखि हरष कपिराई ।।

⊗ रामायुध=श्रीराम के धनुष-बाण, अंकित=चिह्नों से अंकित, बृन्द=समूह ।

★ वह महल श्रीराम के धनुष बाण के चिन्हों से अंकित था, उनकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता । वहाँ नये-नये तुलसी के वृक्ष समूहों को देखकर हनुमानजी प्रसन्न हुए ।

* घरों में प्रेरणाप्रद चिन्ह (वाक्य) तथा तुलसी की स्थापना करने से परिवार में अच्छे संस्कार तथा आरोग्य बढ़ता है ।

लंका निसिचर निकर निबासा ।
इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ।।

★ हनुमानजी ने सोचा लंका तो राक्षसों के झुण्डों का निवास स्थान है । यहाँ साधु पुरुषों का निवास कैसे संभव है ?

* दुष्टों के बीच भी सज्जन मिल सकते हैं पर उन पर सहसा विश्वास नहीं होता । अचानक विश्वास करना भी नहीं चाहिए ।

मन महुँ तरक करैं कपि लागा ।
तेहीं समय बिभीषनु जागा ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **हनुमान जी मन में तर्क कर ही रहे थे कि उसी समय विभीषण जाग उठे ।**

* यहाँ तर्क का अर्थ है स्वयं ही पक्ष विपक्ष की संभावनाओं पर विचार करके सही निर्णय पर पहुँचने की कोशिश करना ।

राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा ।
हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ।।

★ **उन्होंने(विभीषण ने) उठते ही रामनाम का उच्चारण किया । हनुमान जी ने उन्हें साधु पुरुष समझ लिया और हृदय में प्रसन्न हुए ।**

* नींद त्यागते ही व्यक्ति के मुख से उसके सहज स्वभाव के अनुरूप शब्द निकलते हैं । इसी प्रमाण से हनुमानजी ने विभीषण को सज्जन मान लिया ।

एहि सन हठ करिहउँ पहिचानी ।
साधु ते होइ न कारज हानी ।।

⊗ हठि=हठ करके, करिहउँ=करुँगा ।

★ **(हनुमानजी ने मन में विचार किया कि) इनसे मैं हठ करके परिचय करूँगा, क्योंकि साधु पुरुष कार्य में हानि नहीं पहुँचाते हैं ।**

* सज्जन व्यक्ति से परिचय अपनी ओर से प्रयासपूर्वक करना चाहिए । उनका परिचय जीवन को सन्मार्ग पर ही लगाता है ।

बिप्र रूप धरि बचन सुनाए ।
सुनत बिभीषन उठि तहँ आए ।।

★ **ब्राह्मण का रूप धारण करके हनुमानजी ने उन्हें पुकारा । सुनते ही विभीषण उठकर आये ।**

करि प्रनाम पूँछी कुसलाई ।
बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ।।

⊗ बुझाई=समझाकर कहो ।

★ **प्रणाम करके कुशलता पूछी (और कहा कि) हे ब्राह्मण देवता ! अपनी कथा समझा कर कहो ।**

* विभीषण मर्यादा के अनुरूप शिष्ट व्यवहार करने लगे ।

की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई ।
मोरें हृदय प्रीति अति होई ।।

⊗ दासन्ह=हरिभक्तों में ।

★ **क्या आप हरि भक्तों में से कोई हैं ? क्योंकि आपको देखकर मेरे हृदय में बहुत ही प्रेम उमड़ रहा है ।**

* अपने स्वभाव के अनुरूप व्यक्ति से मिलने पर मन में उसके प्रति सहज स्नेह प्रकट हो जाता है । इस प्रकार विभीषण के मन में अपने प्रति प्रेम का संचार देखकर हनुमानजी का रहा सहा संशय भी मिट गया ।

तब हनुमन्त कही सब,
राम कथा निज नाम ।
सुनत जुगल तन पुलक मन,
मगन सुमिरि गुन ग्राम ।।

⊗ जुगल=दोनों, मगन=मग्न, ग्राम=समूह ।

★ **तब हनुमानजी ने श्रीराम की सारी कथा कह कर अपना नाम बता दिया । सुनते ही दोनों के शरीर प्रसन्न हो गये और श्रीराम के गुण समूहों को याद करके दोनों के मन आनन्दमय हो गये ।**

* सज्जनता पर भरोसा हो जाने पर फिर भेद नहीं करना चाहिए । सज्जन भक्त भगवान की चर्चा में तन्मय हो जाते हैं ।

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी ।
जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ।।

⊗ दसनन्हि=दाँतों के बीच ।

★ **(विभीषणजी ने कहा) हे पवनसुत ! मेरी कहानी सुनो । मैं यहाँ वैसे रहता हूँ जैसे दाँतों के मध्य बेचारी जीभ रहा करती है ।**

* दुर्जनों के बीच सज्जन का रहना बड़ा कठिन होता है । जैसे जीभ दाँतों को चबाने में सहायता करती है तो भी जरा चूकने पर वही दाँत उसे चोट पहुँचा देते हैं ।

तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा ।
करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ हे तात! मुझे असहाय समझकर सूर्य कुल के नाथ श्रीरामजी क्या कभी मुझ पर कृपा करेंगे?

* भक्त के हृदय में परमात्मा पर इतना अगाध विश्वास होता है कि परमात्मा कभी न कभी उसे मिलेंगे ही ।

पुनि सब कथा बिभीषन कही ।
जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही ।।

★ फिर विभीषणजी ने श्री सीताजी जिस प्रकार लंका में रहती थीं, वह सब कथा कही ।

* सज्जन अनीति का पक्ष नहीं लेते नीतिवानों का सहयोग करते हैं ।

तब हनुमन्त कहा सुनु भ्राता ।
देखी चहउँ जानकी माता ।।

★ तब हनुमानजी ने कहा– हे भाई ! सुनो, मैं सीता माता को देखना चाहता हूँ ।

जुगुति बिभीषन सकल सुनाई ।
चलेउ पवनसुत बिदा कराई ।।

⊗ जुगुति (युक्ति)=उपाय ।

★ विभीषण ने (सीताजी के दर्शनों का) सब उपाय कह सुनाया, तब हनुमानजी विदा लेकर चल पड़े ।

* अपनी बुद्धिमानी से हनुमानजी ने शत्रुओं के नगर में भी अपना मित्र बना लिया तथा कार्य की सफलता के सूत्र पा लिए ।

करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ ।
बन असोक सीता रह जहवाँ ।।

⊗ जहवाँ=जहाँ ।

★ फिर वही (पहले के समान छोटा) रूप धारण करके वहाँ गये जहाँ अशोक वन में सीताजी रहती थीं ।

देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा ।
बैठेहिं बीति जात निसि जामा ।।

⊗ जामा=पहर ।

★ सीताजी को देखकर हनुमान ने उन्हें मन ही में प्रणाम किया । उन्हें बैठे-बैठे रात के चारों पहर बीत जाते हैं ।

* दुख में नींद भी नहीं आती । सीता जी बैठे-बैठे ही रात्रि बिताती हैं ।

कृस तनु सीस जटा एक बेनी ।
जपति हृदय रघुपति गुन श्रेनी ।।

⊗ कृस=दुबला, बेनी=लट, श्रेणी=शृंखला ।

★ शरीर दुबला हो चुका है, सिर पर जटाओं की एक लट है । हृदय में श्रीराम के गुणों की शृंखला का जप करती रहती हैं ।

* सच्चा ईश्वर का नाम (जाप) वही है कि उस परमात्मा के गुणों को बार-बार याद किया जावे तथा उन्हें जीवन में उतारा जाय ।

निज पद नयन दिएँ मन,
राम कमल पद लीन ।
परम दुखी भा पवनसुत,
देख जानकी दीन ।।

★ श्री सीताजी नेत्रों को अपने चरणों में लगाए हुए हैं । (नीचे की ओर देख रही हैं) और मन श्रीराम के चरण कमलों में लीन है । जानकी जी को दुखी देखकर पवनपुत्र हनुमानजी बहुत ही दुखी हुए ।

* दृष्टि नीची रखकर सीता जी अपने शील की रक्षा करती हैं और ध्यान भी प्रभु में लगाए रखकर निरर्थक चिंतन से भी बचती हैं । स्त्रियों को ऐसा ही करना चाहिए ।

तरु पल्लव महँ रहा लुकाई ।
करइ बिचार करौं का भाई ।।

⊗ तरु=वृक्ष, पल्लव=पत्ते, लुकाई=छिप रहे ।

★ हनुमान जी वृक्ष के पत्तों में छिप कर रहे और विचार करने लगे कि हे भाई ! क्या करूँ ! सीताजी का दुःख कैसे दूर करूँ ।

* विपरीत परिस्थिति देखकर धैर्यपूर्वक विचार करना चाहिए, जल्दबाजी में कुछ भी कर डालना ठीक नहीं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तेहि अवसर रावनु तहँ आवा ।
संग नारि बहु किएँ बनावा ।।

⊗ तेहि=उसी, बनावा=सजधज ।

★ **उसी समय रावण वहाँ पहुँचा । उसके साथ अनेक प्रकार से शृंगार किए हुए अनेक स्त्रियाँ थीं ।**

* इस प्रकार रहना पुरुष के असंयमी होने का लक्षण है ।

बहु विधि खल सीतहि समुझावा ।
साम दाम भय भेद दिखावा ।।

★ **उस दुष्ट ने सीताजी को अनेक प्रकार से समझाया । उन्हें साम, दाम, भय और भेद दिखलाया ।**

* रावण सीता को अपने पक्ष में लाने के लिए हर तरह के प्रयास करता था ।

कह रावनु सुनि सुमुखि सयानी ।
मंदोदरी आदि सब रानी ।।

⊗ सुमुखि=सुन्दर, सयानी=समझदार ।

★ **रावण ने कहा – हे सुमुखि ! हे सयानी ! सुनो ! मन्दोदरी आदि समस्त रानियों को –**

तब अनुचरी करउँ पन मोरा ।
एक बार बिलोकु मम ओरा ।।

⊗ अनुचरी=दासी, पन (प्रण)=प्रतिज्ञा, बिलोकु=देखो ।

★ **मैं तुम्हारी दासी बना दूँगा, यह मेरी प्रतिज्ञा है । तुम एक बार मेरी ओर देखो तो सही ।**

* दुष्ट व्यक्ति भोली-भाली नारी को फँसाने के लिए अनेक लालच देता है । उनसे हर भली नारी को सतर्क रहना चाहिए ।

तृन धरि ओट कहति बैदेही ।
सुमिरि अवधपति परम सनेही ।।

★ **अपने परम स्नेही श्रीराम को याद करते हुए जानकी जी तिनके की आड़ करके बोलीं ।**

* तिनके की ओट का अर्थ है सीताजी रावण को यह जता देती हैं कि वे उससे सीधे-सीधे बात भी नहीं करना चाहतीं ।

सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा ।
कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ।।

⊗ नलिनी=कमलिनी, बिकासा=खिल सकती ।

★ **हे दसमुख ! जुगनू के प्रकाश से कहीं कमलिनी खिल सकती है ।**

* सीता की दृष्टि में भगवान राम सूर्य के समान श्रेष्ठ तथा रावण जुगनू के सामन तुच्छ है । वे उसके लोभ लालच से अप्रभावित हैं । साहस के साथ उसे उचित उत्तर दे दिया ।

सीता तैं मम कृत अपमाना ।
कटिहउँ तब सिर कठिन कृपाना ।।

⊗ कटिउँ=काट डालूँगा ।

★ **रावण बोला– सीता! तूने मेरा अनादर किया है । मैं तेरा सिर इस कठोर तलवार से काट डालूँगा ।**

* अपने कार्य का औचित्य सिद्ध न कर सकने पर दुष्ट व्यक्ति भय दिखाकर अपनी बात मनवाना चाहता है ।

मास दिवस महँ कहा न माना ।
तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना ।।

⊗ मास दिवस=एक माह में, मारबि=मार डालूँगा ।

★ **यदि महीने भर में यह कहना नहीं माना तो मैं इस तलवार से तुमको मार डालूँगा । ऐसा कहकर रावण चला गया ।**

* रावण ने सीता को आतंक द्वारा विचलित करना चाहा पर असफल रहा ।

देखि परम बिरहाकुल सीता ।
सो छन कपिहिं कलप सम बीता ।।

⊗ बिरहाकुल=विरह से व्याकुल, कलप-कल्प=हजारों वर्ष के बराबर अवधि ।

★ **सीता को विरह से परम दुःखी देखकर वह क्षण हनुमान के लिए एक कल्प के समान बीता ।**

* दुख की घड़ियाँ कम होते हुए भी बहुत अधिक मालूम पड़ती हैं । परन्तु समझदार व्यक्ति उन्हें बड़े धैर्य से सहन कर लेता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कपि करि हृदयँ बिचार,
दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।
जनु असोक अंगार,
दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ।।

★ **तब हनुमानजी के हृदय ने उचित समय विचार करके (सीता के सामने) श्रीराम की अंगूठी डाल दी । मानो अशोक (वृक्ष) ने अंगारा डाला हो (यह समझकर) सीताजी ने हर्षित होकर उठकर उसे हाथ में ले लिया ।**

* दु:खों में थोड़ी-सी भी आशा की किरण प्रसन्नता देती है । अतएव भयंकर दु:खों में भी आशा को नहीं छोड़ना चाहिए ।

रामचन्द्र गुन बरनैं लागा ।
सुनतहिं सीता कर दुख भागा ।।

★ **तब (श्री हनुमानजी) श्रीराम के गुणों का वर्णन करने लगे (जिनके) सुनते ही जानकी जी का दु:ख दूर हो गया ।**

* दु:ख में अपने प्रिय के गुणानुवाद सहारा देते हैं ।

लागीं सुनै श्रवन मन लाई ।
आदिहु ते सब कथा सुनाई ।।

⊗ श्रवन (श्रवण)=कान, आदिहुते=आदि से ही ।

★ **वे (सीताजी) कान और मन लगाकर उन्हें सुनने लगीं । हनुमानजी ने आदि से लेकर सम्पूर्ण कथा कह सुनायी ।**

* अपना प्रिय प्रसंग हो तो मन उसमें स्वत: ही लग जाता है, मन न लगना प्रेम की कमी की निशानी है ।

श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई ।
कही सो प्रगट होति किन भाई ।।

★ **सीता जी बोलीं जिसने कानों को अमृत के समान सुन्दर कथा सुनाई, वह हे भाई ! प्रकट क्यों नहीं होता ?**

तब हनुमन्त निकट चलि गयऊ ।
फिरि बैठी मन बिस्मय भयऊ ।।

⊗ बिसमय=आश्चर्य ।

★ **तब हनुमानजी पास चले गये । उन्हें देख करके सीताजी मुँह फेर करके बैठ गईं, उनके मन में आश्चर्य होने लगा ।**

* दूध का जला छाछ फूँकता है । राक्षस सीता को नित्य धोखा देने का प्रयास करते थे । वानर रूप देखकर सीताजी ने इसीलिए शंका करके मुँह फेर लिया ।

रामदूत मैं मातु जानकी ।
सत्य सपथ करुना निधान की ।।

⊗ सपथ=(शपथ) सौगन्ध ।

★ **(हनुमानजी ने कहा)– हे माता जानकी ! मैं श्रीरामजी का दूत हूँ । दया के सागर की सौगन्ध कहता हूँ ।**

* हनुमानजी ने स्वाभाविक प्रेम में भरकर माँ कह कर उन्हें संबोधित किया और भगवान की शपथ उठाई ।

कपि के बचन सप्रेम सुनि,
उपजा मन बिस्वास ।
जाना मन क्रम बचन यह,
कृपासिंधु कर दास ।।

★ **हनुमान के प्रेम से भरे वचन सुनकर सीताजी के मन में विश्वास पैदा हो गया । उन्होंने समझ लिया कि वह मन, वचन और कर्म से दया के सागर श्रीराम का दास है ।**

* सीताजी भगवान के सच्चे भक्तों के लक्षण पहचानती थीं । हनुमान जी के वचन और ढंग से उन्हें विश्वास हो गया ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय-९

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं
कालमत्तेभ सिहं ।
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुण निधिअजितं
निर्गुणं निर्विकारम् ।।
मायातीतं सुरेशं खलवध
निरतं ब्रह्मबृन्दैक देवं ।
वन्दे कन्दावद सरसिजनयनं
देवमुर्वीश रूपम् ।।

⊗ कामारि=शिवजी, कालमत्तेभ=काल रूपी मतवाले हाथी, ज्ञान गम्यं=ज्ञान द्वारा जानने योग्य, अजितं=न जीते जा सकने वाले, मायातीतं=माया से परे, निरतं=लगे रहने वाले, कन्दावदात=जलयुक्त मेघ जैसे, मुर्बीश=पृथ्वीपति ।

★ **कामदेव के शत्रु श्री शिवजी द्वारा सेव्यभव भय को मिटाने वाले काल रूपी मस्त हाथी के लिए सिंह समान, योगियों के स्वामी, ज्ञान द्वारा जानने योग्य, गुणों की खान, अजेय, गुणों विकारों और माया से परे, देवताओं के स्वामी, दुष्टों के नाश में तत्पर, ब्राह्मण समाज के एकमात्र देव, जल युक्त मेघ के समान, कमल-नयन, पृथ्वीपति के रूप में श्रीराम-चन्द्रजी की वन्दना करता हूँ ।**

**हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी ।
सजन नयन पुलकाबलि बाढ़ी ।।**

⊗ गाढ़ी=बहुत अधिक, पुलकाबलि=शरीर में रोमांच होना, बाढ़ी=बढ़ गई ।

★ **हनुमानजी को भगवान का जन (सेवक) समझकर सीताजी के मन में उनके प्रति बड़ा स्नेह उमड़ पड़ा और नेत्रों में (प्रेम के अश्रु) जल भर आया ।**

* जब किसी की सज्जनता और अपनत्व पर विश्वास हो जाता है तो प्रेम भाव सहज ही उमड़ पड़ता है । शंका की स्थिति में स्नेह नहीं रह पाता ।

**बूढ़त विरह जलधि हनुमाना ।
भयहु तात मो कहुँ जलजाना ।।**

⊗ बूढ़त=डूबती हुई, जलधि=समुद्र , जलजाना (जलयान)= जहाज ।

★ **(सीताजी ने कहा)— हे तात हनुमान ! विरह के समुद्र में डूबती हुई मेरे लिए तुम जहाज सिद्ध हुए ।**

* जहाँ अपना कोई न दिखता हो वहाँ सच्चा सहायक मिल जाये तो दुःखी व्यक्ति को बड़ा भारी सहारा मिल जाता है ।

**अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी ।
अनुज सहित सुख भवन खरारी ।।**

★ **मैं न्यौछावर होती हूँ, अब छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित खर के शत्रु सुखधाम श्रीराम कुशल मंगल से हैं ।**

* अति उत्सुकतावश हर किसी से समाचार पूछना उचित नहीं । व्यक्ति की प्रामाणिकता परख कर तब सीताजी ने अपने मन की स्थिति प्रकट की ।

**कोमलचित कृपाल रघुराई ।
कपि केहि हेतु धरी निठुराई ।।**

⊗ कोमलचित=कोमल हृदय, निठुराई(निठुरता)=कठोरता ।

★ **श्रीरामजी तो कोमल हृदय और दयालु हैं । फिर हनुमान ! उन्होंने किस कारण यह निष्ठुरता धारण कर रखी है ।**

* सीताजी का यह प्रश्न श्रीराम के प्रति उनका अविचल निष्ठ का प्रतीक है । प्रभु का आचरण हमारी कल्पना के अनुरूप नहीं होता दिखाई दे तो भी उसका कुछ कारण होगा जो हमारी समझ में नहीं आ रहा है, दुःख के समय सोचने का यही ठीक ढंग है ।

**देखि परम बिरहाकुल सीता ।
बोला कपि मृदु बचन बिनीता ।।**

★ **सीताजी को विरह से परम दुःखी देखकर हनुमानजी कोमल और विनय भाव से भरे वचन बोले—**

* दुःखी व्यक्ति से कुछ कहना हो तो उसका प्रारम्भ उसकी भूलों की आलोचना से नहीं करके सान्त्वना के शब्दों से करना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रघुपति कर संदेसु अब,
सुनु जननी धरि धीर ।
अस कहि कपि गदगद भयउ,
भरे बिलोचन नीर ॥

⊗ गदगद भयउ=प्रेम से गला भर आया, बिलोचन=नेत्र, नीर=जल ।

★ **हे माता ! अब धीरज धारण करके श्रीरामजी का समाचार सुनिये । ऐसा कहकर हनुमानजी प्रेम से गद्‌गद् हो गये । उनके नेत्रों में (प्रेमाश्रुओं का) जल भर आया ।**

* श्रीराम एवं जानकी जी के प्रेम का स्मरण करके श्री हनुमानजी प्रेम समाधि जैसी स्थिति में पहुँच गये और उनके मुख से भगवान राम के शब्द ज्यों के त्यों निकलने लगे- मानो स्वयं श्रीराम बोल रहे हों ।

कहेउ राम बियोग तब सीता ।
मो कहुँ सकल भए बिपरीता ॥

⊗ विपरीता=प्रतिकूल ।

★ **(हनुमान जी बोले) श्रीरामजी ने कहा है कि हे सीते ! तुम्हारे वियोग में मेरे लिए सभी वस्तुएँ प्रतिकूल हो गई हैं ।**

* समय अपने अंत:करण की स्थिति के अनुरूप ही दिखाई देता है । जो वस्तुएँ दुनिया को सुख देती हैं, स्नेही दु:खी को दु:खदायी लगती हैं ।

नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू ।
कालनिसा सम निसि ससि भानू ॥

⊗ किसलय=कोमल पत्ते, कृसानू=अग्नि , कृाल=मृत्यु ।

★ **वृक्ष के नये-नये कोमल (शीतल) पत्ते मानो आग के समान (दाहक) विश्राम देने वाली रात्रि कालरात्रि के समान (भयंकर) तथा चन्द्रमा (शान्त) सूर्य के समान (गरम) लगता है ।**

तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा ।
जानत प्रिया एक मनु मोरा ॥

★ **हे प्रिये! मेरे और तेरे प्रेम का रहस्य मेरा मन ही जानता है ।**

* प्रेम के बाहरी रूप दुनिया को दिखाई देते हैं पर उसका मूल आधार क्या है । यह तत्व तो सच्चा प्रेमी ही जान सकता है ।

सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं ।
जानु प्रीति रस एतनेहि माहीं ॥

⊗ रस=सार, एतनेहि=इतने में ही ।

★ **और वह मन सदा तेरे समीप रहता है । बस मेरे प्रेम का सार इतने में ही जान ले ।**

* हम शरीर से कहाँ हैं यह बात कम महत्व की है । मन से कहाँ यह तथ्य अधिक महत्व रखता है ।

प्रभु संदेसु सुनत बैदेही ।
मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥

★ **प्रभु का समाचार सुनते ही सीताजी प्रेम में डूब गईं । उन्हें शरीर की सुध भी नहीं रही ।**

* सच्चा प्रेम मनुष्य को शरीर से परे अलौकिक सुख की अनुभूति कराने में समर्थ है ।

कछुक दिवस जननी धरु धीरा ।
कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ॥

★ **(श्री हनुमान जी कहते हैं) हे माता ! कुछ दिन और धैर्य धारण करो । श्रीराम जी वानरों सहित यहाँ आवेंगे ।**

निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं ।
तिहुँपुर नारदादि जसु गैहहिं ॥

⊗ जसु=यश, गैहहिं=गावेंगे ।

★ **और राक्षसों को मार करके आपको ले जावेंगे । नारद आदि (ऋषि मुनि) तीन लोक में उनका कीर्ति गान करेंगे ।**

* सीता को छुड़ाने सम्बन्धी श्रीराम की सारी योजना बतलाकर सीता को हनुमानजी ने धैर्य बँधाया ताकि वे फिर से दु:खी न होने लगें ।

हैं सुत कपि सब तुम्हहिं समाना ।
जातुधान अति भट बलवाना ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ सीताजी यह सुनकर बोलीं ! हे पुत्र बन्दर तो सब तुम्हारे ही समान नन्हें से होंगे, और राक्षस तो बड़े बलवान योद्धा हैं ।

* (१) हनुमान जी छोटे रूप में थे (२) माता स्नेहवश अपने पुत्र को छोटा-सा ही अनुभव करती है, अत: सीताजी को सहज शंका हुई ।

मोरे हृदय परम संदेहा ।
सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा ।।

★ अत: मेरे हृदय में बड़ी भारी शंका है (उन जैसे बन्दर राक्षसों को कैसे जीत सकेंगे?) यह सुनकर हनुमानजी ने अपना शरीर प्रकट किया ।

* हनुमानजी परम बुद्धिमान थे । पहले छोटा और नम्र रूप दिखाकर माँ का वात्सल्य उभार दिया बाद में अपनी सामर्थ्य दिखाकर विश्वास जमाने लगे ।

कनक भूधराकार सरीरा ।
समर भयंकर अतिबल बीरा ।।

⊗ कनक=सोना, भूधराकार=पर्वत के समान, समर=युद्ध ।

★ सोने के पर्वत के समान (श्री हनुमान का) शरीर था, जो युद्ध में शत्रु के हृदय में भय पैदा कर देने वाला, अत्यन्त ताकतवर और वीर था ।

* भगवान के भक्त अपनी शान दिखाने के लिए अपनी सामर्थ्य दिखाते नहीं फिरते किन्तु समय पड़ने पर वे अतुलनीय शक्ति सम्पन्न सिद्ध होते हैं ।

अजर अमर गुननिधि सुत होहू ।
करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ।।

⊗ अजर=बुढ़ापे से रहित, सुत=पुत्र, छोहू=कृपा ।

★ (सीता जी कहती हैं—) हे पुत्र ! तुम अजर, अमर और गुणों की खान बनो । श्रीरामजी तुम पर बहुत प्रेम करें ।

* सीताजी ने हनुमान जी के ज्ञान, भगवत् प्रेम निरअहंकारिता तथा सामर्थ्य सभी का प्रमाण पाने पर दुर्लभ आशीर्वाद दिया । ऐसा आशीर्वाद सत्पात्र को ही मिल सकता है ।

बार बार नाएसि पद सीसा ।
बोला बचन जोरि कर कीसा ।।

★ हनुमान जी ने बार-बार सीताजी के पैरों में सिर नवाया और फिर हाथ जोड़कर कहा—

* हनुमान जी को कोई लौकिक कामना नहीं थी, माता सीता से भगवान का प्रेम पाते रहने योग्य पात्रता बने रहने का आशीर्वाद पाकर वह हर्षित हुए ।

अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ।
आसिष तव अमोघ बिख्याता ।।

⊗ कृतकृत्य=कृतार्थ, आसिष=आशीर्वाद, अमोघ=अचूक, विख्याता =प्रसिद्ध ।

★ हे माता! अब मैं कृतार्थ हो गया । आपका आशीर्वाद अचूक है, यह बात प्रसिद्ध है ।

* माता का आशीर्वाद जीवन को धन्य कर देता है । इसलिए उसका आशीर्वाद लेने के लिए सदा उसकी सेवा करना चाहिए ।

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा ।
फल खाएसि तरु तोरैं लागा ।।

⊗ पैठेउ=घुस गये ।

★ वे (हनुमान जी) सीताजी को सिर नवाकर चले और बाग में घुस गये । फल खाते गये और वृक्षों को तोड़ने लगे ।

* (१) अपना मुख्य कार्य हो जाने पर हनुमान जी को भूख का ध्यान आया । (२) अपनी भूख मिटाकर शत्रु पक्ष को आतंकित करने के लिए रणनीति का प्रयोग किया ।

रहे तहाँ बहु भट रखवारे ।
कछु मारेसि कछू जाइ पुकारे ।।

★ वहाँ बहुत से योद्धा रखवाले थे, वे जब उन्हें पकड़ने आये तो हनुमान जी ने उनमें से कुछ को मार डाला और कुछ ने जाकर रावण से शिकायत की ।

* हनुमानजी चलने के पहले रावण तथा लंकावासियों का मनोबल तोड़ना चाहते थे, इसलिए रक्षकों को शिकायत के लिए जाने भी दिया तथा स्वयं भागे भी नहीं ।

पुनि पठयउ तेहिं अच्छ कुमारा ।
चला संग लै सुभट अपारा ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **फिर रावण ने अपने पुत्र अक्षय कुमार को भेजा । वह अगणित उत्तम योद्धाओं को साथ लेकर चला ।**

* शत्रु को छोटा नहीं मानना चाहिये तथा उसके दमन का प्रयास तुरन्त करना राजनीति का सिद्धान्त है ।

कछु मारेसि कछु मर्देसि,
कछु मिलएसि धरिधूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे,
प्रभु मर्कट बल भूरि ।।

⊗ मर्देसि=मसल डाला, मर्कट=बन्दर ।

★ **हनुमान जी ने अक्षय कुमार सहित कुछ को मार डाला, कुछ को मसल डाला और कुछ को पकड़कर मिट्टी में मिला दिया । कुछ ने फिर जाकर पुकारा कि हे प्रभु ! वानर बहुत ही ताकतवर है ।**

* सच्ची योग्यता तथा क्षमता को शत्रु भी स्वीकार करते हैं ।

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना ।
पठएसि मेघनाद बलवाना ।।

⊗ लंकेस=लंका का राजा (रावण), रिसाना=क्रोधित हो उठा ।

★ **पुत्र का वध सुनकर रावण क्रोधित हो उठा और उसने (अपने बड़े पुत्र) शक्तिशाली मेघनाथ को भेजा ।**

* रावण अनुभवी योद्धा था, विवरण पाकर वह समझ गया कि शत्रु कितना समर्थ है । इसलिए उसने अपने सबसे विश्वासपात्र योद्धा को भेजा ।

मारिस जनि सुत बाँधेसु ताही ।
देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ।।

★ **(रावण ने कहा) हे पुत्र ! बंदर को मारना नहीं, उसे बाँधकर ले आना । उस वानर को देखा जाये कि कहाँ का है ।**

* ताकतवर शत्रु के सम्बन्ध में पूरी जानकारी पा लेना राजनीति का अंग है । बन्दर कहाँ का है, अर्थात् शत्रु का मुख्य केन्द्र कौनसा है यह बात रावण जानना चाहता था ।

ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहि मारा ।
परतिहुँ बार कटकु संहारा ।।

⊗ ब्रह्मबान=ब्रह्मास्त्र, परतिहु=गिरते समय भी, संहारा=मार डाला ।

★ **उसने (मेघनाथ ने) हनुमान जी को ब्रह्म-वाण मारा (जिसके लगते ही वे वृक्ष से नीचे गिर पड़े) लेकिन गिरते समय भी उन्होंने बहुत सी सेना को मार डाला ।**

* वीर पुरुष अन्तिम श्वास तक अपने लक्ष्य के प्रति सक्रिय रहते हैं ।

तेहिं देखा कपि मुरछित भयऊ ।
नागपास बाँधेसि ले गयऊ ।।

★ **जब उसने देखा कि हनुमान जी मूर्छित अवस्था में आ गये हैं, तब वह उनको नागपाँश से बाँध करके ले गया ।**

* ताकतवर शत्रु के प्रति सतर्कता बरतनी चाहिए । बेहोशी का बहाना बनाकर पास आने पर आक्रमण करना भी एक नीति है, इसीलिए मेघनाथ ने सतर्कता बरती ।

कपिहि बिलोकि दसानन,
बिहसा कहि दुर्बाद ।
सुत बध सुरति कीन्ह पुनि,
उपजा हृदयँ बिषाद ।।

⊗ बिहसा=हँसा, दुर्बाद=दुर्वचन (गाली) सुरति कीन्ह=याद किया, बिषाद=दुःख ।

★ **हनुमान जी को पकड़ा हुआ देखकर रावण दुर्वचन कहता हुआ हँसा । फिर पुत्र अक्षयकुमार के मरण की याद की तो उसके हृदय में दुःख उत्पन्न हुआ ।**

* दुष्टों की यह पहिचान है कि दूसरों को कष्ट में देखकर हँसते हैं, पर अपनी हानि उन्हें उदास कर देती है । सन्त इससे विपरीत आचरण करते हैं ।

मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा ।
कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ।।

★ **श्री हनुमानजी ने कहा मुझे अपने बाँधे जाने की कुछ भी लाज नहीं है । मैं तो अपने प्रभु का काम करना चाहता हूँ ।**

* राक्षस अपने आपको बेजोड़ मानते थे— उनका यह आत्मविश्वास हनुमानजी हिला देना चाहते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुनत बिहसि बोला दसकन्धर ।
अंग भंग करि पठइअ बंदर ।।

⊗ अंग भंग करि=शरीर के अंगों तोड़कर (अपंग बनाकर ।)

★ यह सुनते ही रावण हँसकर बोला— अच्छा तो, वानर को अपंग बनाकर लौटा दिया जाय ।

* श्रीराम ने सूर्पणखा के अंगभंग किए थे, रावण उसी का बदला लेकर अपने अहंकार की पूर्ति करना चाहता था ।

कपि के ममता पूँछ पर,
सबहिं कहउँ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि,
पावक देहु लगाइ ।।

⊗ बोरि=डुबोकर, पट=कपड़ा, पावक=आग ।

★ मैं सबको समझाकर कहता हूँ कि बन्दर की ममता पूँछ पर होती है । अत: तेल में कपड़ा डुबा करके इसकी पूँछ से बाँध कर फिर आग लगा दी जावे ।

कौतुक कहँ आये पुर बासी ।
मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ।।

⊗ कौतुक=तमाशा ।

★ नगर के निवासी तमाशा देखने आये । वे हनुमान को पैरों से ठोकर मारने और उनकी बहुत हँसी उड़ाने लगे ।

* भगवान का कार्य करने वालों को दुष्टों द्वारा अपना परिहास उड़ाने तथा अपमान किए जाने की स्थिति का सामना करने के लिए तैयार होना ही चाहिए ।

बाजहिं ढोल देहि सब तारी ।
नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ।।

★ ढोल बजने लगे, सब लोग तालियाँ बजाने लगे, हनुमानजी को नगर में घुमा कर फिर पूँछ में आग लगा दी ।

पावक जरत देखि हनुमन्ता ।
भयउ परम लघु रूप तुरन्ता ।।

★ अग्नि को जलते हुए देखकर हनुमान जी शीघ्र ही बहुत छोटे रूप में हो गये ।

* समझदार व्यक्ति अपने दाँव की प्रतीक्षा करते हुए धैर्य धारण किए रहते हैं तथा मौका पाते ही फुर्ती से कार्य चालू कर देते हैं ।

निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं ।
भई सभीत निसाचर नारीं ।।

⊗ निबुकि=बन्धन से खिसककर, अटारी=छत पर ।

★ बन्धन से मुक्त होकर वे (हनुमान जी) सोने की छतों पर जा चढ़े । उनको देखकर राक्षसों की स्त्रियाँ भयभीत हो गईं ।

* हनुमान जी राक्षसों की पकड़ से बाहर हो गये और जलती पूँछ से नगर में आग लगाने लगे ।

देह बिसाल परम हरुआई ।
मंदिर तै मंदिर चढ़ि धाई ।।

⊗ हरुआई=हल्की, धाई=दौड़कर ।

★ देह बड़ी विशाल, परन्तु बहुत ही हल्की है । वे दौड़कर एक महल से दूसरे महल पर चढ़ जाते हैं ।

* तेजी से काम करने वाले को विशालता (बड़प्पन) के साथ हल्कापन (निरभिमानता) भी बनाये रखनी आवश्यक है ।

जरइ नगर भा लोग बिहाला ।
झपट लपट बहु कोटि कराला ।।

⊗ बिहाला=बेहाल, लपट=आग की लपटें, कोटि=करोड़ कराला=भयंकर ।

★ नगर जल रहा है, लोग बेहाल हो गये हैं । आग की करोड़ों भयंकर लपटें झपटती जा रही हैं ।

साधु अवग्या कर फलु ऐसा ।
जरइ नगर अनाथ कर जैसा ।।

⊗ अवग्या (अवज्ञा)=अपमान ।

★ साधु के अनादर का यह फल है कि नगर अनाथ के नगर की तरह जल रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

* संत (सज्जन) पुरुष अपने भले की ही सलाह देते हैं । संत विभीषण ने हनुमान जी के साथ दुर्व्यवहार करने से सबको रोका था पर उनकी बात मानी नहीं गयी ।

जारा नगर निमिष एक माहीं ।
एक बिभीषन कर गृह नाहीं ।।

⊗ निमिष=क्षण में ।

★ हनुमान जी ने एक ही क्षण में सम्पूर्ण नगर को जला दिया एक विभीषण का घर नहीं जलाया ।

* सामूहिक दण्ड में भी सज्जन व्यक्ति दण्ड से बच जाता है ।

उलटि पलटि लंका सब जारी ।
कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ।।

★ हनुमान जी ने उलट-पलट कर (एक ओर से दूसरी ओर तक) सम्पूर्ण लंका को जला डाला फिर वे समुद्र में पूँछ की आग बुझाने के लिए कूद पड़े ।

पूँछ बुझाइ खोइ श्रम,
धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे,
ठाढ़ भयउ कर जोरि ।।

★ पूँछ बुझाकर तथा स्नान द्वारा थकावट दूर करके पुनः छोटा-सा रूप धारण करके, हनुमानजी सीताजी के सामने हाथ जोड़कर जा खड़े हुए ।

* अपने व्यक्तित्व की विशालता केवल कार्य के समय प्रदर्शित की जाती है, अपनों से बड़ों के सामने स्वाभाविक विनम्रता बनाये रखनी चाहिए ।

नाघि सिंधु एहि पारहि आवा ।
सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा ।।

⊗ सबद (शब्द)=आवाज, किलकिला=प्रसन्नता तथा जोश से भरी आवाज ।

★ समुद्र लांघ करके वे (हनुमान जी) दूसरे पार आ गये और उन्होंने वानरों को हर्ष-ध्वनि सुनाई ।

* कार्य की सफलता का संकेत दूर से ही दे दिया ताकि उन्हें संतोष हो जाये ।

हरषे सब बिलोकि हनुमाना ।
नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ।।

★ हनुमान जी को देखकर के सब प्रसन्न हो गये और तब बन्दरों ने अपना नया जन्म समझा ।

* वीर पुरुष अपना गौरव खो देना मौत जैसा ही मानते हैं । सीता की खोज न कर पाना उनके पुरुषार्थ पर कलंक था, वह दूर होना नया जन्म जैसा ही था ।

मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा ।
कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ।।

★ हनुमानजी का मुँह प्रसन्न है और शरीर में तेज विराजमान है । वे रामजी का काम करके लौट आये हैं ।

* लोक हित के काम पूरे होने पर मनुष्य की प्रसन्नता और ओज में वृद्धि होती है ।

फटिक सिला बैठे द्वौ भाई ।
परे सकल कपि चरनन्हि जाई ।।

★ दोनों भाई (राम और लक्ष्मण) स्फटिक शिला पर बैठे थे । सब बन्दर आकर उनके चरणों पर गिर गये ।

* कार्य की सफलता पर लोगों को अहंकार आ जाता है, किन्तु बन्दरों की तरह अपना कर्तव्य समझ कर कार्य करने वाले उस अहंकार से बच जाते हैं ।

प्रीति सहित सब भेंटे,
रघुपति करुनापुंज ।
पूँछी कुसल नाथ अब,
कुसल देखि पद कंज ।।

★ दया की राशि श्रीरामजी सभी से प्रेम के साथ गले लगा कर मिले और कुशल पूछी । वानरों ने कहा— हे नाथ ! आपके चरण कमलों के दर्शन प्राप्त करके अब कुशल हैं ।

* श्रीरामजी ने सीताजी की खबर पूछने में व्यग्रता दिखाने की जगह पहले वानरों की कुशलता पूछी और उन्हें स्नेह दिया । बड़ों को ऐसा ही करना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जामवन्त कह सुनु रघुराया ।
जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ।।

★ **जामवन्त ने कहा— हे ! श्रीरामजी ! सुनिये, हे नाथ ! जिस पर आप दया करते हैं—**

ताहि सदा सुभ कुसल निरन्तर ।
सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ।।

★ **ऐसे व्यक्ति का सदैव भला ही होता है, देवता, और मनुष्य सब उस पर प्रसन्न रहा करते हैं ।**

* ईश्वर की जिस पर कृपा होती है उस पर सारा संसार अपने आप प्रसन्न हो जाता है । ईश्वर कृपा अमूल्य वरदान है ।

प्रभु की कृपा भयउ सब काजू ।
जन्म हमार सुफल भा आजू ।।

★ **हे प्रभु आपकी कृपा से सब काम पूरे हुए । आज हमारा जन्म सफल हो गया ।**

* सत्कर्म करते समय यह भाव नहीं रखना चाहिए कि हमने किसी पर अहसान किया है, बल्कि किसी गलत अथवा निरर्थक कार्य में न लगकर अपनी शक्ति उचित काम में लगी इससे अपना जीवन सार्थक हो गया, ऐसा कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए ।

पवनतनय के चरित सुहाए ।
जामवंत रघुपतिहि सुनाए ।।

★ **पवनपुत्र हनुमानजी द्वारा किये गये श्रेष्ठ कार्यों का विवरण जामवन्तजी ने श्रीरामजी को सुनाया ।**

* जामवन्तजी बुजुर्ग थे— उन्होंने अपने दल के सदस्यों का कार्य विवरण दिया, सब अपनी-अपनी शेखी हाँकने में नहीं लगे । यही आदर्श ढंग है ।

सुनु कपि तोहि समान उपकारी ।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनधारी ।।

⊗ तनधारी=शरीर धारण करने वाला ।

★ **(श्रीरामजी कहने लगे) हे हनुमान ! सुन, तेरे समान मेरा उपकारी देवता, मनुष्य अथवा मुनि कोई शरीर को धारण करने वाला नहीं है ।**

* (१) भगवान की कृतज्ञता की भावना अनुकरणीय है । (२) छोटे दिखने वाले व्यक्ति भी श्रेष्ठ कार्य कर लें तो उन्हें भी पूरा सम्मान दिया जाना चाहिए ।

प्रति उपकार करौं का तोरा ।
सनमुख होइ न सकत मन मोरा ।।

⊗ प्रति उपकार (प्रत्युपकार)=बदले में उपकार, सनमुख=सामने ।

★ **(श्रीरामजी कहते हैं—) मैं तेरा बदले में उपकार तो क्या करूँ, मेरा मन कभी तेरे सामने होने में समर्थ नहीं है ।**

* उपकार का बदला समाज में चुकाने का प्रयास करना चाहिए इससे अपना ऋण हलका होता है और समाज में उपकार की परिपाटी चलती रहती है ।

पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता ।
लोचन नीर पुलक अति गाता ।।

⊗ चितव=देख लिया, सुरत्राता=देवताओं के रक्षक, गाता = शरीर ।

★ **देवताओं के रक्षक श्रीराम बार-बार हनुमानजी को स्नेहपूर्वक देखने लगे । उनके नेत्रों में प्रेम के अश्रुकण भर आये और शरीर प्रसन्नता से रोमांच हो आया ।**

कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा ।
कर गहि परम निकट बैठावा ।।

★ **हनुमानजी को उठाकर प्रभु ने हृदय से लगा लिया और हाथ पकड़कर कर अत्यन्त पास में बैठा लिया ।**

* भलाई करने वालों के प्रति इसी प्रकार सार्वजनिक रूप से हार्दिक आभार प्रकट करना चाहिये । सार्वजनिक अभिनन्दन करने से समाज में भलमनसाहत बढ़ती है ।

तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा ।
कहा चलैं कर करहु बनावा ।।

⊗ कपिपतिहि=कपिराज (सुग्रीव), करहु बनावा=तैयारी करो ।

★ **तब श्रीरामजी ने कपिराज सुग्रीव को बुलाया और कहा— चलने के लिए तैयारी करो ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अब बिलम्ब केहि कारन कीजै ।
तुरत कपिन्ह कहुँ आयसु दीजै ।।

★ **अब देरी किस कारण की जाये ? वानरों को शीघ्र आज्ञा दो ।**

* नीति यही है कि कार्य करने की जल्दबाजी में बीच के आवश्यक चरण छोड़ न दे, किन्तु वह पूरे हो जाने पर फिर देरी भी न होने दे ।

कपिपति बेगि बोलाए,
आए जूथप जूथ ।
नाना बरन अतुल बल,
बानर भालु बरूथ ।।

⊗ जूथप=सेनापति, जूथ=समूह वरन (वर्ण)=रंग, बरूथ=झुण्ड ।

★ **वानरराज सुग्रीव ने तुरन्त ही वानरों को बुलाया, सेनापतियों के समूह आ गये । बन्दर-भालुओं के समूह अनेक रंगों के हैं और उनमें अतुलनीय शक्ति है ।**

हरषि राम तब कीन्ह पयाना ।
सगुन भए सुन्दर सुभ नाना ।।

⊗ पयाना (प्रयाण)=चल पड़ना, सगुन=शकुन ।

★ **तब श्रीराम जी ने प्रसन्न हो करके कूच किया । अनेक सुन्दर और शुभ शकुन हुए ।**

एहि बिधि जाइ कृपानिधि,
उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागे खान फल,
भालु बिपुल कपि बीर ।।

⊗ तीर=तट, बिपुल=अनेक ।

★ **इस प्रकार कृपा के सागर श्रीरामजी समुद्र के किनारे पर जा पहुँचे । अनेकों रीछ वानर वीर जहाँ-तहाँ फल खाने लगे ।**

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका ।
जब ते जारि गयऊ कपि लंका ।।

★ **जब से हनुमानजी लंका जला गये तब से वहाँ राक्षस भयभीत रहने लगे ।**

* भगवान के प्रति समर्पित एक श्रेष्ठ व्यक्ति भी असुरों का आत्मविश्वास हिला सकता है ।

बैठेउ सभा खबरि असि पाई ।
सिंधु पार सेना सब आई ।।

★ **ज्यों ही वह (रावण) सभा में जाकर बैठा, उसने ऐसा समाचार पाया कि शत्रु की सारी सेना समुद्र के उस पार आ गई है ।**

* दरबार में पहला समाचार वही उठाया जाता है जिसे सबसे अधिक महत्व दिया जाता है । स्पष्ट है कि श्रीराम की सेना पहुँचने से राक्षस भयभीत हो रहे थे ।

बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ।
ते तब हँसे मष्ट करि रहहू ।।

⊗ बूझेसि=पूछा, मष्ट=चुप ।

★ **उसने मन्त्रियों से पूछा कि उचित सलाह दीजिए (अब क्या करना चाहिए) तब वे सब हँसे और बोले कि चुप किये रहिये (इसमें सलाह की कौन-सी बात है) ।**

जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं ।
नर बानर केहि लेखे माहीं ।।

⊗ सुरासुर=देवता और राक्षस, केहि लेखे=किस गिनती ।

★ **आपने देवताओं और राक्षसों पर विजय प्राप्त करली, तब तो कुछ परिश्रम नहीं हुआ । फिर मनुष्य और बानर किस गिनती में हैं ?**

* रावण चापलूसी पसन्द करता था और उसके मन्त्री भी उसकी प्रसन्नता पाने के लिए विवेक की उपेक्षा करके प्रशंसा ही किया करते थे ।

सचिब बैद गुर तीन जौं,
प्रिय बोलहि भय आस ।
राज धर्म तन तीनि कर,
होइ बेगिहीं नास ।।

⊗ सचिब=मंत्री, बैद=वैद्य ।

★ **मन्त्री, वैद्य और गुरु— ये तीन यदि भय या (लाभ की) आशा से (हितकर बात न कहकर) प्रिय बोला**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते हैं तो (क्रमशः) राज्य, शरीर और धर्म—इन तीन का तुरन्त ही विनाश हो जाता है ।

* लोग अपनी भूलों से राज्य स्वास्थ्य और धर्म नष्ट कर देते हैं । मन्त्री, वैद्य और गुरु का काम लोगों को सावधान करके, अपने प्रभाव का उपयोग करके भूलों से दूर रखना है । पर जब वे ही यह उत्तरदायित्व पूरा न करें तो समझो अनर्थ होकर रहेगा ।

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई ।
अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ।।

⊗ सहाई=सहायता (संयोग), अस्तुति=स्तुति ।

★ रावण के पतन के लिए भी वही संयोग आ बना । मन्त्री उसे सुना सुनाकर (मुँह पर) स्तुति करने लगे ।

अवसर जानि बिभीषनु आवा ।
भ्राता चरन सीस तेहि नावा ।।

★ (इसी समय) अवसर जानकर विभीषणजी आये । उन्होंने बड़े भाई के पैरों में सिर झुकाया ।

* विभीषण भी मन्त्री थे । सलाह देने का उचित समय समझ कर वह स्वयं ही पहुँच गये । अपने कर्तव्य पालन के लिए अपनी ओर से ही प्रयत्नशील रहना चाहिए ।

पुनि सिर नाइ बैठ निज आसन ।
बोला बचन पाइ अनुसासन ।।

★ फिर वे सिर झुकाकर अपने आसन पर बैठ गये और आदेश पाकर ये वचन कहे—

* बड़ों के सामने अथवा सभा में यों ही नहीं बोल पड़ना चाहिए । मर्यादा तथा व्यवस्था के अनुरूप स्वीकृति लेकर ही बोलना चाहिए ।

जो कृपाल पूछिहु मोहि बाता ।
मति अनुरूप कहउँ हित ताता ।।

★ हे दयालु— जब आपने मुझसे राय पूछी ही है, तो हे भाई ! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार आपके भले की बात कहता हूँ ।

* सलाहकार का कर्तव्य यही है कि अपनी बुद्धि के अनुसार, दूसरों की टीका टिप्पणी से प्रभावित हुए बिना ही मर्यादा पूर्वक अपनी राय दे ।

जो आपन चाहै कल्याना ।
सुजस सुमति सुभ गति सुख नाना ।।

★ हे भाई ! यदि आप अपना भला, सुकीर्ति, सुबुद्धि, शुभ गति और अनेक प्रकार के सुख चाहते हों—

सो परनारि लिलार गोसाईं ।
तजउ चउथि के चन्द कि नाईं ।।

⊗ परनारि=पर-स्त्री, लिलार=लालसा, चउथि=चौथ, चन्द्र=चन्द्रमा, नाईं=समान ।

★ तो हे स्वामी ! पराई स्त्री की लालसा चौथ के चन्द्रमा की तरह त्याग दें ।

* लोकोक्ति है कि चौथ का चन्द्रमा देखने से कलंक लगता है । इसी प्रकार पर-स्त्री की कामना कलंक देने वाली ही सिद्ध होती है ।

चौदह भुवन एक पति होई ।
भूतद्रोह तिष्ठइ नहिं सोई ।।

⊗ भूतद्रोह=प्राणियों से, तिष्ठइ=बैठना (यहाँ स्थित रहने का भाव है) ।

★ चौदह भुवनों के एकमात्र स्वामी हो, वह भी समाज से बैर करके ठहर नहीं सकता (नष्ट हो जाता है) ।

* जो प्रवृत्तियाँ समाज के लिए अहितकर हैं उन्हें बढ़ावा देकर समर्थ से समर्थ व्यक्ति भी नष्ट हो जाता है ।

काम क्रोध मद लोभ सब,
नाथ नरक के पन्थ ।
सब परिहरि रघुबीरहि,
भजहू भजहि जेहि सन्त ।।

★ हे नाथ ! काम, क्रोध, मद और लोभ— ये सब नरक के मार्ग हैं । इन सबको छोड़कर श्रीरामजी का भजन कीजिए, जिन्हें सत्पुरुष भजते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

* लोग इन्हीं दुर्गुणों के कारण अपने जीवन को नर्क जैसा बना लेते हैं । सन्त इनके भुलावे में न आकर भगवान से जीवन की प्रेरणा लेते हैं ।

गो द्विज धेनु देव हितकारी ।
कृपा सिन्धु मानुष तनुधारी ।।

★ उन दया के सागर भगवान् ने पृथ्वी, ब्राह्मण, और देवताओं का भला करने के लिए ही मनुष्य शरीर धारण किया है ।

जन रंजन भंजन खल ब्राता ।
बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ।।

⊗ रंजन=सुख देने वाले, ब्राता=नाश करने वाले, रच्छक=रक्षक ।

★ हे भाई ! सुनिये, वे सबको आनन्द प्रदान करने वाले, दुष्टों के समूह का विनाश करने वाले और वेद तथा धर्म की रक्षा करने वाले हैं ।

* विभीषण भगवान के अवतार के मुख्य लक्ष्य रावण को याद दिला रहे हैं ।

ताहि बयरु तजि नाइय माथा ।
प्रनतारित भंजन रघुनाथा ।।

⊗ प्रनतारित(प्रण+आर्त)=शरण में आने वाले की दीनता ।

★ उनसे शत्रुता को छोड़कर उन्हें मस्तक नवाना चाहिए । वे श्रीरामजी शरणागत का दुःख नष्ट करने वाले हैं ।

* प्रभु मनुष्यों द्वारा होने वाली भूलों का क्रम रोक देना चाहते हैं । दण्ड अपमान आदि के भय से लोग भूलों को छुपाये और अपने से चिपकाये रहते हैं । भगवान के सामने जो सच्चे मन से समर्पण कर देते हैं उनके सम्मान आदि की रक्षा वह कर देते हैं ।

सुमति कुमति सब के उर रहहीं ।
नाथ पुरान निगम अस कहहीं ।।

⊗ सुमति=सुबुद्धि, कुमति=कुबुद्धि, पुरान=पुराण, निगम=वेद ।

★ हे नाथ ! पुराण और वेद में ऐसा कहा है कि अच्छी बुद्धि और खोटी बुद्धि सबके हृदय में रहती है ।

* मनुष्य में दोनों प्रकार के विचार रहते हैं अतः बुरे विचारों की काट तथा अच्छों को बढ़ावा देकर के ही व्यक्ति सही मार्ग पर चल सकता है ।

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ।
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ।।

⊗ निदाना=परिणाम ।

★ जहाँ सुमति है, वहाँ अनेक प्रकार के सुख साधन रहते हैं और जहाँ कुबुद्धि है, वहाँ परिणाम में दुःख रहते हैं ।

* हमारी भली या बुरी स्थिति के लिए जिम्मेदार और कोई नहीं हमारी सुबुद्धि या कुबुद्धि ही है।

तब उर कुमति बसी बिपरीता ।
हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ।।

⊗ विपरीता=उलटी ।

★ (विभीषण जी रावण से कहते हैं) आपके अन्दर कुमति का निवास हो जाने से आपका मन उल्टा चल रहा है, इससे आप भलाई को बुराई और मित्र को शत्रु समझ रहे हैं ।

* रावण को झूठी चापलूसी अच्छी लग रही थी और विभीषण की नेक सलाह उल्टी लग रही थी । कुबुद्धि के कारण मनुष्य का दृष्टिकोण ही गलत हो जाता है और वह स्वयं अपनी हानि करने लगता है ।

तात चरन गहि माँगऊँ,
राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहुँ,
अहित न होइ तुम्हार ।।

⊗ दुलार=स्नेह, मोर=मेरा ।

★ (विभीषण जी कहते हैं) हे भाई ! मैं चरण पकड़ कर आप से भीख माँगता हूँ (विनती करता हूँ) कि आप मेरा स्नेह रखिये (मुझ बालक के आग्रह को स्नेह पूर्वक स्वीकार कीजिए) श्रीरामजी को सीताजी दे दीजिए; जिसमें आपका बुरा न हो ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* विभीषण ने देखा कि रावण की बुद्धि उचित अनुचित नहीं समझ पा रही है, इसलिए अपने व्यक्तिगत स्नेह को दाँव पर लगाकर रावण की सद्भावना उभारने का प्रयास करने लगा ।

बुध पुरान श्रुति सम्मत बानी ।
कही बिभीषन नीति बखानी ।।

★ **विभीषण जी ने विद्वानों, पुराणों और वेदों द्वारा अनुमोदित वाणी से नीति वर्णन करके कही ।**

* सच्चा सलाहकार वही है जो विद्वानों तथा शास्त्रों द्वारा बताये सिद्धान्तों का निचोड़ निकाल कर सलाह दे सके ।

सुनत दसानन उठा रिसाई ।
खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ।।

★ **पर उसे सुनते ही रावण क्रोधित हो उठा और कहने लगा कि रे दुष्ट! अब मृत्यु तेरे पास आ गई है ।**

* रावण अपने अहंकार के विपरीत बात सुनकर उत्तेजित होकर कहने वाले का अहित करने पर तुल जाता है । इसी भय से सभासद उसे सही सलाह नहीं देते थे । हर अहंकारी इसी प्रकार अपना अहित कर लेता है ।

मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती ।
सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ।।

⊗ तपसिन्ह=तपस्वियों पर (राम-लक्ष्मण पर), तिन्हहि=उन्हीं को ।

★ **(रावण कहता है—) मेरे नगर में रहकर तपस्वियों से स्नेह करता है । मूर्ख ! उन्हीं से जा मिल और उन्हीं को नीति बता ।**

* दुर्बुद्धि के कारण सुबुद्धि बताने वाले को हम अपने सामने उपस्थित तक नहीं रहने देना चाहते ।

अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा ।
अनुज गहे पद बारहिं बारा ।।

⊗ प्रहारा=चोट, अनुज=छोटा भाई (विभीषण) ।

★ **ऐसा कहकर रावण ने उन्हें लात से मारा । परन्तु छोटे भाई विभीषण ने (मारने पर भी) बार-बार उसके पैर ही पकड़े, अर्थात् नम्रतापूर्वक समझाने का प्रयास किया ।**

* विभीषण ने रावण के हित की दृष्टि से अपना अपमान सहकर भी उसे समझाने का हर सम्भव प्रयास किया ।

उमा सन्त कइ इहइ बड़ाई ।
मंद करत जो करइ भलाई ।।

★ **(शिवजी कहते हैं) हे पार्वती ! संत की यही महिमा है कि वे बुराई करने पर भी (बुराई करने वाले की) भलाई ही करते हैं ।**

* संतों में जन साधारण की तरह बुरा करने वाले के प्रति बदले की भावना नहीं होती । वे उसकी भी बुराई दूर करना चाहते हैं ।

तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहिं मारा ।
राम भजे हित नाथ तुम्हारा ।।

★ **(विभीषण ने कहा) आप मेरे पिता के तुल्य हैं, मुझे मारा सो तो अच्छा ही किया, लेकिन हे नाथ ! आपका कल्याण श्रीरामजी के भजन में ही है ।**

* बड़ों द्वारा अनुचित दबाव डालने पर छोटों को यही चाहिए कि उनके अधिकार का सम्मान करते हुए भी सही बात का विनम्र किन्तु सबल आग्रह करता रहे ।

सचिव संग लै नभ पथ गयऊ ।
सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ।।

★ **(जब रावण किसी भी प्रकार न माना तो) विभीषण मंत्रियों को अपने संग लेकर आकाश मार्ग में गये और सबको सुनाकर ऐसा कहने लगे ।**

* मजबूर होकर विभीषण को रावण से सम्बन्ध तोड़ना पड़ा ।

राम सत्य संकल्प प्रभु,
सभा कालबस तोरि ।
मैं रघुबीर सरन अब,
जाउँ देहु जनि खोरि ।।

⊗ खोरि=दोष।

★ **श्रीरामजी सत्य संकल्प और सर्व समर्थ हैं और (हे रावण) तुम्हारी सभा काल के वशीभूत है । अतः मैं अब श्री रघुवीर की शरण में जाता हूँ । मुझे दोष मत देना ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* बड़ा भाई जो समझाने पर भी खोटा मार्ग नहीं छोड़े तो उससे सम्बन्ध त्याग ही देना चाहिए। अपने सही पक्ष की सार्वजनिक घोषणा भी कर देनी उचित है।

साधु अबग्या तुरत भवानी।
करि कल्यान अखिल कै हानी॥

★ **(शिवजी कहते हैं) हे भवानी ! साधु का अपमान शीघ्र ही सम्पूर्ण कल्याण को नष्ट कर देता है।**

* मनुष्य अज्ञानवश ऐसी भूल कर बैठते हैं जो अपने सारे पुरुषार्थ पर पानी फेर दे। सच्चे संत ऐसे समय पर उन्हें सचेत करते हैं। उनकी सलाह न मानने वाला हानि में पड़ ही जाता है।

रावन जबहि बिभीषन त्यागा।
भयउ बिभव बिनु तबहि अभागा॥

⊗ बिभव (वैभव)=ऐश्वर्य, अभागा=भाग्यहीन।

★ **रावण ने जिस क्षण विभीषण को त्याग दिया, उसी क्षण वह भाग्यहीन ऐश्वर्य से रहित हो गया।**

* (१) वैभव की रक्षा विवेक से होती है पर रावण ने विवेक खो दिया। (२) विभीषण जैसा शुभचिंतक शत्रु के हाथ में चला जाना दुर्भाग्य ही है।

कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा।
जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा॥

★ **बन्दरों ने विभीषण को आते हुए देखा तो उन्होंने समझा कि शत्रु का कोई मुख्य दूत है।**

* श्रीराम के समर्थक पूर्ण सतर्क रहते हैं, रहना चाहिए भी।

ताहि राखि कपीस पहिं आए।
समाचार सब ताहि सुनाए॥

★ **उन्हें (पहरे पर) ठहराकर वे सुग्रीव के पास आये और उनको सारा संदेश कह सुनाया।**

कह सुग्रीव सुनहु रघुराई।
आवा मिलन दसानन भाई॥

★ **श्री सुग्रीव ने (श्रीराम के पास जाकर) कहा—हे श्रीरामजी सुनिये, रावण का भाई (आपसे) मिलने के लिए आया है।**

जानि न जाय निसाचर माया।
कामरूप केहि कारन आया॥

⊗ काम रूप=इच्छानुसार रूप बदलने वाला (छली)।

★ **वानर राज सुग्रीव ने कहा— हे श्रीरामजी सुनिये, राक्षसों की माया समझ में नहीं आती। यह इच्छानुसार रूप बदलने वाला न जाने किस कारण आया है।**

* सुग्रीव ने शत्रु पर विश्वास न करने की नीति के अनुसार सावधानी बरती और अपना मत व्यक्त किया।

सखा नीति तुम नीकि बिचारी।
मम पन सरनागत भयहारी॥

⊗ नीकि=अच्छी, पन=प्रण।

★ **(श्रीरामजी ने कहा—) हे मित्र ! तुमने नीति तो अच्छी सोची। परन्तु मेरा प्रण तो है शरणागत के भय को दूर कर देना।**

* भगवान के अनुसार राजनीति ही सब कुछ नहीं। शत्रु पक्ष का व्यक्ति भी यदि शरण में आ जाय तो उसके मानवीय अधिकारों की रक्षा होनी चाहिए।

पापवन्त कर सहज सुभाऊ।
भजन मोर तेहि भाव न काऊ॥

⊗ पापवन्त=पापी।

★ **पापी का यह सहज स्वभाव होता है कि उसे मेरा भजन कभी अच्छा नहीं लगता।**

* विभीषण कपटी है या नहीं— भगवान राम इसकी कसौटी बता रहे हैं।

जौ पै दुष्ट हृदय सोइ होई।
मोरे सनमुख आव कि सोई॥

★ **यदि वह (रावण का भाई) निश्चय ही दुष्ट हृदय वाला होता तो क्या वह मेरे सामने आ सकता था?**

* बनावट दुनिया में चल सकती है आत्मा और परमात्मा के सामने भेद खुल जाता है। अत: कपटी व्यक्ति दिखावा चाहे जितना करे, भगवान से दूर ही रहना चाहता है, जबकि विभीषण का आग्रह भगवान से ही मिलने का था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निर्मल मन जन सो मोहि पावा ।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा ।।

★ **जो मनुष्य निर्मल मन का होगा वही मुझे प्राप्त करता है । मुझे कपट और छल छिद्र अच्छा नहीं लगता ।**

* भगवान भक्त का वेष नहीं अंत:करण देखते हैं— अत: उन्हें पाने के लिये उन्हीं की पसन्द का अपने को बनाने का प्रयास करना चाहिये ।

भेद लेन पठवा दससीसा ।
तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ।।

★ **यदि उसे रावण ने भेद लेने के लिए भेजा है, तब भी हे सुग्रीव ! अपने को तनिक भी भय नहीं है । (क्योंकि)**

* श्रीरामजी का तात्पर्य है कि उनके पास विभीषण को लाने में कोई भय नहीं, वहाँ तो उसका सही परीक्षण हो जायेगा ।

जग महुँ सखा निसाचार जेते ।
लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ।।

⊗ जेते=जितने, हनइ =मार सकना, तेते=उनको, निमिष = क्षण ।

★ **क्योंकि हे मित्र! संसार में जितने भी राक्षस हैं, लक्ष्मण पल भर में उन सबको मार सकता है ।**

* (१) लक्ष्मण जी यह तुरंत समझ लेते हैं कि श्रीराम को कौन किस दृष्टि से देख रहा है । (२) लक्ष्मण जी की सामर्थ्य का स्मरण दिलाकर श्रीराम ने वानरों की शंका निर्मूल कर दी ।

सादर तेहि आगे करि बानर ।
चले जहाँ रघुपति करुनाकर ।।

★ **भगवान की आज्ञा पाकर विभीषण जी को आदर के साथ आगे करके वानर फिर वहाँ चले, जहाँ दया सागर श्रीरामजी थे ।**

* अपनी शंका के कारण ही किसी का निरादर नहीं करने लग जाना चाहिए ।

नयन नीर पुलकित अति गाता ।
मन धरि धीर कही मृदु बाता ।।

⊗ मृदु बार्ता=कोमल वचन ।

★ **भगवान के स्वरूप को देखकर विभीषणजी की आँखों में (प्रेम) जल भर आया और शरीर में रोमाँच हो उठा, किन्तु मन में धैर्य धारण करके उन्होंने कोमल वचन कहे ।**

* विभीषण का प्रभु के प्रति सच्चा प्रेम भाव फूट पड़ा, किन्तु भावों की अधिकता में बहे नहीं-वाणी का संतुलन भी रखा ।

नाथ दसानन कर मैं भ्राता ।
निसिचर बंस जनम सुरत्राता ।।

★ **हे नाथ! मैं रावण का भाई हूँ । हे देवों के रक्षक! मेरा जन्म राक्षस वंश में हुआ है ।**

* कपटी अपना कमजोर पक्ष छिपाता है । जबकि शरणागत अपनी लाचारी पहले प्रकट करता है ।

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ,
प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन,
सरन सुखद रघुबीर ।।

⊗ भव=संसार, भीर=भय, त्राहि=रक्षा कीजिये, आरति =दु:ख से बेहाल ।

★ **मैं कानों से आपकी सुकीर्ति सुनकर आया हूँ कि प्रभु संसार भय का नाश करने वाले हैं । हे दुखियों के दु:ख दूर करने वाले और शरणागत को सुख देने वाले श्रीराम ! मेरी रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए ।**

* विभीषण ने न अपना रूप छिपाया न अन्तरिक भाव । अपनी इच्छा भर प्रकट की, अपना निर्णय थोपने का प्रयास नहीं किया ।

अस कहिं करत दंडवत देखा ।
तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ।।

★ **प्रभु ने ऐसा कहकर दण्डवत् करते हुए देखा तो वे बहुत ही प्रसन्न हुए और शीघ्र ही उठे ।**

* उसकी भावना, वाणी तथा क्रिया तीनों से भगवान उसे परखते रहे । वह सब ठीक प्रकार प्रसन्न हुए तथा सहायता के लिए बढ़े ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी ।
बोले बचन भगत भय हारी ।।

⊗ ढिग=पास ।

★ **छोटे भाई लक्ष्मण जी सहित गले मिलकर उनको अपने निकट बैठाकर श्रीरामजी भक्तों के भय को दूर करने वाली वाणी बोले ।**

* विभीषण जैसे निर्मल भाव से पहुँचा वैसी ही आत्मीयता भगवान ने भी उन्हें दी । भगवान अपने पास आने वाले को निर्भयता देते हैं ।

कहु लंकेस सहित परिवारा ।
कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ।।

⊗ कुठाहर (कुठाँव)=बुरे स्थान ।

★ **हे लंकेश ! (विभीषण) परिवार सहित अपनी कुशल कहो । तुम्हारा निवास बुरे स्थान पर है ।**

* लंका में भौतिक साधन एवं सुविधाओं की कमी नहीं थी, फिर भी उसे कुठांव कहा गया, क्योंकि वहाँ कुटिल लोग रहते थे ।

खल मंडली बसहु दिन राती ।
सखा धरम निबहइ केहि भाँती ।।

★ **दिनरात दुष्टों के समूह में रहते हो (ऐसी दशा में) हे सखे ! तुम्हारा धर्म किस प्रकार से निभता है ?**

* दुष्टों के बीच रहते हुए धर्म की रक्षा करना बड़ा कठिन होता है । अतएव इनके संग को छोड़कर निवास करना चाहिए ।

मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती ।
अति नय निपुन न भाव अनीती ।।

⊗ नय=नीति, निपुन (निपुण)=कुशल ।

★ **मैं तुम्हारी रीति (आचार-व्यवहार) समझता हूँ । तुम अपनी नीति में कुशल हो, तुम्हें अनीति अच्छी नहीं लगती है ।**

* दृढ़ संकल्पवान भले मनुष्य अपना धर्म दुष्टों के बीच में रहते हुए भी सुरक्षित रख लेते हैं ।

बरु भल बास नरक कर ताता ।
दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ।।

⊗ बरु=भले ही, भल=अच्छा ।

★ **हे तात ! नरक में रहना अच्छा है, लेकिन विधाता दुष्ट का साथ कभी न दें ।**

* अपने कर्मानुसार नरक के कष्ट की सीमा है, किन्तु दुष्ट व्यक्ति के संग से तो मनुष्यों के सत्कर्म भी नष्ट होने लगते हैं और बेहिसाब कष्ट होता है ।

तब लगि कुसल न जीव कहुँ,
सपनेहुँ मन बिश्राम ।
जब लगि भजत न राम कहुँ,
सोक धाम तजि काम ।।

⊗ बिश्राम=शान्ति, काम=विषय वासना ।

★ **विभीषण कहने लगे कि प्रभु तब तक जीव कुशल नहीं है और न स्वप्न में भी उसके मन को शान्ति है, जब तक वह शोक के घर विषय वासना को छोड़कर श्रीरामजी को नहीं भजता ।**

* मनुष्य के उत्थान पतन अथवा सुख-दुःख के लिए उत्तरदायी उसकी बाहरी परिस्थितियाँ नहीं, आन्तरिक स्थिति है । विभीषण जी उसी की व्याख्या कर रहे हैं ।

तब लगि हृदयँ बसत खल नाना ।
लोभ मोह मत्सर मद नाना ।।

★ **लोभ, मोह, डाह, मद और घमण्ड अनेक दुष्ट तभी तक हृदय में रहते हैं । (जब तक श्रीरामजी हृदय में नहीं बसते) ।**

* भगवान ने कहा था कि तुम खल मंडली में रहकर धर्म कैसे निभाते हो? विभीषण जी ने धर्म से गिराने वाले असली खलों का उल्लेख किया । बाहरी खलों को महत्व न दिया, यह उनके आध्यात्मिक स्तर का प्रभाव था ।

ममता तरुन तमी अँधिआरी ।
राग द्वेष उलूक सुखकारी ।।

⊗ तरुन=पूर्ण, तमी=रात, उलूक=उल्लू ।

★ **मोह पूर्ण अंधेरी रात है, जो राग द्वेष रूपी उल्लू समुदाय को सुख देने वाली है ।**

* मनुष्य के अन्दर रागद्वेष आदि दोष मोह की स्थिति में ही पनपते हैं— और परिणामस्वरूप दुःख और पतन की स्थिति पैदा होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तब लगि बसति जीव मन माहीं ।
जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ।।

⊗ प्रताप=पराक्रम, रवि=सूर्य ।

★ **(उपर्युक्त दोष दुर्गुण) तभी तक जीव के मन में निवास करते हैं, जब तक प्रभु का पराक्रम रूपी सूर्य नहीं निकलता है ।**

* परमात्मा का प्रताप अर्थात् ज्ञान का उदय होते ही मन के भीतर का मोह नष्ट हो जाता है ।

अब मैं कुसल मिटे भय भारे ।
देखि राम पद कमल तुम्हारे ।।

★ **हे श्रीरामजी ! आपके चरण कमल के दर्शन करके अब मैं कुशल हूँ मेरे भयंकर भय दूर हो गये ।**

* मनुष्य के अकल्याण का कारण भगवान के नियमों से विपरीत चलना ही है । चरणों के दर्शन का अर्थ चरण-चिन्हों अर्थात् सही दिशा का अनुसरण करना है ।

तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला ।
ताहि न व्याप त्रिबिध भव सूला ।।

⊗ ब्याप (ब्यापते)=असर करते, त्रिविध भव सूला=तीन प्रकार के सांसारिक कष्ट (आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ताप)।

★ **हे दयालु ! आप जिस पर अनुकूल हो जाते हैं उस पर तीनों प्रकार के कष्ट असर नहीं करते ।**

* भगवान की अनुकूलता का अर्थ है जो उनकी निर्धारित मर्यादाओं का पालन करता है ।

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ ।
जान भुसुंडि शंभु गिरिजाऊ ।।

⊗ भुसुंडि=काकभुशुण्डि, गिरिजाऊ=पार्वती भी ।

★ **(श्रीरामजी ने कहा—) हे मित्र ! सुनो मैं तुम्हें अपना स्वभाव कहता हूँ, जिसे काकभुशुण्डि शिवजी और पार्वती जी भी समझते हैं ।**

* भगवान का स्वभाव समझने में हम लोग बार-बार भूल करते हैं, इसीलिए गलत आचार करके उनके प्रेम का लाभ नहीं ले पाते ।

तजि मद मोह कपट छल नाना ।
करउँ सद्य तेहि साधु समाना ।।

⊗ सद्य=शीघ्र ।

★ **जो व्यक्ति मद, मोह, छल-कपट आदि दोषों को त्याग देता है, मैं उसे बहुत शीघ्र सन्त के समान बना देता हूँ ।**

* (१) इन दोषों से चिपका रहने वाला व्यक्ति सन्त नहीं बन सकता । (२) इन्हें हटाने का प्रयास हम स्वयं करें तभी भगवान सहायता करते हैं ।

जननी जनक बन्धु सुत दारा ।
तनु धन, भवन सुहृद् परिवारा ।।

⊗ दारा=स्त्री, सुहृद=मित्र ।

★ **माता, पिता, पुत्र, भाई, पुत्री, पत्नी, शरीर, धन, घर मित्र और परिवार ।**

* संसार में रहते हुए भी भगवान का प्रेम पाने के लिए क्या करना चाहिए यह इस प्रसंग में बताया जा रहा है ।

सब कै ममता ताग बटोरी ।
मम पद मनहिं बाँधि बरि डोरी ।।

⊗ ताग =धागों, बटोरी=बटोरकर, बरि=बटकर ।

★ **इन सबके प्रति ममता रूपी धागों को एकत्रित करके और उन सबकी एक डोरी बटकर उसके द्वारा जो अपने मन को मेरे चरण में बाँध लेता है अर्थात् सारे सांसारिक सम्बन्धों का केन्द्र मुझे बना लेता है ।**

* किसी भी व्यक्ति के प्रति अपना प्रेम उसकी विशेषता के कारण पनपता है । हर व्यक्ति इस विशेषता को भगवान का ही प्रकाश माने इससे हमारा प्रेम अलग-अलग व्यक्तियों के प्रति होते हुए भी एक भगवान् के ही प्रति दृढ़ होगा ।

समदर्शी इच्छा कछु नाहीं ।
हरष सोक भय नहिं मन माहीं ।।

★ **जो समान देखने वाला है, जिसे कुछ भी इच्छा नहीं है और जिसके मन में हर्ष शोक और भय नहीं है ।**

* समदर्शी पक्षपात रहित व्यक्ति को कहते हैं । हर्ष, शोक तथा भय के प्रसंग जिसका सन्तुलन न बिगाड़ सकें वह व्यक्ति उनसे परे माना जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अस सज्जन मम उर बस कैसे ।
लोभी हृदयँ बसइ धन जैसे ।।

★ **ऐसा सज्जन मेरे हृदय में कैसे निवास करता है, जैसे लोभी के हृदय में धन बसा रहता है ।**

* उपर्युक्त प्रकार के साधक जितने अधिक मिलें भगवान उतने ही अधिक प्रसन्न रहते हैं, उन्हें सदा अपनी निकटता दिये रहते हैं ।

तुम्ह सारिखे सन्त प्रिय मोरें ।
धरउँ देह नहिं आन निहोरें ।।

⊗ सारिखे=जैसे, निहोरे=कृतज्ञतावश ।

★ **तुम समान सन्त ही मुझे प्रिय हैं । मैं और किसी के कृतज्ञता वश देह धारण नहीं करता ।**

* ऐसे सज्जनों का और भगवान का कार्य एक ही होता है— अत: भगवान उनकी सहायता हर प्रकार करने को तैयार रहते हैं ।

सगुन उपासक परहित,
निरत नीति दृढ़ नेम ।
ते नर प्रान समान मम,
जिन्ह के द्विज पद प्रेम ।।

⊗ निरत=लगे रहते, नेम=नियम, द्विज=ब्राह्मण ।

★ **जो साकार भगवान की उपासना करने वाले हैं, दूसरे के भले में लगे रहते हैं, नीति और नियमों में दृढ़ हैं और जिन्हें ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम है, ऐसे मनुष्य मुझे प्राणों के समान लगते हैं ।**

* (१) यहाँ सगुण उपासक का अर्थ है विश्व को भगवान का विराट रूप मानकर सेवा करने वाले (२) द्विज पद प्रेम से मतलब है परमार्थ परायण श्रेष्ठ जनों के चरण चिन्हों पर चलना ।

सुनु लंकेस सकल गुन तोरे ।
ताते तुम अतिशय प्रिय मोरे ।।

★ **हे लंकापति! सुनो, तुम में ऊपर कहे हुए सब गुण हैं । इससे तुम मुझे बहुत ही प्रिय हो ।**

* भगवान मनुष्य के गुणों को परखते हैं — बाहरी रूप को नहीं, हीन से हीन (राक्षस) कुल का कहलाने पर भी विभीषण को उन्होंने प्रेम दिया ।

सुनत बिभीषण प्रभु कै बानी ।
नहिं अघात श्रवनामृत जानी ।।

⊗ नहिं अघात=तृप्त नहीं होते, श्रवनामृत=कानों के लिए अमृत ।

★ **प्रभु की वाणी सुनते हैं और उसे कानों के लिए अमृत समझकर विभीषण जी अघाते नहीं हैं ।**

* अपने को सही दिशा में बढ़ने की प्रेरणा देने वाले शब्द अमृत कहे जाते हैं, ऐसी चर्चा में सच्चे सन्तों की रुचि होती है, अत: वे उसे अधिक मात्रा में ग्रहण करके लाभ उठा लेते हैं ।

सुनु कपीस लंकापति बीरा ।
केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ।।

⊗ बीरा=वीर, तरिअ=पार किया, जलधि=समुद्र गंभीरा= गहरे ।

★ **फिर भगवान राम बोले— हे वीर वानरराज सुग्रीव और लंकापति विभीषण ! इस गहरे समुद्र को किस विधि से पार किया जावे ।**

* महत्वपूर्ण कार्य करने के पूर्व अपने सहयोगियों की सलाह लेने से उन्हें आत्म-गौरव का बोध होता है, और कार्य अधिक प्रामाणिक बन जाता है ।

कह लंकेस सुनहु रघुनायक ।
कोटि सिन्धु सोषक तब सायक ।।

⊗ सोषक=सोखने वाला, सायक =बाण ।

★ **विभीषण जी ने कहा— हे ! श्रीरामजी ! सुनिये, यद्यपि आपका बाण ही करोड़ों समुद्रों को सोख सकता है ।**

जद्यपि तदपि नीति अस गाई ।
बिनय करिअ सागर सन जाई ।।

★ **तथापि नीति ऐसा कहती है (उचित यह होगा) कि (पहले) जाकर समुद्र से प्रार्थना की जावे ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* सामर्थ्यवान, शक्ति सम्पन्न होते हुए भी छोटे की मर्यादा रखने के लिए उसका सम्मान करना चाहिए ।

सखा कही तुम्ह नीक उपाई ।
करिअ दैव जौं होइ सहाई ।।

★ (श्रीरामजी ने कहा)— हे मित्र तुमने उचित विधि बताई है, यदि दैव सहायक हो जायें तो ऐसा ही करना उचित है ।

* जड़ समुद्र के साथ विभीषण की विधि सफल होगी इसमें संदेह था— अत: भगवान ने उनका मन रखते हुए संदेहात्मक शब्द ही कहे ।

मन्त्र न यह लछिमन मन भावा ।
राम बचन सुनि अति दुख पावा ।।

⊗ मन्त्र=सलाह ।

★ यह सलाह लक्ष्मणजी के मन को अच्छी नहीं लगी । श्रीरामजी के वचन सुनकर तो उन्होंने अत्यन्त दु:ख पाया ।

* लक्ष्मण शौर्य के मूर्तिमान प्रतीक हैं, अव्यवहारिक बात पर श्रीराम का समर्थन भी उन्हें भाया नहीं और उन्होंने अपना मत आगे प्रकट भी कर दिया ।

नाथ दैव कर कवन भरोसा ।
सोषिअ सिंधु करिअ मन रोषा ।।

⊗ सोषिअ=सुखा डालिये, रोषा=क्रोध ।

★ (लक्ष्मणजी ने कहा) हे नाथ ! दैव का कौन भरोसा ? मन में क्रोध करिये और समुद्र को सुखा दीजिए ।

* (१) दैव का आश्रय न लेकर अपने पुरुषार्थ का प्रयोग करने को तैयार रहना चाहिये (२) सत् कार्य में कोई बाधक बने तो रोषपूर्वक उसे मार्ग से हटा देना भी उचित है ।

कादर मन कहुँ एक अधारा ।
दैव दैव आलसी पुकारा ।।

⊗ कादर=(कायर)=डरपोक, अधारा=आधार (बहाना) ।

★ यह दैव तो कायर के मन की तसल्ली देने का उपाय है । आलसी लोग ही दैव-दैव कहा करते हैं ।

* आलसी व्यक्ति भाग्य के भरोसे रहते हैं । पुरुषार्थी कर्म करते हुए अपने भाग्य का निर्माण कर लेता है ।

सुनत बिहँसि बोले रघुबीरा ।
ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ।।

★ यह सुनकर श्रीरामजी मुस्कराकर बोले— ऐसे ही करेंगे, मन में धैर्य धारण करो ।

* (१) लक्ष्मण के उचित प्रतिवाद से भगवान प्रसन्न ही हुए रुष्ट नहीं (२) शक्ति प्रयोग आवश्यक हो तो भी समय के पूर्व नहीं करना चाहिये अत: उचित समय तक धैर्य रखने का संकेत लक्ष्मणजी को दिया ।

प्रथम प्रनाम कीन्ह सिर नाई ।
बैठे पुनि तट दर्भ डंसाई ।।

⊗ दर्भ=कुश, डसाई=बिछाकर ।

★ उन्होंने पहले (समुद्र को) सिर झुकाकर प्रणाम किया । फिर किनारे पर कुश बिछाकर बैठ गये ।

बिनय न मानत जलधि जड़,
गए तीन दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब,
भय बिन होइ न प्रीति ।।

★ इस प्रकार तीन दिन बीत गये, परन्तु जड़ समुद्र ने विनय नहीं मानी । तब तो श्रीराम जी क्रोध के साथ बोले— बिना भय के प्रेम नहीं होता है ।

* जड़ बुद्धि अर्थात् अविकसित बुद्धि वाले सज्जनता के आग्रह बहुत बार नहीं समझते, तो उन्हें भय दिखाकर सही रास्ते पर लाना उचित है ।

लछिमन बान सरासन आनू ।
सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ।।

⊗ बारिधि=समुद्र, आनू=लाओ, बिसिख=वाण, कृसानू (कृशानू)=अग्नि ।

★ हे लक्ष्मण ! धनुष-बाण लाओ, मैं अग्नि बाण से समुद्र को सोख डालूँ ।

* एक ही नीति सब जगह सफल नहीं होती अत: आवश्यकतानुसार उसे बदलते रहना चाहिए । भगवान आगे वैसे ही प्रसंगों का विवरण दे रहे हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती ।
सहज कृपन सन सुन्दर नीती ।।

★ दुष्ट के साथ विनय, कपटी के साथ प्रेम, स्वाभाविक ही कंजूस को उदारता का उपदेश—

* दुष्ट व्यक्ति नम्रता को सामने वाले का गुण नहीं बल्कि दब्बूपन मानता है । कपटी व्यक्ति प्रेम में भी चालबाजी सोचता है । कंजूस उदारता सिखाने वाले को ठग मानता है ।

ममता रत सन ग्यान कहानी ।
अति लोभी सन बिरति बखानी ।।

★ मोह में फँसे हुए मनुष्य से ज्ञान की कथा और बहुत लोभी से वैराग्य का वर्णन ।

* (१) मोह के कारण विवेक नष्ट हो जाता है अत: ज्ञान समझ में नहीं आता । (२) लोभ व्यक्ति को अन्धा बना देता है, वैराग्य दूरदर्शिता का चिन्ह है, अत: दोनों का तालमेल नहीं बैठता ।

क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा ।
ऊसर बीज बएं फल जथा ।।

⊗ ऊसर=अनुपजाऊ, बएं=बोने, जथा (यथा)=जैसा ।

★ क्रोधी से शान्ति की बात और कामी से भगवान की कथा— इनका सबका वैसा ही फल होता है जैसा अनुपजाऊ भूमि में बीज बोने से होता है ।

* क्रोध का लक्षण है असंतुलन और शान्ति का है संतुलन, कामी नई-नई आकांक्षा करता है, हरि कथा में आकांक्षा त्याग की बात होती है । अत: उक्त सभी प्रयास बीज की तरह कीमती होने पर भी अव्यवहारिक हैं ।

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा ।
यह मत लछिमन के मन भावा ।।

★ ऐसा कहकर श्रीरामजी ने धनुष चढ़ा लिया । यह मत लक्ष्मणजी के मन को बहुत ही ठीक लगा ।

* जब परिस्थितियाँ ऐसी हों कि सामान्य नीति से काम न चले तो दूसरे ढंग से कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व स्थिति का स्पष्टीकरण दे देना चाहिए । इससे देखने वालों को भ्रम नहीं रहता ।

संधानेउ प्रभु बिसिख कराला ।
उठी उदधि उर अन्तर ज्वाला ।।

⊗ संधानेउ=संधान किया (निशाना साधा), उदधि=समद्र ।

★ प्रभु ने भयंकर अग्नि बाण खींचकर निशाना साधा, इतने से ही समुद्र के हृदय में अग्नि की ज्वाला उठी ।

* मूर्ख लोग समर्थ व्यक्ति की नम्रता को दुर्बलता मानकर उनकी उपेक्षा करते हैं, पर शक्ति प्रयोग की तैयारी देखकर घबड़ा जाते हैं ।

कनक थार भरि मनि गन नाना ।
बिप्र रूप आयउ तजि माना ।।

⊗ थार=थाल, माना=अभिमान ।

★ तब सोने के थाल में अनेक मणियों को भर करके घमण्ड छोड़कर वह ब्राह्मण के रूप में आया ।

काटेहिं पइ कदरी फरइ,
कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेश सुनु,
डाटेहिं पइ नव नीच ।।

⊗ पइ=पर ही, कदरी=केला, फरइ=फलता है, डाटेहिं=डाँटने नव=झुकना ।

★ (काकभुशुण्डजी कहते हैं)— हे गरुड़ जी ! सुनिये चाहे करोड़ों उपाय करके पानी सींचते रहें, पर केला तो काटने पर ही फलता है । इसी प्रकार नीच विनम्रता से नहीं मानता है, वह डाँटने पर ही झुकता है ।

* नीच व्यक्ति को सही रास्ते पर लाने के ढंग सज्जनों से भिन्न होते हैं ।

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे ।
छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ।।

★ समुद्र ने भयभीत होकर प्रभु के चरण पकड़ करके कहा— हे नाथ ! मेरे सारे अवगुणों को क्षमा कीजिए ।

गगन समीर अनल जल धरनी ।
इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ गगन=आकाश, अनल=आग ।

★ हे नाथ ! आकाश, हवा, आग, जल तथा धरती—इन सबकी करनी स्वभाव से ही जड़ है ।

* (१) समुद्र ने अपनी जड़ता (मूर्खता) स्वीकार कर ली (२) पाचों तत्व भौतिक जड़ता के प्रीतक हैं । चेतन तत्व इनसे भिन्न हैं ।

प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्हीं ।
मर्यादा पुनि तुम्हरी कीन्हीं ।।

★ प्रभु ने ठीक किया जो मुझे शिक्षा (दण्ड) दी, किन्तु मर्यादा भी आपकी ही बनाई हुई है ।

* अपनी भूल दूर करने के लिये कोई व्यक्ति हम पर कड़ाई करे तो उसका उपकार ही मानना चाहिए । किन्तु अपनी इज्जत बनी रहे इसके लिए उससे आग्रह किया भी जा सकता है ।

प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई ।
उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ।।

⊗ सुखाई=सूख जाऊँगा, कटकु=सेना, बड़ाई=बड़प्पन (यहाँ मर्यादा) ।

★ प्रभु के प्रताप से मैं सूख जाऊँगा और सेना पार उतर जायेगी किन्तु इसमें मेरी मर्यादा नहीं रहेगी ।

* किसी का बड़प्पन बना भी रहे— परन्तु वह सत्कार्य में बाधक न बने ऐसा मार्ग खोजना चाहिए ।

सुनत बिनीत बचन अति,
कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु,
तात सो कहहु उपाइ ।।

★ समुद्र के अत्यन्त विनय के वचन सुनकर दयालु श्रीरामजी ने मुस्कराते हुए कहा— हे तात् ! जिस प्रकार बन्दरों की सेना पार उतर जावे, वह उपाय बताओ ।

* श्रेष्ठ पुरुषों का उद्देश्य अपना कार्य पूरा करना होता है, किसी का अपमान करना नहीं । वे मध्यमार्ग स्वीकार करने को सदा तैयार रहते हैं ।

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई ।
लरिकाईं रिषि आसिष पाई ।।

★ (समुद्र ने कहा) हे श्रीराम ! नील और नल दो वानर भाई हैं । उन्होंने बचपन में ऋषि से आशीर्वाद पाया था ।

* ऋषि ज्ञान विज्ञान के विशेषज्ञ होते थे, सत्पात्रों को वह ज्ञान दान दिया करते थे, सच्चे अर्थों में यही उनका आशीर्वाद कहा जाता है ।

तिन्ह के परस किए गिरि भारे ।
तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ।।

⊗ परस=स्पर्श, तरहहिं=तैर जावेंगे ।

★ उनके (नल नील के) स्पर्श कर लेने से ही भारी-भारी पहाड़ भी आपके प्रताप से समुद्र में तैर जावेंगे ।

* हाथ लगाना मुहावरा है, जैसे कुशल व्यक्ति का हाथ लगते ही काम बन जाता है ।

मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई ।
करिहउँ बल अनुमान सहाई ।।

★ मैं भी प्रभु के प्रभाव को हृदय में धारण करे अपनी शक्ति के अनुसार (जहाँ तक मुझसे बन पड़ेगा) सहायता करूँगा ।

* महान कार्य से सहायता करने में सभी अपना गौरव मानते हैं ।

एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ ।
जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ।।

★ हे प्रभु ! इस प्रकार समुद्र पर पुल बनाइये ताकि तीनों लोक में आपकी सुन्दर कीर्ति गाई जाय ।

* सत्कार्यों के साथ यश अवश्य जुड़ा रहता है ।

सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा ।
चरन बंदि पाथोधि सिधावा ।।

⊗ पाथोधि=समुद्र, सिधावा=चला गया ।

★ भगवान को पुल बनाने की सारी क्रिया, विधि बताकर फिर चरणों में प्रणाम करके समुद्र चला गया ।

जामवन्त बोले दोउ भाई ।
नल नीलहि सब कथा सुनाई ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

★ जामवन्त ने नल नील दोनों भ्राताओं को बुलाकर उन्हें सम्पूर्ण कथा कह सुनाई ।

* कुशल सहायक विधि मिलते ही तुरन्त कार्य प्रारम्भ कर देते हैं ।

राम प्रताप सुमिरि मन माहीं ।
करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ।।

★ (और कहा) मन में श्रीरामजी के प्रताप का स्मरण करके सेतु तैयार करो कुछ भी श्रम नहीं होगा ।

* जो लोग भगवान के प्रति समर्पण की भावना से कार्य करते हैं उन्हें काम की थकान नहीं आती ।

धावहु मर्कट बिकट बरूथा ।
आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा ।।

★ असाधारण बन्दरों के झुण्ड (आप) दौड़ जाइये और वृक्षों तथा पर्वतों के समूहों को उखाड़ लाइये ।

* भगवान के कार्य के लिए अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को भुलाकर आगे आने वाले व्यक्ति असाधारण ही होते हैं ।

सुनि कपि भालु चले कर हूहा ।
जय रघुबीर प्रताप समूहा ।।

★ यह सुनकर वानर और भालू हुँकार करके और श्रीरामजी के प्रताप समूह की जय उच्चारण करते हुए चल पड़े ।

अति उतंग गिरि पादप,
लीलहिं लेहिं उठाइ ।
आनि देहिं नल नीलहिं,
रचहिं ते सेतु बनाइ ।।

⊗ उतंग=उंचे, पादप=वृक्ष, लीलहिं=खेल की तरह ।

★ बहुत ऊँचे-ऊँचे पर्वतों और वृक्षों को खेल-खेल में उखाड़ लेते हैं और ला-ला करके नल नील को देते हैं । वे अच्छी तरह गढ़कर सेतु को तैयार करते हैं ।

* जो कार्य जन साधारण को असंभव से लगते हैं, उन्हें प्रभु समर्पित व्यक्ति खेल-खेल में ही कर डालते हैं ।

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा ।
देखि कृपानिधि के मन भावा ।।

⊗ सेतु=पुल, सुदृढ़=मजबूत ।

★ वानरों ने पुल बहुत सुदृढ़ बनाया, दया के सागर श्रीरामजी के मन को बहुत पसंद आया ।

* कुशल व्यक्ति कार्य को तेजी से सुन्दरता तथा मजबूती के साथ पूरा करते हैं ।

सेन सहित उतरे रघुबीरा ।
कहि न जाइ कपि जूथप भीरा ।।

★ श्रीरामजी सेना के साथ सागर के पार उतर गये । वानरों और उनके सेनापतियों की भीड़ कही नहीं जा सकती ।

मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो ।
कौतुकहीं पाथोधि बँधायो ।।

★ (जब) मन्दोदरी ने सुना कि प्रभु श्रीरामजी इस पार आ गये हैं और उन्होंने खेल में ही सागर को बाँध लिया है ।

सजल नयन कह जुग कर जोरी ।
सुनहु प्रानपति बिनती मोरी ।।

★ नेत्रों में जल भर के दोनों हाथ जोड़कर वह रावण से कहने लगी— हे स्वामी ! मेरी विनय सुनिए ।

* मन्दोदरी रावण की अर्धांगिनी के नाते उसे सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने लगी ।

बिस्वरूप रघुवंस मनि,
करहु बचन बिस्वासु ।
लोक कल्पना बेद कर,
अंग-अंग प्रति जासु ।।

⊗ बिस्वरूप=संसार का स्वरूप, मनि=मणि ।

★ मेरे इन वचनों पर विश्वास कीजिए कि वे रघुवंश के शिरोमणि श्रीरामजी विश्वरूप है (यह सारा विश्व ही उन्हीं का रूप है) वेद जिनके अंग-अंग में लोकों की कल्पना करते हैं ।

* भगवान का साकार रूप विराट विश्वरूप ही है, व्यक्ति रूप नहीं । मन्दोदरी उसी विराट रूप का वर्णन करने लगी है ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पद पाताल सीस अज धामा ।
अपर लोक अंग-अंग विश्रामा ।।

⊗ अज=ब्रह्म, धामा=लोक, अपर=अन्य ।

★ **पाताल (जन विश्वरूप भगवान का) पैर है ब्रह्म-लोक मस्तक में तथा अन्य (बीच के सब) लोकों का विश्राम (स्थिति) जिनके अन्य भिन्न-भिन्न अंगों के रूप में है ।**

* ईश्वर सभी लोकों में फैला हुआ है और शक्ति दे रहा है ।

भृकुटि बिलास भयंकर काला ।
नयन दिवाकर कच घन माला ।।

⊗ भृकुटि=भौंहें, दिवाकर=सूर्य , कच=बाल ।

★ **भयंकर मृत्यु जिनका भौंहें संचालन है । सूर्य नेत्र हैं । बादलों का झुंड बाल हैं ।**

* प्रकृति की जड़ समझे जाने वाली वस्तुओं में भी वह परमात्मा का अंश विराजमान है ।

जासु घ्रान अस्विनी कुमारा ।
निसि अरु दिवस निमेष अपारा ।।

⊗ घ्रान=नासिका, निमेष=पलक ।

★ **अश्विनी कुमार जिनकी नाक है, रात और दिन जिनके अनन्त निमेष (पलक) मारना और खोलना है ।**

श्रवन दिसा दस बेद बखानी ।
मारुत स्वास निगम निज बानी ।।

⊗ मारुत=वायु, स्वास-श्वाँस, निगम=वेद ।

★ **दसों दिशाऐं कान हैं, वायु श्वाँस है और वेद जिनकी अपनी बाणी है, ऐसा विद्वानों का मत है ।**

अधर लोभ जम दसन कराला ।
माया हास बाहु दिगपाला ।।

⊗ अधर=होठ, जम (यम)=यमराज, दसन=दाँत, कराला=भयानक, दिगपाला=दिक्पाल ।

★ **लोभ जिनका होठ है यमराज भयंकर दाँत हैं । माया हँसी है, दिक्पाल भुजाऐं हैं ।**

आनन अनल अम्बुपति जीहा ।
उतपति पालन प्रलय समीहा ।।

⊗ आनन=मुख, अनल=अग्नि, अम्बुपति=जलका स्वामी (वरुण), जीहा=जीभ, समीहा=चेष्टा (क्रिया) ।

★ **जिनका अग्नि मुँह है, वरुण जीभ है, उत्पत्ति, पालन और प्रलय जिसकी क्रियाएँ हैं ।**

रोम राजि अष्टादस भारा ।
अस्थि सैल सरिता नस जारा ।।

⊗ रोम=शरीर के रोंये, राजि=वनस्पतियाँ, अष्टादस-अठारह, भारी=अगणित, सैल=(शैल)-पर्वत, सरिता=नदी, जारा=जाल ।

★ **अठारह प्रकार की अगणित वनस्पतियाँ जिनकी रोमावली है, पर्वत हड्डियाँ हैं, नदियाँ नसों का जाल है ।**

उदर उदधि अधगो जातना ।
जगमय प्रभु का बहु कलपना ।।

⊗ उदर=पेट, अधगो=नीचे की इन्द्रियाँ, जातना-(यातना) = नरक, बहु =अधिक ।

★ **समुद्र उनका पेट है और नरक जिनकी नीचे की इन्द्रियाँ हैं । इस प्रकार वह परमात्मा संसार में भरा पड़ा है, उसकी और अधिक कल्पना क्या की जाय?**

अहंकार सिब बुद्धि अज,
मन ससि चित्त महान ।
मनुज बास सचराचर,
रूप राम भगवान ।।

⊗ अज=ब्रह्मा, मनुज=मनुष्य ।

★ **शिव जिनका अहंकार हैं, ब्रह्मा बुद्धि हैं, चन्द्रमा मन है और महान् (विष्णु) ही चित्त है । उन्हीं चल-अचल के रूप में प्रभु श्रीरामजी ने मनुष्य में निवास किया है ।**

* (१) मन बुद्धि चित्त अहंकार ईश्वर के चेतना स्थल हैं । (२) मनुज-बास का अर्थ है ईश्वर दिव्य चेतना के रूप में मनुष्य में निवास करता है, वही अवतार कहलाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अस बिचारि सुनु प्रानपति,
प्रभु सन बयरु बिहाइ ।
प्रीति करहु रघुबीर पद,
मम अहिबात न जाइ ।।

⊗ बिहाइ=छोड़कर, अहिबात=सुहाग ।

★ **(मन्दोदरी कहती है) हे प्राणपति रावण ! सुनिये, ऐसा विचार करके भगवान से बैर छोड़ करके श्रीरामजी के चरणों में प्रेम कीजिए, जिससे मेरा सुहाग न जाये ।**

* प्रकृति के चल-अचल सभी रूप में जब वह परमात्मा है संसार में श्रेष्ठ प्रवृत्तियों से विरोध ईश्वर का विरोधी ही है । ऐसा अपराधी व्यक्ति दुनिया में टिक नहीं पाता ।

बिहँसा नारि बचन सुनि काना ।
अहो मोह महिमा बलवाना ।।

★ **पत्नी की वाणी कानों से सुनकर रावण खूब हँसा (और बोला) अहो ! मोह (अज्ञान) की महिमा बड़ी शक्तिशाली है ।**

* अज्ञानग्रस्त व्यक्ति ठीक सलाह देने वालों को ही अज्ञानी कह कर उनका उपहास करने लगता है ।

रिपु कर रूप सकल तैं गावा ।
अति बिसाल भय मोहि सुनावा ।।

★ **रावण मन्दोदरी से बोला— तूने शत्रु के रूप का विस्तार से वर्णन किया और मुझे उसका बड़ा भारी डर सुनाया ।**

सो सब प्रिया सहज बस मोरें ।
समुझि परा प्रसाद अब तोरें ।।

★ **हे प्रिया जिन रूपों में तूने शत्रु का विस्तार बताया (देवता, नदी, पर्वत आदि) वे सब मेरे वश में हैं । अपनी यह महत्ता तो मुझे अब तेरे कारण समझ में आयी ।**

* अहंकारी व्यक्ति हर बात को अपने अहंकार की तुष्टि में ही ले जाता है । लेकिन इस प्रकार गलत कल्पना से तथ्य तो नहीं बदलते और हानि उठानी पड़ती है ।

मन्दोदरि मन महुँ अस ठयऊ ।
पियहिं काल बस मतिभ्रम भयऊ ।।

⊗ ठयऊ=निश्चय कर लिया, मतिभ्रम=भ्रष्ट बुद्धि ।

★ **मन्दोदरी ने मन में ऐसा निश्चय किया कि मृत्यु वश पति की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है ।**

* मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाना उसके विनाश का ही चिन्ह है ।

इहाँ प्रात जागे रघुराई ।
पूछा मत सब सचिब बोलाई ।।

★ **यहाँ प्रातःकाल श्रीरामजी जागे और उन्होंने सब मन्त्रियों को बुलाकर राय पूछी ।**

* श्रेष्ठ व्यक्ति सबकी सलाह से चलते हैं । रावण ने दी हुई सलाह की भी उपेक्षा की और राम स्वयं सलाह पूछने लगे ।

कहहु बेगि का करिअ उपाई ।
जामवन्त कह पद सिर नाई ।।

★ **शीघ्र बताइये, अब कौन-सा उपाय करना चाहिए ? जामवन्त ने श्रीरामजी के चरणों में सिर झुकाकर कहा—**

सुनु सर्बग्य सकल उर बासी ।
बुधिबल तेज धर्म गुन रासी ।।

⊗ रासी (राशि)=खान ।

★ **हे सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाले) ! हे सबके हृदय में निवास करने वाले ! हे बुद्धि, शक्ति, तेज, धर्म और गुणों की खान ! सुनिये ।**

* श्रेष्ठ व्यक्ति यदि मर्यादावश हमसे कुछ पूछे तो अहंकार वश उसे अपने से कम जानकार न मान बैठें । उसकी श्रेष्ठता का स्मरण करके उसी स्तर का उत्तर देने का प्रयास करें ।

मन्त्र कहउँ निज मति अनुसारा ।
दूत पठाइअ बालि कुमारा ।।

⊗ पठाइअ=भेजा जाय, बालि कुमारा=बालि कुमार अंगद ।

★ **मैं अपनी बुद्धि के अनुसार सलाह देता हूँ कि अंगद को दूत बनाकर भेजा जाय ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* युद्ध की स्थिति हो तो पहले समझदार दूत द्वारा समझौते का प्रयास किया जाना चाहिये ।

नीक मन्त्र सबके मन माना ।
अंगद सन कह कृपानिधाना ।।

★ यह अच्छी सलाह सबके मन को ठीक लगी । दया के लिए श्रीराम जी ने अंगद से कहा ।

* अच्छी सलाह किसी के भी द्वारा दी गई हो उसे तत्काल एकमत से स्वीकार कर लेना चाहिए । यह नीति की बात है ।

बालि तनय बुधि बल गुन धामा ।
लंका जाहु तात मम कामा ।।

★ हे बल बुद्धि और गुणों की खान बालिपुत्र ! हे तात ! तुम मेरे काम के लिए लंका जाओ ।

* सेवक से तिरस्कार पूर्वक न बोलें । उसके गुणों का स्मरण कराने और प्रोत्साहन देने का कार्य एक साथ करने की कुशलता होनी चाहिए ।

बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहऊँ ।
परम चतुर मैं जानत अहऊँ ।।

⊗ चतुर=होशियार ।

★ तुम को बहुत समझाकर क्या कहूँ, मैं समझता हूँ, तुम बहुत ही चतुर हो ।

* समझदार से अधिक नहीं कहना पड़ता— वह इशारे से ही समझ जाता है ।

काज हमार तासु हित होई ।
रिपु सन करेहु बतकही सोई ।।

⊗ तासू =उसका, बतकही=बातचीत, सोई=वही।

★ शत्रु से वही बातचीत करना जिससे हमारा काम पूरा हो और उसका भी भला हो ।

* सामान्य व्यक्ति केवल अपना काम पूरा करने की बात सोचते हैं, पर श्रेष्ठ समझदार व्यक्ति दोनों पक्षों के हित का प्रयास करते हैं ।

बन्दि चरन उर धरि प्रभुताई ।
अंगद चलेउ सबहि सिर नाई ।।

★ चरणों में प्रणाम करके और भगवान की प्रभुता हृदय में धारण करके अंगद सबको मस्तक झुकाकर चले।

* अपनी, शक्ति सामर्थ्य के साथ अपने स्वामी (भगवान) की महत्ता का स्मरण रखने वाला सफलता का अधिकारी बनता है ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय-१०

शंखेन्द्वाभमतीव सुन्दर
तनुं शार्दूलचर्माम्बरं ।
काल व्याल कराल
भूषणधर गंगाशशाकंप्रियम् ।।
काशीशं कलि कल्मषौघ
शमनं कल्याण कल्पद्रुमं ।
नौमीढंग्यं गिरिजापतिं गुण
निधिं कन्दर्पहं शंकरम् ।।

⊗ शार्दूल=सिंह, व्याल=सर्प, शशांक=चन्द्रमा अघशमनम्=पापों के नाशक, कन्दर्पहं=कामदेव ।

★ शंख और चन्द्रमा की आभा वाले, अति सुन्दर शरीर युक्त, सिंह की खाल एवं काल के समान सर्पों के आभूषण पहनने वाले, गंगा और चन्द्रमा के प्रेमी काशीपति, कलियुग के पाप समूहों का शमन करने वाले कल्याण रूपी कल्पवृक्ष, गुणों की खान, कामदेव को जला देने वाले, पार्वती पति श्रीशंकर जी की वन्दना करता हूँ ।

* श्वेत आभा का अर्थ है निर्विकार, दुनिया के लिये जो कालरूपी भयंकर है, वह सर्प भी शिवजी के लिए आभूषण अर्थात् उपयोगी बन जाते हैं । गंगा, ज्ञानधारा, तथा चन्द्र, मानसिक शान्ति एवं सन्तुलन का प्रतीक है ।

जथा मत्त गज जूथ महुँ,
पंचानंन चलि जाइ ।
रामप्रताप सुमिरि मन,
बैठ सभाँ सिर नाइ ।।

⊗ जथा=जैसे, मत्त=मतवाले, गज=हाथी, पंचानन=सिंह ।

★ जैसे मतवाले हाथियों के समूह में सिंह (नि:शंक होकर) चला जाता है वैसे ही अंगद श्रीरामजी के प्रताप को हृदय में धारण करके (निडर होकर सभा) में अभिवादन कर बैठ गये ।

* भगवान पर भरोसा रखने वाला उनके कार्य के लिए कठिन परिस्थितियों में भी निर्भय रहता है ।

कह दसकण्ठ कवन तैं बन्दर ।
मैं रघुबीर दूत दसकन्धर ।।

★ रावण ने कहा— अरे वानर ! तू कौन है? (अंगद ने कहा) हे रावण! मैं रघुवीर का दूत हूँ ।

* रावण के शब्दों में राक्षसी अहंकार है जबकि अंगदजी के शब्दों में दृढ़ता के साथ सज्जनोचित मिठास है ।

मम जनकहि तोहि रही मिताई ।
तब हित कारन आयउँ भाई ।।

⊗ जनकहिं=पिता से, मिताई=मित्रता ।

★ मेरे पिता और तुम में मित्रता थी । इसलिए हे भाई ! मैं तुम्हारे भले के लिए ही आया हूँ ।

* शत्रु हो या अन्य उससे बात-चीत का प्रारम्भ उसके हित की कामना प्रकट करते हुए करना चाहिए । इससे सामने वाले का मन अपने पक्ष में हो जाता है ।

उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती ।
सिब बिरंचि पूजेहु बहु भाँती ।।

⊗ पुलस्ति=पुलस्त्य ऋषि, नाती=पौत्र, बिरंचि=ब्रह्मा ।

★ तुम्हारा कुल उत्तम है, पुलस्त्य ऋषि के तुम पौत्र हो । शिवजी और ब्रह्माजी की तुमने अनेक प्रकार से पूजा की है ।

* जिसे सन्मार्ग पर लाना हो, उसके द्वारा किए गये श्रेष्ठ कार्यों का स्मरण दिलाकर उसकी अच्छाई उभारनी चाहिए ।

नृप अभिमान मोह बस किंबा ।
हरि आनेहु सीता जगदम्बा ।।

⊗ किंबा=या, हरि आनेहु=हर लाये हो ।

★ राजा के गर्व से या मोह के वश तुम जगत् माता सीताजी का हरण कर ले आये हो ।

* राज-मद (अधिकार के घमंड) अथवा मोह बुद्धि के कारण लोग अनीति करने लगते हैं ।

अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा ।
सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ अब तुम मेरी हितकारी सलाह सुनो ! (उसके अनुसार चलने से) भगवान श्रीरामजी तुम्हारे समस्त अपराधों को क्षमा कर देंगे ।

* क्षमा का उद्देश्य सुधार का अवसर देना तथा उसके लिये प्रोत्साहन देना होता है ।

दसन गहहु तृन कंठ कुठारी ।
परिजन सहित संग निज नारी ।।

⊗ दसन (दशन)=दाँत, कुठारी=कुल्हाड़ी, परिजन=कुटुम्बी ।

★ दाँतों में तिनका दबाकर, गले में कुल्हाड़ी डालकर और कुटुम्बी-जनों के साथ अपनी स्त्रियों को साथ लेकर ।

* अपनी भूल मानकर दीनता प्रकट करने के लिए यह सब क्रम अपनाने की परिपाटी उस समय थी ।

सादर जनकसुता करि आगें ।
एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागें ।।

★ आदरपूर्वक सीताजी को आगे करके, इस प्रकार घमंड छोड़कर श्रीरामजी के पास चलो ।

* अपनी भूल का पश्चात्ताप ही शत्रुता मिटा सकता है । अंगदजी वही मार्ग रावण को बताने लगे ।

रे कपि पोत बोलु संभारी ।
मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ।।

⊗ पोत=बच्चे, सुरारी=देवताओं का शत्रु ।

★ (रावण ने क्रोध से कहा) अरे वानर के बच्चे । संभलकर बोल । मूर्ख ! मुझ देवताओं के शत्रु को तूने समझा नहीं ?

* अहंकारी रावण दीन बनकर शत्रु के सामने जाने की सलाह सहन नहीं कर सका । उत्तेजित हो उठा । उत्तेजना आसुरी स्वभाव है ।

तेहि रावन कहँ लघु कहसि,
नर कर करसि बखान ।
रे कपि बर्बर खर्ब खल,
अब जाना तब ग्यान ।।

⊗ नर=मनुष्य, बर्बर=दुष्ट, खर्ब=असभ्य, खल=तुच्छ ।

★ उस (महान् प्रतापी और जगत् प्रसिद्ध) रावण को (मुझे) तू छोटा कहता है और मनुष्य की प्रशंसा करता है । अरे दुष्ट, असभ्य, तुच्छ वानर ! अब मैंने तेरा ज्ञान समझ लिया ।

* उत्तेजना में रावण लोक मर्यादा भूल गया । स्वयं अपने मुख से अपनी प्रशंसा तथा दूत से अपशब्द कहना अनुचित होते हुए भी वही सब कहने लगा ।

सुनि अंगद सकोप कह बानी ।
बोलु सँभारि अधम अभिमानी ।।

★ रावण की बात सुनकर अंगद क्रोध पूर्वक वचन बोले— अरे पापी अभिमानी ! सँभलकर (सोच-समझ कर) बोल ।

* यदि कोई अपनी नम्रता को कमजोरी समझकर शेखी बघारने लगे तो उसे रोष सहित अपने पक्ष की शक्ति का आभास करा देना चाहिए ।

अब जनि बतबढ़ाव खल करहीं ।
सुनु मम बचन मान परिहरही ।।

⊗ बतबढ़ाव=बात बढ़ाना ।

★ अरे दुष्ट ! अब बात मत बढ़ा, मेरी वाणी सुन और अभिमान छोड़ दे ।

* अभिमान छोड़े बिना किसी की सही सलाह समझी नहीं जा सकती ।

दसमुख मैं न बसीठीं आयउँ ।
अस बिचारि रघुबीर पठायउँ ।।

⊗ बसीठीं=दूत की तरह (सन्धि करने) ।

★ हे रावण ! मैं दूत के समान (सन्धि करने)नहीं आया हूँ । श्रीरामजी ने ऐसा सोचकर मुझे भेजा है—

बार बार अस कहिइ कृपाला ।
नहिं गजारि जसु बधें सृकाला ।।

⊗ गजारि (हाथी का शत्रु)=सिंह, जसु=यश, सृकाला (शृंगाल)=स्यार ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

★ दया के सागर श्रीरामजी बार-बार ऐसा कहते हैं कि स्यार को मारने से सिंह को कीर्ति नहीं मिलती ।

* बड़ा व्यक्ति छोटे को दबाकर उसे हानि पहुँचा दे, उसमें बड़े व्यक्ति का कोई बड़प्पन नहीं ।

मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे ।
सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे ।।

★ अरे मूर्ख ! भगवान के (उन) वचनों को मन में याद करके ही मैंने तेरे कटु वचन सहन किये हैं ।

नाहिं त करि मुख भंजन तोरा ।
लै जातेउँ सीतहि बरजोरा ।।

⊗ भंजन=तोड़कर, तोरा=तेरा, बरजोरा=जबरन ।

★ नहीं तो तेरे मुख को तोड़ करके मैं सीताजी को जबरन ले जाता ।

* अंगद रावण की शेखीखोरी का मुँहतोड़ उत्तर देने लगे ।

जानेउँ तब बल अधम सुरारी ।
सूनें हरि आनिहि परनारी ।।

★ अरे पापी ! देवताओं के शत्रु ! तेरी शक्ति तो मैंने तभी समझ ली, जब तू सूने में पराई स्त्री का हरण कर लाया ।

* रावण चोर की तरह सीताजी को लाया था, यह दुर्बलता का चिन्ह है । अनीति करने वाले को इसी प्रकार अपमानित होना पड़ता है ।

जौं अस करौं तदपि न बड़ाई ।
मुएहि बधे नहिं कछु मनुसाई ।।

⊗ तदपि=तो भी, मुएहि=मरे हुए, मनुसाई=पुरुषत्व (बहादुरी) ।

★ यदि मैं ऐसा करूँ (रावण को मारकर सीताजी को ले जाऊँ) तो भी इसमें कोई बड़प्पन नहीं है । मरे हुए को मारने में कुछ भी बहादुरी नहीं है ।

* अंगद ने रावण जैसे बल और वैभव सम्पन्न को मरे हुए के समान क्यों माना इसका कारण आगे बताते हैं ।

कौल काम बस कृपिन बिमूढ़ा ।
अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ।।

⊗ कौल=वाममार्गी (गलत मार्ग पर चलने वाले) कामबस=कामुक, कृपिन (कृपण)=कंजूस, विमूढ़ा=अत्यन्त मूढ़, अजसी=(अयशी) बदनाम ।

★ वाममार्गी, कामुक, कंजूस, अत्यन्त मूर्ख, बहुत ही, दरिद्र, बदनाम, बहुत बूढ़ा व्यक्ति ।

* जिन व्यक्तियों का उल्लेख किया जा रहा यह सब जीवन का लाभ उठाने की स्थिति में नहीं रह जाते ।

सदा रोगबस सन्तत क्रोधी ।
बिष्नु बिमुख श्रुति सन्त बिरोधी ।।

⊗ सन्तत=निरन्तर ।

★ नित्य का रोगी, निरन्तर क्रोध युक्त रहने वाला, भगवान विष्णु से विमुख, वेद और सन्तों का विरोध करने वाला ।

तनु पोषक निंदक अघ खानी ।
जीवत शव सम चौदह प्रानी ।।

⊗ खानी=खान, शव=लाश ।

★ केवल अपने शरीर का ही पोषण करने वाला, और पाप की खान (महान् पापी)— ये चौदह प्राणी जीते हुए भी लाश के समान हैं ।

* जीवित शव सम— का अर्थ है जो जीवित दिखते भर हैं, पर जो अन्त:करण जिनका मर चुका है, अत: मानव जीवन का लाभ नहीं उठा सकते ।

अस बिचारि खल बधउँ न तोही ।
अब जनि रिस उपजावसि मोही ।।

⊗ उपजावसि=पैदा करना ।

★ अरे दुष्ट ! ऐसा सोच करके मैं तुझे नहीं मारता हूँ । अब तू मुझे क्रोध मत दिला ।

समुझि राम प्रताप कपि कोपा ।
सभा माझ पन करि पद रोपा ।।

⊗ माझ=मध्य, रोपा=स्थापित कर दिया ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ श्रीरामजी के प्रताप का स्मरण करके अंगद ने रोष किया और उन्होंने रावण की सभा के मध्य शपथ-पूर्वक अपना पैर जमा दिया ।

* भगवान की क्षमता का केवल जबानी बखान करने की अपेक्षा अंगद ने उसका प्रत्यक्ष प्रमाण भी देना उचित समझा और रावण को सहयोगियों सहित शक्ति परीक्षा की चुनौती दे दी ।

जौं मम चरन सकहिं सठ टारी ।
फिरहिं रामु सीता मैं हारी ।।

⊗ सकहिं=सके, टारी=हटा ।

★ (अंगद ने कहा) अरे मूर्ख ! यदि तू मेरा पैर हटा सके तो श्रीरामजी लौट जावेंगे, मैं सीताजी को हार जाऊँगा ।

* इतनी बड़ी बाजी अंगद इसलिये लगा सके कि भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण के कारण स्वयं भगवान की शक्ति उनके माध्यम से बोल रही थी । यह उनकी अनन्य निष्ठा का प्रमाण है ।

कोटिन्ह मेघनाद सम,
सुभट उठे हरषाइ ।
झपटहि टरै न कपि चरन,
पुनि बैठहिं सिरनाइ ।।

⊗ कोटिन्ह=करोड़ों, झपटहिं=झपटते हैं ।

★ करोड़ों वीर योद्धा जो शक्ति में मेघनाद के समान थे, प्रसन्न होकर उठे । वे बार-बार झपटते हैं, पर वानर का पैर नहीं उठता, तब लज्जा के मारे सिर झुकाकर बैठ जाते हैं ।

* सत्कर्म करने वाले ईश्वरनिष्ठ, सत् संकल्पशील व्यक्ति को दुष्कर्म करने वाले डिगा नहीं सकते ।

पुनि कपि कही नीति बिधि नाना ।
मान न ताहि कालु निअराना ।।

★ फिर अंगद ने विविध प्रकार से नीति कही । पर रावण ने नहीं माना, क्योंकि उसकी मृत्यु समीप आ गई थी ।

* सामने वाले की शक्ति की अधिकता का प्रमाण मिलने पर बहुधा लोगों का घमण्ड दूर हो जाता है और उपदेश समझने योग्य हो जाते हैं । किन्तु फिर भी जो न माने उसका अन्त निकट आया मानना चाहिए ।

रिपु मद मथि प्रभु सुजस सुनायो ।
यह कहि चल्यो बालि नृप जायो ।।

⊗ मद=गर्व, मथि=मन्थन करके (चूर करके) ।

★ शत्रु के घमण्ड को चूर करके अंगद ने उसको भगवान श्रीरामजी का सुयश सुनाया, फिर वह राजा बालि का पुत्र वहाँ से चल दिया ।

सांझ जानि दसकंधर,
भवन गयउ बिलखाइ ।
मन्दोदरी रावनहि,
बहुरि कहा समुझाइ ।।

★ सन्ध्या हो गई समझकर के रावण दुखी होकर महल में गया । मन्दोदरी ने रावण को समझा कर फिर कहा—

* व्यक्ति ऊपर से अपना कितना ही अहंकार दिखावे, किन्तु अपनी मूर्खतावश जो अपमान सहना पड़ता है उसकी चोट मन पर गहरी पड़ती है ।

अहह कन्त कृत राम बिरोधा ।
काल बिबस मन उपज न बोधा ।।

⊗ अहह=हा, कन्त=प्रियतम, बोधा=ज्ञान ।

★ मन्दोदरी बोली हे प्रियतम ! आपने श्रीरामजी से विरोध कर लिया और काल के वशीभूत होने से आपके मन में अब भी ज्ञान नहीं पैदा होता ।

* परमात्मा के प्रतिकूल चलने से तथा बुरे कर्म अधिक करने से ज्ञान नष्ट हो जाता है ।

काल दण्ड गहि काहु न मारा ।
हरइ धर्म बल बुद्धि बिचारा ।।

⊗ दण्ड=लाठी, काहु=किसको ।

★ काल लाठी लेकर किसी को नहीं मारता । यह जिसे नष्ट करता है उसके धर्म, शक्ति, बुद्धि और विचार को हर लेता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* धर्मबल, बुद्धि और विचार जिसके नष्ट हो जाते हैं वह अवश्य नष्ट हो जाता है ।

निकट काल जेहि आवत साईं ।
तेहिं भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं ।।

⊗ नाईं=निकट ।

★ **हे स्वामी! जिसकी मृत्यु समीप आ जाती है, उसे आपके समान भ्रम हो जाता है ।**

* मन्दोदरी बड़े साहस के साथ रावण को उसकी भूलें समझाने का प्रयास करने लगी । हर पत्नी को इस प्रकार अपने सत् कर्तव्य के लिये साहस रखना चाहिए ।

नारि बचन सुनि बिसिख समाना ।
सभाँ गयउ उठि होत बिहाना ।।

★ **स्त्री की बाण के समान वाणी सुनकर वह प्रातः होते ही उठकर सभा में चला गया ।**

* रावण को पत्नी के शब्द कड़वे लगे, पर तर्क सम्मत होने से वह उत्तर न दे सका । अनीति करने वाले को इसी प्रकार कडुवे घूँट पीने पड़ते हैं ।

रिपु के समाचार जब पाए ।
राम सचिब सब निकट बोलाए ।।

★ **जब अंगद द्वारा शत्रु के समाचार प्राप्त हो गये, तब श्रीरामजी ने समस्त मन्त्रियों को पास बुलाया ।**

लंका बाँके चारि दुआरा ।
केहि बिधि लागिअ करहु बिचारा ।।

⊗ बांके=विकट, दुआरा=दरवाजे, लागिअ=आक्रमण किया जाय ।

★ **(और कहा) लंका के चार बड़े विकट द्वार हैं । उन पर किस तरह आक्रमण किया जाय, इस पर विचार करो ।**

* परिस्थितियों को जानकर उनके अनुरूप ही योजना बनाकर कार्य करना चाहिए ।

कर बिचार तिन्ह मन्त्र दृढ़ावा ।
चारि अनी कपि कटकु बनावा ।।

⊗ मन्त्र=सलाह (निर्णय), दृढ़ावा=निश्चित किया, कटकु=सेना, अनी=दल ।

★ **(और) विचार करके उन्होंने पक्का निर्णय किया और वानरों की सेना के चार दल बनाये ।**

जथा जोग सेनापति कीन्हे ।
जूथप सकल बोलि तब लीन्हे ।।

⊗ जथा जोग (जथा योग्य)=जैसे चाहिए वैसे, जूथप=सेनापति, बोलि लीन्हें=बुला लिया ।

★ **और उनके लिए जैसे चाहिए वैसे सेनापति नियुक्त किये गये । फिर समस्त सेनापतियों को बुला लिया ।**

* नायकों को नीति समझाकर तब आक्रमण करने से परस्पर ताल-मेल बिठाकर कार्य अच्छी तरह होता है ।

प्रभु प्रताप कहि सब समुझाए ।
सुनि कपि सिंहनाद करि धाए ।।

★ **भगवान का प्रताप कह करके सबको समझाया, जिसे सुनकर बन्दर सिंह के समान गर्जना करके दौड़े ।**

* ईश्वर की महिमा को स्मरण करते ही मनुष्य में शक्ति का संचार हो जाता है ।

उत रावन इत राम दोहाई ।
जयति जयति जय परी लराई ।।

★ **उधर रावण की और इधर श्रीरामजी की दोहाई बोली जाने लगी । 'जय' 'जय' की ध्वनि होते ही युद्ध छिड़ गया ।**

निसिचर सिखर समूह ढहावहिं ।
कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं ।।

⊗ सिखर=शिलाखण्ड, ढहावहिं=फेंकते हैं, धरहिं=पकड़ लेते, फेरि=वापस ।

★ **राक्षस पहाड़ों के बहुत से शिखरों को फेंकते हैं । बन्दर कूँदकर उन्हें पकड़ लेते हैं तथा वापस उन्हीं की ओर चलाते हैं ।**

प्राबिट सरद पयोद घनेरे ।
लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ प्राविट=वर्षा, पयोद=बादल, घनेरे=बहुत से, लरत=लड़ रहे, प्रेरे=भेजे हुए ।

★ (राक्षस और वानर युद्ध करते हुए ऐसे जान पड़ते हैं) मानों क्रमशः वर्षा और शरद ऋतु के बहुत से मेघ पवन द्वारा भेजे हुए लड़ रहे हैं ।

अनिप अंकपन अरु अतिकाया ।
बिचलत सेन कीन्ह इन्ह माया ।।

⊗ अनिप=सेनापति, अंकपन=अविचलित, अतिकाया=अतिकाय (विशाल) ।

★ स्थिर और विशाल राक्षस सेनापतियों ने अपनी सेना को डिगते हुए देखकर माया की ।

* राक्षस प्रकृति वाले जब अपने को कमजोर पाते हैं तो छल कपट पर उतर आते हैं । उसके लिए भी तैयार रहना चाहिए ।

भयउ निमिष महुँ अति अंधियारा ।
बृष्टि होइ रुधिरोपल छारा ।।

⊗ रुधिरोपल (रुधिर-उपल), खून, पत्थर, छारा=राख ।

★ पल भर में बहुत ही घना अन्धकार हो गया । खून, पत्थर और राख की वृष्टि होने लगी ।

* अन्धेरे में राक्षस अधिक सक्रिय हो जाते हैं, इसलिए यह छल रचा गया ।

सकल मरमु रघुनायक जाना ।
लिए बोलि अंगद हनुमाना ।।

★ श्रीरामजी जब रहस्य समझ गये । उन्होंने अंगद और हनुमान को बुला लिया ।

* नायक को चाहिए कि परिस्थितियों की जानकरी रखे तथा उसके अनुरूप सेना को साधन और सहायता पहुँचाये ।

पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा ।
पावक सायक सपदि चलावा ।।

⊗ पावक=अग्नि, सायक=वाण, सपदि=शीघ्र ही ।

★ फिर दयालु श्रीरामजी ने हंसकर धनुष चढ़ाया और शीघ्र ही अग्नि वाण चला दिया ।

* धीर व्यक्ति शत्रुओं की चाल से घबराते नहीं, अपने पुरुषार्थ पर भरोसा करके उसकी चाल को काट देते हैं ।

भयउ प्रकास कतहुँ तम नाहीं ।
ग्यान उदय जिमि संसय जाहीं ।।

⊗ संसय=सन्देह, जाहीं=ढेर हो जाते ।

★ अग्निवाण से माया कट गयी और प्रकाश फैल गया कहीं अन्धकार नहीं रहा । जैसे ज्ञान के उदय होने से (सब प्रकार के) सन्देह दूर हो जाते हैं ।

* भ्रम सन्देह अन्धकार की स्थिति है क्योंकि समझ नहीं पड़ता ज्ञान प्रकाश रूप है जो भ्रम निवारण करके सही स्थिति प्रकट कर देता है ।

हनूमान अंगद रन गाजे ।
हाँक सुनत रजनीचर भाजे ।।

⊗ गाजे=गरज उठे, रजनीचर=राक्षस, भाजे=भागे ।

★ हनुमान और अंगद युद्ध में गरज उठे । उनकी हाँक सुनते ही राक्षस भाग गये ।

* इन दोनों योद्धाओं की शक्ति राक्षस पहले देख चुके थे, अतः उनसे भयभीत थे । राक्षस अपने छल के कारण सबल लगते हैं पर उसके मिटते ही उनका साहस टूटने लगता है ।

मेघनाद सुनि श्रवन अस,
गढ़ पुनि छेंका आइ ।
उतरयो बीर दुर्ग तें,
सनमुख चल्यो बजाइ ।।

⊗ छेंका=घेर लिया, दुर्ग=किला, बजाइ=डंका बजाकर ।

★ मेघनाद ने सुना कि बन्दरों ने आकर किले को घेर लिया है । तब वह वीर किले से उतरा और डंका बजाकर उनके सामने बढ़ लिया ।

आयसु मांगि राम पहिं,
अंगदादि कपि साथ ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ,
बान सरासन हाथ ।।

⊗ आयसु=आज्ञा, सरासन=धनुष ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ श्रीरामजी से आज्ञा मांगकर, अंगद आदि बन्दरों के साथ, हाथों में धनुष वाण लेकर श्री लक्ष्मणजी क्रोधित होकर चले ।

* मेघनाद युद्ध विद्या का विशेषज्ञ था । शस्त्रहीन रीछ-वानर उससे लड़ने के लिए पर्याप्त नहीं थे, अत: श्री लक्ष्मण जी ने मोर्चा संभाला ।

एकहि एक सकइ नहिं जीती ।
निसिचर छल बल करइ अनीती ।।

★ दोनों बराबरी के योद्धा युद्ध में एक-दूसरे को जीत नहीं पा रहे थे, राक्षस कपट की शक्ति तथा अधर्म करने लगे ।

* दुष्ट व्यक्ति छल और अधर्म से भी विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है । उनका यह सहज स्वभाव होता है ।

क्रोधवंत तब भयउ अनंता ।
भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता ।।

⊗ क्रोधवंत=क्रोधित, अनन्ता=लक्ष्मण, सारथी=रथ हाँकने वाला ।

★ तब लक्ष्मण जी क्रोधित हुए उन्होंने शीघ्र ही मेघनाद के रथ को तोड़ डाला और सारथी को भी मार डाला ।

* छल देखकर वीर पुरुषों को अधिक रोष आता है और वह अपने पुरुषार्थ से उसका प्रति उत्तर देने लगते हैं ।

नाना बिधि प्रहार करि सेषा ।
राच्छस भयउ प्रान अब सेषा ।।

⊗ सेषा=(शेष) शेष जी के अवतार लक्ष्मण जी, राच्छस= मेघनाद, शेष ।

★ शेषजी (लक्ष्मणजी) उस पर अनेक प्रकार से आघात करने लगे । उनकी चोटों से राक्षस के प्राण मात्र शेष रह गये ।

रावन सुत निज मन अनुमाना ।
संकट भयउ हरिहि मम प्राना ।।

★ रावण पुत्र मेघनाद ने मन में अनुमान लगाया कि अब तो प्राण संकट में आ पड़े, ये मेरे प्राण का हरण कर लेंगे ।

बीरघातिनी छाडिस साँगी ।
तेजपुंज लछिमन उर लागी ।।

⊗ बीरघातिनी=(वीर को नष्ट करने वाली), सांगी=शक्ति ।

★ तब उसने वीरघातिनी शक्ति को चलाया । वह तेज से भरी हुई शक्ति लक्ष्मणजी की छाती में जा लगी ।

मुरुछा भई सक्ति के लागे ।
तब चलि गयउ निकट भय त्यागे ।।

⊗ मुरुछा=बेहोशी ।

★ शक्ति के लगने से लक्ष्मण जी को मूर्च्छा आ गई, तब मेघनाद डर छोड़कर उनके पास चला गया ।

मेघनाद सम कोटि सत,
जोधा रहे उठाइ ।
जगदाधार सेष किमि,
उठे चले खिसिआइ ।।

⊗ सत=सौ, जगदाधार=जगत् के आधार, किमि=कैसे, खिसिआइ=लज्जित होकर ।

★ मेघनाद के समान सौ करोड़ योद्धा उन्हें उठाते हैं, लेकिन जगत् के आधार शेषजी (लक्ष्मणजी) उनसे कैसे उठते? तब वे लज्जित होकर चले गये ।

* दुर्जन कितने ही मिलकर एक सज्जन को नहीं मिटा सकते । क्योंकि सज्जन के पास सत्कर्मों की शक्ति रहती है ।

संध्या भई फिरी द्वौ बाहिनी ।
लगे सँभारन निज निज अनी ।।

⊗ बाहिनी=सेना, अनी =सेना ।

★ सन्ध्या होते ही दोनों ओर की सेनाएँ लौट पड़ीं सेना-पति अपनी सेनाओं को सम्हालने लगे ।

* यह नीति है कि हर युद्ध के बाद अपने सैनिकों की संभाल की जाय ।

व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर ।
लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ अजित=अजेय, भुवनेश्वर=सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के ईश्वर, बूझ=पूछा।

★ व्यापक ब्रह्म, अजेय, सभी ब्रह्माण्डों के स्वामी और दया की खान श्रीरामजी ने पूछा—लक्ष्मण कहाँ हैं ?

* सर्वज्ञ होते हुए भी श्रीरामजी ने पूछताछ की, क्योंकि अवतारी पुरुष, मनुष्य शरीर में होने के नाते यथा संभव इसकी मर्यादा में ही रहे ।

तब लगि लै आयउ हनुमाना ।
अनुज देखि प्रभु अति दुख माना ।।

★ तब तक हनुमानजी उन्हें लेकर आ गये । छोटे भाई को इस दशा में देखकर भगवान ने बहुत ही दु:ख माना ।

* यह भाई के प्रति प्रेम का प्रमाण है ।

जामवन्त कह वैद सुषेना ।
लंका रहइ को पठई लेना ।।

⊗ सुषेना=सुषेण नाम का वैद्य ।

★ जाम्बवन्त ने कहा— लंका में सुषेण नाम का वैद्य रहता है, उसे ले आने के लिए किसी को भेजा जावे ?

* अपने साथ उस क्षेत्र का जानकार अनुभवी व्यक्ति होने से समय पर बहुत मूल्यवान परामर्श मिल जाता है ।

धरि लघु रुप गयउ हनुमन्ता ।
आनेउ भवन समेत तुरन्ता ।।

★ हनुमानजी छोटा रूप धारण करके (छिपकर) वहाँ गये और सुषेण को उनके घर सहित शीघ्र ही उठा लाये ।

* वैद्य श्री लक्ष्मणजी को देखकर न जाने क्या औषधि आवश्यक समझें, इसलिये हनुमानजी उन्हें औषधालय सहित ले आये ।

राम पदारबिंद सिर, नायउ आइ सुषेन ।
कहा नाम गिरि औषधी, जाहु पवनसुत लेन ।।

⊗ पदारबिंद=चरण-कमल, औषधी=दवा ।

★ सुषेण ने आकर श्रीरामजी के चरण कमलों में प्रणाम किया । उसने पर्वत तथा औषधि का नाम बताया, (और कहा कि हे पवन पुत्र ! औषधि लेने के लिए जाओ ।)

* वैद्य का धर्म है कि शत्रु मित्र का भेद न रखते हुए सभी का उचित उपचार करे ।

राम चरन सरसिज उर राखी ।
चला प्रभंजन सुत बल भाषी ।।

⊗ प्रभंजन=पवन, भाषी=बखान कर ।

★ श्रीराम के चरण कमलों को हृदय में रखकर पवन पुत्र हनुमान जी अपनी शक्ति का वर्णन करके चल पड़े ।

* दिन भर युद्ध में थके हुए हनुमान जी समय पर इतनी दूर से औषधि ला सकेंगे इस पर लोगों को शक था, अत: उन्होंने अपनी शक्ति का बखान करके उन्हें विश्वास दिलाया ताकि वे लोग दु:खी और चिन्तित न हों ।

देखा सैल न औषधि चीन्हा ।
सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ।।

⊗ चीन्हा=पहिचाना, सहसा=एकदम, उपारि=उखाड़ लिया ।

★ उन्होंने पर्वत को देखा किन्तु औषधि न पहिचान सके । तब हनुमानजी ने एकाएक पर्वत को ही उखाड़ लिया ।

* समर्थ व्यक्ति शंका में काम बिगड़ने का अवसर नहीं देते । उसके लिए भले ही उन्हें अधिक श्रम करना पड़े उसे तुरंत कर डालते हैं ।

उहाँ राम लछिमनहि निहारी ।
बोले बचन मनुज अनुसारी ।।

⊗ निहारी=देखकर, अनुसारी=समान ।

★ वहाँ लक्ष्मण जी को देखकर श्रीरामजी सामान्य मनुष्य के समान बचन बोले—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* व्यक्ति में विशेषता होते हुए भी लोक शिक्षण के लिये उन्हें सामान्य लोगों के समान व्यवहार करना चाहिए । ताकि वे सामान्य जन उसके समीप आकर प्रेरणा ले सकें ।

अर्ध राति कई कपि नहिं आयउ ।
राम उठाइ अनुज उर लायउ ।।

★ आधी रात हो चुकी, हनुमान नहीं आये । यह कहकर श्रीरामजी ने छोटे भाई लक्ष्मण को उठाकर हृदय से लगा लिया ।

* श्रीरामजी ने लक्ष्मण के प्रति अपनी संवेदना को प्रकट होने दिया ।

सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ ।
बंधु सदा तब मृदुल सुभाऊ ।।

⊗ सकहु=सकते, काऊ=कभी ।

★ (और बोले) हे भाई ! तुम मुझे कभी कष्ट में नहीं देख सकते थे । तुम्हारा स्वभाव हमेशा से कोमल ही था ।

* (१) श्रीराम लक्ष्मण जी के गुणों का वर्णन करने लगे ताकि लोग गुणों का आदर करना सीखें (२) जो व्यक्ति स्वभाव से ही संवेदनाशील होते हैं वे अपनों को ही नहीं दूसरों को भी दुखी नहीं देखना चाहते हैं ।

मम हित लागि तजेउ पितु माता ।
सहेहु विपिन हिम आतप बाता ।।

⊗ विपिन=वन, हिम=ठंड, आतप=गरमी, बाता=हवा ।

★ हे भाई मेरे भले के लिए तुमने माता और पिता को भी छोड़ दिया और वन में ठंड, गरमी और हवा सब सहन किया ।

* यह सब लक्ष्मण जी ने अपने किसी स्वार्थवश नहीं किया था, बल्कि भाई श्रीराम को कष्ट न हो इसीलिए, प्रेमवश यह सब सहा था ।

सो अनुराग कहाँ अब भाई ।
उठहु न सुनि मम बच बिकलाई ।।

⊗ बच (वचन)=शब्द, बिकलाई=व्याकुलतापूर्ण ।

★ हे भाई ! वह प्रेम अब कहाँ है ? मेरे व्याकुलता से भरे वचन सुनकर के उठते क्यों नहीं हो ?

* अपना कोई प्रिय दुखी हो तो उसके दुख निवारण के लिए सच्चा सहयोगी निष्क्रिय नहीं रहता ।

जौं जनतेउँ बन बन्धु बिछोहू ।
पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू ।।

⊗ जनतेउँ=जानता, बिछोहू=बिछुड़ना, मनतेउँ=मानता ।

★ यदि मैं समझता कि वन में भाई का विछोह होगा तो मैं पिता का वचन (जिसका मानना मेरे लिए परम कर्तव्य था) उसे भी नहीं मानता ।

* श्रीरामजी को भाई की सुरक्षा के प्रति अपना उत्तरदायित्व अधिक प्रबलता से ध्यान में आने लगा । विछोह का प्रसंग प्रेम भाव को अधिक उभार देता है ।

जैहउँ अवध कवन मुहु लाई ।
नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई ।।

⊗ जैहउँ=जाउँगा ।

★ स्त्री के लिए प्यारे भाई को खोकर मैं कौन -सा मुँह लेकर अयोध्या जाऊँगा ?

* श्रीराम जानते हैं कि दुनिया यह नहीं समझेगी कि किसी उच्च लक्ष्य के लिए राम ने यह बाजी लगायी थी, लोग तो अपने ढंग से निर्णय करके लाँछने लगाने लगेंगे ।

निज जननी के एक कुमारा ।
तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ।।

★ हे भाई ! तुम अपनी माता के एक ही पुत्र हो और उसके प्राण के आधार हो ।

* सज्जन केवल अपने दुःख से ही दुःखी नहीं होते, उन्हें दूसरों के दुःख का स्मरण करके विशेष दुःख होता है ।

उतरु काह दैहउँ तेहि जाई ।
उठि किन मोहि सिखावहु भाई ।।

★ मैं अब जाकर उन्हें क्या उत्तर दूँगा? हे भाई ! तुम उठकर के मुझे समझाते क्यों नहीं हो?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* श्रेष्ठ व्यक्ति किसी के कहने से नहीं स्वयं ही अपने उत्तर दायित्वों के प्रति सजग रहते हैं ।

प्रभु प्रलाप सुनि कान,
बिकल भए बानर निकर ।
आइ गयउ हनुमान,
जिमि करुना महँ बीर रस ॥

⊗ निकर=समूह, प्रलाप=दु:ख भरे वचन ।

★ भगवान के दु:ख भरे वचन सुनकर के वानरों के समूह दु:खी हो गये । (इतने में ही) हनुमान जी आ गये जैसे करुण रस में वीर रस आ गया हो ।

* (१) भक्त होने के नाते वानरों मे भी संवेदना थी, इसको वह भी अपना दु:ख समझते थे (२) औषधि समय पर पहुँचने से सबको उत्साह आ गया दु:ख के स्थान पर वातावरण उत्साह भरा हो गया ।

हरषि राम भेटेउ हनुमाना ।
अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ॥

⊗ भेटेउ =गले लगकर मिले, सुजाना (सुजान)=व्यवहार कुशल ।

★ श्रीरामजी प्रसन्न होकर हनुमान जी से गले लगाकर मिले, भगवान परम व्यवहार कुशल और बहुत ही कृतज्ञ हैं ।

* सामाजिक जीवन में कृतज्ञता बड़ा भारी गुण है । समय पर कृतज्ञता प्रकट करने से अपनी श्रेष्ठता भी सिद्ध होती है और लोगों में परमार्थ करने का उत्साह बढ़ता है ।

तुरत बैद तब कीन्हि उपाई ।
उठि बैठे लछिमन हरषाई ॥

★ तब वैद्य (सुषेण) ने शीघ्र उपाय किया, (जिससे) लक्ष्मण जी प्रसन्न होकर उठ बैठे ।

* चिकित्सक को अपने कार्य में फुर्तीला होना चाहिए ।

हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता ।
हरषे सकल भालु कपि ब्राता ॥

⊗ ब्राता=समूह ।

★ भगवान भाई को हृदय से लगाकर मिले । भालू और बन्दरों के समूह प्रसन्न हो गये ।

* दूसरों को प्रसन्न देखकर प्रसन्नता अनुभव करना सन्तों का लक्षण है ।

पुनि कपि बैद तहाँ पहुँचावा ।
जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा ॥

★ फिर हनुमानजी ने वैद्य को उसी प्रकार वहाँ पहुँचा दिया, जिस विधि वे पहले उसे लाये थे ।

* अपना काम निकल जाने पर भी सज्जन व्यक्ति उपकारी के प्रति अपने कर्तव्य को भुलाते नहीं हैं ।

यह बृत्तांत दशानन सुनेऊ ।
अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ ॥

⊗ वृत्तान्त=समाचार, धुनेऊ=पीटा ।

★ यह समाचार जब रावण ने सुना कि लक्ष्मणजी उपचार से ठीक हो गये तो उसने बहुत ही शोकपूर्वक बार-बार मस्तक पीटा ।

* लक्ष्मण जी युद्ध में मेघनाद से सबल सिद्ध हुए थे, यह वह देख चुका था । वीरघातिनी शक्ति का उपयोग मेघनाद दुबारा नहीं कर सकता था, अत: रावण अनिष्ट की शंका से दु:खी हुआ ।

ब्याकुल कुम्भकरण पहिं आवा ।
बिबिध जतन करि ताहि जगावा ॥

★ वह व्याकुल होकर कुम्भकर्ण के पास गया और अनेक उपाय करके उसने उसको जगाया ।

* (१) अपनी भूल के कारण दुष्ट व्यक्ति सभी परिजनों को कष्ट में डालने से नहीं चूकते (२) आलस्य (निद्रा) में पड़े रहना असुरों का स्वभाव है ।

जागा निसिचर देखिअ कैसा ।
मानहुँ काल देह धरि बैसा ॥

★ कुम्भकर्ण उठ बैठा । वह कैसा दिखाई देता है, मानों स्वयं काल शरीर धारण करके बैठ गया हो ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* दुष्ट व्यक्ति सदा लोगों का अहित करते हैं । अत: वे काल समान ही लगते हैं ।

कुम्भकरन बूझा कहु भाई ।
काहे तब मुख रहे सुखाई ।।

★ कुम्भकर्ण ने पूछा— हे भाई! कहो तो तुम्हारा मुँह सूख क्यों रहा है?

* अपने कुकर्मों, भय एवं चिन्ता के कारण मनुष्य का मुख तेजहीन हो जाता है ।

कथा कही सब तेहि अभिमानी ।
जेहि प्रकार सीता हरि आनी ।।

★ घमण्डी (रावण) ने जिस प्रकार से वह सीता को हरण करके लाया था, (तब से अब तक की) सम्पूर्ण कथा कह सुनाई ।

* अहंकारी व्यक्ति अपने बुरे कर्मों का भी वर्णन बेशर्मी से शान दिखाकर करने लगते हैं ।

तात कपिन्ह सब निसिचर मारे ।
महा महा जोधा संघारे ।।

⊗ संघारे=संहार कर डाला ।

★ (फिर कहा) हे भाई ! बन्दरों ने तमाम राक्षस मार डाले । बड़े-बड़े योद्धाओं का संहार कर डाला ।

सुनि दसकंधर बचन तब,
कुम्भकरन बिलखान ।
जगदंबा हरि आनि अब,
सठ चाहत कल्यान ।।

★ रावण के वचन सुनकर कुम्भकर्ण बिलखकर (दु:खी होकर) बोला— अरे मूर्ख ! जगत् की माता सीता जी को चुराकर अब तू भला चाहता है ।

* अनीति करने वाले की दुर्गति अवश्य होती है, उसके कल्याण की कामना करना मूर्खता है ।

राम रूप गुन सुमिरत,
मगन भयउ छन एक ।
रावन मागेउ कोटि घट,
मद अरु महिष अनेक ।।

⊗ छन=क्षण, घट=घड़े, मद=शराब, महिष=भैंसें ।

★ श्रीरामजी के रूप और गुणों को याद करके वह एक क्षण के लिए प्रेम में लीन हो गया । फिर रावण से करोड़ों घड़े शराब और अनेक भैंसे मंगवाए ।

* मनुष्य की मूल प्रवृत्ति तो निर्मल रहती है । किन्तु आलस्य, नशा, मांसाहार के प्रभाव से आसुरी वृत्ति उभर कर मनुष्य कुकृत्य करने लगता है ।

महिष खाई करि मदिरा पाना ।
गर्जा बज्राघात समाना ।।

⊗ बज्राघात=बिजली गिरना ।

★ भैंसे खाकर और शराब पीकर वह बिजली गिरने के समान गरजा ।

* माँसाहार करने तथा शराब पीने के बाद कुम्भकर्ण का विवेक कुंठित हो गया तथा वह अनीति के लिये तैयार हो गया ।

कुम्भकरन दुर्मद रन रंगा ।
चला दुर्ग तजि सेन न संगा ।।

⊗ दुर्मद=मद से चूर, रन रंगा=युद्ध के रंग में रंगा ।

★ मद से चूर, युद्ध के उत्साह से पूर्ण कुम्भकर्ण किला छोड़कर चला, सेना भी साथ नहीं ली ।

* नशेबाज अपने उद्वेग में अपनी सुरक्षा का भी ध्यान नहीं रख पाता ।

एतना कपिन्ह सुना जब काना ।
किलकिलाइ धाए बलबाना ।।

⊗ किलकिलाइ=उत्साहपूर्ण ध्वनिकर, धाए=दौड़े ।

★ बन्दरों ने जब कानों से इतना सुना, तब वे शक्तिशाली हर्षध्वनि करके दौड़ पड़े ।

* सत्कार्य के लिये अपने आपको समर्पित करने वालों में हर्षोत्साह स्वाभाविक रूप से रहता है ।

लिए उठाइ बिटप अरु भूधर ।
कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ भूधर=पर्वत, कटकटाइ=दाँत कटकटाकर ।

★ वृक्ष और पर्वत (उखाड़कर) उठा लिये और दाँत कट कटाकर उन्हें उसके ऊपर डालने लगे ।

कोटि कोटि गिरि सिखिर प्रहारा ।
करहि भालु कपि एक एक बारा ।।

★ रीछ बन्दर एक एक बार में ही करोड़ों पहाड़ों के शिखिरों से उस पर प्रहार करने लगे ।

मुर्‌यो न मनु तनु टर्‌यो न टार्‌यो ।
जिमि गज अर्क फलनि को मार्‌यो ।।

⊗ मुर्‌यो=मुड़ा, टर्‌यो(टला)=हटा, अर्क=अकौवा (मदार)।

★ लेकिन इससे न तो उसका मन मुड़ा और न शरीर ही टाले टला, जैसे मदार के फलों की मार से हाथी पर कोई भी प्रभाव नहीं होता है ।

महानाद करि गर्जा,
कोटि कोटि गहि कीस ।
महि पटकइ गजराज इव,
सपथ करइ दससीस ।।

⊗ महानाद=घोर शब्द, गहि=पकड़कर, इव=समान ।

★ कुम्भकर्ण बड़ा घोर शब्द करके गरजा तथा करोड़-करोड़ बन्दरों को पकड़कर वह गजराज के समान उन्हें धरती पर पटकने लगा और रावण की दुहाई देने लगा ।

सकरुन बचन सुनत भगवाना ।
चले सुधारि सरासन बाना ।।

⊗ सुधारि=सुधार कर ।

★ कुम्भकर्ण की मार से व्याकुल बन्दरों के करुणामय शब्द सुनते ही भगवान् धनुष-वाण सुधार कर चले ।

* जब भगवान देखते हैं कि सत्कार्य में लगे पुरुषार्थियों की शक्ति उस कार्य के लिए काफी नहीं है तो वे अपनी शक्ति लगा देते हैं ।

खैंचि धनुष सर सत संधाने ।
छूटे तीर सरीर समाने ।।

⊗ संधाने=निशाना लगाया, समाने=समा गये ।

★ उन्होंने धनुष खींच करके सौ वाणों से निशाना साधा वाण छूटे और उसके शरीर में समा (घुस) गये ।

लागत सर धावा रिस भरा ।
कुधर डगमगत डोलति धरा ।।

⊗ रिस भरा=क्रोध में भरकर, कुधर=पर्वत, डोलति=हिलने लगी ।

★ वाणों के लगते ही वह क्रोधपूर्वक दौड़ा । उसके दौड़ने से पर्वत हिलने लगे और पृथ्वी डोलने लगी ।

तब प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा ।
धड़ ते भिन्न तासु सिर कीन्हा ।।

★ तब भगवान श्रीराम ने क्रोध करके तीक्ष्ण वाण लिया और उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया ।

* दुष्टों को दण्ड देने के लिये क्रोध का भी प्रयोग करना उचित है ।

सो सिर परेउ दसानन आगे ।
बिकल भयउ जिमि फनि मनि त्यागे ।।

⊗ परेउ =गिरा, बिकल=व्याकुल, फनि =सर्प ।

★ वह सिर रावण के सामने जा गिरा । उसे देखकर रावण ऐसा व्याकुल हुआ, जैसे मणि के छूट जाने पर सर्प व्याकुल होता है ।

धरनि धसइ धड़ धाव प्रचंडा ।
तब प्रभु कोटि कीन्ह दुइ खंडा ।।

⊗ धरनि=पृथ्वी, धसई=धँस जाती थी, प्रचंड=वेग से ।

★ कुम्भकर्ण का प्रचण्ड धड़ दौड़ा जिससे पृथ्वी धँसी जाती थी । तब प्रभु श्रीराम ने उसे काट कर उसके दो टुकड़े कर दिए ।

* दुष्ट व्यक्ति मरते-मरते भी संसार को कष्ट देते हैं ।

बहु बिलाप दसकंधर करई ।
बन्यु सीस पुनि पुनि उर धरई ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ कुम्भकर्ण के मारे जाने पर रावण बहुत विलाप करने लगा । बार-बार वह उसका सिर हृदय से लगाने लगा ।

* दुष्ट को अपनी करनी पर पछताना ही पड़ता है, वह कितना भी समर्थ क्यों न हो ।

मेघनाद तेहि अवसर आयउ ।
कहि बहु कथा पिता समझायउ ।।

★ उसी समय पर मेघनाद वहाँ पहुँचा और उसने बहुत सी कथाऐं कहकर पिता को समझाया ।

* बड़े यदि दु:खी हों तो छोटे को भी उसी भाव में नहीं बह जाना चाहिये वरन् विवेक पूर्वक उन्हें समझाना चाहिए ।

देखेहु कालि मोरि मनुसाई ।
अबहि बहुत का करौं बड़ाई ।।

⊗ कालि=कल, मोरि=मेरा, मनुसाई=पुरुषार्थ, अबहि=अभी।

★ और मेघनाद ने रावण से कहा आप कल मेरा पुरुषार्थ देखना, अभी मैं स्वयं की प्रशंसा क्या करूँ ।

* (१) अपनी सामर्थ्य का प्रमाण बातों से नहीं कार्यों से देना चाहिये (२) मेघनाद रावण को विश्वास दिलाने लगा कि कुम्भकर्ण न सही मैं शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ हूँ ।

इष्टदेव सै बल रथ पायउँ ।
सो बल तात न तोहि देखायउँ ।।

★ मैंने अपने इष्टदेव से जो बल और रथ माँगा था, हे तात ! अभी तक आपको नहीं दिखाया था ।

* इष्ट की उपासना द्वारा सभी प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त की जा सकती हैं, किन्तु सद्बुद्धि के अभाव में उनका भी दुरुपयोग ही होता है ।

एहि बिधि जल्पत भयउ बिहाना ।
चहु दुआर लागे कपि नाना ।।

⊗ जल्पत=डींग मारते हुए, बिहाना=सवेरा ।

★ इस प्रकार डींगें मारते हुए सवेरा हो गया । लंका के चारों दरवाजों पर बहुत से वानर आ डटे ।

* अहंकारी व्यक्ति दूसरे पक्ष की सामर्थ्य का ध्यान न रखकर केवल अपनी ही डींग हाँकने में समय नष्ट करते रहते हैं ।

मेघनाद मायामय,
रथ चढ़ि गयउ अकास ।
गर्जेउ अट्टहास करि,
भइ कपि कटकहि त्रास ।।

★ मेघनाद उसी मायामय रथ पर चढ़कर आकाश में चला गया और वहाँ से अट्टहास करके गर्जा, जिससे बन्दरों की सेना में भय छा गया ।

गहि गिरि तरु अकास कपि धावहिं ।
देखहि तेहि न दुखित फिरि आवहिं ।।

★ पर्वत और वृक्षों से लेकर बन्दर आकाश में दौड़-दौड़ कर जाते हैं पर मेघनाद को देख नहीं पाने के कारण दुःखी होकर लौट आते हैं ।

* मेघनाथ माया रथ के कारण दिखता नहीं था । आसुरी प्रवृत्तियाँ भी इसी प्रकार साधकों को कष्ट देती हैं पर उनका सही रूप दिखता नहीं । इसीलिये साधक उन्हें मारने के प्रयास में असफल होकर दु:खी हो उठते हैं ।

जाहिं कहाँ व्याकुल भए बन्दर ।
सुरपति बंदि परे जनु मन्दर ।।

★ अब कहाँ जायँ, इस प्रश्न का उत्तर न पाकर बंदर व्याकुल हो गए । मानो पर्वत इन्द्र की कैद में पड़े हों ।

* सत्कर्म परायण अपने लक्ष्य से हटना नहीं चाहते और दुष्प्रवृत्तियों की अदृश्य रुकावट उन्हें बढ़ने नहीं देती । ऐसी स्थिति में वे क्या करें क्या न करें इस पेशोपेश में पड़ जाते हैं ।

मारुत-सुत अंगद नल नीला ।
कीन्हेसि बिकल सकल बलसीला ।।

★ हनुमान, अंगद, नल और नील आदि सभी बलवानों को मेघनाद ने व्याकुल कर दिया ।

* यह माया चक्कर बड़े-बड़े समर्थ साधकों को भी बेचैन कर देता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुनि लछिमन सुग्रीव बिभीषण ।
सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जर तन ।।

⊗ सरन्हि=तीरों से , जर्जर=छलनी ।

★ **फिर मेघनाद ने लक्ष्मण, सुग्रीव, बिभीषण को वाणों से मार कर उनके शरीर को छलनी कर दिया ।**

ब्याकुल कटकु कीन्ह घननादा ।
पुनि भा प्रगट कहइ दुर्बादा ।।

⊗ घननादा (घन+नाद)=मेघनाद, दुर्बादा=दुर्वचन ।

★ **मेघनाद श्रीराम की सेना को व्याकुल कर देने के बाद प्रकट हुआ और दुर्वचन कहने लगा ।**

* दुष्टों के दुर्गुण ही उन्हें ले डूबते हैं । मेघनाथ अदृश्य होने के कारण सफल हो रहा था, पर शेखी बघारने के लिए प्रकट हो गया । यह भूल उसके लिए हानिकारक सिद्ध हुई ।

जामवन्त कह खल रहु ठांढ़ा ।
सुनि करि ताहि क्रोध अति बाढ़ा ।।

★ **इस पर जामवंत ने कहा अरे दुष्ट खड़ा रह । यह सुनकर मेघनाद को क्रोध बढ़ गया ।**

करि रिसि तरल त्रिसूल चलायो ।
जामवंत कर गहि सोइ धायो ।।

⊗ तर=तज, करगहि=हाथ से पकड़ कर ।

★ **मेघनाद ने तेज त्रिशूल का वार किया, किन्तु जामवन्त ने उसी त्रिशूल को हाथ से पकड़ लिया और मेघनाद की ओर झपटे ।**

* अनुभवी साधक आसुरी वृत्तियों का संहार उन्हीं के अस्त्रों-साधनों से करने में समर्थ होते हैं ।

मारिसि मेघनाथ के छाती ।
परा भूमि घुर्मित सुरघाती ।।

⊗ मारिसि=दे मारा, घुर्मित=चक्कर खाकर, सुरघाती=देवताओं का शत्रु ।

★ **(जामवंत ने) मेघनाद की छाती पर (उसी से छीना हुआ) त्रिशूल दे मारा । वह देवताओं का शत्रु चक्कर खाकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ।**

पुनि रिसान गहि चरन फिरायो ।
महि पछारि निज बल देखरायो ।।

⊗ रिसान=क्रोध में भरकर, गहि=पकड़कर, महि=पृथ्वी पछारि=पकड़कर, देखरायो=दिखलाया ।

★ **फिर क्रोध में भर कर मेघनाद को उन्होंने पैर पकड़कर घुमाया और धरती पर पटककर उसे स्वयं का बल दिखलाया ।**

* साधक दुष्प्रवृत्तियों को पछाड़, पछाड़ कर निर्जीव बना देते हैं । ताकि वे पुन: हमला न कर सकें ।

वर प्रसाद सो मरइ न मारा ।
तब गहि पद लंका पर डारा ।।

★ **वरदान के प्रताप से वह मारे नहीं मर रहा था यह देखकर जामवंत ने उसे पैर पकड़ कर लंका में फेंक दिया ।**

मेघनाद के मुरछा जागी ।
पितहि बिलोकि लाज अति लागी ।।

★ **जब मेघनाद की मूर्च्छा छूटी तब पिता (रावण) को देखकर उसे बड़ी लज्जा आई ।**

* मेघनाद ने रावण से अपने शौर्य की बहुत डींग हाँकी थी, अब अपने को अचेत अवस्था में उसके सामने पाकर के उसे शर्मिन्दा होना पड़ा । अपनी शक्ति को ही सब कुछ मानने वाले का यही हाल होता है ।

तुरत गयउ गिरिवर कन्दरा ।
करौ अजय मख अस मन धरा ।।

⊗ गिरिवर=श्रेष्ट पर्वत, कंदरा=गुफा , मख=यज्ञ, मनधरा=मन में निश्चय कर ।

★ **मैं अजेय होने हेतु यज्ञ करूँ, ऐसा मन में निश्चय करके वह तुरन्त ही श्रेष्ठ पर्वत की गुफा में चला गया ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* यज्ञादि श्रेष्ठ प्रक्रियाएँ हैं, पर असुरवृत्ति के व्यक्ति उनका उपयोग लोक कल्याण की जगह स्वार्थ सिद्ध के लिए करना चाहते हैं ।

इहाँ बिभीषन मन्त्र बिचारा ।
सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ।।

⊗ मन्त्र=सलाह अतुल (अतुलनीय)=जिसकी तुलना नहीं की जा सके ।

★ यहाँ विभीषण ने विचार कर श्रीरामजी को सलाह दी कि हे बल और उदारता में अतुलनीय प्रभु ! सुनिये–

* उदारता होनी अच्छी बात है, किन्तु उसका उपयोग सही जगह पर ही होना चाहिए । कुपात्र के प्रति उदारता हानिकारक होती है ।

मेघनाद मख करइ अपावन ।
खल मायाबी देव सतावन ।।

⊗ अपावन=अपवित्र, सतावन=सताने वाला ।

★ देवताओं को सताने वाला दुष्ट, मायावी मेघनाद (अजेय होने हेतु) अपवित्र यज्ञ कर रहा है ।

* अनुचित उद्देश्यों से जो यज्ञ किए जाते हैं वे अपवित्र यज्ञ कहे जाते हैं ।

जो प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि ।
नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि ।।

★ हे प्रभु ! यदि मेघनाद का वह यज्ञ सफल हो जायगा तो फिर वह जल्दी जीता न जा सकेगा ।

* संकेत यह है कि गलत उद्देश्य से किए जाने वाले यज्ञ को सफल नहीं होने देना चाहिए क्योंकि वह समाज के लिय हानिकारक सिद्ध होता है ।

सुनि रघुपति अतिसय सुख माना ।
बोले अंगदादि कपि नाना ।।

★ यह सुनकर भगवान श्रीराम ने बहुत सुख माना और फिर अंगद आदि बहुत से वानरों को बुलाया ।

* भगवान यज्ञ रक्षक कहे जाते हैं, किन्तु जो यज्ञ जनहित के लिए नहीं है वह स्थूल रूप से यज्ञ दिखते हुए भी यज्ञ नहीं कहा जा सकता । अपने सहयोगी विभीषण में इस प्रकार सूक्ष्म विवेक बुद्धि देख कर भगवान प्रसन्न हुए ।

लछिमन संग जाहु सब भाई ।
करहु बिधंस जग्य कर जाई ।।

★ श्रीराम ने उनसे कहा कि सब भाई लक्ष्मण के साथ जाकर इस (अपवित्र) यज्ञ को विध्वंस करो ।

* दुष्ट प्रयोजन हेतु यज्ञ जैसे श्रेष्ठ अनुष्ठानों को नहीं होने देना धर्म संगत है ।

तुम्ह लछिमन मारहु रन ओही ।
देखि सभय सुर दुख अति मोही ।।

⊗ रन (रण)=युद्ध, सभय=भयभीत ।

★ हे लक्ष्मण ! अब तुम मेघनाद को युद्ध में मार डालना । देवताओं को भयभीत देखकर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है ।

* जब दुष्टता के कारण देव शक्तियाँ दुःखी होने लगती हैं तो भगवान उसे शीघ्र समाप्त करते हैं ।

रघुपति चरन नाई सिर,
चलेउ तुरन्त अनन्त ।
अंगद नील मयदं नल,
संग सुभट हनुमन्त ।।

★ श्री रघुनाथजी के चरण कमलों में सिर नवाकर शेषजी के अवतार श्री लक्ष्मणजी तुरन्त चले । उनके संग में अंगद नील, मयंद, नल और हनुमान आदि कई उत्तम योद्धा थे ।

* आज्ञाकारी स्वजन आज्ञा पाते ही कार्य तुरन्त प्रारम्भ कर दें यही आदर्श अनुकरणीय है ।

जाइ कपिन्ह सो देखा वैसा ।
आहुति देत रुधिर अरु भैसा ।।

★ वानरों ने जाकर देखा कि मेघनाद बैठा हुआ खून और भैंसों की आहुति दे रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

* प्राणियों की हिंसा करके यज्ञ का आयोजन करना घोर अनर्थपूर्ण कर्म है । इसे न करना चाहिए और न होने देना चाहिए ।

कीन्ह कपिन्ह सब जज्ञ बिधंसा ।
जब न उठइ तब करहिं प्रसंसा ।।

★ वानरों ने सारे यज्ञ को विध्वंस कर दिया । फिर भी जब वह नहीं उठा, तब वे उसकी प्रशंसा करने लगे ।

* बुरे व्यक्तियों में भी कुछ गुण होते हैं जिनके कारण वह आगे बढ़ते हैं । सरल हृदय व्यक्ति विरोधी के भी गुणों की प्रशंसा करते हैं ताकि लोग गुणों का महत्व समझें ।

तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई ।
लातन्हि हति हति चले पराँई ।।

⊗ धरेन्हि=पकड़े, कच=बाल, लातन्हि=लातों से, हतिहति=मार-मार कर, चले पराई=भाग चले ।

★ इतने पर भी जब वह न उठा, तब उन्होंने जाकर उसके बाल पकड़े और लातों से मार-मार कर वे भाग चले ।

* दुष्टों का उद्देश्य पूरा न होने देने के लिए उन्हें ताड़ना देना भी उचित है किन्तु उनके आक्रमण से बचने के लिए सतर्क भी रहना चाहिए ।

ले त्रिसूल धावा कपि भागे ।
आए जहँ रामानुज आगे ।।

★ मेघनाद त्रिशूल लेकर दौड़ा, तब वानर भागे और वहाँ आ गए जहाँ (आगे) लक्ष्मण जी खड़े थे ।

* रणनीति के अनुसार शत्रु को उत्तेजित करके वानर उसे मोर्चे पर ले आये ।

लछिमन मन अस मन्त्र दृढ़ावा ।
एहि पापिहिं मैं बहुत खेलावा ।।

★ लक्ष्मण जी ने मन में यह दृढ़ विचार किया कि इस पापी को मैं बहुत खिला चुका । अब तो इसे मार ही डालना चाहिए ।

* खिलाने का अर्थ है मारने से पहले दुष्ट को बार-बार कठिनाई में डालकर अपने किए पर पछताने को मजबूर करना । इससे उसकी कुबुद्धि दूर होती है और उसका अनुकरण करने वाले भी डर जाते हैं ।

सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा ।
सर संधान कीन्ह करि दापा ।।

⊗ दापा=दर्प (यहाँ आत्मविश्वास के लिये आया है ।)

★ कोसलापति श्रीरघुनाथजी के प्रताप का स्मरण करके, लक्ष्मण जी ने वीरोचित दर्प करके बाण का संधान किया ।

* महत्वपूर्ण कार्य करने के लिये ईश्वर विश्वास तथा आत्मविश्वास दोनों का होना आवश्यक है ।

छाड़ा बान माझ उर लागा ।
मरती बार कपट सब त्यागा ।।

⊗ छाड़ा=छोड़ा, माझ=बीच में ।

★ बाण छोड़ते ही मेघनाद के हृदय में लगा । मरते समय उसने सब कपट त्याग दिया ।

* अन्त समय में कपट त्याग देने से सद्गति मिल जाती है मेघनाद साधक था पर जीवन भर भ्रान्ति वश साधना शक्ति का दुरुपयोग करता रहा । अन्त समय उसका भ्रम दूर हुआ तो उसने अपनी साधना के अभ्यास का सदुपयोग करके सद्गति पा ली ।

रामानुज कहँ रामु कहँ,
अस कहि छाँड़ेसि प्रान ।
धन्य धन्य तब जननी,
कह अंगद हनुमान ।।

★ मेघनाद ने श्रीलक्ष्मणजी एवं श्रीरामजी का नाम प्रेम सहित लेकर प्राण छोड़ दिये । अंगद एवं हनुमान ने यह देखकर कहा ''तुम्हारी माता धन्य है ।''

* मन्दोदरी सुसंस्कारवान नारी थी । वह रावण को भी अनीती करने से बराबर रोकती रही । उसके श्रेष्ठ और सबल संस्कारों का प्रभाव अंत समय मेघनाद के काम आया । इसीलिये अंगद हनुमान उसकी मां की सराहना करने लगे ।

बिनु प्रयास हनुमान उठायो ।
लंका द्वार राखि पुनि आयो ।।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **हनुमानजी ने उसे बिना परिश्रम सहज ही उठा लिया तथा लंका के द्वार पर रखकर लौट आये ।**

* सज्जन केवल बुराई के विरोधी होते हैं । शत्रु के शव को भी तिरस्कार पूर्वक पड़ा रखने या उसकी दुर्दशा करने की अपेक्षा सम्मान के साथ उसे उसकी सीमा में स्वयं पहुँचा दिया ।

मंदोदरी रुदन कर भारी ।
उर ताड़त बहु भाँति पुकारी ।।

★ **पुत्र वध का समाचार सुनकर मन्दोदरी छाती पीट पीट कर और बहुत प्रकार से पुकार-पुकार कर बहुत विलाप करने लगी ।**

नगर लोग सब ब्याकुल सोचा ।
सकल कहहिं दसकन्धर पोचा ।।

⊗ पोचा=पोला, ऊपर से कुछ अंदर से कुछ ।

★ **लंका नगर के सब लोग शोक से व्याकुल हो गये । सभी रावण को नीच कहने लगे ।**

* नीच व्यक्ति जब बार-बार ठोकर खाकर भी अपना ढंग नहीं बदलता है तो उसके सहयोगी भी उसकी बुराई करने लगते हैं । उसके प्रति उनकी श्रद्धा हट जाती है ।

तब दसकण्ठ बिबिध बिधि,
समुझाई सब नारि ।
नस्वर रूप जगत सब,
देखहु हृदय बिचारि ।।

★ **तब रावण ने सब स्त्रियों को अनेकों प्रकार से समझाया कि हृदय में विचार कर देखो कि सारे संसार का यह नजर आने वाला रूप नाशवान है ।**

* रावण का यह ज्ञान दिखावटी था, यदि सही होता तो सांसारिक वैभव, यश तथा अहं के लिये वह अनर्थ करता ही क्यों । नकली ज्ञान बड़ा हानिकारक होता है ।

तिन्हहि ज्ञान उपदेसा रावन ।
आपुन मन्द कथा सुभ पावन ।।

★ **रावण ने उन्हें ज्ञान का उपदेश दिया । वह स्वयं तो नीच है परन्तु उसकी कथा अर्थात् उपदेश शुभ और पवित्र है ।**

* जिसके आचरण अपने कथन से उल्टे हैं उसका प्रभाव श्रोताओं पर नहीं पड़ता ।

पर उपदेस कुसल बहुतेरे ।
जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।।

★ **दूसरों को उपदेश देने में तो बहुत से लोग कुशल होते हैं । पर दूसरों को दिए जाने वाले उपदेशों के अनुसार स्वयं आचरण करने वाले लोग थोड़े ही होते हैं ।**

* बड़ाई उपदेश करने में नहीं आचरण सम्पन्न बनने में है ।

निसा सिरानि भयउ भिनुसारा ।
लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ।।

⊗ सिरानि=बीत गई, भिनुसारा=सबेरा ।

★ **रात बीत गई प्रात:काल हो गया । रीछ-बन्दर (फिर) लंका के चारों दरवाजों पर जा डटे ।**

कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा ।
मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा ।।

⊗ सुभट्टा=उत्तम योद्धा, ठट्टा =भीड़ ।

★ **रावण ने कहा— हे उत्तम योद्धाओं ! सुनो, तुम भालू बन्दरों की भीड़ को मसल डालो ।**

हौं मारिहउँ भूप द्वौ भाई ।
अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई ।।

⊗ फौज=सेना, रेंगाई=चलाई ।

★ **और मैं दोनों राजकुमार भ्राताओं को मार डालूँगा ऐसा कहकर उसने अपनी सेना सामने चलाई ।**

* रेंगना धीरे-धीरे घसिटते हुआ चलने को कहते हैं । राक्षसों का उत्साह और रावण के प्रति विश्वास समाप्त हो चुका था, वे रावण के प्रभाव में घसिट ही रहे थे ।

यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई ।
धाए करि रघुबीर दोहाई ।।

★ **जब सब बन्दरों ने यह समाचार पाया, तब वे श्रीरामजी की दुहाई देते हुए दौड़े ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* वानरों का उत्साह बढ़ा हुआ था, वे उत्साह और जयघोष के साथ झपटे ।

दुहु दिसि जय जयकार करि,
निज निज जोरी जानि ।
भिरे बीर इत रामहि,
उत रावनहि बखानि ।।

★ दोनों ओर के योद्धा जय-जयकार करके अपनी-अपनी जोड़ी चुन करके इधर श्रीरामजी की और उधर रावण की सामर्थ्य का वर्णन करते हुए परस्पर भिड़ गये ।

रावन रथी बिरथ रघुबीरा ।
देखि बिभीषन भयउ अधीरा ।।

⊗ बिरथ=बिना रथ, अधीरा=अधीर (धैर्य हीन)।

★ रावण को रथ पर और श्रीरामजी को बिना रथ के देखकर विभीषण का धैर्य डगमगाने लगा ।

* विभीषण को लगा कि रथ के अभाव में श्रीराम को रावण के मुकाबले में कठिनाई हो सकती है, इसी भय से धैर्य छूटने लगा ।

अधिक प्रीति मन भा सन्देहा ।
बंदि चरन कह सहित सनेहा ।।

★ प्रेम अधिक होने से उनके मन में संदेह हो गया (कि वे बिना रथ के रावण को कैसे जीत सकेंगे)। श्रीरामजी के चरणों की वन्दना कर वे स्नेह के साथ कहने लगे ।

* प्रेम की अधिकता प्रेमी को शंकाशील बना देती हैं । वह अपने प्रेमपात्र के अनिष्ट के भय से भयभीत हो जाता है ।

नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना ।
केहि बिधि जितब बीर बलवाना ।।

⊗ पद त्राण=जूते, तन त्राण=कवच ।

★ हे नाथ श्रीराम ! आपके न रथ है, न शरीर की रक्षा करने वाला कवच और न जूते ही हैं । शक्तिशाली रावण को आप कैसे जीतेंगे ?

* रक्षा और विकल्प के लिए विभीषण स्थल साधनों, उपकरणों को आवश्यक मानते थे ।

सुनहु सखा कह कृपानिधाना ।
जेहिं जय होइ सो स्यन्दन आना ।।

⊗ स्यन्दन=रथ ।

★ दया के सागर श्रीरामजी ने कहा— हे मित्र ! सुनो जिससे विजय होती है वह रथ दूसरा है ।

* श्रीरामजी ने विजय के स्थूल साधनों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण पक्ष की ओर विभीषण जी का ध्यान खींचा ।

सौरज धीरज तेहि रथ चाका ।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ।।

⊗ सौरज=शौर्य, चाका=पहिये, सील (शील)=सदाचार, ध्वजा पताका=झण्डे ।

★ श्रीरामजी बोले शौर्य और धैर्य उस रथ के पहिये हैं । सत्य और सदाचार उसकी दृढ़ ध्वजा और पताका हैं ।

* पहिया की तरह शौर्य और धैर्य के सहारे विजय यात्रा होती है । सत्य और सदाचार पताका की तरह प्रतिष्ठा के प्रतीक बनते हैं ।

बल बिबेक दम परहित घोरे ।
छमा कृपा समता रजु जोरे ।।

⊗ दम=अधिकार (इन्द्रियों का वश में होना), घोरे=घोड़े, रजू=डोरी, जोरे=जोड़े ।

★ शक्ति, विवेक, दम और परमार्थ ये चार उसके घोड़े हैं जो क्षमा, दया और समानता रूपी डोरी से रथ में जोड़े हुए हैं ।

* शक्ति, विवेक, इन्द्रियों का वश में होना और परमार्थ जीवन रथ को प्रगतिशील बनाते हैं । इनको क्षमा दया और समता के सहारे नियन्त्रित रखा जाता है ।

ईस भजनु सारथी सुजाना ।
बिरति चर्म संतोष कृपाना ।।

⊗ बिरत=वैराग्य, चर्म= ढ़ाल ।

★ भगवान का भजन ही चतुर सारथि है । वैराग्य ढ़ाल है और सन्तोष तलवार है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* इस रथ को सही दिशा देने की क्षमता ईश्वर निष्ठा में है । लोभ मोहादि के शत्रुओं के वार वैराग्य भावना से रोके जाते हैं और संतोष उनको काटकर फेंकने में समर्थ है ।

दान परसु बुधि संक्ति प्रचण्डा ।
बर बिग्यान कठिन कोदण्डा ।।

⊗ परसु=फरसा, बर=श्रेष्ठ, बिग्यान=विज्ञान (सिद्धान्तों को कार्यान्वित करने की विधि), कोदण्डा=धनुष ।

★ दान फरसा है, बुद्धि प्रचण्ड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष है ।

* दान साधनों के दुरुपयोग को काट देता है, बुद्धि शक्ति की तरह तथा श्रेष्ठ विज्ञान धनुष की तरह दूर से वार करने में समर्थ हैं ।

अमल अचल मन त्रोन समाना ।
सम जम नियम सिलीमुख नाना ।।

⊗ अमल=निर्मल, अचल=स्थिर, त्रोन=तरकस, सम (शम)=मनका वश में होना । जम=यम (अहिंसादि) ।

★ निर्मल (पाप रहित) और स्थिर मन तरकस के समान है । शम, यम, नियम ये बहुत से बाण हैं ।

* शम दम नियम बाण हैं— यह निर्मल और स्थिर मन में ही रखे जा सकते हैं तथा यह श्रेष्ठ विज्ञान द्वारा ठीक प्रकार ठीक लक्ष्य पर छोड़े जा सकते हैं ।

कबच अभेद बिप्र गुरु पूजा ।
एहि सम बिजय उपाय न दूजा ।।

⊗ अभेद=अभेद्य, जिसे भेदा न जा सके ।

★ ब्राह्मणों और गुरु का पूजन अभेद्य कवच है । इसके समान विजय का कोई अन्य उपाय नहीं है ।

* समाज सेवी तथा सत् प्रेरणा देने वाले व्यक्तियों के प्रति आदर का भाव होने से अनैतिक आकर्षणों का व्यक्ति पर प्रभाव नहीं हो पाता । उनका अनुभव हर अनिष्ट से बचा लेता है ।

सखा धर्ममय अस रथ जाकें ।
जीत न कहँ न कतहुँ रिपु ताकें ।।

★ हे मित्र ! ऐसा धर्म प्रधान रथ जिसके हो, उसके लिए जीतने को कहीं शत्रु नहीं है ।

* इन गुणों एवं आचरणों का आधार बनाकर चलने वाला हर बाधा पार कर जाता है । विरोध या तो आता ही नहीं, आता है तो टिक नहीं पाता ।

महा अजय संसार रिपु,
जीति सकइ सो बीर ।
जाके अस रथ होइ दृढ़,
सुनहु सखा मतिधीर ।।

⊗ अजय=दुर्जय, मतिधीर=धीर बुद्धि वाले ।

★ हे धीर बुद्धि वाले मित्र ! सुनो जिसके पास ऐसा दृढ़ रथ हो, वह भव बाधाओं रूपी अजेय कहे जाने वाले शत्रु को भी जीत सकता है । (रावण की तो बात ही क्या है?)

* रथ मजबूत हो तभी युद्ध की चोटों को सहता चल सकता है । उक्त सभी गुणों पर जो मजबूती से जमा रहने वाला है उसका रथ दृढ़ कहा जा सकता है । वह दुष्टों और बाधाओं को तो जीतता ही चलता है सज्जनों के दिलों को भी जीत लेता है ।

सुनि प्रभु बचन बिभीषन,
हरषि गहे पद कंज ।
एहिं मिस मोहि उपदेसेहु,
राम कृपा सुख पुंज ।।

⊗ कंज=कमल, मिस=बहाने, पुंज=समूह ।

★ भगवान के वचन सुनकर विभीषण जी ने प्रसन्न होकर उनके चरण कमल पकड़ लिये (और कहा) हे दया और सुख देने वाले श्रीरामजी ! आपने मुझे इसी बहाने उपदेश दिया ।

* (१) जो जीवन सुधार की बात बतलावे उसके प्रति श्रद्धा और आदर का भाव प्रकट करना चाहिए । (२) सत् पुरुष जीवन के हर प्रसंग द्वारा शिक्षण देने में कुशल होते हैं ।

धायउ परम क्रुद्ध दसकन्धर ।
सन्मुख चले हूह दै बन्दर ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

★ रावण बहुत ही क्रोधित होकर दौड़ा । बन्दर हुँकार करते हुए (लड़ने के लिए) उसके सामने चले ।

* देव विजयी रावण का भय बन्दरों ने नहीं माना । ईश्वर-निष्ठ पुरुष ऐसे ही निर्भय हो जाते हैं ।

गहि कर पादप उपल पहारा ।
डारेन्हि ता पर एकहिं बारा ।।

⊗ पादप=पेड़, उपल=पत्थर, पहारा=पहाड़ ।

★ उन्होंनें हाथों में पेड़, पत्थर और पहाड़ लेकर रावण पर एक ही साथ डाल दिये ।

लागहिं सैल वज्र तन तासू ।
खण्ड खण्ड होइ फूटहिं आसू ।।

⊗ बज्रतन=वज्र के समान शरीर, आसू (आशु)=तुरन्त (शीघ्र)

★ पर्वत उसके वज्र के समान शरीर में लगते ही शीघ्र टुकड़े-टुकड़े होकर फूट जाते हैं ।

इत उत झपटि दपटि कपि जोधा ।
मर्दै लाग भयउ अति क्रोधा ।।

⊗ दपटि=डपटकर, मर्दै लागि=मसलने लगा ।

★ उसे बहुत ही क्रोध हुआ वह इधर-उधर झपटकर तथा डपटकर बन्दर योद्धाओं को मसलने लगा ।

चले पराइ भालु कपि नाना ।
त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ।।

★ अनेक रीछ और बन्दर, हे अंगद ! हे हनुमान ! रक्षा करो, (पुकारते हुए) भाग गये ।

निज दल बिकल देखि कटि,
कसि निषंग धनु हाथ ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ,
नाइ राम पद माथ ।।

⊗ कटि=कमर, निषंग =तरकस ।

★ अपनी सेना को दुखी देखकर, कमर में तरकस कसकर और हाथ में धनुष लेकर श्रीरामजी के चरणों पर सिर नवाकर लक्ष्मणजी क्रोधित होकर चले ।

* सत्कार्य के लिये संघर्ष में लगे सामान्य जनों को कठिनाई में देख समर्थ लोगों को आगे आना चाहिये ।

आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदन,
सूत हति ब्याकुल कियो ।
गिर्‌यो धरनि दसकन्धर,
बिकलतर बान सत बेध्यो हियो ।।

⊗ आतुर=शीघ्रता, बिभंजि=तोड़कर, सूत=सारथी, बिकलता=अधिक व्याकुल होकर ।

★ फिर उन्होंने बड़ी ही शीघ्रता से रावण के रथ को चूर-चूर कर दिया और सारथि को मार करके उसे (रावण को) व्याकुल कर दिया । सौ वाणों से उसका हृदय बेध दिया, जिससे रावण बहुत ही व्याकुल होकर धरती पर गिर पड़ा ।

सारथी दूसर घालि रथ,
तेहि तुरत लंका लै गयो ।
रघुबीर बन्धु प्रताप पुंज,
बहोरि प्रभु चरनन्हि नयो ।।

⊗ घालि=डालकर, नयो=प्रणाम किया ।

★ तब दूसरा सारथि रावण को रथ में डालकर शीघ्र ही लंका ले गया । प्रताप के समूह श्रीराम के भाई लक्ष्मणजी ने फिर आकर भगवान के चरणों में प्रणाम किया ।

* कार्य की सफलता पर स्वयं अहंकार न करके उसे बड़ों का अशीर्वाद मानना चाहिए तथा उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए ।

उहाँ दसानन जागि करि,
करै लाग कछु जग्य ।
राम विरोध विजय चह,
सठ हठ बस अति अग्य ।।

★ वहाँ, (लंका में) रावण मूर्च्छा से जाग करके कुछ यज्ञ करने लगा । वह मूर्ख और बहुत ही अज्ञानी हठ पूर्वक श्रीरामजी से विरोध करके विजय प्राप्त करना चाहता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* गलत उद्देश्यों के लिए यज्ञादि कर्मकाण्डों का सहारा लेने वाले शठ और अज्ञानी कहे जाते हैं । उससे उनका कल्याण भी नहीं हो सकता ।

इहां बिभीषन सब सुधि पाई ।
सपदि जाइ रघुपतिहिं सुनाई ।।

⊗ सपदि=तुरन्त (शीघ्र) ।

★ **यहाँ विभीषण ने सब समाचार पाये और शीघ्र जाकर श्रीरामजी को कह सुनाये ।**

* गलत काम होने की सूचना प्राप्त होते ही उसे रोकने के लिए समर्थ व्यक्तियों को सूचना देनी चाहिए ।

नाथ करइ रावन एक जागा ।
सिद्ध भए नहिं मरिहि अभागा ।।

★ **हे नाथ ! रावण एक यज्ञ कर रहा है उसमें सफल होने पर वह दुर्भागी सरलता से नहीं मरेगा ।**

पठवहु नाथ बेगि भट बन्दर ।
करहिं बिधंस आव दसकंधर ।।

★ **हे नाथ ! शीघ्र बन्दर योद्धाओं को भेजिए जो यज्ञ को विध्वंस करें, जिससे रण में रावण आवे ।**

* बुरे उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यदि यज्ञ किये जाते हों तो सज्जनों का कर्तव्य है कि उनको पूर्ण नहीं होने दें ।

प्रात होत प्रभु सुभट पठाए ।
हनुमदादि अंगद सब धाए ।।

★ **प्रातःकाल होते ही भगवान ने वीर योद्धाओं को भेजा । हनुमान और अंगद आदि सभी (प्रधान वीर) दौड़ पड़े ।**

कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका ।
पैठे रावन भवन असंका ।।

★ **बन्दर खेल में ही कूद कर लंका पर जा चढ़े और निडर होकर रावण के महल में घुस गये ।**

* ईश्वरनिष्ठ व्यक्ति असंभव दिखने वाले कार्यों को भी खेल की तरह कर डालते हैं ।

जग्य करत जबहीं सों देखा ।
सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेषा ।।

★ **ज्यों ही उसको यज्ञ करते हुए देखा, त्यों ही समस्त बन्दरों को बहुत क्रोध हुआ ।**

* अनुचित उद्देश्य की पूर्ति हेतु यज्ञ करते हुए देखकर सज्जनों को क्रोधित होना चाहिए ।

रन ते निलज भाजि गृह आवा ।
इहाँ आइ बक ध्यान लगावा ।।

★ **(उन्होंने कहा) अरे ओ निर्लज्ज ! युद्ध भूमि से घर भाग आया और यहाँ आकर बगुले के समान ध्यान लगाकर बैठा है ।**

* बाहर से शुभ वेष अन्दर बुरे उद्देश्य वाले लोग समाज में कम नहीं । उनसे सावधान रहना चाहिए ।

जग्य बिधंसि कुसल कपि,
आए रघुपति पास ।
चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ,
त्यागि जिवन के आस ।।

★ **यज्ञ को भ्रष्ट करके सब चतुर बन्दर श्रीरामजी के पास आ गये । तब रावण जीने की आशा त्याग कर क्रोधित होकर चला ।**

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर ।
कुलिस समान लाग छाँड़ै सर ।।

⊗ कुलिस=वज्र, छाँड़ै=छोड़े ।

★ **कटु वचन कह करके रावण क्रोधित होकर वज्र के समान वाण छोड़ने लगा ।**

* नीच व्यक्ति मुख से गाली आदि दुर्वचन कहने के आदी होते हैं ।

नानाकार सिलीमुख धाए ।
दिसि अरु बिदिसि गगन महिं छाए ।।

⊗ नानाकार=अनेक आकर के, सिलीमुख=वाण, बिदिसि=उपदिशायें ।

★ **अनेक आकार के वाण चले और दिशाओं-उपदिशाओं तथा आकाश और धरती में सब स्थानों पर छा गये ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पावक सर छांडेउ रघुबीरा ।
छन महुँ जरे निसाचर तीरा ।।

⊗ तीरा=बाण ।

★ **श्रीरामजी ने अग्नि बाण छोड़ा (जिससे) रावण के समस्त बाण पल भर में भस्म हो गये ।**

* रावण के बाण दोष दुर्गण और दुष्प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं, श्रीराम का अग्निबाण प्रकाश ज्ञान और सत् प्रेरणा का प्रतीक है ।

छाड़िसि तीव्र सक्ति खिसिआई ।
बान संग प्रभु फेरि चलाई ।।

⊗ खिसिआई=खीझ कर, फेरि चलाई=वापिस कर दी ।

★ **तब उसने (रावण ने) खिसियाकर तीव्र शक्ति छोड़ी । (किन्तु) श्रीरामजी ने उसको बाण के साथ वापस भेज दिया ।**

* भगवान की शक्ति से आसुरी शक्तियों को वापिस किया जा सकता है ।

कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पवारै ।
बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारै ।।

⊗ पवारै=चलता है, काटि=काटकर, निवारै=हटा देते हैं ।

★ **वह (रावण) करोड़ों चक्र और त्रिशूल चलाता है, किन्तु भगवान उन्हें बिना ही श्रम काटकर हटा देते हैं ।**

* अपना प्रभाव जमाने के लिये, राक्षसी प्रवृत्तियाँ अनेक प्रकार के प्रयास करती हैं पर ईश्वरनिष्ठ उन्हें सहज ही प्रभावहीन बना सकता है ।

निफल होहिं रावन सर कैसे ।
खल के सकल मनोरथ जैसे ।।

⊗ निफल=निष्फल, मनोरथ=इच्छा ।

★ **रावण के बाण किस प्रकार निष्फल होते हैं जैसे नीच मनुष्य की सभी इच्छाएँ ।**

* दुष्ट अनुचित इच्छायें करते हैं और अनुचित बात टिकती नहीं, यह सिद्धान्त है ।

बिफल होहिं सब उद्यम ताके ।
जिमि परद्रोह निरत मनसा के ।।

⊗ बिफल=निष्फल, उद्यम=उद्योग, परद्रोह=दूसरे के विरोध, निरत=लगा हुआ, मनसा=चित्त वाला मनुष्य ।

★ **उसके सब उद्योग वैसे ही निष्फल हो रहे हैं, जैसे दूसरे के विरोध में लगे हुए चित्त वाले मनुष्य के होते हैं ।**

* भगवान कल्याणकारी इच्छाओं की ही पूर्ति करते हैं । अकल्याणकारी इच्छाओं का तो शोधन ही किया जाता है, क्योंकि उनसे समाज में सुख कम और दुःख अधिक बढ़ता है ।

पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ,
छाँड़ी सक्ति प्रचंड ।
चली बिभीषन सन्मुख,
मनहुँ काल कर दंड ।।

★ **फिर रावण ने क्रोधित होकर भयंकर शक्ति छोड़ी । वह विभीषण के सामने ऐसी चली जैसे यमराज का दण्ड हो ।**

* दुष्ट जब समर्थ व्यक्ति का कुछ नहीं बिगाड़ पाते तो उसके सहयोगी कम शक्ति वालों को सताने लगते हैं । उनसे सतर्क रहना चाहिए ।

आवत देखि सक्ति अति घोरा ।
प्रनितारति भंजन पन मोरा ।।

⊗ प्रनितारित=शरणागत के दुख ।

★ **श्रीराम ने बहुत ही भयानक शक्ति को आती देखा और यह विचार किया कि मेरा प्रण शरणागत के दुःख का नाश करना है ।**

* अपनी ही नहीं अपने सहयोग के लिए आगे बढ़ने का साहस करने वालों की रक्षा का भी उत्तरदायित्व श्रेष्ठ जन उठाते हैं ।

तुरत बिभीषन पाछें मेला ।
सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ।।

⊗ सेला=शक्ति ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ श्रीरामजी ने शीघ्र ही विभीषण को पीछे कर लिया और सामने होकर उस शक्ति को स्वयं सहन कर गये ।

* बड़े व्यक्ति दूसरों का दु:ख स्वयं सहन कर लिया करते हैं । किन्तु अपने आश्रित को कष्ट नहीं होने देते ।

तब रघुपति रावन के,
सीस भुजा सर चाप ।
काटे बहुत बढ़े पुनि,
जिमि तीरथ कर पाप ।।

★ तब श्रीरामजी ने रावण के मस्तक, भुजाएँ, बाण और धनुष से काट डाले । पर वे फिर बहुत बढ़ गये, जैसे तीर्थ में किये हुए पाप बढ़ जाते हैं । (कई गुना अधिक भयानक फल देने वाले होते हैं ।)

* तीर्थों में जाने से पाप कटते हैं किन्तु यदि वहाँ भी अपने पाप कर्मों को छोड़ा न जा सके तो वह अनेक गुने बढ़ जाते हैं ।

काटत बढ़हिं सीस समुदाई ।
जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई ।।

⊗ समुदाई=समूह, अधिकाई=बढ़ता है

★ काटते ही मस्तकों का समूह बढ़ जाता है, जैसे हर एक लाभ पर लोभ बढ़ता है ।

* लाभ देकर लोभ को शान्त नहीं किया जा सकता ।

मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा ।
राम बिभीषन तन तब देखा ।।

★ शत्रु मरता नहीं और श्रम बहुत करना पड़ा । तब श्रीरामजी ने विभीषण की ओर देखा ।

* केवल श्रम ही नहीं, श्रेष्ठ कार्यों के लिए उचित सलाह भी आवश्यक होती है ।

उमा काल मर जाकीं ईछा ।
सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ।।

⊗ ईछा=इच्छा, परीछा=परीक्षा ।

★ (शिवजी कहते हैं) हे पार्वती ! जिसकी इच्छा मात्र से मृत्यु भी मर जाती है वही भगवान सेवक के प्रेम की परीक्षा ले रहे हैं ।

* प्रेम यदि सच्चा होता है तो प्रेमी गुप्त रहस्य भी छिपाता है नहीं । रावण के न मरने का रहस्य क्या है? यह विभीषण से पूछ कर प्रभु उसकी निष्ठा की परीक्षा लेना चाहते हैं ।

सुनु सरबग्य चराचर नायक ।
प्रनत पाल सुर मुनि सुखदायक ।।

★ (विभीषण ने कहा) हे सब जानने वाले ! हे चराचर के स्वामी ! हे शरणागत के पालक ! हे देवता और मुनियों को सुख देने वाले ! सुनिये –

* अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति मर्यादा वश कुछ पूछें तो उसकी अपेक्षा अपने को अधिक ज्ञानी नहीं मान लेना चाहिए सलाह देते हुए भी उसके ज्ञान के प्रति अपनी निष्ठा बनाये रखनी चाहिये ।

नाभिकुंड पियूष बस याकें ।
नाथ जिअत रावनु बल ताकें ।।

⊗ पियूष=अमृत, याकें=इसके ।

★ इसके नाभी कुण्ड में अमृत का वास है । हे श्रीराम ! रावण उसी के बल पर जीवित है ।

* दुष्टता को भी कहीं से पोषण मिलता रहता है, वह पोषण का क्रम टूटे बिना उसका नाश नहीं होता ।

सुनत बिभीषन बचन कृपाला ।
हरषि गहे कर बान कराला ।।

★ विभीषण जी के वचन सुनते ही दयालु श्रीरामजी ने प्रसन्न होकर हाथ में विकराल बाण लिये ।

* भाई के मोह से विभीषण ने नीति निष्ठा डिगने नहीं दी, इससे भगवान को प्रसन्नता हुई ।

खैंचि सरासन श्रवन लगि,
छाड़े सर एकतीस ।
रघुनायक सायक चले,
मानहुँ काल फनीस ।।

⊗ सायक=बाण, फनीस=सर्प ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ कानों तक धनुष को खींचकर श्रीरामजी ने इकतीस बाण छोड़े । वे श्रीरामजी के बाण ऐसे चले, जैसे काल रूपी सर्प हों ।

सायक एक नाभि सर सोषा ।
अपर लगे भुज सिर करि रोषा ।।

⊗ सोषा=सोख लिया, अपर=दूसरे, रोषा=क्रोध ।

★ एक बाण ने नाभि के अमृत कुण्ड को सोख लिया । दूसरे तीस बाण क्रोध करके उसके मस्तकों और भुजाओं में लगे ।

* दुष्टता के मूल स्त्रोत को पहले नष्ट करना चाहिए तभी उसके अंग उपाँगों को नष्ट करने में सफलता मिलती है ।

लै सिर बाहु चले नाराचा ।
सिर भुज हीन रुंड महि नाचा ।।

⊗ नाराचा=बाण, रुंड=धड़, नाचा=नाचने लगा ।

★ बाण मस्तकों और भुजाओं को लेकर चले । सिरों और भुजाओं से रहित धड़ धरती पर नाचने लगा ।

मंदोदरि आगे भुज सीसा ।
धरि सर चले जहाँ जगदीसा ।।

★ रावण की भुजाओं और मस्तकों को मन्दोदरी के सम्मुख रखकर राम के बाण वहाँ चले, जहाँ जगदीश्वर श्रीराम थे ।

* भगवान सबकी मर्यादा रखना चाहते हैं । रावण के अंगों का तिरस्कार अपमान न हो इसलिये उन्हें मन्दोदरी के पास पहुँचा दिया ।

पति सिर देखत मंदोदरी ।
मुरुछित बिकल धरनि खसि परीं ।।

⊗ धरनि=पृथ्वी, खसि परी=गिर पड़ी ।

★ पति का मस्तक देखते ही मन्दोदरी व्याकुल और मूर्च्छित होकर के पृथ्वी पर गिर पड़ी ।

जगत बिदित तुम्हारि प्रभुताई ।
सुत परिजन बल बरनि न जाई ।।

⊗ प्रभुताइ= बड़प्पन

★ तुम्हारा बड़प्पन संसार भर में प्रसिद्ध था । तुम्हारे पुत्रों और परिवार की शक्ति का वर्णन ही नहीं हो सकता ।

राम बिमुख अस हाल तुम्हारा ।
रहा न कोउ कुल रोवनिहारा ।।

★ श्रीराम के विरुद्ध होने से ही तुम्हारी ऐसी बुरी दशा हुई कि आज वंश में कोई रोने वाला भी नहीं रह गया ।

* परमात्मा के नियमों पर आस्था न रखने पर समर्थ से समर्थ व्यक्ति का भी पतन हो ही जाता है और समाज में भी उसका कोई आदर नहीं करता है ।

रुदन करत देखी सब नारी ।
गयउ बिभीषनु मन दुख भारी ।।

⊗ रुदन=विलाप, गयउ=प्रवेश किया ।

★ अपने घर की सभी स्त्रियों को विलाप करते हुए देखकर विभीषण जी के मन में भी भारी दुःख का प्रवेश हो गया । (उनके प्रति संवदेना जागी ।)

* मन्दोदरी आदि स्वयं बुरी नहीं थीं, रावण उनके रोके जाने पर भी अनीति पर चला । उसके दोष के कारण बेचारी स्त्रियों को दुःख उठाना पड़ा । इसीलिए विभीषण के मन में संवेदना जागी ।

कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका ।
करहु क्रिया परिहरि सब सोका ।।

⊗ क्रिया=मृत्यु क्रिया ।

★ प्रभु ने उनको दयापूर्ण दृष्टि से देखा (और कहा) सब शोक छोड़कर रावण की मृत्यु क्रिया करो ।

* भगवान ने उनकी सहृदयता देखकर उन पर कृपा की और शोक मुक्त होकर कर्तव्य में लग जाने की क्षमता दी ।

कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी ।
बिधिवत देस काल जिय जानी ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

⊗ जियँ=हृदय, जानी=समझकर ।

★ **भगवान की आज्ञा मानकर और हृदय में देश और समय का विचार करते हुए विभीषण जी ने विधि-पूर्वक सब क्रिया की ।**

* किन्तु उसे रूढ़िवादी ढंग से नहीं समय और परिस्थिति के अनुरूप विचारपूर्वक करना चाहिए ।

मन्दोदरी आदि सब देइ,
तिलांजलि ताहि ।
भवन गईं रघुपति,
गुन गन बरनत मन माहि ।।

⊗ तिलांजलि=मृतक को श्रद्धा अर्पण करना ।

★ **मन्दोदरी आदि सब स्त्रियाँ उस (रावण) को तिलांजलि देकर हृदय में श्रीरामजी के गुण समूहों का वर्णन करती हुई महल को गईं ।**

* भगवान राम ने राक्षसों की पत्नियों के प्रति पूरी सद्भावना बरती तथा सान्त्वना दी । उनके गुणों ने सबको प्रभावित किया ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय-११

यो ददाति सतां शम्भु कैवल्यमपि दुर्लभम् ।
खलानां दण्डकृद्योऽसौ शंकरः शं तनोतु में ।।

⊗ ददाति=देते हैं, कैवल्यमपि=कैवल्य मुक्ति भी, दण्डकृद्यौ= दण्ड देने वाले, शं=कल्याण ।

★ सत्पुरुषों को जो कैवल्य मुक्ति भी उदारतापूर्वक दे देते हैं और दुष्टों को दण्ड दिया करते हैं, ऐसे शिवजी हमारे कल्याण का पथ प्रशस्त करें ।

* सज्जनों को लाभ देने से सज्जनता बढ़ती है, दुर्जनों को दण्ड देने से दुर्जनता घटती है जो यह दोनों कार्य करने में समर्थ हैं,वही सबके लिये कल्याण का मार्ग बना सकता है ।

आइ विभीषन पुनि सिर नायो ।
कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ।।

★ रावण के सब क्रियाकर्म करने के बाद विभीषण ने आकर फिर मस्तक नवाया । तब दया के सागर श्रीरामजी ने छोटे भाई लक्ष्मण जी को बुलाया ।

तुम्ह कपीस अंगद नल नीला ।
जामवंत मारुत नयसीला ।।

⊗ कपीस=बंदरों के राजा सुग्रीव, नयसीला=नीतिनिपुण ।

★ श्रीरामजी ने कहा– तुम, सुग्रीव, अंगद, नल, नील, जामवन्त और हनुमान– सब नीति में कुशल हो ।

सब मिलि जाहु विभीषन साथा ।
सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ।।

⊗ सारेहु तिलक=राजतिलक कर दो ।

★ सभी मिलकर विभीषण के साथ जाओ और उनको राज तिलक कर दो ।

* भारतीय परम्परा यही है कि वीरपुरुष दुष्ट का राज्य छीनने के लिये युद्ध तो करते थे किन्तु उस राज्य का उपयोग स्वयं नहीं करते थे, वहीं के किसी सज्जन व्यक्ति को सौंप देते थे ।

पिता बचन मैं नगर न आवउँ ।
आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ ।।

★ फिर श्रीराम ने विभीषण से कहा कि पिताजी की आज्ञा का पालन करने के कारण मैं नगर में नहीं आ सकता पर अपने समान बानर और छोटे भाई को भेजता हूँ ।

* श्रीरामजी के साथ-साथ काम करने से बानर भालू आदि प्रभु के समान ही हो गये । यह है सत्संगति का प्रभाव ।

तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना ।
कीन्ही जाइ तिलक की रचना ।।

⊗ रचना=तैयारी (प्रबन्ध)।

★ प्रभु की वाणी को सुनते ही बानर शीघ्र चले और उन्होंनें जाकर तिलक का पूरा प्रबन्ध किया ।

सादर सिंहासन बैठारी ।
तिलक सार अस्तुति अनुसारी ।।

⊗ सार=सम्पन्न कर, अस्तुति=प्रशंसा, अनुसारी= की (करदी)

★ सम्मान के साथ विभीषण को सिंहासन पर बैठाया और राजतिलक करके प्रशंसा करने लगे ।

* कोई पद देते समय व्यक्ति की पात्रता की परीक्षा तो कर लेनी चाहिये किन्तु उसे पद के अनुरूप सम्मान भी देना चाहिए ताकि अन्य लोग भी उसकी मर्यादा मानें ।

तब हनुमान राम पहिं जाई ।
जनक सुता कै कुसल सुनाई ।।

★ तब श्रीरामजी के समीप जाकर हनुमान जी ने सीता जी के कुशल समाचार सुनाये ।

* पहले विभीषण के प्रति अपने कर्तव्य का पालन किया तब अपने सुख की बात सोची ।

सुनि संदेश भानुकुलभूषन ।
बोलि लिए जुवराज विभीषन ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ (सीताजी का) समाचार सुनकर सूर्य वंश भूषण श्रीरामजी ने युवराज अंगद और विभीषण को बुलाया ।

मारुतसुत के संग सिधावहु ।
सादर जनकसुतहिं लै आबहु ।।

⊗ मारुतसुत=हनुमान, सिधावहु=जाओ ।

★ और कंहा– पवनपुत्र हनुमान के संग जाओ और सीताजी को सम्मान के साथ ले आओ ।

तुरतहिं सकल गए जहँ सीता ।
सेवहिं सब निसिचरी बिनीता ।।

⊗ निसिचरी=राक्षसी, बिनीता=नम्रतापूर्वक ।

★ वे सब शीघ्र ही वहाँ गये जहाँ सीताजी थीं । उनकी सब राक्षसियाँ विनम्रतापूर्वक उनकी सेवा कर रहीं थी ।

* सज्जनता तथा सत्कर्मों की विजय होने पर दुर्जनता इनके सामने झुक जाया करती है ।

बेगि विभीषन तिन्हहि सिखायो ।
तिन्ह बहुविधि मज्जन करवायो ।।

★ विभीषणजी ने तुरन्त ही उन्हें समझा दिया । उन्होंने अनेक प्रकार से सीताजी को स्नान कराया ।

बहु प्रकार भूषन पहिराए ।
सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याए ।।

⊗ सिबिका (शिविका)=पालकी, रुचिर=सुन्दर ।

★ उन्हें अनेक प्रकार के आभूषण पहनाये और फिर सुन्दर पालकी सजाकर ले आये ।

ता पर हरषि चढ़ी बैदेही ।
सुमिरि राम सुखधाम सनेही ।।

⊗ सुमिरि=स्मरण कर, सनेही=स्नेह करने वाले प्रिय ।

★ सीताजी ने हर्ष के साथ सुख के धाम प्रियतम श्रीरामजी को याद किया और उस पर चढ़ीं ।

* राम को सीताजी सुखधाम और स्नेही मानती थीं । जिन दम्पतियों में परस्पर ऐसी मान्यताएँ हों वे जीवन में स्वर्ग का सुख अनुभव कर सकते हैं ।

देखन भालु कीस सब आये ।
रच्छक कोपि निबारन धाये ।।

⊗ निवारन (निवारण)=दूर हटाने के लिए ।

★ भालू-बन्दर सब देखने के लिये आये तब रक्षक क्रोध करके उन्हें रोकने के लिये दौड़े ।

* सभी के मन में सीता जी के दर्शन का उत्साह था । किन्तु पालकी के पास सबको जाने देने में अमर्यादा समझकर रक्षक रोकने लगे ।

कह रघुबीर कहा मम मानहु ।
सीतहि सखा पयादें आनहु ।।

⊗ मम=मेरा, पयादें=पैदल ।

★ श्रीरामजी ने कहा– हे सखे ! मेरा कहना मानो और सीताजी को पैदल ले आओ ।

* वाहन की झूठी शान को महत्व न देकर स्वजनों की भावना को महत्व दिया गया । सीताजी को पैदल चलाने का उद्देश्य यह था कि सब लोग उन्हें सुविधा से देख सकें ।

देखहुँ कपि जननी की नाईं ।
बिहसि कहा रघुनाथ गोसाईं ।।

★ बन्दर उन्हें माता की तरह देखें, श्रीरामजी ने हँसकर ऐसा कहा ।

* मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामजी ने यहाँ अपने वचनों द्वारा नारी की मर्यादा की रक्षा की है । कहा गया है– "नारी नाम मातृ भावना " अर्थात् नारी के प्रति मातृ भावना रहे ।

सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे ।
नभ ते सुरन्ह सुमन बहु बरषे ।।

⊗ बहु=बहुत, बरषे=बरसाये ।

★ भगवान के वचन सुनकर रीछ-वानर हर्षित हो गये और आकाश से देव ने बहुत से फूल बरसाये ।

* जिस बात से सबको सुख मिले, प्रसन्नता हो उससे देव शक्तियाँ भी प्रसन्न होती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जनक सुता समेत प्रभु,
शोभा अमित अपार ।
देखि भालु कपि हरषे,
जय रघुपति सुख सार ॥

⊗ अमित=बहुत अधिक ।

★ **श्रीजानकीजी सहित श्रीरामजी की असीम और अपार शोभा देख भालू बन्दर प्रसन्न हो गये और सुख के सार श्रीरामजी की जय बोलने लगे ।**

* लोक हित करने वालों को समाज का हार्दिक सम्मान प्राप्त होता है ।

अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे ।
मज्जनु करिअ समर श्रम छीजे ॥

⊗ जन=दास, पुनीत=पवित्र, छीजे=दूर हो जाय ।

★ **विभीषण ने कहा भगवान अब दास के घर को पवित्र कीजिए और वहाँ चलकर स्नान कीजिए जिससे युद्ध की थकान दूर हो जाये ।**

* अपने घर आदि साधनों की पवित्रता इसी में है कि वे सत् पुरुषों के काम आवे ।

देखि कोस मंदिर सम्पदा ।
देहु कृपाल कपिन्ह कहूँ मुदा ॥

⊗ कोस=खजाना, मुदा=प्रसन्नता से ।

★ **खजाना, भवन आदि सम्पत्ति आप स्वयं देखें तथा प्रसन्नतापूर्वक बानरों आदि को दें ।**

* मिली हुई सारी सम्पत्ति विभीषण ने प्रभु को सौंप दी और सत्कार्य में जीवन लगा देने वालों को उनकी आवश्यकता के अनुसार देने का आग्रह किया । सम्पत्तिवानों को ऐसा ही करना चाहिए ।

सुनत बचन मृदु दीन दयाला ।
सजल भए द्वौ नयन बिसाला ॥

★ **विभीषण के मृदुल वचन सुन करके कृपालु श्रीरामजी के दोनों विशाल नेत्रों में (प्रेमाश्रुओं का) जल भर आया ।**

* लोग वैभव पाकर सद्भावनायें खो देते हैं, परन्तु सद्भावनाओं के आधार पर सम्पदा का सदुपयोग होता देखकर ही भगवान सन्तुष्ट होते हैं ।

तोर कोस गृह मोर सब,
सत्य बचन सुनु भ्रात ।
भरत दशा सुमिरत मोहि,
निमिश कल्प सम जात ॥

★ **श्रीराम बोले हे भाई ! तुम्हारा खजाना और घर आदि सब मैं, अपने ही मानता हूँ इस पर विश्वास करो, किन्तु मुझे तो भाई भरत की दशा की याद करके एक-एक क्षण कल्प के समान बीत रहा है (अर्थात् जल्दी से जल्दी उनके पास पहुँचना चाहता हूँ)।**

* भगवान राम अपने सुख सम्मान और विश्राम को महत्व न देकर एक क्षण भी नष्ट किए बिना भरत के पास पहुँचना चाहते हैं, कैसा निर्मल प्रेम है ।

सुनत विभीषन बचन राम के ।
हरषि गहे पद कृपाधाम के ॥

★ **श्रीरामजी के वचन सुनकर विभीषणजी ने दया के धाम श्रीरामजी के पैर पकड़ लिये ।**

* जिनके जीवन क्रम में आदर्शों का समावेश होता है उनके शब्दों और आचरणों से सभी श्रद्धानत हो जाते हैं ।

बहुरि विभीषन भवन सिधायो ।
मनि गन बसन बिमान भरायो ॥

⊗ सिधायो=गये, मनि मन-(मणिगण)=बहु प्रकार के मणियों के ढ़ेर ।

★ **तब विभीषणजी पुनः अपने भवन को गये और उन्होंने अनेक प्रकर के मणियों के ढ़ेर और वस्त्रों से विमान को भर लिया ।**

* उपकार करने वालों के मन में बदले में कुछ लेने की आकांक्षा नहीं होती पर समर्थ व्यक्तियों को अपनी ओर से कृतज्ञता प्रकट करने के लिये यथा शक्ति भेंट करनी चाहिए ।

लै पुष्पक प्रभु आगे राखा ।
हँसि करि कृपासिंधु तब भाषा ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ फिर उस पुष्पक यान को लेकर भगवान के सामने रखा । तब दया के सागर श्रीरामजी हँसकर बोले ।

चढ़ि विमान सुनु सखा विभीषन ।
गगन जाइ बरषहु पट भूषन ।।

★ हे मित्र विभीषण ! सुनो, विमान पर चढ़कर, आकाश में जाकर वस्त्रों और गहनों को बरसा दो ।

* भगवान को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है, वे चाहते हैं उनको समर्पित सभी वस्तुएँ जनहित में लगादी जावें ।

नभ पर जाइ विभीषन तबहीं ।
बरषि दिए मनि अम्बर सबहीं ।।

⊗ तबही=उसी समय, बरषि दिए=बरसा दिया, अम्बर=वस्त्र ।

★ तब आदेश सुनते ही विभीषण जी ने नभ में जाकर सब मणियों और वस्त्रों को बरसा दिया ।

* विभीषण ने कीमती वस्त्रादि अपने ढंग से वितरित करने का आग्रह नहीं किया, वरन जैसा भगवान ने कहा वैसा ही कर दिया । समर्पण करने वाले को यही रीति अपनानी चाहिए ।

उमा जोग जप दान तप,
नाना मख ब्रत नेम ।
राम कृपा नहिं करहिं तसि,
जसि निष्केवल प्रेम ।।

⊗ मख=यज्ञ, नेम=नियम, तसि=उस प्रकार, जसि=जैसे निष्केवल=अनन्य ।

★ (शिवजी कहते हैं) हे पार्वती ! विविध प्रकार के योग, जप, दान, तपस्या यज्ञ, व्रत और नियम करने पर भी श्रीरामजी वैसी दया नहीं करते जैसी अनन्य प्रेम होने पर करते हैं ।

* सभी कर्मकाण्ड बाह्य साधन हैं,इन से भी आन्तरिक निर्मलता प्राप्त की जाती है, पर अनन्य प्रेम अन्तर साधना है जो आन्तरिक निर्मलता के बिना संभव ही नहीं, इसीलिए इसका महत्व अधिक है ।

चितइ सबन्हि पर कीन्ही दाया ।
बोले मृदुल बचन रघुराया ।।

⊗ चितइ=देखकर, मृदुल=मीठे ।

★ इसके बाद श्री रघुनाथजी सबको देखकर कृपा सहित कोमल वचन बोले ।

* भक्तों एवं भगवान का काम करने वालों को भौतिक सम्पदा का आकर्षण नहीं होता, वे तो प्रभु कृपा तथा उनकी प्रसन्नता ही चाहते हैं । इसीलिए श्रीरामजी वही भाव व्यक्त करने लगे ।

तुम्हरे बल मैं रावनु मार्‌यो ।
तिलक विभीषन कहँ पुनि सार्‌यो ।।

⊗ मार्‌यो=मारा, सार्‌यो=सम्पन्न किया ।

★ तुम्हारी शक्ति से ही मैंने रावण को मारा और विभीषण को राज तिलक सम्पन्न किया ।

* महान् पुरुष अपनी सफलता का श्रेय अपने छोटे-छोटे सहयोगियों को देते हैं । उनके द्वारा की गयी सहायता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं ।

निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू ।
सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू ।।

⊗ जाहू=जाओ, डरपहु=डरना ।

★ अब तुम सब अपने -अपने घर जाओ । मेरी याद करते रहना और किसी से डरना मत ।

* जो भगवान को याद रखता है अर्थात् भगवान के आदेशानुसार कार्य करता है उसे किसी से डरने की आवश्यकता नहीं है

प्रभु प्रेरित कपि भालु,
सब राम रूप उर राखि ।
हरष विषाद सहित चले,
बिनय बिबिध बिधि भाषि ।।

⊗ प्रेरित=प्रेरणा(आज्ञा), विषाद=शोक, भाषि=कहते हुए ।

★ लेकिन भगवान की आज्ञा से सब बानर भालू श्रीरामजी के रूप को हृदय में रखकर और विविध

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकार से विनय करते हुए हर्ष और शोक के साथ घर को चले ।

* प्रसन्नता इस बात की कि प्रभु के साथ रहकर अनुभव पाये तथा कार्य सफल हुआ तथा दुख बिछुड़ने के कारण हुआ ।

कपिपति नील रीछपति,
अंगद नल हनुमान ।
सहित विभीषन अपर जे,
जूथप कपि बलवान ।।

★ वानर राज सुग्रीव, नील, रीछराज जाम्बवान, अंगद, नल और हनुमान तथा विभीषण सहित और जो शक्तिशाली बानर सेनापति थे ।

अतिसय प्रीति देखि रघुराई ।
लीन्हे सकल विमान चढ़ाई ।।

★ श्रीरामजी ने उनका बहुत अधिक प्रेम देखकर सबको विमान पर चढ़ा लिया ।

* भगवान सच्ची प्रेम भावना वालों का बहुत सम्मान करते हैं, उन्हें अपने बराबर का स्थान देते हैं ।

मन महुँ बिप्र चरन सिर नायो ।
उत्तर दिसिहि विमान चलायो ।।

★ उसके पश्चात मन के अन्दर ही विप्र-चरणों में मस्तक झुका कर उत्तर दिशा की ओर विमान चलाया ।

* शुभ यात्रा के समय सत्पुरुषों का ही स्मरण करना चाहिए ।

जहँ जहँ कृपासिंधु बन,
कीन्ह बास बिश्राम ।
सकल देखाए जानकिहि,
कहे सबन्हि के नाम ।।

★ वन में जहाँ-जहाँ दया के समुद्र श्रीरामजी ने निवास और विश्राम किया था, वे समस्त स्थान प्रभु ने जानकीजी को दिखलाये और सबके नाम बतलाये ।

* धर्म-पत्नी का ज्ञान बढ़ाना पति का परम कर्तव्य है ।

पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी,
हरषित मज्जनु कीन्ह ।
कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहुँ,
दान बिबिध बिधि दीन्ह ।।

★ फिर त्रिवेणी में आकर प्रभु ने प्रसन्न होकर स्नान किया और बन्दरों सहित ब्राह्मणों को विविध प्रकार के दान दिये ।

* विप्रों से तात्पर्य सत्पात्र श्रेष्ठ जनों से है तथा विविध विधि का अर्थ है उनकी मर्यादा अनुसार और उनकी आवश्यकता के अनुरूप वस्तुएँ देना ।

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई ।
धरि बटुरूप अवधपुर जाई ।।

⊗ बुझाई=समझाकर, बटुरूप=ब्रह्मचारी का वेष ।

★ तब श्रीरामजी ने हनुमानजी को समझा कर कहा–तुम ब्रह्मचारी का रूप धारण करके अयोध्या को जाओ ।

भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु ।
समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ।।

★ भरत को हमारी कुशलता सुनाना और वहाँ की जानकारी लेकर तुम चले आना ।

* नीति यह है कि जहाँ पहुँचना है, वहाँ की जानकारी प्राप्त करलें तथा अपनी सूचना पहुँचा दें ।

तुरत पवनसुत गवनत भयऊ ।
तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ ।।

⊗ पहि=पास, गवनत भयऊ=चल दिये ।

★ पवन पुत्र हनुमानजी शीघ्र ही चल दिये । तब भगवान श्रीरामजी भरद्वाज जी के पास गये ।

नाना विधि मुनि पूजा कीन्ही ।
अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही ।।

★ ऋषि ने भगवान राम की अनेक प्रकार पूजा की तथा स्तुति करके आशीर्वाद दिया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

* पूजा सम्मान का प्रतीक है । समाज हितैषी तथा लोकरक्षकों को वयोवृद्ध सम्मानित भी करें तथा आशीर्वाद भी दें यह उचित है ।

रहेउ एक दिन अवधि अधारा ।
समुझत मन दुख भयउ अपारा ।।

★ उधर अयोध्या में श्री भरत जी सोचने लगे कि श्रीरामजी के लौटने की अवधि का केवल एक दिन ही रह गया है, ऐसा सोचकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ।

* अवधि पूरी होने को हुई और कोई समाचार भी नहीं मिला । इससे भरतजी चिंतित एवं दुखी हुए ।

बीते अबधि रहहिं जौं प्राना ।
अधम कवन जग मोहि समाना ।।

★ समय पूरा हो जाने पर भी श्रीरामजी न लौटे और यदि मेरे प्राण रह गये तो संसार में मेरे समान नीच कौन होगा ?

राम बिरह सागर महँ,
भरत मगन मन होत ।
बिप्र रूप धरि पवनसुत,
आई गयउ जनु पोत ।।

⊗ मगन=निमग्न (डूबत) पोत जहाज ।

★ श्रीरामजी के विरह रूपी समुद्र में भरतजी का मन डूब रहा था, उसी समय पवन पुत्र हनुमानजी ब्राह्मण का रूप धारण करके इस प्रकार आ गये मानों (उन्हें डूबने से बचाने के लिये) जहाज आ गया ।

* अपने प्रियजनों से बिछुड़े किसी व्यक्ति के पास उसके प्रेमी का संदेश पहुँचा देना भी उसे डूबने से बचा लेने के बराबर श्रेयस्कर है ।

बैठे देखि कुसासन,
जटा मुकुट कृस गात ।
राम राम रघुपति जपत,
स्रवत नयन जलजात ।।

⊗ कृस (कृश)=दुर्बल, गात=शरीर स्रवत=टपकना, जलजात=कमल ।

★ हनुमानजी ने दुर्बल शरीर भरत जी को जटाओं का मुकुट बनाये, राम ! राम रघुपति ! जपते हुए और कमल के समान आँखों से जल बहाते हुए कुश के आसन पर बैठे हुए देखा ।

* श्री हनुमानजी को पता था कि भरत अयोध्या का राज्य सँभाले हैं, किन्तु उन्हें सिंहासन नहीं कुशासन, राज मुकट नहीं जटा मुकट धारण किए एवं प्रेम विभोर देखकर वास्तविक स्थिति समझ गये ।

मन महँ बहुत भाँति सुख मानी ।
बोलेउ श्रवन सुधा सम बानी ।।

⊗ श्रवन (श्रवण)=कान ।

★ मन में अनेक प्रकार से सुख मानकर वे कानों के लिए अमृत यचन बोले–

* भरत की विरक्ति तथा प्रेम भावना देखकर उन्हें प्रसन्नता हुई और वही मिठास वाणी में व्यक्त हो उठी ।

रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता ।
आयउ कुसल देव मुनि त्राता ।।

★ वे ही रघुवंश के तिलक, सज्जनों को सुख देने वाले और देवताओं तथा मुनियों की रक्षा करने वाले श्रीरामजी सकुशल लौट आये हैं ।

सुनत बचन बिसेर सब दूखा ।
तृषावन्त जिमि पाइ पियूषा ।।

⊗ दूखा=दुःख , तृषावन्त=प्यासा, पियूषा (पीयूष)=अमृत ।

★ ये वाणी सुनते ही (भरतजी) सारे दुःख भूल गये, जैसे प्यासा मनुष्य अमृत पाकर प्यास के दुःख को भूल जाता है ।

* श्रीभरत जी को इस समाचार से पूर्ण तृप्ति हुई क्योंकि उन्हें और कोई इच्छा थी ही नहीं । अनन्य निष्ठा वाला ही ऐसा संतोष पा सकता है ।

कपि तब दरस सकल दुख बीते ।
मिले आज मोहि राम पिरीते ।।

⊗ दरस=दरश, पिरीते=प्यारे, तब (तब)=तेरा ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ (भरत जी ने कहा) हे हनुमान ! तुम्हारे दर्शन से मेरे सब दुःख नष्ट हो गये ! मानों तुम्हारे स्वरूप में आज प्यारे रामजी ही मिल गये ।

* भगवान के प्रति समर्पित व्यक्ति भी भगवान के भक्तों को भगवान जैसा प्रिय ही लगता है ।

भरत चरन सिरु नाइ,
तुरित गयउ कपि राम पहिं ।
कहीं कुसल सब जाइ,
हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि ।।

★ फिर भरतजी के चरणों में मस्तक झुकाकर के हनुमानजी शीघ्र ही श्रीरामजी के पास गये और जाकर उन्होंने सब कुशल कही । तब प्रभु प्रसन्न होकर विमान पर चढ़कर चले ।

* इतना लम्बा समय बीत जाने पर भी भरत के प्रेम में कोई कमी नहीं आयी यह जानकर श्रीराम को प्रसन्नता हुई ।

हरषि भरत कोसलपुर आए ।
समाचार सब गुरुहि सुनाए ।।

★ तब प्रसन्न होकर भरत जी अयोध्या पहुँचे और सब समाचार गुरुजी को सुनाए ।

* भरत जी ने शुभ समाचार बताने का क्रम मर्यादा के अनुसार गुरु वशिष्ठ से ही प्रारम्भ किया ।

पुनि मंदिर महँ बात जनाई ।
आवत नगर कुसल रघुराई ।।

⊗ मंदिर=राज महल, जनाई=अवगत करा दी ।

★ फिर राजमहल में यह बात सूचित कर दी कि श्रीरामजी कुशलता पूर्वक नगर को आ रहे हैं ।

सुनत सकल जननी उठि धाई ।
कहि प्रभु कुसल भरत समुझाई ।।

⊗ सुनत=सुनते ही ।

★ संदेश सुनते ही सब माताएँ उठ दौड़ी । तब भरत जी ने भगवान श्रीरामजी की कुशल कहकर सबको समझाया ।

* सभी मातायें अर्थात् कैकयी भी आयी उनके मन में भी श्रीराम के प्रति समान स्नेह था ।

समाचार पुरवासिन्ह पाए ।
नर अरु नारि हरषि सब धाए ।।

⊗ पुर वासिन्ह=नगरनिवासी ।

★ जब नगर निवासियों ने यह समाचार पाया तो स्त्री पुरुष सभी प्रसन्न होकर दौड़ पड़े ।

* जिसके प्रति जनता को हार्दिक श्रद्धा होती है,उसका समाचार मिलते ही लोग रुक नहीं पाते ।

आवत देखि लोग सब,
कृपासिंधु भगवान ।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ,
उतरेउ भूमि बिमान ।।

⊗ प्रेरेउ=प्रेरणा दी, उतरेउ=उतरा ।

★ दया के सागर भगवान ने सब लोगों को आते देखकर नगर के निकट उतरने का आदेश दिया, तब विमान भूमि पर उतरा ।

आए भरत संग सब लोगा ।
कृस तन श्री रघुबीर बियोगा ।।

★ भरतजी के संग सब लोग आये । श्रीरामजी के वियोग में सबके शरीर दुर्बल हो गये थे ।

बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक ।
देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ।।

⊗ धनु-सायक=धनुष-बाण, बसिष्ठ=वशिष्ठ ऋषि ।

★ भगवान श्रीराम ने बामदेव, वशिष्ठ आदि मुनि श्रेष्ठों को देखा तब धनुष-बाण धरती पर रखकर ।

* सच्चे वीर अपनी शक्ति का अहंकार नहीं करते, दुष्टों के दमन के लिये हथियार धारण किये जाते हैं । सत् पुरुषों के सामने उन्हें नीचे रख देना शस्त्रबल की तुलना में ज्ञान को अधिक महत्व देने का प्रतीक है ।

धाइ धरे गुरु चरन सरोरुह ।
अनुज सहित अति पुलक तनोरुह ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ सरोरुह=कमल, तनोरुह=रोम-रोम ।

★ **छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित दौड़कर श्रीरामजी ने गुरुजी के चरण-कमल पकड़ लिये, उनका रोम-रोम पुलकित हो उठा ।**

* केवल शिष्टाचार वश नहीं, आन्तरिक प्रेम के कारण किये गये अभिवादन का ऐसा ही प्रभाव होता है ।

भेंटि कुसल बूझी मुनिराया ।
हमरे कुसल तुम्हारिहि दाया ।।

★ **मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठ जी ने उन्हें गले लगाकर कुशलता पूछी । श्रीरामजी ने कहा– आपकी ही कृपा से हमारी कुशल है ।**

* अपनी कुशल अपने प्रयासों से भी होती है, किन्तु ठीक प्रयास करने की क्षमता तथा बुद्धि गुरुजनों से ही प्राप्त होती है, अत:उनकी कृपा को ही प्रधान मानना उचित है ।

गहे भरत पुनि पद पंकज ।
नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज ।।

⊗ अज=ब्रह्मा ।

★ **फिर भरतजी ने भगवान के वे चरण-कमल पकड़े, जिन्हें देवता, मुनि शंकरजी और ब्रह्माजी प्रणाम करते हैं ।**

* भरत को श्रीरामजी से मिलने की इतनी व्याकुलता थी तो भी उन्होंने मर्यादा भंग नहीं होने दी, गुरुदेव के मिल लेने पर ही वे मिले ।

पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन,
भेंटे हृदयँ लगाइ ।
लछिमन भरत मिले तब,
परम प्रेम दोउ भाइ ।।

⊗ सत्रुहन=शत्रुघ्न, लछिमन=लक्ष्मण ।

★ **फिर प्रभु श्रीरामजी प्रसन्न होकर शत्रुघ्नजी को गले लगाकर मिले । तब परम प्रेमपूर्वक भरत और लक्ष्मण दोनों भाई मिले ।**

* मिलने का क्रम छोटे बड़े की मर्यादा के अनुसार ही चलता रहा । किसी ने भी भावुकता मर्यादाहीन नहीं होने दी ।

प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी ।
जनित बियोग बिपति सब नासी ।।

⊗ जनित=उत्पन्न, नासी=नष्ट हो गये ।

★ **भगवान श्रीराम को देखकर सभी नगरवासी प्रसन्न हुए और विरह से उत्पन्न सभी दु:ख नष्ट हो गये ।**

* बरसों के विरह का दु:ख मिलन की एक घड़ी में सब दूर हो जाता है ।

कृपा दृष्टि रघुबीर बिलोकी ।
किए सकल नर नारि बिसोकी ।।

⊗ बिसोकी=शोकमुक्त (शोक रहित) ।

★ **श्रीरामजी ने दया दृष्टि से देखकर समस्त नर-नारियों को शोक मुक्त कर दिया ।**

* दृष्टि का बड़ा महत्व है, क्रोध भरी दृष्टि से लोग दुखी हो जाते हैं– और प्रेम भरी दृष्टि से दुख दूर हो जाते हैं ।

कौसल्यादि मातु सब धाई ।
निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई ।।

⊗ बच्छ=बछड़ा, जनु=मानो, धेनु=गाय, लवाई=नई व्यायी हुई ।

★ **कौशल्या आदि माताएँ ऐसे दौड़ीं, मानों नई व्यायी हुई गायें अपने बछड़ों को देखकर दौड़ पड़ी हों ।**

* उस समय न तो झूठी शान का दिखावा था और न नारियों पर निरर्थक बन्धन । रानियाँ भी जनता के बीच सहज भाव से पहुँच जाती थी ।

भेटेउ तनय सुमित्राँ,
राम चरन रति जानि ।
रामहि मिलत कैकेई,
हृदयँ बहुत सकुचानि ।।

⊗ तनय=पुत्र, रति=प्रेम, सकुचानि=सकुचायी ।

★ **सुमित्राजी अपने पुत्र लक्ष्मणजी का श्रीरामजी के चरणों में प्रेम जानकर मिली । श्रीरामजी ने मिलते समय कैकेयी हृदय में बहुत सकुचायी ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

* (१) माँ का प्रेम एवं प्रोत्साहन पाने का हकदार वही पुत्र है जो स्वार्थ छोड़कर धर्म रक्षा के लिए जीवन खपा दे । (२) कैकेयी का संकोचपूर्वक मिलना प्रेम एवं पश्चाताप का प्रतीक है ।

लछिमन सब मातन्ह मिलि,
हरषे आसिष पाइ ।
कैकेइ कहुँ पुनि पुनि मिले,
मन कर छोभ न जाइ ।।

⊗ छोभ=रोष, आसिष=आशिष ।

★ **लक्ष्मणजी सभी माताओं से मिलकर और आशीर्वाद पाकर प्रसन्न हुए । कैकेयी जी से बहुत बार मिले, लेकिन उनके मन का क्रोध नहीं जाता ।**

* लक्ष्मण जी के सत्साहस के लिये सभी माताओं से आशीर्वाद देकर उनका उत्साह बढ़ाया । वन गमन के प्रसंग में माँ कैकेई को उन्होंने भला बुरा कहा था,उसका उन्हें दु:ख बना ही रहा ।

सासुन्ह सबनि मिली बैदेही ।
चरनन्हि लागि हरषु अति तेही ।।

⊗ सासुन्ह=सासुओं से, सबनि=सबसे, चरनन्हि=चरणों से ।

★ **सीताजी सब सासुओं से मिली और उनके चरणों से लगकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई ।**

* सास बहू का प्रेम भी माता-पुत्र के प्रेम से कम नहीं होना चाहिये ।

देहि असीस बूझि कुसलाता ।
होइ अचल तुम्हार अहिवाता ।।

⊗ असीष=आशिष, अहिवाता=सुहाग ।

★ **सासुएँ कुशलता पूछकर आशीर्वाद दे रही हैं कि तुम्हारा सौभाग्य अमर रहे ।**

* बहुओं के सौभाग्य के साथ पुत्रों का हित जुड़ा रहता है अत: सास बहू की शुभचिन्तक ही होनी चाहिए ।

कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहि ।
चितवति कृपासिंधु रनधीरहि ।।

⊗ चितवति=देख रही ।

★ **कौशल्या जी बार-बार दया के सागर और रणधीर श्रीरामजी को देख रही है ।**

हृदयँ विचारति बारहिं बारा ।
कवन भाँति लंका पति मारा ।।

★ **वे बार-बार हृदय में विचार करती हैं कि इन्होंने लंकापति रावण कैसे मारा होगा ?**

* माता के लिए अपना पुत्र सदा छोटा ही रहता है । इसलिए उसे अपने पुत्र द्वारा वीरतापूर्ण कार्य करने पर आश्चर्य होता है । जैसे कि कौशल्या को श्रीराम पर होता था ।

पुनि रघुपति सब सखा बोलाए ।
मुनि पद लागहु सकल सिखाए ।।

★ **फिर श्रीरामजी ने सब मित्रों को बुलाया और सबको सिखाया कि मुनि के चरणों में प्रणाम करो ।**

* मित्रों को परस्पर आदर सम्मान तो देना ही चाहिये । किन्तु सही शिक्षा दिशा और प्रेरणा भी देते रहना चाहिए ।

गुरु बसिष्ठ कुलपूज्य हमारे ।
इन्ह की कृपा दनुज रन मारे ।।

★ **श्रीरामचन्द्रजी उनसे बोले ये गुरु वसिष्ठजी हमारे वंश भर के पूजनीय हैं । इन्हीं की कृपा से युद्ध में राक्षस मारे गये हैं ।**

* महान् पुरुष अपने कार्य की सफलता का श्रेय गुरुकृपा को देकर निरर्थक अहंकार से बच जाते हैं ।

ऐ सब सखा सुनहु मुनि मेरे ।
भए समर सागर कहँ बेरे ।।

⊗ समर=संग्राम, बेरे (बड़े)=जहाज ।

★ **(फिर गुरुजी से कहा) हे मुनि ! सुनिये ! ये सब मेरे मित्र हैं । ये संग्राम रूपी सागर में मेरे लिए जहाज के समान हुए ।**

* सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता का भाव रखकर उन्हें श्रेय सम्मान देना उचित है ।

मम हित लागि जन्म इन्ह हारे ।
भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

⊗ हारे=बाजी लगादी ।

★ मेरे भले के लिए इन्होंने अपने जन्म की बाजी लगादी, ये मुझे भरत से भी अधिक प्यारे हैं ।

* भाई तो कुल के सम्बन्ध के कारण अपनापन मानता है, पर जो केवल सिद्धान्त के नाते पूरा साथ देने को तैयार हो जाये वे अधिक सराहनीय है ।

कौसल्या के चरनन्हि,
पुनि तिन्ह नायउ माथ ।
आसिष दीन्हें हरषि तुम्ह,
प्रिय मम जिमि रघुनाथ ।।

★ फिर उन लोगों ने कौशल्याजी के पैरों में सिर झुकाया । कौशल्याजी ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये (और कहा) तुम मुझे श्रीराम के समान प्यारे हो ।

* माता कौशल्या ने भी उनके प्रति पुत्र समान प्रेम, प्रदर्शित किया । ऐसा हार्दिक स्नेह एवं सम्मान लोगों को जनहित में सब कुछ होम देने की प्रेरणा दे सकता है ।

गुरु बसिष्ठ द्विज लिए बोलाई ।
आजु सुघरी सुदिन समुदाई ।।

★ गुरु वसिष्ठजी ने ब्राह्मणों को बुला लिया (और कहा) आज ही शुभ घड़ी, सुन्दर दिन आदि समस्त अच्छे योग हैं ।

* शुभ कार्य के लिये विलम्ब नहीं करना चाहिए, शुभ कार्य जिस दिन हो, वही दिन शुभ मुहूर्त है ।

सब द्विज देहु हरषि अनुसासन ।
रामचन्द्र बैठहिं सिंघासन ।।

★ आप सब ब्राह्मण प्रसन्न होकर आदेश दीजिए, जिससे श्रीरामजी सिंहासन पर विराजमान हों ।

* धर्म तंत्र व्यवस्थित था तथा ब्राह्मण रूढ़िवादी दुराग्रह न करके विवेक सम्मत सुझावों का समर्थन करते थे । इसीलिये घड़ी-पल देखने के चक्कर में पड़े बिना ही सहमति देने की बात कही गयी ।

कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका ।
जग अभिराम राम अभिषेका ।।

⊗ अभिराम=आनन्द ।

★ वे समस्त अनेक ब्राह्मण कोमल वाणी से कहने लगे कि श्रीरामजी का राज्याभिषेक सारे जगत को आनन्द देने वाला है ।

* सत्पुरुषों को शासन सौंपने में सभी का हित होता है ।

अब मुनिवर बिलम्ब नहिं कीजै ।
महाराज कहँ तिलक करीजै ।।

★ हे मुनिश्रेष्ठ ! अब देर मत कीजिए और महाराज का तिलक तुरन्त कीजिए ।

* ब्राह्मण समाज ने भी मुहूर्त के चक्कर में न पड़कर शीघ्र ही शुभ कार्य सम्पन्न करने की सहमति दी ।

तब मुनि कहेउ सुमन्त्र सन,
सुनत चलेउ हरषाइ ।
रथ अनेक बहु बाजि गज,
तुरत सँवारे जाइ ।।

⊗ बाजि=घोड़े, सँवारे=सजाये ।

★ तब मुनि ने सुमंत्रजी से कहा, वे सुनते ही प्रसन्न होकर चले । उन्होंने शीघ्र ही जाकर उनके रथ, घोड़े और हाथी सजाये ।

जहँ तहँ धावन पठइ पुनि,
मंगल द्रव्य मगाइ ।
हरष समेत बसिष्ठ पद,
पुनि सर नायउ आइ ।।

⊗ धावन=दूत, पठइ=भेजकर ।

★ और जहाँ-तहाँ दूतों को भेजकर शुभ वस्तुएँ, मँगाकर फिर प्रसन्नता के साथ आकर बसिष्ठजी के पैरों में सिर झुकाया ।

* राज्य के अधिकारी कुशल और कर्तव्य परायण हों तो कोई भी व्यवस्था देखते-देखते बन जाती है, देर नहीं लगती ।

वेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे ।
नभ कर मुनि जय जयति पुकारे ।।

★ तब ब्राह्मणों ने वेद मंत्रों का उच्चारण किया, नभ में देवता और मुनि जय घोष करने लगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* माँगलिक कार्य को प्रारंभ करते समय वेद मंत्रों की ध्वनि से वातावरण को पवित्र कर लेना चाहिए ।

प्रथम तिलक वसिष्ठ मुनि कीन्हा ।
पुनि सब बिप्रन आयसु दीन्हा ।।

★ (सब से) पहले मुनि वसिष्ठजी ने तिलक किया, फिर उन्होंने समस्त ब्राह्मणों को (तिलक करने की) आज्ञा प्रदान की ।

* राज्य-सत्ता सही व्यक्तियों के हाथ में जाय, इसका उत्तरदायित्व ऋषियों तथा सेवा परायण विचारकों पर रहता था । वे तिलक करके सत्ता पाने वाले व्यक्ति की प्रमाणिकता पर सार्वजनिक रूप से अपनी सहमति प्रदान किया करते थे ।

सिंघासन पर त्रिभुअन साई ।
देखि सुरन्ह दुंदभी बजाई ।।

⊗ दुंदुभी=नगाड़े ।

★ त्रिभुवन के स्वामी श्रीरामजी को (अयोध्या के) सिंहासन पर (विराजित देख) देवता नगाड़े बजाने लगे ।

* सत्पुरुषों के हाथ में सत्ता पहुँचने से समाज में श्रेष्ठ प्रवृत्तियाँ पनपती हैं, इसलिये देव शक्तियाँ संतुष्ट होती हैं ।

महाराज कर सुभ अभिषेका ।
सुनत लहहिं नर बरति बिबेका ।।

★ महाराज श्रीरामजी के राज्याभिषेक का विवरण सुनकर मनुष्य वैराग्य और विवेक को प्राप्त कर लेते हैं ।

* श्रीरामचन्द्रजी ने राज्य प्राप्ति के लिये प्रयास नहीं किया किन्तु उनकी लोक मंगल की भावना और पात्रता के कारण वह उन्हें स्वत: मिला । यह मर्म जिसकी समझ में आ गया वह वैराग्य और विवेक प्राप्त कर सकता है ।

ब्रह्मानन्द मगन कपि,
सबके प्रभु पद प्रीति ।
जात न जाने दिवस तिन्ह,
गए मास षट बीति ।।

⊗ षट=छ:, मास=महीने ।

★ बन्दर सब ब्रह्मानन्द में लीन हैं । भगवान के चरणों में सबका प्रेम है । उन्होंने दिन जाते जाने ही नहीं और (बात ही बात में) छ: महीने व्यतीत हो गये ।

* जिनका प्रेम सांसारिकता में है वे दुखी रहते हैं तथा जीवन का एक-एक क्षण भारी लगता है । जो अपने प्रेम को भगवान की ओर मोड़ देते हैं, वे आनन्द पाते हैं और जीवन खेल की तरह बीत जाता है ।

बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाहीं ।
जिमि परद्रोह सन्त मन माहीं ।।

⊗ बिसरे=भूल गये ।

★ वे लोग अपने घर भूल गये (जागृति की तो बात क्या) उन्हें स्वप्न में भी घर की याद नहीं आती, जैसे सन्तों के मन में दूसरों का द्रोह करने की बात नहीं आती ।

* सच्चे सन्त सारा जगत प्रभुमय देखते हैं, इसीलिए उन्हें घर का मोह भी नहीं सताता और किसी के अहित का विचार भी नहीं उठता ।

तब रघुपति सब सखा बोलाए ।
आइ सबन्हि सादर सिरु नाए ।।

★ तब श्रीरामजी ने सब मित्रों को बुलाया । सबने आकर सम्मान के साथ मस्तक झुकाया ।

तुम्ह अति कीन्ह मोरि सेवकाई ।
मुख पर केहि विधि करौं बड़ाई ।।

★ तुम लोगों ने मेरी बड़ी सेवा की है । मुँह पर किस विधि तुम्हारी प्रशंसा करूँ ।

* सज्जन लोग अपने सामने अपनी प्रशंसा कराना पसंद नहीं करते, सुनने से निरर्थक अहंकार भी बढ़ता है।

ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे ।
मम हित लागि भवन सुख त्यागे ।।

★ हे मित्रों ! तुम मुझे बहुत प्रिय लगते हो, मेरे भले के लिए तुम लोगों ने घरों को तथा सभी प्रकार के सुखों को छोड़ दिया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

* घरों के प्रति जिनका मोह है तथा जो आराम तलब हैं,वे श्रेष्ठ कार्य तथा भगवान की प्रसन्नता प्राप्त नहीं कर सकते ।

अनुज राज सम्पति बैदेही ।
देह गेह परिवार सनेही ।।

★ छोटे भाई, राज्य, सम्पत्ति सीता, अपना शरीर, घर परिवार और मित्र –

सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना ।
मृषा न कहउँ मार यह बाना ।।

⊗ मृषा=झूठ, बाना=स्वभाव ।

★ ये समस्त मुझे प्रिय हैं, लेकिन तुम्हारे समान नहीं । मैं झूठ नहीं कहता यह मेरा स्वभाव है ।

* भगवान को सबसे अधिक प्रिय वहीं साधक लगते हैं जो परमार्थ के लिए अपनी सुख-सुविधाओं की चिन्ता किए बिना ही लग पड़ते हैं ।

अब गृह जाहु सखा सब,
भजेहु मोहि दृढ़ नेम ।
सदा सर्बगत सर्बहित,
जानि करेहु अति प्रेम ।।

⊗ सर्वगत=सर्व व्यापक ।

★ हे मित्रगण ! अब सभी लोग घर जाओ, वहाँ दृढ़ नियम से मुझे भजते रहना । मुझे सदा सर्वव्यापक और सबका भला करने वाला जानकर बहुत प्रेम करना ।

* भगवान चाहते हैं कि उनके भक्त (१) नियमों पर दृढ़ रहें ढीले ढाले न रहें (२) वे भगवान को सर्वव्यापी और सबका हितैषी मानें, केवल अपने पास सीमित अथवा पक्षपात करने वाला न मानें ।

प्रभु रुख देखि बिनय बहु भाषी ।
चलेउ हृदयँ पद पंकज राखी ।।

★ भगवान का रुख देख करके, बहुत प्रकार विनय भरे बचन कह करके तथा हृदय में चरण कमलों को धर कर वे चले ।

* भगवत प्रेमियों को चाहिए कि अपनी इच्छा उन पर न थोपें उनका इशारा पाकर उसी के अनुसार आचरण करें ।

अति सादर सब कपि पहुँचाए ।
भाइन्ह सहित भरत पुन आए ।।

★ बहुत आदर के साथ सब बन्दरों को पहुँचा करके भाइयों सहित भरतजी लौट आये ।

* सत्कार्य के सहयोगी रीछ-वानरों को भी घर के प्रियजनों की तरह शिष्टाचार तथा सम्मानपूर्वक विदा किया गया । ऐसी सहृदयता का अभ्यास सबको करना चाहिए ।

पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा ।
दीन्हे भूषन बसन प्रसादा ।।

★ फिर दयालु श्रीरामजी ने निषाद राज को बुला लिया और उसे भूषण-वस्त्र प्रसाद स्वरूप दिये ।

* मनुष्यों में नीच ऊँच का भाव नहीं रखना चाहिए, सत् कर्म करने वाले व्यक्तियों को उनके कार्य एवं भावना के अनुरूप आदर देना उचित है ।

जाहु भवन मम सुमिरन करेहू ।
मन क्रम बचन धर्म अनुसरेहू ।।

⊗ सुमिरन (स्मरण)=याद, अनुसरेहू=अनुसार चलना ।

★ (फिर कहा) अब तुम भी घर जाओ, वहाँ मेरा स्मरण करते रहना और मन वाणी तथा कर्म से धर्म के अनुसार चलना ।

* धर्म केवल कहने-सुनने अथवा केवल पूजागृह तक सीमित रखने की चीज नहीं, उसे मन वाणी और कर्म से अपनाना चाहिए ।

तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता ।
सदा रहेहु पुर आवत जाता ।।

★ तुम मेरे सखा हो और भरत के समान भाई हो । अवधपुरी में सदैव आते-जाते रहना ।

* जाति से नीच, सभ्यता की दृष्टि से जंगली समझे जाने वाले निषाद को प्रभु ने अपने मित्र और भाई की तरह माना, ऐसी ही भावना रखकर समाज का उत्कर्ष किया जा सकता है । पिछड़े वर्ग की प्रगतिशील बनने के लिए उन्हें अपना निकट सम्पर्क देना चाहिए । आते-जाते रहने का आग्रह इसीलिये किया गया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रघुपति चरित देखि पुरबासी ।
पुनि-पुनि कहहिं धन्य सुख रासी ।।

★ **श्रीरामजी का यह चरित्र देखकर अयोध्यापुर वासी बार-बार कहते हैं कि सुख की खान श्रीरामजी धन्य हैं ।**

* सत् पुरुषों द्वारा जीवन में आदर्श का व्यवहार देखकर जनता उसकी सराहना भी करती है और वैसा ही बनने की प्रेरणा भी पाती है ।

राम राज बैठे त्रैलोका ।
हरषित भए गए सब सोका ।।

★ **श्रीरामजी के राज्य पर आसीन होने पर तीनों लोक प्रसन्न हो गये, उनके सारे शोक जाते रहे हैं ।**

⊗ श्रीरामजी जैसे अच्छे राजा की प्रजा के दु:ख उसके अच्छे राज्य-संचालन से अपने आप चले जाते हैं ।

बयरु न कर काहू सन कोई ।
राम प्रताप बिषमता खोई ।।

⊗ बयरु=वैर, विषमता=भेद-भाव ।

★ **कोई किसी से बैर नहीं करता है । श्रीरामजी के प्रताप से सब का परस्पर भेद-भाव नष्ट हो गया ।**

* जब लोगों के स्वार्थ टकराते हैं तो बैर पैदा होता है । श्रेष्ठ शासन में सबको विकास का अवसर मिलने से बैर नहीं बढ़ता विषमता अज्ञान तथा पक्षपात के कारण पैदा होती है । वह भी अच्छे शासन में नहीं होते ।

बरनाश्रम निज निज धरम,
निरत वेद पथ लोग ।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं,
नहिं भय सोक न रोग ।।

★ **सभी लोग अपने-अपने वर्ण और आश्रम के अनुकूल धर्म मे लगे हुए हमेशा वेद के रास्ते पर चलते हैं और सुख पाते हैं । उन्हें न किसी बात का भय है, न शोक है और न रोग है ।**

* वर्ण का अर्थ है स्वाभाविक प्रवृत्ति, आश्रम का अर्थ है ब्राह्य स्थिति । दोनों के अनुरूप अपना कर्तव्य निश्चित करके चलने वाले सुखी निरोगी और निर्भय रहते हैं ।

दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
राम राज नहिं काहुहि व्यापा ।।

★ **राम-राज में देह सम्बन्धी देव सम्बन्धी तथा भौतिक दु:ख किसी को नहीं व्यापते ।**

* तीनों प्रकार के दु:ख शारीरिक असंयम, लौकिक ज्ञान का अभाव तथा आध्यात्मिक ज्ञान की उपेक्षा से होते हैं । रामराज्य के सब संयमी गुणों तथा साधक थे अत: दु:ख अपना प्रभाव नहीं जमा पाते थे ।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती ।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ।।

★ **सभी मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बतायी हुई नीति (मर्यादा) में लगे रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं ।**

* परस्पर प्रीति का अर्थ है एक दूसरे के हितों का ध्यान रखकर चलना, स्वधर्म का अर्थ है अपने लिए अनिवार्य कर्तव्यों का पालन, श्रुति नीति का भाव है प्रामाणिक विधि से चलना । सामाजिक व्यवस्था इन्हीं आधारों पर बन सकती है ।

चारिउ चरन धर्म जग माहीं ।
पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं ।।

⊗ चारिउ चरन=चारों चरणों (संयम, सदाचरण, सेवा, शौर्य) अघ=पाप ।

★ **धर्म अपने चारों चरणों से संसार में फैल रहा है, स्वप्न में भी कहीं पाप नहीं है ।**

* संयम द्वारा शक्तियों का जागरण और विकास, सदाचरण द्वारा उनका सदुपयोग , सेवा द्वारा सप्रवृत्तियों का विस्तार तथा शौर्य द्वारा बाधाओं का निवारण संभव होता है ।

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा ।
सब सुन्दर सब बिरुज सरीरा ।।

⊗ अल्प मृत्यु=छोटी अवस्था में मृत्यु, पीरा=पीड़ा, बिरुज=निरोग ।

★ **छोटी उम्र में किसी की मृत्यु नहीं होती, न किसी की कोई पीड़ा होती है । सबके शरीर सुन्दर और रोगरहित हैं ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* गर्भ से ही शिशुओं के स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाय, शिशु और बाल अवस्था में उचित पोषण तथा देख रेख रहे तो अल्प मृत्यु नहीं होती । शरीर के अंगों को ठीक प्रकार प्रयोग में लाने की विधि संयमी तथा श्रमशील जीवन से पीड़ा और रोगों से छुटकारा तथा सुन्दर शरीर संभव है ।

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना ।
नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना ।।

⊗ लच्छनहीना=लक्षणहीन ।

★ न कोई दरिद्र है न दुःखी है और न दीन है । न कोई मूर्ख और न अच्छे लक्षणों से रहित है ।

* जहाँ सभी की बुद्धि और गुणों के विकास की व्यवस्था हो, उचित न्याय उपलब्ध हो वहाँ कोई दीन-दुखी नहीं रहता । जहाँ व्यक्ति परिश्रमी हो; उत्पादन और वितरण की व्यवस्था हो वहाँ दरिद्रता नहीं रहती ।

सब निर्दभ धर्मरत पुनी ।
नर अरु नारि चतुर सब गुनी ।।

⊗ निर्दभ=दम्भ रहित, (झूठा प्रदर्शन नहीं करना), पुनी=पुण्यात्मा ।

★ सब दम्भ रहित है, धर्म पर लगे हुए हैं और पुण्यात्मा हैं । नर और नारी सब चतुर और गुणवान् हैं ।

* (१) झूठे प्रदर्शन का लोभ छोड़ने पर ही लोग धर्म और पुण्य का अर्जन कर पाते हैं । (२) गुण और चतुरता में नर और नारी समान रूप से आगे बढ़े तभी समाज आगे बढ़ता है ।

सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी ।
सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी ।।

⊗ गुनग्य (गुणज्ञ)=गुणों का महत्व समझने वाले, सयानी=चतुराई ।

★ सब गुणों का आदर करने वाले और पण्डित हैं तथा सभी ज्ञानी है । सब कृतज्ञ (दूसरे के किये हुए उपकार को मानने वाले) हैं, कपट-चतुराई धूर्तता किसी में नहीं है ।

* कपट चतुराई छोड़कर जब लोग परस्पर कृतज्ञता रखते हैं तभी प्रेमभाव बढ़ता है । (२) समाज में जब गुणों का आदर होता है तो सभी विद्वान और ज्ञानवान बनना चाहते हैं ।

राम राज नभगेस सुनु,
सचराचर जग माहिं ।
काल कर्म सुभाव गुन,
कृत दुख काहुहि नाहिं ।।

⊗ नभगेस=गरुड़जी, कृत=पैदा किए हुए ।

★ (काकभुशुण्डजी कहते हैं) हे पक्षिराज गरुड़जी ! सुनिये, श्रीराम के राज्य में जड़ चेतन सारे संसार में काल, कर्म, स्वभाव और गुणों से पैदा हुए दुःख किसी को भी नहीं होते (अर्थात् इनके बन्धन में कोई नहीं रहता) ।

* राम राज्य का अर्थ किसी व्यक्ति का राज्य नहीं भगवान की मर्यादाओं के अनुरूप व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवस्था बनाना है । काल, कर्म और स्वभाव ईश्वर निर्धारित मर्यादाओं के भंग होने पर ही दुःख देते हैं, जहाँ सब उसी मर्यादा में है वहाँ इनका दुःख नहीं व्यापता ।

सब उदार सब पर उपकारी ।
विप्र चरन सेवक नर नारी ।।

★ सब नर-नारी उदार हैं, सभी परमार्थी हैं और सब ब्राह्मणों के चरणों के सेवक हैं ।

* उदारता का अर्थ है किसी को उसकी व्यक्तिगत भूलों के कारण विकास से वंचित न होने देना। विप्र चरन सेवक का अर्थ है श्रेष्ठ जनों का आदर और अनुकरण करने वाले ।

एक नारि ब्रत रत सब झारी ।
ते मन बच क्रम पति हितकारी ।।

★ सब पुरुष एक पत्नी व्रत रखते हैं । इसी प्रकार नारियाँ भी मन, बचन और कर्म से पति का भला करने वाली होती हैं ।

* स्त्री और पुरुष दोनों ही जब अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान् हों तभी श्रेष्ठ समाज की रचना संभव है ।

दण्ड जतिन्ह कर भेद जहँ,
नर्तक नृत्य समाज ।
जीतिहु मनहि सुनिअ अस,
रामचन्द्र के राज ।।

⊗ जतिन्ह (यती)=संन्यासियों, जीतहु=जीतना, मनहि=मन को ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ श्रीरामजी के राज्य में दण्ड केवल संन्यासियों के हाथों में है और भेद नाचने वालों के नृत्य समाज में है और 'जीतो' शब्द मात्र मन के जीतने के लिए ही सुना जाता है ।

* (१) अच्छे राज्य में अपराध नहीं होते इसलिए दण्ड की आवश्यकता ही नहीं (२) लोगों में परस्पर तनिक भी भेद भाव नहीं रहता । (३) वैर-विरोध तथा अनीति अनाचार न होने से युद्ध और जय पराजय का प्रश्न ही नहीं उठता ।

फूलहिं फरहि सदा तरु कानन ।
रहहिं एक संग गज पंचानन ।।

⊗ कानन=वन, पंचानन=सिंह ।

★ वनों में पेड़ सदा फूलते और फलते हैं । हाथी और सिंह (बैर भूलकर) एक साथ रहा करते हैं ।

* (१) पेड़ और वन फूलने फलने का अर्थ है । वृक्षों का संबर्धन तथा उपेक्षा अथवा स्वार्थवश उन्हें नष्ट न होने देना (२) शेर हाथी का साथ रहना स्वाभाविक बैर को भूल जाने का प्रतीक हैं जहाँ अधिकांश व्यक्ति सद्भावनाशील होते हैं वहाँ झगड़ालू भी मिल-जुल कर रहने लगते हैं ।

खग मृग सहज बयरु बिसराई ।
सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ।।

★ पक्षी और पशु सबने स्वाभाविक बैर भुलाकर परस्पर प्रेम बढ़ा लिया है ।

* मनुष्य की सद्भावना से पशु-पक्षी भी प्रभावित होने लगते हैं ।

लता बिटप मागें मधु चवहीं ।
मनभावतो धेनु पय स्रवहीं ।।

⊗ विटप=वृक्ष, चवही=टपका देते हैं, मनभावतो=मनचाहा, स्रवहीं=देती हैं ।

★ बेल और पेड़ माँगने से ही मधु टपका देते हैं । गायें मनचाहे ढंग से दूध देती हैं ।

* 'पय स्रवही' 'मधु चवहीं' के दो अर्थ है (१) प्रकृति स्वत: सहयोग करती हैं (२) अपनी श्रेष्ठतम विभूतियाँ लोग जनहित के लिए स्वत: दे देते हैं ।

ससि सम्पन्न सदा रह धरनी ।
त्रेताँ भइ कृतयुग कै करनी ।।

⊗ ससि=खेती, सम्पन्न=भरी रहना ।

★ पृथ्वी हमेशा खेती से भरी रहती है । त्रेतायुग में सतयुग की स्थिति हो गई है ।

* (१) हमेशा धरती खेतों से सम्पन्न होने का अर्थ है कि किसी भी ऋतु में खेतों को खाली नहीं होने दिया जाता । (२) सतयुग की करनी शब्द स्पष्ट करता है कि लोगों के आचरण सतयुग के अनुरूप बन गये । स्पष्ट है कि आचरण सुधार लेने से किसी भी युग में सतयुग जैसी स्थिति पैदा की जा सकती है ।

बिधु महि पूरि मयूखन्हि,
रबि तप जेतनेहि काज ।
मागें बारिद देहिं जल,
रामचन्द्र के राज ।।

⊗ बिधु=चन्द्रमा, मयूखन्हि=किरणों से, जेतनेहि=जितने की आवश्यकता, बारिद=बादल ।

★ श्रीरामजी के राज्य में चन्द्रमा अपनी किरणों से पृथ्वी को भर देता है । सूर्य उतना ही तपता है जितने की आवश्यकता होती है और बादल माँगने से जल देते हैं ।

* यह उक्ति भी दो अर्थ वाली है (१) मनुष्य की सद्भावना प्रकृति को भी प्रभावित कर सकती है । (२) चन्द्र (शीतलता स्नेहपूर्ण) सूर्य (शौर्य नियन्त्रण पूर्ण) बादल (वितरण व्यवस्था) वृत्ति के व्यक्तियों का सन्तुलन बना रहता है ।

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे ।
दीन अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे ।।

⊗ बाजि मेध=अश्वमेध यज्ञ ।

★ भगवान श्रीराम ने करोड़ों अश्वमेध यज्ञ किये और ब्राह्मणों को बहुत दान दिये ।

* विश्व-स्तर पर शासन तन्त्र को व्यवस्थित बनाने के लिये किये गये यज्ञ सम्मेलन अश्वमेध कहलाते थे । श्रीरामचन्द्र जी ने इसके लिये उल्लेखनीय प्रयास किये ।

श्रुति पथ पालक धर्म धुरन्धर ।
गुनातीत अरु भोग पुरन्दर ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

⊗ धुरन्धर=धुरी को धारण करने वाले, गुनातीत (गुणातीत) = तीनों गुणों से अतीत, पुरन्दर=इन्द्र ।

★ श्रीरामजी वेद मार्ग के पालन करने वाले धर्म की धुरी को धारण करनेवाले, तीनों गुणों (सत्व, रज, तम) से परे और ऐश्वर्य में इन्द्र के समान हैं ।

* शासकों में यह गुण हो तो देश में सर्वत्र सुख सम्पन्नता बिखर जाती है ।

पति अनुकूल सदा रह सीता ।
सोभा खानि सुसील बिनीता ।।

⊗ सुसील=सुशील, बिनीता=बिनम्र ।

★ शोभा की खान, सुशील और विनम्र सीताजी हमेशा पति के अनुकूल ही रहती हैं ।

* जिस प्रकार पुरुष पद का अहंकार न करके अपने कर्तव्य में लगे,उसी प्रकार स्त्री भी रूप गुण का अहंकार न करके विनम्र तथा सेवा परायण रहे । 'पति अनुकूला' का अर्थ है उस दिशा में सहयोग करने वाली ।

-जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी ।
बिपुल सदा सेवा बिधि गुनी ।।

★ यद्यपि घर में अनेक दास और दासियाँ हैं और वे सभी सेवा की विधि में निपुण हैं ।

निज कर गृह परिचरजा करई ।
रामचन्द्र आयसु अनुसरई ।।

⊗ परिचरजा=परिचर्या=सेवा ।

★ फिर भी सीताजी घर की समस्त सेवा अपने ही हाथों से करती हैं और श्रीरामजी के आदेश का अनुसरण करती हैं ।

* नौकरों पर आश्रित रहने वालों की व्यवस्था बिगड़ जाती है, गृहिणी स्वयं कार्य निपुण तथा श्रमशील हो तभी सन्तुलन बनता है ।

कौसल्यादि सासु गृह माहीं ।
सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं ।।

⊗ मान=प्रतिष्ठा, मद=घमण्ड ।

★ घर में कौशल्याजी समस्त सासुओं की सीताजी सेवा करती हैं, उन्हें किसी बात की प्रतिष्ठा और घमण्ड नहीं है ।

* सासु आदि घर के बुजुर्गों की सेवा बहू का धर्म है । सेवा मान मद से रहित करने से परिवार में प्रेम बना रहता है । सेवा से बहू की प्रतिष्ठा बढ़ती है, घटती नहीं ।

सेवहि सानुकूल सब भाई ।
राम चरन रति अति अधिकाई ।।

★ सभी भाई अनुकूल रहते हुए सेवा में लगे रहते हैं । श्रीरामजी के चरणों में उनका बहुत अधिक प्रेम है ।

* बड़ों के प्रति छोटों की भावना ऐसी ही हो । सेवा में लगे रहने का अर्थ निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्यों में लगे रहना है ।

प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं ।
कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं ।।

★ वे हमेशा भगवान का मुख कमल ही देखते रहते हैं कि दयालु श्रीरामजी कभी हमें कुछ सेवा करने को कहें ।

* सेवा-कार्य बेगार या अहसान की तरह नहीं किये जाने सेवा, करने वाले के मन में और अधिक करने का उल्लास बना रहे, सेवा मिलना अपना सौभाग्य मानना चाहिये ।

राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती ।
नाना भाँति सिखावहिं नीती ।।

★ श्रीरामजी भाँ भाइयों से प्रेम करते हैं और उन्हें अनेक प्रकार की नीतियाँ सिखाते हैं ।

* बड़ों का कर्तव्य है कि अपने छोटों से अधिक प्रम तो करें पर समय-समय पर व्यावहारिक शिक्षा भी देते रहें ।

दुइ सुत सुन्दर सीताँ जाए ।
लवकुस बेद पुरानन्ह गाए ।।

⊗ दुइ=दो, जाए=उत्पन्न किये ।

★ सीताजी ने लव और कुश-नाम के दो पुत्र पैदा किये जिनका वेद-पुराणों ने बखान किया है ।

* श्रेष्ठ सन्तान संयम तथा तप पूर्ण प्रयासों से पैदा की जाती है । पैदा किये शब्द के पीछे यही भाव है कि अनायास

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पैदा हो नहीं गये संकल्पपूर्वक किये गये । 'सीता जाये' के पीछे यह तथ्य है कि इस निर्माण में माता की भूमिका प्रधान होती है ।

दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर ।
हरि प्रतिबिम्ब मनहुँ अति सुन्दर ।।

⊗ बिजई (बिजयी)=योद्धा, बिनई=विनयी, प्रतिबिम्ब=आभास,मंदिर=धाम ।

★ **वे दोनों ही विख्यात योद्धा, नम्र और गुणों की खान, बहुत सुन्दर हुए मानों श्रीराम के प्रतिबिम्ब ही हों ।**

* जो सन्तान संस्कार पूर्वक उत्पन्न की जाती है और ठीक ढंग से पाली पोषी जाती हैं,उसमें सभी प्रकार के श्रेष्ठ गुण प्रकट हो जाते हैं ।

दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे ।
भए रूप गुन सील घनेरे ।।

★ **दो-दो पुत्र सब भाइयों के हुए, जो बहुत ही सुन्दर, गुणवान् और सुशील थे ।**

* सन्तान की संख्या की मर्यादा रखने तथा उनको सुसंस्कारी बनाने में सभी भाई सतर्क रहे ।

प्रातकाल सरऊ कर मज्जन ।
बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन ।।

⊗ सरऊ=सरयू (नदी का नाम) मज्जन=स्नान ।

★ **प्रातः सरयू नदी में स्नान करके, ब्राह्मणों और सज्जनों के संग सभा में बैठते हैं ।**

* मनुष्य को सदा अपनी संगति सज्जन पुरुषों तथा ब्राह्मणों के साथ रखनी चाहिए ।

बेद पुरान बसिष्ठ बखानहिं ।
सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं ।।

★ **वसिष्ठजी वेद और पुराणों की कथाएँ बखानते हैं और श्रीरामजी सुनते हैं । यद्यपि वे सब समझते हैं ।**

* सद्ज्ञान चर्चा सुनना जनसाधारण के लिये उपयोगी है, बड़ों को वैसा करते देखकर सभी वैसा करने लगते हैं । इसीलिये श्रीरामजी सब कुछ जानते हुए भी सत्संग में नियम से बैठते हैं ।

अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं ।
देखि सकल जननी सुख भरहीं ।।

⊗ संजुत=साथ लेकर, भरहीं=भर जाती हैं ।

★ **वे भाइयों के संग भोजन करते हैं । उन्हें देखकर समस्त माताएँ आनन्द से भर जाती हैं ।**

* भोजन सांसारिक सुविधाओं का प्रतीक है । अपने हाथ में सत्ता होने से स्वयं अधिक सुविधायें प्राप्त करना गलत है । आदर्श पद्धति यह है कि अधिकार के नाते कर्तव्य विशेष सँभाले तथा सुख-सुविधायें सबके समान ही रखें ।

भरत सत्रुहन दोनउ भाई ।
सहित पवनसुत उपवन जाई ।।

★ **भरत जी और शत्रुघ्न जी दोनों भाई हनुमानजी के साथ बगीचे में जाकर–**

बूझहिं बैठि राम गुन गाहा ।
कह हनुमान सुमति अवगाहा ।।

⊗ गाहा (गाथा)=कथा, अवगाहा=गोता लगाकर ।

★ **वहाँ बैठकर श्रीरामजी के गुणों की कथाएँ पूछते हैं और हनुमान जी सुन्दर बुद्धि से उन गुणों में अवगाहन करते हुए उनका बखान करते हैं ।**

* भरत शत्रुघ्न श्रीराम के साथ वन नहीं गये थे अतः उनके जीवन संस्मरणों से प्रेरणा लेने के लिये छोटे-बड़े का अहंकार त्यागकर हनुमान जी से पूछकर सब चरित्र सुनते हैं । सच्चे जिज्ञासु ऐसे ही होते हैं ।

अवधपुरी बासिन्ह कर,
सुख संपदा समाज ।
सहस सेष नहिं कहि सकहिं,
जहें नृप राम विराज ।।

★ **अयोध्या में रहने वालों की सुख सम्पति के समुदाय का वर्णन सहस्त्र मुख वाले शेषजी भी नहीं कर सकते, क्योंकि वहाँ श्रीरामचन्द्रजी राजा के रूप में विराजमान हैं ।**

* जहाँ शासक श्रेष्ठ निष्पक्ष एवं कर्तव्य परायण प्रकृति के हों वहाँ जनसाधारण की भी सम्पन्नता बढ़ती है, और वह सुखकारक भी सिद्ध होती है, अन्य सम्पत्ति कुछ लोगों तक रहती है और उससे विकार पैदा होकर दु:ख दायक हो जाते हैं ।

चारु चित्रशाला गृह-गृह,
प्रति लिखे बनाइ ।
राम चरित जे निरख मुनि,
त मनलेहिं चुराइ ।।

⊗ निरख=ध्यान से देखना, मनलेहिं चुराई=मन चुरा लेते हैं अर्थात् मन को आकर्षित कर लेते हैं ।

★ **घर घर में सुन्दर चित्रों की चित्रशालायें बनी हैं, जिसमें श्रीराम के चरित्र को देखकर मुनियों के मन भी खो जाते हैं ।**

* केवल चरित्र सुनाने की अपेक्षा सुन्दर चित्रों द्वारा शिक्षण तथा प्रेरणा देना अधिक प्रभावशाली होता है । इसलिए घरों में श्रेष्ठ प्रेरणा देने वाले चित्र ही स्थापित करने चाहिये ।

सुमन बाटिका सबहिं लगाई ।
बिबिध भाँति करि जतन बनाई ।।

⊗ वाटिका=बगीचे, जतन(यतन)=प्रयास अथवा श्रमपूर्वक ।

★ **सब लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के फूलों के बगीचे यत्न करके लगा रक्खे हैं ।**

* घर के अवकाश के क्षणों में परिश्रम करके बगीचा लगाना, आलस्य और बनावट से बचकर स्वास्थप्रद सुन्दरता बढ़ाना श्रेष्ठ नागरिकों के लिए उचित है ।

लता ललित बहु जाति सुहाई ।
फूलहिं सदाबसंत कि नाई ।।

⊗ ललित=सुन्दर, फूलहिं=फूलती ।

★ **जिनमें अनेक जातियों की सुन्दर लताएँ हमेशा बसन्त के समान फूलती रहती हैं ।**

* बेलें सुन्दरता के साथ फूल और शाक भी देती हैं । उन्हें संभालकर रखा जाय तो बसन्त जैसी सुन्दरता घर में बनी रह सकती है । बहु जाति का अर्थ है— हर ऋतु के अनुकूल बेलें लगायी जावें ।

उत्तर दिसि सरजू बह,
निर्मल जल गम्भीर ।
बाँधे घाट मनोहर,
स्वल्प पंक नहिं तीर ।।

⊗ गम्भीर=गहरा, पंक=कीचड़, स्वल्प=थोड़ा भी ।

★ **नगर के उत्तर दिशा में सरयू नदी बह रही है, जिसका पानी निर्मल और गहरा है । मनोहर घाट बँधे हुए है, किनारे पर थोड़ा भी कीचड़ नहीं है ।**

* यह नगरवासियों की स्वच्छता प्रेम का प्रतीक है । घाट स्वच्छ, पानी निर्मल तथा कीचड़ जरा भी न होने देना तभी सम्भव है जब सभी नागरिक उसका ध्यान रखें और प्रयास करें ।

पनिघट परम मनोहर नाना ।
तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना ।।

⊗ पनिघट=पानी भरने का घाट ।

★ **पानी भरने के लिए अनेक घाट हैं जो बड़े सुन्दर हैं । वहाँ पुरुष नहाते नहीं हैं ।**

* पीने का पानी प्राप्त करने के स्थान अनेक होना सुविधा की दृष्टि से और वहाँ किसी को स्नान न करने देना स्वच्छता और स्वास्थ्य की दृष्टि से आवश्यक है ।

कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी ।
बसहिं ज्ञान रत मुनि सन्यासी ।।

⊗ उदासी=विरक्त, ज्ञानरत=ज्ञान के विकास और प्रसार में लगे हुए ।

★ **नदी के किनारे पर कहीं-कहीं विरक्त और ज्ञान परायण, मुनि और संन्यासी वास करते हैं ।**

* नगर के पास ज्ञानवान तथा तपस्वियों का निवास होने से जन साधारण को सहज ही श्रेष्ठ जीवन की प्रेरणा मिलती रहती है ।

तीर तीर तुलसिका सुहाई ।
बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई ।।

★ **सरयू के किनारे-किनारे सुन्दर तुलसी जी के झुण्ड के झुण्ड, अनेक पौधे मुनियों ने लगा रक्खे हैं ।**

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* वायु शुद्धि तथा उपचार के लिए तुलसी के पौधों को लगाना उत्तम है ।

जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं ।
बैठि परस्पर इहइ सिखावहिं ।।

★ लोग जहाँ तहाँ श्रीरामजी के गुण गाते हैं और बैठकर कर एक-दूसरे को यही शिक्षा देते हैं ।

* 'इहइ सिखावहिं' का अर्थ है (१) वैसा ही गुणवान बनने की प्रेरणा देते हैं । (२) भगवान के व्यक्ति रूप में हीं गुणों और प्रवृत्तियों शक्तियों के रूप में स्मरण करने का मर्म लोगों को समझाने का आग्रह करते हैं । वह रूप कैसे हों यह आगे दिया है—

काल कराल ब्याल खगराजहिं ।
नमत राम अकाम ममता जहिं ।।

⊗ कराल=भयानक, ब्याल=सर्प, अकाम=निष्काम ।

★ अयोध्यावासी निष्काम भावना से मोह छोड़कर काल रूपी सर्प को नष्ट करने वाले गरुड़ के रूप में श्रीरामचन्द्रजी के आगे मस्तक झुकाते हैं ।

* मस्तक झुकाने का अर्थ उसी रूप का स्मरण तथा सम्मान करना है ।

लोभ मोह मृगजूथ किरातहि ।
मनसिज करि हरि जन सुखदातहि ।।

⊗ किरात=शिकरी, मनसिज=कामदेव ।

★ लोभ-मोह के समान हरिणों के झुण्ड के नाश करने वाले शिकारी के रूप में, कामदेव रूपी हाथी के लिए सिंह के समान तथा सेवकों को सुख देने वाले रूप में भगवान का स्मरण करो ।

* दोषों को नाश करने वाले तथा सज्जनता को सुख पहुँचाने वाले भगवान हैं— यह जानने वाला सज्जन ही बनेगा । दोषों से भय भी नहीं आयेगा ।

संसय सोक निबिड तम भानुहि ।
दनुज गहन बन दहन कृसानुहि ।।

⊗ निबिड=घने, कृसानुहि=अग्नि को ।

★ सन्देह और शोक रूपी घने अन्धकार के विनाश करने वाले सूर्य के रूप में और राक्षस रूपी घने वन को जलाने वाले अग्नि के समान भगवान को समझो ।

* शोक और सन्देह ग्रस्त व्यक्ति अन्धे की तरह सही स्थिति देख नहीं पाता । असुरता का भय उसे भला नहीं बनने देता । भगवान इन दोनों बाधाओं को दूर करते हैं,ऐसा विश्वास होने से प्रगति रुकती नहीं ।

बहु बासना मसक हिम रासिहि ।
सदा एक रस अज अबिनासिहि ।।

⊗ हिमरासिहि=बर्फ के ढेर को, अज=अजन्मा, अबिनासिहि= अविनाशी को ।

★ अनेक वासनाओं के समान मच्छरों को नाश करने में हिमपात के समान सदैव एक रस, जन्म और नाश से परे श्रीराम जी को भजो ।

* (१) बर्फ गिरने से मच्छर स्वयं नष्ट हो जाते हैं, उसी तरह भगवान का प्रकाश अन्दर फैलने से वासनायें समाप्त होती हैं । (२) ऐसे श्रीरामजी का रस अर्थात् रुचि-स्वभाव कभी बदलता नहीं और वे जन्म मृत्यु से परे अर्थात् व्यक्ति रूप में नहीं चेतना रूप में सदा रहने वाले हैं ।

जब से राम प्रताप खगेसा ।
उदित भयउ अति प्रबल दिनेसा ।।

★ (काक भुशुण्डजी कहते हैं) हे पक्षिराज गरुड़जी ! जब से रामप्रताप के समान बहुत प्रचण्ड सूर्य उदित हुआ ।

* जब मनुष्य निष्ठापूर्वक प्रभु समर्पित जीवन जीने लगता है तो उसे अपने अन्दर प्रभु की अतुलित शक्ति का आभास होने लगता है,यही भगवान के प्रताप सूर्य का उदय कहा जाता है ।

पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका ।
बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका ।।

⊗ बहुतेन्ह=बहुतों को, बहुतन=बहुतों के ।

★ तब से तीनों लोकों में पूरा भर गया है । इससे बहुतों को सुख मिला और बहुतों के मन में शोक हुआ ।

* सत् पुरुषों का प्रभाव क्षेत्र बहुत विशाल होता है और उनके प्रभाव से श्रेष्ठ मार्ग वालों को सुख तथा हीन मार्ग वालों को कष्ट होता है । उनकी व्याख्या आगे है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जिन्हाँह सोक ते कहउँ बखानी ।
प्रथम अबिद्या निसा नसानी ॥

★ **जिन-जिन लोगों को शोक हुआ, उन्हें मैं वर्णन करके कहता हूँ । (सब दूर प्रकाश छा जाने से) पहले तो अविद्या रूपी रात नष्ट हो गई ।**

* महान् पुरुषों के आगमन से अज्ञान का अन्धकार दूर हो जाता है । वे अनेक भ्रान्तियों और गलत मान्यताओं को मिटा देते हैं ।

अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने ।
काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥

⊗ उलूक=उल्लू, लुकाने=छिप गये , कैरव=कुमुद, सकुचाने= मुँद गये ।

★ **पाप रूपी उल्लू जहाँ-तहाँ छिप गये और काम क्रोध के समान कुमुद मुँद गये ।**

* उल्लू और कुमुद रात्रि में अपना प्रभाव दिखा पाते हैं दिन में नहीं । उसी प्रकार पाप, क्रोध और काम भाव भगवान की प्रेरणा फैलते ही नदारद हो जाते हैं ।

बिबिध कर्म गुन काल सुभाऊ ।
ए चकोर सुख लहहिं न काऊ ॥

⊗ काऊ=कभी ।

★ **अनेक प्रकार के (बन्धन कारक) कर्म, गुण, काल और स्वभाव- ये चकोर हैं, जो (राम प्रताप रूपी सूर्य के प्रकाश में) कभी आनन्द नहीं पाते ।**

* कर्म गुण और स्वभाव सांसारिक दृष्टिकोण के व्यक्ति पर हावी होकर उसे नचाते हैं और ईश्वर परायण के यह अधीन हो जाते हैं अर्थात् मनमानी न करने देकर उचित रूप से उपयोग करने योग्य हो जाते हैं ।

मत्सर मान मोह मद चोरा ।
इन्ह कर हुनर न कवनिहुँ ओरा ॥

★ **डाह, मान, ममता और मद रूपी जो चोर हैं, उनकी कला भी किसी ओर नहीं चलती ।**

* चोर अन्धेरे में ही सक्रिय होते हैं । डाह आदि अवगुण चोर की तरह मानवीय गुणों को चुरा लेते हैं । ईश्वर निष्ठा का प्रकाश फैलते ही उनके हुनर बेकाम हो जाते हैं ।

धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना ।
ये पंकज बिकसे बिधि नाना ॥

★ **धर्म रूपी तालाब में ज्ञान, विज्ञान के विविध प्रकार के कमल खिल गये ।**

* कमल से सरोवर शोभित होता है, कमल सूर्यादय से खिलते हैं– धर्म, ज्ञान विज्ञान से शोभा पाता है, जो-जो ईश्वर परायण होने पर स्वयं विकसित होने लगते हैं ।

सुख संतोष बिराग बिवेका ।
बगति सोक ए कोक अनेका ॥

★ **सुख, सन्तोष, बैराग्य और विवेक ये बहुत से चकवे शोक मुक्त हो गये ।**

* जैसे दिन में चकवा का दुःख दूर हो जाता है वैसे ही प्रभु का प्रकाश मिलते ही यह सद्गुण अन्तर में उमड़ने लगते हैं ।

यह प्रताप रबि जाके,
उर जब करई प्रकास ।
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे,
कह ते पावहिं नास ॥

⊗ पछिले=पीछे से, बाढ़हि=बढ़ जाते हैं, पावहिं=हो जाते हैं ।

★ **श्रीराम प्रताप रूपी सूर्य जिसके हृदय में जब प्रकाश करता है, तब जिनका वर्णन पीछे से किया गया है वे (धर्म, ज्ञान विज्ञान, सुख, सन्तोष, वैराग्य और विवेक बढ़ते हैं और जिनका वर्णन प्रथम किया गया है, वे (अविद्या, पाप, काम, काल, गुण, स्वभाव आदि) नष्ट हो जाते हैं ।**

* भगवान का यह प्रभु प्रताप किसी काल विशेष अथवा स्थान विशेष से उदय नहीं होता, किसी भी व्यक्ति के अतःकरण में उदय हो सकता है तथा उसे रामराज्य जैसी अनुभूति हो सकती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भ्रातन्ह सहित रामु एक बारा ।
संग परम प्रिय पवन कुमारा ।।

★ एक बार भाइयों के साथ श्री रामजी परमप्रिय हनुमान जी के साथ बैठे थे–

जोरि पानि कह तब हनुमन्ता ।
सुनहु दीनदयाल भगवन्ता ।।

★ तब हनुमानजी हाथ जोड़कर बोले– हे कृपालु प्रभु ! सुनिये ।

नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं ।
प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं ।।

⊗ अहहीं=रहे हैं ।

★ हे नाथ ! भरतजी कुछ पूछना चाहते हैं, परन्तु प्रश्न करते हुए मन में सकुचा रहे हैं ।

* संकोच यह कि हमारे समाधान में भगवान के अधिक महत्व का समय नष्ट न हो जाये ।

तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ ।
भरतहिं मोहि कछु अन्तर काऊ ।।

★ (श्रीरामजी ने कहा)– हनुमान, तुम मेरा स्वभाव समझते हो । भरत के और मेरे बीच में कभी भी कोई भेद नहीं है ।

* भगवान संकोच नहीं चाहते स्पष्टता चाहते हैं ।

सुनि प्रभु बचन भरत गहि चरना ।
सुनहु नाथ प्रनतारति हरना ।।

★ भगवान की वाणी सुनकर भरत जी ने उनके चरण पकड़ लिये । (और कहा) हे नाथ ! हे शरणागत के कष्टों को हरण करने वाले ! सुनिये ।

* अहंकार न करके बड़ों को अपने अनुकूल पाकर कृतज्ञ भाव प्रकट करना चाहिए ।

संतन्ह कै महिमा रघुराई ।
बहु बिधि बेद पुरानन्ह गाई ।।

★ हे राम जी वेद पुराणों ने संतों की महिमा अनेक प्रकार से गाई है ।

संत असंत भेद बिलगाई ।
प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई ।।

⊗ बिलगाई=अलग-अलग, प्रनतपाल = शरण में आये की रक्षा करने वाले ।

★ हे शरणागत के पालन करने वाले संत और असंत भेद भिन्न-भिन्न करके मुझे समझाकर कहिये ।

* संत असंत का सही-सही भेद जान लेने से सन्तों का अनुकरण किया जा सकता है और असन्त बाह्य वेष बनाकर हमें ठग नहीं सकते ।

संतन्ह के लच्छन सुन भ्राता ।
अगनित श्रुति पुरान विख्याता ।।

★ (श्रीरामजी ने कहा) हे भाई ! संतो के लक्षण (गुण) अनन्त हैं, जो वेद और पुराणों में विख्यात हैं ।

संत असंतन्हि कै असि करनी ।
जिमि कुठार चंदन आचरनी ।।

⊗ कुठार=कुल्हाड़ा, आचरनी=आचरण होता है ।

★ संत और असंतों की करनी ऐसी है जैसे कुल्हाड़ा और चन्दन का स्वभाव होता है ।

* काटने वाली कुल्हाड़ी को भी चन्दन अपनी सुगन्ध ही देता है । इसी प्रकार संत कष्ट पहुँचाने वालों का भी हित ही चाहते हैं ।

ताते सुर सीसन्ह चढ़त,
जग बल्लभ श्रीखण्ड ।
अनल दाहिपोटल घनहिं,
परसु बदन यह दण्ड ।।

⊗ बल्लभ=प्रिय, श्रीखण्ड=वन्दन, दाहि=जलाकर, घनहि= घन से, परसु=कुल्हाड़ी ।

★ इसी गुण के कारण चन्दन देवताओं के मस्तक पर चढ़ता है और संसार का प्रिय हो रहा है और कुल्हाड़ी के मुँह को यह दण्ड मिलता है कि उसको अग्नि में जलाकर फिर घन से पीटते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* चन्दन का संत जैसा स्वभाव होने के कारण ही सारा संसार उसको आदर देता है तथा कुल्हाड़ी के समान असन्त का स्वभाव होने के कारण उन्हें सभी ठुकराते हैं ।

बिषय अलम्पट सील गुनाकर ।
पर दुख दुख सुख सुख देखे पर ।।

⊗ अलम्पट=अलिस, गुनाकर=गुणों की खान ।

★ **संत विषयों में लिप्त नहीं होते शील और सद्गुणों के भंडार होते हैं । उन्हें दूसरों का दुःख देखकर दुःख और सुख देखकर सुख होता है ।**

* संत की पहिचान उनके गुणों और दूसरों के प्रति संवेदना से की जा सकती है ।

सम अभूतरिपु बिमद बिरागी ।
लोभामरष हरष भय त्यागी ।।

⊗ अभूतरिपु=शत्रु नहीं, बिमद=मद से रहित, लोभामरष=लोभ और क्रोध ।

★ **वे समानत्व रखते हैं, उनके मन में कोई शत्रु नहीं है, वे मद से रहित और वैराग्यवान होते हैं तथा लोभ क्रोध हर्ष में भी भय को त्याग देते हैं ।**

* हर्ष की स्थिति में भी मनुष्य एकपक्षीय बात सोचने लगता है । हर्ष में भी सन्तुलन बनाये रखें और भय को त्याग दें ।

कोमल चित दीनन्ह पर दाया ।
मन बच क्रम मम भगति अमाया ।।

⊗ अमाया=निष्कपट ।

★ **उनका चित्त बड़ा कोमल होता है । वे गरीबों पर कृपा करते हैं तथा मन, वाणी और कर्म से मेरी निष्कपट भक्ति करते हैं ।**

* केवल कहने सुनने का दिखावा ही करने वाले संत नहीं ।

सबहि मानप्रद आपु अमानी ।
भरत प्रान सम मम ते प्रानी ।।

⊗ अमानी=मान रहित ।

★ **सभी को आदर देते हैं, परन्तु स्वयं मानरहित होते हैं । हे भरत ! वे संतजन मेरे प्राणों के समान हैं ।**

* अपने लिए कठोर दूसरे के लिये उदार होना संत का स्वभाव है । ऐसे ही व्यक्ति भगवान का प्यार पाते हैं ।

बिगत काम मम नाम परायन ।
शांति बिरति बिनती मुदितायन ।।

⊗ मुदितायन=(मुदिता अयन)प्रसन्नता के घर ।

★ **उनको कोई कामना नहीं होती वे मेरे नाम में लीन रहते हैं । शक्ति, वैराग्य, विनय और प्रसन्नता के भण्डार ही हैं ।**

सीतलता सरलता मयत्री ।
द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री ।।

⊗ मयत्री= मित्र भाव, जनयत्री=उत्पन्न करने वाली ।

★ **उनकी शीतलता तथा सरलता सभी के प्रति मित्र भाई और ब्राह्मण के चरणों में वह प्रीति होती है, जो धर्मों को उत्पन्न करने वाली है ।**

ए सब लच्छन बसहिं जासु उर ।
जानेहु तात सन्त सन्तत फुर ।।

⊗ संतत=सदा, फुर=सच्चा ।

★ **हे तात ! ये सभी लक्षण जिसके हृदय में बसते हैं उसको हमेशा सच्चा सन्त समझना ।**

सम दम नियम नीति नहि डोलहिं ।
परुष बचन कबहूँ नहिं बोलहिं ।।

⊗ परुष बचन=कठोर बचन ।

★ **जो शम (मन के निग्रह) दम (इन्द्रियों के निग्रह) नियम और नीति से कभी डिगते नहीं हैं और मुख से कभी कटु वचन नहीं बोलते हैं ।**

* संत नियमों के पक्के और कठोर बचन न बोलने वाले होते हैं ।

निंदा अस्तुति उभय सम,
समता मम पद कंज ।
ते सज्जन मम प्रानप्रिय,
गुन मंदिर सुख पुंज ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

★ जिन्हें निन्दा और प्रशंसा दोनों समान हैं और मेरे चरण कमलों में जिनका प्रेम है, वे गुणों के भंडार और सुख की राशि संत जन मुझे प्राणों के समान प्रिय हैं ।

* निन्दा स्तुति में समान का अर्थ है जो निन्दा से निराश नहीं होते और प्रशंसा से फूल नहीं जाते ।

सुनहुँ असंतन्ह केर सुभाऊ ।
भूलेऊ संगति करिअ न काऊ ।।

★ अब दुष्टों का स्वभाव सुनो, कभी भूलवश भी उनकी संगति नहीं करनी चाहिए ।

* दुष्ट की संगति जीवन को पतन और दु:ख की ओर ले जाने वाली होती है, इसलिए उससे बचना चाहिए ।

खलन्ह हृदयँ अति पाप बिसेषी ।
जरहिं सदा पर सम्पति देखी ।।

⊗ ताप=सन्ताप, जरहिं=जलते हैं ।

★ दुष्टों के हृदय में अत्यन्त संताप रहता है । वे दूसरों की सम्पत्ति (सुख) देखकर हमेशा जलते हैं ।

* ईर्षा करने वाला स्वयं भी दु:खी होता रहता है ।

जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई ।
हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई ।।

★ वे जहाँ कहीं भी पराई निन्दा सुन पाते हैं, वहाँ ऐसे प्रसन्न होते हैं मानों मार्ग में पड़ी निधि पा ली हो ।

काम क्रोध मद लोभ परायन ।
निर्दय कपटी कुटिल मलायन ।।

⊗ मलायन (मल+अयन)=पाप के घर ।

★ वे काम, क्रोध, मद और लोभ में लगे हुए तथा क्रूर, कपटी, कुटिल और पाप के घर होते हैं ।

* पाप के घर से तात्पर्य है पापों में लगे रहने वाले और दूसरों को लगाते रहने वाले ।

बयरु अकारन सब काहू सों ।
जो कर हित अनहित ताहू सों ।।

★ वे बिना कारण ही सभी से बैर किया करते हैं । जो भलाई करता है उसके संग भी बुराई करते हैं ।

झूठइ लेना झूठइ देना ।
झूठइ भोजन झूठ चबेना ।।

★ उनका झूठ ही लेना और झूठ ही देना होता है । झूठ ही भोजन हुआ करता है ।

* दुष्टों को जीवन के हर व्यवहार में झूठ बोलने की आदत होती है ।

बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा ।
खाइ महा अहि हृदय कठोरा ।।

★ जैसे मोर का हृदय इतना कठोर होता है कि वह बड़े विष से भरे हुए साँपों को भी खा जाता है वैसे वे भी बाहर से मीठे वचन बोलते हैं (परन्तु भीतर से बड़े कठोर होते हैं) ।

* किसी की बात से नहीं उसके हृदय के भावों से व्यक्ति का सही मूल्यांकन होता है ।

पर द्रोही पर दार रत,
पर धन पर अपबाद ।
ते नर पाँवर पापमय,
देह धरे मनुजाद ।।

⊗ दार=स्त्री, अपवाद=निन्दा, पाँवर=नीच, मनुजाद=राक्षस ।

★ वे दूसरों से द्रोह करते हैं और दूसरों की स्त्री, पराये धन तथा दूसरों की निन्दा में लगे रहते हैं । वे नीच और पाप से सने हुए मनुष्य नर-शरीर धारण किये हुए राक्षस ही हैं ।

* राक्षस का शरीर कोई भिन्न प्रकार का नहीं होता, जिनके स्वभाव इस प्रकार के हैं वे ही राक्षस कहलाते हैं ।

लोभइ ओढ़न लोभइ डासन ।
सिस्नोदर पर जमपुर त्रासन ।।

⊗ ओढ़न=ओढ़ना, डासन=बिछौना, सिस्नोदर=आहार और मैथुन में ही रत ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **लोभ ही जिनका ओढ़ना है, और लोभ ही बिछौना है (अर्थात् लोभ से सदा घिरे रहते हैं) वे जानवरों के समान भोजन और मैथुन के परायण होते हैं, उन्हें यमपुर का भय नहीं लगता ।**

* लोभ, काम और अन्य भोगों में वे फंस जाते हैं, दूरदर्शिता न होने से अपने आचरण के फलस्वरूप होने वाली दुर्गति वे देख ही नहीं पाते ।

काहू की जौं सुनहि बड़ाई ।
स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ।।

★ **यदि किसी की प्रशंसा सुन पाते हैं तो वे ऐसी (दुःख भरी) श्वाँस लेते हैं, मानों उन्हें बुखार आ गया हो ।**

* दूसरों की प्रशंसा सुनकर उन्हें लगता है कि उनकी अपेक्षा दूसरों को श्रेष्ठ समझा जा रहा है । यही भाव उन्हें दुखी करता है ।

जब काहू कै देखहिं विपती ।
सुखी भए मानहुँ जग नृपती ।।

⊗ नृपती=राजा ।

★ **और जब किसी की विपत्ति देखते हैं, तब ऐसे सुखी होते हैं, जैसे संसार भर के राजा हो गये हों ।**

* उनमें संवेदना का अभाव होता है इसलिये दूसरों को कष्ट खेल जैसा लगता है ।

स्वारथ रत परिवार बिरोधी ।
लंपटि काम लोभ अति क्रोधी ।।

★ **वे स्वार्थ में लगे हुए, परिवार वालों के विरोधी, काम और लोभ के कारण छलकने वाले और बहुत क्रोधी होते हैं ।**

* परिवार विरोधी इसलिये कि वे किसी के प्रति अपना उत्तर-दायित्व स्वीकार नहीं करना चाहते ।

मातु पिता गुर बिप्रन मानहिं ।
आपु गए अरु घालहिं आनहिं ।।

⊗ घालहिं=नष्ट करते हैं, आनहिं=दूसरों को ।

★ **वे माता, पिता, गुरु और ब्राह्मण किसी को नहीं मानते । स्वयं तो नष्ट हुए ही रहते हैं (साथ ही अपनी संगति से) दूसरों का भी नष्ट कर देते हैं ।**

* दुष्टों की संगति में जो पड़ जाता है वह भी उनके साथ पतन और दुःख पाता है ।

करहिं मोहबस द्रोह परावा ।
संत संग हरि कथा न भावा ।।

★ **मोह के वशीभूत होकर दूसरों से द्रोह करते हैं उन्हें न सन्तों का साथ अच्छा लगता है, न प्रभु की कथा अच्छी लगती है ।**

* जिसके प्रति मोह होता है उसे उचित से अधिक देने के प्रयास में दूसरों का उचित हक भी छीनते हैं, इसलिये दूसरों से द्रोह हो जाता है ।

अबगुन सिंधु मंदमति कामी ।
बेद बिदूषक परधन स्वामी ।।

⊗ मंदमति=मन्द बुद्धि, बिदूषक=हँसी उड़ाने वाले ।

★ **वे अवगुणों के सागर मन्द बुद्धि, कामी (रागयुक्त) वेदों की हँसी उड़ाने वाले और जबर्दस्ती पराये धन के स्वामी (लूटने वाले) होते हैं ।**

* परधन स्वामी इसलिये कि अपना धन तो उड़ा ही डालते हैं इसलिये दूसरों का भी झपटते हैं ।

बिप्र द्रोह पर द्रोह बिसेषा ।
दंभ कपट जिय धरें सुबेषा ।।

⊗ सुबेषा=सुन्दर वेष, धरे=धारण किये ।

★ **उनके हृदय में झूठा दिखावा और कपट भरा रहता है, लेकिन वे (ऊपर से) सुन्दर वेष धारण किये रहते हैं । वे ब्राह्मण तथा अन्य सबसे द्रोह रखते हैं ।**

* ऊपर से मित्र जैसे दिखने वाले तथा अन्दर से शत्रुता दिखाने वाले होते हैं ।

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।।

⊗ सरिस=समान, अधमाई=पाप ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ **हे भाई ! दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को दुःख देने के समान कोई पाप नहीं है ।**

* जन साधारण के लिये बड़ी सुगम और आसानी से समझी जाने योग्य धर्म की मर्यादा इस चौपाई में बता दी गई है ।

निर्नय सकल पुरान बेद कर ।
कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर ।।

★ **समस्त पुराणों और वेदों का यह निर्णय (निश्चित सिद्धान्त) मैंने तुमसे कह दिया है, इस बात को विद्वान लोग जानते हैं ।**

* कहने वाले बड़े महत्व की बात कह भी दें तो भी जिनमें समझने योग्य बुद्धि नहीं वे उसे समझ ही नहीं पाते ।

नर सरीर धरि जे पर पीरा ।
करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ।।

⊗ सहहिं=सहने पड़ते, भीरा=संकट ।

★ **नर शरीर धारण करके जो लोग दूसरों को दुःख पहुँचाते हैं, उनको जन्म-मृत्यु के महान् संकट सहने पड़ते हैं ।**

* अपने इस उत्तरदायित्व को जो नहीं समझते उन्हें ईश्वरीय दण्ड मिलता है ।

करहिं मोह बश नर अघ नाना ।
स्वारथ रत परलोक नसाना ।।

⊗ नसाना=नष्ट हुआ ।

★ **मनुष्य मोह (भ्रम) के वशीभूत स्वार्थ में परायण होकर अनेक पाप करते हैं इसी से उनका परलोक नष्ट हुआ रहता है ।**

* अपना भविष्य कोई नष्ट करना नहीं चाहता, पर भ्रम में लोग अपने आप वही रास्ता पकड़ लेते हैं जो दुखदायी सिद्ध होते हैं ।

कालरूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता ।
शुभ अरु अशुभ कर्म फल दाता ।।

⊗ कालरूप=भयंकर ।

★ **हे भाई ! मैं उनके लिए भयंकर हूँ और उनके अच्छे और बुरे कर्मों का (यथा योग्य) फल देने वाला हूँ ।**

* भगवान दयासागर ही नहीं— भंयकर भी हैं । किए हुए कर्मों का फल वे बिना किसी दया और पक्षपात के देते है ।

अस बिचारि जे परम सयाने ।
भजहि मोहि संसृत दुख जाने ।।

⊗ सयाने=चतुर, संसृत=संसार ।

★ **ऐसा सोचकर जो लोग परम चतुर हैं वे संसार (के प्रवाह) को दुखरूप समझकर मुझे ही भजते हैं ।**

* संसार से अर्थ है भ्रम में डालने वाले आकर्षण जो होते हानिकारक हैं पर लगते लाभदायक हैं ।

संत असंतन्ह के गुन भाषे ।
ते न परहिं भव जिन्ह लखि राखे ।।

⊗ लखि राखे=समझ रक्खा है ।

★ **(इस प्रकार) सन्तों और असन्तों के गुण कहे । जिन लोगों ने इन गुणों को समझ लिया है, वे सांसारिक दुःखों के चक्कर में नहीं पड़ते ।**

* यह सब प्रकरण केवल सुनने के लिये नहीं हैं । उन्हें बराबर ध्यान में रखकर उनके अनुरूप जीवन क्रम बनाकर ही उनका लाभ उठाया जा सकता है ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्याय-१२

कुन्द इन्दुदरं गौर सुन्दरं
अम्बिका पतिमभीष्ट सिद्धदम् ।
कारुणीक कलकंजलोचन नौमि
शंकर अनंग मोचनम् ॥

⊗ कुन्द=कुन्द का फूल (श्वेत), इन्दु=चन्द्रमा, दर=शंख , गौरा=गोरा रंग, अभीष्ट सिद्धि=इच्छित फल देने वाले, कारुणीक=करुणा करने वाले, अनंग-मोचनम्=कामदेव से मुक्ति दिलाने वाले ।

★ कुन्द के पुष्प, चन्द्रमा, एवं शंख के समान और वर्ण वाले, पार्वती पति, अभीष्ट फल देने वाले, करुणा जिनका स्वभाव है, कमल जैसे नयन वाले, कामदेव से मुक्ति दिलाने वाले श्रीशंकर जी की वन्दना करता हूँ ।

* विशेषणों की व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं— गौर वर्ण निष्पाप बेदाग होने का प्रतीक है, पार्वती शक्ति रूपा हैं, उनके पति अर्थात् नियंत्रक, अभीष्ट फल का आवश्यकता तथा औचित्य के अनुरूप फल, कारुणीक— अर्थात् सहृदय कामदेव से रक्षा विभिन्न वासनाओं से बचाव करने वाले, शिव— अर्थात् कल्याणकारी ।

एक बार रघुनाथ बोलाए ।
गुर द्विज पुरबासी सब आए ॥

★ एक बार श्रीरामजी के बुलवाने पर गुरु वसिष्ठ, ब्राह्मण और अन्य सब नगरवासी सभा में आये ।

* सामूहिक सभाओं द्वारा उचित परामर्श एवं निर्देश का आदान-प्रदान किया जाना उचित तथा आवश्यक है ।

बैठे गुर मुनि अरु द्विज सज्जन ।
बोले बचन भगत भव भंजन ॥

★ जब गुरु, मुनि, ब्राह्मण, तथा अन्य सभी सज्जन अपने-अपने स्थान पर बैठ गये, तब भक्तों को साँसारिक कष्टों से मुक्ति दिलाने वाले श्रीरामजी बोले–

* सभा में विद्वान वयोवृद्ध सभी शामिल होते हैं और अनुशासनपूर्वक उचित स्थान पर बैठते हैं ।

सुनहु सकल पुरजन मम बानी ।
कहउ न कछु ममता उर आनी ॥

★ हे समस्त नगर निवासियों ! मेरी बात सुनिये । यह यह बात मैं हृदय में कुछ मोह लाकर नहीं कहता हूँ ।

* मोह से विवेक नष्ट हो जाता है और बात एकाँगी, एक पक्षीय हो जाती है ।

नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई ।
सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई ॥

★ न अनीति की बात कहता हूँ और न इसमें अधिकार का दबाव है इसलिए (संकोच और भय छोड़कर ध्यान देकर) मेरी बात को सुन लो और (फिर) यदि तुम्हें अच्छी लगे, तो उसके अनुसार करो ।

* बात नीति की कहें फिर भी अपने पद के अधिकार से उसे मनवाना उचित नहीं । सही सलाह मनुष्य को बतला अवश्य देना चाहिए, परन्तु उसे समझकर करने की उन्हें पूरी स्वतन्त्रता रहनी चाहिए ।

सोई सेवक प्रियतम मम सोई ।
मम अनुसासन मानै जोई ॥

★ वही मेरा सेवक है और वही प्रिय है, जो मेरा अनुशासन मानता है ।

* भगवान को चापलूसी या पदार्थों का लालच नहीं है,उनका प्यारा वही है जो उनके सिद्धान्तों और नियमों की मर्यादा ठीक तरह से पालन करता है ।

जौं अनीति कछु भाषौ भाई ।
तौं मोहि बरजहु भय बिसराई ॥

⊗ बरजहु=रोक देना ।

★ हे भाई ! यदि मैं कुछ अनीति की बात कहूँ तो भय छोड़कर (बे-खटके) मुझे रोक देना ।

* श्रेष्ठ व्यक्ति वही है जो अपनी बात को सर्वोपरि न कहकर और के विचारों का आदर करे और अपनी भूलों को उदारता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूर्वक स्वीकार करे । भूल बताने वाले को पूछने वाले की उदारता पर विश्वास न हो तो वह स्पष्टता से कुछ बतायेगा ही नहीं ।

बड़े भाग मानुष तन पावा ।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ।।

★ **बड़े सौभाग्य से यह नर शरीर मिला है । सभी ग्रन्थों ने यही कहा है कि यह शरीर देवताओं को भी दुर्लभ है (कठिनाई से मिलता है) ।**

* देवता केवल भोग पा सकते हैं, मनुष्य अपने तथा समाज के भविष्य का निर्माण करने में भी सक्षम है, अतः मनुष्य शरीर देव दुर्लभ कहा गया ।

साधन धाम मोच्छ कर द्वारा ।
पाइ न जेहि परलोक सँवारा ।।

⊗ सँवारा=संभाला ।

★ **यह (नर शरीर) साधन का धाम तथा मोक्ष का दरवाजा है । इसे पाकर भी जो अपने परलोक की तैयारी न कर सके वह अभागी है ।**

* मनुष्य जीवन पाकर भी उसका सदुपयोग न कर सके तो दुर्भाग्य ही है, साधन धाम का अर्थ है किसी भी प्रकार के साधना करने के लिये उपयुक्त मोक्ष का द्वार अर्थात् इसे पाकर मोक्ष में प्रवेश करना कठिन नहीं ।

सो परत्र दुख पावइ,
सिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहि कर्महिं ईस्वरहिं,
मिथ्या दोस लगाइ ।।

⊗ परत्र=परलोक, धुनि=पीटकर ।

★ **इसका सदुपयोग न कर सकने पर मनुष्य परलोक में और यहाँ भी दुःख ही पाता है और फिर मस्तक पीट-पीट कर पश्चात्ताप करता है तथा अपनी दुर्गति के लिये काल पर, कर्म पर और ईश्वर पर झूठा दोष लगाता है ।**

* (१) लोग लौकिक सुख की कामना से श्रेष्ठ जीवन क्रम की उपेक्षा तो कर देते हैं पर उन्हें यह सुख भी मिल नहीं पाता और दोनों ओर से हानि उठाते हैं । (२) अपनी दुर्गति के लिए स्वयं को दोषी न मान कर दूसरों पर दोष थोपना मिथ्याचार है ।

एहि तन कर फल विषय न भाई ।
स्वर्गउ स्वल्प अन्त दुखदाई ।।

★ **हे भाई ! इस देह के प्राप्त होने का फल विषय उपभोग करना तो नहीं है, स्वर्ग का उपभोग भी बहुत थोड़ा है और अन्त में दुःख देने वाला है ।**

* विषय भोग तो पशु योनि में भी संभव है, उसके लिये मनुष्य जन्म बिगाड़ना उचित नहीं । स्वर्ग शुभ कर्मों के बदले मिल तो जाता है पर अपनी पूँजी बैठे-बैठे खा डालने जैसा है, बाद में फिर कर्म भूमि में आना पड़ता है ।

नर तन पाइ विषय मन देहीं ।
पलट सुधा ते सठ विष लेहीं ।।

★ **जो लोग मनुष्य देह पाकर विषयों में मन लगा देते हैं, वे मूर्ख अमृत के बदले में विष ले लेते हैं ।**

* मनुष्य शरीर से अमृत तत्व-सत्य बोध पाया जा सकता है, उसे छोड़कर विष (विषयों) को लेना कोई समझदारी नहीं ।

ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई ।
गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ।।

⊗ गुंजा=घुँघची, ग्रह=ले लेता है, परस मनि=पारस मणि ।

★ **जो पारस मणि को खो करके बदले में घुँघची ले लेता है उसको कभी कोई समझदार नहीं कहता ।**

* मानव जीवन पारस मणि तथा विषय रस घुँघची के समान कहे गये हैं ।

आकर चारि लच्छ चौरासी ।
जोनि भ्रमत यह जिब अबिनासी ।।

⊗ आकर=वर्ग, लच्छ (लक्ष)=लाख ।

★ **यह अविनासी जीव चार वर्गों (अंडज,पिंडज, स्वेदज, उद्भिज) और चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता रहता है ।**

* जीव अविनाशी है पर उसे विभिन्न रूपों में अनुभव प्राप्त करने पड़ते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फिरत सदा माया कर प्रेरा ।
काल कर्म सुभाव गुन घेरा ।।

★ **माया की प्रेरणा से काल, कर्म, स्वभाव और गुण से घिरा हुआ (इनके वश में होकर) यह हमेशा भटकता रहता है ।**

* काल का अर्थ है परिस्थितियाँ । कर्म किसी उपलब्धि के लिये प्रयास । स्वभाव अपनी मूल प्रवृत्तियाँ आहार निद्रा आदि । गुण-व्यवहार की क्षमता । इन सबका एक ढर्रा-सा चलता है । जिसके बाहर निकलने का प्रयास व्यक्ति मोह-वश नहीं कर पाता ।

नर तन भव बारिधि कहूँ बेरो ।
सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ।।

⊗ बारिधि=सागर, बेरो (बेड़ा)=जहाज, मरुत=वायु ।

★ **यह मनुष्य देह संसार सागर (से तरने) के लिए जहाज है । मेरी कृपा ही अनुकूल हवा है ।**

* अपना बेड़ा यदि अनुकूल हवा का लाभ लेकर ठीक से चलाया जाय तो किनारा शीघ्र मिल जाता है ।

करनधार सद्गुर दृढ़ नावा ।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ।।

⊗ करनधान (कर्णधार)=खेने वाले, साज=साधन ।

★ **सद्गुरु इस दृढ़ नाव के खेने वाले हैं । इस प्रकार दुर्लभ कठिनाई से मिलने वाले साधन सुलभ होकर मनुष्य को प्राप्त हो जाते हैं ।**

* सद्गुरु श्रेष्ठ गुरु को भी कहते हैं और अन्तःकरण स्थिति अपनी दिव्य चेतना को भी । जीवन को सही दिशा इन्हीं की सलाह से दी जा सकती है ।

जार न तरै भव सागर,
नर समाज अस पाइ ।
सो कृत निंदक मंदमति,
आत्माहन गति जाइ ।।

⊗ कृत निंदक=कृतघ्न, आत्माहन=आत्महत्या ।

★ **जो नर ऐसे साधन दृढ़ नाव, अनुकूल हवा और कर्णधार पाकर भी संसार से न तरे वह कृतघ्न और दुर्बुद्धि है और आत्महत्या करने वाले की गति को प्राप्त होता है ।**

* मनुष्य जीवन का सार्थक उपयोग न कर सकने पर यह दोष लगते हैं, क्योंकि भगवान द्वारा दिये गये साधनों का मूल्य न समझ सका (२) मंदमति—हाथ आये अवसर का लाभ न उठाने वाला मूर्ख (३) स्वयं अपने को नष्ट करने वाला आत्म हत्यारा होता है ।

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू ।
सुनि मम बचन हृदयँ दृढ़ गहहू ।।

★ **यदि पर लोक और यहाँ दोनों जगह सुख चाहते हो तो मेरे यचन श्रवण करके उन्हें हृदय में दृढ़ता से पकड़े रखो ।**

* (१) ईश्वर के नियमों पर चलकर ही लौकिक और पारलौकिक सुख मिल सकते हैं । (२) उन नियमों पर दृढ़ रहना पड़ता है, नाममात्र को उन्हें छू लेने से कुछ नहीं होता ।

सुलभ सुखद मारग यह भाई ।
भगति मोरि पुरान श्रुति गाई ।।

★ **यह मार्ग (भगवान के निर्देश को मानकर चलना) आसान है, भक्ति के सम्बन्ध में वेदों और पुराणों में ऐसा वर्णन मिलता है ।**

* स्वयं सही मार्ग पर बढ़ना हर किसी के लिये संभव नहीं, सही मार्ग दर्शन प्राप्त होने पर उस पर चल पड़ना सबके लिये सुगम है । पर मार्ग दर्शक (भगवान अथवा सद्गुरु) पर निष्ठा हो तभी आगे बढ़ा जा सकता है । यही निष्ठा भक्ति कहलाती है ।

भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी ।
बिनु सत्संग न पाबहिं प्रानी ।।

★ **भक्ति स्वतंत्र है और समस्त सुखों की खान है संतों के संग के बिना प्राणी इसे नहीं पा सकते ।**

* भक्ति कोई वेष भूषा नहीं स्वभाव है, जिसका विकास श्रेष्ठ संगति से ही होता है । ये स्वतंत्र है क्योंकि सांसारिक साधनों पर आधारित नहीं है ।

पुन्य पुंज बिन मिलहि न संता ।
सतसंगति संसृति कर अंता ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ पुंज=समूह, संसृति=जन्ममरण के चक्र ।

★ और पुण्य समूह के बिना संत नहीं प्राप्त होते हैं, सत्संगति ही सांसारिक यातना से मुक्त करने में समर्थ है ।

* इस प्रकार मुख्य धुरी अपने सत्कर्म ही है । भगवान सच्चे भक्त पर प्रसन्न होते हैं, वह भक्ति सत्संग से मिलती है । सांसारिक यातना से बचाव भी सत्संग से होता है । किन्तु सत्संग अपने पुण्य अर्थात् श्रेष्ठ कर्मों के फलस्वरूप ही प्राप्त होता है ।

कहहु भगति पथ कवन प्रयासा ।
जोग न मख जप तप उपवास ।।

★ कहो तो भक्ति पथ में कौन सा परिश्रम है ? इसमें न योग की आवश्यकता है, न यज्ञ, जप तपस्या और उपवास की ।

* भक्ति पथ का अनुसरण सांसारिक दृष्टि से कम ज्ञान वाला मनुष्य भी कर सकता है । कैसे ? यह आगे स्पष्ट किया है ।

सरल सुभाव न मन कुटिलाई ।
जथा लाभ संतोष सदाई ।।

★ भक्ति में इतना ही आवश्यक है कि सरल स्वभाव हो मन में कुटिलता न हो और जो कुछ मिले उसी पर हमेशा संतोष रक्खें ।

* यहाँ प्रयास न करने का निर्देश नहीं है । प्रयास तो करें, प्रयास के सही ढंग भी अपनाये जायें, पर प्राप्ति पर असंतोष न किया जाय ।

मोर दास कहाइ नर आसा ।
करइ तौ कहहु कहा बिश्वासा ।।

★ मेरा दास कहलाकर यदि कोई मनुष्यों की आशा करता है तो तुम्हीं कहो उसका क्या विश्वास है ? (अर्थात् उसका प्रभु पर विश्वास बहुत कम है) ।

* भगवान के भक्तों की कोई मदद करता है तो वे स्वीकार तो कर लें पर स्वयं किसी से आशा न करें । सहायता पाने की आशा करने पर सहायता देने वाले की इच्छा के अनुरूप बनना पड़ता है, फिर भगवान की इच्छा के अनुरूप चलने में बाधा आ जाती है ।

बहुत कहउँ का कथा बढ़ाई ।
एहि आचरन बस्य मैं भाई ।।

⊗ बस्य=वश में ।

★ बहुत बात बढ़ाकर क्या कहूँ? हे भाइयों ! मैं तो इसी आचरण के वश में हूँ (कैसा आचरण यह आगे बताया है) ।

* जिसकी भक्ति भावना अपने आचरण में उतर आवे । बिना आचरण सुधरे भक्ति का फल (परमात्मा का प्रसाद) नहीं मिलता है ।

बैर न बिग्रह आस न त्रासा ।
सुखमय ताहि सदा सब आसा ।।

⊗ बिग्रह=लड़ाई-झगड़ा, त्रासा=भय ।

★ जो न किसी से बैर करे, न लड़ाई-झगड़ा करे, न आशा रक्खे, न डर ही करे । उसके लिए समस्त दिशाएँ हमेशा सुखमयी हैं ।

* भगवान सुख रूप ही हैं, हमारे दुर्गुण और दुर्भाव ही हमें सुख से वंचित रखते हैं ।

अनारम्भ अनिकेत अमानी ।
अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी ।।

⊗ अनारम्भ=आरम्भ नहीं करना, अनिकेत=घर नहीं, अनघ=पाप हीन, अरोष=क्रोधहीन, दच्छ (दक्ष)=निपुण ।

★ जो कोई भी आरम्भ (फल की इच्छा से कर्म) नहीं करता, जिसका कोई अपना घर नहीं है (जिसकी घर में ममता नहीं है) जो मान रहित, पाप रहित, क्रोध रहित है अपने कर्तव्य में निपुण और उस विषय का मर्मज्ञ है ।

* शब्दों के भाव इस प्रकार समझे जा सकते हैं अनारम्भ का अर्थ है किसी कार्य विशेष के लिए चाह न होना । अनिकेत का अर्थ है किसी स्थान, व्यक्ति अथवा भाग विशेष के प्रति मोह न होना । अमानी-अहंकार से दूर, विज्ञानी-सिद्धान्तों को क्रिया में उतार सकने में समर्थ ।

प्रीति सदा सज्जन संसर्गा ।
तृन सम विषय स्वर्ग अपवर्गा ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ संसर्गा=समीपता, अपवर्गा=मुक्ति ।

★ सज्जनों की समीपता से जिसे हमेशा प्रेम है जिसके मन में समस्त विषय यहाँ तक कि स्वर्ग और मुक्ति तक तृण के समान हैं ।

* किसी कामना से सज्जनों का संग लोग करते तो हैं पर वह टिकाऊ नहीं होता । प्रेम ही उसे टिकाऊ बनाता है । जिसे ईश्वर की समीपता का आभास मिल जाता है,उसे विषयों से लेकर स्वर्ग मुक्ति तक के आकर्षण तिनके जैसे लगते हैं ।

भगति पच्छ हट नहिं सठताई ।
दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई ।।

⊗ पच्छ=पक्ष, दुष्ट तर्क=कुतर्क, बहाई=बहा दिया ।

★ जो भक्ति के पथ में तो रहता है किन्तु हठ और धूर्तता नहीं करता तथा जिसने समस्त कुतर्कों को दूर बहा दिया है ।

* लोगों को अपना पक्ष की सलाह तो दें पर मान जाने के लिए हठ न करें । मन में हठ होने से लोग सामने वाले को समझाने का मौका न देकर धूर्तता और कुतर्क का सहारा लेने लगते हैं यह गलत है, तर्क सत्य बात समझने के उद्देश्य से किया जाता है, किसी भी प्रकार अपनी बात मनवाने के लिये किया गया तर्क कुतर्क है ।

मम गुन ग्राम नाम रत,
गत ममता मद मोह ।
ताकर सुख सोइ जानइ,
परानंद संदोह ।।

⊗ परानन्द=परमानन्द, संदोह=स्थिति ।

★ जो मेरे गुण समूहों के और मेरे नाम के परायण हैं एवं ममता मद और मोह को त्याग चुके हैं, ऐसे व्यक्ति का सुख वहीं समझता है जो परमानन्द स्थिति को प्राप्त है ।

* भगवान के नाम का उपयोग उनके गुण समूह का स्मरण करें और उनके प्रति प्रेम पैदाकर मोहादि दोषों से मन हटालें, उसे परमानन्द गति पाने वाले के समान आनन्द प्राप्त हो सकता है ।

सुनत सुधासम बचन राम के ।
गहे सबनि पर कृपाधाम के ।।

★ श्रीराम के मीठे और हितकारी बचन सुनकर सभी श्रोताओं ने उनके चरण पकड़ लिये ।

* हित की बात, वह भी बिना अभिमान के मीठे शब्दों में बताने वाले के प्रति श्रोताओं के मन में सहज प्रेम और कृतज्ञता उमड़ पड़ती है ।

हेतु रहित जग जुग उपकारी ।
तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ।।

★ वे कहने लगे कि हे असुर नाशक प्रभु ! संसार में केवल दो ही ऐसे हैं जो बिना किसी व्यक्तिगत हेतु (स्वार्थ) के उपकार करते हैं- एक आप और दूसरे आपके सेवक ।

* प्रभु को किसी वस्तु की न कमी है न किसी की चाह, वे चाहते हैं कि उनके बच्चे प्रसन्न रहें इसलिये वे बिना हेतु उपकार करते हैं भक्त स्वभावत: वही काम करते हैं जिससे प्रभु प्रसन्न हो इसलिये वे भी बिना स्वार्थ के सेवा करते हैं ।

बिनु सतसंग न हरि कथा,
तेहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गएँ बिनु राम पद,
होइ न दृढ़ अनुराग ।।

★ सत्संग के बिना हरि कथा सुनने को नहीं मिलती, उसके बिना मोह नहीं जाता और मोह गये बिना श्रीरामजी के चरणों में अचल प्रेम नहीं होता ।

* दृढ़ प्रेम विश्वास से होता है, मोह संशय की स्थिति का ही नाम है वह तब जाता है जब भगवान के आदर्शों और चरित्र का सही रूप बार-बार सुनने समझने को मिले । यह लाभ सन्त ही दे सकते हैं अन्य लोग तो और भ्रम में डाल देते हैं ।

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा ।
किएँ जोग तप ज्ञान बिरागा ।।

★ प्रेम बिना केवल योग, तपस्या, ज्ञान और वैराग्यादि के करने से श्रीरामजी नहीं मिलते ।

* प्रेम भावना भगवान की निकटता के लिए अनिवार्य है । केवल वेष या दिखावा कुछ नहीं कर सकता । योग तप,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि सहायक हो सकते हैं पर वह भी सब कुछ नहीं है किन्तु मोहवश साधक यह तथ्य भूल जाते हैं ।

बोलेउ काकभुशुंडि बहोरी ।
नभगनाथ पर प्रीति न थोरी ।।

⊗ नभगनाथ=पक्षिराज (गरुड़) ।

★ श्री काकभुशुंडि जी पुन: बोले क्योंकि श्रीगरुड़ जी पर उनका स्नेह कम नहीं है ।

* जिस पर विशेष स्नेह होता है उसे विभिन्न ढंग से समझाने की उमंग बराबर बनी रहती है ।

मोह न अंध कीन्ह केहि केही ।
को जग काम नचाव न जेही ।।

★ हे गरुड़जी ! मोह ने किसे विवेक शून्य नहीं किया? संसार में ऐसा कौन है, जिसको काम-वासना ने नहीं नचाया हो?

* साधक भूल वश यह मानने लगते हैं कि विकार अब उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते और उनकी ओर से असावधान हो जाते हैं । वह भूल मँहगी पड़ती है । मोह पास आ पहुँचने पर साधक को विचार शून्य बना देता है– और कामवासना उसे कर्तव्य से छुड़ाकर भटकाने लगती है ।

तृस्नाँ केहि न कीन्ह बौराहा ।
केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा ।।

⊗ बौराहा=मतवाला, दाहा=जलाया ।

★ तृष्णा ने किसको पागल नहीं किया ? क्रोध ने किसका हृदय नहीं जलाया?

* तृष्णा लोग करते हैं अधिक पाकर संतोष पाने के लिये पर सन्तोष की जगह पागलपन ही हाथ लगता है । क्रोध करते हैं सामने वाले को हानि पहुँचाने को–किन्तु स्वयं अपना हृदय जला लेते हैं । इसलिये तृष्णा को सन्तोष से और क्रोध को शान्ति से जीतना चाहिये ।

ग्यानी तापस सूर कवि,
कोबिद गुन आगार ।
केहि कै लोभ विडम्बना,
कीन्ह न एहि संसार ।।

⊗ आगार=भण्डार, विडम्बना=दुर्दशा (मिट्टी पलीद होना)

★ इस जगत् में ऐसा कौन ज्ञानी, तपस्वी शूरवीर, कवि पंडित और गुणों का भण्डार है, जिसकी लोभ ने मिट्टी पलीत न कर दी हो ।

* ज्ञान, तप, गुण आदि मनुष्य के लिये हितकारी है, पर इनकी साधना में भी लोभ आने से साधक की दुर्दशा हो जाती है ।

मच्छर काहि कलंक न लावा ।
काहि न सोक समीर डोलावा ।।

★ मत्सर (डाह) ने किसको कलंक नहीं लगाया ? शोकरूपी हवा ने किसे नहीं हिला दिया ।

* (१) डाह मनुष्य करता इसलिये है कि मैं दूसरे से अधिक श्रेष्ठ समझा जाऊँ, पर उससे उल्टी बदनामी ही हाथ लगती है (२) शोक में धैर्य की परीक्षा होती है, धैर्य की थोड़ी उपेक्षा होते ही शोक सन्तुलन बिगाड़ देता है ।

चिंता साँपिनि को नहिं खाया ।
को जग जाहि न व्यापी माया ।।

★ चिन्ता रूपी नागिन ने किसे नहीं खाया ? जगत् में ऐसा कौन है जिसमें माया न फैली हो ?

* (१) चिन्ता करते तो लोग लाभ की आकाँक्षा से हैं, पर वह साँपिन की तरह पालने वाले को ही डस लेती है । (२) माया (मोह) मनुष्य की भीतरी तथा बाहरी उन्नति में बाधक रहती है । इसलिए चिन्ता के कारण ढूँढ़कर उसका समाधान तत्काल निकाल लेना चाहिए और मोह किसी से भी इतना न हो कि उसे छोड़ने में बाधा उत्पन्न होती हो ।

कीट मनोरथ दारु सरीरा ।
जेहि न लाग घुन को अस धीरा ।।

⊗ कीट=कीड़ा, दारु=लकड़ी, घुन=कीड़ा ।

★ मनोरथ (इच्छा) कीड़ा है शरीर लकड़ी है । ऐसा धैर्यशील कौन है, जिसके शरीर में यह घुन न लगा हो ।

* मनोरथों की सीमा नहीं है परन्तु उन्हें पूरा करने के चक्कर में स्वयं ही टूट जाता है । अत: प्रारम्भ से ही आवश्यकता के अनुरूप बुद्धि संगत आकाँक्षाओं तक ही सीमित रहे– मनोरथों को बढ़ावा न दे यही लाभप्रद है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुत बित लोक ईषना तीनी ।
केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ।।

⊗ बित=धन, ईषना (एषणा)=प्राप्ति की आकांक्षा, मलीनी= मलिन ।

★ **पुत्र की, धन की और लोक प्रतिष्ठा इन तीन प्रचण्ड इच्छाओं ने किसकी मति को मलिन नहीं कर दिया । (बिगाड़ नहीं दिया) ?**

* पुत्र, धन तथा प्रतिष्ठा बड़प्पन के चिन्ह माने जाने लगे हैं इसलिये लोग इनकी कामना करते हैं । परन्तु इनकी कामना– इन्हें महत्व देना बुद्धि का ओछापन प्रकट करता है ।

यह सब माया कर परिवारा ।
प्रबल अमित को बरनै पारा ।।

★ **यह सभी माया का बड़ा शक्तिशाली परिवार है, यह अपार है । इसका वर्णन कौन कर सकता है ?**

* मोह एवं काम से लेकर एषणाओं तक जिन दोषों का वर्णन किया गया,यह सब माया के अंग हैं । जिन पर यह हावी हो जाते हैं उसे बुरी तरह भटका देते हैं । इनसे बचाव कैसे सम्भव है ? यह आगे बताया है ।

जो माया सब जगहि नचावा ।
जासु चरित लखि काहुँ न पावा ।।

★ **जो माया सारे संसार को नचाती है और जिसकी करनी किसी ने नहीं देख पाई ।**

सोइ प्रभु भ्रू बिलास खगराजा ।
नाच नटी इव सहित समाजा ।।

⊗ भ्रू विलास=भ्रकुटी का इशारा, नटी=नाचने वाली ।

★ **हे खगराज गरुड़जी ! वही माया भगवान श्रीरामजी की भ्रकुटी के इशारे पर अपने समाज (परिवार) के साथ नटी की तरह नाचती है ।**

* इस उक्ति का तात्पर्य यह है कि सच्चा प्रभु परायण व्यक्ति माया से परे होकर उसका उपयोग कर सकता है– पर उससे ग्रस्त नहीं होता । पर यह मर्म भ्रम वश समझ में नहीं आता ।

नयन दोष जा कहँ जब होई ।
पीत बरन सिस कहुँ कह कोई ।।

⊗ पीत=पीले, बरन (वर्ण)=रंग ।

★ **जब किसी को नेत्र दोष (पीलिया) हो जाता है तब वह चन्द्रमा को पीले रंग का कहता है ।**

* मनुष्य का मन जैसा होता है वैसा ही वह सृष्टि को देखता है यथार्थ नहीं समझ पाता ।

जब जेहि दिसि भ्रम होइ खगेसा ।
सो कह पच्छिम उदउ दिनेसा ।।

⊗ पच्छिम=पश्चिम, उदउ=उदय, दिनेसा=सूर्य ।

★ **हे पक्षिराज गरुड़ ! जब जिसे दिशा भ्रम हो जाता है जब वह कहता है कि सूर्य पश्चिम दिशा में उदय हुआ है ।**

* भ्रमित व्यक्ति अपने भ्रम को नहीं समझ पाता, शास्त्र सत्यों को ही गलत कहने लगता है ।

नौकारूढ़ चलत जग देखा ।
अचल मोह बस आपुहिं लेखा ।।

⊗ नौकारूढ़=नौका पर चढ़ा हुआ, आपुहि=अपने को ।

★ **नाव पर चढ़ा हुआ मनुष्य संसार को चलते हुए देखता है और मोह के वशीभूत होकर अपने को स्थिर समझता है ।**

* विचलित हमारी बुद्धि होती है, पर हमें लगता है दुनिया विचलित हो गयी है ।

बालक भ्रम नहिं भ्रमहिं गृहादी ।
कहहिं परस्पर मिथ्यावादी ।।

⊗ गृहादी=घर आदि, भ्रमहिं=घूमते हैं, मिथ्यावादी=झूठ बोलने वाले ।

★ **बालक घूमते (चक्राकार दौड़ते) हैं, तो घर आदि नहीं घूमते, किन्तु वे परस्पर एक दूसरे को झूठा कहते हैं ।**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* झूठा व्यक्ति जब झूठे व्यक्ति से मिलता है तो दोनों भ्रम से भरी हुई बातें करते हैं और गलत कामों की योजना बनाते हैं । सही बताने वालों के वे भ्रम में पड़ा मानते हैं ।

हरि बिषइक अस मोह बिहंगा ।
सपनेहुँ नहिं अग्यान प्रसंगा ।।

⊗ बिषइक=विषय में, बिहंग=गरुड़जी ।

★ हे गरुड़जी ! श्रीहरि के विषय में मोह की कल्पना भी ऐसी ही है, प्रभु में तो सपने में भी अज्ञान का प्रसंग नहीं है ।

* मोहवश हम भगवान की भूलें बताने लगते हैं किन्तु वह वस्तुत: भूलें करता नहीं ।

काम क्रोध मद लोभ रत,
गृहासक्त दु:खरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि,
मूढ़ परे तम कूप ।।

★ जो काम, क्रोध, मद और लोभ में लगे हुए हैं और दु:ख रूप घर में आसक्त है, वे श्रीरामजी को कैसे जान सकते हैं । वे मूर्ख तो अन्धकार रूपी कूएँ में गिरे पड़े हैं ।

* कुए में पड़ा व्यक्ति संसार का विस्तार नहीं देख सकता, इसी प्रकार कामादि दोषों से घिरा व्यक्ति विकारहीन प्रभु का रूप नहीं समझ सकता ।

सुनहु राम कर सहज सुभाऊ ।
जन अभिमान न राखहिं काऊ ।।

★ श्रीरामजी का सहज स्वभाव सुनिये । वे भक्त में घमण्ड कभी नहीं रहने देते ।

* घमण्ड भक्त की भगवान से भावनात्मक रूप से दूर ले जाते हैं अत: उसे वे नष्ट ही करते हैं ।

संसृत मूल सूलप्रद नाना ।
सकल सोक दायक अभिमाना ।।

⊗ सूल प्रद (शूलप्रद)=कष्ट पहुँचने वाले ।

★ क्योंकि घमण्ड सांसारिक क्लेशों का कारण है और विविध प्रकार के क्लेशों तथा समस्त शोकों को देने वाला है ।

ताते करहिं कृपानिधि दूरी ।
सेवक पर ममता अति भूरी ।।

⊗ भूरी=अधिक ।

★ इसलिए दया निधि उसे (घमण्ड को) दूर कर देते हैं, क्योंकि सेवक पर उनकी बहुत ही ममता है ।

* जिस पर अपना सच्चा स्नेह होता है उसे गलत मार्ग पर चलने से बलपूर्वक भी रोकना उचित है ।

जिमि सिसु तन ब्रन होइ गोसाईं ।
मातु चिराव कठिन की नाईं ।।

⊗ ब्रन=फोड़ा, चिराव=चिरा डालना ।

★ हे गोसाईं ! जैसे बालक की देह में फोड़ा हो जाता है, तो माता उसे कठोर हृदय की तरह चिरा डालती है ।

जदपि प्रथम दुख पावइ,
रोवइ बाल अधीर ।
ब्याधि नासहित जननी,
गनति न सो सिसु पीर ।।

⊗ व्याधि=रोग, सिसु=शिशु ।

★ यद्यपि बालक पहिले (फोड़ा चीरते समय) दु:ख पाता है और अधीर होकर रोता है तो भी रोग के नाश के लिए माता बालक की उस पीड़ा को कुछ नहीं समझती (उसकी परवाह नहीं करती और फोड़े का चिरवा ही डालती है)

* माता बच्चे की पीड़ा को सहन नहीं कर सकती फिर भी बालक का फोड़ा चीरते समय वह बालक की पीड़ा को नहीं गिनती । उसी भाँति परमात्मा भी भक्त का अभिमान दूर करता है । अभिमान दूर होते समय भक्त रोता है किन्तु परमात्मा माता के समान परवाह नहीं करता ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मोहि भगत प्रिय संतत,
अस बिचारि सुनु काग ।
काय बचन मन ममपद,
करे अचल अनुराग ।।

★ **भगवान कागभुशुण्डि से कहने लगे हे काक ! सुन, मुझे भक्त हमेशा प्रिय है, ऐसा विचारकर शरीर, वाणी और मन से मेरे चरणों में अडिग प्रेम करना ।**

* भगवान को प्रेम के दिखावे से प्रसन्न नहीं किया जा सकता ।

मम माया सम्भव संसारा ।
जीव चराचर बिबिधि प्रकारा ।।

★ **यह समस्त जगत मेरी माया से उत्पन्न हैं (इसमें) अनेक प्रकार के चराचर प्राणी रहते हैं ।**

सब मम प्रिय सब मम उपजाए ।
सब ते अधिक मनुज मोहिं भाए ।।

★ **वे सब मुझे प्रिय हैं, क्योंकि सब मेरे उत्पन्न किये हुए हैं (किन्तु) मनुष्य मुझको सबसे अधिक प्रिय है ।**

* सारी सृष्टि के प्राणियों में से मनुष्य परमात्मा को अधिक प्यारा है क्योंकि वह संसार के संतुलन में भगवान का सहयोगी बन सकता है ।

तिन्ह महँ द्विज द्विज महँ श्रुतिधारी ।
तिन्ह महँ निगम धरम अनुसारी ।।

⊗ श्रुतिधारी=वेदों को मानने वाले, निगम=वेद ।

★ **उन मनुष्यों में भी ब्राह्मण, ब्राह्मणों में भी वेदों को कण्ठस्थ करने वाले, उनमें भी वेदोक्त धर्म पर चलने वाले, भगवान को सदाचरण सम्पन्न व्यक्ति अधिक पसंद हैं ।**

तिन्ह महँ प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी ।
ज्ञानिहु ते अति प्रिय बिग्यानी ।।

★ **उनमें भी वैराग्यवान मुझे प्रिय हैं । वैराग्यवानों में फिर ज्ञानी और ज्ञानियों में से भी अधिक प्रिय विज्ञानी हैं ।**

* (१) उनमें से भी विरक्त यह कथन स्पष्ट करता है कि भगवान को कर्म हीन विरक्त पसन्द नहीं । कर्म करे पर उसमें आसक्ति न हो । (२) ज्ञान को जन साधारण के व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत कर सकने वाला विज्ञानी होता है ।

तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा ।
जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ।।

★ **विज्ञानियों से भी प्रिय मुझे अपना दास है जिसे मुझसे हो गति मिलती है और दूसरी आशा नहीं है ।**

* इन सर्वज्ञान विज्ञान आदि का उपयोग अपनी प्रतिष्ठा या अहम् के लिये नहीं, भगवान के प्रेम के लिये, मर्यादाओं की प्रतिष्ठा के लिये करने वाला साधक भक्त होता है ।

एक पिता के बिपुल कुमारा ।
होहिं प्रथम गुन सील अचारा ।।

★ **एक पिता के अनेक पुत्र अलग-अलग गुण, स्वभाव और आचरण वाले होते है ।**

कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई ।
सब पर पितहि प्रीति सम होई ।।

★ **उन पुत्रों में कोई सब कुछ जानने वाला, कोई धर्म पर चलने वाला होता है । पिता का प्रेम इन सब पर बराबर होता है ।**

पुरुष नपुसंक नारि वा,
जीव चराचर कोइ ।
सर्व भाव भज कपट तजि,
मोहि परम प्रिय सोइ ।।

★ **पुरुष हो, नपुंसक हो, स्त्री हो अथवा चर-अचर कोई भी जीव हो, कपट छोड़कर जो भी सर्व भाव से मुझे भजता है, वहीं मुझे अधिक प्रिय है ।**

* सांसारिक योग्यतायें किसी में कितनी है, प्रभु प्रेम पाने के लिये यह बात अधिक महत्व नहीं रखती, महत्व इसका है कि जो भी है उसे निश्चल भाव से अर्पित किया गया या नहीं ।

निज अनुभव अब कहउँ खगेसा ।
बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

★ **काकभुशुण्डि जी कहने लगे हे पक्षिराज गरुड़ ! अब मैं आपसे अपना स्वयं का अनुभव कहता हूँ (वह यह है कि) प्रभु के भजन के बिना क्लेश दूर नहीं होते ।**

* भक्ति भावना के बिना व्यक्ति सदाचार परायण नहीं हो पाता और क्लेशों में ही फैला रहता है । भक्ति कैसे दृढ़ हो वह आगे समझाया ।

जाने बिनु न होइ परतीती ।
बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ।।

⊗ परतीती=विश्वास ।

★ **प्रभुता समझे बिना उन पर विश्वास नहीं जमता, विश्वास के बिना प्रेम नहीं होता ।**

* जब तक यही पता नहीं कि भगवान के गुण, उसकी शक्ति तथा मर्यादाएँ क्या हैं, तब तक उस पर विश्वास नहीं जम सकता । जिस पर विश्वास नहीं, उस पर शंका बनी रहती है और शंका रहते सच्चा प्रेम नहीं हो सकता ।

प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई ।
जिमि खगपति जल कै चिकनाई ।।

★ **और प्रेम के बिना भक्ति वैसे ही दृढ़ नहीं होती जैसे पक्षिराज ! जलकी चिकनाई नहीं ठहरती ।**

* पानी डालकर थोड़ा-सा चिकनापन थोड़े से समय के लिये लाया जा सकता है, पानी सूखते ही वह भी समाप्त हो जाता है । प्रेम बिना भक्ति भी केवल दिखावटी और नाम मात्र की होती है । अत: बिना समझे और विश्वास जमाये भक्ति संभव नहीं ।

कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष बिनु ।
चलै कि जल बिन नाव, कोटि जतन पचि पचि मरिअ ।।

★ **हे तात ! स्वाभाविक संतोष किये बिना क्या कोई शान्ति पा सकता है । (चाहे) करोड़ों उपाय करके घिस घिसकर मरिये (फिर भी) क्या कभी पानी के बिना नाव चल सकती है ।**

* सहज संतोष की साधना किये बिना शान्ति पाने का प्रयास बिना पानी के नाव चलाने जैसा मूर्खतापूर्ण है ।

बिनु सन्तोष न काम नसाहीं ।
काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं ।।

⊗ अछत (अक्षत)=जो टूटा नहीं है अर्थात् बने रहने पर ।

★ **संतोष के बिना कामनाओं का विनाश नहीं होता और कामनाओं के रहते हुए स्वप्न में भी सुख नहीं मिल सकता ।**

* इच्छाओं की पूर्ति में मनुष्य सुख मानता है किन्तु इच्छायें तो एक के बाद एक आती ही रहती हैं, अत: सुख का अनुभव नहीं हो पाता । संतोष के उदय से ही कामनायें शान्त होती हैं ।

राम भजन बिनु मिटहि कि कामा ।
थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा ।।

⊗ थल=धरती, जामा=उग सकता ।

★ **और श्रीरामजी के बिना कामनाएँ कहाँ मिट सकती हैं ? बिना धरती के भी कहीं वृक्ष उग सकते हैं ?**

* जो कल्पना और संकल्प शक्ति कामनाएँ पैदा करने में लगी रहती है उसे भगवान के प्रति प्रेम लगा देने से कामनायें पैदा होनी बंद हो जाती हैं ।

बिनु बिग्यान कि समता आवइ ।
कोउ अवकाश कि नभ बिनु पावइ ।।

⊗ अवकाश=खाली स्थान ।

★ **विज्ञान (तत्व ज्ञान) के बिना क्या समभाव आ सकता है ? नभ के बिना क्या कोई पोल पा सकता है ।**

* एक ही तत्व विभिन्न रूपों में किस प्रकार दिखाई देता है यह जाने बिना सबके प्रति समता की भावना आ ही नहीं सकती ।

श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई ।
बिनु महि गंध कि पावइ कोई ।।

★ **श्रद्धा के बिना धर्म (का आचरण) नहीं होता, क्या पृथ्वी तत्व के बिना कोई गंध मिल सकती है ?**

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* जीवन में धर्म का आचरण तभी हो पाता है जबकि मनुष्य के मन में उस धर्म के प्रति श्रद्धा अगाध हो ।

बिनु तप तेज कि कर विस्तारा ।
जल बिनु रस कि होइ संसारा ।।

⊗ विस्तारा=फैल सकता ।

★ तपस्या के बिना क्या तेज का प्रकाश संभव है? जल तत्व के बिना संसार में क्या रस हो सकता है?

* सारे रस तरल रूप में हैं,उसी प्रकार तेज तप के ही आधार पर बढ़ता है ।

सोल कि मिल बिनु बुध सेबकाई ।
जिमि बिनु तेज नरूप गोसाँई ।।

★ विद्वानों की सेवा के बिना क्या शील (सदाचार) प्राप्त हो सकता है ? हे गोसाईं ! जैसे बिना तेज (अग्नि तत्व) के रूप नहीं मिलता ।

* मूर्ख तो उद्दण्डता में ही शान समझने लगते हैं, समझदार ही शील का महत्व जानते हैं । रूप बाहरी बनावट में नहीं भीतरी तेज में है ।

निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा ।
परस कि होइ बिहीन समीरा ।।

⊗ थीरा=स्थिर, परस=स्पर्श ।

★ निज सुख (आत्मानन्द) के बिना क्या मन स्थिर हो सकता है ? वायु तत्व के बिना क्या स्पर्श संभव है ?

* जब तक मनुष्य बाहरी संसार में सुख खोजता है तब तक मन अशान्त रहेगा, जब अन्दर के सुख का श्रोत, आत्मबोध पा लेता है तभी मन स्थिर होता है ।

कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा ।
बिनु हरि भजन न भव भय नासा ।।

★ क्या विश्वास के बिना कोई भी सिद्धि हो सकती है? इसी तरह श्रीराम के भजन के बिना जन्म-मृत्यु के भय का नाश नहीं होता ।

* (१) जीवन में सफलता के लिये पूरी शक्ति से प्रयास आवश्यक है और वह बिना विश्वास नहीं किया जा सकता । इसी प्रकार ईश्वर की सत्ता और महत्ता समझे बिना संसार का भय समाप्त नहीं हो पाता ।

बिनु बिस्वास भगति नहिं,
तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ,
जीव न लह बिश्रामु ।।

⊗ द्रवहिं=पिघलते ।

★ बिना विश्वास के भक्ति नहीं होती भक्ति के बिना जीव सपने में भी शान्ति नहीं पाता ।

* इस प्रकार अपनी शक्ति का मूल आधार अपना दृढ़ आत्म विश्वास ही है ।

नित जुग धर्म होहि सब केरे ।
हृदयँ राम माया के प्रेरे ।।

★ श्रीरामजी को माया से प्रेरित होकर सभी के हृदयों में समस्त युगों के धर्म हमेशा होते रहते हैं ।

* धर्म का स्वरूप समय और परिस्थितियों के अनुरूप बदलता रहता है, इसलिये धर्माचरण के प्रति रुढ़िवादी दुराग्रह नहीं करना चाहिये ।

बुध जुग धर्म जानि मन माहीं ।
तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ।।

★ पंडित जन युगों के धर्म को मान में पहिचान कर अधर्म छोड़कर धर्म से प्रेम करते हैं ।

* बुद्धिमान लोग न तो धर्म के प्रति अपनी आस्था ही छोड़ते हैं और न धर्म के रुढ़िवादी रूप के प्रति मोह करते हैं ।

काल धर्म नहिं व्यापहिं ताही ।
रघुपति चरन प्रीति अति जाही ।।

⊗ काल धर्म=युग धर्म ।

★ जिसका श्रीरामजी के चरणों में बहुत ही प्रेम है, उसको युग धर्म नहीं व्यापते हैं ।

* युग धर्म न व्यापने का अर्थ है धर्म का मूल तत्व समझ में आ जाने से धर्माचरण के बाह्य रूप बदलते रहने से कोई परेशानी अनुभव नहीं होती ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नट कृत बिकट कपट खगराया ।
नट सेवकहिं न व्यापइ माया ।।

⊗ नटकृत=नट द्वारा किया हुआ, कपट=इन्द्रजाल ।

★ **नट बाजीगर का किया हुआ इन्द्रजाल देखने वालों के लिए बड़ा विकट होता है । किन्तु नट के सेवक को उसकी माया नहीं व्यापती ।**

* भगवान मनुष्य के विवेक और निष्ठा के परीक्षण के लिए समय-समय पर धर्म के बाह्य कलेवर बदलते रहते हैं पर भक्त उसका मार्ग जान जाते हैं अत: उन्हें सब स्वाभाविक लगता है ।

कबहुँ कि दुख सब कर हित ताकें ।
तेहि के दरिद्र परम मनि जाकें ।।

★ **सभी का भला चाहने से क्या दु:ख कभी हो सकता है ? जिसके पास पारस मणि है उसके समीप क्या गरीबी रह सकती है?**

* परमार्थ भावना दुख रूपी कुधातु को सुख रूपी स्वर्ण में बदल देने वाली पारस मणि के समान है । सबका हित चाहने वाले का हित सब चाहते हैं और आत्मा का आशीर्वाद परम संतोष रूप में सामने आता है ।

परद्रोही की होहिं निसंका ।
कामी पुनि कि रहहिं अकलंका ।।

★ **दूसरे से द्रोह बैर करने वाले क्या निश्चिंत हो सकते हैं ? और कामुक क्या कलंकहीन रह सकते हैं ।**

* (१) जो दूसरों का व्यर्थ ही विरोध करते हैं उन्हें उनके द्वारा अपना कलंकित होने का भय सताता रहता है । (२) कामुकता मनुष्य को अन्धा बना देती है और वह ऐसे आचरण कर बैठता है जो बदनाम कर दे ।

काहू सुमति कि खल सँग जामी ।
सुभ गति पाव कि परत्रिय गामी ।।

⊗ जामी=जमी (पौधे की तरह बढ़ना), परत्रिय=पराई स्त्री, गामी=गमन करने वाला ।

★ **दुष्टों के साथ से क्या किसी को सुबुद्धि पैदा हुई है । पराई स्त्री का गमन करने वाला क्या उत्तम गति पा सकता है?**

* सुमति का बीज तो मनुष्य में होता है किन्तु श्रेष्ठ संगति के खाद पानी से ही वह जमता है, दुष्ट संग से उसके अंकुर नष्ट होते रहते हैं । नारी के प्रति अपवित्र दृष्टि वाले की सुगति नहीं,दुर्गति ही होती है ।

पावन जस कि पुन्य बिनु होई ।
बिनु अघ अजस कि पाबइ कोई ।।

⊗ अजस (अयश)=बदनामी, पावन=पवित्र ।

★ **बिना पुण्य के क्या पवित्र यश मिल सकता है? बिना पाप के भी क्या कोई अपकीर्ति पा सकता है?**

* यश पवित्र भी होता है और दूषित भी,दूषित यश आत्मिक पतन तथा पावन यश प्रगति का उल्लास देने वाला होता है । अपयश कुकर्मों से ही मिलता है ।

लाभु कि किछु हिर भगति समाना ।
जेहिं गावहिं श्रुति संत पुराना ।।

★ **जिसकी महिमा वेद, संत और पुराण कहते हैं, उस हरि भक्ति के समान कोई अन्य लाभ भी है ।**

* सच्ची भक्ति दुर्लभ है क्योंकि वह मिल जाने पर भक्त भगवान का भेद मिट जाता है ।

अघ कि पिसुनता सम कछु आना ।
धर्म कि दया सरिस हरि जाना ।।

⊗ पिसुनता=चुगलखोरी, सरिस=समान ।

★ **चुगलखोरी के समान क्या कोई अन्य पाप है? और हे गरुड़जी ! दया के समान क्या कोई अन्य धर्म है ?**

* अन्य पापों में तो मनुष्य अपने कुछ हित की भी आशा करता है । पर चुगलखोरी में तो सिवा दूसरों के अहित और फूट पैदा होने के कुछ भी नहीं मिलता अत: यह बहुत बड़ा पाप है । दया अर्थात् संवेदना से प्रेरित होकर मनुष्य परमार्थ-परायण बन जाता है, अत: यह श्रेष्ठ धर्म है ।

उमा जे रामचरन रत,
बिगत काम मद क्रोध ।
निज प्रभुमय देखहिं जगत,
केहि सन करहि बिरोध ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ (शिवजी कहते हैं) हे पार्वती ! जो श्रीरामजी के चरणों के प्रेमी हैं और काम, अहंकार तथा क्रोध छोड़ चुके हैं, वे सारे संसार को अपने भगवान से भरा हुआ देखते हैं फिर वे किससे बैर करें ?

* काम, मद, क्रोध तथा विरोध भेद बुद्धि के कारण ही उपजते हैं । सर्वत्र अपने इष्ट को देखने वाले के लिए उनका अस्तित्व ही नहीं रह जाता ।

भगतिहि ग्यानहिं नहिं कछु भेदा ।
उभय हरहिं भव संभव खेदा ।।

⊗ खेदा (खेद)=क्लेश, संभव=उत्पन्न ।

★ भक्ति और ज्ञान में (लक्ष्य की दृष्टि से) कुछ भी अन्तर नहीं है । दोनों ही जगत् से उत्पन्न क्लेशों को दूर करते हैं ।

* संसार के क्लेशों से बचने के लिए भक्ति-मार्ग और ज्ञान-मार्ग दोनों हैं । जिसे जैसा अच्छा लगे, वह उस मार्ग पर चले ।

नाथ मुनीस कहहिं कछु अन्तर ।
सावधान सोउ सुनु बिहंग बर ।।

★ हे प्रभु ! मुनीश्वर इनमें कुछ भेद बतलाते है । हे पक्षि श्रेष्ठ ! उसे सावधान होकर के सुनिये ।

* साधना विधि में साधक की मनोभूमि के अनुसार उसमें कुछ भेद होता है, उसे समझ लेना चाहिए ।

सुनहु तात यह अकथ कहानी ।
समुझत बनइ न जाइ बखानी ।।

★ हे तात ! यह अकथनीय कहानी सुनिये ! यह समझते नहीं बनती कहते भी नहीं बनती ।

* अर्थात् यह अनुभव गम्य है, केवल तर्क से इसे पूरी तरह समझा नहीं जा सकता ।

ईस्वर अँस जीव अविनासी ।
चेतन अमल सहज सुख रासी ।।

★ जीव प्रभु का अंश है ! (अतएव) वह अविनाशी, चैतन्य, निर्मल और स्वभाव से ही सुख की खान है ।

* जिस भाँति समुद्र से भिन्न बूँद में सारे गुण समुद्र के पानी के ही होते हैं, उसी भाँति जीव भी परमात्मा का अंश है वह भी परमात्मा के सारे गुण रखता है ।

सो मायाबस भयउ गोसाईं ।
बँध्यो कीर मरकट की नाईं ।।

⊗ कीर=तोते, मरकट=बानर ।

★ हे गोसाईं ! वह माया के वशीभूत होकर तोते और बन्दर के समान अपने आप ही बँध गया ।

* तोंता और बन्दर जिस भाँति थोड़े से अन्न के दानों के लालच में बँध जाया करते हैं,उसी भाँति जीव भी संसार के थोड़े से आकर्षण में फँसकर अपने आपको बाँध लेता है ।

जड़ चेतनहिं ग्रन्थि परि गई ।
जदपि मृषा छूटत कठिनई ।।

⊗ ग्रन्थि=गांठ, मृषा=मिथ्या ।

★ इस प्रकार जड़ और चैतन्य की गाँठ पड़ गई है । यद्यपि वह ग्रन्थि झूठ ही है, फिर भी उसके छूटने में कठिनाई है ।

* शरीर पाँच तत्वों का बना जड़ और आत्मा ईश्वर अंश चेतन है । दोनों के अपने-अपने गुण हैं पर परस्पर उलझ जाने से दोनों दुर्गति पाते हैं । यह उलझन क्षणिक है पर फिर भी कष्टदायक है ।

तब ते जीव भयउ संसारी ।
छूट न ग्रन्थि न होई सुखारी ।।

★ तभी से जीव जन्म-मरण वाला हो गया । अब न तो गाँठ खुलती है और न वह सुखी होता है ।

* चेतन तत्व जड़ के बंधन से छूटे बिना सुख का अनुभव नहीं कर पाता और छूट पाता नहीं है ।

श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई ।
छूट न अधिक अधिक अरुझाई ।।

★ वेदों और पुराणों में अनेक उपाय बतलाये है, परन्तु वह गाँठ खुलती नहीं, बल्कि अधिकाधिक उलझती ही जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* केवल पुस्तक ज्ञान इसे खोल नहीं सकता क्योंकि यह अनुभूति का विषय हैं ।

जीव हृदय तम मोह बिसेषी ।
ग्रंथि छूटि किमि परइ न देखी ।।

⊗ परइ=पड़ती ।

★ **जीव के अन्त:करण में अज्ञान रूपी अंधेरा विशेष रूप से छाया रहता है इससे गाँठ देख ही नहीं पड़ती है, सुलझे तो कैसे?**

* अन्त:करण को प्रकाशित किये बिना वह गाँठ सुलझ नहीं सकती । वह प्रकाश कैसे आये, यह आगे बताया गया है ।

अस संजोग ईस जब करई ।
तबहुँ कदाचित सो निरुअरई ।।

⊗ कदाचित=कभी कभी, निरुअरई=छूट पाती ।

★ **जब कभी प्रभु ऐसा संयोग कर देते हैं तब भी कदाचित् ही वह (ग्रन्थि) सुलझ पाती है ।**

* भगवान प्रकाश पैदा करने के लिये अवसर देते हैं । यदि मनुष्य समय पर प्रयास करे तो उसका लाभ पा सकता है ।

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई ।
जौ हरि कृपा हृदय बस आई ।।

★ **श्रीराम की दया से यदि सात्विकी श्रद्धा रूपी सुन्दर गाय हृदय रूपी घर में आकर बस जाय ।**

* सात्विकी श्रद्धा से अर्थ है दिखावटी अथवा स्वार्थलिप्त श्रद्धा नहीं, शुद्ध प्रेम जन्य श्रद्धा ।

नोइ निवृत्ति पात्र विस्वासा ।
निर्मल मन अहीर निज दासा ।।

⊗ नोइ=गाय के पिछले पैर बाँधने की रस्सी, निवृत्ति=अनासक्ति, अहीर=दुहने वाला ।

★ **वैराग्य रूपी रस्सी है । विश्वास रूपी दूध दुहने का बरतन है, निष्पाप मन जो अपने वश में हो, दुहने वाला अहीर कहा जा सकता है ।**

* अनासक्ति भावना श्रद्धा को विचलित नहीं होने देती, विश्वास न होने पर प्राप्त वस्तु को भी रखा नहीं जा सकता अत: वह पात्र है और निर्मल तथा नियंत्रित मन ही श्रद्धा का लाभ ले सकता है ।

परम धर्ममय पय दुहि भाई ।
अवटै अनल अकाम बनाई ।।

⊗ पय=दूध, अवटे=औटावें ।

★ **सात्विकी श्रद्धा और निर्मल मन के सहयोग से प्राप्त परम धर्ममय दूध को निकालकर उसे निष्काम भाव रूपी आग पर ठीक तरह औटावें ।**

* निष्काम भावना से ही धर्म गाढ़ा अर्थात् दृढ़ होता है ।

तोष मरुत तब छमा जुड़ावै ।
धृति सम जावनु देइ जमावै ।।

⊗ जुड़ावै=ठंडाकरे, धृति=धैर्य, जावनु=जामन ।

★ **फिर क्षमा और संतोष रूपी वायु से उसे (गरम किये दूध को) ठंडा करें और धीरज और शम (मन का निग्रह) रूपी जामन से उसे जमावें ।**

* यदि संतोष और क्षमा भाव नहीं है तो धर्माचरण करते हुए व्यक्ति अधिक पाने की लालसा तथा धर्म न कर पाने वालों के प्रति रोष से भर जाता है । धर्म को जमाना धैर्य का काम है ।

मुदिता मथे विचार मथानी ।
दम अधार रजु सत्य सुबानी ।।

⊗ मुदिता=प्रसन्नता, रजु=रस्सी ।

★ **तब प्रसन्नता रूपी हाँडी में सद्विचार रूपी मथानी से दम (इन्द्रिय दमन) के आधार पर सत्य और मीठी वाणी रूपी रस्सी लगाकर उसे मथे ।**

* धर्म का तत्व निकालने के लिये सद विचार पूर्ण मंथन अर्थात् मनन चिंतन करें । विचार संचालन के लिये चर्चा करनी पड़ती है, उसमें सत्य और मधुरता रहे । दम-विचारों को हिलने नहीं देता ।

तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता ।
विमल विराग सुभग सुपुनीता ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

⊗ नवनीता=मक्खन, सुमंग=सुन्दर, सुपुनीता=पवित्र ।

★ **और तब मथकर उसमें से निर्मल, सुन्दर और बहुत ही पवित्र वैराग्य मक्खन निकाल लेवें ।**

* इस प्रकार धर्माचरण रत रहने पर संसार से सहज वैराग्य भाव आ जाता है ।

तब विज्ञान रूपिनी,
बुद्धि बिसद घृत पाइ ।
चित दिआ भरि धरें दृढ़,
समता दिअटि बनाइ ।।

⊗ बिसद=निर्मल, दिआ=दीपक, दिअटि=बत्ती ।

★ **तब विज्ञान रूपिणी बुद्धि (ज्ञान) रूपी निर्मल घी को प्राप्त करके उससे चित्त रूपी दीपक को भरकर, समान दृष्टि रूपी बत्ती बनाकर उस पर उसे जमा करके रख देवें ।**

* विज्ञान बुद्धि का अर्थ है सिद्धान्त को प्रयुक्त करने में कुशल बुद्धि ! इसके सहारे चित्त में वैराग्य भाव भरे और भेद बुद्धि समाप्त कर दे ।

एहि बिधि लेसै दीप,
तेज रासि विग्यानमय ।
जातहिं जासु समीप,
जरहिं मदादिक सलभ सब ।।

⊗ लेसै=जलावें, सलभ=पतंगें ।

★ **इस प्रकार तेज के पुंज विज्ञान मय दीपक को जलावें, जिसके पास जाते ही मद आदि समस्त पतंगें जल जावेंगे ।**

* सद्बुद्धि के नियंत्रण से चित्त में वैराग्य भावना के संयोग से उत्पन्न ज्ञान के प्रभाव से मनोविकार जल जाते हैं ।

सोहमस्मि इति वृति अखण्डा ।
दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा ।।

⊗ सोहमस्मि=वह ब्रह्म मैं हूँ ।

★ **सोहमस्मि अर्थात् मैं परमात्मा का अंश आत्मा हूँ, यह अखण्ड परम प्रचण्ड दीपक की लौ है ।**

* जब चित्त में यह भाव सदा बना रहे कि मैं शरीर रूप नहीं आत्मारूप हूँ, तो समझो अखण्ड ज्योति प्राप्त हो गयी ।

आतम अनुभव सुख सुप्रकासा ।
तब भव मूल भेद भ्रम नासा ।।

★ **(इस प्रकार) तब आत्म बोध के सुख का सुन्दर प्रकाश फैलता है, और जगत् के मूल भेद रूपी भ्रम का विनाश हो जाता है ।**

* ईश्वर से भिन्न हूँ– दूर हूँ यही भाव और भ्रम पीड़ा पैदा करता है, आत्मबोध होते ही वह भ्रम नष्ट हो जाता है ।

प्रबल अविद्या कर परिवारा ।
मोह आदि तम मिटइ अपारा ।।

★ **और महान् शक्तिशालिनी अविद्या के परिवार मोह आदि का अपार अंधकार दूर हो जाता है ।**

* अज्ञान का जो अंधियारा अन्दर की गांठ को देखने नहीं देता वह इस प्रकार नष्ट हो जाता है ।

तब सोइ बुद्धि पाई उँजियारा ।
उर गृह बहि ग्रन्थि निरुआरा ।।

★ **तब वही (विज्ञान रूपिणी) बुद्धि आत्मबोध रूपी घर में बैठकर उस जड़ चेतन की ग्रन्थि को खोलती है ।**

* बुद्धि ग्रंथि खोल सकती है यदि उसे प्रकाश की व्यवस्था दी जावे ।

छोरन ग्रन्थि पाव जौं सोई ।
तब यह जीव कृतारथ होई ।।

⊗ छोरन पाव=खोलने पावे, कृतारथ (कृतार्थी)=धन्य ।

★ **यदि वह (विज्ञान रूपिणी बुद्धि) उस गाँठ को खोलने पावे, तब यह जीव कृतार्थ होता है ।**

* जड़ शरीर और चेतन आत्मा की तुष्टि के लिये तभी उचित व्यवस्था बन सकती है जब उनके महत्व को अलग-अलग समझा जा सके ।

छोरत ग्रन्थि जानि खगराया ।
विघ्न अनेक करइ तब माया ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ लेकिन हे पक्षिराज गरुड़जी ! ग्रन्थि खोलते हुए समझकर माया फिर अनेक बाधाएँ पैदा करती हैं ।

* जीवन के हर कार्य में बाधाओं का सामना करने की सतर्कता और साहस बनाये रखना चाहिए ।

रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई ।
बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई ।।

★ हे भाई ! वह (माया) अनेक रिद्धि-सिद्धियों को भेजती है, जो आकर बुद्धि को लोभ दिखाती हैं ।

* लौकिक सिद्धियाँ भी आत्म कल्याण के मार्ग में बाधक बन जाती हैं ।

होइ बुद्धि जौं परम सयानी ।
तिन्ह तन चितव न अनहित जानी ।।

★ यदि बुद्धि अत्यन्त ही चतुर हुई, तो वह उन (रिद्धिसिद्धियों) को अहितकर (हानिकर) समझ उनकी ओर देखती भी नहीं ।

कहेउँ ग्यान सिद्धान्त बुझाई ।
सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई ।।

★ मैंने ज्ञान का सिद्धान्त समझाकर कह दिया । अब भक्ति रूपी मणि का महत्व सुनिये ।

राम भगति चिन्तामनि सुन्दर ।
बसइ गरुड जाके उर अन्तर ।।

★ श्रीरामजी की भक्ति सुन्दर चिन्तामणि के समान है । हे गरुड जी ! यह जिसके हृदय के भीतर निवास करती है ।

* भक्ति का अर्थ है प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण । ऐसी स्थिति में प्रभु का प्रकाश अन्त:करण में उभर आता है जिसकी उपमा मनि से दी गयी है ।

परम प्रकास रूप दिन राती ।
नहिं कछु चहिअ दिया घृत बाती ।।

★ वह (भक्ति) दिनरात परम प्रकाश रूप रहती है । उसे दीपक, घी और बत्ती की कुछ भी आवश्यकता नहीं ।

* भक्ति के लिए अनेक कर्मकाण्ड नहीं करने पड़ते ।

मोह दरिद्र निकट नहिं आवा ।
लोभ बात नहिं ताहिं बुझावा ।।

⊗ बात=हवा ।

★ फिर मोह रूपी दरिद्रता पास में नहीं आती और लोभ रूपी वायु उस मणिमय दीपक को बुझा नहीं सकती ।

* भक्त का धन उसकी भक्ति या ईश्वर प्रेम ही है अत: उसे दरिद्रता का बोध ही नहीं होता और दूसरे धन की कल्पना ही नहीं होने से लोभ का प्रश्न भी नहीं उठता ।

प्रबल अविद्या तम मिट जाई ।
हारहिं सकल सलभ समुदाई ।।

★ (उस मणि के प्रकाश से) अविद्या का घना अंधेरा मिट जाता है । मदादि पतंगों का समस्त समूह हार जाता है ।

* आत्मबोध के प्रकाश की तरह भक्ति का प्रकाश भी अविद्या रूपी अन्धकार को मिटाने तथा मनोविकारों को जला डालने में समर्थ है ।

खल कामादि निकट नहिं जाहीं ।
बसइ भगति जाके उर माहीं ।।

★ जिसके हृदय में भक्ति निवास करती है, काम, क्रोध, लोभ आदि दुष्ट तो उसके समीप भी नहीं आते ।

* यह सब दोष अपनी कामनाओं के फलस्वरूप पैदा होते हैं । भक्ति में कामनायें समाप्त हो जाती है अत: दोषों के लिए मार्ग ही नहीं रह जाता ।

चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं ।
जे मनि लोगि सुजतन कराहीं ।।

⊗ सिरोमनि (शिरोमणि)=श्रेष्ठ ।

★ संसार में वे ही मनुष्य चतुरों के शिरोमणि हैं जो उस भक्ति रूपी मणि को पाने के लिए श्रेष्ठ प्रयत्न करते हैं ।

* भक्ति प्राप्त करने के लिए भी श्रेष्ठ यत्न करना पड़ता है, यही बुद्धिमानी भी है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुगम उपाय पाइबे केरे ।
नर हतभाग्य देहिं भटभेरे ।।

⊗ हतभाग्य=अभागे, देहि भटभेरे=ठुकरा देते हैं ।

★ **उसको (मणि को) प्राप्त करने का उपाय सरल ही है, परन्तु अभागे मनुष्य उन्हें ठुकरा देते हैं ।**

* जो सही दिशा में प्रयास नहीं करते उन्हें अभागा कहा गया, क्योंकि भाग्य अपने कर्मों का ही प्रतिफल है ।

पावन पर्वत वेद पुराना ।
राम कथा रुचिराकर नाना ।।

⊗ रुचिराकर (रुचिर+आकर)=सुन्दर खानें ।

★ **वेद-पुराण पवित्र पर्वत है । श्रीरामजी की अनेक प्रकार की कथाएँ उन पर्वतों में सुन्दर खजाने हैं ।**

* भक्ति रूपी मणि पाने का सहीं मार्ग बताया जा रहा है ।

मर्मी सज्जन सुमति कुदारी ।
ग्यान बिराग नयन उरगारी ।।

⊗ मर्मी=रहस्य जानने वाले, कुदारी=कुदाली, उरगारी=गरुड़जी ।

★ **सन्त पुरुष (उन खानों के रहस्य को जानने वाले) मर्मी है और सुन्दर बुद्धि (खोदने वाली) कुदाल के समान है । हे गरुड़जी ! ज्ञान और वैराग्य, ये दो उनके नेत्र हैं ।**

* ज्ञानी सन्त वेद पुराण में से ज्ञान और वैराग्य पूर्ण दृष्टि से कथाओं में भक्ति-तत्व का मर्म बता सकते हैं । साधक उनके मार्गदर्शन में सद्बुद्धि द्वारा उसे प्राप्त कर सकते हैं ।

भाव सहित खोजइ जो प्रानी ।
पाव भगति मनि सब सुख खानी ।।

★ **जो प्राणी उसे भावनापूर्वक खोज करता है, वह समस्त सुखों की खान इस भक्ति रूपी मणि को प्राप्त कर सकता है ।**

* प्रेम भावना के अभाव में अधूरे मन से किया गया प्रयास सफल नहीं होता ।

मोरे मन प्रभु अस विस्वासा ।
राम ते अधिक राम कर दासा ।।

★ **काकभुशुण्डि जी गरुड़जी से कहते हैं।हे प्रभु ! मेरे मन में तो ऐसा विश्वास है कि श्रीरामजी के भक्त श्रीरामजी से भी बढ़कर हैं ।**

* समाज के लिए भगवान के प्रति समर्पित व्यक्ति भगवान से भी श्रेष्ठ क्यों हैं यह तथ्य आगे समझाते हैं ।

राम सिंधु घन सज्जन धीरा ।
चन्दन तरु हरि सन्त समीरा ।।

★ **श्रीरामजी समुद्र हैं तो धैर्यशील सन्त पुरुष बादल है । श्रीराम चन्दन के वृक्ष हैं तो सन्त हवा हैं ।**

* समुद्र और चन्दन के वृक्ष तक सब नहीं पहुँच सकते, पर सन्त उनका लाभ स्वयं ही लोगों तक पहुँचा देते हैं ।

अस विचार जोड़ कर सतसंगा ।
राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा ।।

★ **ऐसा विचार करके जो भी सन्तों का साथ करता है, हे गरुड़जी ! उसके लिए श्रीरामजी की भक्ति सुलभ हो जाती है ।**

* सज्जनों का संग उक्त तथ्य समझकर करे यह निर्देश है । उनकी वृत्ति देखे बिना केवल वेष देखकर संगति करने वाला धोखा खा सकता है । भक्ति के धोखे आडम्बर पल्ले पड़ सकता है । सच्ची भक्ति मिली या नहीं इसकी परख आगे बताते हैं ।

बिरति चर्म असि ग्यान मद
लोभ मोह रिपु मारि ।
जय पाइअ सो हरि भगति
देख खगेस बिचारि ।।

⊗ चर्म=ढाल, असि=तलवार ।

★ **वैराग्य रूपी ढाल से स्वयं को बचाते हुए और ज्ञान रूपी तलवार से मद, लोभ और मोह रूपी शत्रुओं को मार करके जो विजय प्राप्त करती है वही हरिभक्ति है, पक्षिराज । इसे सोच करके देखिए ।**

* किसी को असली भक्ति मिली या नकली,इसका यही प्रमाण मानना चाहिये कि वह ज्ञान और वैराग्य के द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अपने विकारों को जीत सका है या नहीं । यों दिखावा तो कोई भी कर लेते है ।

नर तन सम नहिं कवनिउ देही ।
जीव चराचर जाचत तेही ।।

⊗ जाचत=याचना करते हैं। (माँगते है)

★ नर तन के समान कोई देह नहीं है । चर अचर समस्त जीव उसकी याचना करते हैं ।

* जिसे दुर्लभ वस्तु मिल जाये उसे उसका श्रेष्ठतम उपयोग करना चाहिए ।

नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी ।
ग्यान बिराग भगति सुभ देनी ।।

⊗ निसेनी=सीढ़ी, अपवर्ग=मोक्ष ।

★ यह मनुष्य योनि नरक, स्वर्ग और मोक्ष की सीढ़ी है, शुभ ज्ञान, वैराग्य और भक्ति को देने वाली है ।

सो तनु धरि हरि भजहि न जे नर ।
होहिं विषय रत मंद मंद तर ।।

⊗ मंद मंद तर=नीच से भी नीचा ।

★ ऐसी मनुष्य देह को पा करके भी जो लोग श्रीराम का भजन नहीं करते और नीच से नीच विषयों में लगे रहते हैं ।

* विषय तो अन्य योनियों में भी मिल जाते हैं, मनुष्य शरीर में मिला अवसर उसके लिये नष्ट करना मूर्खता है ।

काँच किरिच बदले ते लेहीं ।
कर ते डारि परस मनि देहीं ।।

⊗ किरिच=टुकड़े ।

★ वे पारस-मणि को हाथ से फेंक देते हैं और बदले में काँच के टुकड़े ले लिया करते हैं ।

* भक्ति पारस मणि के समान तथा विषयों को काँच के टुकड़े के समान कहा है ।

नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं ।
सन्त मिलन सम सुख जग नाहीं ।।

★ संसार में दरिद्रता के बराबर दुःख नहीं है तथा संतों के मिलन के बराबर संसार में सुख नहीं है ।

* दरिद्रता धन की कमी नहीं, मन की स्थिति है, जिस कारण मनुष्य अपने आप को हीन और अभावग्रस्त मानता है । संत सुख के अनेक मार्ग बताने और उन पर चलने में सहयोग देने वाले होते हैं अतः उनसे मिलना सुखकर है ।

पर उपकार बचन मन काया ।
सन्त सहज सुभाउ खगराया ।।

★ और हे पक्षिराज ! मन, वाणी और देह से परमार्थ करना यह संतों का सहज स्वभाव है ।

* सच्चे संत सहज स्वभाव वश ही पर-उपकार करते हैं किसी लोभ या दबाव के कारण नहीं ।

सन्त सहहिं दुख पर हित लागी ।
पर दुख हेतु असंत अभागी ।।

★ सन्त दूसरों की भलाई के लिए दुःख सहन करते हैं और अभागे असन्त अन्य को दुःख पहुँचाने के लिए स्वयं कष्ट पाते हैं ।

* दूसरों की भलाई के लिए जो कष्ट सहन करता है वह है सज्जन । दूसरों को कष्ट पहुँचाने के लिए जो कष्ट सहन करता है वह है दुर्जन ।

खल बिनु स्वारथ पर अपकारी ।
अहि मूषक इब सुनु उरगारी ।।

⊗ अहि=साँप, मूषक=चूहे ।

★ हे सर्पों के शत्रु गरुड़जी ! सुनिये, दुष्ट बिना किसी स्वार्थ के साँप और चूहे के समान अकारण ही अन्यों का बुरा करते है ।

पर सम्पदा बिनासि नसाहीं ।
जिमि ससि हति हिमउपल बिलाहीं ।।

⊗ बिनासि=नाश करके, नसाहीं=नष्ट हो जाते हैं, ससि=खेती, हिमउपल=ओले, बिलाहीं=गल जाते हैं ।

★ वे दूसरों की सम्पत्ति का नाश करके स्वयं नष्ट हो जाते हैं, जैसे खेती का नाश करके ओले नष्ट हो जाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* दुर्जन स्वयं भी पतित हो जाते हैं दूसरों को भी ले डूबते हैं ।

सन्त उदय सन्तत सुखकारी ।
बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी ।।

⊗ इन्दु=चन्द्रमा, तमारी=सूर्य ।

★ **संतो का उदय हमेशा ही सुख देने वाला होता है जैसे चन्द्रमा और सूर्य का उदय संसार भर के लिए सुखकर है ।**

* उदय का अर्थ यहाँ उत्कर्ष-उन्नति से है । सन्तों की उन्नति से समाज का हित होता है ।

परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा ।
पर निंदा सम अघ न गरीसा ।।

⊗ गरीसा=भारी ।

★ **वेदों में अहिंसा को परम धर्म स्वीकार किया है और पराई निन्दा के समान भारी पाप नहीं है ।**

सक के निंदा जे जड़ करहीं ।
ते चमगादुर होइ अवतरहीं ।।

★ **जो मूर्ख मनुष्य सभी की निन्दा करते हैं वे चमगादड़ जन्म धारण करते हैं ।**

* चमगादड़ उल्टा लटका रहता है, निन्दक को भी ऐसी ही दुर्गति भोगनी पड़ती है ।

सुनहु तात अब मानस रोगा ।
जिन्ह ते दुख पाबहिं सब लोगा ।।

★ **हे तात ! अब मानस-रोग सुनिये, जिनसे सभी लोग दुःख उठाया करते हैं ।**

* मन के रोग बड़े भयंकर होते हैं । जिनमें ये रोग होते हैं उन्हें शरीर की पीड़ा से भी अधिक पीड़ा उठानी पडती है ।

मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला ।
तिन्ह ते पुनि उपजहि बहु सूला ।।

★ **समस्त मानसिक रोगों का मूल मोह अज्ञान है । उन ब्याधियों से फिर और अनेक शूल पैदा होते हैं ।**

* मन का अज्ञान ही समस्त दुखों का कारण है । इस एक अज्ञान के होने से अन्य अनेक दुःख जन्म लेते हैं ।

काम बात कफ लोभ अपारा ।
क्रोध पित्त नित छाती जारा ।।

★ **काम बात है, लोभ बढ़ा हुआ कफ है और क्रोध पित्त है जो हमेशा छाती जलाता रहता है ।**

* बात उत्तेजना, कफ जड़ता और पित्त जलन पैदा करता है यही प्रतिक्रियायें काम, लोभ और क्रोध की हैं ।

प्रीति करहिं जो तीनिउ भाई ।
उपजइ सन्यपात दुखदाई ।।

⊗ सन्यपात=सन्निपात ।

★ **यदि कहीं ये तीनों भाई (वात, पित्त और कफ) प्रीति कर लें (मिल जायें) तो कष्टकारक सन्निपात रोग उत्पन्न होता है ।**

* यदि मन में काम-वासना, लोभ और क्रोध तीनों एक साथ उठ जावें तो वह मन सन्निपात रोग के समान ही पीड़ा ग्रस्त और असाध्य हो जाता है ।

बिषय मनोरथ दुर्गभ नाना ।
ते सब सूल नाम को जाना ।।

★ **विषयों की इच्छाएँ हैं, वे ही समस्त शूल (दर्द) हैं, उनके नाम कौन जानता है।(अर्थात् वे बहुत अधिक हैं)**

* मन में विषयों के उपभोग की जितनी इच्छाऐं पैदा होती है, वे ही कष्टदायक रोगों के समान मन को दुःख पहुँचाती हैं ।

ममता दादु कंडु इरषाई ।
हरष बिषाद गरह बहुताई ।।

⊗ दादु=दाद, कंडु=खुजली, गरह=गले के रोग ।

★ **ममता दाद है, ईर्ष्या (डाह) खुजली है, हर्ष-शोक ये गले के रोगों की अधिकता है।(गलगंड, कण्ठमाला या घेघा आदि रोग हैं)**

* (१) दाद चमड़ी पर दिखता है पर उसका स्रोत खून से होता है, मोह ऐसा ही है । (२) खाज खुजलाये बिना रहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी नहीं जाता और खुजलाने पर जलन के मारे बेचैनी हो जाती है, डाह का ऐसा ही प्रभाव है । (३) हर्ष विषाद दोनों से गला रुंध जाता है अत: इन्हें गले का रोग कहा ।

पर सुख देखि जरनि सोइ छाई ।
कुष्ट दुष्टता मन कुटिलाई ॥

⊗ जरनि=जलता है, छाई=क्षयी (क्षय रोग), कुष्ट=कोढ़ रोग ।

★ **अन्य के सुख को देख करके जिसे जलन होती है, वही क्षय रोग है । दुष्टता और मन की कुटिलता ही कोढ़ रोग है ।**

* (१) अकारण शरीर सूखता जाना क्षय का लक्षण है,यही हालत दूसरे के सुख को देखकर के जलने वाले की होती है । (२) कोढ़ से शरीर की चमड़ी बदसूरत हो जाती है, उसी भाँति दुष्टता और कुटिलता से मन गंदा हो जाता है ।

अहंकार अति दुखद डमरुआ ।
दंभ कपट मद मान नहरुआ ॥

⊗ डमरुआ=डमरु(गांठ का रोग), नहरुआ=नसों का रोग ।

★ **अहंकार बहुत ही दु:ख देने वाला गाँठ का रोग है । दम्भ, कपट, मद और मान नसों का रोग है ।**

* गाँठ के रोग की तरह अभिमान भी मन में गठान बनाये रखती है । (२) नहरुआ नस के अन्दर ही पीड़ा देता है उसी प्रकार दम्भ, कपट,मद और मान भी मन में फैलते रहते हैं ।

तृष्ना उदरबृद्धि अति भारी ।
त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी ॥

⊗ उदर बृद्धि=जलोदर ।

★ **तृष्णा बड़ा भारी पेट का (जलोदर) रोग है । तीन प्रकार (पुत्र, धन और मान) की प्रबल इच्छाएँ भयंकर तिजारी है ।**

* तृष्णा जलोदर ग्रस्त पेट की तरह बढ़-बढ़ कर परेशान करती है । (२) पुत्र, धन और मान की इच्छाएँ मन को तिजारी रोग के समान बेहाल करती रहती है ।

जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका ।
कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका ॥

⊗ जुग (युग)=दो ।

★ **मत्सर और अविवेक दो प्रकार के बुखार हैं । इस प्रकार बहुत से बुरे रोग हैं, जिन्हें कहाँ तक कहूँ ?**

एक ब्याधि बस नर मरहिं,
ए असाधि बहु ब्याधि ।
पोड़हि संतत जीव कहुँ,
सो किमि लहै समाधि ॥

⊗ असाधि=असाध्य, समाधि=शान्ति ।

★ **एक ही रोग के वशीभूत हो करके मनुष्य मर जाते हैं, फिर ये तो अनेक असाध्य रोग हैं । ये जीव को लगातार पीड़ा देते रहते हैं । ऐसी दशा में वह शान्ति को कैसे प्राप्त करें ?**

* मन के रोग शरीर के रोगों की अपेक्षा अधिक भयंकर और दु:खदायी होते हैं ।

राम कृपाँ नासहिं सब रोगा ।
जौं एहि भाँति बनै संयोगा ॥

★ **यदि श्रीरामजी की दया से इस प्रकार का अवसर आ जायें तो ये समस्त रोग नष्ट हो जायें ।**

सदगुरु वैद बचन बिस्वासा ।
संजम यह न बिषय कै आसा ॥

⊗ संजम (संयम)=परहेज ।

★ **सद्गुण रूपी वैद्य की वाणी में विश्वास हो और विषयों की आशा न करें, यही परहेज है ।**

* वैद्य पर विश्वास न हो तो रोगी औषधि खाता ही नहीं और परहेज न करे तो भी दवा बेकार हो जाती है ।

रघुपति भगति संजीवन मूरी ।
अनूपान श्रद्धा मति पूरी ॥

⊗ अनूपान=दवा के साथ लिया जाने वाले पदार्थ शहद आदि ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

★ श्रीरामजी की भक्ति संजीवनी जड़ी है । श्रद्धा से भरी हुई बुद्धि ही उसका अनोपान है ।

* औषधि ठीक अनोपान के साथ ही असर करती है । भक्ति भी श्रद्धा के साथ ही प्रभाव दिखाती है ।

एहि बिधि भलेहिं सो रोग नसाहीं ।
नाहिं ते जतन कोटि नहिं जाहीं ॥

★ इस प्रकार का अवसर हो तो वे रोग भले ही नष्ट हो जाएँ नहीं तो करोड़ों उपायों से भी नहीं जाते ।

जानिअ तब मन बिरुज गोसाँई ।
जब उर बल बिरान अधिकाई ॥

⊗ बिरुज=निरोग ।

★ हे गोसाईं ! मन को निरोग तब समझना चाहिए जब हृदय में वैराग्य की शक्ति बढ़ जाय ।

* शरीर निरोग-सा दिखे पर अन्दर से शक्ति का अनुभव न हो तो रोगी स्थिति ही कही जाती है । अत: मन की निरोगता में ही वैराग्य भावना पुष्ट हो सकती है ।

सुमति क्षुधा बाढ़इ नित नई ।
विषय आस दुर्बलता गई ॥

★ उत्तम बुद्धि रूपी क्षुधा नित्य नवीन बढ़ती रहे और विषयों की आशा रूपी निर्बलता मिट जाये ।

* यदि मन में उत्तम बुद्धि की भूख (जिज्ञासा) बढ़ती जाये और विषयों की इच्छाएँ नष्ट होती जावें तो समझो कि आतंरिक निरोगिता आयी ।

बिमल ज्ञान जल जब सो नहाई ।
तब रह राम भगति उर छाई ॥

★ (इस प्रकार सब रोगों से छूटकर) जब मनुष्य निर्मल ज्ञान रूपी नीर में स्नान कर लेता है, तब उसके हृदय में राम-भक्ति छा जाती है ।

* निरोग होने पर स्नान से स्फूर्ति आती है, निरोगी मन ज्ञान गंगा में नहाकर भक्ति भाव अनुभव करता है ।

सन्त बिटप सरिता गिरि धरनी ।
पर हित हेतु सबन्ह कै करनी ॥

★ सन्त, वृक्ष, नदी, पर्वत और धरती– इन सभी की क्रिया दूसरों के भले के लिए ही होती है ।

सन्त हृदय नवनीत समाना ।
कहा कबिन्ह पर कहै न जाना ॥

★ संतों का हृदय मक्खन के समान होता है ऐसा कवियों ने कहा है, लेकिन उन्होंने (असली) कहना नहीं समझा ।

निज परिताप द्रवइ नवनीता ।
पर दुख द्रवहिं सन्त सुपुनीता ॥

★ क्योंकि मक्खन तो स्वयं के ताप से पिघलता है और परम पवित्र संत अन्य के दु:ख से पिघलते (द्रवित होते) हैं ।

तीर्थाटन साधन समुदाई ।
जोग बिराग ज्ञान निपुनाई ॥

★ तीर्थ यात्रा आदि अनेक साधन, योग, वैराग्य और ज्ञान में कुशलता ।

नाना कर्म धर्म ब्रत दाना ।
संजम दम जप तप मख नाना ॥

★ विविध प्रकार के कर्म, धर्म, व्रत और दान, अनेक संयम, दम, जप,तपस्या और यज्ञ ।

भूत दया द्विज गुर सेवकाई ।
विद्या विनय विवेक बड़ाई ॥

★ प्राणियों पर दया, ब्राह्मण और गुरु की सेवा, विद्या, विनम्रता और विवेक की बड़ाई (आदि) ।

जहँ लगि साधन वेद बखानी ।
सबकर फल हरि भगति भवानी ॥

★ ऊपर कहे अनुसार जहाँ तक वेदों ने साधन बतलाये हैं, हे भावनी ! उन सभी का फल श्रीहरि भक्ति ही है ।

* सभी धर्म कर्मकाण्ड चित्त की, निर्मलता आदि भगवान के प्रति सच्चा प्रेम पैदा करने के ही साधन हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राम चरन रति जो चह,
अथवा पद निर्बान।
भाव सहित सा यह कथा
करउ श्रवन पुट पान ॥

★ जो श्रीरामजी के चरणों में प्रीति चाहता हो या मोक्ष पद चाहता हो, वह इस कथा रूपी अमृत को प्रीति के साथ अपने कान रूपी दोने से पिये ।

* कथा की प्रेरणा को भावना पूर्वक धारण करने से भक्ति अथवा मुक्ति दोनों की ही प्राप्ति संभव है । केवल नाम मात्र के लिए सुनने से यह लाभ संभव नहीं ।

पुण्यं पापहरं सद शिवकरं
विज्ञान भक्तिप्रदं ।
माया मोह मलापहं सुविमलं
प्रेमाम्बपूरं शुभम् ॥

श्री मद्राम चरित्र मानस
मिदं भक्त्य वगाहन्ति वे ।
ते संसार पतंग घोर
किरणैर्दह्यन्ति नो मा वाः ॥

⊗ शिवकरं=कल्याणकारी, मलापह = मल का हरण करने वाला, सुविमल=बहुत निर्मल, अवगाहन्ति=गोता लगाने, पतंग=सूर्य, नो=नहीं ।

★ यह 'रामचरितमानस', पुण्य रूप, पापों को नष्ट करने वाला, सदा कल्याणकारी, विज्ञान और भक्ति का देने वाला, माया मोह आदि विकारों को नष्ट करने वाला, निर्मल प्रेम रूपी जल से भरा हुआ शुभ है । इसमें जो भक्ति पूर्वक गोता लगाते हैं वे संसार रूपी सूर्य की भयंकर किरणों से जलते नहीं ।

* रामचरित्र में भक्ति पूर्वक डूबा रहने वाला, संसार के क्लेशों से मुक्त हो जाता है क्योंकि यह दोष तथा पापों को दूर करता है और कल्याण-मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करता है ।



ooo

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रामायण पारायण करिये पर उसे जीवन में उतारिये भी

वेद भारतीय धर्म के मूल हैं । हिन्दू संस्कृति का आदि स्रोत उन्हीं से प्रवाहित होता है, बाद में प्रस्तुत सम्पूर्ण शास्त्र उनकी व्याख्या मात्र हैं । सैद्धान्तिक जीवन की प्रेरणा देने वाले धर्म ग्रन्थों की , शास्त्रों की हमारे यहाँ कमी नहीं है किन्तु इस युग के अनुरूप व्यावहारिक जीवन की शिक्षा देने वाले ग्रन्थों में रामायण से बढ़कर उपयोगी दूसरा ग्रन्थ नहीं है । इसकी व्याख्यायें इतनी सरल हैं कि शिक्षित, अशिक्षित सभी उसे आसानी से समझ लेते हैं । भाषा और गति की दृष्टि से वह रोचक है और कथा का प्रवाह इतना मधुर और सुव्यवस्थित है कि पाठक अन्त तक उसे रुचि, आल्हाद, और जिज्ञासा पूर्वक पढ़ता है । इसमें कहीं नीरसता नहीं है ।

रामायण की इस उपयोगिता को देखते हुए उसके पारायण और अखण्डपाठ लाभदायक तो हैं किन्तु उसका वास्तविक उपयोग तब है जब मनुष्य उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न भी करे । केवल पाठ कर जाना उतना आवश्यक नहीं जितना उसे पढ़ना, पढ़कर उस पर चिन्तन करना और उसकी व्यावहारिक बातों पर आचरण करना महत्वपूर्ण है । रामायण को जीवन में उतारने से मनुष्य अधिक सरलतापूर्वक धर्म-तत्व का अवगाहन कर सकता है यही कारण है कि अनेक धार्मिक नेता, सुधारक तथा संतजन रामायण के माध्यम से ही लोगों को सन्मार्ग की प्रेरणा देते हैं । ऐसे पाठ, पारायण तथा प्रवचनों का लाभ निःसंदेह बहुत अधिक है पर वह मिलेगा तभी जब उन्हें जीवन में अवतरित होने का अवसर भी मिलेगा ।

अध्यात्म के प्रत्येक आवश्यक एवं उपयोगी अंग की विवेचना रामायण में हुई है । वह एक तरह का सर्वांगपूर्ण धर्मग्रन्थ है और मनुष्य जीवन को सुखी समुन्नत तथा मुक्त बनाने वाले सभी सिद्धान्तों का उसमें समावेश है ।

भारतीय शैली के अनुरूप ही कथा का प्रारम्भ ईश बन्दना से होता है । परमात्मा के स्मरण, चिन्तन और गुण कीर्तन के साथ किसी कार्य का शुभारम्भ करने से मनुष्य को सच्चा आत्म-बल मिलता है । वह बुराइयों से सावधान होता है और सांसारिक बन्धनों में लिप्त न होकर सम्पूर्ण कर्तव्यों का पालन एक दार्शनिक की भाँति करता है । रामायण का प्रारम्भ इसी शैली में हुआ है । यह व्यावहारिक प्रशिक्षण है कि प्रत्येक शुभ कर्म में पहले ईश्वर-आराधना की जाये ताकि मनुष्य का कदम दोषपूर्ण न हो जाय । वह स्थिरतापूर्वक अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता चले ।

आस्तिकता मनुष्य जीवन की प्रारम्भिक शर्त है किन्तु उसका ज्ञान किसी को स्वयमेव नहीं होता । कविवर तुलसी दास जी ने सत्संग को ईश्वरीय ज्ञान का माध्यम बताया है । उन्होंने लिखा है:—

सुनि आचरज करै जनि कोई ।
सतसंगति महिमा महिं गोई ।।
जलचर थलचर नभचर नाना ।
जे जड़ चेतन जीव जहाना ।।
मति कीरति गति भूति भलाई ।
जब जेहि जतन जहाँ जेहि पाई ।।
सो जानब सत्संग प्रभाऊ ।
लोकहुँ वेद न आन उपाऊ ।।
सत संगत मुद मंगल मूला ।
सोई फल सिधि सब साधन फूला ।।

अर्थात्— सत्संग की महिमा पर जो प्रकाश डाला जाता है वह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है । सत्संग का महत्व असाधारण है । जल, थल या आकाश में रहने वाले किसी भी प्राणी को बुद्धि, यश, मोक्ष, वैभव तथा भलाई की प्राप्ति केवल संतजनों के सान्निध्य से ही संभव है । सत्संग जब सिद्धियों का दाता है, इससे बढ़कर और कुछ दूसरा उपाय नहीं है ।

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई ।
पारस परसि कुधातु सुहाई ।।
विधिवश सजन कुसंगत परहीं ।
फनि मनि सम निज गुण अनुसरहीं ।।

अर्थात्— इस संसार में स्वतः कोई बुरा नहीं, संयोगवश लोग बुरी संगति में पड़कर सद्गुणों का परित्याग कर देते हैं । वे सत्संगति से फिर वैसे ही ठीक हो जाते हैं जैसे पारस के स्पर्श से कम मूल्य की धातु भी सोना बन जाती है ।

मनुष्य को इस तरह की उच्च स्थिति मिल सकती है । संतजनों के प्रभाव से जब ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश अन्तःकरण में प्रस्फुटित होता है तब उसकी शक्ति और सीमा ब्रह्ममय हो जाती है । पुरुष स्वयं ही बृहद् शक्ति पुंज है किन्तु वह स्वार्थवश, मायावश, संकीर्णतावश अल्पशक्ति वाला सब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकार से दीन और दुःखी बना हुआ है । माया कोई साकार वस्तु नहीं वरन्—

मैं अरु मोर तोर तैं माया ।
जेहि बस कीन्हें जीव निकाया ॥
गो गोचर जहँ लगि मन जाई ।
सो सब माया जानेहु भाई ॥
एक दुष्ट अतिसय दुख रूपा ।
जाबस जीव परा भव कूपा ॥
एक रचइ जग गुन बस जाकें ।
प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें ॥

अर्थात्— इस संसार में "मैं" और "मेरे" का अभिमान ही माया है, इसी के वश होकर जीव बन्धनों में पड़ते और दुःख भोगते हैं । एक व्यक्ति यह समझता है कि यह जो कुछ है उसका कर्त्ता मैं हूँ इस अभिमान के कारण संसार में जो कुछ है वह सब उसके लिये बन्धन रूप बन जाता है । दूसरा यह समझता है कि यह जो कुछ है वह ईश्वरीय प्रसाद है । वह व्यक्ति संसार को कल्याण रूप में देखता और सुखोपभोग प्राप्त करता है ।

उपरोक्त पंक्तियों में निष्काम कर्म योग की गूढ़ व्याख्या हुई है । अर्थात् मनुष्य उन सभी मंगल कार्यों को करे जिससे लोक हित होता हो किन्तु उसे कर्तापन का अभिमान नहीं होना चाहिये अन्यथा वह कर्म के फल से बँध जायेगा और दुःख भुगतता रहेगा ।

इसलिये धर्मवान् बनो ताकि संसार में लिप्त न हो, योग के द्वारा ज्ञान प्राप्त करो इससे मोक्ष मिलेगा और परमात्मा के प्रति भक्ति जागृत होगी । ईश्वर की साक्षी प्राप्त कर लेना, भक्त और शरणागत होना ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है । भगवान् राम ने भक्त के साधनों और उसके प्रभाव पर प्रकाश डालते हुये बताया —

प्रथमहि विप्र चरन अति प्रीती ।
निज निज कर्म निरत श्रुति नीती ॥
एहिकर फल पुनि विषय विरागा ।
तब मम धर्म उपज अनुरागा ॥
श्रवणादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं ।
मम लीला रति अति मन माहीं ॥
संत चरण पंकज अति प्रेमा ।
मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा ॥
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा ।
सब मोहिं कहँ जाने दृढ़ सेवा ॥
काम आदि मद दंभ न जाकें ।
तात निरन्तर बस मैं ताकें ॥
बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निष्काम ।
तिन्ह के हृदय कमल महँ करऊँ सदा विश्राम ॥

अर्थात्— ब्राह्मण (तत्व वेत्ता) का समागम प्राप्त करना, अपने—अपने कर्म में नीति धर्म के अनुसार लगे रहना ही सांसारिक विषयों से दूर रहने का उपाय है । ऐसा करने से धर्म के प्रति श्रद्धा व प्रेम बना रहता है । जिससे श्रवण मनन आदि ईश्वर-चिन्तन में मनुष्य की बुद्धि सुख का अनुभव करती है । इस तरह मेरी उपासना करते हुये लोग गुरूजन, माता, पिता, भाई, पत्नी एवं देवताओं की समुचित सेवा करते रहते हैं, ऐसा करते हुये जिन्हें तनिक भी अभिमान नहीं होता वे निष्काम भाव से मुझे ही भजते हैं, तब मैं भी सदैव उन्हीं के हृदय में विश्राम किया करता हूँ । सदैव उस कर्मयोगी के अन्तःकरण में ही ओतप्रोत रहता हूँ ।

इसके विपरीत यदि मनुष्य धर्म से विमुख होता है और स्वार्थ को, अपने सुख को ही प्रमुखता देता है तो उसे दुःख मिलता है । तुलसीदास जी कहते हैं:—

इमि कुपंथ पग देत खगेसा ।
रह न तेज तनु बुद्धि सब लेसा ॥

जो बुरी राह चलते हैं,उनके शरीरों का तेज नष्ट हो जाता है और बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है-इसी से उन्हें इस संसार में दुःख ही दुःख मिलता है ।

उपरोक्त उद्धरणों में मनुष्य जीवन में धर्म की आवश्यकता एवं बुराइयों के प्रति सावधान रहने की प्रेरणा दी है । इसे व्यावहारिक जीवन में ढ़ालने वाले व्यक्ति को सांसारिक सुखों की भी कोई कमी न रहेगी यह सुनिश्चित है ।

अब अवगुणों पर प्रकाश डालते हैं । उनसे दूर रहने के लिये ईश्वर निष्ठा की आवश्यकता प्रतिपादित की है—

तात तीनि अति प्रबल खल
काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि विज्ञान धाम मन
करहिं निमिष महुँ क्षोभ ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोभ के इच्छा दंभ
बल काम के केवल नारि ।
क्रोध के परुष बचन
बल मुनिवर कहहिं विचारि ।।

क्रोध मनोज लोभ मद माया ।
छूटहिं सकल राम की दाया ।।

अर्थात्— काम, क्रोध और लोभ यह तीन ही दुष्ट विकार हैं, यही लोगों के मनों को क्षण भर में विभ्रमित कर देते हैं । लोभ से दंभ पैदा होता है । वासना से दीनता उत्पन्न होती है, क्रोध के कारण कठोर बचन निकलते हैं । यह सब दु:ख और बन्धन रूप हैं । इनसे छुटकारा पाने का उपाय ईश्वर की शरणागति ही है और उनके लिये यह मनुष्य शरीर बन्धन का कारण नहीं होता जो—

षट विकार जित अनघ अकामा ।
अचल अकिंचन सुचि सुख धामा ।।
अमित बोध अनीह मित-भोगी ।
सत्यसार कवि कोविद जोगी ।।
सावधान मानद मद हीना ।
धीर धर्म गति परम प्रवीना ।।
गुनागार संसार दुख रहित विगत संदेह ।
तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहुं देह न गेह ।।

साधु पुरुषों के लक्षण वर्णन करते हुये अरण्य काण्ड से तुलसीदास जी ने लिखा है—

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं ।
पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं ।।
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती ।
सरल सुभाउ सबहिं सन प्रीती ।।
जप तप ब्रत दम संजम नेमा ।
गुरु गोविंद विप्र पद प्रेमा ।।
श्रद्धा क्षमा मयत्री दाया ।
मुदिता मम पद प्रीति अमाया ।।
विरति विवेक विनय विग्याना ।
बोध जथारथ वेद पुराना ।।
दंभ मान मद करहिं न काऊं ।
भूलि न देहि कुमारग पाऊं ।।

उन्हें अपनी प्रशंसा सुनने से हर्ष नहीं होता । दूसरों की प्रशंसा से वे सुखी होते हैं । सरल स्वभाव, सबसे प्रेम और नीति का पालन करते हैं । जप, तप, व्रत, दुर्गुण निवारण संयम-नियम के साथ, गुरुदेव ईश्वर और ब्राह्मणों से प्रेम करते हैं । वे श्रद्धावान, क्षमावान, मित्रवान तथा दयावान होते हैं । विवेकी विनम्र वैरागी तथा विज्ञानी होते हैं । स्वाध्याय में उनकी रुचि होती है । उन्हें दंभ पाखंड नहीं आता । वे भूलकर भी कुमार्ग में पाँव नहीं देते ।

जीवन शोधन का उपदेश रामायण में अनेक स्थलों पर मिलता है । तुलसीदास की यह शैली भी कम मोहक नहीं है । बड़े ही सरल सुस्पष्ट शब्दों में वे बताते हैं कि किस तरह दुर्गुणों द्वेषों के स्थान पर सद्गुणों का अभ्यास किया जाय । किष्किन्धा काण्ड में ऐसा ही वर्णन है जिसमें लोभ को सन्तोष से, मद मोह की सहृदयता से, ममता को ज्ञान से, जीतने की प्रेरणा दी है और दुष्कर्मों के प्रभाव का भी वर्णन करते हैं लिखा है—

उदित अगस्ति पंथ जल सोखा ।
जिमि लोभहिं सोषइ संतोषा ।।
सरिता सर निर्मल जल सोहा ।
संत हृदय जस गत मद मोहा ।।
रस रस सूख सरित सर पानी ।
ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ।।
जानि शरद ऋतु खंजन आये ।
पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये ।।
पंक न रेनु सोह असि धरनी ।
नीति निपुन नृप कै जसि करनी ।।
जल संकोच बिकल भई मीना ।
अबुध कुटुम्बी जिमि धन हीना ।।
चक्रवाक मन दुख निसि पेखी ।
जिमि दुर्जन भर सम्पति देखी ।।
भूमि जीव संकुल रह गये सरद रितु पाइ ।
सद्गुरु मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ ।।

समुदाओं के माध्यम से इस तरह की शिक्षा न केवल पाठक का हृदय मोह लेती है वरन् उससे अन्त:करण में ज्ञान का अभ्युदय होता है । यद्यपि विचार और व्यवहार में न लाने से वह आदर्श चिरस्थाई नहीं रह पाता । पर यदि उन प्रेरणाओं को व्यवहृत होने को अवसर मिले तो मनुष्य जीवन की समुन्नत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शैली का प्रवाह रामायण में ही मिल जाता है अन्यत्र भटकने की आवश्यकता नहीं होती । अध्यात्म जिन सिद्धान्तों की प्रेरणा देता है ठीक वही रामायण में भी प्रतिपादित हुआ है । जिस तरह अध्यात्म बुराइयों की निन्दा करता और भलाई का समर्थन करता है वैसा ही रामायण में भी कथोपकथनों के माध्यम से वर्णन हुआ है । दुष्कर्म निरत मनुष्य को जीवित ही मृत्युतुल्य बताया है । लंकाकाण्ड में अंगद और रावण के संवाद में आता है:—

कौल काम बस कृपिन बिमूढ़ा ।
अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ॥
सदा रोग बस संतत क्रोधी ।
विष्णु विमुख श्रुति संत विरोधी ॥
तनु पोषक, निंदक अघ खानी ।
जीवत शव सम चौदह प्राणी ॥

अर्थात्— दुराचारी , विषयी, कृपण, मूर्ख, दरिद्र, दुष्कर्मी, रोगी, क्रोधी, नास्तिक, दुर्जन, निंदक, पापी और केवल अपना ही पेट भरने वाले प्राणी जीवित रहते हुये भी मृततुल्य हैं अर्थात् उनसे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का कोई हित नहीं होता । वे केवल भार रूप ही इस संसार में जीते और मर जाते हैं ।

इस तरह मनुष्य-जीवन के सर्वांग समन्वय युक्त स्वरूप का वर्णन रामायण में मिलता है । गूढ़ दार्शनिक तत्वों के विश्लेषण के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन के आचरणों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है । कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं जिसकी व्याख्या रामायण में न हुई हो । स्त्रियों के लिये पग-पग पर उपदेश मिलते हैं । श्रेष्ठ साध्वी नारियों के मुँह से उन्हें गृह-कर्तव्य और पति व्रत धर्म की शिक्षा दी जाती है। उन्हें नारियाँ अपने जीवन में ढालें तो वे घरों का वातावरण स्वर्गीय बना सकती हैं । ऐसा ही एक प्रसंग अत्रि ऋषि के आश्रम का है । महासती अनुसुंइया जी ने सीताजी को समझाया—

कह रिषि बधू सरस मृदुबानी ।
नारि धर्म कछु ब्याज बखानी ॥
मातु पिता भ्राता हितकारी ।
हितप्रद सब सुनु राजकुमारी ॥
अमित दानि भर्ता वयदेही ।
अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥
उत्तम के अस बस मन माहीं ।
सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं ॥
मध्यम पर पति देखइ कैसे ।
भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
बिनु श्रम नारि परम गति लहई ।
पतिव्रत धर्म छाड़ि छल गहई ॥

इस तरह रामायण में मनुष्य और उससे सम्बन्धित कोई भी क्षेत्र नहीं जिसकी समुचित व्याख्या न की गई हो । अन्य ग्रन्थों की ही भाँति वह हिन्दुओं का प्रिय धर्म ग्रन्थ है,इसमें किंचित मात्र संदेह नहीं है और उसे हिन्दू समाज में जो स्थान मिला,वह उसके व्यक्तित्व के अनुरूप ही है । पर उसका जो लाभ व्यावहारिक जीवन में होना चाहिये,वह नहीं होता दिखाई देता तो निराशा होती है । केवल पाठ और पारायण से वह लाभ नहीं मिलता जो अध्यात्म चाहता है । रामायण यदि आध्यात्मिक जीवन का प्रशिक्षण करने वाला ग्रन्थ है तो उससे मनुष्य के जीवन में प्रकाश भी आना चाहिये । यह संभव भी है किन्तु तभी जब कि उसे व्यवहार में उतरने का अवसर मिले । रामायण की शिक्षा है कि ऐ मनुष्य ! तू राम बनने का प्रयत्न कर । राम के आदर्शों को जीवन में ढालने का प्रयत्न कर । ऐसा कर सका तो सुखपूर्वक उस स्थिति को प्राप्त कर लेगा जिसके लिये नर-तनु धारण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

❋ ❋ ❋

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्री रामायण कथा

उद्देश्य :— भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाते हैं । नीति, धर्म, सदाचार की स्थापना के लिए उनका अवतार हुआ । धर्म की ग्लानि और अधर्म के अभ्युत्थान का शमन करने, साधुता का परित्राण एवं दुष्कृतों के विनाश करने के लिए अवतार धारण करने की सनातन प्रतिज्ञा का उन्होंने पालन किया । त्रेता में उन दिनों भयानक कलियुग छाया हुआ था, भगवान राम ने उन विषम परिस्थितियों को बदला और युग को पलट कर सतयुग उपस्थित कर दिया । अवतार का यही प्रयोजन है ।

भगवान राम ने सामयिक समस्याओं का हल निकाला और परिस्थितियों के अनुरूप कार्यक्रम बनाये तथा कदम उठाये । तात्कालिक उलझनें सुलझीं, कठिनाइयाँ हल हुईं तथा परिस्थितियाँ बदलीं । यह हजारों लाखों वर्ष पुरानी गाथायें हैं । समय बहुत बीत गया इसलिये उस गाथा का महत्व कम हो गया हो—ऐतिहासिक रह गया हो—सो बात नहीं है । भगवान राम इन दिनों विद्यमान नहीं हैं ! पर वे परिस्थितियाँ न्यूनाधिक मात्रा में मौजूद ही हैं, जिनका शमन करने में उस अवतार का सारा समय और सारा प्रयत्न संलग्न रहा । इसलिए वह गाथा एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शन का काम आज भी करती है । किन समस्याओं का क्या हल हो सकता है ? इस तथ्य को तलाश करना हो तो भगवान राम की गाथा हमारे लिए आज भी उतनी ही मार्गदर्शक एवं महत्वपूर्ण है जितनी कि अपने समय में थी ।

राम की गाथा महर्षि बाल्मीकि कृत 'रामायण' में और तुलसी कृत 'रामचरित मानस' में परिपूर्ण विस्तार के साथ वर्णित है । यों अन्य पुराणों तथा काव्यों में भी उसका वर्णन है । पर उपर्युक्त दो ग्रन्थों में राम-चरित को जिस विस्तार और विवेचन के साथ लिखा गया है वैसा अन्यत्र नहीं है । इन दो ग्रन्थों की महिमा इसलिए और भी अधिक है कि वे मात्र कथानक या इतिहास वर्णन करने के लिए नहीं लिखे गये वरन् उनमें चरित्रनायक की विचारधारा, परिस्थिति, गतिविधि, कार्य-प्रणाली एवं रीति-नीति का ऐसे ढंग से वर्णन किया है, जिससे उसे पढ़ने-सुनने वाले को, उसी प्रकार की समस्यायें जब अपने सामने आवें तब उनका हल खोजने में सुविधा मिले । बाल्मीकि रामायण संस्कृत भाषा में है । उसकी गरिमा बहुत होते हुए भी भाषा सम्बन्धी कठिनाई के कारण वह विद्वानों तथा अध्ययनशील लोगों तक सीमित रह गई किन्तु राम-चरित्र शिक्षित अशिक्षित सभी के लिए उपयोगी था, इसलिये उस कमी को तुलसीदास जी ने पूरा किया । तुलसी कृत रामायण प्रधानतया दोहा-चौपाई छन्दों में लिखी गई है, जो वाद्य यन्त्रों की सहायता से संगीत के रूप में तथा बिना बाजे के भी मधुरता एवम् सरलतापूर्वक गाये, गुनगुनाये जा सकते हैं । अन्य छन्द भी ऐसे ही हैं जो भली प्रकार गाये जा सकें । गाये जाने योग्य कविता यदि भावपूर्ण हो तो सहज ही लोकप्रिय होती है, उसमें भी भगवान का चरित्र और वह भी लोक शिक्षण का प्रयोजन पूरा करने वाला, इन विशेषताओं के कारण रामायण ने जन-मानस में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्वल्प काल में ही बना लिया । तुलसी कृत रामायण की रचना को तीन सौ से कुछ ही वर्ष अधिक हुए हैं । इतने थोड़े समय में अन्य कोई ग्रन्थ शायद ही इतना लोकप्रिय और व्यापक हुआ हो ।

तुलसी कृत रामायण की काव्य शैली अनुपम है । उसमें उच्च भावनाओं की सुगन्ध इतनी अधिक है कि पाषाणहृदय पाठक को भी एक बार भाव-विभोर होना पड़ता है । साहित्य एवम् काव्य की दृष्टि से उसकी अपनी विशेषता और महत्ता है । संसार की किसी भी श्रेष्ठ रचना के समकक्ष उसे रखा जा सकता है । उत्कृष्ट साहित्य और उत्कृष्ट काव्य में जो गुण होने चाहिये वे सभी उसमें विद्यमान हैं । इन सबसे भी बड़ी विशेषता रामायण की यह है कि वह मानवीय अन्तःकरण में छिपे पड़े देवत्व को उल्लसित और विकसित करती है । पाठक को पाशविक विचारणा से एवं क्रिया-पद्धति से ऊँचे उठकर मानवता की कक्षा में प्रतिष्ठित होने और देवत्व की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है । भावनाओं को तरंगित करके ही आदर्शवादिता की ओर मनुष्य को अग्रसर किया जा सकता है । इस स्तर की प्रेरणा रामायण की पंक्ति-पंक्ति में भरी पड़ी है ।

अपनी विशेषताओं के कारण तुलसी कृत रामायण ने भारतीय जनता के मन में एक श्रद्धापूर्ण स्थान प्राप्त किया है । इसकी गणना धर्म-ग्रन्थों में होती है । सहस्रों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति उसका पाठ एक धर्मोपासना के रूप में करते हैं। समय-समय पर रामचरित-मानस के नवाह्न पारायण व्यक्तिगत एवं सामूहिक धर्मानुष्ठानों के रूप में किए जाते हैं। लोग रामायण पढ़ने और सुनने में पुण्य मानते हैं। इस प्रकार की मान्यता इस दृष्टि से उपयोगी है कि जिस व्यक्ति या ग्रन्थ के प्रति श्रद्धा होती है उसका प्रशिक्षण एवं सन्देश हृदयग्राही होता है। रामायण के प्रति धर्म-ग्रन्थ जैसी श्रद्धा का होना इसलिए भी श्रेयस्कर है कि इस आधार पर उसमें वर्णित आदर्शों को लोग भावनापूर्वक सुनने और हृदयंगम करने में अधिक तत्पर बनते हैं।

मानव-जीवन में समय-समय पर उपस्थित होती रहने वाली विविध समस्याओं का समाधान रामचरित-मानस में मौजूद है। पारिवारिक जीवन में सामंजस्य कैसे रखा जा सकता है ? आदर्श दाम्पत्य-जीवन कैसा होना चाहिये? अभिभावकों का सन्तान के प्रति और सन्तान का अभिभावकों के प्रति क्या कर्तव्य है ? गुरु-शिष्य की नैष्ठिक परम्पराओं को कैसे निवाहा जाय ? दुष्टता से कैसे निपटा जाय ? सज्जनों की सहायता के लिये जनसाधारण का क्या कर्तव्य है ? अनीति के उन्मूलन और न्याय के संरक्षण में दुर्बल समझे जाने वाले व्यक्ति भी किस प्रकार योगदान कर सकते हैं ? कठिनाइयों में धैर्य और साहस कितना उपयोगी होता है ? आदि-आदि मानव-जीवन की सहस्रों समस्यायें ऐसी हैं जिनका हल रामायण में बड़ी खूबी के साथ मिल जाता है। इस प्रकार रामायण एक उत्कृष्ट नीतिशास्त्र की आवश्यकता पूरी करती है।

यह उचित ही था कि रामायण का अधिकाधिक प्रचार हो, लोग उसे पढ़ें, सुनें, समझें और प्रस्तुत प्रेरणाओं को जीवन-क्रम से सम्बन्धित करने के लिये सचेष्ट हों। इस दृष्टि से रामायण प्रवचनों का भी बड़ा महत्व है। साधारणतया विवेचनात्मक धार्मिक प्रवचन रूखे और नीरस होते हैं, इसलिये कम ही लोग उन्हें सुनते हैं। किन्तु उसके साथ कथा प्रसंग जुड़ा हो तो उसमें सरसता आ जाती है। इसमें भी यदि काव्य का सामंजस्य हो तो फिर धार्मिक प्रवचन और भी लोकप्रिय होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये ऋषियों ने पुराणों एवं उपपुराणों की रचना की है। कथा प्रसंगों के समन्वय से धर्म शिक्षण सरस हो जाता है। शिक्षा में रुचि न लेने वाले बालकों को पंचतन्त्र और हितोपदेश में कथा प्रसंग जोड़कर ही राजकुमारों के लिये विष्णु शर्मा ने राजनीति की शिक्षा को रोचक बनाया था और फिर छात्रों ने उसे रुचिपूर्वक पढ़ा था। ऋषियों का उद्देश्य जनता को धर्म और नीति में तत्पर बनाये रखना था। उन्होंने जब अनुभव किया कि सीधी धर्म शिक्षा अधिकांश अशिक्षित लोगों को रुचती नहीं है तो उन्होंने कथा एवम् काव्य का सम्मिश्रण कर धर्म-शिक्षा को सरस बनाया और पुराण लिखे। पुराणों की लोकप्रियता प्रसिद्ध है। चारों वेदों में लगभग २० हजार मन्त्र हैं। अकेले महाभारत में एक लाख से अधिक श्लोक हैं। अर्थात चारों वेदों की तुलना में अकेला महाभारत पाँच गुना बड़ा है। फिर ऐसे-ऐसे अठारह पुराण और लगभग उतने ही उपपुराण हैं। यह साहित्य इसलिये लोकप्रिय हुआ कि उसमें कथानक और काव्य का समावेश है। रामायण में भी ये दोनों विशेषतायें विद्यमान हैं। यदि कोई प्रवचनकर्ता रामायण को क्रमबद्ध, सोद्देश्य एवम् मधुर शैली से व्यक्त कर सकें तो वह निःसन्देह आज की प्रमुख आवश्यकता — चरित्र निर्माण का उद्देश्य बड़ी सफलता और सरलता के साथ सम्पन्न कर सकता है।

इस दृष्टि से रामायण के माध्यम से प्रवचन कर्ताओं का बड़ा महत्व है। समय-समय पर रामायण सम्मेलनों के छोटे-बड़े आयोजन जहाँ-तहाँ होते रहते हैं। निर्धारित अवधि के लिये भागवत सप्ताह की तरह लोग सात दिन, नौ दिन या अधिक दिन के कथा-पारायण की व्यवस्था करते हैं। घर - मुहल्लों में, देवालयों में भी रामायण कथा के क्रम चलते रहते हैं। इन सब में ऐसे सुलझे हुये प्रवचनकर्ताओं की भारी आवश्यकता रहती है जो कथा प्रसंगों को अधिक लोकोपयोगी, अधिक प्रेरक एवम् अधिक समाधानकारक बना सकें। यह विशेषता जिन वक्ताओं में होगी, वे निस्सन्देह देश, धर्म, समाज और संस्कृति की महती सेवा करने में समर्थ होंगे।

रामायण एक नदी, सरोवर या समुद्र की तरह है। उसमें से सामयिक आवश्यकता के अनुरूप तथ्यों को प्रधानता देकर काम में लाना होगा। यों समुद्र में जो विपुल वैभव भरा है वह सभी मूल्यवान है, ढूँढने और निकालने में उन्हीं वस्तुओं को प्राथमिकता दी जाती है जो अपनी आज की आवश्यकता के अनुरूप एवम् अधिक उपयोगी हैं। हमें भी ऐसी ही रीति-नीति अपनानी होगी। आज मानव-समाज के सामने प्रमुख समस्यायें क्या हैं और उनके समाधान क्या हो सकते हैं ? यह प्रशिक्षण करना ही किसी प्रवचनकर्ता की वास्तविक लोकसेवा हो सकती है। रामायण में से भी हमें ऐसे ही प्रसंग ढूंढ निकालने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होंगे और उन्हें क्रमबद्ध रूप से जनता के सम्मुख प्रस्तुत करना होगा । नैतिक एवम् सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिये, व्यक्ति एवं समाज के नव-निर्माण के लिये यह प्रक्रिया अपनाई जानी उचित है ।

'रामायण-कथा' इसी उद्देश्य से लिखी गयी है । यह अनुभव किया गया है कि अगणित विकृतियों, समस्याओं, कुण्ठाओं और उलझनों से भरे आज के समाज को शक्ति एवम् सामंजस्य का प्रकाश देने की नितान्त आवश्यकता है । इस आवश्यकता की पूर्ति धर्म एवम् अध्यात्म के तत्व-ज्ञान को आधार मानकर ही की जा सकती है । राज-नीति, अर्थ-नीति, समाज-नीति के आधार पर चल रही प्रवृत्तियाँ लोगों के भावना-स्तर को ऊँचा नहीं उठा सकतीं । संयम, सेवा, सदाचार, उदारता, नीति, न्याय एवम् कर्तव्य-परायणता जैसे सद्गुण अन्य किसी मंच से विकसित नहीं किये जा सकते । इसके लिये धर्म एवम् अध्यात्म का शिक्षण ही उपयुक्त माध्यम है । इसे रामायण के माध्यम से अधिक सफलता एवम् सरलता के साथ प्रयुक्त किया जा सकता है । रामायण-कथा की एक ऐसी परम्परा एवम् क्रमबद्ध प्रक्रिया आवश्यक थी जो लोक-शिक्षण की आज की आवश्यकताओं को ठीक तरह पूरी कर सकने में समर्थ हो । रामायण-कथा उसी आवश्यकता को पूर्ण करती है । भावनात्मक उत्कर्ष ही रामायण में प्रस्तुत वह समाधान है जो व्यक्ति और समाज को चिर-स्थायी सुख-शान्ति का आनन्द उपलब्ध करा सकता है । आज विश्व के सम्मुख उपस्थित अगणित समस्याओं का हल रामायण और गीता ही प्रस्तुत कर सकती हैं ।

पिछले दिनों रामायण प्रवचनकर्ता केवल एक ही बात का प्रतिपादन करते रहे हैं कि 'राम का नाम जीभ से लेने मात्र से सब पाप दूर हो जाते हैं और रामचन्द्र जी प्रसन्न होकर ऋद्धि-सिद्धि स्वर्ग-मुक्ति आदि सारी विभूतियाँ प्रदान कर देते हैं ।' यह प्रतिपादन सही नहीं है, क्योंकि प्रायः हर मनुष्य किसी न किसी प्रकार, किसी का नाम पुकारते हुए भी कई-कई बार 'राम' का नाम ले लेता है यदि केवल 'राम' शब्द के उच्चारण भर से उनके प्रतिपादित लाभ मिले होते तो अपने देश और धर्म का हर व्यक्ति रामभक्त कहलाने और उनकी कृपाओं का अनुदान प्राप्त करने में सफल हो गया होता । ऐसी दशा में आज के व्यक्ति और समाज की दशा ही कुछ और होती ।

राम-नाम का महत्व है और उसका प्रतिपादन भी होना चाहिये, पर साथ ही यह न भुलाया जाना चाहिये कि राम-नाम लेने के साथ-साथ कुछ कर्तव्य भी हैं और यदि उन कर्तव्यों का पालन ठीक से न किया गया तो चमड़े की जीभ से कुछ शब्द उच्चारण कर लेने मात्र का कोई परिणाम न होगा । आवश्यकता इस बात की है कि आस्तिकता एवं ईश्वर-भक्ति के साथ जिन विचारणाओं और आचरणों का उत्तरदायित्व कन्धे पर आता है, उनकी ओर सर्वसाधारण का ध्यान अधिक आकर्षित किया जाय और उन्हीं पर ज्यादा जोर दिया जाय । लोग सस्ती सरल बात से अत्यधिक लाभ मिलने की बात सुनने पर आकर्षित तो होते हैं, पर उनकी श्रद्धा तब कुछ ही क्षण में तिरोहित हो जाती है जब वे देखते हैं कि रोज बहुत-बहुत बार राम-नाम लेने पर भी उनके जीवन में कोई प्रकाश दृष्टिगोचर नहीं होता । ऐसा क्षणिक प्रतिपादन किस काम का जो तर्क और प्रमाण की कसौटी पर एक क्षण भी खरा न उतरे ।

यह आवश्यकता थी कि लोग यह जानें कि रामायण का उद्देश्य दो अक्षरों के जीभ से उच्चारण कर लेने पर सारी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाने की कल्पनायें उड़ाना नहीं वरन् नीति, सदाचार, धर्म, कर्तव्य, पुरुषार्थ, सौजन्य जैसे सद्गुणों को हृदयंगम कराना है । इन गुणों के अभिवर्धन के साथ जो राम नाम लिया जाता है वही उसके वर्णित महत्व की पूर्ति करता है । यदि इस तथ्य को स्पष्ट न किया गया तो तथाकथित नाममा हात्म्य जनता में उल्टी दुष्प्रवृत्तियाँ पैदा करेगा । लोग पाप करने से निर्भय हो जायेंगे । सोचेंगे – "जब 'राम' शब्द कहने मात्र से ही पापों का फल नष्ट हो जाता है तो फिर जी भर कर पाप क्यों न करें और उनसे मिलने वाले लाभ क्यों न उठावें? एक दो बार दिन में राम कह दिया करेंगे और पापों से छुटकारा पा लिया करेंगे । इसी प्रकार से यह भी सोचेंगे कि भगवान को प्रसन्न करने के लिये तप, त्याग, संयम, सेवा, सदाचार, परमार्थ आदि कष्टसाध्य कार्य करने की कोई आवश्यकता नहीं । जब वे अपना नाम सुन कर ही खुश हो जाते हैं तो उस सरल तरीके से ही काम क्यों न चला लिया जाय ! इसी सुगम रीति से भगवान को वश में क्यों न कर लिया जाय ।"

राम-नाम का महात्म्य कर्तव्यपालन और सदाचरण के साथ बताया जाना चाहिये, अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि की संभावना रहेगी । पिछले दिनों 'रामायणी' लोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राय: एकांग शब्दोच्चारण की अति प्रशंसा करते रहे हैं । इससे वह प्रयोजन सिद्ध नहीं होता जो रामायणकार का उस महाग्रन्थ के लिखने में था, वरन् क्षमा किया जाय तो कहना पड़ेगा कि उससे सर्वथा उल्टा हो जाता है । उससे ज्ञान की अपेक्षा अज्ञान ही अधिक बढ़ता है।

प्रस्तुत कथा में रामायण के मूल प्रयोजन को उभारा गया है । राम भक्ति के साथ राम-भक्ति के गुण कर्म, स्वभाव को भी आवश्यक मानने का प्रतिपादन किया है । इसी माध्यम से इस महान धर्म-ग्रन्थ के उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है । सही आधार मिल जाने पर उसका परिणाम भी सही होता है । रामायण वस्तुत: नीति-शास्त्र है । उसमें धर्म, कर्तव्य, सदाचार, व्यवहार, न्याय एवम् औचित्य के प्रतिपादन पर सारा जोर दिया गया है । राम-भक्ति की महिमा जहाँ कहीं भी गाई गई है, वहाँ मूल कथा का उद्देश्य यही है कि अपने आराध्य के प्रकाश को भी भक्त लोग ग्रहण करें । जिस प्रयोजन के लिये उनने जन्म लिया था उसे सुनें, समझें और ग्रहण करें । मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान राम इसलिये अवतरित हुए कि नीति और धर्म की मर्यादाओं का उल्लंघन-उच्छृंखलता रुके और कर्तव्यपालन में श्रद्धा एवम् तत्परता उत्पन्न हो । अवतार की सही प्रेरणा एवम् प्रक्रिया इसी दिशा में संलग्न रही । अपने जीवन काल में अपने शरीर एवम् आचरणों से जो उन्होंने सिखाया था उसी का अनुगमन करना आज उनके अनुयायियों के लिये कर्तव्य है । इसी में सच्ची राम भक्ति सम्मिलित है ।

लोकप्रिय धर्मग्रन्थ रामायण का अधिकाधिक प्रसार होना उचित है । छापेखानों ने विभिन्न प्रकार के मँहगे-सस्ते संस्करण छाप कर और पुस्तक विक्रेताओं ने उन्हें खूबी के साथ बेचकर उस प्रयोजन को बहुत हद तक पूरा भी किया है । आवश्यकता इस बात की शेष है कि रामायण का वास्तविक प्रयोजन जनसाधारण को हृदयंगम कराया जाय । विशेषतया इस भ्रम का निवारण कराया जाय कि यह महाग्रन्थ केवल दो अक्षरों के एक शब्द को रटते रहने की नगण्य- सी क्रिया को समस्त पापों से छूटने और समस्त पुण्यों का लाभ पाने का प्रतिपादन करता है— ऐसी अधूरी बात तुलसीदासजी जैसे सन्त नहीं कह सकते थे ।

पिछले दिनों रामायण प्रवचनकर्ताओं में से बहुतों ने यही भ्रम फैलाया है । राम-भक्ति का भावुकता भरा अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतिपादन करने में उनने यह नहीं सोचा कि इस अधूरे मार्गदर्शन से सुनने वालों पर कहीं ऐसी प्रतिक्रिया तो न होगी जो उन्हें कठोर कर्तव्यों के पालन से विमुख एवं उदासीन कर दे ? आवश्यकता इस बात की है कि भक्ति का वास्तविक प्रयोजन जनसाधारण को समझाया जाय और हर धर्म प्रेमी को कर्तव्यपरायण पुरुषार्थी, मर्यादापालक एवं परमार्थपरायण बनने की प्रेरणा दी जाय । यही रामायण का मूल प्रयोजन भी है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पारिवारिक जीवन का आदर्श

परिवार समाज की छोटी इकाई है और उसी के विस्तृत स्वरूप को समाज कहते हैं। जिस प्रकार वन का एक-एक वृक्ष समिष्टरूप से वन कहलाता है, उसी प्रकार व्यक्तियों की अपनी सीमाबद्ध सत्ता परिवार का रूप धारण करती है। एक परिवार में विभिन्न प्रकृति के व्यक्तियों का संगठन होता है। उसमें माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-बन्धु, पुत्र-पौत्र आदि सब रहते हैं। एक दूसरे के हित का ध्यान रखा जाता है। साथ ही एक दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व और कर्तव्य-पालन की भावना रहती है। एक परिवार में जितने भी लोग होते हैं वे सब एक ही विचारधारा के नहीं हो सकते, फिर भी त्याग और सहिष्णुता के बल पर अनेकत्व में एकत्व का समावेश देखा जाता है।

परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा गया है। क्योंकि सद्गुण और दुर्गुणों का संस्कार वह वहीं से ग्रहण करता है। अच्छे और सभ्य परिवार के बच्चे स्वत: अच्छे निकलते हैं और बिगड़े हुए बुरे परिवारों के बच्चे आप से आप अनेक दुर्गुणों में जकड़ जाते हैं। त्याग, सेवा, सहिष्णुता, सत्यता, सरलता, उदारता, पुरुषार्थ आदि के मानवीय गुणों का प्रथम पाठ बच्चा परिवार में अपने माता-पिता, चाचा, ताऊ और भाई बहनों से ही सीखता है। यहाँ पड़े हुए संस्कार उसके मानस पर सदैव के लिए अटल हो जाते हैं। अच्छे परिवारों में ग्रहण किये हुए संस्कारों वाले बालकों को भविष्य का आदर्श नागरिक बनने का सौभाग्य मिलता है।

समाज को उन्नतिशील और सम्पन्न देखने की इच्छा रखने पर हमें परिवार को आदर्श बनाने का प्रयत्न करना पड़ेगा क्योंकि मानव-निर्माण का प्रथम कारखाना यही है। यहीं से मनुष्योचित गुणों का बीजारोपण और प्रस्फुटन होता है।

'मानस' में पारिवारिक जीवन को अत्यन्त गम्भीर और महत्वपूर्ण दृष्टि से देखा गया है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के आदर्श परिवार की कल्पना हमारे सबके लिये अनुकरणीय बननी चाहिये। धर्म के मूल्याँकन की कसौटी तुलसीदास जी ने पारिवारिक जीवन को ही समझी है। पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-भाई, स्वामी-सेवक सब का पारस्परिक धर्म सम्बन्ध किस प्रकार का होना चाहिये, इसकी व्याख्या मानस में पूर्णरूप से तो मिलती ही है साथ ही व्यावहारिक जीवन में उत्पन्न पारिवारिक कलह द्वेषों के शमन और समाधान का सुन्दर मार्ग मानस में दर्शाया गया है।

पिता-पुत्र का आदर्श सम्बन्ध

परिवार में पिता का स्थान आदर और श्रद्धा का होता है। जितना ही उसका पद ऊँचा होता है, जिम्मेदारियाँ भी बढ़ी हुई होती हैं। रामायण में पिता का बालक के प्रति प्रेम का पूर्ण चित्रण है। अनेक व्रतों और अनुष्ठानों के उपरान्त यदि किसी पुरुष को वृद्धावस्था में पुत्र की प्राप्ति हो तो उसके सुख का पारावार नहीं रहता। पिता के रूप में दशरथ के आदर्श बनने पर ही राम जैसे आदर्श पुत्र की प्राप्ति उन्हें हुई। पुत्र-जन्म का समाचार सुनकर ही पिता को कितना हर्ष होता है—

दशरथ पुत्र जन्म सुन काना ।
मानहुँ ब्रह्मानन्द समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक शरीरा ।
चाहत उड़न करत मति धीरा ॥

प्रसन्नता के आवेग में कर्तव्य को भुलाया नहीं जा सकता। नवागत शिशु को सुसंस्कारी बनाने का क्रम जन्म के समय से ही प्रारम्भ होना चाहिये। महाराज दशरथ ने यथोचित रूप से वही किया—

गुरु वशिष्ठ कहँ गयउ हंकारा ।
आये द्विजन सहित नृप द्वारा ॥
नन्दीमुख सराध करि, जात करम सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि, नृप विप्रन्ह कहँ दीन ॥

इसी प्रकार नाम-करण और विद्यारम्भ संस्कारादि भी ठीक समय से कराये गये —

नाम करन कर अवसरु जानी ।
भूप बोल पठए मुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा भूपति असि भाखा ।
धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा ॥

बाल्यावस्था में प्रवेश करते-करते चारों भाइयों का चूड़ा-कर्म संस्कार विधिपूर्वक सम्पन्न कराया—

कछुक काल बीते सब भाई ।
बड़े भए परिजन सुखदाई ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई ।
विप्रन्ह पुनि दक्षिणा बहु पाई ॥

प्रात:काल शिशु को गोद में लेकर टहलने की सामान्य रीति महाराज दशरथ जी भी पूरी करते थे । इसी तरह से बालक राम को भोजन के समय गोद में बिठाकर खिलाते भी थे । 'कवित्त रामायण' में राम का शैशव-वर्णन करते हुए कहा है—

अवधेश के द्वारे सकारे गई ।
सुत भूपति गोद में ले निकसे ॥
अति सुन्दर सोहत धूरि भरे ।
छवि भूरि अनंग की दूर करे ॥

राम को गोद में लेकर दशरथ जी को महामोद होने का वर्णन तुलसीदास जी ने कई स्थानों पर किया है । भोजन करते करते भागने की प्रक्रिया कितने स्वाभाविक ढंग से 'मानस' में दी हुई है—

भोजन करत बोल जब राजा ।
नहि आवत तजि बाल-समाजा ॥
धूसर धूरि भरे तनु आए ।
भूपति बिहँसि गोद बैठाए ॥

भोजन करत चपल चित,इत उत अवसरु पाइ ।
भाजि चले किलकत मुख, दधि ओदन लपटाइ ॥

उपर्युक्त वर्णित समस्त चौपाइयों से भाव यही निकलता है कि शिशु और बालक रूप में नवोदित भावी मनुष्य को अपने पिता का स्वाभाविक प्रेम और आत्मीयता मिलनी चाहिये । इसी प्रकार उस अवस्था में जिन सुसंस्कारों की छाप डालकर बालक को उच्च चरित्र का बनाया जाना चाहिये वह सब पिता रूप में महाराज दशरथ जी ने पूरा किया । ऐसा ही प्रत्येक उस पिता को करना अभीष्ट है जो अपनी सन्तान को गुण सम्पन्न और चरित्रवान् देखने की अभिलाषा रखते हैं—

शैशवावस्था में पुत्र को पिता का प्यार पाने का अधिकार है तो युवावस्था में कर्तव्यपथारूढ होकर संसार रूपी महासमर में विजेता बनने हेतु प्रशिक्षणयुक्त मार्गदर्शन पाना वांछित है । कुमारावस्था में प्रवेश करते-करते तीनों भाइयों सहित राम गुरु-गृह में विद्या प्राप्त करने के लिये भेज दिये गये —

भए कुमार जबहिं सब भ्राता ।
दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥
गुरु गृह गए पढ़न रघुराई ।
अलप काल विद्या सब पाई ॥

उचित शिक्षा, दीक्षा द्वारा सब भाई विद्या विनय सम्पन्न बन गये —

विद्या विनय निपुन गुन सीला ।
खेलहिं खेल सकल नृप लीला ॥

इस अवस्था में राम सहित सब भाइयों को राज कार्य में लगाया जाने लगा था—

आयसु माँगि करहिं पुर काजा ।
देखि चरित हरषइ मन राजा ॥

महाराज दशरथ के पुत्र विषयक प्रेम की परीक्षा उस समय होती है जब विश्वामित्र जी राक्षसों का बध करने के लिये राम लक्ष्मण को माँगने आये। राम को तो राक्षस राज रावण से युद्धरत होने के लिये तैयार करना था । लोक-कल्याण का ध्येय रखने वाले ऋषियों-मुनियों द्वारा उन्हीं से कार्य की सिद्धि उसी प्रकार होती देख पड़ी थी, जिस प्रकार महानंद वंश को नाश करके भारत में विशाल साम्राज्य की स्थापना की कल्पना को साकार करने की शक्ति महापण्डित चाणक्य को युवक चन्द्रगुप्त में दीख पड़ी थी ।

असुर समूह सतावहिं मोही ।
मैं जाचन आयउँ नृप तोही ॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा ।
निसिचर बध मैं होब सनाथा ॥

देहु भूप मन हरषित तजहु, मोह अज्ञान ।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह को इन्ह कहँ अति कल्यान ॥

अधिक दिनों तक प्यारे पुत्रों का विछोह, फिर उन का बलशाली राक्षस सरदारों से युद्ध, की आशंका का । कौमार्यावस्था में साहसपूर्ण खतरे की बात से महाराज पुत्र विषयक मोह में फँस गये ।

कहँ निसिचर अति घोर कठोरा ।
कह सुन्दर सुत परम किसोरा ॥

लेकिन विवेक ने मोह पर विजय पा ली। वशिष्ठ जी ने महाराज को समझाकर उनके सन्देह को दूर किया कि पुत्र बलशाली और समर्थ बने । विश्वामित्र के साथ उनके अहित होने की सम्भावना न होने के विश्वास से महाराज ने राम-लक्ष्मण को यज्ञ रक्षा हित भेजने की स्वीकृति दे दी—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अति आदर दोउ तनय बोलाए ।
हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए ॥

'बहुभाँति' सिखाने की बात पिता के लिये कितनी शोभा देती है । गुरु वशिष्ठ जी द्वारा सिखाई गई धनुर्विद्या को क्रियात्मक रूप देना था । अपनी योग्यता और क्षमता का पूरा-पूरा प्रमाण सर्वसाधारण के सामने प्रकट करने के लिये राम-लक्ष्मण अवध से चले थे । साहसिक कार्य के लिये प्रस्थान का यह प्रथम अवसर था । योग्य पिता को इस समय जैसा सामयिक उपदेश देना चाहिए, महाराज ने वही दिया । 'बहु भाँति सिखाए' की बात इसी ओर निर्दिष्ट करती है ।

शैशवावस्था में प्यार देना, बालक को सुसंस्कारी बनाना विद्या, कला तथा विकास के समस्त अवसर उपलब्ध करके पुत्र को सर्वांगीण रूप से सक्षम बनाना, व्यावहारिक शिक्षा द्वारा समाजशास्त्र और विज्ञान का पंडित बनाने की चेष्टा तो हर विवेकी और शिक्षित माता-पिता करते ही हैं और करना भी चाहिए । ऐसे उदाहरण तो संसार के इतिहास में अनेकों उपलब्ध होंगे । लेकिन इसमें आदर्श कहाँ है ? वह कौन आदर्श है जिसके लिये महाराज दशरथ आदर्श पिता कहलाये ?

तालियाँ दोनों हाथ से बजती हैं, स्नेह-धारा दोनों पक्षों में समान रूप से प्रस्फुटित होती है । आदर्श पिता बनकर ही आदर्श पुत्र को जन्म दिया जा सकता है । महाराज दशरथ में वह सब मिला—

वयस्क होते-होते पुत्रों को दायित्व सौंपकर महाराज ने संसार के सुखोपभोगों से संन्यास लेना अपना कर्तव्य माना ।

श्रवन समीप भए सित केसा ।
मनहुँ जर ठपनु अस उपदेसा ॥
नृप जुबराजु राम कहुँ देहू ।
जीवनजनम लाहु किन लेहू ॥

बुढ़ापे में पुत्रों को गृहस्थी सौंपकर स्वयं ईश्वर चिन्तन में लगने की बात कितने लोग करते हैं ? हम तो अन्तिम श्वास तक सांसारिक माया मोह से चिपटे रहने के अभ्यस्त हैं ।

राम राज्याभिषेक की पूरी तैयारी वशिष्ठजी के परामर्श से अवध नरेश महाराज दशरथ ने करली लेकिन कैकेयी माँ के षड़यन्त्र ने बाधा प्रस्तुत कर दी । महाराज के सम्पूर्ण मनोरथों और अन्तिम अभिलाषा पर पानी फेर दिया । सुख की नगरी अयोध्या में विषाद और रुदन का ताण्डव नृत्य होने लगा। पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर राम वनगामी बने, जैसा कि कौशल्या ने भरत के आगमन पर बताया —

पितु आयसु भूषन बसन, तात तजे रघुबीर ।
बिस्मय हरष न हृदयँ कछु, पहिरे बल्कल चीर ॥

लेकिन अपने दोषों के कारण पुत्र को अनीति का शिकार बना कर चौदह वर्ष के लिये वन की यातना सहने के लिये भेजने की वेदना दशरथ जी के लिये असहनीय हो उठी । कैकेयी के वर महाराज के तीर समान लगे, वे विक्षिप्त हो उठे —

धरम धुरंधर धीर धरि, नयन उघारे रायँ ।
सिर धुनि लीन्हि उसास असि, मारेसि मोहि कुठायँ ॥

अपनी निष्पक्षता का अनेक प्रकार से प्रमाण देते हुए महाराज कैकेयी को सद्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करते हैं । राम और भरत दोनों पर उनकी समान प्रीति थी । सौतों की आपसी शंका का निवारण भी वे करते हैं —

राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ ।
राममातु कछु कहेउ न काऊ ॥
मैं सब कीन्ह तोहि बिनु पूँछे ।
तेहि ते परेउ मनोरथ छूँछे ॥
लोभ न रामहिं राजु कर, बहुत भरत पर प्रीति ।
मैं बड़ छोट बिचार जिय, करत रहेउँ नृप नीति ॥

महाराज दशरथ के चरित्र का कमजोर पक्ष भी जन-साधारण के सन्मुख यहाँ प्रस्तुत होता है । काम-वासना के कारण ही वे इतने बड़े अनर्थ के निमित्त नहीं बने, वास्तविक स्थिति और ही थी । महाराजा कैकेयी के गुण के वशीभूत थे, रूप के नहीं । देवासुर संग्राम के समय कैकेयी की अद्वितीय वीरता और चतुरता से उनके प्राणों की रक्षा हुई थी तभी उन्होंने दो वर दिये थे । कुल की रीति का पालन अपने प्राणों को न्यौछावर करके करने की मर्यादा महाराजा दशरथ ने पालन की

रघुकुल रीति सदा चलि आई ।
प्रान जाँहि पर बचन न जाई ॥

पुत्र के प्रति सत्य की कसौटी उपस्थिति होने पर महाराजा खरे उतरे । राम को वन भेज कर उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये । मनु-सतरूपा के रूप में तपस्या के समय जो वर उन्होंने मांगा था —

सुत बिषइक तव पद रति होऊ ।
मोहि बड़ मूढ़ कहै किन कोऊ ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना ।
मम जीवन तिमि तुम्हहि अधीना ॥

पिता सब होते हैं लेकिन पुत्र में इतनी निष्ठा रखने वाले कोई बिरले होते हैं ।

कौशल्या के महल में मूर्छित अवस्था में महाराज पड़े हैं । राम को गंगा पार उतार कर सुमन्त जी वापस आकर राम वन गमन का सन्देश महाराज को बता देते हैं । अभी तक उन्हें तिनके का-सा सहारा था कि संभवत: राम लौट आयें । सुमन्त के आगमन से वह सहारा भी छूट गया । महाराज विलाप करने लगे । उन का समय निकट आ पहुँचा –

हा रघुनन्दन प्रान पिरीते ।
तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते ॥
हा जानकी लखन हा रघुबर ।
हा पितु हित चित चातक जलधर ॥
राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।
तनु परिहर रघुबर बिरह, राउ गयउ सुर धाम ॥

लेकिन ऐसा करके उन्होंने मृत्यु का स्वाद भी चखा –

जिअन मरन फल दशरथ पावा ।
अण्ड अनेक अमल जसु छावा ॥
जिअत राम बिधु बदनु निहारा ।
राम बिरह करि मरनु सँवारा ॥

सभी पिता पुत्र को बनवास नहीं देते और सभी पुत्र के विरह में शरीर नहीं त्यागते । इसी अद्वितीय घटना ने महाराज को मर्यादा पुरुषोत्तम का आदर्श पिता बनने का सौभाग्य प्रदान किया ।

पुत्र का कर्तव्य

माता-पिता की आज्ञाओं को समस्त धर्मों का मूल मानने की श्रेष्ठ मर्यादा की स्थापना जिस प्रकार रामायण में हमें मिलती है, अन्यत्र दुर्लभ है ।

कैकेयी रामचन्द्रजी के राज्याभिषेक के शुभ अवसर को अमंगलमय वातावरण में बदल देती है परन्तु राम जैसे सुशील और धर्मपरायण, आज्ञाकारी, मातृभक्त पुत्र के श्रेष्ठ कृत्यों द्वारा अमंगल-मंगल में और श्राप वरदान में बदल जाता है ।

भला उस परिस्थिति की थोड़ी कल्पना कीजिए, राम के राज्याभिषेक की पूरी तैयारी हो चुकी है । अवध में घर-घर मंगल-वाद्य बज रहे हैं । राम के मित्र और बन्धु अपनी बधाइयाँ दे रहे हैं –

राम राज अभिषेकु सुनि, हिय हरषे नर नारि ।
लगे सुमंगल सजन सब, बिधि अनुकूल बिचार ॥

गुरु वशिष्ठ जी राजोचित कर्तव्यों के पालन का सामयिक उपदेश देने हेतु महाराज दशरथ की ओर से राम के महल में भेजे जाते हैं –

राम करहु सब संयम आजू ।
जो बिधि कुसल निबाहै काजू ॥
गुरु सिख देई राम पहिं गयऊ ।
राम हृदय अस बिसमय भयऊ ॥

रात्रि में कैकेयी ने अपने षडयन्त्र की पूरी तैयारी करली । महाराज दशरथ से उसने राम की शपथ लेकर वरदान माँग लिये । महाराज शोक संतप्तावस्था में बेहोश पड़े हैं । ब्रह्म मुहूर्त लगते-लगते राजद्वार पर मंगल वाद्य बजने लगे, उत्फुल्ल जनसमुदाय अपने प्रिय राजकुमार राम के राजतिलक का महोत्सव देखने के लिये समुद्र के समान उमड़ पड़ा । इस उल्लासमय वातावरण में कैकेयी के महल में सुमन्त द्वारा बुलाये गये राम अपनी पितृ-भक्ति की मर्यादा से रंच मात्र भी विचलित नहीं होते ।

वे कैकेयी से पूछते हैं–

मोहि कहु मातु तात दुख कारन ।
करिअ जतन जेहि होइ निवारन ॥

कैकेयी राम से पिता के विषाद का कारण बता देती है –

सुनहु राम सब कारन ऐहू ।
राजहि तुम्ह पर बहुत सनेहू ॥
देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना ॥
मांगउ जो कछु मोहि सोहाना ॥
सुत सनेहु इत बचनु उत, संकट परेउ नरेसु ।
सकहु तू आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु ॥

विमाता द्वारा अपने हित में किये गये इतने बड़े षड़यन्त्र को राम पिता की आज्ञा स्वरूप वरदान के रूप में शिरोधार्य करते हैं । उनके वचन अनमोल हैं–

सुनु जननी सोइ सुत बड़ भागी ।
जो पितु मातु बचन अनुरागी ॥
तनय मातु-पितु तोषनिहारा ।
दुर्लभ जननि सकल संसारा ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महाराज के मुख से वचन सुनने के पूर्व ही राम उनके विषाद का कारण जानकर वन-गमन का निश्चय कर चुके । शोक सन्ताप में अर्धतन्द्रित पिता के नेत्र खोलते ही वे तो उनसे केवल अपना निश्चय सुनाकर आज्ञा लेते हैं —

मंगल समय सनेह बस, सोच परिहरिअ तात ।
आयसु देइउ हरषि हियँ, कहि पुलके प्रभु गात ॥

राम इसी निश्चय को माता कौशल्या से परामर्श के पश्चात् सुनाते तो भी उनके आज्ञा पालन में कोई अन्तर न पड़ता । लेकिन माता कौशल्या के पास तो वे वन-गमन की अनुमति लेने मात्र के लिये गये हैं, निर्णय तो राम कैकेयी की सारी बात सुनकर ही कर चुके थे । यह बात सिद्ध करती है कि पिता की आज्ञा पालन समस्त लौकिक और पारलौकिक सुखों से बढ़कर है, वह सर्वोपरि है ।

राज्याभिषेक करवाने के स्थान पर राज्याधिकार को त्याग कर,बल्कल चीर धारण करके चौदह वर्षों तक वन के अपरिमित कष्टों और बाधाओं को सहन करने का भारी निर्णय लेने में राम को एक घण्टे का भी समय नहीं लगा, यह कितनी बड़ी बात है जबकि इसी भारत भूमि पर राज्य सुख के लोभ में पिता और भाइयों को मार डालने के उदाहरण हमारे सामने प्रस्तुत हुए हैं ।

पिता के शोकाकुल होने का कारण जानने के संदर्भ में राम ने पितृ-भक्ति की महिमा का प्रतिपादन करने वाली निम्नलिखित, चौपाइयाँ कही हैं ।

धन्य जनमु जगतीतल तासू ।
पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ॥
चारि पदारथ करतल ताके ।
प्रिय पितु-मातु प्रान सम जाके ॥
मातु-पिता गुरु स्वामि सिख, सिर धरि करहि सुभायँ ।
लहउ लाभ तिन्ह जनम कर, नतरु जनमु जग जाय ॥

राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे । उनकी कथनी और करनी में पूर्ण समानता थी । राम की गौरव-गरिमा के सुविकास की आधार-शिला उनकी पितृ-भक्ति थी । उपर्युक्त कही हुई समस्त चौपाइयों को उन्होंने अपने आचरण द्वारा सत्य सिद्ध किया था और उन के फल की भी प्राप्ति थी । प्रत्येक का विवेचन क्रमशः करेंगे —

सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी ।
जो पितु मातु बचन अनुरागी ॥

बचपन से ही श्री राम माता-पिता के वचनों के अनुरागी थे । उनकी दिनचर्या में माता-पिता के चरण छूना और उनसे अनुमति प्राप्त कर सब कार्य करना आवश्यक था । निम्नलिखित चौपाइयाँ उस का प्रमाण हैं—

प्रातःकाल उठि कै रघुनाथा ।
मातु-पिता गुरु नावहिं माथा ॥
अनुज सखा सन भोजन करहीं ।
मातु-पिता आज्ञा अनुसरहीं ॥

प्रातःकाल माता-पिता और गुरु के चरण छूने की मर्यादा आदि काल से भारतीय संस्कृति के पारिवारिक जीवन का प्रमुख अंग बनी रही । परिवार में एकता, आत्मीयता और एक दूसरे के प्रति प्रेम और त्याग की भावना के विकास में चरणस्पर्श की छोटी-सी प्रक्रिया से आश्चर्यजनक सहयोग मिलता था । कुल और जाति में जो भाव बड़े-बड़े उपदेशों से सम्भव नहीं हो पाते वह बचपन से माता-पिता के चरणस्पर्श से उत्पन्न हो जाते थे । राम-लक्ष्मण के भारी त्याग का प्रशिक्षण यहीं से हुआ था । दुःख की बात है कि पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में हमने अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं की हत्या कर दी और उसी का फल भुगतने के लिये विवश होना पड़ा ।

पिता-पुत्र सम्बन्ध के वर्तमान स्वरूप का चित्रण गोस्वामी जी ने कलियुग वर्णन के प्रसंग में किया है ।

सुत मानहि मातु-पिता तबलौं ।
अबलानन दीख नहीं जबलौं ॥
ससुरारि पियारि लगी जबते ।
रिपु रूप कुटुम्ब भए तबते ॥

विवाह से पूर्व तक पुत्र के लिये माता-पिता प्यारे होते हैं और वह उनका थोड़ा बहुत सम्मान करता है । लेकिन विवाह होते-होते उस का सारा ध्यान ससुराल की ओर लग जाता है । वही माता-पिता जिनने बचपन में अनेक कष्ट उठाकर पालन-पोषण किया वे पुत्र के लिये शत्रु रूप में प्रतीत होने लगते हैं ।

थोड़े ही समय पूर्व तक भारतवर्ष की कौटुम्बिक प्रथा बड़ी दृढ़ और संगठित थी । एक-एक परिवार में सौ-सौ तक व्यक्ति होते थे और एक मालिक के इशारे पर सबके सब कार्य करते थे । आपस में अनुशासन और आत्मीयता होती थी । लेकिन चरण छूने जैसी छोटी परम्पराओं की उपेक्षा करके पारिवारिक एकता को नष्ट कर देने का घोर अपराध हम लोगों ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया । यही कारण है कि अब परिवार इतने छोटे हो गये हैं कि उसमें माता-पिता और कुँआरे पुत्र-पुत्रियों के अतिरिक्त चाचा, ताऊ का समावेश हो नहीं पाता । बच्चों के विवाह और बहु के घर आगमन के साथ-साथ परिवार का विघटन प्रारम्भ हो जाता है ।

आवश्यक है कि भगवान राम के मानने वाले हम सब उनकी मर्यादाओं को अपने जीवन में स्वीकार करें और बड़ों के चरण स्पर्श जैसी उपयोगी छोटी-छोटी प्रथाओं को पुनः प्रचलित करें ।

तनय मातु-पितु तोषनिहारा ।
दुर्लभ जननि सकल संसारा ॥

माता-पिता को अपने उत्तम आचरण से सन्तुष्ट करने वाली सन्तानें वास्तव में प्रत्येक काल में दुर्लभ रही हैं। जो श्रेष्ठ सन्तानें होती हैं, जिन्हें अपने जीवन में उन्नति और विकास का श्रेय लाभ होने की संभावना होती है, उन्हीं को माता-पिता की चरण सेवा का सौभाग्य प्राप्त होता है। शिक्षा प्राप्त करने वाला प्रत्येक बालक अपने सौभाग्य को जगाने के लिये ही तो विद्यालय में आता है । कौन शिक्षित परिवार भला अपनी सन्तान को प्रतिभाशाली और अपने से भी उन्नतिशील देखने की चाह नहीं रखता ? कहावत है कि हर व्यक्ति सम्पूर्ण संसार को जीतने की अभिलाषा रख सकता है लेकिन वह अपनी सन्तान से हारने में ही प्रसन्नता और गौरव का अनुभव करता है । पितृभक्त दुर्लभ रत्न ही किसी देश और जाति को ऊँचा उठाने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित कर पाते हैं ।

धन्य जनम जगती तल तासू ।
पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ॥

वह पुत्र धन्य है जिसके चरित्र को सुन कर पिता को प्रसन्नता और आनन्द की प्राप्ति हो । अपने वीरता और विवेकपूर्ण कामों से पिता को सन्तोष प्रदान करने का कार्य राम-लक्ष्मण ने किया । विश्वामित्र के साथ राक्षस बध करने को गये और उधर ही जनकपुर पहुँचकर धनुष भंग कर डाला । क्षत्रीय कुलों पर आतंक जमाने वाले परशुधारी परशुराम जी को परास्त कर दिया ।

महाराज दशरथ के पास जनकपुर का दूत धनुष भंग और विवाह का सन्देश लेकर आता है । बाहर गये अपने पुत्रों का शौर्यपूर्ण समाचार सुन कर पिता रूप में महाराज दशरथ को कितनी प्रसन्नता होती है इसका उदाहरण नीचे की चौपाइयों में देखिए। राजा दशरथ जनकपुर के दूत को अपने निकट बिठाकर प्रेमपूर्ण रीति से राम-लक्ष्मण के विषय में विस्तार से पूछते हैं –

तब नृप दूत निकट बैठारे ।
मधुर मनोहर बचन उचारे ॥
भैआ कहहु कुशल दोउ बारे ।
तुम्ह नीके निज नयन निहारे ॥
स्यामल गौर धरे धनु भाथा ।
वय किसोर कौसिक मुनि साथा ॥

दूत राम-लक्ष्मण की करनी को उत्तम ढंग से सुनाता है

सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह सम धन्य न कोउ ।
राम लखनु जिन्ह के तनय विश्व विभूषन दोउ ॥

पूछन जोगु न तनय तुम्हारे ।
पुरुष सिंह तिहुँ पुर उजियारे ॥
जिन्ह के जस प्रताप के आगे ।
ससि मलीन रवि सीतल लागे ॥
तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे ।
देखिअ रवि कि दीप कर लीन्हे ॥
सीय स्वयंवर भूप अनेका ।
समिटे सुभट एक ते एका ॥
संभु सरासन काहु न टारा ।
हारे सकल वीर बरियारा ॥
तीनि लोक महँ जे भट मानी ।
सब कै सकति संभु धनु भानी ॥
सकइ उठाइ सरासर मेरू ।
सोउ हियँ हारि गयउ कर फेरू ॥
जेहि कौतुक सिव सैल उठावा ।
सोउ तेहि सभा पराभउ पावा ॥

तहाँ राम रघुवंस मनि, सुनिअ महा महिपाल ।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु, जिमि गज पंकज नाल ॥

सुनि सरोष भृगु नायक आये ।
बहुत भाँति तिन्ह आँख देखाये ॥
देखि राम बलु निज धनु दीन्हा ।
करि बहु विनय गवनु वन कीन्हा ॥
राजन राम अतुल बल जैसे ।
तेज निधान लखनु पुनि तैसे ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कंपहि भूप बिलोकत जाके ।
जिमि गज हरि किसोर के ताके ॥
देव देखि तब बालक दोऊ ।
अब न आँखि तरि आवत कोऊ ॥

राम-लक्ष्मण के वीरतापूर्ण कार्य को सुनकर महाराज दशरथ आनन्द विभोर हो उठते हैं –

दूत बचन रचना प्रिय लागी ।
प्रेम प्रताप वीर रस पागी ॥
सभा समेत राउ अनुरागे ।
दूतन्ह देन निछावरि लागे ॥
तब उठि भूप वशिष्ठ कहुँ, दीन्ह पत्रिका जाइ ।
कथा सुनाई गुरहि सब, सादर दूत बोलाइ ॥
राजा सबु रनिवासु बोलाई ।
जनक पत्रिका बांचि सुनाई ॥
राम-लखन कै कीरति करनी ।
बारहिं बार भूप बर बरनी ॥

पुत्र की शुभ कीर्ति को सुनकर पिता का प्रसन्न होना स्वाभाविक है । अध्ययन, देशाटन अथवा व्यापार हेतु पिता अपने पुत्रों को घर से बाहर भेजते हैं । लेकिन लखनऊ अथवा वाराणसी जाने वाले उस पुत्र के विषय में जिस के लिए पिता अपना पेट काट कर १०० रुपये या १५० रुपये मासिक भेजता है तथा हर सम्भव उपाय से , अपने को अनेक कष्टों में फँसा कर परदेश में रहने वाले पुत्र को सुख, सुविधा पहुँचाने की चेष्टा करता है जब समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार से अथवा पत्र द्वारा अवगत होता है कि पुत्र हड़ताल, आन्दोलन अथवा अन्य प्रकार के अनैतिक कार्यों में फँस कर राजदंड का शिकार बन रहा है, अथवा अनेक प्रकार के व्यक्तिगत दोषों में फँस गया है या उसकी पढ़ाई सन्तोषजनक रूप से नहीं चल रही है, तो उसे हार्दिक वेदना होना स्वाभविक है । इसके विपरीत कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने वाले पुत्र के पिता के आनन्द का अनुभव कीजिये । उसे संसार की समस्त सम्पदा मिल जाने जैसा आनन्द होता है । इस रूप में राम-लक्ष्मण की कीर्ति करनी को सुन कर महाराज दशरथ के आनन्द का अन्दाज लगाइये ।

हमें भी ऐसी ही संतानें बन कर माता-पिता को सुख पहुँचाना है । अपने चरित्र, विद्वता, शौर्य और विवेकपूर्ण कार्यों से ऐसा करना संभव हो सकता है।

चार पदारथ कर तल ताके ।
प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके ॥

इस चौपाई में बड़ी महत्वपूर्ण बात भगवान ने कह दी है । माता-पिता जिस पुत्र को प्राणों के समान प्यारे होते हैं, जीवन के चारों लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष उसके वश में हो जाते हैं ।

राम को उनके पिता प्राणों के समान प्रिय थे । पीछे का समस्त वर्णन इस का प्रमाण है। वास्तव में पिता की आज्ञा का पालन करने नहीं वरन् पिता को लौकिक कलंक से बचाने के लिए राम वन को गये थे –

रघुकुल रीति सदा चलि आई ।
प्राण जायँ पर बचन न जाई ॥

रघुकुल की इस परम्परागत रीति को यदि महाराज दशरथ राम के पुत्र विषयक मोह में फँस कर परित्याग कर देते तो उन्हें अपकीर्ति का भागी बनना पड़ता । वन जाते समय पिता की अनुमति प्राप्त करने के अवसर पर इसी बात की ओर उन्होंने संकेत किया –

पितु असीस आयसु मोहि दीजै ।
हरष समय विस्मय कत कीजै ॥
तात किए पुनि प्रेम प्रमादू ।
जग जस जाय होय अपवादू ॥

हे तात ! प्रमादपूर्ण अथवा मोहजन्य प्रेम के वशीभूत होने पर आज का सुयश, अपयश में बदल जाएगा ।

वन जाते-जाते राम पिता के हित का पूरा-पूरा ध्यान रखते गये है । सीता और लक्ष्मण को उन्होंने पिता-माता के हित के लिये वन जाने से रोका था। सीता जी से कहा था कि–

आपन मोर नीक जो चहहूं ।
बचनु हमार मानि गृह रहहूं ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई ।
सब विधि भामिन भवन भलाई ॥
एहिते अधिक धरम नहि दूजा ।
सादर सासु ससुर पद पूजा ॥

इसी प्रकार लक्ष्मण से भी कहा था –

भवन भरत रिपुसूदन नाहीं ।
राउ बृद्ध मम दुख मन माहीं ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मैं बन जाउं तुम्हहि लेइ साथा ।
होहि सबहि विधि अवध अनाथा ॥
गुरु पितु-मात प्रजा परिवारू ।
सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू ॥
रहहु करहु सब कर परितोषू ।
नतरु तात होइहि बड़ दोषू ॥

चलते समय प्रेमविह्वल प्रजा से भी उन्होंने पिता-माता की उचित देखभाल के लिए कहा । अवध से अपने पीछे उमड़े हुए जनसमुदाय से राम ने कहा –

बारहिं बार जोरि जुगपानी ।
कहत राम सब सन मृदु बानी ॥
सोइ सब भांति मोर हितकारी ।
जेहि ते रहें भुआल सुखारी ॥
मातु सकल मोरे विरह, जेहि न होहि दुख दीन ।
सोई उपाय तुम्ह करेहु सब, पुरजन परम प्रबीन ॥

गंगातट पर पहुंचने तक सुमन्त को आशा थी कि सम्भवतः राम अवध को वापस लौट चलेंगे लेकिन दृढ़ निश्चयी राम भला अपने वचनों से हटने वाले थे ? सुमन्त ने चरणों पर गिर कर अनेक प्रकार की विनती की लेकिन राम पर उसका कोई प्रभाव न पड़ा । उनकी पितृ-भक्ति कर्तव्य मिश्रित आदर्शपूर्ण थी, मोहजन्य शरीर सेवा तक सीमित रहने की मातृ-पितृ आज्ञा पालन रूपी साधना के साधक श्रीरामचन्द्र जी न थे । पूर्व में कही हुई चौपाई के अनुसार चार पदार्थ–धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति होनी चाहिए । हम देखते हैं कि उन्हें सबकी प्राप्ति हुई ।

धर्म – राम धर्मात्मा और सत्यव्रतधारी कहलाते हैं । राज्याधिकार का त्याग कर जब वे वन को चले तो महाराज की आज्ञानुसार मन्त्रिवर सुमन्त जी उन्हें गंगातट तक भेजने आये थे । वहाँ वे भगवान के चरणों पर लोट कर अवध वापस चलने के लिए आग्रह करने लगे, लेकिन भगवान ने उस समय यही उत्तर दिया ।

मंत्रिहि राम उठाय प्रबोधा ।
तात धरम मत तुम सब सोधा ॥
सिव दधीचु हरिचन्द नरेसा ।
सहेउ धरम हित कोटि कलेसा ॥
रंतिदेव बलि भूप सुजाना ।
धरम धरेउ सहि संकट नाना ॥
धरम न दूसर सत्य समाना ।
आगम-निगम पुरान बखाना ॥
मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा ।
तजे तिहूँ पुर अपजसु छावा ॥
संभावित कहुँ अपजसु लाहू ।
मरन कोटि सम दारुन दाहू ॥
तुम्ह सन तात बहुत का कहऊं ।
दिए उतरु फिरि पातक लहऊं ॥

इन चौपाइयों से सिद्ध है कि साधना के प्रथम फल 'धर्म' की उन्हें प्राप्ति प्रथम हुई ।

राम राज्याधिकार का परित्याग करके चित्रकूट में जाकर बैठे थे । जैसे ही उन्हें पता चला कि विमाता भरत के लिए राज्य चाहती है, समर्थ होते हुए भी उन्होंने किसी प्रकार का विरोध प्रकट नहीं किया और स्वेच्छा से वनगामी बने ।

लेकिन रामायण में दशरथ जी के प्रसंग में वशिष्ठ द्वारा यह चौपाई कही गई है–

जिमि सरिता सागर पहि जाहीं ।
यद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमि सुख सम्पत्ति बिनही बुलाए ।
धरम सीलु पहिं जाहि सुभाए ॥

अर्थ– धर्म की उपलब्धि जिसे हुई, अर्थ उसके चरण चूमेगा । राम ने अधर्म के लिए राज्य लक्ष्मी को ठुकराया तो वही उनकी चेरी बन गई । राम चित्रकूट में निवास करते हैं लेकिन भरत ने मामा के यहाँ से आते ही अवध में हुए वितंडावाद को सुनकर वहाँ जाने का निश्चय कर लिया । महाराज के दाह संस्कार के पश्चात् वशिष्ठ जी सहित मंत्रि-मण्डल, प्रजा प्रतिनिधि गण, माता कौशल्या और समस्त परिजनों ने भरत से राज्य करने के लिए कहा और इसे धर्म सम्मत भी बताया । राम के चरणों में उनके प्रेम की परीक्षा पहले हो चुकी थी इसलिए सबकी सहानुभूति उन्हें उपलब्ध हो गई । पिता की आज्ञा के अनुसरण के लिए राज्य भार ग्रहण करने का आग्रह सब लोग करते थे–

करहु सीस धरि भूप रजाई ।
इह तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई ॥

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लेकिन भरत ने उसे स्वीकार न किया। राम को मनाने का निर्णय करके जब वे सभा से महल को वापस लौटे तो यही विचार किया—

भरत आय घर कीन्ह विचारू ।
नगर बाजि गज भवन भंडारू ॥
सम्पत्ति सब रघुपत करि आही ।
जो बिन जतन किए बन जाही ॥
तो परिनाम न मोर भलाई ।
पाप सिरोमनि साँइ दोहाई ॥

राम ने जवाब दावा तक नहीं लगाया लेकिन डिग्री उन्हीं के पक्ष में हुई —

राज तिलक की सामग्री त्याग कर राम वन को गये थे। भरत वह सामग्री तथा अवध की प्रजा सम्पत्ति सहित उसे राम के चरणों मे समर्पित करने के लिए चित्रकूट को चले गये —

जागत सब निस भयउ बिहाना ।
भरत बोलाए सचिव सुजाना ॥
कहेउ लेउ सब तिलक समाजू ।
वनहि देव मुनि रामहि राजू ॥

संसार के इतिहास में ऐसी अद्वितीय घटना की मिसाल नहीं मिलती। इसी भारत में राज्य लोभ के लिए पिता और भाई की हत्या के अनेकों उदाहरण मिलते है। राम ने धर्म का अनुसरण कर लक्ष्मी को अपनी चेरी बना लिया।

चित्रकूट जाने वाली लक्ष्मी और वैभव तो साधक राम को प्रलोभन देने के लिए आई थी। लेकिन इस बड़े प्रलोभन के वशीभूत न होकर जब उन्होंने अपना चौदह वर्षीय अनुष्ठान पूरा कर लिया तो 'अर्थ' उनका दास बन गया।

अयोध्या की आर्थिक सम्पन्नता का जैसा वैभवपूर्ण वर्णन राम-कालीन राज्य में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है—

भूमि सप्त-सागर मेखला ।
एक भूप रघुपति कोसला ॥
राम राज कर सुख सम्पदा ।
बरनि न सकई फनीस सारदा ॥
लता बिटप मागें मधु चवहीं ।
मन भावतो धेनु पय स्रवहीं ॥
ससि सम्पन्न सदा रह धरनी ।
त्रेता भई कृत युग कै करनी ॥
प्रगटी गिरिन्ह विविध मनि खानी ।
जगदातमा भूप जग जानी ॥
सागर निज मरजादा रहही ।
डारहि रत्न तटन्हि नर लहही ॥
विधु महि पूर मयूखन्हि, रवि तप जेतनेहि काज ।
मागें बारिद देहि जल, रामचन्द्र के राज ॥
अवधपुरी बासिन्ह कर, सुख सम्पदा समाज ।
सहस सेष नहिं कहि सकहिं, जहँ नृप राम विराज ॥
बाजार रुचिर न बनइ बरनत, वस्तु बिनु गथ पाइए ।
जहँ भूप रमानिवास तहँ की, सम्पदा किमि गाइए ॥
बैठे बजाज सराफ बनिक, अनेक मनहुँ कुबेर ते ।
सबसुखी सब सच्चरित सुन्दर, नारि नर सिसु जरठते ।

स्वतन्त्र भारत के राज्यतंत्र को करीब ५० वर्ष पूरे होने जा रहे हैं और अथक परिश्रम व कर्ज के रूप में विदेशी पूँजी को लाने के बाद भी अभी तक समस्याओं को सुलझाने में हमें सफलता नहीं मिल सकी। इस संदर्भ में राम राज की आर्थिक सम्पन्नता का अन्दाज हम लगायें। प्राकृतिक शक्तियाँ, गरि तथा सागर पूरी तरह से प्रजा के वश में थे और इनकी कृपा मात्र से हमारी गरीबी पलक मारते दूर हो सकती है। राज-भवन के सम्मुख बाजार में बिना मूल्य के वस्तु मिलने की बात कोई काल्पनिक नहीं। आर्थिक संकट के समय भी खादी और हस्त करघा के कपड़े अर्धमूल्य पर मिलते हैं। फिर जब सभी सम्पन्न और सुखी थे तो मुफ्त वाली चीजें कम लोग ही तो पसन्द करते थे।

काम— काम से तात्पर्य लेते है सांसारिक मानवोचित शुभ मनोरथों की पूर्ति। धन,सन्तान, प्रतिष्ठा और स्वामित्व की चाह रखना प्रायः सभी मनुष्यों की कामनाएँ होती हैं। हम देखें कि साधक राम के समस्त लौकिक मनोरथों की पूर्ति हुई। उदाहरणार्थ दान और यज्ञ की इच्छा —

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे ।
दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे ॥

पूर्वज महाराज दशरथ, दिलीप, रघु तथा हरिश्चन्द्र आदि एक एक राजसूय यज्ञ कर सके थे लेकिन राम ने सैकड़ों राजसूय यज्ञ करके दान धारा को प्रवाहित किया।

स्त्री की सुशीलता और गुणवती होना— पत्नी पति की अर्धांगिनी होती है। हर व्यक्ति की चाह होती है कि उसकी पत्नी उसके अनुकूल रह कर इच्छानुसार कार्य करे वास्तव में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पति चाहे कितना बड़ा विद्वान और धर्मात्मा क्यों न हो यदि पत्नी का आचरण उसके मनोनुकूल नहीं है तो उसे अपार कष्ट तो होता ही है साथ ही उसकी सारी सफलता संदिग्ध हो उठती है। भगवान राम इस विषय में भी सौभाग्यशाली रहे क्योंकि—

पति अनुकूल सदा रह सीता ।
सोभा खानि सुसील विनीता ॥
जेहि विधि कृपासिंधु सुख मानइ ।
सोई करि श्री सेवा विधि जानइ ॥
कौसल्यादि सासु गृह माहीं ।
सेवई सबन्हि मानमद नाहीं ॥

सीताजी पति की इच्छानुसार विनम्र भाव से पति तथा सासुओं की सेवा करती थीं।

भ्रातृ-प्रेम– सांसारिक सुख में भाइयों की अनुकूलता बड़ा महत्व रखती है। बन्धुगणों के आपसी कलह,द्वेष से सारा पारिवारिक जीवन लड़खड़ा जाता है। इसके अनेक उदाहरण हमें मिलते हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि संकट के समय भाइयों में प्रेम हो जाए लेकिन आर्थिक सम्पन्नता में, दीर्घकालीन व्यवहार में, आपसी प्रेम में, दरारें पड़ने लगती हैं। पूरा महाभारत बन्धुओं के आपसी द्वेष से भरा है। सदैव के लिये भाइयों का सच्चा प्रेम तथा आज्ञा पालन की प्राप्ति सौभाग्य-शाली सांसारिक लोग ही पा सकते हैं। मातृ-पितृ भक्त राम को वह मिली—

सेवहिं सानुकूल सब भाई ।
राम चरन रति अति अधिकाई ॥
प्रभु मुख कमल विलोकत रहही ।
कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं ॥

राम के तीनों भाई उनकी ओर इस आशा से देखा करते थे कि कोई आज्ञा वे दें जिसके पालन से वे भी धन्य बनें।

प्रजा-सुख - प्रत्येक धर्मात्मा राजा को वास्तविक आनन्द तभी मिलता है, जब उसकी प्रजा सुखी हो। राम एक बहुत बड़े साम्राज्य के स्वामी थे। उनकी प्रजा यदि सुखी न होती हो उनका सारा आदर्श संदिग्ध हो जाता। लेकिन राम तो सफल साधक थे। इसीलिये —

हरषित रहहिं नगर के लोगा ।
करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥
एहि विधि नर नारि सब, करहिं राम गुनगान ।
सानुकूल सब पर रहहिं, सन्ततः कृपा निधान ॥

पुत्र कामना – सन्तान और फिर गुण सम्पन्न सन्तान की चाह भला किस सांसारिक व्यक्ति को नहीं होती। भगवान राम भला इस सौभाग्य से कैसे वंचित रह सकते थे –

दुइ सुत सुन्दर सीता जाए ।
लव कुस वेद पुरानन्ह गाए ॥
दोउ विजई बिनई गुन मन्दिर ।
हरि प्रतिबिंब मनहु अति सुन्दर ॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे ।
भए रूप गुण सील घनेरे ॥

भगवान राम के शासन काल में नियोजित परिवार की कल्पना पूरी तरह से लागू थी। स्वयं उनके दो पुत्र थे तथा शेष भाइयों के भी दो-दो पुत्र थे। वे सभी गुण सम्पन्न थे।

प्रतिष्ठा – धन पुत्र के समान प्रतिष्ठा प्राप्ति की चाह भी होना प्राणी मात्र के लिए स्वाभाविक है। सज्जन लोग जिस व्यक्ति का आदर करें, अच्छी दृष्टि से देखें, वही संसार का सफल प्राणी माने जाने के योग्य है। राम अपने गुणों और चरित्र से अपने ही शासनकाल में सबके प्यारे बन गये थे। राजा के रूप में प्रजा का आदर पाना तो सरल है। उस दिशा में मानस का कथन है —

सप्त भूमि सागर मेखला ।
एक भूप रघुपति कौशला ॥

यहाँ तात्पर्य समस्त संसार के शासक होने से न लगा कर यह लेना चाहिए कि दुनिया भर में राजा के रूप में राम बेमिसाल थे कोई अन्य राजा उनके समान नहीं था—

लेकिन सांसारिक भोगों से अनासक्ति रखने वाले सिद्ध ऋषि मुनि सभी राजाओं के सामने सर नहीं झुकाते वे तो अपने से बड़ा धर्मात्मा पाकर नत मस्तक होते हैं मर्यादा पुरुषोत्तम राम के लिए यही बात थी—

नारदादि सनकादि मुनीसा ।
दरसन लागि कोसला धीसा ॥
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं ।
देखि नगर बिरागु बिसरावहिं ॥

अयोध्यापुरी के अध्यात्मपूर्ण वैभव को देखकर नारदजी तथा सनकादि मुनीश उस ओर आकर्षित हो गये थे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मोक्ष– अब चौथा नम्बर आता है मोक्ष का जो कि साधक को मिलना चाहिए । राम चरित मानस में तो इसका वर्णन कम मिलता है कि समस्त अयोध्यावासी, रीछ और बानर समुदाय सशरीर भगवान की यात्रा के साथी बने थे और ब्रह्माजी ने सबको सनातन लोक का निवासी बनाया । वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान राम ने ब्रह्मा जी से कहा –

इमे हि सर्वे स्नेहान्मामनुयाता यशस्विनः ।
भक्ता हि भजितव्याश्च त्यक्तात्मानश्चमत्कृते ॥

"ये सब लोग स्नेह वश मेरे पीछे आये हैं ये सब के सब यशस्वी और मेरे भक्त हैं इन्होंने मेरे लिये अपने लौकिक सुखों का परित्याग कर दिया है अतः ये सर्वथा मेरे अनुग्रह के पात्र हैं ।"

इस पर ब्रह्माजी ने कहा –

तच्छ्रुत्वा विष्णुवचनं ब्रह्म लोक गुरुः प्रभुः ।
लोकान् संतानकान् नामयाश्यन्तीये समागताः ॥

"भगवान का यह वचन सुनकर लोकगुरु भगवान ब्रह्माजी बोले– भगवन यहाँ आये हुए ये सब लोग सन्तानक नामक लोकों में जायेंगे ।"

माता पिता के सेवारूपी व्रत के साधक बनकर भगवान राम ने जो लौकिक और पारलौकिक सुख प्राप्त किया है, उसमें उनके अवतार तथा शक्ति का रहस्य माना जा सकता है । वे भगवान थे, ऐसा कह कर उनके द्वारा स्थापित मर्यादाओं को महत्वहीन सिद्ध कर देना अपने लिए हित प्रद न सिद्ध होगा । यह निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि आज कल भी माता पिता की सेवा में अनेक सुख, ऐश्वर्यों का भागी बना कर मानव-जीवन की सार्थकता सुलभ करते हैं ।

इसलिए राम के मानने वालों को इस दिशा में अग्रसर होने की तत्काल आवश्यकता है ।

ooo



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बन्धुगणों का आदर्श सम्बन्ध

परिवार के सदस्यों का सौहार्दमय पारस्परिक सम्बन्ध ही आर्य संस्कृति का प्रधान संबल, उसकी उत्कृष्टता का प्रमुख रहस्य रहा है। रामायणकार ने पाठकों के सामने संयुक्त परिवार के विभिन्न सदस्यों के बीच स्नेह और सद्भावनापूर्ण सम्बन्धों का एक उत्कृष्ट चित्र प्रस्तुत किया है। यह सत्य है कि कैकेयी की ईर्ष्या भावना इस सुखी परिवार पर काली छाया की तरह आ पड़ी पर उसकी स्वार्थ परायणता और अमर्यादित आचरण के कारण ही तो अन्य सदस्यों की उदात्तवृत्तियाँ और निःस्वार्थ व्यवहार प्रकाश में आ सके।

दशरथ में यदि आदर्श पिता और राम में आदर्श पुत्र मूर्तिमान हो उठे हैं तो लक्ष्मण और भरत में आदर्श भाई तथा कौशल्या और सीता में आदर्श पत्नी का रूप निखरता है।

राम और उनके तीनों भाइयों के बीच निश्छल और प्रगाढ़ भ्रातृ-प्रेम था। जैसे गाय के खुर अथवा प्रोष्ठपद नाम के तारे दो-दो के जोड़े में परस्पर अनुरक्त रहते हैं वैसे ही वे चारों भाई राम-लक्ष्मण और भरत-शत्रुघ्न के दो-दो जोड़े में परस्पर अनुरक्त थे। उनमें कोई स्पर्धा, कोई प्रतियोगिता या कलह नहीं था।

बारहिं ते निज हित पति जानी।
लछमन राम चरन रति मानी॥
भरत शत्रुघ्न दोनउ भाई।
प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई॥
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई।
थकित होहिं सब लोग लुगाई॥

प्रेम और बैर का बीजारोपण बाल्यावस्था में होता है महाभारत के पात्र कौरव-पाण्डवों में परस्पर द्वेष और प्रतिस्पर्धा का बीजारोपण बचपन के खेलों के समय होने लगा था जिसका वृहद रूप महाभारत में आपसी विनाश के रूप में प्रकट होकर करोड़ों व्यक्तियों की प्राणाहुति लेकर शान्त हो सका। रामायण में हम ठीक इसका उल्टा पाते है। यद्यपि राम-लक्ष्मण तथा भरत-शत्रुघ्न दो जोड़ों में बँट गये थे। लक्ष्मण का खिंचाव राम की ओर अधिक था और शत्रुघ्न भरत की समीपता में सुख अनुभव करने वाले थे, लेकिन दोनों जोड़ों में एक दूसरे के प्रति प्रेम-त्याग तथा सम्मान की प्रबलतम भावना कूट-कूट कर भरी थी। सब भाई एक साथ खेलते-खाते, सोते और युवावस्था में राज कार्य में सहयोग प्रदान करते थे।

राम का भाइयों के प्रति प्रेम-बड़े पर अधिक दायित्व होता है। भरत तथा लक्ष्मण को अपने बड़े भाई के निष्ठावान और मूक चिर सेवक बनाने का श्रेय राम को है। राम को अपने भाई प्राणों से भी प्यारे थे। इस प्रेम के निखार का अवसर तब आता है जब महाराज दशरथ जी द्वारा राम को राज्यभिषेक देने की तैयारी हुई।

राज तिलकोत्सव के अवसर पर अवध के नर-नारी कुमुदिनी के समान खिल उठे।

राम राज अभिषेक सुनि, हिय हरषे नर नारि।
लगे सुमंगल सजन सब, विधि अनुकूल विचारि॥

महाराज वशिष्ठ जी राम के महल में गये और उन्हें युवराज पद ग्रहण हेतु पूर्व तैयारी की सारी विधियाँ बता आये—

राम करहु सब संजम आजू।
जो विधि कुशल निबाहै काजू॥

यह एक प्रकार की सरकारी घोषणा थी। गुरु राजोचित उपदेश देकर वापस जाते हैं परन्तु राम के मन में संकोच हो जाता है—

गुरु सिख देई राम पहि गयऊ।
राम हृदय अस विसमय भयऊ॥

राम के हृदय में किस बात का खेद होता है ?—

जनमे एक संग सब भाई।
भोजन सयन केलि लरिकाई॥
करन बेध उपबीत बिआहा।
संग-संग सब भए उछाहा॥
विमल बंस यहु अनुचित एकू।
बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू॥

राम के मन को भाइयों को वंचित करके स्वयं अकेले राजपद प्राप्ति की बात अच्छी न लगी। बचपन से ही उनमें अपने तीनों भाइयों को उचित बढ़ावा देने का स्वभाव था। भरतजी ने राम के प्रति सम्मान की भावना प्रकट करते हुए अपनी विरह व्यथा प्रकट कर राम के आदर्श भाईपन की पुष्टि चित्रकूट प्रसंग में अनेक बार की है—

मैं जानउं निज नाथ स्वभाऊ।
अपराधिहु पर कोई न काऊ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मो पर कृपा सनेहु विशेषी ।
खेलत खुनिस न कबहू देखी ॥
सिसुपन ते परिहरउ न संगू ।
कबहु न कीन्ह मोर मन भंगू ॥
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही ।
हारेहु खेल जितावहिं मोही ॥

बालपन से राम के आदर्श व्यवहार की उपर्युक्त छाप भरत के मन पर थी । युवराज पद दिये जाने के अवसर पर भरत और शत्रुघ्न अपनी ननिहाल में थे । जैसे राजपद प्राप्ति की चर्चा चली, राम को भरत-शत्रुघ्न की अनुपस्थिति खटकने लगी—

सुनत राम अभिषेक सुहावा ।
बाज गहागह अवध बधावा ॥
राम सीय तब सगुन सुनाए ।
फरकहिं मंगल अंग सुहाए ॥
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं ।
भरत आगमनु सूचक अहहीं ॥
भए बहुत दिन अति अबसेरी ।
सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं ।
इहइ सगुन फलु दूसर नाहीं ॥
रामहिं बंधु सोच दिन राती ।
अंडन्हि कमठ हृदउ जेहि भाँति ॥

'अण्डन्हि कमठ हृदउ जेहि भाँती' से सुन्दर उपमा प्रेम के प्रदर्शन के लिये कोई दूसरी नहीं हो सकती । राम सदैव अपने भाइयों के हित की चिन्ता किया करते थे । उनके विकास, उन्नति,सम्मान तथा स्नेह का ध्यान राम को चौबीसों घण्टे रहता था ।

माँ कैकेयी ने अपने दो वरदानों से परिवार में कलह पैदा कर दी लेकिन राम की बुद्धिमत्ता और भाईपन ने उस विषाद को रचना में बदल दिया । माता कैकेयी से जब उन्होंने पिता के शोक का कारण जाना तो भरत के हित में अपने राज्याधिकार को तृण के समान समझ कर त्याग दिया । कैकेयी से उन्होंने यही कहा —

भरत प्रान प्रिय पावहिं राजू ।
यह ते अधिक न मोर सुपासू ॥
जो न जाउँ बन ऐसेहु काजा ।
प्रथम गिनहि मोहि मूढ़ समाजा ॥

राज्याधिकार को भरत के निमित्त त्याग कर इतनी शीघ्रता से वनगमन की तैयारी की कि उसका उदाहरण अन्यत्र मिलना दुर्लभ है—

नवगयन्दु रघुवीर मन, राज अलान समान ।
छूट जान वन गमन सुनि, उर आनन्द अधिकान ॥

नवगयन्द के समान उनका मन तो राज्यरूपी जंजीर में बंधा हुआ था,वरदान से वह छूट गया और राम शीघ्रतापूर्वक जंगल को भागे । वन प्रस्थान के समय उन्होंने सीता को घर पर रहने के लिये समझाते हुए कहा था कि प्राणप्रिय भरत और शत्रुघ्न का तुम अपने भाई और पुत्र के समान विशेष ध्यान रखना—

भातृ पुत्र समौ चापि दृष्टव्यौ चविशेषत: ।
त्वया भरत शत्रुघ्नौ प्राणै: प्रियतरौ मम ॥

राम के वन-गमन से महाराज दशरथ ने पुत्र शोक में अपने प्राण खोये । समस्त लोक में विरोध की यह बात फैल चुकी थी । लक्ष्मण विक्षुब्ध थे । वे तो अयोध्या में राम के सामने पुरुषार्थ का प्रतिपादन कर बलपूर्वक राज ग्रहण करने के लिये राम को प्रेरित करते थे लेकिन भगवान के धैर्यपूर्ण प्रस्थान से उन्हें मन मारना पड़ा । चित्रकूट के मार्गभर में मार्मिक स्थलों पर जब-जब लक्ष्मण ने भरत पर दोषारोपण किया है,राम ने उन्हें बरजा है । इतने बड़े परिवर्तन के बाद भी राम का भाइयों के प्रति प्रेम में रंच मात्र अंतर नहीं आया । अयोध्या की ओर से भरत के साथ चतुरंगिणी सेना के आगमन के समाचार से राम पर आक्रमण की आशंका से लक्ष्मण बौखला उठे थे । उनके धैर्य का बाँध टूट गया,रौद्र रूप में धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर वे भरत-शत्रुघ्न के बध के लिये उद्यत् हो गये और भगवान राम के चरणों की सौगन्ध तक खा ली । लेकिन मर्यादा पुरुषोत्तम राम को इस अवसर पर भी भरत की नीयत में सन्देह नहीं हुआ । प्रेम का पन्थ निराला है । निष्कपट प्रेम में भरत द्वारा विद्रोह की बातें आती ही नहीं थीं । लक्ष्मण से उन्होंने यही कहा —

सुनहु लखन भल भरत सरीसा ।
विधि प्रपंच महँ सुना न दीसा ॥
भरतहि होइ न राजमदु, विधि हरि हर पद पाइ ।
कबहु कि काँजी सीकरनि, छीर सिंधु बिनसाइ ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलई ।
गगनु मगन मकु मेघहिं मिलई ॥
गोपद जल बूड़हि घट जोनी ।
सहज छमा वरु छाँड़ै छोनी ॥
मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई ।
होइ न नृप मदु भरतहि भाई ॥
लखन तुम्हार सपथ पितु आना ।
सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना ॥

भाइयों के प्रति उनका प्रेम चित्रकूट प्रसंग पर उस समय उज्ज्वल रूप में प्रकट हुआ जब उनसे अयोध्या लौट चलने की अनुनय-विनय की गई । भरत के प्रेम के वशीभूत होकर भरत के कहने पर उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पर पुनर्विचार कर अयोध्या लौट चलने का वचन महाराज वशिष्ठजी को दे दिया ।

गुरु अनुराग भरत पर देखी ।
राम हृदयँ आनन्दु बिसेषी ॥
भरतहि धरम धुरन्धर जानी ।
निज सेवक तन मानस जानी ॥
बोले गुरु आयसु अनुकूला ।
बचन मंजु मृदु मंगल मूला ॥
नाथ सपथ पितु चरन दोहाई ।
भयउं न भुअनु भरत सम भाई ॥
जे गुरु पद अंबुज अनुरागी ।
ते लोकहुँ बेदहुँ बड़ भागी ॥
राउर जा पर अस अनुरागू ।
को कहि सकइ भरत कर भागू ॥
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई ।
करत बदन पर भरत बड़ाई ॥
भरतु कहहिं सोइ किये भलाई ।
अस कहि राम रहे अरगाई ॥

इस प्रसंग में भगवान् ने भ्रातृ-स्नेह की अनिवार्यता का प्रतिपादन करने वाली एक बड़ी सुन्दर चौपाई कही है—

होहिं कुठायँ सुबंधु सहाए ।
ओड़िहिं हाथ असनिहु के घाए ॥

"कुठौर अर्थात् कुअवसर में श्रेष्ठ भाई ही सहायक होते हैं बज्र के आघात भी हाथ ही से रोके जाते हैं ।"

लक्ष्मण के प्रति राम का आदर्श स्नेह— शेषावतार लक्ष्मण जी मानो राम के बाह्य प्राण थे । बड़े भाई के निष्कपट स्नेह एवं सहानुभूति के फलस्वरूप ही लक्ष्मण अपना सर्वस्व, यहाँ तक कि नवविवाहिता उर्मिला को भी त्याग कर भाई के साथ जाने को उद्यत हुए थे ।

बड़े परीक्षण के अवसर तो बाद में आये लेकिन बालपन से राम को लक्ष्मण की समीपता सहयोगी और सुखदायी लगती थी । सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भ से उन्हें लक्ष्मण अपने पूरक प्रतीत होते थे । लक्ष्मण के प्रति राम का अनुराग असीम था । उनकी प्रत्येक भावना का पिता तुल्य राम समादर करते थे ।

जनकपुर में विश्वामित्र के समीप दोनों भाई बैठे हैं । युवक लक्ष्मण के मन में मिथिलापुरी और विशेष रूप से स्वयंवर स्थली को देखने की उत्कट अभिलाषा है, लेकिन भय के कारण वे प्रकट करने में संकोच करते हैं । भगवान राम लक्ष्मण की मनोदशा समझ जाते हैं—

राम अनुज मन की गति जानी ।
भगत बछलता हिय हुलसानी ॥
नाथ लखनु पुर देखन चहहीं ।
प्रभु संकोच डर प्रकट न करहीं ॥
जो राउर आयसु मैं पावौं ।
नगर दिखाई तुरत लै आवौं ॥

आज्ञा मिलते ही अनुज को लेकर राम चल दिये और बड़े प्रेम से उन्हें सम्पूर्ण रचना दिखाई—

राम देखावहिं अनुजहि रचना ।
कहि मृदु मधुर मनोहर वचना ॥

परशुराम संवाद के प्रसंग में लक्ष्मण के बालोचित चपलतायुक्त शौर्य का राम ने पूरा-पूरा समर्थन किया था । अपने कटु वचनों द्वारा लक्ष्मण के परशुराम जी को खिजा देने पर जब वे लक्ष्मण को मारने के लिये उद्यत होते थे, तो बात बिगड़ती देख राम बड़ी चातुरी से भाई के पक्ष का समर्थन कर परशुराम जी को शान्त करते थे । भाई के प्रति पितातुल्य प्रेम और आत्मीयता के भाव तभी से प्रकट होने लगे थे जब राम कुंआरे ही थे । प्रसंग देखिये—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भृगुवर परसु दिखाबहु मोही ।
विप्र विचारि बचउ नृप द्रोही ॥
मिले न कबहु सुभट रन गाढ़े ।
द्विज देवता घरहि के बाढ़े ॥

इस अवसर पर राम ने अपने बड़प्पन के दायित्व को किस उत्तमता से निभाया —

अनुचित कहि सब लोग पुकारे ।
रघुपति सयनहि लखनु नेवारे ॥
लखन उतर आहुति सरिस, भृगुवर कोप कृसानु ।
बढ़त देखि जल सम बचन, बोले रघुकुल भानु ॥
नाथ करहु बालक पर छोहू ।
सूध दूध मुख करिअ न कोहू ॥
जौ पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना ।
तौ कि बराबरि करत अयाना ॥
जौ लरिका कछु अचगरि करहीं ।
गुरु पितु-मातु मोद मन भरहीं ॥
करिअ कृपा सिसु सेवक जानी ।
तुम्ह सम सील धीर मुनि ज्ञानी ॥

लंकाकाण्ड में प्रिय बन्धु लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम फूट-फूट कर रोये । लक्ष्मण को खोकर वे अयोध्या वापस जाना नहीं चाहते थे । भाई के महत्त्व को राम ने इस स्थल पर कितनी श्रेष्ठता से प्रतिपादित कर सब सम्बन्धों में सर्वोपरि बताया है—

उहाँ राम लछिमनहिं निहारी ।
बोले बचन मनुज अनुसारी ॥
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ ।
राम उठाइ अनुज उर लायउ ॥
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ ।
बंधु सदा तब मृदुल सुभाऊ ॥
मम हित लागि तजेहु पितु-माता ।
सहेहु बिपिन हिम आतप बाता ॥
सो अनुराग कहा अब भाई ।
ऊठहु न सुनि मम बच बिकलाई ॥
जौ जनतेउ वन बंधु बिछोहू ।
पिता बचन मनतेऊं नहि ओहू ॥
सुत बित नारि भवन परिवारा ।
होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥
अस विचारि जियँ जागहु ताता ।
मिलइ न जगत सहादेर भ्राता ॥

भाई की श्रेष्ठता—

जथा पंख विनु खग अति दीना ।
मनि बिनु फनि करिवर करहीना ॥
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही ।
जौ जड़ दैव जियावै मोही ॥
जैहउँ अवध कौन मुहु लाई ।
नारि हेतु प्रिय बन्धु गँवाई ॥
वरु अपजस सहतेउँ जग माहीं ।
नारि हानि विशेष छति नाहीं ॥
अब अवलोकु सोकु सुत तोरा ।
सहिहि निठुर कठोर उर मोरा ॥

भाइयों के प्रति राम का प्रेम वनवास से वापसी के बाद अन्त तक समान रूप से बना रहा । लंका विजय के पश्चात् अयोध्या वापसी पर उन्होंने भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न को अपने हाथों से नहलाया । वात्सल्य की मर्यादा का उत्कृष्ट उदाहरण अन्यत्र कहाँ मिलता है ?

सिंहासन पर बैठने से पूर्व —

पुनि करुनानिधि भरतु हँकारे ।
निज कर राम जटा निरुआरे ॥
अन्हवाए प्रभु तीनिउ भाई ।
भगत बछल कृपाल रघुराई ॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई ।
शेष कोटि सत सकहिं न गाई ॥

चक्रवर्ती सम्राट बनने पर भाइयों से प्रेम में तनिक अन्तर न आया । एक साथ सरयू स्नान, भोजन तथा भ्रमण जाने की प्रक्रिया में अन्तर पड़ा ही नहीं था ।

राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती ।
नाना भांति सिखावहिं नीती ॥

विभिन्न दूरस्थ स्थानों पर विजय के लिये भेजना और राजनीति का व्यावहारिक प्रशिक्षण रहता था ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अमराई प्रसंग में भरत संत-असंत के लक्षण पूछना चाहते थे लेकिन संकोच से कह नहीं सके। हनुमान, जो अपनी सेवा से सबके मध्यस्थ बन गये थे, भरतजी की बात को प्रकट करते हैं—

सनकादिक विधि लोक सिधाए।
भ्रातन्ह राम चरन सिरु नाए॥
पूछत प्रभुहि सकल संकुचाहीं।
चितवहि सब मारुत सुत पाहीं॥

हनुमान कहते हैं—

नाथ भरत कछु पूंछन चहहीं।
प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं॥

भगवान राम का उत्तर कितना आदर्श है—

तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ।
भरतुहि मोहि कछु अन्तर काऊ॥

राम के चरित्र का अनुगमन करने वालों को अपने छोटे भाइयों के प्रति इस प्रकार का भाव रखना अपेक्षित है।

भाइयों का राम के प्रति स्नेह एवं सम्मान

'बड़ा भाई पिता तुल्य होता है और भाभी माता के समान', भारतीय संस्कृति की इस आदर्श मर्यादा का व्यावहारिक तथा निखरा हुआ स्वरूप रामायण के अतिरिक्त अन्य कहीं नहीं मिलता। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का अपने लघु भ्राताओं पर पिता तुल्य प्रेम का वर्णन पिछले पृष्ठों पर हो चुका है। रघुकुल कमल महाराज के शेष तीनों भाइयों ने राम के प्रति आदर्श सम्मान,प्रेम तथा प्रत्येक प्रकार के त्याग व सेवा का अनूठा उदाहरण रखा। वे सभी राम के सामने समान आसनों पर बैठने में भी संकोच करते थे। जनकपुर पहुँचने पर पथ-श्रम से श्रमित विश्वामित्र के दोनों भाई चरण दबाते हुए देखे जाते हैं—

तेई दोउ बंधु प्रेम जनु जीते।
गुरु पद कमल पलोटत प्रीते॥
बार-बार मुनि अग्या दीन्ही।
रघुवर जाय सयन तब कीन्ही॥

तत्पश्चात् लक्ष्मण जी भाई राम की चरण सेवा करते हैं—

चापत चरन लखनु उर लाए।
सभय सप्रेम परम सचुपाए॥
पुनि-पुनि प्रभु कह सोवहु ताता।
पौढ़े धरि उर पद जल जाता॥

यह थी उस काल के आर्य परिवार की मर्यादा। इन छोटी सेवाओं और मर्यादाओं का पालन करने से बड़े-बड़े त्याग तथा विस्तृत आधार पर प्रेम की भावना बनती है। आजकल हम लोग सूर्य निकलने के पश्चात् बहुत देर तक सोने के अभ्यस्त हो गये हैं। पड़े सोया करेंगे चाहे भाई आवें चाहे पिता। रघुकुल परिवार की मर्यादा देखिये —

उठे लखनु निसि विगत सुनि अरुन सिखा धुनि कान।
गुरुतें पहिलेहि जगतपति जागे राम सुजान॥

सबसे पहले लक्ष्मण उठे तत्पश्चात् राम फिर गुरु विश्वामित्र। लक्ष्मण ने अपना सर्वस्व भाई की सेवा के लिए न्यौछावर कर दिया था। उनके जीवन की एक मात्र साधना थी— राम की सेवा। शेषावतार लक्ष्मण का अलग व्यक्तित्व रह ही नहीं गया था वे पूर्ण रूप से राम में समाये थे। राम के सम्मुख बनवास का अवसर उपस्थित हुआ सूचना मिलते ही लक्ष्मण विकल हो उठते हैं। राम के साथ चलने के अतिरिक्त उनके पास दूसरा विकल्प ही नहीं है। अपने साथ न ले चलने की शंका से लक्ष्मण जल से निकलती मछली के समान व्याकुल हैं —

समाचार जब लछिमन पाए।
व्याकुल बिलख बदन उठि धाए॥
कंप पुलक तन नयन सनीरा।
गहे चरन अति प्रेम अधीरा॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े।
मीनु दीव जनु जल ते काढ़े॥
सोचु हृदय विधि का होनिहारा।
सबु सुख सुकृतु सिरान हमारा॥
मोह कहुँ काह कहब रघुनाथा।
रखिहहिं भवन कि लेहहि साथा॥

राम अपने भाई को किस अवस्था में चरणों में गिरे हुए देखते हैं ? त्याग की कितनी उच्च सीमा है —

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राम बिलोकि बंधु कर जोरे ।
देह गेह सब सन तृनु तोरे ॥

राज सुख तथा परिवार के अन्य लोगों से ही लक्ष्मण ने नाता नहीं तोड़ा था वरन् शरीर से भी सम्बन्ध तोड़ रहे थे। इससे यही भाव प्रकट होता है कि यदि राम उन्हें चलने की अनुमति न देते तो लक्ष्मण जीवित न रह सकते ।

राम सामयिक परिस्थिति की ओर संकेत करते हुए माता-पिता के प्रति कर्तव्य का उचित निर्वाह करने के लिए लक्ष्मण को घर पर रहने का परामर्श देते हैं। इस अवसर पर लक्ष्मण के वचन कितने अनमोल हैं—

गुरु पितु-मातु न जानउ काहू ।
कहउ सुभाय नाथ पतियाहू ॥
जह लगि जगत सनेह सगाई ।
प्रीति प्रतीत निगम निज गाई ॥
मोरे सबइ एक तुम स्वामी ।
करुनानिधि उर अन्तर यामी ॥

आगे की चौपाई कितनी मार्मिक है—

धरम नीति उपदेसिअ ताही ।
कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ॥
मन क्रम बचन चरन रत होई ।
कृपा सिंधु परिहरिअ कि सोई ॥

लक्ष्मण की एक मात्र साधना थी, मन क्रम तथा वचन से राम की सेवा में रत होना। इसलिए वन चलने के हेतु राम की स्वीकृति पाते ही उनकी प्रसन्नता सीमा पार कर गई—

माँगहु विदा मातु सन जाई ।
आवहु बेगि चलहु बन भाई ॥
मुदित भए सुनि रघुबर बानी ।
भयउ लाभ बड़ गई बड़ि हानी ॥
हरषित हृदय मातु पहिं आए ।
मनहुं अंध फिर लोचन पाए ॥

राम की सेवा से विमुख होकर लक्ष्मण अन्धे के समान थे, साथ चलने की स्वीकृति से उन्हें लोचन-दान मिलने के समान आन्तरिक प्रसन्नता मिली ।

चौदह वर्षों तक सम और विषम दोनों परिस्थितियों में लक्ष्मण ने अपनी सेवा साधना को जिस प्रकार निभाया वह सर्वविदित है । जनकपुर में भी परशुराम द्वारा धनुष तोड़ने वाले राम पर डाँट पड़ते ही लक्ष्मण तड़प उठे थे ।

सुनहु राम जेहि सिव धनु तोरा ।
सहस बाहु सम सो रिपु मोरा ॥
सो बिलगाय बिहाय समाजा ।
न तु मारे जैहहिं सब राजा ॥

लक्ष्मण अपने कान से राम की निन्दा सुन ही नहीं सकते थे । परशुराम क्या कोई भी क्यों न हों और कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, राम की निन्दा कर वे लक्ष्मण के कोप से बच नहीं सकते । ऊपर की चौपाई का उत्तर लक्ष्मण ने दिया —

सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने ।
बोले परसु धरहि अपमाने ॥

चित्रकूट में कोल भीलों द्वारा चतुरंगिणी सेना सहित भरत के आगमन के समाचार से भरत की नीयत पर शंका होते ही लक्ष्मण आपे से बाहर हो गये —

एक आय अस कहा बहोरी ।
सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहि भा अति सोचू ।
इत पितु बच उत बंधु संकोचू ॥

राम को भरत के चरित्र पर आक्रमणकारी होने का सन्देह नहीं हो रहा था लेकिन जो समाचार मिल रहे थे उनसे भरत की नीयत खराब होने का पूरा प्रमाण मिलता था । भरत जैसे प्रिय भाई पर शस्त्र उठाने की कल्पना मात्र से राम बड़े सोच में पड़ गये । लेकिन लक्ष्मण ने भरत-शत्रुघ्न के बध का विचार करने में संकोच नहीं किया —

उठि कर जोरि रजायसु मांगा ।
मनहुँ वीर रस सोवत जागा ॥
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा ।
साजि सरासनु सायक हाथा ॥

वनवास में बड़े भाई की सेवा का अनूठा उदाहरण लक्ष्मण जी ने प्रस्तुत किया । दीर्घ अवधि की सेवा में कहीं रंचमात्र भी शिथिलता नहीं दीख पड़ती । राम के नेत्र क्रोध से लाल भर होते थे कि लक्ष्मण के धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ जाती थी ।

प्रवर्षण गिरि पर सुग्रीव की उपेक्षा से राम कुपित हो उठते हैं —

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुग्रीवहु सुधि मोरु बिसारी ।
पावा राज कोष पुर नारी ॥
जेहि सायक मारा मैं बाली ।
तेहि सर हतहु मूढ़ कह काली ॥

राम की इस अवस्था को देखते ही–

लक्ष्मण क्रोधवंतु प्रभु जाना ।
धनुष उठाय गहेउ कर बाना ॥

लक्ष्मण की कड़ी परीक्षा दो स्थलों पर हुई – प्रथम मारीच बध के अवसर पर जब सीता माता ने उन्हें कटु वचन कहे । जिसकी सेवा में सर्वस्व समर्पण किया जाये, वही जब नीयत पर संदेह करे तो धैर्य धारण करना कठिन हो उठता है, लेकिन अमित धैर्यशाली लक्ष्मण सीता के बाण समान वचनों को खून की घूँट के समान पी गये ।

दूसरा प्रसंग राम की आज्ञाकारिता का उत्तर काण्ड में आता है जब राम उन्हें सीता को वन में छोड़ आने का आदेश देते हैं । इस कार्य को करने में भरत-शत्रुघ्न दोनों मुकर गये लेकिन लक्ष्मण तो राम के वचनों के पूरे अनुगामी थे । राम के आदेश को उन्होंने पूरा किया ।

वनवास से लौटने पर लक्ष्मण की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, वे जीवन भर राम की सेवा में एकरसता से जुटे रहे ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दाम्पत्य जीवन का आदर्श

दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ विवाह संस्कार से होता है ।

विवाहो गद्यते लोके शक्ति शक्तिमतोरिव ।
एकीकरणमुभयोरात्मनो रिति च श्रुतिः ॥

"दो आत्माओं का एकीकरण विवाह है, यह श्रुति का वचन है । इन दो पति-पत्नी की आत्माओं की एकता, शक्ति और शक्तिमान् के एकीकरण की भाँति है ।"

पति-पत्नी के दो शरीर, दो मन और बुद्धि, दो हृदय, दो प्राण व दो आत्माओं के समन्वय से सफल दाम्पत्य जीवन का श्रीगणेश होता है । एक रथ के दो समान पहियों की तरह जब पति-पत्नी समान रूप से एक दूसरे को सहयोग प्रदान करते हुए जीवन रूपी गाड़ी को अग्रसरित करने में तत्पर होते हैं तभी गार्हस्थ्य जीवन सुखी बनता है तथा लौकिक और पारलौकिक उद्देश्यों की पूर्ति सम्भव है -

आत्म संयम सन्मार्गे नारी पुरुषयोः शुभा ।
एषा सफलतैवास्य सार्थकता च पूर्णता ॥
दूषित वासना जन्य प्रेम्णा ह्युप भोगं सदा ।
विजेतुं तत्परौ स्याता माश्रित्यमात्मगुणान्वै ॥
सम्बलं साधनं शक्तिः साहाय्यं दृढ़ साहसः ।
शुभोत्साहं षडेतेज तयोः सन्ति सहायकाः ॥

आत्म-संयम के पुनीत पथ में नारी-पुरुष की यही शुभ सफलता सार्थकता एवं पूर्णता है कि प्राणिक वासना-प्रेम और भोग के ऊपर विजय पाने के लिये दोनों संबल, साधन, शक्ति सहायता दृढ़ साहस, शुभ उत्साह इन छः सहायक साधनों के साथ संलग्न हों और -

समुत्कर्ष विकासार्थ मन्योन्यस्य च द्वावपि ।
कल्याण नन्दयोः स्यातां स्पर्धाशीलौ प्रसारणो ॥

'दोनों एक दूसरे की सेवा करते हुए विकास उत्कर्ष हित कल्याण और आनन्द के विस्तार के लिय स्पर्धाशील हों ।'

रामायण हिन्दू जाति का आदर्श सामाजिक महाकाव्य है जिसमें सर्वांगीण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का आदर्श मिलता है । पुरुष तथा स्त्री वासना और कामुकता की सन्तुष्टिमात्र के छुद्र उद्देश्य के लिये प्रणय बन्धन में नहीं बंधते । जिस प्रकार धनात्मक और ऋणात्मक विद्युत धारा के मिलने से प्रकाश होना संभव है उसी प्रकार पति-पत्नी के पूर्ण एकीकरण से सुखी दाम्पत्य जीवन का श्रीगणेश होता है ।

रामायणकालीन समाज में अधिकांश लोग सुखी और सन्तुष्ट जीवन व्यतीत करते थे । इसके अनेक कारणों में से सबसे बड़ा कारण यह भी था कि उनका दाम्पत्य जीवन सुखी रहता था, पति-पत्नी एक-दूसरे पर विश्वास और श्रद्धा रखते थे ।

एक नारि व्रत रत सब झारी ।
ते मन बच क्रम पति हितकारी ॥

आज सारा समाज सुख प्राप्ति की चेष्टा में लगा है लेकिन सुख हमसे दूर होता चला जा रहा है । इसके कारणों पर आप तनिक विचार कीजिये, तो पता चलेगा कि हम सुख प्राप्ति के उपायों पर आचरण नहीं करते । अनमेल विवाह, बाल विवाह, तथा वासना और लोभ के वशीभूत होकर अधिक दहेज लेकर व लड़की के गुणों की परख न करके केवल श्वेत चर्म को प्रधानता देकर हममें से अधिकांश अपने दाम्पत्य जीवन को प्रारम्भ करते हैं । फलतः पति-पत्नी को मिल कर विकास के पथ पर अग्रसरित होने की कल्पना धूमिल हो जाती है ! बधू के पति के घर आने के दिन से ही परिवार में कलह, सास-बहू का झगड़ा, बटवारे की समस्या, जेवरों की मांग बढ़ जाती है । हिन्दू विवाह पद्धति के अनुसार पति-पत्नी का पाणिग्रहण संस्कार केवल इस भौतिक शरीर तक ही के लिये न होकर जन्मजन्मान्तर के लिये होता था । दोनों की चाह होती थी, कि जिस-जिस योनि में वे जन्म धारण करें पति-पत्नी के रूप में साथ रहें ।

जगतवन्द्य शंकर जी की पत्नी सती प्राण त्याग कर हिमगिर की पुत्री बनीं लेकिन पति रूप में भगवान शिव के वरण के लिये कई हजार वर्ष तक तप किया ।

तपस्विनी पार्वती की प्रेम-परीक्षा लेने सप्त ऋषिगण गये -

बोले मुनि सुनु सैल कुमारी ।
करहु कवन कारन तप भारी ॥

पार्वतीजी ने उत्तर दिया —

कहत बचन मनु अति सकुचाई ।
हंसिहहु सुनि हमारि जड़ताई ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनु हठ परा न सुनइ सिखावा ।
चहत बारि पर भीति उठावा ॥
देखहु मुनि अविवेक हमारा ।
चाहिअ सदा सिवहि भरतारा ॥

इस उत्तर पर सप्त ऋषियों ने शंकर की निन्दा करके विष्णु भगवान के साथ विवाह करा देने का लोभ माँ पार्वती को दिखाया । परन्तु पार्वती जी का उत्तर कितना उच्च था -

महादेव अवगुन भवन विष्नु सकल गुन धाम ।
जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम ॥
जनम कोटि लग रगर हमारी ।
बरउँ संभु नत रहउं कुआरी ॥

दाम्पत्य जीवन के इसी पुनीत आदर्श के कारण भारतीयों का गार्हस्थ जीवन सुखी था । अब उसी देश में अदालतों से विवाह की परम्परा प्रचलित हो रही है । साधारण मन-मुटाव से पति-पत्नी एक-दूसरे को परित्याग करने की सोचने लगते हैं । यदि सामाजिक मर्यादा अथवा लोकलाज के कारण बन्धन में बँधे भी रहते हैं तो हृदय से नहीं वरन् जबरदस्ती ।

यह वास्तविकता है कि दाम्पत्य जीवन के सुखी न होने पर दोनों के लिये त्रिभुवन की सम्पत्ति फीकी लगती है । धन-दौलत, पद, बाह्य प्रतिष्ठा तभी सच्चा सुख तथा शान्ति प्रदान करते हैं, जब दाम्पत्य जीवन सुखी हो । बाहर से कार्य करके श्रमशील पति घर में प्रवेश करते ही यदि मधुर मुस्कान वाली पत्नी से समादरित न हो तो भला उस के जेब के भरे रुपये किस काम के ? इसी प्रकार पत्नी में अपने पति पर विश्वास न हो तो आभूषण और वस्त्र उस के लिये बोझ के अतिरिक्त क्या है ?

आये दिन आपसी कलह के कारण अनेक उच्च पदों वाले पुरुषों और स्त्रियों को आत्म-हत्या करते देखते हैं ।

भारत के प्राचीन आदर्शों की पुन:स्थापना द्वारा ही हम राम-कृष्ण की सन्तानें अपने लौकिक और पारलौकिक जीवन को सुखी बना सकेंगे ।

'रामचरितमानस' में हमें पति-पत्नी दोनों के आदर्श-जीवन का विशद वर्णन मिलता है । व्यवहार की कसौटी पर पूर्ण रूप से खरे उतर कर राम तथा सीता ने एक-दूसरे का अर्धांग होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है । हम सब के लिये वह अनुकरणीय बनाना चाहिए ।

पति को भी कर्तव्य निर्वाह अभीष्ट

ताली दोनों हाथों से बजती है । यदि एक हाथ से चेष्टा करके बजाई जाए तो मधुर ध्वनि न निकलेगी । इसी प्रकार एक पक्षीय कर्तव्य निर्वाह अधिक स्थायी और सुखदायक नहीं हो सकता । अधिकार और कर्तव्य दोनों एक ही सिक्के के दो पक्ष हैं । कर्तव्यों का समुचित रूप से पालन किये बिना अधिकारों का भोग करना असंभव है ।

हमारे देश में स्त्रियों के लिये पतिव्रता बनने का उपदेश बहुत दिया जाता है । शास्त्रों में इस की महिमा भी विस्तार से गाई गई है । पत्नी के लिये पति ही सब से बड़ा देव है । उसे पतिव्रता बनना भी चाहिए लेकिन यह भी आवश्यक है कि पति भी पत्नीव्रत बने । स्त्रियों को उनके स्वाभाविक अधिकारों से वंचित करना न्यायोचित नहीं । यदि हमारी इच्छा है कि पत्नी हमारी परम भक्त बने तो हमें अपनी पत्नी के प्रति एकनिष्ठ और चरित्रवान् बनना पड़ेगा । स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि 'भारत का पतन उस दिन से प्रारम्भ होता है जब से पुरुषों ने स्त्रियों को उनके स्वाभाविक समानता के अधिकार से वंचित करके अपने को स्वामी बनाने की चाह प्रारम्भ की ।

हमें यह भी समझना चाहिए कि पिता के घर को त्याग कर पति के घर में आकर उसे अपना ही समझती हुई पत्नी जो यह बहुत बड़ा त्याग करती है, इसको स्मरण कर पति वर्ग को उसके सुख, स्वास्थ्य, रक्षा, कुशलता एवं प्रसन्नता के लिए आजीवन यत्नशील रहना चाहिए ।

नारी जाति स्वभाव से ही नम्र, विनीत, श्रमशील, सेवा-भाव युक्त, उदार, उत्सर्गमयी होती है । अत: उनके विकास के लिये सदैव अवसर प्रदान करना अभीष्ट है । जब तक पति जीवन पर्यन्त पत्नी को सुखप्रद व्यवस्था और सुख प्रदान नहीं करता तब तक वह अपनी पत्नी के ऋषि से मुक्त नहीं होता है । पत्नी को उसके द्वारा अपराधित होने पर उसे प्रताड़ित एवं उत्पीड़ित करना निन्दनीय, घोर दानवता है । उदारता, प्रेम और स्नेहपूर्वक अवगुणों को धीरे धीरे अभ्यास द्वारा त्यागने के लिये प्रेरित करना चाहिए । जो व्यक्ति अपनी पत्नी के आत्मोत्सर्ग से ऋणमुक्त होने का प्रयत्न नहीं करता वह कृतघ्न नरपशु है ।

विवाह संस्कार में प्रथम वर को प्रतिज्ञाएँ करनी पड़ती हैं, तत्पश्चात् वधू को इसलिये प्रथम वर को ही कर्तव्य निर्वाह करना अभीष्ट है । अधिक जिम्मेदारी वर के ऊपर है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विवाह के अवसर पर अग्नि तथा देवताओं को साक्षी देकर वर बधू से प्रतिज्ञा करता है कि -

यथा पवित्र चित्तेन पातिबत्यं त्वया धृतम् ।
तथैव पालयिष्यामि पत्नीवत महं ध्रुवम् ॥

"जिस प्रकार तुम्हारे द्वारा पवित्र चित्त से पतिवत धर्म धारण किया गया है उसी प्रकार मैं भी निश्चयपूर्वक पत्नीवत का पालन करूंगा ।"

मिथिला पुरी में धनुष भंग से भगवान राम तथा सीता माता प्रणय बंधन में बँधे थे ।

गावहिं छबि अवलोकि सहेली ।
सियँ जयमाल राम उर मेली ॥
सोहति सीय राम की जोरी ।
छबि सिंगार मनहुँ एक ठोरी ॥

धनुष भंग के बाद विदेहराज जनक की प्रतिज्ञा के अनुसार सखियों द्वारा सभामंडप में ले जाई गई सीताजी ने राम के गले में जयमाला डाल दी । राम और सीता की समान जोड़ी को गोस्वामी जी ने छवि और शृंगार के मिलन से उपमा दी है ।

दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करने के दिन से दोनों में एक दूसरे के प्रति आदर सम्मान तथा अगाध प्रेम रहा । महाराजा दशरथ जी द्वारा युवराज पद दिये जाने के निश्चय तक सामान्य आदर्श पति-पत्नि के रूप में राम सीता के सुखी दिन बीतते रहे । कैकेयी माता के वर मांगने के साथ राम का वन गमन का निश्चय होता है । समाचार सुनते ही अपने समस्त सुख वैभव को त्याग कर जानकी जी भी पति के साथ वन के कष्टों को सहन करने के लिये साथ चलने को तैयार हो जाती हैं ।

पत्नी की इच्छा का समादर करते हुए राम ने उन्हें चलने की अनुमति प्रदान की-

कहेउ कृपाल भानुकुल नाथा ।
परिहरि सोचु चलहु वन साथा ॥
नहिं विषाद कर अवसरू आजू ।
बेगि करहु वन गबन समाजू ॥
कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई ।
लगे मातु पद आसिष पाई ॥

वन में सीता का रावण द्वारा हरण होता है । धीर धुरन्धर, अमित तेजस्वी और विपत्तियों में कभी धैर्य का परित्याग न करने वाले भगवान राम विरही और कामी पुरुष के समान पत्नी के लिये विलाप करते हैं । उनकी दशा पागलों जैसी हो जाती है । मारीच बध कर राम भाई सहित आश्रम को लौटते हैं–

अनुज समेत गये प्रभु तहँवा ।
गोदावरि तट आश्रम जहँवा ॥
आश्रम देखि जानकी हीना ।
भए बिकल जस प्राकृत दीना ॥
हा गुन खानि जानकी सीता ।
रूप सील बत नेम पुनीता ॥
लछिमन समुझाये बहु भाँती ।
पूछत चले लता तरु पाती ॥
हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी ।
तुम्ह देखी सीता मृग नैनी ॥
खंजन सुक कपोल मृग मीना ।
मधुप निकर कोकिला प्रवीना ॥
कुन्द कली दाड़िम दामनी ।
कमल सरद ससि अहिभामिनी ॥
बरुन पास मनोज धनु हंसा ।
गज केहरि निज सुनत प्रशंसा ॥
श्री फल कनक कदलि हरषाहीं ।
नेक न संक सकुच मन माहीं ॥
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू ।
हरषे सकल पाइ जनु राजू ॥
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं ।
प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं ॥
एहि विधि खोजत बिलपत स्वामी ।
मनहुँ महा बिरही अति कामी ॥

मर्यादा पुरुषोत्तम और धीर धुरन्धर का विशेषण धारण करने वाले राम पत्नी वियोग में महा बिरही और अति कामी प्रतीत होने लगते हैं । उनकी इस अवस्था को देखकर सती शिरोमणि माता सती को सन्देह हो गया था -

ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद ।
सो कि देह धरि होई नर जाहि न जानत वेद ॥

विष्णु जो सुरहित नर तन धारी ।
सोउ सर्वग्य यथा त्रिपुरारी ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खोजइ सो कि आय इव नारी ।
ज्ञान धाम श्रीपति असुरारी ॥
संभुगिरा पुनि मृषा न होई ।
सिव सर्वग्य जान सब कोई ॥
अस संसय मन भयउ अचारा ।
होई न हृदय प्रबोध प्रचारा ॥

भगवान की बाह्य स्थिति को देखकर सन्देह होना स्वाभाविक है लेकिन अग्नि को साक्षी देकर जिसके लिये पत्नीव्रत बनने की प्रतिज्ञा की गई थी उसका निर्वाह न करना धर्मोचित और मर्यादित नहीं माना जा सकता ।

सुग्रीव की मित्रता से असंख्य बानरी सेना माँ सीता की खोज में दसों-दिशाओं को छान डालती है । पवन सुत हनुमान सत योजन सागर लाँघ कर सुबेल पर्वत पर स्थित रावण -पालित लंका में प्रवेश करते हैं । रात्रि भर मन्दिर-मन्दिर खोजते फिर कर विभीषण के सहयोग से अशोक वाटिका में पहुँचकर राम वियोग में क्षीणकाय परम विरहणी सीता का दर्शन करते हैं । विस्तार से राम कथा सुनाकर वे अपने को राम सेवक होने का विश्वास माताजी को दिला देते हैं । विरह समुद्र में डूबती सीता जी को अवलम्बन मिला, लेकिन तुरन्त सन्देह हो उठता है कि रावण की आश्रित जान कर कहीं भगवान ने उपेक्षा भाव तो नहीं धारण कर लिया । सीता जी हनुमान जी से पूछती हैं–

कोमल चित कृपाल रघुराई ।
कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥

भक्त शिरोमणि हनुमान जी भगवान की एक निष्ठा का प्रमाण कितने आदर्श शब्दों में देते हैं–

मातु कुसल प्रभु अनुज समेता ।
तब दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥
जनि जननी मानहु जियँ ऊना ।
तुम्ह ते प्रेम राम के दूना ॥
रघुपति कर संदेसु अब, सुनु जननी धरि धीर ।
अस कहि कपि गद्गद् भयउ, भरे बिलोचन नीर ॥
कहेउ राम वियोग तब सीता ।
मोकहुँ सकल भए विपरीता ॥
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू ।
कालनिसा सम निसि ससि-भानू ॥
कुबलय विपिन कुन्ठ वन सरिसा ।
बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥
जे हित रहे करत तेइ पीरा ।
उरग स्वास सम त्रिविध समीरा ॥
कहेहू ते कछु दुख घटि होई ।
काहि कहौं यह जान न कोई ॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा ।
जानत प्रिया एकु मन मोरा ॥
सो मनु सदा रहत तोहिं पाहीं ।
जानु प्रीति रस एतनेहि माहीं ॥

पति को पत्नी में दूना प्रेम करना अभीष्ट है । वियोगिनी सीता को राम ने स्पष्ट शब्दों में सन्देश भेजा कि उनमें सीता की तुलना में दुगुनी तड़प रही है तो उन्हें यह न समझना चाहिए कि स्वतन्त्र अवस्था में रहने के कारण राम सुखी होंगे । वे सारी परिस्थितियाँ, वातावरण और साधन जो सीता की उपस्थिति में प्रसन्नता प्रदान करने वाले होते थे, अब कष्ट के निमित्त बन गये हैं ।

पति-पत्नी के प्रेम रहस्य को सामान्य चक्षुओं से नहीं परखा जा सकता है । यह हृदय से सम्बन्धित है । शब्द उसका प्रतिपादन नहीं कर सकते । प्रवर्षण गिरि पर पर्ण कुटी में निवास करने वाले राम का मन चौबीसों घण्टे अशोक वाटिका निवासिनी सीता के पास रहता था । एक पत्नीव्रत होने का इस से बड़ा उदाहरण क्या संसार के इतिहास में कहीं अन्यत्र मिल सकना संभव है ?

वह समय बहु विवाह प्रथा का था, विशेषतया राज-परिवारों में लेकिन राम का अवतार तो धर्म और मर्यादा की स्थापना के लिये हुआ था । उन्होंने उसी पथ का अनुसरण किया, जो जन साधारण के लिये अनुकरणीय बने ।

पंचवटी में अति रूपवती रावण भगिनि सूपर्णखा राम के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव लेकर आई थी -

सूर्पनखा रावन कै बहिनी ।
दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी ॥
रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई ।
बोली बचन बहुत मुसकाई ॥
तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी ।
यह संयोग विधि रचा बिचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष जग माँही ।
देखेउ खोजि लोक तिहुँ नाहीं ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ताते अब लगि रहिउं कुमारी ।
मनु माना कछु तुम्हहि निहारी ॥

लेकिन सीता की ओर संकेत मात्र करके राम ने सूपर्णखा को बतला दिया कि उनका विवाह हो चुका है,पत्नी बनाना कोई बाजारू सौदा नहीं है जो जब चाहे खरीदा जाय -

सीतहिं चितई कही प्रभु बाता ।
अहइ कुआर मोर लघु भ्राता ॥

वनवास की अवधि समाप्त कर भगवान सीता जी के सहित भारत के चक्रवर्ती सम्राट बनते हैं । सीता के चरित्र के प्रति प्रजा में सामान्य चर्चा को स्वीकार कर आदर्श प्रजावत्सल राजा के रूप में उन्होंने अपनी परम प्रेयसी अर्धांगिनी को राज्य निष्काषित कर दिया । राजा के रूप में वे प्रजा की प्रत्येक माँग को प्रधानता प्रदान करने वाले तो बने लेकिन पति के रूप में पत्नी के प्रति आजीवन प्रेम के संकल्प से विमुख नहीं हुए । सीता को निष्काषित कर उनके कोमल हृदय ने कभी सन्तोष नहीं धारण किया । राज्य कर्तव्य पालन में वे कठोर और दत्तचित्त तो बने रहे लेकिन उनका व्यक्तिगत जीवन पुन: सुखी न बन सका । अंधेरी रात में, एकान्त में वे सीता के लिये जल की मीन के समान तड़प उठते थे ।

उनके सामने बहुपत्नी प्रथा का उदाहरण था, स्वयं पिता ने ही तीन पत्नीयाँ की थी, लेकिन दूसरा विवाह कर अपनी गृहस्थी को सुखमय बनाने की बात उन्होंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोची । यदि वे ऐसा सोच लेते तो कोई अनुचित नहीं कहता । कठोर से कठोर अवसर आये । राजसूय यज्ञ जैसा विशाल आयोजन हुआ । भारत के समस्त छत्रधारी राजाओं ने अयोध्या में उपस्थित होकर राम को सम्राट स्वीकार किया । राजसूय यज्ञ की दीक्षा भगवान ने लेली । राज पुरोहित महाराज वशिष्ठ ने धार्मिक शंका उपस्थित की कि पत्नी के बिना यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकता लेकिन राम ने एक पत्नीव्रती बनने के संकल्प से डिगना स्वीकार न किया । विवाह के अतिरिक्त कोई दूसरा समाधान खोजा गया और महारानी सीता की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर उसे भगवान की वामांगी बनाया गया । क्या संसार के इतिहास में इससे बड़ा आदर्श कहीं मिल सकता है ? निष्काषित होकर भी माँ सीता पत्न्युचित अधिकार से वंचित न हुई । राम के वामभाग में सीता के अतिरिक्त किसी दूसरे को बैठने का अवसर कभी नहीं मिला ।

राम में अपूर्व सुन्दरता थी । युवा अवस्था में अयोध्या और जनकपुर की बीथियों में हजारों सुन्दरियाँ उनकी मुखछवि का दर्शन कर अघाती नहीं थीं लेकिन अपने प्रौढ़ावस्था में संयम और वैभव के कारण राम के मनमोहन रूप में कोई अन्तर नहीं आया था । उत्तर काण्ड में काकभुसुन्ड जी ने गरुड़ महाराज से राम के रूप वैभव तथा शक्ति का निम्न चौपाइयों में वर्णन किया है -

रामु काम सत कोटि सुगम तन ।
दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन ॥
सक्र कोटि सत सरिस बिलासा ।
नभ सत कोटि अमित अवकासा ॥
मरुत कोटि सत बिपुल बल, रबि सत कोटि प्रकाश ।
ससि सत कोटि सुशीतल, समन सकल भव जास ॥

महाराज होने के कारण अवध के राजमहलों में अनेकों सुरदुर्लभ सुन्दरियाँ राम की सेवा में उपस्थित रहा करती थीं । सीता के परित्याग के बाद बड़े-बड़े नरेशों के मन में राम को अपना जमाता बनाने की बात उठी होगी, उनकी कृपा दृष्टि पाने के लिए भला कौन लालायित न रहता होगा । अधिकांश सम्राट तो कामुकता के लिए विख्यात हुए हैं, ऐसी अवस्था में राम द्वारा संयम और एक पत्नीव्रत का धारण करना कितनी बड़ी बात मानी जा सकती है ।

उसी का प्रताप था कि राम के शेष तीनों भाइयों ने उनके आदर्श का अनुकरण किया । लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न किसी ने भी एक पत्नी के अतिरिक्त दूसरा विवाह करने की नहीं सोची ।

भक्त शिरोमणि और सेवा के आदर्शों का प्रतिपादन करने वाले सुमित्रानन्दन लक्ष्मण चौदह वर्षों तक उर्मिला से अलग रह कर राम की सेवा में वन में रहे । वे रूप में अद्वितीय थे । बाल्मीकीय रामायण में वर्णन है कि भयानक वन में चलते समय अनेक सूपर्णखाएँ (बड़े कान वाली) सुन्दरियाँ लक्ष्मण के रूप पर मोहित होकर कामुक भाव से उनसे लिपट जाती थीं, रावण भगिनी सूपर्णखा के विवाह प्रस्ताव का वर्णन तो हम मानस में पाते ही है लेकिन लक्ष्मण ने कभी पर-स्त्री पर कुदृष्टि डालने की चेष्टा ही नहीं की । अपनी भाभी महारानी सीता की सेवा में वे नित्य तत्पर रहते हुए भी उनके पैरों के अतिरिक्त मुख चन्द्र की ओर देखने तक की चेष्टा नहीं की । सुग्रीव ने जब राम को विलाप करती हुई सीता द्वारा गगन पथ से गिराए गये पट-भूषणों को दिखाया तो शिनाख्त के लिए राम ने उन्हें लक्ष्मण को दिखाया था । लक्ष्मण का उत्तर क्या हम सब के लिए आदर्श नहीं बनेगा कि मैंने सदैव चरण स्पर्श समय माता के पैरों को ही देखा है अत: पैर के गहनों को ही पहचान सकता हूँ शेष अंगों के आभूषणों को नहीं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्या हम अपनी भाभियों के प्रति यह व्यवहार रख सकते हैं ? किसी को भावज बनाकर हँसी दिल्लगी व छेड़खानी करना आज तो सामान्य बात है ।

लक्ष्मण सहित तीनों भाइयों का चरित्र हमारे लिए अनुकरणीय बनना चाहिए ।

राज-परिवार के आदर्शानुकरण का परिणाम यह हुआ कि अवध का प्रत्येक विवाहित पुरुष एक नारीव्रती था ।

भारत में रामराज्य की स्थापना के स्वप्न को साकार करने वालों को पहले राम के दाम्पत्य-जीवन के आदर्शों की पुनर्स्थापना करनी पड़ेगी । इस प्रकार हम देखते हैं कि राम ने विवाह के समय पत्नी से की गई आजीवन पत्नीव्रत रहने की प्रतिज्ञा का पूर्णरूप से पालन किया ।

गृहस्यार्थ व्यवस्थायां मन्त्रायित्वा त्वयासह ।
संचालनं करिष्यामि गृहस्थोचित् जीवनम् ॥

घर की अर्थव्यवस्था में तुम्हारे साथ मन्त्रणा कर गृहस्थोचित जीवन को संचालित करूँगा -

समृद्धि सुख शान्तीनां रक्षणाय तथा तव ।
व्यवस्था संकरिष्यामि स्वशक्तवैभवादिभिः ॥

तुम्हारी सुख, शान्ति, समृद्धि तथा रक्षा के लिए अपने शक्ति और वैभव से सम्यक रूप से व्यवस्था करूँगा ।

विवाह संस्कार के अवसर पर की गई उपरोक्त प्रतिज्ञाओं के अनुसार पति को गृह व्यवस्था में पत्नी के साथ परामर्श करके उसका सहयोग लेना चाहिए तथा उसके सुख, शान्ति, समृद्धि और रक्षा के लिए अपनी पूरी शक्ति और वैभव से व्यवस्था करनी चाहिए ।

वाल्मीकि रामायण में वर्णन आता है कि युवराज पद दिये जाने की तैयारी के अवसर पर जब प्रातःकाल कैकेयी के भवन से सुमन्त राम को उनके महल में बुलाने आते हैं तो वे सीता के साथ बैठे हुए थे उन्होंने प्रस्थान करने से पूर्व सीताजी की सम्मति ली-

कौसल्या सुप्रजा राम पिता त्वां द्रष्टुमिच्छति ।
महिष्यापिहि कैकेय्य गम्यतां तत्र माचिरम् ॥
सबै मुक्तस्तु संहृष्टो नरसिंहो महाद्युतिः ।
ततः सम्मानयामास सीतामिद मुवाच ह ॥

श्रीराम आपको पाकर महारानी कौशल्या सर्वश्रेष्ठ सन्तान वाली हो गई हैं । इस समय रानी कैकेयी के साथ बैठे हुए आपके पिताजी आपको देखना चाहते हैं अतः विलम्ब न करके वहाँ जाइए । सुमन्त के ऐसा कहने पर महातेजस्वी नरश्रेष्ठ श्री राम ने सीता का सम्मान करते हुए प्रसन्नतापूर्वक कहा--

वनवास की अवधि समाप्त कर अयोध्या वापस आने पर जब राम का राजतिलक हुआ तो राजमहल में सीता को सजाया गया--

सासुन्ह सादर जानकिहि मज्जन तुरत कराई ।
दिव्य वसन वर भूषन अंग-अंग सजे बनाइ ॥
राम बाम दिसि सोभित रमारूप गुन खानि ।
देखि मातु सब हरषीं जनम सुफल निज जानि ॥

अर्द्धसिंहासन पर जानकी का अधिकार था । राजकाज में उनके परामर्श से ही भगवान बड़े-बड़े महत्वपूर्ण निर्णय लेते थे ।

वनवास काल में सीता को सुख प्रदान करने के लिए राम स्वर्ण मृग बने हुए मारीच का वध कर उसका चर्म लेने गये थे --

तेहि बन निकट दसानन गयऊ ।
तब मारीच कपट मृग भयऊ ॥
अति बिचित्र कछु बरनि न जाई ।
कनक देह मनि रचित बनाई ॥
सीता परम रुचिर मृग भेखा ।
अंग अंग सुमनोहर देखा ॥
सुनहु देव रघुबीर कृपाला ।
एहि मृग कर अति सुन्दर छाला ॥
सत्य संध प्रभु बधकर एही ।
आनहु चर्म कहत वैदेही ॥
तब रघुपति जानत सब कारन ।
उठे हरष सुर काज सँवारन ॥

स्वर्ण मृग को देखकर समझते हुए भी राम पत्नी को सुख प्रदान करने के लिए मृग-वध हेतु प्रसन्नतापूर्वक तत्पर हो गये ।

राजमहलों के सुख वैभवों को त्याग कर सीता वन में पर्ण कुटी की निवासिनी बनी थी । रामजी सीता के हृदय को शान्ति प्रदान करने के लिए अनेकानेक चरित्र किया करते थे । उसमें से एक वर्णन मानस में है ।

एक बार चुन कुसुम सुहाए ।
निज कर भूषन राम बनाए ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सीतहि पहिराए प्रभु सादर ।
बैठे फटिक सिला पर सुन्दर ॥

अपने हाथों से पुष्प चुन कर राम ने पुष्पहार बनाकर सम्मान पूर्वक सीताजी को पहनाए थे । प्रेम प्रदर्शन और शान्ति प्रदान करने हेतु अनेक उपाय वे किया करते थे ।

कुटिल दृष्टि रखकर सीता के शरीर पर चोंच मारने वाले इन्द्र पुत्र जयन्त की जो दशा राम ने की वह सर्व विदित है–

सुरपति सुत धरि वायस बेषा ।
सठ चाहत रघुपति बल देखा ॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा ।
महामंदमति पावन चाहा ॥
सीता चरन चोंच हति भागा ।
मूढ़ मंद मति पावन कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना ।
सींक धनुष सायक संधाना ॥
प्रेरत मंत्र ब्रह्मसर धाबा ।
चला भाँजि बायस भय पावा ॥
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं ।
राम विमुख राखा तेहि नाहीं ॥
भा निराश उपजी मन त्रासा ।
जथा चक्र भय रिषि दुर्वासा ॥
ब्रह्म धाम सिवपुर सब लोका ।
फिरा श्रमित व्याकुल भय सोका ॥
काहू बैठन कहा न ओही ।
राखि को सकई राम कर द्रोही ॥
नारद देखा विकल जयन्ता ।
दया लागि कोमल चित संता ॥
पठवा तुरत राम पहि ताही ।
कहेसि पुकारि प्रनतहित पाही ॥
निज कृत कर्मजनित फल पायउँ ।
अब प्रभु पाहि सरन तकि आयउँ ॥
सुनि कृपाल अति आरत वानी ।
एक नयन करि तजा भवानी ॥
कीन्ह मोहबस द्रोह जद्यपि तेहि करवध उचित ।
प्रभु छोड़उ करि छोह को कृपाल रघुवीर सम ॥

वनवास काल की अन्तिम अवधि में रावण द्वारा सीता हरण के पश्चात् ही राम की शक्ति और वैभव का पूर्ण प्रदर्शन होता है । वन चलने के अवसर पर राम ने सीता के सामने वन के अनेक दुसह कष्टों का भयानक चित्र खींचा था कि -

काननु कठिन भयंकरु भारी ।
घोर घामु हिम बारि बयारी ॥
नर अहार रजनीचर करहीं ।
कपट वेष विधि कोटिक करहीं ॥
व्याल कराल बिहग वन घोरा ।
निसिचर निकर नारि नर चोरा ॥

तो सीता जी ने अत्यन्त विश्वास के साथ राम के संग रहकर अपने को निर्भय बताया था -

को प्रभु सँग मोहि चितबनि हारा ।
सिंघ बधुहि जिमि ससक सिआरा ॥

सिंह की पत्नी पर भला खरगोश और सियार आँख उठा सकते हैं वास्तव में राम ने वामांगी सीता की रक्षा में अपनी सम्पूर्ण छिपी शक्ति को लगा दिया ।

सीता का हरण होता है । रावण उन्हें बलात् खींच ले जाता है । मार्ग में जटायु सीता की रक्षा में अपने प्राणों तक की आहुति देकर रावण को उत्पीड़ित कर मूर्छित अवस्था में पड़ा है । भगवान सीता की खोज में बिलखते हुए उसी ओर जाकर जटायु से सारी जानकारी पाते हैं । गीधराज भगवान के दर्शन कर परम धाम को प्रस्थान करता है तब राम स्वर्गवासी पिता दशरथ से सीता हरण की बात न कहने का अनुरोध जटायु से करते हैं –

सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ ।
जो मैं राम सकुल सहित कहहि दसानन आइ ॥

राम सत्यवादी थे, उनकी प्रतिज्ञाएँ केवल साहित्यिक शब्दाडम्बर मात्र से युक्त नहीं होती थीं । वे कभी मिथ्या वाणी न निकालते थे । जटायु के परम धाम प्रस्थान के अवसर पर अनुज लक्ष्मण के अतिरिक्त राम के साथ कोई नहीं था । सुग्रीव की मिताई आदि तो बाद में हुई । रावण अपने समय का महान वैज्ञानिक, परम योद्धा और कुशल राजनीतिज्ञ था ।

बरुण कुबेर सुरेस समीरा ।
रण संमुख धरि काहु न धीरा ॥

ऐसी महान शक्ति को उसके कुल सहित नाश कर डालने की प्रतिज्ञा राम ने कर डाली । वास्तव में यह उनके हृदय से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पत्नी के वियोग में निकली हुई सत्य वाणी थी । अपनी पूरी शक्ति और वैभव से सीता की रक्षा का सत्य संकल्प उन्होंने उसी समय कर डाला था ।

वास्तव में सच्ची शक्ति तो हमारे भीतर है । निष्ठावान के सामने विश्व को झुकना पड़ता है । राम का सत्य संकल्प शीघ्र ही पल्लवित हो उठा । हम आप उस काल की परिस्थितियों और मार्ग की अगम असुविधाओं के सन्दर्भ में राम के प्रयत्नों पर विचार करें । थोड़ी अवधि में दक्षिण भारत की वनवासी अर्ध सभ्य जाति बानर और भालुओं को संगठित कर उन्हें अपने कार्य के लिये तैयार कर लेना कोई सरल कार्य नहीं समझा जा सकता । वर्तमान समय में सुभाष चन्द्र बोस द्वारा अँग्रेजों के चंगुल से निकल भाग कर विदेश में आजाद हिन्द सेना को संगठित कर अँग्रेजी साम्राज्य पर घोर प्रहार करने की घटना को हम आश्चर्यवत् मानते हैं । भगवान की लीलाएँ चूँकि हमारे सामने बार-बार आती हैं इसलिए वह परिचित-सी लगती हैं और उनके पुरुषार्थ वाले अंश पर सामाजिक दृष्टि से मूल्याकंन करने की चेष्टा हम नहीं करते । लेकिन अल्पावधि में इतना बड़ा संगठन खड़ा कर देना पदुम अठारह जूथप बन्दर और उनमें रावण के नाश कर देने की पूरी प्रेरणा भर देना संसार की अद्भुत घटना ही मानी जानी चाहिए । एक ही बाण से बाली का वध, सुग्रीव को राजा तथा अंगद को युवराज बना देने की शक्ति का उपयोग कर लेना, हनुमान, जामवन्त और अंगद आदि को अलौकिक योद्धा बना देना क्या कोई हँसी खेल की बात थी ।

वर्षाऋतु में प्रवर्षण गिरि पर विरह के दिन काटने वाले राम को एक-एक दिन एक कल्प के समान बीतते थे । राज देते समय उन्होंने सुग्रीव से कह दिया था कि –

अंगद सहित करहु तुम राजू ।
संतत हृदय धरेहु मम काजू ॥

इसमें व्यवधान देखकर राम का क्रोध पुन: जाग उठा ।

वर्षा गत निर्मल रितु आई ।
सुधि न तात सीता कर पाई ॥
एक बार कैसहुँ सुधि जानौं ।
कालहि जीति निमिष महुँ आनौं ॥
कहहुँ रहउ जौ जीवति होई ।
तात जतन करि आनउँ सोई ॥
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी ।
पावा राज कोस पुर नारी ॥
जेहि सायक मारा मैं बाली ।
तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥

वर्षा की प्राकृतिक प्रतिकूलता के कारण ही भगवान् राघवेन्द्र अल्पावधि के लिए एक स्थान पर रुक गये थे अन्यथा सीता की खोज निर्बाधगति से चलती रही थी । उनके मन में तो यहाँ तक संकल्प था कि उनकी प्रेयसी वामांगी के हरण करने वाले का पता भर चल जाए तो रावण क्या यदि काल भी होगा तो निमिष मात्र में उसे मार कर वे सीता को वापस लायेंगे । यदि त्रिभुवन में कहीं भी सीता जीवित है तो उसे वापस लाने की शक्ति राम में थी । वर्षा ऋतु निर्मल होते ही उनका हृदय पूरी शक्ति से सक्रिय हो उठा । देखा कि राज कोष, पुर तथा नारी के वशीभूत होकर सुग्रीव सीता की खोज में शिथिलता दिखा रहा है तो उनका क्रोध भभक उठा । जिस वाण से बाली का वध हुआ था उसी से सुग्रीव भी दंडित होगा राम के भाव को समझ कर सुग्रीव ने तुरन्त बन्दरों को बुलाया -

ठाढ़े जहँ तहं आयसु पाई ।
कह सुग्रीव सबहि सुमुझाई ॥
राम काजु अरु मोर निहोरा ।
बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ॥
जनक सुता कहुँ खोजहु जाई ।
मास दिवस महँ आएहु भाई ॥
सुनहु नील अंगद हनुमाना ।
जामवन्त मतिधीर सुजाना ॥
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू ।
सीता-सुधि पूछेहु सब काहू ॥
मन क्रम बचन सो जतन विचारेहु ।
रामचन्द्र कर काजु सँवारहु ॥

इस तरह दसों दिशाओं की चप्पा-चप्पा भूमि सीता की खोज में वन बानरों द्वारा छान डाली गई ।

सीता की खोज करके राम को उनकी कुशलता का संदेश देने वाले हनुमान राम के परम सेवक बन गये । जामवन्त भगवान से बता रहे हैं–

प्रभु की कृपा भयउ सब काजू ।
जन्म हमार सुफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन जो करनी ।
सहसहुँ मुख न जाई सो बरनी ॥
पवन तनय के चरित सुहाए ।
जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥
सुनत कृपानिधि मन अति भाए ।
पुनि हनुमान हरषि हिय लाये ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवान कहते हैं -

सुनु कपि तोहि समान उपकारी ।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥
प्रतिउपकार करौं का तोरा ।
सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥

सीता के जीवित रहने और विपत्ति का समाचार सुनकर भगवान् के कमलवत नेत्रों में जल भर आया था । जब हनुमान ने कहा कि –

सीता कै अति बिपति बिसाला ।
बिनहि कहे भल दीनदयाला ॥
निमिष निमिष करुना निधि जाँहि कलप सम बीति ।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥
सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना ।
भरि आए जल राजिव नयना ॥

शीघ्र ही उन्होंने एक अति विशाल सैन्य संगठन रावण के ऊपर आक्रमण करने हेतु प्रस्तुत कर दिया -

चला कटुक को बरनै पारा ।
गर्जहिं बानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि पादप धारी ।
चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद भालु कपि करहीं ।
डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥

सत योजन महासमुन्द्र पर सात दिनों के भीतर सेतु बँधवा दिया–

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा ।
देखि कृपा निधि के मन भावा ॥

अमित बलशाली रावण, इन्द्रजीत, मेघनाथ, महाबली कुंभकर्ण आदि को कुल सहित नष्ट कर देने आदि की घटनाएँ पत्नी प्रेम के संदर्भ में ही घटित हुई हैं । संसार के इतिहास के पन्नों को छान डालने पर भी पवित्र भाव से पत्नी के लिए इतने बड़े त्याग तथा पुरुषार्थ के उदाहरण किसी अन्य जाति अथवा देश में नहीं मिलते ।

पत्नी को समानता का अधिकार देकर उचित सम्मान देना और उसके व्यथित हृदय को मधुर व आत्मीय व्यवहार से सान्त्वना देने के भी अनेक उदाहरण हैं ।

रावण वध के बाद अग्नि परीक्षा करके सीता माता के सहित प्रभु पुष्पक विमान पर चढ़कर प्रमुख सहायकों सहित अयोध्या लौटते हैं । आपस में कैसे आत्मीय ढंग से युद्ध की सारी घटनाएँ सीताजी को बताते जाते हैं ।

सिंहासन अति उच्च मनोहर ।
सियश्री समेत प्रभु बैठे तापर ॥
कह रघुवीर देख रण सीता ।
लक्ष्मण इहाँ हतेउ इन्द्रजीता ॥
हनुमान अंगद के मारे ।
रण महँ परे निसाचर भारे ॥
कुंभकरण रावण दोउ भाई ।
इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई ॥
इहां सेतु बाँध्यों अरु थापेउ सिव सुख धाम ।
सीता सहित कृपा निधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥
जहँ-जहँ कृपा सिंधु बन कीन्ह बास विश्राम ।
सकल देखाए जानकिहि कहे सबहि के नाम ॥
बहुरि राम जानकिहि देखाई ।
यमुना कलि मल हरनि सुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता ।
राम कहा प्रनाम करु सीता ॥
पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि ।
त्रिबिध ताप भव रोग नसावनि ॥
सीता सहित अवध कहुँ कीन्ह कृपाल प्रनाम ।
सजल नयन तन पुलकित पुनि-पुनि हरषित राम ॥

संकट में, आयु घटने पर तथा घर में सबसे बड़ी मित्र और हितैषिणी पत्नी ही होती है । इसलिए पत्नी के परामर्श से सब काम करने का विधान है ।

महाराज दशरथ जी ऐसा न करके घातक परिणाम भुगतने के सबसे बड़े उदाहरण हैं । कैकेयी से पूर्व परामर्श किए बिना राम को राजतिलक देने का विधान रचना उनकी बड़ी भारी राजनैतिक भूल मानी जा सकती है । उसका परिणाम सम्पूर्ण अवध वासियों को भुगतना पड़ा और स्वयं महाराज को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा ।

इस प्रकार रामायण से पत्नी को समानता का अधिकार देने, उसके प्रति रक्षा, सुख, शान्ति आदि के अपने कर्त्तव्यों को निर्वाह करने की प्रेरणा हमें मिलती है ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पतिव्रत और पतिपरायणता

दाम्पत्य जीवन का दूसरा पक्ष नारी है, विवाह संस्कार के मांगलिक अवसर पर बेटी का हाथ वर के हाथों में माता-पिता सोंप कर उसे पूर्ण रूप से पति की बनने के शास्त्रीय विधान को पूरा करते हैं ।

पत्नी पति से प्रतिज्ञा करती है कि वह पति की इच्छानुसार चलेगी और सदैव पतिव्रत धर्म का पालन करेगी ।

रामचरित मानस में स्त्रियों द्वारा पतिपरायण बनने के अनेक उदाहरण मिलते हैं । सीताजी, कौशल्या-माता, सुमित्रादेवी, पार्वतीजी एंव राक्षस पक्ष के रावण और मेघनाथ की पत्नियाँ भी पतिव्रत के आदर्शों का पालन करते हुए प्रस्तुत की जाती हैं ।

विवाह के अवसर पर विदाई के समय माता-पिता तथा परिवार की वृद्ध महिलाओं द्वारा पति के घर जाने वाली वधू को पतिव्रत धर्म पालन करने का उपदेश दिया जाता था । सीता के जनकपुर से विदाई के अवसर पर सुनयनाजी, जनकजी सीता को पति के अनुकूल रहकर सास-ससुर की सेवा करने का उपदेश देते हैं -

चलिहि बरात सुनत सब रानी ।
बिकल मीन गन जनु लघुपानी ॥
पुनि-पुनि सीय गोद कर लेहीं ।
देइ-असीस सिखाबनु देहीं ॥
होएहु संतत पियहिं पियारी ।
चिरु अहिवात असीस हमारी ॥
सासु ससुर गुरु सेवा करेहू ।
पति रूख लखि आयसु अनुसरेहू ॥
अति सनेह बस सखी सयानी ।
नारि धरम सिखवहिं मृदुबानी ॥

पति की प्रेयसी बनना स्त्री के जीवन की सबसे बड़ी सफलता मानी गई है ।

पूज्य स्वामी को युवराज पद दिया जाने वाला था, सीताजी प्रसन्नता से प्रफुल्लित थीं, लेकिन विधि का विधान उल्टा था । कैकेयी माता के कुचक्र से उन्हें चौदह वर्ष के लिए वन जाना पड़ा । समाचार सुनते ही सीता जी अपना सब सुख वैभव त्याग कर पति के साथ चलने को तत्पर हो गईं ।

समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाय ।
जाई सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ ॥
बैठि नमित मुख सोचत सीता ।
रूपरासि पति प्रेम पुनीता ॥
चलन चहत बन जीवन नाथू ।
केहि सुकृति सन होइहि साथू ॥
की तनु प्रान कि केवल प्राना ।
विधि करतबु कछु जाई न जाना ॥

भगवान द्वारा वन के कष्टों और विपदाओं का भयंकर वर्णन सुनने के पश्चात् भी सीता का मन डिंगा नहीं । सीता का उत्तर पतिव्रत धर्म उच्चादर्श का प्रतिपादन करता है-

प्राणनाथ करुनायतन सुन्दर सुखद सुजान ।
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान ॥
मातु-पिता भगिनी प्रिय भाई ।
प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥
सासु ससुर गुरु सजन सहाई ।
सुत सुसील सुन्दर सुखदाई ॥
जहं लगि नाथ नेह अरु नाते ।
पिय बिनु तियहि तरनि ते ताते ॥
तनु धन धाम धरनि पुर राजू ।
पति बिहीन सबु सोक समाजू ॥
भोग रोग सम भूषण भारू ।
जम जातना सरिस संसारू ॥
प्राण नाथ तुम्ह बिन जग मांही ।
मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाही ॥
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी ।
तैसिअ नाथ पुरुष विनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे ।
सरद विमल बिधु बदनु निहारे ॥
खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल विमल दुकूल ।
नाथ साथ सुर सदन सम परन साल सुख मूल ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वनदेवी वनदेव उदारा ।
करिहहिं सासु ससुर सम सारा ॥
कुस किसलय साथरी सुहाई ।
प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥
कंद मूल फल अमिअ अहारू ।
अवध सौध सत सरिस पहारू ॥
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी ।
रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी ॥
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे ।
भय विषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभु वियोग लवलेस समाना ।
सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ॥
राखिअ अवध जो अवधि लगि रहत जानिअहिं प्रान ।
दीनबंधु सुन्दर सुखद सील सनेह निधान ॥

भगवान द्वारा वन की प्रत्येक कठिनाइयों का दीन और आकुल भाव से सहन करने हेतु उत्तर देकर महारानीजी ने अन्त में अपनी वास्तविक स्थिति बता दी कि पति वियोग में उनका जीवन धारण करना भी संभव न हो सकेगा। कष्टों को सहन करने के साथ ही वे पति के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने हेतु आश्वासन देती हुई कहती हैं -

मोहि मग चलत न होइहि हारी ।
छिनु छिनु चरन सरोज निहारी ॥
सबहि भाँति प्रिय सेवा करिहौं ।
मारग जनित सकल श्रम हरिहौं ॥
पाय पखारि बैठि तरु छांहीं ।
करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं ॥
श्रम कन सहित श्याम तन देखें ।
कहँ दुख समउ प्राणपति पेखें ॥
सम महि तृन तरु पल्लव डासी ।
पाय पलोटिहि सब निसि दासी ॥
बार-बार मृदु मूरत जोही ।
लागिहि तात बयारि न मोही ॥
को प्रभु सँग मोहि चितवनि हारा ।
सिंघ बधुहि जिमि ससक सियारा ॥

पति और पत्नी को सुख तथा दुःख दोनों में समान अवस्था में रहना चाहिए क्योंकि पत्नी अर्धांगिनी है। सीता को अवध के राजमहलों की सुविधाएँ प्रदान कर भगवान अकेले ही वन के दुसह क्लेशों को सहन करने को जाने को तत्पर थे। आदर्श पतिव्रता पत्नी भला इस अवस्था को कैसे सहन कर सकती है । सीता जी ने कहा -

मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू ।
तुम्हहि उचित तप मोकहुँ भोगु ॥
ऐसे बचन कठोर सुनि जौं न हृदउ बिलगान ।
तौं प्रभु विषम वियोग दुख सहिहहिं पामर प्रान ॥
अस कहि सीय बिकल भइ भारी ।
बचन बियोगु न सकी सँभारी ॥

वन गमन के अवसर पर सीता को पति के संग वन जाने के लिए तत्पर देख कर महाराज दशरथ को राम वनगमन से भी अधिक क्लेश हुआ था । रथ पर बिठा कर गंगा पार तक भगवान को पहुँचाने का आदेश सुमन्त को देकर महाराज ने राम से अवसर पाकर सीता को लौटा देने के लिए निवेदन करने को कहा था । सुमन्त जी ने विकल हृदय से भगवान के चरणों पर गिर कर दशरथ जी का सन्देश सुनाया और महारानी जी को अयोध्या लौटने को कहा । पति के साथ सब प्रकार की विपदाओं को सहन करने के लिए तत्पर सीता ने कितने सुन्दर शब्दों में पति हित सर्वस्व त्याग की बात सुमन्त से कही -

आरति बस सनमुख भइउं विलगु न मानव तात ।
आरज सुत पद कमल बिनु वादि जहाँ लगि नात ॥
पितु वैभव बिलास मैं डीठा ।
नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा ॥
सुख निधान अस पितुगृह मोरे ।
पिय विहीन मन भाव न मोरे ॥
ससुर चक्कवइ कोसल राऊ ।
भुवन चारिदिस प्रगट प्रभाऊ ॥
आगे होइ जहि सुरपति लेई ।
अरध सिंघासन आसनु देई ॥
ससुर एतादृस अवध निवासू ।
प्रिय परिवारु मातु सम सासू ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बिनु रघुपति पद पदुम परागा ।
मोहिंकेउ सपनेहुँ सुखद न लागा ॥
अगम पंथ बन भूमि पहारा ।
करि केहरि सर सरित अपारा ॥
कोलकिरात कुरंग बिहंगा ।
मोहि सब सुखद प्रानपति संगा ॥
सासु ससुर सन मोरि हुति विनय करबि परि पाय ।
मोर सोचु जनि करिउ कछु मैं बन सुखी सुभाय ॥

वह वही सीता थी जिसके स्वाभाविक कोमल स्वभाव का वर्णन करते हुये महारानी कौसल्या जी ने महान खेद प्रकट किया था -

सिय बन बसिहि तात केहि भाँती ।
चित्र लिखित कपि देखि डराती ॥

बन्दर का चित्र देखकर डरने वाली सीता ने पति के लिए अपने को वनवासिनी बनाने में तनिक भी संकोच न किया ।

पति की इच्छाओं को समझ कर उसी के अनुसार सेवा कार्य करना स्त्री का धर्म है ।

भगवान गंगा पार करते हैं। केवट नाव से उतर कर उन्हें प्रणाम करता है । राम के मन में संकोच पैदा होता है कि इसे कुछ दिया नहीं । सीता जी तुरन्त अपनी अंगूठी केवट को देने के लिए राम की ओर सादर बढ़ा देती हैं -

पिय हिय की सिय जाननि हारी ।
मनि मुदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपाल लेहि उतराई ।
केवट चरन गहे अकुलाई ॥

वन में सीता पर अपार विपत्तियों का पहाड़ टूटता है। वास्तव में भगवान् राघवेन्द्र के अवतार के उद्देश्य का प्रत्यक्ष निमित्त सीता जी को ही बनना पड़ा ।

रावण द्वारा अशोक वाटिका में अनेक प्रकार के प्रलोभन और परिताड़न की कल्पना मात्र से हृदय में सिहरन होती है । माँ सीता ने वज्र जैसा हृदय बनाकर ही इन्हें सहन किया था। हनुमान जी ने जाकर देखा था ।

देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा ।
बैठेहि बीति जात निसि जामा ॥
कृस तन सीस जटा एक बेनी ।
जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥
निज पद नयन दिएँ मन, राम कमल पद लीन ।
परम दुखी भा पवनसुत, देखि जानकी दीन ॥

रावण ने सीता को अपने वश में करने के लिए साम, दाम, दण्ड तथा भेद चारों नीतियों का भली भाँति अनुसरण किया । अशोक वाटिका में सीता द्वारा रावण को दिये गये उत्तर से उनके सतीत्व के साथ साहस तथा धैर्य का उत्तम उदाहरण मिलता है -

बहु बिधि खल सीतहि समुझावा ।
साम दाम भय भेद देखावा ॥
कह रावन सुनु सुमुखि सयानी ।
मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तब अनुचरी करउ पन मोरा ।
एक बार बिलोकु मम ओरा ॥

लेकिन सीता जी का क्या उत्तर था -

तृन धरि ओट कहति बैदेही ।
सुमिरि अवध पति परम सनेही ॥
सुनु दसमुख खद्योत प्रकाशा ।
कबहुँ कि नलिनी करइ विकासा ॥
अस मन समुझु कहत जानकी ।
खल सुधि नहिं रघुबीर वान की ॥
श्याम सरोज दाम सम सुन्दर ।
प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥
सो भुज कंठ कि तब असि घोरा ।
सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥

लंका दहन के बाद हनुमान के प्रस्थान करने के समय सीता ने भगवान के पास निवेदन भिजवाया -

अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना ।
दीनबंधु प्रनतारित हरना ॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी ।
केहि अपराध नाथ हौं त्यागी ॥

संकट तथा सुख प्रत्येक दशा में सीता जी ने मन वचन तथा कर्म से पतिपरायण होने का पूरा परिचय दिया है । उनके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पवित्र पति प्रेम तथा पति चरणों में अनन्य भक्ति ने ही राम को अमित पुरुषार्थ करने के लिए उत्साहित किया था ।

राजसिंहासन पर बैठने के बाद सुख के दिनों में भी पति सेवा को उन्होंने अपना धर्म माना था । गोस्वामी जी ने एक ओर सती के हृदय को कामी के वचनों से न डिगने वाला बताया है–

डिगइ न संभु सरासन कैसे ।
कामी बचन सती मन जैसे ॥

तो दूसरी ओर राज्याधिकारिणी होने पर भी उन्होंने अपने को पति सेवा में ही लगाये रखा । उत्तरकाण्ड में गोस्वामी जी वर्णन करते हैं–

पति अनुकूल सदा रह सीता ।
सोभा खानि सुसील बिनीता ॥
जानहिं कृपासिंधु प्रभुताई ।
सेवति चरन कमल मनलाई ॥
जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी ।
विपुल सदा सेवा विधि गुनी ॥
निज कर गृह परिचरजा करई ।
रामचन्द्र आयुस अनुसरई ॥
जेहि विधि कृपासिंधु सुख मानइ ।
सोइ कर श्री सेवा विधि जानइ ॥
कौसल्यादि सासु गृह माही ।
सेवइ सबन्हि मानमद नाहीं ॥

इस प्रकार पूरी तरह से पतिपरायण बन कर और पति के प्रति अपने कर्तव्यों को समुचित रूप से पालन करके ही महारानी सीता जी सती शिरोमणि बनीं । गोस्वामी जी ने उनकी वन्दना में निम्नलिखित चौपाइयाँ लिखीं–

सती सिरोमनि सिय गुन गाथा ।
सोई गुन अमल अनूपम पाथा ॥
जनक सुता जगजननि जानकी ।
अतिसय प्रिय करुना निधान की ॥

नारी धर्म का उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत करने वाली माता जानकी को नारी वर्ग के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय बनाना चाहिए ।

बहुत लोग कहते हैं कि राम तथा सीता जी का अवतार था, हम कलियुगी लोगों में उनके चरित्र का अनुसरण करने की क्षमता कहाँ ? लेकिन रामायण के अन्य नारी पात्रों में हमें कम आदर्श नहीं मिलता है । शंकर प्रिया पार्वती तो पतिव्रताओं की अग्रणी थीं । सती शिरोमणि सीता जी ने स्वयं इसकी पुष्टि जनक वाटिका में स्तुति के समय की है–

पति देवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तब रेख ।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष ॥

लेकिन यह पद पार्वती ने अपनी तपस्या तथा पति भक्ति से ही तो प्राप्त किया था । कुमारी अवस्था में शंकर के लिए समस्त सुख भोगों का त्याग करके तपस्विनी बनी थीं–

उर धरि उमा प्रान पति चरना ।
जाइ विपिन लागी तपु करना ॥
अति सुकुमार न तनु तप जोगू ।
पति पद सुमिरि तजेउ सब भोगू ॥
नित नव चरन उपज अनुरागा ।
बिसरी देह तपहि मनु लागा ॥
संवत सहस मूल फल खाए ।
सागु खाइ सत बरष बिताए ॥
कछु दिन भोजन बारि बतासा ।
किए कठिन कछु दिन उपवासा ॥
बेल पाति महि परम सुखाई ।
तीन सहस संवत सोइ खाई ॥
पुनि परिहरे सुखानेउ परना ।
उमहि नामु तब भयउ अपरना ॥
देखि उमहि तप खीनि शरीरा ।
ब्रह्म गिरा भै गगन गंभीरा ॥

सप्त ऋषियों के परीक्षा के अवसर पर विष्णु को पति रूप में स्वीकार करने के प्रलोभन पर उनका यही उत्तर था–

जनमु कोटि लगि रगर हमारी ।
बरउं संभु न तौं रहह कुमारी ॥

सती रूप में अपने पिता के यज्ञ में पति का अपमान देखकर उन्होंने योगानल में अपने शरीर को भस्म कर लिया था -

जगदातमा महेसु पुरारी ।
जगत जनक सब के हितकारी ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पिता मंद मति निंदत देही ।
दच्छ सुक्र संभव यह देही ॥
तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतु ।
उरधरि चंद्रमौलि बृषकेतु ॥
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा ।
भयउ सकल मख हाहाकारा ॥

अपने इन्हीं अलौकिक कार्यों, अनन्य प्रेम तथा पतिव्रत धर्म का पालन करके महारानी पार्वती पतिव्रताओं में अग्रणी बनीं ।

घर में पत्नी पति की सच्ची संगिनी होती है । सीता और पार्वती माँ का उदाहरण तो हमारे सामने है ही लेकिन रघुकुल के राजवंश की समस्त महारानियाँ आचरण की पुनीत थीं -

कौशल्यादि नारि प्रिय सब आचरण पुनीत ।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत ॥

मंथरा के बहकावे में पड़कर अपने पुत्र भरत के लिए राजपद मिलने का वरदान महाराज से मांगने के पूर्व महारानी कैकेयी का चरित्र भी हमारे लिए आदर्श था । वे महाराज के साथ युद्ध में भी जाती थीं । देवासुर संग्राम के अवसर पर रथ का चक्र टूट जाने के बाद अपने अद्वितीय साहस और कार्य-पटुता से उन्होंने पति के प्राण बचा लिए थे । इसी समय प्रसन्न होकर दशरथ जी ने उन्हें दो वरदान दिये थे । अपने गुणों और पतिपरायणता से ही वे दशरथ महाराज की प्रेयसी बनी थीं ।

राम माता कौशल्या के चरित्र की सम्यक कसौटी के अवसर राम वन-गमन तथा दशरथ-मरण आदि हैं । जहाँ वह महारानी, पत्नी और माता के साथ-साथ एक विवेकशीला प्रबुद्ध नारी के रूप में पाठकों के समक्ष उपस्थित होती हैं । कैकेयी द्वारा अपने पुत्र के लिए अपार विपत्ति उपस्थित करने के बाद भी कौशल्या माँ ने अपनी पतिपरायणता में तनिक भी अंतर न आने दिया । पति के चरणों में उनका पुनीत प्रेम पहिले जैसा बना रहा । यदि वह इच्छा मात्र कर लेतीं तो पुरवासियों और प्रतिष्ठत अधिकारियों का शोक महान विद्रोह में परिणत हो जाता । लेकिन संकट के समय धैर्य, विवेक और उदारता का जो परिचय हमें माँ कौशल्या के चरित्र में मिलता है, वह अन्यत्र नहीं दीख पड़ता । राम और भरत दोनों को उन्होंने समान स्नेह प्रदान किया । भरत के अनेक प्रकार की सौगन्ध खाने और कैकेयी को दोष देने पर कौशल्या माँ ने यही कहा कि—

कहेहि दोष देहु जनि ताता ।
भा मोहि सब बिधि बाम बिधाता ॥

भरत को राज पद देने के लिए उन्होंने पूर्ण तरह समर्थन निःस्वार्थ भाव से किया-

वन रघुपति सुरपुर नर नाहू ।
तुम्ह एहि भांति तात कदराहू ॥
परिजन प्रजा सचिव सब अम्बा ।
तुम्हहि सुत सब कह अवलम्बा ॥

मृत्यु के समय महाराज दशरथ को कौशल्या के महल में ही शान्ति मिली थी । राम विरह से उत्पन्न धधकती ज्वाला को कौशल्या माँ ने हृदय में दबाकर पति की सेवा और सान्त्वना देने में रंचमात्र भी शिथिलता नहीं दिखाई -

कौशल्या नृप दीख मलाना ।
रविकुल रवि अथयउ जियँ जाना ॥
उर धरि धीर राम महतारी ।
बोली बचन समय अनुसारी ॥
नाथ समुझि मन करिउ बिचारू ।
राम बियोग पयोधि अपारू ॥
करनधार तुम्ह अवध जहाजू ।
चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू ॥
धीरज धरिअ तो पाइअ पारू ।
नाहिं त बूडिहि सबु परिवारू ॥
जौ जियँ धरिअ बिनय पिय मोरी ।
राम लखन सिय मिलहिं बहोरी ॥
प्रिया बचन मृदु सुनत नृप, चितयउ आँख उघारि ।
तलफत मीन मलीन जनु, सींचत सीतल बारि ॥

पिता की तुलना में माता का हृदय वात्सल्य प्रेम में अधिक भावुक होता है लेकिन यहाँ तो स्थिति बिल्कुल विपरीत है। पिता दशरथ प्राण त्याग रहे है लेकिन माता कौशल्या उन्हें धैर्य धारण करने का उपदेश दे रही हैं । आर्य जनों में ही नहीं वरन् राक्षस परिवार में भी महिलाओं द्वारा दाम्पत्य जीवन का आदर्शानुकरण हमें देखने को मिलता है । राक्षस राज रावण की पत्नी मंदोदरी परम सुन्दरी थी और साथ ही उच्च कोटि की विवेकशीला तथा पति हितैषिणी थी। स्त्री को सौत से स्वाभाविक द्वेष रहता है, वह उसे फूटी आँखों भी नहीं सुहाती लेकिन मन्दोदरी न्यायोचित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वाभाविक द्वेष भाव से परे रह कर पति के प्रति अनन्य प्रेम प्रदर्शित करने वाली महिला के रूप में प्रकट होती है । उसी के संग जाकर अशोक वाटिका में रावण सीता से कहता हैं—

कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी ।
मन्दोदरी आदि सब रानी ॥
तब अनुचरी करउँ पन मोरा ।
एक बार बिलोकु मम ओरा ॥

दूसरी स्त्री को पति की ओर से अपने को अनुचरी बनाने के आश्वासन से भी मन्दोदरी को पति से किसी प्रकार का विद्वेष नहीं होता ।

वह सच्चे हृदय से पति की हितैषिणी रह कर उसे सत्पथ पर लाने की चेष्टा करती है । इस संदर्भ में सुन्दरकाण्ड में तीन बार मन्दोदरी द्वारा रावण को सत्परामर्श देकर सही मार्ग पर लाने का दृष्टान्त मिलता है ।

प्रथम हनुमान जी द्वारा लंका दहन के पश्चात् राम सेना सहित सागर तट पर उतरे हैं । राक्षस गण हनुमान के पौरुष से भयभीत होकर रामसेना के बल का अनुमान करते हैं और सशंकित हैं । सब समाचार जानकर मन्दोदरी पति को समझा रही हैं ।

जासु दूत बल बरनि न जाई ।
तेहि आए पुर कवन भलाई ॥
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी ।
मन्दोदरी अधिक अकुलानी ॥
रहसि जोर कर पति पग लागी ।
बोली बचन नीति रस पागी ॥
कंत करष हरि परिहरहू ।
मोर कहा अति हित हिय धरहू ॥
समुझत जासु दूत कइ करनी ।
स्रवहिं गर्भ रजनीचर धरनी ॥
तासु नारि निज सचिव बुलाई ।
पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥
तब कुल कमल बिपिनि दुखदाई ।
सीता सीत निसा सम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें ।
हित न तुम्हारा संभु अज कीन्हें ॥

भगवान राम सेतु बाँध कर सेना सहित सागर पार पहुँचने का अलौकिक पुरुषार्थ दिखाते हैं । इस समाचार को रावण के गुप्तचर रावण को बताते हैं । मन्दोदरी पुनः पति को समझाती है—

मन्दोदरी सुन्यो प्रभु आयो ।
कौतुक ही पाथोधि बँधायो ॥
कर गहि पतिहि भवन निज आनी ।
बोली परम मनोहर बानी ॥
चरन नाइ सिरु अंचल रोपा ।
सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ॥
रामहि सौंपि जानकी नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहँ राज समर्पि बन जाई भजिअ रघुनाथ ॥

संत कहहिं अस नीति दसानन ।
चौथेपन जाइहि नृप कानन ॥
जौ पिय मानहु मोर सिखाबन ।
सुजस होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥

तीसरी बार रावण जब मन्दोदरी सहित रंगमंच पर बैठा नृत्य देख रहा था, सुबेल पर्वत से राम के चलाये हुए एक ही बाण से रावण का छत्र मुकुट मन्दोदरी के कर्णफूल कटकर गिर गये । इस स्थिति से सम्पूर्ण सभा भयभीत हो उठी । रावण जब भवन में शयन हेतु आया—

मन्दोदरी सोच उर बसेऊ ।
जब ते श्रवन पूर महि खसेऊ ॥
सजल नयन कह जुग कर जोरी ।
सुनहु प्रानपति बिनती मोरी ॥
कंत राम विरोध परिहरहू ।
जानि मनुज जनि हठ मन धरहू ॥
अस विचारि सुनु प्रानपति, प्रभु सन वयरु विहाइ।
प्रीति करहु रघुवीर पद, मम अहिबातु न जाइ ॥

इसी प्रकार मेघनाद पत्नी सुलोचना अद्वितीय पतिव्रता नारी थी । उस के सतीत्व के बल से ही मेघनाद इन्द्रजीत बना था । मेघनाद वध के अवसर पर प्रतिकूल संकेतों से सुलोचना को उसके वध की घड़ी निकट आने का रहस्य मालूम हो गया था ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पतिव्रत की अपार शक्ति

रामायण के विभिन्न महिला पात्रों के चरित्र से पतिव्रत धर्म का पूरी तरह प्रतिपादन होता है । मन, वचन और कर्म से पतिपरायण बन कर नारी त्रिभुवन को जीतने की शक्ति प्राप्त कर सकती है । कौशिक नामक तपस्वी ब्राह्मण को, जिसे तप द्वारा दृष्टि मात्र से पक्षी को भस्म करने का अभिमान हो गया था, सतीसाध्वी पतिपरायणा नारी के सम्मुख नतमस्तक होना पड़ा था । अत्रि पत्नी अनुसुइया तप से मन्दाकिनी गंगा को अपने आश्रम पर लाई थीं, सतीत्व की परीक्षा हेतु आने वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर तीनों देवताओं को उन्होंने अपना बच्चा बना दिया था। अत्रि आश्रम में राम लक्ष्मण का सीता सहित पहुँचने पर जो उपदेश अनुसुइया ने महारानी सीता को दिया था, आज की स्त्रियों के लिए भी वह अनुकरणीय होना चाहिए । सीता के आश्रम में पदार्पण करते ही ऋषि पत्नि ने उनका हार्दिक स्वागत किया फिर नारी धर्म का उपदेश दिया-

अनुसुइया के पद गहि सीता ।
मिली बहोरि सुसील विनीता ॥
रिषि पतिनी मन सुख अधिकाई ।
आसिष देइ निकट बैठाई ॥
दिव्य वसन भूषन पहिराए ।
जे नित नूतन अमल सुहाए ॥
कह रिषि वधू सरस मृदु वानी ।
नारि धर्म कछु व्याज बखानी ॥
मातु पिता भ्राता हितकारी ।
मित प्रद सब सुन राजकुमारी ॥
अमित दानि भर्ता वैदेही ।
अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी ।
आपद काल परिखिअहिं चारी ॥
वृद्ध रोग वश जड़ धन हीना ।
अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना ॥
ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना ।
नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥
एकहि धर्म एक व्रत नेमा ।
कायँ बचन मन पति पद प्रेमा ।
जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं ।
वेद पुरान संत सब कहहीं ॥
उत्तम के अस बस मन माहीं ।
सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं ॥
मध्यम परपति देखइ कैसे ।
भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म विचारि समुझि कुल रहई ।
सो निकृष्ट तिय श्रुति अस कहई ॥
बिनु अवसर भयते रह जोई ।
जानेहू अधम नारि जग सोई ॥
पति बंचक परपति रति करई ।
रौरव नरक कल्प सत परई ॥
छन सुख लागि जनम सत कोटी ।
दुख न समुझ तेहि समको खोटी ॥
बिनु श्रम नारि परम गति लहई ।
पतिव्रत धर्म छाँड़ि छल सहई ॥
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई ।
विधवा होइ पाइ तरुनाई ॥
सहज अपावनि नारि पति सेवह सुभगति लहइ ।
जसुगावइ श्रुतिचारि अजहँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥

पत्नी का सबसे बड़ा आधार पति ही है । पति की सेवा सच्चे भाव से करके वह चार पदार्थ प्राप्ति का फल पा सकती है । वर्तमान समय में नारी शिक्षा प्रसार के साथ स्त्रियों में पति-परायणता के भाव की स्पष्ट कमी दीखती है । बाहरी सजावट, फैशन और पाश्चात्य देशों की परम्पराओं की नकल से सनातन चली आने वाली सांस्कृतिक मर्यादाओं का उल्लंघन नारी जाति के हित में नहीं है ।

भारतवर्ष सदैव से सतियों का देश रहा हैं । चरित्र की उच्च मर्यादा के अनेक कीर्तिमान भारतीय नारियों द्वारा स्थापित किए गए हैं । द्रौपदी, सीता, मन्दोदरी, अनुसुइया आदि के प्राचीनकालीन उदाहरण तो हमारे सम्मुख हैं ही लेकिन मध्यकाल और वर्तमान काल में सती साध्वी व पतिपरायण नारियों की कीर्ति से भारतीय इतिहास के पन्ने रँगे पड़े हैं । राजपूती तथा मुगल काल में नारी गौरव के अनेक उदाहरण स्थापित हुए हैं ।

नारी की सजावट सोने-चाँदी से नहीं वरन् चरित्र से है । रामायण हमें बताती है कि भारत की नारियाँ अपनी गौरवमय परम्परा को बनाए रखने में अब भी पीछे न रहेंगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पति-पत्नी दोनों एक गाड़ी के पहिये के समान हैं। दोनों की उन्नति एक दूसरे पर समान रूप से अन्योन्याश्रित हैं। पुरुषों का कर्तव्य है कि वे स्त्रियों को समान अधिकार दें। मनुस्मृति के वाक्य पर हमें विश्वास लाना ही पड़ेगा कि **'नार्यो यत्र पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'** जहाँ नारी की पूजा होती है वहीं देवताओं का निवास रहता है। जिस घर में नारी को गृहलक्ष्मी मान कर उसको उचित अधिकार और सम्मान प्रदान किया जाता है उस घर में आर्थिक तंगी और अशान्ति का अभाव अवश्य मिलेगा। इसी प्रकार आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता के चकाचौंध में छिछले विचारों को अपना कर सतीत्व और पतिपरायणता को हीन दृष्टि से देखकर नारी कभी उच्च सम्मान की अधिकारी नहीं बन सकती।

पति-पत्नी दोनों का कर्तव्य है कि वे एक दूसरे के प्रति उदार, मृदुल और सहिष्णु बनें। एक दूसरे के दोषों को भुलाने, सच्चे हृदय से सुधारने और गुणों को प्रकाश में लाने की चेष्टा करें। नारी वर्ग अशिक्षित और अविकसित अवस्था में पड़ा है। जब तक नारियाँ उच्च विचारों से सम्पन्न नहीं होंगी, वे भोग की सामग्री ही मानी जाएँगी। उनके गर्भ से ध्रुव और प्रहलाद जैसे श्रेष्ठ पुत्रों का जन्म कैसे होगा ? पुत्र को महान बनाने में सबसे अधिक सहयोग माता का होता है। जीजाबाई ने शिवा को देशभक्त और वीर बनाया था, महात्मा गाँधी पर सबसे अधिक प्रभाव उनकी माता का पड़ा था। अनेक महापुरुष अपनी माँ के मूक बलिदान और निर्माण के ही प्रतिफल हैं। भावी भारत की सन्तानों को विश्व का नेतृत्व करना है। देश को उन्नति की चरम सीमा पर पहुँचाने के लिए और गृहस्थ जीवन को सुखी और समृद्धिशाली बनाने हेतु दाम्पत्य जीवन में रामायणकालीन आदर्शों को व्यवहार में लाने के लिए तत्पर होना चाहिये।

बाल विवाह, दहेज प्रथा, जेवरों की माँग तथा सगाई में व्यावसायिक वृत्ति को अपनाना आदि ऐसे छिद्र हैं जो दाम्पत्य जीवन में असमानता और पक्षपात का बीजारोपण करते हैं, पति-पत्नी को समान धरातल पर रहने से विचलित करते हैं। परिणामत: हमारा दाम्पत्य जीवन सुखी न बनकर कलुषित और बोझिल बनता है। विवाह से प्राप्त उद्देश्यों की पूर्ति नहीं होती। विवाह को संसार का एक पवित्र धार्मिक कृत्य के रूप में अपनाना और उस अवसर पर की गई प्रतिज्ञाओं के प्रति जीवन भर निष्ठावान रहना ही भारतीय संस्कृति की आदि काल से चली आने वाली मर्यादा रही है। हम सबको आपनी नीतियों पर दृढ़ रहने के लिए पुन: पूरी शक्ति से अग्रसर होना चाहिए— तभी हम अपने महापुरुषों और अवतारों के प्रति सच्चे रूप में निष्ठावान बन सकते हैं।

रामायण हमारा मार्ग प्रशस्त करती है। जिन हेतुओं और उद्देश्यों को लेकर गोस्वामी जी ने मानस की रचना की है, रामायण कथा के व्यापक प्रचार के माध्यम से उन आदर्शों के प्रति लोक मानस में आस्था और अनुकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न करना ही कथा वाचकों का परम लक्ष्य बनाना समय के अनुरूप होगा।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सास - बहू सम्बन्ध

विवाह सम्बन्ध से पति के साथ कन्या बहू बनकर पति के घर में प्रवेश करती है । पति के माता-पिता उसके सास-ससुर बन जाते हैं। सास-बहू के आदर्श सम्बन्ध का विशद वर्णन हमें रामचरित मानस में मिलता है–

महाराज दशराथ अपने चारों पुत्रों का विवाह करके बधुओं के साथ हर्षित मन हो, जनकपुर से अयोध्या लौटते हैं । राजमहल में प्रसन्नतापूर्वक वे पुत्रों के समान बहुओं को प्यार करके सासुओं को आदेश देते हैं कि–

बधु लरिकिनी पर घर आईं ।
राखेहु नयन पलक की नाईं ॥

"बहुए अभी बच्ची हैं और ये वधू बनकर दूसरे के घर में आई है । उनको इस तरह सम्भालकर रखना जैसे नेत्रों को पलके रखती है।"

बहू के प्रति सासु के सुन्दर व्यवहार का कितना सुन्दर उदाहरण हैं। सर्व प्रथम सास का कर्तव्य होता है कि वह बहू को माँ के समान प्रेम और सुरक्षा दे ।

महाराज दशरथ के उपरोक्त आदेश का हम अक्षरश: पालन मानस में देखते हैं । वन गमन के अवसर पर विलाप करती हुई कौशल्या देवी राम से कह रही हैं -

तात सुनहु सिय अति सुकुमारी ।
सास ससुर परिजनहि पिआरी ॥
पिता जनक भूपाल मनि ससुर भानुकुल भानु ।
पति रविकुल कैरव बिपिन बिधु गुन रूप निधानु ॥
मैं पुनि पुत्र बधू प्रिय पाई ।
रूप रासि गुन सील सुहाई ॥
नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई ।
राखेउँ प्रान जानकिहि लाई ॥
कलप बेलि जिमि बहुबिधि लाली ।
सींचि सनेह सलिल प्रति पाली ॥
फूलत फलत भयउ विधि बामा ।
जानि न जाई काह परिनामा ॥
पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा ।
सिय न दीन्ह पगु अवनि कठोरा ॥
जिअन मूरि जिमि जोगबत रहऊँ ।
दीप बाति नहिं टारन कहऊँ ॥

दशरथ जी ने बहुओं को नयन पुतरि के समान रखने को कहा था, महारानी कौशल्या ने सचमुच वैसा ही रखा 'नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई '।

केवल माँ के समान प्रेम प्रदान कर अपने प्राणों को जानकी में न रखा वरन् उनका पालन पोषण कैसे किया ? कलप बेलि जिमि बहुविधि लाली, स्नेह रूपी जल से सींच-सींच कर कल्पलता के समान अनेक प्रकार का लाड़ प्यार देकर माता कौशल्या द्वारा सीता जी पाली गई थीं ।

हर सास का अपनी बहू के प्रति इसी प्रकार का स्नेहयुक्त व्यवहार होना चाहिए ।

सास का बहू के प्रति व्यवहार का स्मरण महाराज दशरथ दिलाते हैं तो बहू को सास के प्रति कर्तव्यों की ओर जानकीजी को भगवान राम संकेत देते हैं । सास-ससुर के प्रति कर्तव्यों का सिद्धान्त हमें इसी को मानना चाहिए । भगवान कहते हैं -

मातु समीप कहत सकुचाहीं ।
बोले समउ समुझि मनमाहीं ॥
राज कुमारि सिखावनु सुनहू ।
आन भाँति जियँ जनि कछु गुनहू ॥
आपन मोर नीक जो चहहू ।
बचनु हमार मानि गृह रहहू ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई ।
सब विधि भामिनि भवन भलाई ॥
एहि ते अधिक धरम नहिं दूजा ।
सादर सासु ससुर पद पूजा ॥
जब जब मातु करहिं सुधि मोरी ।
होइहि प्रेम विकल मति भोरी ॥
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी ।
सुन्दरि समुझाएहु मृदु बानी ॥
कहुउ सुभायँ सपथ सत मोही ।
सुमुखि मातु हित राखउ तोही ॥

बहू के लिए सास ससुर की सेवा पति सेवा के समान फलदायिनी है । जानकी जी पति के साथ वन जाने की अनुमति पाकर विकल होकर पश्चात्ताप करती हुई माता से अपनी असमर्थता प्रकट करती हैं–

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तब जानकी सासु पग लागी ।
सुनिअ मात मैं परम अभागी ॥
सेवा समय दैव बनु दीना ।
मोर मनोरथ सफल न कीन्हा ॥
तजब छोभु जनि छाड़िअ छोहू ।
करमु कठिन कछु दोसु न मोहू ॥

सास की सेवा का अवसर न पा सकने वाली बहू अत्यन्त अभागी हैं । सास की सेवा से वंचित होने का कलंक महारानी जी को सदैव बना रहा ।

चित्रकूट में भरत-मनावन के अवसर पर अल्पकाल के लिए उन्हें सासुओं की सेवा करने का अवसर मिला -

सीय सासु प्रति बेष बनाई ।
सादर करइ सरिस सेबकाई ॥
लखा न मरमु राम बिनु काँहू ।
माया सब सिय माया माहूँ ॥
सीय सासु सेवा बस कीन्ही ।
तिन्हलगि सुख सिख आसिषदीन्ही ॥

सीता जी ने सास की सेवा में कोई भेद न किया । कौशल्या और सुमित्रा के समान ही कैकेयी माता की भी सेवा की उसी के परिणामस्वरूप—

लखि सिय सहित सरल दोउ भाई ।
कुटिल रानि पछितानि अघाई ॥

चित्रकूट में वे वनवासिनी थीं उनकी मनोदशा में विनम्रता और सेवा का पुट अधिक हो सकता है । लेकिन वनवास की अवधि समाप्त होने पर जब वे अर्धसिंहासन की स्वामिनी बन गईं तो भी उनके कर्तव्य पालन में लेश मात्र भी अन्तर न आया । वनवास गमन के अवसर पर माता कौशल्या से प्रकट किये गये प्रायश्चित वचनों को इस उत्तम रीति से पूरा किया—

सेवा समय दैव दुख दीन्हा ।
मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा ॥

वनवासिनी सीता ने चित्रकूट में सासुओं की सेवा की और महारानी सीता ने अयोध्या में सासुओं की उत्तम सेवा करके समाज के सामने सास-बहू के उचित कर्तव्य का उदाहरण रखा—

जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी ।
विपुल सदा सेवा बिधि गुनी ॥
निज कर गृह परिचरजा करई ।
रामचन्द्र आयुस अनुसरई ॥
कौसल्यादि सासु गृह माँही ।
सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं ॥

इस प्रकार मानस के पात्रों में कौशल्या देवी को आदर्श सासु और जानकी जी को आदर्श बहू के रूप में पाते हैं । सास-बहू का उन जैसा सम्बन्ध यदि आर्यजाति के प्रत्येक परिवार में अनुकरणीय बन जाए तो वर्तमान युग के अधिकांश पारिवारिक कलह स्वयमेव मिट जाएँ ।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम को अपना पूर्वज और माता सीता जी को जगत जननी मानने वाले कोटि-कोटि नर नारियों को महारानी जी और माता कौशल्या देवी के इसी आदर्श सम्बन्ध का अनुकरण करना चाहिये ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुरु-शिष्य का आदर्श सम्बन्ध

रामायणकाल में गुरु परिवार के एक सम्मानित सदस्य के रूप में था । उसे माता-पिता के समान स्थान और अधिकार दोनों प्राप्त होते थे, साथ ही कुटुम्बी जनों के प्रति पिता तुल्य कर्तव्य भी थे । इसलिए पारिवारिक जीवन का वर्णन करते हुए गुरु-शिष्य का आदर्श सम्बन्ध का वर्णन करना अप्रासंगिक न होगा ।

प्राय: सभी धार्मिक ग्रन्थों में गुरु की आध्यात्मिक महत्ता को पूर्ण रूपेण स्वीकार किया गया है । धार्मिक सिद्धान्तों और विश्वासों में विभिन्न ऋषियों और सन्तों में भेद हो सकता है लेकिन गुरु की महिमा और प्रभाव को किसी ने अस्वीकार नहीं किया ।

गुरु नानक देव का सिक्ख धर्म गुरु को ईश्वर मानता है । गुरु वाणी ईश्वर वाणी है । गुरुओं के उपदेशों का संग्रह गुरुग्रन्थ साहब का वे पाठ करते हैं । वाहे गुरु की जय, उनका नारा है । कबीर दास जी भी निर्गुण उपासक सन्त माने जाते हैं । हिन्दू मुस्लिम दोनों धर्मों में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों और मिथ्या धारणाओं का उन्होंने खण्डन किया, लेकिन गुरु के सम्बन्ध में उनकी वाणी अन्य सगुण उपासक सन्तों से पीछे न रही –

गुरु गोविन्द दोनों खड़े काको लागौं पांय ।
बलिहारी गुरुदेव को जो गोविन्द दियो मिलाय ॥

रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी की राम कथा का प्रारम्भ ही गुरु की व्यवहारिक महत्ता से होता है । रघुकुल पर गुरु वशिष्ठ के व्यावहारिक प्रभाव की अमिट छाप पड़ी है । चित्रकूट से भगवान राम को अयोध्या वापस ले चलने के लिए भरत को केवल गुरु वशिष्ठ ही समर्थ दीख पड़े थे । रघुकुल पर महाराज वशिष्ठ के प्रभाव का दिग्दर्शन निम्नलिखित चौपाइयों से होता है -

भानुवंस भए भूप घनेरे ।
अधिक एक से एक बडेरे ॥
जनमु हेतु सब कहुँ पितु माता ।
करम सुभासुभ देइ विधाता ॥
दलि दुख सजइ सकल कल्याना ।
अस असीसु राउरि जगु जाना ॥
सो गोसाईं विधि गति जेहिं छेकी ।
सकइ को टारि टेक जो टेकीं ॥

विधाता की गति को रोकने की शक्ति रखने वाले गुरु वशिष्ठ ही थे ।

महाराज दशरथ का चौथापन आ गया परन्तु नि:सन्तान ही रहे । गुरु के अतिरिक्त कौन सहायता कर सकता है ? वे उन्हीं के पास गये -

एक बार भूपत मन माँही ।
भै गलानि मोरे सुत नाहीं ॥
गुरु गृह गयउ तुरत महिपाला ।
चरन लागि करि विनय विशाला ॥
निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ ।
कहि बसिष्ठ बहु विधि समुझायउ ॥
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी ।
त्रिभुवन विदित भगत भय हारी ॥

राम लक्ष्मण का जन्म होता है तो वशिष्ठ जी बुलाए जाते हैं और वही आकर सम्पूर्ण संस्कार करते हैं -

गुरु बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा ।
आए द्विजन सहित नृप द्वारा ॥
नंदी मुख सराध करि, जात करम सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि, नृप विप्रन्ह कहँ दीन ॥

इसी प्रकार नामकरण, यज्ञोपवीत, विद्यारम्भ और विवाह संस्कार तक समस्त कर्मकाण्डों का सम्पादन गुरु वशिष्ठ जी के निर्देश में होता हैं । लेकिन यह सब तो सामान्य उपरोहित्य कार्य हैं जो आज भी पुरोहित पंडितों द्वारा पूरे किए जाते हैं । इसमें गुरु की अधिकार सम्पन्नता और भारी दायित्व को सँभालने की बात परिलक्षित नहीं होती ।

मानस के अयोध्याकाण्ड से हमें इसके उदाहरण मिलते हैं ।

महाराज दशरथ अपने चौथेपन की अवस्था का विचार करके योग्य पुत्र राम को गद्दी सौंपना चाहते हैं लेकिन वे स्वेच्छाचारी शासक नहीं हैं, राज्य के प्रत्येक बड़े मामले में उन्हें वशिष्ठ जी की सलाह लेनी पड़ती थी । गुरु आश्रम में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाकर बड़ी अभिलाषा से वे अपनी मनोकामना को तार्किक ढंग से निवेदन करते हैं ।

यह विचारु उर आनि नृप, सुदिन सुअवसर पाइ ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन, गुरहि सुनायउ जाइ ॥

कहइ भुआलु सुनिअ मुनि नायक ।
भए राम सब बिधि सब लायक ॥
सेवक सचिव सकल पुरवासी ।
जे हमार अरि मित्र उदासी ॥
सबहि रामु प्रिय जेहि बिधि मोही ।
प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही ॥
विप्र सहित परिवार गोसांई ।
करहिं छोहु सब रौरहिं नाई ॥
जे गुरु चरन रेनु सिर धरहीं ।
ते जन सकल विभव बस करहीं ॥
मोहि सम यहु अनुभयउ न दूजे ।
सब पायउँ रज पावनि पूजे ॥
अब अभिलाषु एक मन मोरे ।
पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू ।
कहेउ नरेस रजायसु देहू ॥
सब बिधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी ।
बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी ॥

यहाँ चक्रवर्ती सम्राट की विनम्रता और गुरु की अधिकार सम्पन्नता का कितना बड़ा उदाहरण मिलता है । गुरु की अनुमति प्राप्त हो जाने के बाद ही राम को युवराज बनाने की सार्वजनिक चर्चा महाराज ने की ।

भगवान राम, लक्ष्मण और सीता सहित चित्रकूट को प्रस्थान कर जाते हैं । इधर पुत्र शोक में महाराज का स्वर्गवास हो गया। इस स्थिति में राज्य संचालन और रघुकुल की रक्षा का पूरा दायित्व किसी सबल कंधों पर होने की आवश्यकता थी तभी प्रलय के समान आई हुई महाविपत्ति से मुक्ति मिल सकती थी ।

रघुकुल के पुरोहित वशिष्ठ जी केवल साधना रत रहने वाले तपस्वी मात्र न थे । हम देखते हैं कि राज्यसंचालन का पूरा भार उस समय उन्हीं के सबल कंधों पर पहुँच जाता है । वे राज्य नेता के रूप में अयोध्या का राज्य संचालन करते हुये तात्कालिक उपाय करने में जुट जाते हैं । उस समय उनकी थोड़ी शिथिलता रघुकुल के विनाश का कारण बनती ।

महाराज की मृत्यु के शोक में विलाप करती हुई रानियों को महाराज वशिष्ठ जी आश्वासन देते हैं और भरत को बुलाने का आदेश देते हैं लेकिन कितनी चतुरता से –

तब बसिष्ठ मुनि समय सम, कहि अनेक इतिहास ।
सोक नेवारेउ सबहिं कर, निज बिज्ञान प्रकास ॥

तेल नाव भरि नृप तनु राखा ।
दूत बोलाई बहुरि अस भाषा ॥
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू ।
नृप सुधि कतहुँ कहहुँ जनि काहू ॥
एतनेइ कहेहु भरत सन जाई ।
गुर बोलाइ पठयउ दोउ भाई ॥

भरत को बुलाने जाने वाले दूत महाराज की मृत्यु का समाचार मार्ग में किसी से न बतावें और यहाँ तक स्वयं भरत से और कैकेय नरेश के कानों तक यह समाचार न दें क्योंकि उससे विपरीत प्रतिक्रिया होने की संभावना थी । मुनिराज वशिष्ठ जी की राजनैतिक चतुरता और सूझ का यह प्रमाण था ।

भरत अयोध्या नगरी में संध्या काल में पहुंचते हैं । अपने को उत्पात का निमित्त पाकर उनकी विकलता बढ़ जाती है। सम्पूर्ण रात्रि वे कौशल्या के महल में विलाप करते हैं । लेकिन भोर होते ही, महाराज वशिष्ठ और वामदेव आदि पुरोहितों का आगमन हो जाता है -

करत बिलाप बहुत इहि भाँती ।
बैठेइ बीत गई सब राती ॥
बामदेव बसिष्ठ तब आए ।
सचिव महाजन सकल बुलाए ॥
मुनि बहु भाँति भरत उपदेशे ।
कहि परमारथ बचन सुदेशे ॥
तात हृदय धीरजु धरहु करहु, जो अवसर आजु ।
उठे भरत गुर बचन सुनि, करन कहेउ सब काजु ॥

महाराज के शव का अंतिम संस्कार करना प्रथम कर्तव्य था । वशिष्ठ जी ने भरत से पहिले वही कराया । सूतक के तेरह दिन बीत जाने के बाद पुन: वशिष्ठ जी का आगमन हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है -

सुदिन सोधि मुनिवर तब आए ।
सचिव महाजन सकल बोलाए ॥
बैठे राज सभा सब जाई ।
पठए बोलि भरत दोऊ भाई ॥
भरत वशिष्ठ निकट बैठारे ।
नीति धरम मय बचन उचारे ॥
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी ।
कैकेइ कुटिल कीन्हि जस करनी ॥
भूप धरम बतु सत्य सराहा ।
जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा ॥
कहत राम गुन सील सुभाऊ ।
सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ ॥
बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी ।
सोक सनेह मगन मुनि ज्ञानी ॥
सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभ जीवनु मरनु, जसु अपजसु विधि हाथ ॥

और भी अनेक प्रकार से समझाकर वे भरत से राज ग्रहण करने के औचित्य को सिद्ध करते हुए अनुरोध करते हैं –

सब प्रकार भूपति बड़ भागी ।
वादि विषादु करिअ तेहि लागी ॥
यह सुनि समुझि सोचु परिहरहू ।
सिर धरि राज रजायसु करहू ॥
राम राज पद तुम्ह कहँ दीन्हा ।
पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा ॥
नृपहि बचन प्रिय नहीं प्रिय प्राना ।
करहु तात पितु बचन प्रमाना ॥
करहु सीस धरि भूप रजाई ।
हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई ॥

भरत के व्याकुलतापूर्ण उत्तर तथा राम को मनाने के लिए चित्रकूट जाने के प्रस्ताव से वशिष्ठ जी प्रसन्न हो उठते हैं। उनका तो उद्देश्य रघुकुल के राजवंश की रक्षा करना था । वे कह उठते हैं –

अवसि चलिअ बन राम जहँ, भरत मंत्रु भल कीन ।
सोक सिंधु बूड़त सबहि, तुम्ह अबलंबनु दीन्ह ॥

अयोध्या में कैकेई द्वारा किये गये उत्पात और भरत की प्रतिक्रिया तीव्र वेग से चारों दिशाओं में फैलती हैं । विदेहराज जनक भी चित्रकूट चल देते हैं । लेकिन वे तो ससुर थे उनका जाना स्वाभाविक था । तत्कालीन ऋषियों और मुनियों को उस समय की राजनैतिक स्थिति के प्रति हम अत्यन्त जागरूक पाते हैं ।

रघुकुल के राज पुरोहित वशिष्ठजी, वामदेव, जावालि और विश्वामित्र आदि समस्त विख्यात मुनिगण रामचन्द्र जी से विचारविमर्श के लिए चित्रकूट पहुँचे जाते हैं । चित्रकूट की सभा धर्म और परमार्थ की विचारगोष्ठी के साथ भारत की तात्कालिक राजनीति में उचित मोड़ देने वाली सभा थी । भक्तजन उसके धार्मिक पहलू को ही प्रधानता दे सकते हैं लेकिन लोकनीति में गहरी रुचि रखने वाले राज्य नेता को वहाँ अपने विषय से सम्बन्धित बड़ा मसाला मिलेगा । चित्रकूट की सम्पूर्ण विचारगोष्ठी और परस्पर वार्ता में सबसे अधिक प्रभावशाली महाराज वशिष्ठ जी को पाते हैं ।

राम पित्राज्ञा से राज्य-व्यवस्था से परे थे और भरत अनुचित समझ कर उसे स्वीकार नहीं करते थे। चित्त की दुविधापूर्ण स्थिति में सारा राज्य कार्य महाराज वशिष्ठ जी संचालित करते रहे । निम्नलिखित चौपाइयाँ उसकी प्रमाण हैं ।

चित्रकूट में पहुँचने पर उन्हीं के आदेश से पुरजन और परिजनों ने भगवान के आश्रम स्थल में प्रवेश किया -

मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ ।
गुरु सन कहेउ कि धारिअ पाऊ ॥
पुरजन पाइ मुनीस नियोगू ।
जल थल तकि तकि उतरेउ लोगू ॥

वार्ता का आरम्भ गुरु वशिष्ठ जी द्वारा होता है -

एकउ जुगुति न मन ठहरानी ।
सोचत भरतहिं रैन बिहानी ॥
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई ।
बैठत पठए रिषयँ बोलाई ॥
गुरु पद कमल प्रनामु करि बैठे आयसु पाइ ।
विप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ ॥

गुरु के भगवान राम के अयोध्या वापसी हेतु उपाय निकालने की चर्चा पर भरतजी ने उन्हें ही समर्थ बताया -

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दलि दुख सजइ सकल कल्याना ।
अस असीस राउरि जगु जाना ॥

वशिष्ठजी राम की वापसी का प्रस्ताव भरत के सामने रखते हैं, यदि वे उसे मानें तभी राम से वापसी के लिए वशिष्ठ जी कह सकते हैं -

तात बात फुरि राम कृपाहीं ।
राम विमुख सिधि सपनेउ नाहीं ॥
सकुचउँ तात करत एक बाता ।
अरध तजहि बुध सरबस जाता ॥
तुन्ह कानन गवनहु दोउ भाई ।
फेरिअहिं लखन सीय रघुराई ॥

यदि तुम (भरत) वन को जाना स्वीकार करो तो मैं राम को वापस कर सकता हूँ ।

भरत की त्याग बुद्धि से प्रभावित होकर राम से कहते हैं तो राम भी उन्हें की सामर्थ्यशाली बताते हैं -

सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ ।
नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
सब कर हित रुख राउरि राखें ।
आयसु किएँ मुदित फुर भाषें ॥
प्रथम जो आयसु मो कहुँ होई ।
माथे मानि करौं सिख सोई ॥

महाराज जनक के चित्रकूट आगमन पर शोक संतप्त अयोध्या तथा जनकपुर दोनों परिवारों ने एक दिन का उपवास किया । प्रात:काल महाराज वशिष्ठ ने ही सबके पास फलाहार भेजा । इससे प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण प्रबन्ध उनके हाथों में था —

दल फल मूल कंद विधि नाना ।
पावन सुन्दर सुधा समाना ॥
सादर सब कहँ राम गुरु पठए भरि भरि भार ।
पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन फरहार ॥

कई दिनों तक दोनों परिवार चित्रकूट में रह रहे हैं । भगवान तव स्वयं वशिष्ठ जी के पास जाकर कहते हैं -

गे नहाइ गुर पँहि रघुराई ।
बंदि चरन बोले रुख पाई ॥
नाथ भरत पुरजन महतारी ।
सोक बिकल वनवास दुखारी ॥
सहित समाज राउ मिथलेसू ।
बहुत दिवस भए सहत कलेसू ॥
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा ।
हित सब ही कर रौरे हाथा ॥

वशिष्ठ जी जाकर जनक महाराज से परामर्श करते हैं । फिर सब लोग भरत के पास पहुँच कर उनसे कहते हैं कि वे जो कहें वही ये गण्यमान्य लोग जाकर राम को करने के लिए कहें । परन्तु भरत जी कहते हैं -

राखि राम रुख धरम व्रतु, पराधीन मोहि जानि ।
सबके संमत सर्व हित, करिउ प्रेमु पहिचान ॥

सारी सभा भगवान के आश्रम में जुटती है और स्वयं वशिष्ठ जी पूर्व वार्ता का परिचय भगवान को देते हैं -

समय समाज धरम अविरोधा ।
बोले तब रघुवंस पुरोधा ॥
जनक भरत संवादु सुनाई ।
भरत कहाउति कही सुहाई ॥
तात राम जस आयसु देहू ।
सो सब करैं मोर मत एहू ॥

लेकिन भगवान क्या उत्तर देते हैं —

सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी ।
बोले सत्य सरल मृदु वानी ॥
विद्यमान आपुनि मिथिलेसू ।
मोर कहब सब भांति भदेसू ॥
राउर राय रजायसु होई ।
राउर सपथ सही सिर सोई ॥

इन प्रसंगों को लिखने का एकमात्र उद्देश्य यह दिखाना है कि प्राचीन काल में गुरु केवल धार्मिक कर्मकाण्डों को कराने वाला पुरोहित नहीं होता था, वरन् राजपरिवार के भोग-विलास से अलिप्त रहते हुए भी राजा से भी अधिक सक्रिय, दूरदर्शी और कर्तव्यपरायण होता था । चित्रकूट की वार्ता में महाराज वशिष्ठ का सर्वोपरि विवेकपूर्ण स्थान था, साथ ही अयोध्या और जनकपुर के दोनों राजपरिवारों की व्यवस्था और सुख सुविधा का दायित्व भी उन पर था । विश्वामित्र और जाबालि आदि ऋषियों सहित राज परिवार के समस्त लोगों को एक सूत्र में पिरोकर ले चलना साधारण पुरोहित के वश का कार्य नहीं था ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

राम वन को चले आये थे, महाराज दशरथ का स्वर्गवास हो गया । भरत पहले तो ननिहाल में थे और जब आये भी तो क्षोभ और शोक से संतप्त । इस स्थिति में अवध के राजवंश की नौका भयंकर तूफान में पड़ गई थी, लेकिन इस प्रलयंकारी तूफान से राजकुल को उबारने वाले एकमात्र वशिष्ठ थे । सारा संकट कट गया, न तो आन्तरिक विद्रोह ही हुआ और न बाहरी आक्रमण । यह सब महाराज वशिष्ठ की सामयिक सूझ-बूझ दूरदर्शी, नीति, एवं प्रबन्ध कुशलता से हुआ था जो एकमात्र आध्यात्मिक शक्ति से प्रस्फुटित होने वाली है । अवध के उत्पात का समाचार सुन कर विदेहराज जनक भी तिलमिला उठे थे, जो राजा होते हुए अपने समय के मुनियों में श्रेष्ठ थे । उन्हें भी अवध की कुशलता में सन्देह हो गया था । गृह-कलह एवं बाह्य आक्रमणों से साम्राज्य की सुरक्षा का कार्य कितना जटिल है, यह हम वर्तमान समय में नित्य प्रति की परिस्थितियों से तुलना करके जान सकते हैं ।

जो अशान्ति सब को दिखाई पड़ रही थी वह महाराज वशिष्ठ की तपस्या से टल गई । प्रत्यक्षत: वहाँ कोई उत्पात न हुआ, तभी हम बार-बार भरत जी, स्वयं भगवान राम और मनीषी जनक के मुंह से वशिष्ठजी की प्रशंसा सुनते हैं और सभी लोगों को उनके निर्देशों को सुन कर तदनुकूल कार्य करने के लिए आतुर पाते हैं । भगवान राम भरत को समझाते हुए इस तथ्य की ओर संकेत देते हैं । भरत से वे कहते हैं –

तात तात बिनु बात हमारी ।
केवल गुरुकुल कृपा सँभारी ॥
नतर प्रजा परिजन परिवारू ।
हमहि सहित सबु होत खुआरू ॥
जो बिनु अवसर अथवँ दिनेसू ।
जग केहि कहहु न होइ कलेसू ॥
तस उतपातु तात विधि कीन्हा ।
मुनि मिथलेस राखि सब लीन्हा ॥
राज काज सब लाज पति धरम, धरनि धन धाम ।
गुर प्रभाउ पालिहिं सबहिं, भल होइहि परिनाम ॥
सहित समाज तुम्हार हमारा ।
घर वन गुर प्रसाद रखवारा ॥
मातु पिता गुरस्वामि निदेसू ।
सकल धरम धरनी धर सेसू ॥

भगवान राम द्वारा कही गई ये चौपाइयाँ गुरु के प्रभावसामर्थ्य तथा कर्तव्यपरायणता मिश्रित आत्म-विश्वास और भविष्य में चौदह वर्षों तक राज्य की कुशलता की ओर संकेत देती हैं ।

भरत अयोध्या चलने को तैयार होकर भगवान से विदा माँगते हैं। तब राम उन्हें समयोचित उपदेश देकर चौदह वर्षों तक गुरु वशिष्ठ जी के आदेशों के अनुसार कार्य करने का निर्देश देते हैं –

दीन बंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन ।
देस काल अवसर सरिस बोले राम प्रवीन ॥
तात तुम्हार मोरि परिजन की ।
चिंता गुरहि नृपहि घर वन की ॥
माथे पर गुरु मुनि मिथलेसू ।
हमहि तुम्हहि सपनेहु न कलेसू ॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ ।
स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु ॥
पितु आयसु पालिहिं दुहुँ भाई ।
लोक वेद भल भूप भलाई ॥
गुरुपितु मातु स्वामि सिख पाले ।
चलेहुँ कुमग पग परहिं न खाले ॥
अस विचारि सब सोच बिहाई ।
पालहु अवध अवधि भरि जाई ॥
देसु कोसु परिजन परिवारू ।
गुरपद रजहिं लागि छरु भारू ॥
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी ।
पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥

चौदह वर्षों तक अयोध्या के चक्रवर्ती साम्राज्य का संचालन जादूटोने के बल पर नहीं हुआ था । सिंहासन पर रामजी की पादुका थी और एक समिति के हाथों में राज्य का प्रबंध था । महाराज वशिष्ठ इस समिति के अध्यक्ष तथा भरत जी और सुमंत दो सदस्य । इसका निर्माण विदेहराज जनक ने किया था ।

जनक रहे पुर बासर चारी ।
राज काल सब साज संभारी ॥
सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू ।
तेरहुति चले साजि सब साजू ॥

गुरु के उपदेश को मान कर ही अयोध्या की प्रजा पुन: सुखपूर्वक पादुका के प्रतीक रूप में मुख्य प्रबन्धक भरत के माध्यम से रामजी के राज में सुखपूर्वक रहने को तैयार हुई ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नगर नारि नर गुर सिख मानी ।
बसे सुखेन राम रजधानी ॥

इस चौपाई से हम उस काल की प्रजा के मनोबल को बहुत उच्च पाते हैं । कुमार्गी राजा को प्रजा स्वीकार नहीं करती थी ।

श्रेष्ठ पुरुषों की श्रेष्ठता सब को अपनी ओर आकर्षित करती है । लोग कहते हैं हमें सम्मान मिलता नहीं लेकिन सम्माननीय कार्य करने वाले का लोग चरण चूमते हैं । गुरु की कर्तव्यशीलता के कारण रघुकुल में उसे हम सर्वोत्कृष्ट सम्माननीय पाते हैं, पिता से भी ऊँचा उसका दर्जा था और पिता से ऊँचा कर्तव्य । पुत्र के शोक में पिता सब को अनाथ छोड़ कर चले गये लेकिन वशिष्ठ जी न तो रोये, न शोक संतप्त होकर कर्तव्य का त्याग किया । देश, काल और परिस्थिति के अनुसार राम के वन जाने के दिन से चौदह वर्ष बाद आने की तिथि तक जिस घड़ी पर जो कुछ उचित रहा स्वयं किया और राज परिवार तथा प्रजा से कराया । तभी हम राज परिवार के प्रत्येक प्राणी को उनके चरणों में लोटते हुए पाते हैं । बचपन में राम प्रात: उठकर गुरु के चरण-स्पर्श करते तो इसमें कोई विशेषता नहीं थी –

प्रात काल उठि कै रघुनाथा ।
मातु पिता गुर नावहि माथा ॥

लेकिन उस समय की बात देखिये जब वे रावण जैसे महाबली राक्षस का कुल सहित बध करके त्रिभुवन विजयी बनकर पुष्पक विमान से आकाश मार्ग से अयोध्या लौट रहे हैं । लंकापति विभीषण, बानरपति सुग्रीव और बड़े-बड़े महारथी– हनुमान, अंगद, नील, नल उनके चरण दबा रहे हैं । निषादराज पीछे धनुष लिए खड़े हैं । मार्ग के ऋषियों, मुनियों से स्थल-स्थल पर वंदित होकर आ रहे हैं । हम सामान्य लोग थोड़ा सा वैभव पाकर अपने को भूल जाते हैं । अवध वापसी के समय राम के समान वैभवशाली भला कौन था ? लेकिन अवध की भूमि पर पैर रखते ही गुरु को देखकर वे कैसे उनके चरण छूने के लिए दौड़ते हैं जैसे पहले बचपन में छूते थे –

वामदेव वशिष्ट मुनि नायक ।
देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥
धाइ धरे गुर चरन सरोरुह ।
अनुज सहित अति पुलक तनोरुहछ ॥
भेटि कुशल बूझी मुनि राया ।
हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया ॥

धाइ धरे, शब्द किस ओर संकेत करता है ? दौड़ कर उन्होंने गुरु के चरण स्पर्श किए । यह विनम्रता और मर्यादा पाकर ही हम सच्चे अर्थों में अपने को श्रेष्ठ बना सकते हैं । वर्तमान अध्यापक और विद्यार्थी सम्बन्ध को बनाए रखकर नहीं जिसमें –

गुरु सिख बधिर अंध कर लेखा ।
एक न सुनइ एक नहिं देखा ॥
हरइ सिष्य धन सोक न हरई ।
सो गुरु घोर नरक महँ परई ॥

देश और समाज को उन्नतिशील बना कर अपने को उत्तम बनाने की अभिलाषा यदि हम रखते हैं तो हमें रामायणकालीन उन मर्यादाओं को अपनाना पड़ेगा ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

स्वामी–सेवक सम्बन्ध

सेवक परिवार का आवश्यक अंग है।स्वामी-सेवक का सुसम्बन्ध पारिवारिक सुख का आधार और आपसी अविश्वास पारिवारिक कलह का निमित्त बनता है। कोई भी शासन सुचारु रूप से तब तक नहीं चल सकता जब तक उसके कर्मचारी स्वामिभक्त न हों और कर्मचारी तभी स्वामिभक्त बनते हैं जब उनके साथ प्रेम, समानता तथा आत्मीयता का व्यवहार हो। रामायण काल में इस क्षेत्र में भी आदर्श उपस्थित किया था।

स्वामी की ओर से सद्व्यवहार की प्रशंसा करते हुए भरत जी ने चित्रकूट प्रसंग में कहा है कि -

प्रभु अपने नीचहु आदरहीं ।
अगिनि धूम गिरि सिरतिनु धरहीं ॥
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा ।
मैं शिशु सेवक यद्यपि वामा ॥

भगवान ने कभी शत्रु का भी अमंगल न चाहा।

वन को प्रस्थान करते समय भगवान राम अपने निजी सेवकों के प्रति कर्तव्य न भूले। अयोध्या से निकल कर वे बाहर खड़े हुए -

निकसि वशिष्ठ द्वार भए ठाढ़े ।
देखे लोग विरह दब दाढ़े ॥
कहि प्रिय बचन सकल समुझाए ।
बिप्र वृंद रघुवीर बोलाए ॥
गुरसन कहि बरषासन दीन्हे ।
आदर दान विनय बस कीन्हे ॥
जाचक दान मान संतोषे ।
मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बोलाइ बहोरी ।
गुरहि सौंपि बोले कर जोरी ॥
सब कै सार सँभार गोसाई ।
करबि जनक जननी की नाई ॥

अपने निजी सेवकों को वे वशिष्ठ जी को सौंप गये थे और चौदह वर्ष तक उनका पालन-पोषण, देखभाल माता-पिता के तुल्य करते रहने के लिए हाथ जोड़ कर विनय कर गये थे।

इस चौपाई से भली-भाँति प्रतीत होता है कि भगवान अपने सेवकों के साथ पुत्रवत् व्यवहार करते थे। यह कितनी ऊँची बात थी। सेवकों के साथ माता-पिता के समान व्यवहार अभीष्ट है रामराज्य का यह तथ्य यदि अंगीकार कर लिया जाए तो सरकार और कर्मचारियों के बीच आये दिन होने वाले अधिकांश झगड़े मिट जाएँ।

राम चक्रवर्ती सम्राट बनने जा रहे थे कि यकायक वन-गमन करना पड़ा। लेकिन वन का मार्ग अपना कर वे राजा की तुलना में और अधिक अधिकार सम्पन्न हो गये थे। जन-जन पर उनके प्रेम का राज्य था। लेकिन वे राम अपने सेवकों और मन्त्रियों का कितना सम्मान करते थे इसका ऊपर तो उदाहरण है ही, सुमंत जी के साथ उनका व्यवहार उनकी महानता को दर्शाता है। सुमंत जी का परिवार में महाराज दशरथ समान आदर होता था। चारों भाई उनके सामने पुत्र-तुल्य ही रहते थे।

राज तिलक के दिन सवेरे जब कैकेई के राजमहल से सुमंत जी राम को उनके महल में बुलाने जाते हैं तो राम ने सचिव को आते देख कर पिता के समान ही उनका सम्मान किया -

राम सुमंत्रहि आवत देखा ।
आदरु कीन्ह पिता सम लेखा ॥

राम वन-गमन के अवसर पर शोक विह्वल महाराज ने सुमन्त को रथ सहित भगवान को वन दिखाने के लिए भेजा। गंगा के किनारे सुमन्त जी राम को अयोध्या लौटाने के लिए चरणों पर लोट गये, उस समय भगवान राम अपने वचनों पर दृढ़ रहते हुये भी सुमन्त जी के साथ पिता तुल्य व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं -

मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा ।
तात धरम मतु तुम्ह सब सोधा ॥
सिबि दधीच हरिचन्द नरेसा ।
सहे धरम हित कोटि कलेसा ॥
रंतिदेव बलि भूप सुजाना ।
धरमु धरेउ सहि संकट नाना ॥
धरम न दूसर सत्य समाना ।
आगम निगम पुरान बखाना ॥
मैं सोइ धरम सुलभ करि पावा ।
तजे तिहूँ पुर अपजसु छाबा ॥

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संभावित कहुँ अपजसु लाहू ।
मरन कोटि सम दारुन दाहू ॥
तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ ।
दिएँ उतर फिर पातक लहऊँ ॥

इस प्रकार यद्यपि उस समय वंश परम्परागत राज्यतन्त्र था लेकिन आर्य संस्कृति के अनुसार पद और आयु के अनुसार सब का सम्मान और स्वाभिमान सुरक्षित था ।

राजकर्मचारियों की स्वामिभक्ति

राजा और राजपरिवार की ओर से दान, मान और व्यवहार से सन्तुष्ट रहकर बहुसंख्यक राजकर्मचारी और निजी सेवक गण स्वामिभक्त रहते थे । व्यक्तिगत रूप में महाराज के परम वीर सुमन्त जी को ले सकते हैं जिनकी राज्य निष्ठा तर्क से परे थी । अपनी निष्ठा और स्वामिभक्ति के कारण उन्हें अंत:पुर तक प्रवेश का अधिकार प्राप्त था । परिवार के सामने उनकी स्थिति महाराज के समान सम्माननीय थी । रामायण में मुख्य कर्ता-धर्ता के रूप में सुमन्त जी स्थान-स्थान पर वर्णित हैं । राम के राज तिलक से लेकर भरत मनावन तक हर्ष और शोक के समस्त स्थलों पर सारा प्रबन्ध उन्हीं का था । महाराज के निर्देश के अनुसार रथ से जाकर राम-लक्ष्मण-सीता को वन दिखाकर चार दिन में समझा बुझा कर वापस लाने का गुरुतर कार्य उन्हें मिला था क्योंकि शोक संतप्त परिवार में धीर और विवेकी सुमन्त जी ही विपत्ति की धारा को मोड़ने में सक्षम थे ।

गंगा तट पर राम को जटा बनाए हुए आगे बढ़ने के लिए तत्पर देख कर सुमन्त रोने लगे -

अनुज सहित सिर जटा बनाए ।
देखि सुमंत नयन जल छाए ॥
हृदय दाह अति बदन मलीना ।
कह कर जोरि वचन अति दीना ॥
नाथ कहेउ अस कौसल नाथा ।
लै रथ जाहु राम के साथा ॥
बनु देखाइ सुरसरि अन्हवाई ।
आनेह फेरि बेगि दोउ भाई ॥
लखनु राम सिय आनेहु फेरी ।
संसय सकल संकोच निबेरी ॥
नृप अस कहेउ गोसाँइ जस कहइ करौं बलि सोइ ।
करि बिनती पायन्ह परेउ दीन्ह बाल जिमि रोइ ॥
तात कृपा करि कीजिअ सोई ।
जाते अबध अनाथ न होई ॥

अवध राज का कितना बड़ा हित उनके सामने था और राजा के वचनों को अक्षरश: पालन करने में कितनी निष्ठा थी कि उनका अपना सर्वस्व उसके लिए पूर्ण रूपेण समर्पित था । बूढ़े मन्त्री राम के चरणों पर बालक समान लोट कर रोते हैं । लक्ष्मण और सीता जी को भी उन्होंने अनेक प्रकार से समझाया लेकिन जब कोई भी लौटने को तैयार न हुए तो उनकी दशा कैसी होती है-

सुनि सुमंतु सिय सीतलि बानी ।
भयउ बिकल जनु फनि मनि हानी ॥
नयन सूझ नहिं सुनहि न काना ।
कहि न सकइ कछु अति अकुलाना ॥
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती ।
तदपि होति नहिं सीतलि छाती ॥
जतन अनेक साथ हित कीन्हे ।
उचित उतर रघुनन्दन दीन्हे ॥
राम लखन सिय पद सिरु नाई ।
फिरेउ बनिक जिमि मूर गवाई ॥
बरबस राम सुमंत्रु पठाए ।
सुरसरि तीर आप तब आए ॥

निषादराज भगवान को वन में पहुँचाने गया था । वह जब कई दिन के बाद वापस लौटा तो भी सुमन्त को राम विरह में विलपते पाता हैं —

फिरेउ निषादु प्रभुहि पहुँचाई ।
सचिव सहित रथ देखेसि आई ॥
मन्त्री बिकल बिलोकि निषादू ।
कहि न जाइ जस भयउ बिषादू ॥
राम राम सिय लखन पुकारी ।
परेउ धरनि तल व्याकुल भारी ॥
धरि धीरजु तब कहइ निषादू ।
अब सुमंत परिहरहु बिषादू ॥
तुम्ह पंडित परमारथ ज्ञाता ।
धरिहु धीर लखि बिमुख बिधाता ॥
बिबिध कथा कहि कहि मृदु बानी ।
रथ बैठारेउ बरबस आनी ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोक सिथिल रथु सकइ न हांकी ।
रघुवर बिरह पीर उर बांकी ॥
भयउ निषादु बिषादु बस देखत सचिव तुंरग ।
बोलि सुसेवक चारि तब दिए सारथी संग ॥

सुमन्त जी राजपरिवार के लिए पिता तुल्य थे, उनकी शोकावस्था का प्रतिपादन करने वाली उपरोक्त चौपाइयाँ दशरथ जी की शोक संतप्तावस्था से कम नहीं हैं । निषाद और भगवान दोनों उन्हें पंडित, परमारथवादी और धर्ममत का शोधन करने वाले तत्वज्ञानी बताते हैं । वास्तव में वे थे भी । लेकिन स्वामी तथा राज्य के हित के लिए वे एक अविवेकी व्यक्ति की भाँति रोये और विलाप किया । अवध के राजपरिवार में उन्हें उच्च स्थान वैसे नहीं मिल गया था । अपनी निष्ठा, श्रद्धा स्वामिभक्ति और राज्य के प्रति हितैषिता की उच्च भावना के कारण वे सब के द्वारा समादृत थे ।

स्वामी के प्रति निष्कपट व्यवहार

सुमन्त जी की स्वामिभक्ति के प्रसंग में एक बात और उल्लेखनीय है । वह है उनकी निष्कपट भावना । गंगातट पर वार्ता के प्रसंग में राम तथा सीता ने समयोचित सन्देश पिता, माता, परिजन तथा भरत के लिए कहने हेतु सुमन्त से कहे थे । इस अवसर पर लक्ष्मण ने कुछ कटु सन्देश महाराज तथा कैकेयी से कहने के लिए सुमन्त से कहे । लेकिन राम ने उन्हें डांट कर सुमन्त जी से उन वचनों को राजा से कहने को मना कर दिया था । लेकिन राम के प्रति अनन्य अनुराग रखते हुए भी स्वामी के प्रति किसी प्रकार का दुराव रखना सुमन्त जी ने सेवक धर्म के विपरीत समझा ।

कौशल्या के महल में पहुँचकर विलाप करते हुए महाराज को वे राम-वन-गमन की कथा आद्योपान्त सुनाते हैं और राम तथा सीता का सब को दिया गया सन्देश सुनाते हैं । इस अवसर पर लक्ष्मण के वचनों को छिपा रखना उन्होंने अपना धर्म न समझा, उसे भी महाराज से कह दिया और राम द्वारा न कहने के लिए वर्जित शब्दों को भी अक्षरशः सुना दिया -

कहव संदेसु भरत के आएँ ।
नीति न तजिअ राज पदु पाएँ ॥
पालेहु प्रजहि करम मन बानी ।
सेएहु मातु सकल सम जानी ॥
और निवाहेहु भायप भाई ।
करि पितु मातु सुजन सेवकाई ॥
लखन कहे कछु बचन कठोरा ।
बरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥
बार बार निज सपथ देवाई ।
कहबि न तात लखन लरिकाई ॥

पूरे प्रसंग को बताकर लक्ष्मण द्वारा कही गई बात को न कहने में अपनी असमर्थता बता दी । यह स्वामिभक्ति का उच्च कोटि का उदाहरण है ।

भरत के चित्रकूट वापसी के बाद राम की चरण-पादुका सिंहासन पर थीं, लेकिन राजकार्य प्रत्यक्षतः गुरु वशिष्ठ, सुमन्त जी और भरत की संयुक्त समिति द्वारा होता था। सुमन्त के अधिकार चौदह वर्षों तक बहुत बढ़ गये थे । वे सर्वेसर्वा थे, लेकिन चौदह वर्षों तक इस स्थिति में रहने के बाद भी उनकी स्वामिभक्ति और राज्य निष्ठा में रंच मात्र भी अन्तर नहीं पड़ा । जैसे हुमायूं के विश्वासपात्र सरदार बैरम खाँ को अल्प वयस्क अकबर को सेवा करने का सुअवसर केवल पाँच वर्षों के लिये मिला था । लेकिन इस अल्पावधि में ही उसकी निष्ठा संदेहास्पद हो उठी । अकबर द्वारा राज्याधिकार अपने हाथ में लेने के अवसर पर बैरम खाँ विद्रोह कर बैठा और स्वामी को मारने के लिये तैयार हो गया ।

महाराणा प्रताप के पिता उदयसिंह के संरक्षक बनवीर की भी यही कहानी है । बालक उदयसिंह को अंधेरी रात में मार डालने के लिये वह गया । लेकिन स्वामिभक्त दाई पन्ना ने अपने पुत्र का बलिदान देकर राजा के पुत्र को बचाया ।

इस सन्दर्भ में सुमन्त की स्वामिभक्ति कितनी उच्च प्रतीत होती है इसका निर्णय पाठक स्वयं करें ।

रघुकुल के सेवकगण

ऊपर सुसेवक के रूप में दो-एक कर्मचारियों के उदाहरण दिये गये हैं । सामान्य रूप से रघुकुल के निचले दर्जे के कर्मचारियों से लेकर उच्च श्रेणी के अधिकारीगणों तक सभी श्रेष्ठ स्वामिभक्त थे । इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि अवध में राम वन-गमन, दशरथ मरण और भरत की अनुपस्थिति से उत्पन्न भयंकर व्यवधान के अवसर पर सुयोग्य और विश्वसनीय कर्मचारियों के बल पर राज्य सत्ता पूर्ववत् चलती रहीं। आन्तरिक विद्रोह नहीं हुए और न बाहरी आक्रमण की शंका उत्पन्न हुई । राज-परिवार पर कोई आँच नहीं आई ।

महाराज भरत, पुरजन, परिजन, सचिव, महाजन, गुरु-मण्डली तथा सेना सहित राम को मनाने के लिये चित्रकूट गमन कर अयोध्या से अनुपस्थित रहे, उन्हें दो एक महीने तो लगे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही होंगे। इस बीच अवध का राज्य जिम्मेदार व्यक्तियों से सूना था। लेकिन रघुकुल में विश्वासपात्र कर्मचारियों की एक लम्बी शृंखला थी जिनके विषय में राजा को जानकारी भी रहती थी। भरत नये राजा थे, लेकिन वे भी जानते थे। अपनी अनुपस्थिति में राज्य का सारा भार उन्हीं पर सौंप दिया -

करइ स्वामि हित सेवक सोई।
दूषन कोटि देइ किन कोई॥
अस विचारि सुचि सेवक बोले।
जे सपनेहुँ निज धरम न डोले॥
कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा।
जो जेहि लायक सो तेहि राखा॥
करि जसु जतनु राखि रखबारे।
राम मातु पहिं भरतु सिधारे॥

सभी को विदित है कि राज परिवार, उच्च अधिकारियों और शक्तिशाली सेना की अनुपस्थिति में भी अवध के साम्राज्य में कोई अप्रिय घटना न हुई, कहीं पत्ता तक न खड़का।

चित्रकूट वापसी पर चौदह वर्षों तक राज्य संचालन सुयोग्य कर्मचारियों की तत्परता से ही चलता रहा। वापसी पर भरत ने उनकी सभा को और उपदेश देकर सबको अपने-अपने काम पर लगा दिया।

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे।
निज निज काज पाइ सिख ओधे॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि राज्य का कार्य उत्तम कोटि के स्वामिभक्त कर्मचारियों के बल पर ही हो सकता है। जब उनके साथ आत्मीयता का व्यवहार होता है तभी वे स्वामिभक्त बनते हैं। मानस में स्वामी और सेवक दोनों पक्षों के आदर्शानुकरण का प्रमाण मिलता है।

ooo

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुचित का निषेध

परिस्थिति और दशा के अनुसार व्यक्ति अथवा समाज के कर्तव्य में अन्तर पड़ता है। "क्या उचित है ?" और "क्या अनुचित है ?" इसका निर्णय समय और परिस्थिति के सन्दर्भ में ही हो सकता है। उचित का पालन और अनुचित का निषेध ही धर्म है।

संसार में जिनकी गाथाएँ गाई जाती हैं, जिन्हें साहसी सज्जन, सराहनीय अथवा महापुरुष माना गया है, उन सभी को अपने-अपने ढंग से अन्याय एवं अनौचित्य से संघर्ष करना है। संघर्ष की अग्नि में तपने से उन्हें थोड़ा शारीरिक कष्ट भले ही सहना पड़ा हो, लौकिक जीवन में अड़चनों, कठिनाइयों तथा कठोर विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा हो, लेकिन कर्तव्य पालन की परीक्षा में खरे उतरने पर उनकी अन्तरात्मा को सच्चा सुख और सन्तोष मिला और उसी से वे महान बने।

अनुचित के विरोध में कमर कस कर खड़े होना धर्म है। मनुष्य के पुरुषार्थ, विवेक तथा आत्मबल का परिचय ऐसे ही अवसरों पर मिलता है, अन्ध-परम्पराओं, अन्धविश्वासों के पीछे सिर झुका कर चलते रहना अनुचित को आँखों से देखते रहकर और मन में समझते रहकर भी विरोध के लिये साहस न करना—कायरता और मन की दुर्बलता का प्रतीक है।

हमारे धर्म-ग्रन्थों में स्थल-स्थल पर इसके उदाहरण मिलते हैं, जहाँ अनुचित का विरोध किया गया। गीता तो इसी का उदाहरण मात्र है। भगवान् ने अर्जुन को समझाया कि अन्याय और अधर्म के सामने न झुकने के लिये यदि पूजनीय और प्रिय लोगों तक का बध करना पड़े तो संकोच करने की आवश्यकता नहीं।

एक बार अन्याय के प्रति अपने शिष्यों की प्रतिक्रिया देखने के मन्तव्य से शिवजी ने एक बड़ा ही अन्यायपूर्ण कार्य किया, उसको देखकर शिष्यगण स्तब्ध रह गये किन्तु बोला कोई नहीं।

परशुरामजी उनके शिष्यों में से एक थे। उन्होंने शिवजी से वैसा न करने की बड़ी विनम्र प्रार्थना की। लेकिन शिवजी ने न तो उनकी बात सुनी और न अपने अन्याय को बन्द किया। जब समझाने बुझाने से कोई प्रभाव न हुआ तो परशुराम जी अपना फरसा लेकर उनके विरुद्ध खड़े हो गये और उन पर प्रहार कर दिया। शिवजी के मस्तक पर बहुत चोट लगी। सारे शिष्य घबड़ा गये वे परशुराम को बुरा-भला कहने लगे।

इस पर शिवजी ने उन सबको समझाते हुए कहा कि यह जो कुछ अन्यायपूर्ण क्रिया मैंने की है, वह सब अन्याय के प्रति तुम्हारी प्रतिक्रिया देखने के लिये। अन्याय को देखकर परशुराम के अतिरिक्त तुम सब मौन हो गये। लेकिन अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना प्रत्येक धर्मशील व्यक्ति का मानवोचित कर्तव्य है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की जीवन गाथा "रामायण" के प्रति जनसाधारण में प्रायः यही धारणा है कि वह भक्ति-पथ का प्रतिपादन करने वाला महाकाव्य है, जिसके अन्तर्गत अनुशासन, सेवा और आत्म-समर्पण की भावनाएँ अधिक प्रबल हैं। लेकिन सूक्ष्म अध्ययन करने पर रामायण के अन्तर्गत अनुचित का निषेध करते हुए हम सभी महत्वपूर्ण पात्रों को पायेंगे।

अनुचित के सामने सिर झुका कर उसके विरोध में खड़े होते हुए सर्वप्रथम हम लोकनायक भगवान् राम को पाते हैं। हम सब प्रायः यही स्वीकार करते हैं कि भगवान् राम ने पिता की आज्ञा का पालन करके राज त्यागा और वन गये। लेकिन तथ्य यह था कि स्वयं महाराज दशरथ जी ने राम से वन जाने के लिये अपने मुँह से एक शब्द नहीं कहा, उल्टे वे प्रत्येक उपाय से अन्त तक उन्हें रोकते ही रहे।

महाराज दशरथ जी ने कैकेयी से विवाह के अवसर पर कैकय नरेश को वचन दिया था कि कैकेई के गर्भ से उत्पन्न पुत्र को राज्य का अधिकार मिलेगा। उनके चारों पुत्रों में राम सर्वश्रेष्ठ थे। सब भाइयों का उनके प्रति सम्मान था। प्रजा, पुरजन, गुरुमण्डली और छोटे-बड़े सबको राम प्यारे थे। गुण, शील और औचित्य के आधार पर राज्य के सुयोग्य उत्तराधिकारी वे ही थे। महाराज इसे प्रत्यक्षतः स्वीकार करते थे। विवाह के अवसर पर दूसरे प्रकार की मनोदशा में उन्होंने कैकेई के पुत्र को राज्य देने का वचन दिया था। चारों पुत्रों के विवाह के बाद परिस्थिति दूसरी थी, जिसमें राम अद्वितीय स्थिति प्राप्त किये थे। उन्हें युवराज पद देने की प्रबल इच्छा रखने पर भी दशरथ जी के मन का चोर उन्हें समय-समय पर सशंकित कर देता था। इसीलिये भरत की अनुपस्थिति में उन्होंने शीघ्रतापूर्वक राम को युवराजपद देने की क्रिया सम्पन्न कर डालना उचित समझा।

कैकय नरेश को वचन देने की बात सर्वसाधारण न जानते थे। गुरु वशिष्ठ जी तो तब भी पुरोहित थे, उनसे बात भला कैसे छिपती। इसीलिये भरत की अनुपस्थिति में और कैकेई को किसी प्रकार की सूचना दिये बिना चुपके-चुपके महाराज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दशरथ जी ने सब तैयारी पूरी की । वशिष्ठ जी से राम को युवराजपद देने के लिये राजा द्वारा आवश्यकता से अधिक विनम्रता की बातें कहकर राजी करने की बात इस तथ्य की पुष्टि करती हैं ।

सबहि राम प्रिय जिहि विधि मोही ।
प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही ॥
बिप्र सहित परिवार गोसाईं ।
करहिं छोहु सब रौरिहि नाईं ॥

इन चौपाइयों में महाराज ने राम की योग्यता, लोकप्रियता और गुण सम्पन्नता का वर्णन तो किया है लेकिन ज्येष्ठ पुत्र के रूप में राज्य का उत्तराधिकारी होने की बात कहीं नहीं कही है ।

यह चौपाइयाँ गुरु का समर्थन लेने के लिये हैं ।

सब बिधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी ।
बोलेउ राउ रहसि मृदु बानी ॥
नाथ रामु करिअहिं जुबराजू ।
कहिअ कृपा करि करिअ समाजू ॥

यदि महाराज की कोर दबी न होती तो हम उन्हें इतना दबते हुए न पाते । कैकेयी द्वारा वर माँगने में यदि औचित्य न होता तो गुरु वशिष्ठ जी, विप्र मण्डली, प्रजा के प्रतिनिधि आदि सब उसका विरोध किये बिना न रहते ।

राम इस रहस्य से सर्वथा अपरिचित थे । राजतिलक दिये जाने के दिन कैकेयी के महल में जब वे गये तो उन्हें उसी से सब तथ्य मालूम हुआ ।

उन्होंने उसी समय निश्चय कर लिया कि पिताजी पुत्र-प्रेम विषयक मोह के वशीभूत होकर मुझे वन जाने की अनुमति नहीं देंगे, लेकिन मेरे वन न जाने से रघुकुल के सत्यपालक पिता महाराज दशरथ कलंकित होंगे और उनके कलंक का निमित्त मेरा राज्यग्रहण होगा । ऐसी स्थिति में मोहजनित आसक्ति रूपी अनौचित्य का विरोध करना तथा पिता के सत्य वचनों का पालन करना राम ने अपना कर्तव्य निश्चित किया । दशरथ जी राम को वन जाने देना नहीं चाहते थे ।

मूर्च्छित अवस्था से जागने पर सुमन्त ने राम के आगमन की सूचना महाराज को दी । उस समय की अवस्था को देखिये -

लिए सनेह बिकल उर लाई ।
गै मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई ॥
रामहि चितइ रहेउ नरनाहू ।
चला बिलोचन बारि प्रबाहू ॥
बिधिहि मनाव राउ मन माहीं ।
जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं ॥
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी ।
बिनती सुनहु सदासिव मोरी ॥
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी ।
आरति हरहु दीन जनु जानी ॥
तुम्ह प्रेरक सबके हृदयँ सो मति रामहि देहु ।
बचनु मोर तजि रहहिं घर परिहरि सील सनेहु ॥
अजसु होउ जग सुजस नसाऊ ।
नरक परौं बरु सुरपुर जाऊ ॥
सब दुख दुसह सहाबहु मोही ।
लोचन ओटि रामु जनि होही ॥
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला ।
पीपर पात सरिस मन डोला ॥

महाराज दशरथ तो इस अवस्था तक पहुँचने को तैयार थे । वे अपयश के भागी बन कर प्यारे राम को नेत्रों से ओझल नहीं करना चाहते थे ।

लेकिन राम ने इसे उचित नहीं समझा –

रघुपति पितहि प्रेमबस जानी ।
पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी ॥
तात कहउँ कछु करउँ ढिठाई ।
अनुचितु छमब जानि लरिकाई ॥
मंगल समय सनेह बस, सोच परिहरिउ तात ।
आयसु देइअ हरषि हियँ, कहि पुलके प्रभु गात ॥

माता कौशल्या से विदा माँग कर लक्ष्मण व सीता के सहित वन जाने की पूरी तैयारी करके वे महाराज के समीप पहुँच कर यही कहते हैं -

पितु असीस आयसु मोहि दीजै ।
हरष समय बिसमउ कत कीजै ॥
तात किएँ प्रिय प्रेम प्रमादू ।
जसु जग जाइ होइ अपवादू ॥

कितनी सुन्दर बात भगवान् ने इस स्थल पर कही है कि "हे तात ! प्रिय के प्रेमवश प्रमाद अर्थात् कर्तव्य पालन में त्रुटि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने से जगत में यश जाता रहेगा और आपकी निन्दा होगी।''

महाराज तो अन्त तक राम को घर रखने के लिए विविध प्रकार के उपाय करते रहे –

रायँ राम राखन हित लागी ।
बहुत उपाय किए छलु त्यागी ॥
लखी राम रुख रहत न जाने ।
धरम धुरंधर धीर सयाने ॥
तब नृप सीय लाय उर लीन्ही ।
अति हित बहुत भाँति सिख दीन्ही ॥

महाराज राम के वियोग में मूच्छित हो जाते हैं। परन्तु राम शीघ्रतापूर्व वन के लिए प्रस्थान कर जाते हैं। महाराज राम को वापस लाने का प्रयत्न फिर भी नहीं त्यागते।

गइ मुरुछा तब भूपति जागे ।
बोलि सुमंत कहन अस लागे ॥
सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु, फिरेहु गएँ दिन चारि ॥
जौ नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई ।
सत्य संध दृढ़ व्रत रघुराई ॥
तौ तुम्ह विनय करेहु करि जोरी ।
फेरिअ प्रभु मिथिलेस किसोरी ॥
एहि बिधि करेहु उपाय कदंबा ।
फिरइ तो होइ प्रान अवलम्बा ॥

सुमन्त जी ने महाराज के निर्देशानुसार गंगा तट पर राम को अवध वापस ले चलने के लिये प्रत्येक उपाय किये। राजा का सन्देश सुनाते हुए वे राम के चरणों पर गिर कर बालक के समान रोये भी। स्वयं पिता द्वारा इतने उपाय करने पर और प्राणान्त तक की अवस्था तक पहुँचने की स्थिति की बात जानते हुये भी राम वापस न लौटे। ऐसा करके उन्होंने मोहजनित आदेश का पालन न करके कर्तव्य मिश्रित पिता के सत्य वचनों का पालन किया। यही उचित था।

हम देखते हैं कि भरत जी सम्पूर्ण अयोध्यावासियों, माताओं, गुरु मण्डली सबको लेकर राम को वापस लाने के लिए चित्रकूट गये। राम पर औचित्यपूर्ण सम्माननीय प्रभाव रखने वाले तीन बड़े—माता कौशल्या, गुरु वशिष्ठ तथा महाराज जनक भरत की त्याग वृत्ति से द्रवित हो उठे थे। वे सब भरत के मत का समर्थन करने लगे। लेकिन राम वन से न लौटे।

इन सब प्रसंगों का अध्ययन करके कोई भी विवेकशील व्यक्ति यही कहेगा कि रामायण अनुचित का विरोध और उचित का प्रतिपादन करने के लिये लिखी गई है।

राम द्वारा निषाद जैसे नीच जाति को गले लगाकर उसे अपना मित्र बनाया और भरत से भी श्रेष्ठ बताया –

तुम मम सखा भरत सम भ्राता ।
सदा रहेउ पुर आवत जाता ॥

बन्दर और भालुओं जैसी वनमानुष जाति को समानता का अधिकार देना क्या तात्कलिक प्रचलित मान्यताओं के विरुद्ध क्रान्ति नहीं है ? भीलनी शबरी के जूठे बेर खाकर क्या राम ने सामाजिक क्रान्ति का उद्‌बोधन नहीं किया ? क्या उन्होंने यह नहीं बताया कि मिथ्या आडम्बरों में न फँसकर मनुष्य के हृदयगत् प्रेम को झाँक कर तदनुकूल व्यवहार करना चाहिये ? रामायण से यदि इन मार्मिक आदर्श प्रसंगों को निकाल दिया जाये तो वह निष्प्राण ग्रन्थ के रूप में दीख पड़ेगी।

राम की सारी साधना, सम्पूर्ण लीला, एकमात्र अनुचित का विरोध और उचित का प्रतिपादन करने के लिये होती है। पंचवटी में ऋषि-मुनियों के आश्रमों में भ्रमण करते हुए उन्होंने राक्षसों द्वारा खाये गये मुनियों के अस्थि समूह को देखा तो हृदय विरोध के लिये प्रबल हो उठा –

अस्थि समूह देखि रघुराया ।
पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया ॥
निसिचर निकर सकल मुनि खाए ।
मुनि रघुवीर नयन जल छाए ॥
निसिचर हीन करउँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह ।
सकल मुनिन्ह के आश्रम, जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥

यह भी तो बड़ा विरोध था। लेकिन पुरुषार्थी और धर्मपरायण व्यक्ति अनुचित को देख कर चुप नहीं रह सकता। उसका आत्मबल और अन्तरात्मा उसे धिक्कारने लगते हैं। क्षणिक स्वार्थ और इन्द्रियजन्य भोगों के वशीभूत होकर वह अपनी गतिविधि का निश्चय नहीं करता। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम और रामायण के अन्य प्रमुख पात्रों के जीवन से हमें यही सीख मिलती है।

भरत का माता से विरोध

माता-पिता की आज्ञा-पालन धर्म कर्तव्य माना गया है। सुयोग्य पुत्र से यही आशा की जाती है। लेकिन जहाँ माता-पिता, गुरुजनों अथवा बड़ों से अनुचित काम होने लगें तो पुत्र द्वारा विरोध ही मंगलकारी बनता है। गोस्वामी जी अपने एक पद में कहते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तज्यो पिता प्रहलाद, विभीषण बन्धु भरत महतारी ।
बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज बनितन भय मुद मंगलकारी ॥
नाते नेह राम के मनियत, सुदृढ़ सुसेव्य जहाँ लौं ।
अंजन कहाँ आँख जिंह फूटे बहुतक कहौं कहाँ लौं ॥

प्रहलाद ने अपने आततायी पिता का विरोध किया । विभीषण ने भाई रावण का और भरत ने माता का विरोध किया । लेकिन ये सब मंगलकारी हुए । क्यों ?

संसार के समस्त नाते ईश्वर और कर्तव्य रूपी धुरी के चारों और घूमते हैं । नियम के विरुद्ध चलकर उनका अस्तित्व नहीं रह सकता । कर्तव्य के विरोध में जो कोई हो उसका विरोध शास्त्रविहित है ।

रामायण के प्रमुख पात्रों में महाराज भरत अग्रगण्य हैं । भरत का चरित्र राम के समान पवित्र और पूजनीय है ।

भरत सरिस को अस जग माही ।
जग जप राम राम जप जाही ॥

सारा संसार राम की आराधना करता है और राम भरत का जप करने वाले थे । माता कौशल्या, गुरु वशिष्ठ, विदेहराज जनक सभी अध्यात्मवादियों ने मुक्त कंठ से भरत की भूरि-भूरि प्रशंसा की है । रामायण के समस्त पात्रों के चरित्र पर कहीं न कहीं उंगली उठाई जा सकती है । बालि-वध, सूपर्णखा के नाक-कान काटने के प्रसंग को लेकर भगवान राम के चरित्र पर भी लोग उंगली उठा देते हैं । लेकिन सम्पूर्ण रामायण में भरत का चरित्र निष्कलंक और उज्ज्वल है ।

हम देखते हैं कि भरत की महानता माता कैकेई के अनुचित कार्यों के विरोध से ही हुई ।

कैकेई ने अपने पुत्र भरत को राज्य दिलाने के लोभ में कुल और वंश की सारी मर्यादाओं को ठुकरा दिया । राम वन-गमन, महाराज दशरथ मरण और स्वयं अपने लिये वैधव्य तक को निमन्त्रण देने की वही निमित्त थी ।

वन में आग लगाने वाली भीलनी के समान वह समस्त उत्पात मचाकर भरत के आगमन के पूर्व फूली हुई बैठी थी । उसे विश्वास था कि राज्य का अधिकार पाकर भरत प्रसन्नता से उत्फुल्ल हो उठेंगे -

आवत सुत सुनि कैकय नन्दिनि ।
हरषी रवि कुल जलरुह चंदिनि ॥
सजि आरती मुदित उठि धाई ।
द्वारेहिं भेटि भवन लेइ आई ॥
कैकेई हरषित एहि भाँती ।
मनहुँ मुदित दव लाइ किराती ॥
सुतहिं ससोच देखि मन मारे ।
पूँछति नैहर कुसल हमारे ॥

उसे बड़ी प्रसन्नता इसलिये थी कि पुत्र भरत उसके किये गये कार्य से प्रसन्न होंगे । अपने कार्य के समर्थन में वह भरत से कहती हैं —

तात बात मैं सकल संवारी ।
भै मंथरा सहाय बिचारी ॥

पिता के मरण का हेतु पूछने पर वह भरत को आदि से अन्त तक की कथा सुनाती है -

आदिहु ते सब आपनि करनी ।
कुटिल कठोर मुदित मन बरनी ॥
भरतहि बिसरेउ पितु मरन, सुनत राम बन गौनु ।
हेतु अपनपउ जानि जियँ, थकित रहे धरि मौनु ॥

भरत की विकलता का कारण कैकेयी ने पिता की मृत्यु को ही समझा । वह भरत से शोक का परित्याग कर राज्य करने को कहती है -

तात राउ नहिं सोचै जोगू ।
बिढई सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू ॥
अस अनुमानि सोच परिहरहू ।
सहित समाज राज पुर करहू ॥

राज्य करने हेतु माता की आज्ञा सुनकर भरत सहम उठते हैं -

सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू ।
पाके छत जनु लाव अँगारू ॥

वे विह्वल हो उठते हैं । माता के अनौचित्यपूर्ण प्रस्ताव के लिये सहमत होना सम्भव नहीं था । कोई भी श्रेष्ठ पुरुष अनीति से प्राप्त धन सम्पदा को स्वीकर नहीं करता । भरत विवेकी और रघुकुल के सुयोग्य राजकुमार थे । भला वे राज्य प्रलोभन में धर्म-पथ से कैसे विचलित होते ? माता कैकेयी को दिया हुआ उत्तर कितना मार्मिक और विवेकपूर्ण है जो किसी महान् त्यागी के मुँह से ही शोभा देता है —

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धीरज धरि भरि लेहिं उसासा ।
पापिनि सबहि भाँति कुल नासा ॥
जौ पै कुरुचि रही अति तोही ।
जनमत काहै न मारे मोही ॥
पेड़ काटि तै पालउ सींचा ।
मीन जिउन निति बारि उलीचा ॥
हंस बंसु दसरथु जनकु, राम लखन से भाइ ।
जननी तू जननी भई विधि सन कछु न बसाई ॥

आगे वे कैकेई को कुमति के लिए धिक्कारते हुए कहते हैं -

जब तैं कुमति कुमत जियँ ठयऊ ।
खंड खंड होइ हृदय न गयऊ ॥
बर माँगत मन भई नहिं पीरा ।
गरि न जीह मुँह परेउ न कीरा ॥
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही ।
मरन काल विधि मति हरि लीन्ही ॥
बिधिहुँ न नारि हृदय गति जानी ।
सकल कपट अघ अवगुन खानी ॥
सरल सुसील धरम रत राऊ ।
सो किमि जानै तीय सुभाऊ ॥
अस को जीव जंतु जग माहीं ।
जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं ॥
भे अति अहित रामु तेउ तोही ।
को तू अहसि सत्य कहुँ मोही ॥
जो हसिँ सो हसिँ मुँह मसि लाई ।
आँखि ओट उठि बैठहि जाई ॥
राम बिरोधी हृदय तें, प्रगट कीन्हु बिधि मोहि ।
मो समान को पातकी बादि, कहउँ कछु तोहि ॥

भाषा शास्त्र में सभ्यतापूर्ण धिक्कार के लिए जितने शब्द संभव हो सकते हैं, भरत ने उन सबका प्रयोग माता को धिक्कारने के लिए किया है ।

लघु भ्राता शत्रुघ्न भी माता के कुटिलतापूर्ण कार्यों को सुनकर सन्तुष्ट नहीं हैं । लेकिन वे उन्हें धिक्कारने का साहस न कर पाकर मन ही मन जल रहे हैं -

सुनि सत्रुघन मातु कुटिलाई ।
जरिहि गात रिस कछु न बसाई ॥

उसी समय वस्त्रों और आभूषणों से अलंकृत होकर कुबरी मंथरा पहुँच जाती है । शत्रुघ्न अपना क्रोध उसी पर उतारते हैं -

लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई ।
बरत अनल घृत आहुति पाई ॥
हुमगि लात तकि कूबरि मारा ।
परि मुँह भर महि करत पुकारा ॥

भरत विवेकी थे। उस विषम स्थिति में भी वे विवेक शून्य होकर आचरण नहीं कर रहे थे । माता कैकेयी को अनेक कटु वचन वे कहते हैं, लेकिन उन सारे शब्दों में आदर्श और सभ्यता पूर्ण रूप से परिलक्षित होती हैं । भरत जी ने उसी समय से कैकेई को माता के रूप में त्याग दिया । जीवन भर कैकेयी को पुत्र की हार्दिक प्रसन्नता का दर्शन नहीं हो सका । उनकी विवेकशीलता का प्रमाण माता कौशल्या के महल में मिलता है । कैकेयी के भवन से उठ कर वे माता कौशल्या के महल में पहुँचते हैं और दहाड़ मार कर विलाप करते हैं । कौशल्या जी उनको राम वन-गमन और महाराज के मरने का पूरा विवरण विलाप करते हुए सुनाती हैं । अथाह दु:ख की बात कहते-कहते माता कौशल्या की दशा मृतक समान हो उठती है । उस समय भरत उन्हें समझाते हैं –

भरतहुँ मातु सकल समुझाई ।
कहि पुरान श्रुति कथा सुहाई ॥

अनेक प्रकार से सौगन्ध खाकर वे अपनी निष्कपटता और दोष रहित होने का प्रमाण देते हैं ।

महाराज का अन्तिम संस्कार पूर्ण होने के बाद राजसभा बैठती है और महाराज वाशिष्ठ, माता, सुमन्त और मन्त्रीगण सभी भरत से राज्य स्वीकार करने को कहते हैं । लेकिन भरत जी उसे न स्वीकार करके माता की कुटिलता को सार्वजनिक रूप से पुन: कहते हैं –

कैकेयी सुअन कुटिल मति, रामबिमुख गत लाज ।
तुम्ह चाहत सुख मोह बस, मोहि से अधम के राज ॥
कैकेयी भव तनु अनुरागे ।
पामर प्रान अघाय अभागे ॥
जो प्रिय बिरहँ प्रान प्रिय लागे ।
देखब सुनत बहुत अब आगे ॥
लखन राम सिय कहुँ बन दीन्हा ।
पठइ अमर पुर पति हित कीन्हा ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लीन्ह विधवपन अपजसु आपू ।
दीन्हेउ प्रजहि सोक संतापू ॥
मोहि दीन्ह सुख सुजसु सुराजू ।
कीन्ह कैकेई सब कर काजू ॥

माता की कुटिलता के लिये भरत को जीवन भर इतना हार्दिक पश्चाताप रहा कि प्राणान्त के अतिरिक्त समस्त वेदनायें उन्होंने सहन कीं । चौदह वर्ष तक राम से भी अधिक कठोर तप और त्याग करके उन्होंने अपने को परीक्षा रूपी अग्नि में तपाया ।

अबध राज सुर राजु सिहाई ।
दसरथ धनु सुनु धनद लजाई ॥
सोइ पुर बसत भरत बिनु रागा ।
चंचरीक जिमि चम्पक बागा ॥
लखन राम सिय कानन बसहीं ।
भरतु भवन बसि तप तनु कसहीं ॥
दोऊ दिसि समुझि कहत सब लोगू ।
सब विधि भरत सराहन जोगू ॥
परम पुनीत भरत आचरनू ।
मधुर मंजु मुद मंगल करनू ॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू ।
महामोह निसि दलन दिनेसू ॥
पाप पुञ्ज कुञ्जर मृगराजू ।
समन सकल संताप समाजू ॥

भरत के चरित्र में अद्वितीय महानता, निर्मलता और शक्ति केवल मात्र अनुचित का विरोध करने से आई । यदि वे माता का प्रस्ताव स्वीकार कर राज के लोभ में फँसते तो सम्भवत: उनका चरित्र कहने सुनने योग्य भी न बनता ।

लक्ष्मण का विरोध

लक्ष्मण राम के साथ चौदह वर्ष वनवास में रहे और एक सेवक की तरह अपने कर्तव्य पर डटे रहे । जब श्रीराम सोते थे तब लक्ष्मण पहरा देते थे । रामायण की एक धुरी श्रीराम हैं तो दूसरी लक्ष्मण । रामचन्द्र जी के स्नेह एवम् सहानुभूति के फलस्वरूप ही लक्ष्मण अपना सर्वस्व, यहाँ तक कि नव विवाहिता उर्मिला को भी त्याग कर भाई के साथ वन जाने को उद्यत हुए ।

लक्ष्मण के हृदय में रामचन्द्र जी के लिए बड़ा ऊँचा स्थान था । वे धीर, वीर गम्भीर थे । लेकिन रामायण के विभिन्न प्रसंगों में कई स्थलों पर अनीति का विरोध करते हुए हम लक्ष्मण को पाते हैं । सीता स्वयंवर के समय जनक के शब्द जब लक्ष्मण को नीति विरुद्ध लगे तो वे सहन न कर सके -

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई ।
तेहि समाज अस कहइ न कोई ॥
कही जनक जसि अनुचित बानी ।
विद्यमान रघुकुल मनि जानी ॥

इसी प्रकार चित्रकूट में जब उन्होंने देखा कि भरत ससैन्य आ रहे हैं तो उनके बध तक के लिये वे तैयार हो गये -

कुटिल कुबंधु कुअवसर ताकी ।
जानि राम बन बास एकाकी ॥
वैसेहि भरतहिं सेन समेता ।
सानुज निदरि निपातहुँ खेता ॥

लेकिन इन प्रसंगों को रामभक्ति की शृंखला में माना जाता है । लक्ष्मण राम के अनन्य सेवक थे । उन्होंने राम की समीपता के लिये माता, पिता, पत्नी और समस्त सुखोपभोगों को त्यागने में रंचमात्र भी संकोच नहीं किया, लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं लगाया जा सकता कि वे राम के अन्ध भक्त थे । राम के आदर्श जीवन, शौर्य और प्रेम ने लक्ष्मण को अनन्य सेवक बनाया था ।

राम के परम भक्त होते हुए भी उनके अनुचित कार्यों का लक्ष्मण ने विरोध किया ।

लंका विजय के लिये प्रस्थान के अवसर पर महासमुद्र सेना के मार्ग में बाधक था । राम ने अपने सचिवों से उपाय निकालने के लिये परामर्श किया -

सुनु कपीस लंकापति बीरा ।
केहि बिधि तरिउ जलधि गंभीरा ॥
संकुल मकर उरग झष जाती ।
अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥

विभीषण अपनी सम्मति देते हैं –

कह लंकेस सुनहु रघुनायक ।
कोटि सिंधु सोषक तब सायक ॥
जद्यपि तदपि नीति अस गाई ।
विनय करिअ सागर सन जाई ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि, कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहि, सकल भालु कपि धारि ॥

रामचन्द्र को विभीषण की सम्मति उचित लगी और वैसा ही करने का निश्चय उन्होंने किया -

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई ।
करिअ दैव जो होइ सहाई ॥

विभीषण की सम्मति पर रामजी को सहमत होते देखकर लक्ष्मण जी अकुला उठे। पुरुषार्थ का भरोसा छोड़ कर दैव के सहारे हो जाने की बात उन्हें भली न लगी । फिर परम पुरुषार्थी बड़े भाई राम को ऐसा करते देख कर उन्हें व्याकुल होना स्वाभाविक था । जीवन में कभी भी अनुचित का समर्थन उन्होंने नहीं किया था । भाई राम को वे ईश्वर मानते थे और राम की प्रत्येक आज्ञा लक्ष्मण के लिये शिरोधार्य थी । वन चलते समय जब राम ने उन्हें पिता-माता तथा राज्य के कर्तव्य निर्वाह हेतु अयोध्या में ही रहने के लिये कहा तो वे बड़े व्यथित हो उठे ।

गुरु पितु मातु न जानउँ काहू ।
कहउँ सुभाय नाथ पतिआहू ॥
जह लगि जगत सनेह सगाई ।
प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई ॥
मोरे सबह एक तुम्ह स्वामी ।
दीन बन्धु उर अन्तरजामी ॥
मन्त्र न यह लछिमन मन भावा ।
राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥
नाथ दैव कर कवन भरोसा ।
सोषिअ सिन्धु करिअ मन रोसा ॥
कादर मन कर एक अधारा ।
दैव-दैव आलसी पुकारा ॥

लक्ष्मण की आत्मा सजग थी । सजग पुरुष ही कर्तव्य और पुरुषार्थ को प्रधानता देते हैं । वे विवेक और औचित्य के आधार पर ही किसी बात को स्वीकार करते हैं । असंख्य सेना लेकर अपने युग के महाबली आततायी राक्षसराज रावण का बध करने के लिये प्रस्थान करने वाले राम को कायरतापूर्ण अनुनयविनय करते देखना लक्ष्मण को उचित न लगा था । जो अनुचित है उसके लिये साहस के साथ विरोध करने में आत्मशक्ति का प्रकटीकरण होता है ।

धर्मपक्ष को दुर्बल न होने के लिये प्रबल पराक्रम करने के लिये आतुर लक्ष्मण ने अपने ईश्वर तुल्य भाई श्रीराम से समयोचित विरोध करके अनुचित न किया वरन् आने वाली पीढ़ियों के लिये एक स्वस्थ और औचित्यपूर्ण परम्परा की स्थापना की ।

राक्षस समुदाय द्वारा रावण का विरोध

रामायण काल में अनुचित का विरोध करते हुए हम केवल आर्य पुरुषों को ही नहीं पाते हैं । जिन राक्षसों को हम हर प्रकार से नीच और पापाचारी कहते हैं उनमें भी आत्मबल के साथ औचित्य का प्रबल समर्थन था । राक्षसराज रावण के भाई विभीषण तो इसके प्रमाण थे ही जिन्होंने सीताहरण के निन्दनीय कार्य को अनुचित ठहरा कर उसका बार-बार विरोध किया था । साथ ही रावण की पत्नी मन्दोदरी और कई अन्य सेनापति भी इसका उदाहरण प्रस्तुत करते हैं ।

मन्दोदरी का विरोध

हनुमान के लंका को जला जाने के बाद राक्षसों को राम की शक्ति का आभास मिला था । राक्षसगण सशंकित रहने लगे थे । मन्दोदरी परम साध्वी और विवेकशीला थी । उसने रावण को तीन बार समझाया । प्रथम बार वह अपने पति से कहती है—

रहसि जोरि कर पति पग लागी ।
बोली बचन नीति रस पागी ॥
कंत करष हरि सन परिहरहू ।
मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥
तब कुल कमल बिपिन दुखदाई ।
सीता सीत निसा सम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें ।
हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥
राम बान अहिगन सरिस निकर निसाचर भेक ।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक ॥

दूसरी बार वह पुनः पति का विरोध करती हुई उस समय समझाती है जब भगवान् राम सागर पर सेतु बाँधकर सेना समेत पार उतर सुबेल पर्वत पर डेरा डालते हैं—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मंदोदरी सुन्यों प्रभु आयो ।
कौतुक ही पायोधि बँधायो ॥
कर गहि पतिहि भवन निज आनी ।
बोली परम मनोहर बानी ॥
चरन नाइ सिरु अंचल रोपा ।
सुनहु बचन प्रिय परिहरि कोपा ॥
नाथ बयरु कीजै ताही सों ।
बुधि बल सकिअ जीति जाही सों ॥
रामहिं सौंपि जानकी, नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन, जाई भजिअ रघुनाथ ॥

तीसरी बार जब नृत्य सभा में राम के चमत्कारी वाणों से मन्दोदरी के कर्णफूल और रावण के मुकुट तथा छत्र कट जाते हैं तब खिन्न मन से भवन में वापस आने पर मन्दोदरी पुन: पति को समझाती है–

सजल नयन कह जुग कर जोरी ।
सुनहु प्रानपति बिनती मोरी ॥
कंत राम बिरोध परिहरहू ।
जानि मनुज जनि हठ मन धरहू ॥

अनुचित के समय विरोध अपने स्वजनों की ओर से ही होता है । मन्दोदरी पतिपरायणा नारी थी । पति के हित और अनहित की बात उसे स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी । पति का हित चाहना ही पत्नी का धर्म माना गया है।

रावण पुत्र प्रहस्त द्वारा रावण का विरोध

सागर पर सेतु बाँधकर विशाल वाहिनी सहित श्रीराम जी लंका क्षेत्र में प्रवेश कर सुबेल पर्वत पर डेरा डालते हैं । रावण अपने मन्त्रियों और स्वजन सहयोगियों की सभा में विचार करता है कि बलवान् शत्रु से किस प्रकार युद्ध किया जाए -

सभा आइ मंत्रिन्ह तेहि बूझा ।
करब कवन बिधि रिपु सै जूझा ॥

अधिकांश मन्त्री और अधिकारी राजा की मुँह देखी कहते हैं ।

उचित बात को स्पष्ट रूप से कहने वाला कोई बिरला है । यही बात रावण के सभासदों की थी–

कहँहि सचिव सुनु निसिचर नाहा ।
बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥
कहहु कवन भय करिअ बिचारा ।
नर कपि भालु अहार हमारा ॥

इस स्थल पर रावण पुत्र प्रहस्त से न रहा गया । वह उचित और खरी बात कहने के लिये तैयार हो गया -

सबके बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।
नीति बिरोध न करिअ प्रभु, मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥
कहँहि सचिव सठ ठकुर सोहाती ।
नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥
बारिधि नाघि एक कपि आवा ।
तासु चरित मन महुँ सब गावा ॥
क्षुधा न रही तुम्हहिं तब काहू ।
जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥
सुनत नीक आगे दु:ख पावा ।
सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा ॥
जेहि बारीस बँधाउ हेला ।
उतरेउ सेन समेत सुबेला ॥
सो कपि मनुज खाब हम भाई ।
बचन कहहिं सब गाल फुलाई ॥
तात बचन मम सुनु अति आदर ।
जनि मन गुनह मोहि करि कादर ॥
प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं ।
ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥
बचन परम हित सुनत कठोरे ।
सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥
प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीति ।
सीता देइ करहु पुनि प्रीति ॥
नारि पाइ फिर जाहि जौ, तौ न बढ़ाइअ रारि ।
नाहिं त सनमुख समर महि, तात करिअ हठि मारि ॥
यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा ।
उभय प्रकार सुजस जग तोरा ॥

लेकिन पुत्र के सच्चे वचन रावण को प्रिय न लगे । उसने उसे प्रहस्त की कायरता समझी–

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुतु सन कह दसकंठ रिसाई ।
अस मति सठ केहि तोहि सिखाई ॥
अबही ते उर संसय होई ।
बेनमूल सुत भयहु घमोई ॥

लेकिन प्रहस्त पिता के कटु वचनों से चापलूसी पर उतारू न हुआ वह सभा से उठकर चला गया -

सुनु पितु गिरा परुष अति घोरा ।
चला भवन कहि बचन कठोरा ॥
हित मत तोहि न लागत कैसे ।
काल बिबस कहुँ भेषज जैसे ॥

विभीषण का विरोध

विभीषण का विरोध तो सर्वविदित ही है । वह रावण का भाई था, लेकिन अपने विचारों और संयमपूर्ण आचरण के कारण परिवार के अन्य लोगों से सर्वथा भिन्न था । सीताहरण के प्रसंग में उसने रावण की नीतियों का कई स्थलों पर विरोध किया और उसे सही नीति अपनाने के लिये परामर्श दिया ।

हनुमान जी जब अशोक वाटिका विध्वंस करने के अपराध में मेघनाद द्वारा बन्दी बनाकर रावण की सभा में लाए गये तो सभासदों और रावण की ओर से मृत्युदण्ड दिये जाने का निश्चय हुआ और निशाचरगण हनुमान को मारने के हेतु उद्यत हुए । इसी समय सचिवों सहित विभीषण ने आकर रावण को दूत के साथ उचित राजनीति वर्तने का परामर्श दिया—

सुनत निसाचर मारन धाए ।
सचिबन्ह सहित बिभीषनु आए ॥
नाइ सीस करि बिनय बहूता ।
नीति बिरोध न मारिअ दूता ॥
आन दंड कछु करिउ गोसाई ।
सबही कहा मंत्र भल भाई ॥

सागर के निकट ब्रानरी सेना सहित राम के आगमन के समाचार से राक्षस समूह में खलबली मचना स्वाभाविक था । रावण द्वारा जो अनीति हो रही थी वह विभीषण को कदापि पसन्द नहीं थी । उन्होंने अनुनय-विनययुक्त और सत् परामर्श द्वारा रावण को सही मार्ग पर लाकर राक्षस कुल का विनाश से बचाव करना चाहा । अपनी पूरी शक्ति विवेक से विभीषण ने भरसक प्रयत्न किया—

अवसर जानि बिभीषनु आवा ।
भ्राता चरण सीसु तेहि नावा ॥
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन ।
बोला बचन पाइ अनुसासन ॥
जौ कृपालु पूँछिहु मोहि बाता ।
मति अनुरूप कहहुँ हित ताता ॥
जौ आपन चाहै कल्याना ।
सुजसु सुमति सुभगति सुख नाना ॥
तो परनारि लिलार गोसाईं ।
तजउ चउथि के चंद कि नाईं ॥
चौदह भुवन एक पति होई ।
भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥
गुन सागर नागर नर जोऊ ।
अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ॥
काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ ।
सब परिहरि रघुवीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही ।
भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥
बार बार पद लागउँ बिनय करउं दससीस।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाई सुअवसरु तात ॥

इसी समय बुद्धिमान और वयोवृद्ध मन्त्री माल्यवन्त भी विभीषण के मत का समर्थन करता है—

माल्यवंत अति सचिव सयाना ।
तासु बचन सुनि अति सुख माना ॥
तात अनुज तव नीति बिभूषन ।
सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥

लेकिन विनाश की ओर पग बढ़ाने वाले रावण को सत्परामर्श भला कैसे सुहाए ? वह क्रोधित हो उठता है—

रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ ।
दूरि न करहु इहाँ हइ कोउ ॥
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी ।
कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विभीषण पुन: रावण को समझाने का प्रयास करता है—

सुमति कुमति सबके उर रहहीं ।
नाथ पुरान निगमु अस कहहीं ॥
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ।
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥
तब उर कुमति बसी बिपरीता ।
हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥
काल राति निसचर कुल केरी ।
तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥
तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार ॥
बुध पुरान श्रुति सम्मत बानी ।
कही बिभीषन नीति बखानी ॥

लेकिन रावण तो पूर्ण रूप से काल के वशीभूत था । नीतियुक्त वचन उसे जहर के समान कडुऐ लग रहे थे—

सुनत दसानन उठा रिसाई ।
खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा ।
रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं ।
भुजबल जाहि जिता मैं नाहीं ॥
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीति ।
सठ मिलु जाई तिन्हहि कहु नीति ॥
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा ।
अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
उमा संत कइ इहइ बड़ाई ।
मंद करत जो करइ भलाई ॥
तुम्ह पितु सरिस भलेहि मोहि मारा ।
राम भजें हित नाथ तुम्हारा ॥

इतनी विनम्रता के साथ विभीषण ने रावण को समझा-बुझाकर उचित मार्ग पर लाने की चेष्टा की, लेकिन जब बार-बार रावण ने उसे ठुकराया और दुत्कारा तो उचित के लिए बन्धु का त्याग करना विभीषण के लिए अनुचित नहीं कहा जा सकता । गगन-पथ पर जाकर उन्होंने अपने निश्चय को पुन: सबको सुना कर कहा—

राम सत्य संकल्प प्रभु, सभा काल बस तोरि ।
मैं रघुवीर सरन अब, जाउँ देह जनि खोरि ॥
अस कहि चला विभीषन जबहीं ।
आयुहीन भए सब तबहीं ॥
साधु अवग्या तुरत भवानी ।
कर कल्यान अखिल कै हानी ॥
रावन जबहिं विभिषन त्यागा ।
भयउ विभव बिनु तबहि अभागा ॥

उचित पक्ष के समर्थन के लिये भाई का त्याग धर्म-विरुद्ध नहीं था । आज भी ऐसी परिस्थितियों में ऐसी ही नीति अपनाना समाज की स्वस्थ परम्परा को बनाये रखने के लिये आवश्यक है । हमें व्यक्तियों से नहीं वरन् सिद्धान्तों और आदर्शों से प्रेम करना चाहिये । व्यक्ति निमित्त है, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती । लेकिन ऐसा चना किस काम का जो भाड़ ही फोड़ डाले । जो व्यक्ति समस्त धार्मिक और लौकिक मर्यादाओं का उन्मूलन करने के लिये उतारू हो, वह सांसारिक रिश्ते में अपने कितना ही निकट क्यों न हो, उसके विरोध के लिये खड़ा होना मानव-पुरूषार्थ और सज्जनोचित आचरण का प्रतीक है । आदर्श और परम्परायें व्यक्ति से ऊपर हैं । हर एक को अपनी मर्यादित सीमा के अंदर रहना शोभा देता है ।

यदि राज अथवा राजतन्त्र स्वेच्छाचारी और निरंकुश हो, प्रजा-हित का उसे ध्यान न हो तो ऐसे शासन का समर्थन करना अधर्म और विरोध करना धर्म है । मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, ज्ञान और त्यागशिरोमणि भरत,धीर और विवेकी विभीषण आदि ने हमें अपने आचरणों से यही शिक्षा दी हैं कि अनीति एवं अन्धविश्वासों का पुछलग्गू बनने में जीवन की शोभा नहीं है अवसर और परिस्थिति यदि विवश करें तो भी आत्मविश्वास और धर्म के आधार पर विरोध के लिये खड़े होने में हिचक नहीं करनी चाहिये ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रामायण का सामाजिक आदर्श

मानस रचयिता गोस्वामी तुलसीदास ने भारतीय जनता के समक्ष जिस सामाजिक आदर्श की स्थापना की है उसकी महत्ता और प्रभाव जितना व्यापक और जीवन में प्राण-ज्योति का संचार करने वाला है उसका अनुमान सहज ही में नहीं लगाया जा सकता। सामाजिक आदर्शों की गहराई में पहुँच कर उन्होंने राम-चरित्र को जिस भाँति व्यक्त किया है, उसमें यदि देखा जाए तो सबसे महत्वपूर्ण स्थल सामाजिक आदर्श ही है। प्रत्येक व्यक्ति का मानसिक स्तर ऊँचा हो, उसमें सदाचार, सत्यता, विश्वबन्धुत्व की भावना और समभाव की जागृति हो तो समाज का रूप आदर्श हो सकता है। इस बात को उन्होंने जिस सरल ढंग से कहा वह स्तुत्य है। सामाजिक आदर्श गोस्वामी जी की भक्ति का प्राण है, मूल मन्त्र है जिस पर व्यक्ति और समाज का विकास अवलम्बित है और यही विशेष रूप से उपादेय और कल्याणजनक है। पतितों के उद्धारक रामचन्द्रजी क्या समाज के उन्नायक नहीं हैं ? क्या समाज में हीन वर्ण को पददलित कर देना न्याय है ? इसी बात को तो तुलसीदास जी ने बार-बार घोषित किया है कि भारतीय संस्कृति की रक्षा तभी हो सकती है जब उसका सामाजिक आदर्श महान और उदार होगा। 'रामचरित-मानस' सामाजिक आदर्श का वृहत् दर्पण है जो कवि की महती देन है।

वर्तमान समय में भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले विश्व-मानव महात्मा गाँधी ने 'राम राज्य' को भावी भारत की सामाजिक संरचना का आदर्श बनाया था। समय-समय पर 'हरिजन' और अन्य पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने 'राम राज्य' के आदर्श सामाजिक जीवन की विशद व्याख्या की है। उन्हें अपूर्व जन-सहयोग मिला था। भारतीय जनता का हार्दिक समर्थन उन्हें इस भाँति प्राप्त था कि जन समूह उनकी उंगलियों के इशारे पर नाचता था। वास्तव में राम से प्रेम करने वाली भारतीय जनता गाँधी जी के कार्यक्रमों को भारतीय संस्कृति के प्रति अनुकूल पाती थी। यही कारण था कि वह उन्हें अपना समर्थन और सद्भावना उदारमना होकर देती थी।

देश के नव-निर्माण का भगीरथ प्रयास तो हो रहा है लेकिन गाँधी जी के बताये मार्ग से हटकर। महात्मा गाँधी की नीतियों का अनुसरण करने वाली संस्था 'काँग्रेस' ही समाजवाद और अन्य प्रकार के विचित्र विदेशी नामों द्वारा एक वर्ग विहीन राज्य की स्थापना का स्वप्न अवश्य देखती है लेकिन समानता और वर्ग विद्वेष से रहित 'राम राज्य' के आदर्श सामाजिक जीवन के एक भी सिद्धान्त को नहीं अपनाया। भारतीय संविधान में अमेरिका, इंग्लैंड, स्विट्जरलैंड, रूस आदि देशों के संविधानों की अनेक धारायें जोड़ी गईं लेकिन रामराज्य के आदर्श सिद्धान्तों में से एक भी सिद्धान्त को भारतीय संविधान में कानूनी स्थान देने की बात सोची तक न गई। यही कारण है कि गाँधी जी का स्वप्न साकार न हो सका और भारत का बहुसंख्यक समाज आदर्शविहीन होता जा रहा है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र जी द्वारा बाल्यकाल से क्रान्तिकारी विचारों पर आधारित प्रयत्नों के फलस्वरूप जिस समाज की स्थापना हुई थी और चक्रवर्ती सम्राट के रूप में शताब्दियों तक प्रशासनतन्त्र के माध्यम से देश-विदेश के महत्वपूर्ण प्रभावशाली व्यक्ति बनकर राम ने जिस समाज को सुदृढ़ता प्रदान की थी उसे हम पूर्ण समानता और विश्व बन्धुत्व पर आधारित वर्ग-विहीन समाज की संज्ञा दें तो अनुचित न होगा।

कई वर्षों के अथक परिश्रम के बाद स्वघोषित 'समाजवाद' के आदर्श के एक भी सिद्धान्त को काँग्रेस संस्था लागू न कर सकी। वर्ग विद्वेष और आर्थिक विषमता बढ़ती ही जा रही है। लेकिन सामाजिक समानता के इसी लक्ष्य को राम ने राजा बनने के थोड़े वर्षों के अन्दर ही प्राप्त कर लिया था—

राम राज बैठे त्रैलोका।
हर्षित भए गए सब सोका॥
बैर न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई॥

यह विचारणीय प्रश्न है कि राम ने सामाजिक समानता के महत आदर्श को अल्प काल में ही कैसे प्राप्त कर लिया ? वास्तव में इसी का उत्तर उस काल के सामाजिक आदर्शों का प्रतिपादन करता है, जिसे राम ने अपने व्यावहारिक प्रयासों द्वारा प्राप्त किया था। उनके सिद्धान्त केवल सिद्धान्त नहीं थे, कर्म के मन्थन से राक्षस, निषाद, कोल, भील, यवन, किरात सबको सुमन्त जैसे कुलीन आर्य सामन्तों और भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न के समान राजपरिवार के सम्मानीय व्यक्तियों के समान अधिकार प्राप्त थे। राम दरबार में हम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तत्कालीन संसार के प्रायः समस्त वर्गों और जातियों के प्रतिनिधियों को समान अधिकारों का उपभोग करते हुए पाते हैं। समानता, स्वतन्त्रता, विश्व-बन्धुत्व, नारी की दशा, आर्थिक और राजनीतिक जीवन तथा सामान्य नागरिकों का जीवन, सच्चरित्रता आदि की आदर्श स्थिति किसी अच्छे समाज के प्रमुख अंग माने जा सकते हैं। राम द्वारा स्थापित समाज में इन सभी तत्वों को हम आदर्श रूप में पूर्ण विकसित पाते हैं।

समानता के आधार पर वर्ग विहीन समाज

हम पहले ही कह चुके हैं कि राम बचपन से क्रान्तिकारी विचार के थे। वास्तव में राजा के पुत्र के रूप में उन्हें प्रजा वर्ग के समान आयु वाले युवकों के साथ बाल क्रीड़ा करने की आवश्यकता नहीं थी। राज परिवार के बच्चे इतने अधिक थे कि राम उन्हीं को अपनी मित्रमण्डली में शामिल कर सकते थे। लेकिन बाल-क्रीड़ाओं में अपने भाइयों और स्वजनों को सहयोगी बनाने तक राम सीमित न रहे। उनकी दृष्टि और आगे गई। विस्तृत राजमहल को ही उन्होंने अपना क्रीड़ा-स्थल न बनाकर अयोध्या की समस्त गलियों और सड़कों को रंगमंच बनाया। राज महल के राजकुमार ही उनके खेल के साथी न बने वरन् अवधपुरी के अनेक उत्साही युवक राम के सखा बन गये थे। भाइयों के साथ ही वे सखाओं को भी अपने साथ बिठाकर भोजन कराते थे।

राजपरिवार की संकुचित सीमा को पार कर सम्पूर्ण अयोध्या नगरी को अपना क्रीड़ास्थल बनाने के फलस्वरूप ही उन्हें नगर के सभी वर्गों और व्यक्तियों का प्रेम मिल गया था।

कोसलपुर बासी नर नारि वृद्ध अरु बाल।
प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहँ राम कृपाल॥

कुछ लोगों को नहीं वरन् नगर के सभी लोगों को प्रत्येक प्रकार का सुख पहुँचाने के अनेक उपाय वे किया करते थे।

अपने बन्धुओं और मित्रों से अधिक अधिकारों का भोग करने में उन्हें स्वाभाविक संकोच होता था। राजतिलक का सुअवसर आ पहुँचा। महाराज दशरथ ने राम को युवराज पद देने के लिये सम्पूर्ण तैयारी की। अवध में चारों ओर बधाइयाँ बज उठीं। लेकिन राम का स्वाभाविक संकोच उद्‌गार रूप में प्रकट हो गया। अपने सब भाइयों को छोड़ कर बड़े भाई के राजसिंहासन पर बैठने की रघुकुल की परम्परा उन्हें अनुचित लगी।

जेहि बिधि सुखी होहिं सब लोगा।
करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा॥
जनमेउ संग संग सब भाई।
भोजन सयन केलि लरकाई॥
करन बीतु उपबीत बिआहा।
संग संग सब भयउ उछाहा॥
बिमल वंश यह अनुचित एकू।
बन्धु बिहाय बड़हि अभिषेकू॥

उधर राम के सब बालसखा राजतिलक के समाचार से प्रफुल्लित हो उठे थे। पहले ही कहा जा चुका है कि उनकी संख्या अपार थी। कुल और जाति के आधार पर वे मित्र नहीं बनाते थे। प्रेम पहचान कर तदनुकूल व्यवहार करना राम का बचपन से स्वभाव ही था। सखागण राम को बधाइयाँ देने आते हैं और राम सबका सम्मान करते हैं –

बाल सखा सुनि हियँ हरषाहीं।
मिलि दस पाँच राम पहि जाहीं॥
प्रभु आदरहि प्रेमु पहिचानी।
पूंछहि कुसल खेम मृदु बानी॥
फिरहि भवन प्रिय आयसु पाई।
करत परसपर राम बड़ाई॥
को रघुवीर सरिस संसारा।
सीलु सनेहु निबाहनि हारा॥

बाल मनोविज्ञान की खोजों के अनुसार प्रत्येक नवजात शिशु कुछ मूल प्रवृत्तियों और शक्तियों को लेकर जन्म लेता है। शैशव, बाल और युवावस्था में जिन शक्तियों का प्रदर्शन खेल-कूद के अवसर पर होता है, प्रौढ़ावस्था में समाज के व्यापक क्षेत्र में हम उनका प्रदर्शन देखते हैं। नवीन विचारों से युक्त भगवान राम का बचपन का कार्यक्षेत्र अयोध्या नगरी थी। सबके साथ उन्होंने पूर्ण समानता का व्यवहार किया।

कुल परम्परा से हटकर अपने नये उदारवादी जिन विचारों का बीजारोपण राम ने अवध के समाज में किया था, उसे वे और अधिक मूर्त रूप देने के लिये आतुर थे। ऐसा प्रतीत होता है कि राम का वनगमन इसीलिए हुआ था कि जाति-पाँति, कुलधर्म और बड़प्पन के आधार पर नहीं वरन् विशुद्ध प्रेम के आधार पर जिस वर्ग विहीन समाज की रचना वे करना चाहते थे वनवास काल में उत्तर से लंका तक प्रयाण करने में उन्हें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खुलकर इसके लिए अवसर मिला। एक राजकुमार न होकर वनवासी वेष में वन के अनुकूल वल्कल वस्त्र धारण करके लक्ष्मण और सीता के अपने छोटे परिवार के साथ वे दक्षिण की ओर आर्य संस्कृति से सर्वथा अपरिचित विभिन्न प्रकार की जंगली जातियों के सम्पर्क में गये थे। राजा अथवा राजकुमार के रूप मे चलते समय जो बड़प्पन का अंहभाव होता है, उससे राम सर्वथा शून्य थे।

वास्तव में किन्हीं सिद्धान्तों और विचारों के शोधन के लिए शोधनकर्त्ता के निकट जिस परिस्थिति की आवश्यकता होनी चाहिए, राम सर्वथा उन सब के युक्त होकर अपने उदारवादी विचारों के परिणामों को देखना चाहते थे। चौहद वर्ष तक उन्होंने ऐसा किया।

अयोध्या से प्रस्थान करते ही गंगा के किनारे निषादों की बस्ती शृंगबेरपुर में वे पहुँचे। अभी वे रथ पर सवार थे और महाराज दशरथ के वयोवृद्ध प्रधानमन्त्री सुमंत जी रथ का संचालन कर रहे थे। वेषभूषा भी उनकी कुछ राजसी थी, क्योंकि बटक्षीर मँगाकर दूसरे दिन प्रातःकाल श्रृंगबेरपुर में ही उन्होंने अपनी जटा बनाई थी। निषादराज को अपने गणों के राजकुमार राम के आगमन की सूचना मिली और राजोचित स्वागत सत्कार की व्यवस्था बनाकर वह राम के समाने उपस्थित हुआ —

यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई।
मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई॥
लिए फल मूल भेंट भरि भारा।
मिलन चलेउ हिय हरषु अपारा॥
करि दंडवत भेंट धरि आगे।
प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागे॥
सहज सनेह बिबस रघुराई।
पूँछी कुसल निकट बैठाई॥
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा।
मैं जनु नीचु सहित परिवारा॥
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ।
थापिअ जनु सब लोग सिहाऊ॥

लेकिन राम अपनी वास्तविक स्थिति बताकर निषादराज के स्वाभाविक स्नेह को पहचान कर उसे अपना सखा बना लेते हैं और इस रूप में उससे व्यवहार करते हैं —

कहेहु सत्य सब सखा सुजाना।
मोहि दीन्ह पितु आयसु आना॥
बरस चारिदस बासु बन मुनि ब्रत बेषु अहारु।
ग्राम बासु नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुख भारु॥

इसी स्थल से दूसरी जातियों से मित्रता और आत्मीयता के आधार पर उनका सम्पर्क प्रारम्भ होता है।

राम के स्वाभाविक स्नेह और आत्मीयता का भाजन बनकर निषादराज उनका अनन्य सेवक बन जाता है। श्रृंगबेरपुर में शिंशपा वृक्ष के नीचे रात्रि निवास से लेकर प्रातःकाल गंगा पार करने तक वह राम की सेवा में स्वाभाविक स्नेहयुक्त होकर तल्लीन रहा। उदारमना प्रगतिशील राम के विचारों ने उस पर ऐसा जादू डाला कि प्रातःकाल गंगा पार करके चित्रकूट की ओर प्रस्थान करते समय जब राम निषादराज से वापस लौट जाने को कहते हैं तो विलग होने की बात सुनकर उसके प्राण सूखने लगते हैं —

तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू।
सुनत सूख मुख भा उर दाहू॥
दीन बचन मुह कह कर जोरी।
बिनय सुनहु रघुकुल मनि मोरी॥
नाथ साथ रहि पथ देखाई।
करि दिन चारु चरन सेवकाई॥
जेहि बन जाइ रहब रघुराई।
परन कुटी मैं करिब सुहाई॥
तब मोहि कहँ जसि देव रजाई।
सोई करिहउँ रघुवीर दोहाई॥

मनुष्यता और आत्मीतया का आकर्षण इतना प्रबल होता हैं। निषादराज के स्वाभाविक स्नेह को पहचान कर राम उसे अपने संग ले लेते हैं—

सहज सनेह राम लखि तासू।
संग लीन्ह गुह हृदयँ हुलासू॥

गंगा पार उतरते समय केवट कहता है कि मैं आपके पैर धोकर नाव पर बिठाऊँगा तो छोटे से प्रेमयुक्त आग्रह को स्वीकार करने में वे संकोच नहीं करते—

जो प्रभु पार अवसि गा चहहू।
मोहि पद पदुम पखारन कहहू॥
केवट राम राजयसु पावा।
पानि कठवता भरि लेइ आवा॥

राजकुमार राम अपने को पूर्णरूप से दलित और उपेक्षित कोलभील जातियों में घुला-मिला देना चाहते थे। ये अपने और ग्रामीण लोगों के बीच में किसी प्रकार का अन्तर नहीं समझते थे। मार्ग में चलते समय पथिक रूप में अनेक नर-नारी उन्हें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिलते थे। राम, लक्ष्मण, सीता के अपूर्व सौन्दर्ययुक्त आकर्षण से उन सबका इनकी ओर खिंचना स्वाभाविक था लेकिन राम के व्यवहार से वे और भी मुग्ध हो जाते थे –

पथिक अनेक मिलहिं मग जाता ।
कहहि सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥
राज लखन सब अंग तुम्हारे ।
देखि सोचु अति हृदय हमारे ॥
मारग चलहु पयोदेहि पाएँ ।
ज्योतिषु झूठ हमारे भाएँ ॥
अगम पंथ गिरि कानन भारी ।
तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥
करि केहरि बन जाइ न जोई ।
हम सँग चलहि जो आयसु होई ॥
जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचाई ।
फिरब बहोरि तुम्हहि सिर नाई ॥
एहि बिधि पूँछहि प्रेम बस पुलक गात जल नैन ।
कपासिंधु फेरहिं तिन्हहिं कहि बिनीत मृदु बैन ॥

सरल स्वभाव वाले ग्रामीणों के छलरहित प्रेमयुक्त आत्मीय व्यवहार से राम प्रफुल्लित हो उठते हैं। उनके अनुरोध और आग्रह को फिर भगवान राम कैसे अस्वीकार करते। वे तो प्रेम के भूखे थे और प्रेम के आधार पर नए समाज की रचना के लिए चले थे –

रामहिं देखि एक अनुरागे ।
चितवत चले जाहिं संग लागे ॥
एक नयन मग छबि उर आनी ।
होहिं सिथिल तन मन बर बानी ॥
एक देखि बट छाँह भलि डासि मृदुल तृन पात ।
कहहि गँवाइअ छिनुक श्रमु गवनब अबहिं कि प्रात ॥
एक कलस भरि आनहि पानी ।
अंचइ नाथ कहहिं मृदु बानी ॥

प्रीति को देखकर राम उनके आग्रह और आदर को स्वीकार करते हैं -

सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी ।
राम कृपाल सुसील बिसेषी ॥
जानी श्रमित सीय मन माहीं ।
घरिक बिलंबु कीन्ह बट छाहीं ॥
मुदित नारि नर देखहिं सोभा ।
रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥

छोटे बड़ों के स्वाभाविक प्रेम और समानता का कितना सच्चा और स्पष्ट चित्रण गोस्वामी जी ने किया है। सीता जी भी ग्रामीण नारियों से सम्पर्क स्थापित कर उनसे घुलना मिलना चाहती हैं। छोटे-बड़ों का स्वाभाविक सम्बन्ध कितना मधुर होना चाहिये -

सीय समीप ग्राम तिय जाहीं ।
पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं ॥
बार बार सब लागहिं पाएँ ।
कहहिं बचन मृदु सरल सुभाएँ ॥
राजकुमार बिनय हम करहीं ।
तिय सुभायँ कछु पूछत डरहीं ॥
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी ।
बिलगु न मानब जानि गँवारी ॥
राज कुँअर दोउ सहज सलोने ।
इन्ह तें लही दुति मरकत सोने ॥
स्यामल गौर किसोर बर सुन्दर सुषमा ऐन ।
सरद सर्वरी नाथ मुख सरद सरोरुह नैन ॥
कोटि मनोज लजाबनि हारे ।
सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे ॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी ।
सकुची सिय मनमहुँ मुसुकानी ॥
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी ।
दुहँ सँकोच सँकुचति बर बरनी ॥
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी ।
बोली बचन मधुर पिक बयनी ॥
सहज सुभाय सुभग तन गोरे ।
नाम लखन लघु देबर मोरे ॥
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी ।
पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी ॥
खंजन मंजु तिरीछे नयननि ।
निज पति कहेहु तिन्हहि सियँ सयननि ॥
भई मुदित सब ग्राम बधूटीं ।
रंकन्ह राय रासि जनु लूटी ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अति सप्रेम सिय पायं परि बहु बिधि देहि असीस ।
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लगि महि अहि सीस ॥

चित्रकूट में मन्दाकिनी नदी के तट पर कादमगिरि पर भगवान पर्णकुटी बिछाकर निवास करने लगे । एक ओर अत्रि और बाल्मीकि जैसे महामना ऋषि-मुनियों सहित चित्रकूट में निवास करने वाले असंख्य उच्चकोटि के ऋषियों से उनका आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित होता है दूसरी ओर वनवासी कोल-भील जाति से वे पारिवारिक स्नेहयुक्त सम्बन्ध स्थापित करते हैं। वर्ग विहीन समाज की स्थापना में सर्वोदय की भावना ही तो प्रबल होनी चाहिये । एक से घृणा और दूसरे से प्रेम के आधार पर हम वर्ग-विहीन समाज की स्थापना की दिशा में बढ़ नहीं सकते ।

चित्रकूट रघुनन्दनु छाए ।
समाचार सुनि सुनि मुनि आए ॥
आवत देखि मुदित मुनि वृंदा ।
कीन्ह दण्डवत रघुकुल चंदा ॥
जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किए मुनिवृंद ।
करहिं जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद ॥

भगवान के आगमन से मुनियों में अभयता और उत्साह के भाव जागृत होते हैं तो दूसरी ओर वनवासी जातियों से भी राम स्नेह के आधार पर सम्बन्ध स्थापित करते हैं ।

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई ।
हरषे जनु नव निधि घर आई ॥
कन्द मूल फल भरि भरि दोना ।
चले रंकु जनु लूटन सोना ॥
करहिं जोहारु भेंट धरि आगे ।
प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे ॥
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े ।
पुलक शरीर नयन जल बाढ़े ॥
राम सनेह मगन सब जाने ।
कहि प्रिय बचन सकल सनमाने ॥
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी ।
बचन बिनीत कहँहि कर जोरी ॥
अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय ।
भाग हमारे आगमनु राउर कोसल राय ॥
कीन्ह बासु भल ठाउँ बिचारी ।
इहाँ सकल रितु रहब सुखारी ॥
हम सब भाँति करब सेवकाई ।
करि केहरि अहि बाघ बराई ॥
बन बेहड़ गिरि कंदन खोहा ।
सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥
तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब ।
सर निरझर जल ठाउँ देखाउब ॥
हम सेवक परिवार समेता ।
नाथ न सकुचब आयसु देता ॥
वेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन ।
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन ॥

श्री रामचन्द्र जी इन उपेक्षित जंगली लोगों की बात कितने प्रेम और आत्मीयता से सुनते हैं, यह देखिये—

रामहि केवल प्रेमु पियारा ।
जानि लेउ जो जाननि हारा ॥
राम सकल बनचर तब तोषे ।
कहि मृदु बचन प्रेम परितोषे ॥
बिदा किए सिर नाइ सिधाए ।
प्रभु गुन कहत सुनत घर आए ॥
एहि बिधि सिय समेत दोउ भाई ।
बसहिं विपिन सुर मुनि सुखदाई ॥

जिस मनुष्य में छोटे-बड़े सभी के लिए इस प्रकार हित के भाव होते हैं उसके आगमन से अथवा किसी स्थल पर निवास से चारों दिशाओं में सुख शान्ति और सम्पन्नता का वातावरण फैलना स्वाभाविक ही है। चित्रकूट में यही स्थिति पैदा हुई—

जब ते आय रहे रघुनायक ।
तब ते भयउ बनु मंगल दायक ॥
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना ।
मंजु ललित बर बेलि बिताना ॥

चित्रकूट के निवास में राम ने उस स्थल के उच्च और निम्न सभी वर्गों से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया। लेकिन केवल वनवासी जातियों से ही सम्बन्ध स्थापित करना राम को अभीष्ट न था । वे दण्डकारण्य की ओर बढ़े ।

मार्ग में दण्डकारण्य में निवास करने वाले प्राय: समस्त ऋषियों के आश्रमों पर जाकर श्रीरामचन्द्र जी ने आत्मीयता और स्नेह का सम्बन्ध जोड़ा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चित्रकूट के अधिष्ठाता ऋषि अत्रि और उनकी पत्नी परम साध्वी अनुसुइया जी से राम, लक्ष्मण और जानकी ने भेंट कर आगे प्रस्थान करने की अनुमति माँगी और बढ़े—

मुनि पद कमल नाइ पद सीसा ।
चले बनहिं सुर नर मुनि ईसा ॥

वन में ऋषियों के आश्रम और पर्णशालाएँ थीं । वे सब आश्रमों में गये और सबों से भेंट की -

पुनि आए जहँ मुनि सरभंगा ।
सुन्दर अनुज जानकी संगा ॥

सरभंग आश्रम के समस्त ऋषियों को अपने व्यक्तित्व और विनम्रता से मोह लिया । राम की पदयात्रा में सभी उसी प्रकार अनुगामी बने जैसे श्रेष्ठ पुरुष के चलते समय अनेकों लोगों की भीड़ साथ लग जाती है—

पुनि रघुनाथ चले बन आगे ।
मुनिवर वृंद बिपुल संग लागे ॥

राक्षसों के अत्याचार से पीड़ित ऋषियों के कष्टों से करुणा के निधि भगवान राम का हृदय द्रवीभूत हो जाना स्वाभाविक था । वे दूसरे के दुःख को भला कैसे सहन कर सकते थे ?

चलते-चलते मार्ग में राक्षसों के द्वारा खाई गई मृतक मुनियों की हड्डियाँ उन्होंने देखीं—

अस्थि समूह देखि रघुराया ।
पूँछी मुनिन्ह लागि अति दाया ॥
जानतहुँ पूछिअ कस स्वामी ।
सब दरसी तुम्ह अन्तर जामी ॥
निसिचर निकर सकल मुनि खाये ।
सुनि रघुवीर नयन जल छाए ॥

श्री रामचन्द्र जी ने तुरन्त निशाचरों को बध करने की प्रतिज्ञा कर डाली—

निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह ।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥

सरभंग और फिर अगस्त्य जैसे जगत् प्रसिद्ध ऋषि शिरोमणि के आश्रम तक भगवान पहुँच गये । किसी मुनि का आश्रम न बचा जहाँ भगवान न गये हों और कोई ऋषि उनसे मिलने से न बच सका । इतना विशाल मन, दृष्टिकोण और उद्देश्य लेकर भगवान वन चले थे जहाँ उनके सम्पर्क में आने से कोई भी बच न सके ।

इस प्रकार राम एक नवीन समाज की स्थापना के उपाय खोजने के लिये सच्चे अन्वेषक की भाँति विशाल वनों में सबसे सम्बन्ध स्थापित करते हुए घूम रहे थे और सबकी समस्याओं से अवगत हो रहे थे ।

सामाजिक समानता के प्रयत्न में किए गये उल्लेखनीय कार्य

चौहद वर्ष के वनवासी जीवन में राम ने समाज के उच्च और निम्न वर्गों से केवल घनिष्ठ सम्बन्ध ही स्थापित नहीं किया वरन् व्याप्त सामाजिक रूढ़ियों और मान्यताओं के विपरीत उत्साह और साहसयुक्त नये परिवर्तन लाने की भी सफल चेष्टा की । इस दिशा में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम द्वारा किये गये कुछ विशेष कार्य उल्लेखनीय हैं जिन्हें भक्तगण राम की दयालुता एवम् उदारता का प्रतीक मानते हैं । वे निम्नलिखित हैं—

सबसे प्रथम है गीध से मित्रता—दण्डकारण्य में कुछ समय तक ऋषि-मुनियों के आश्रमों में भ्रमण करने के बाद भगवान राम स्थायी रूप से गोदावरी तट पर पर्णशाला बनाकर रहने लगे। यहीं उनकी मित्रता गीधराज जटायु से होती है । गीध को आमिष भोजी नीच जाति का पक्षी माना जाता है । वर्तमान समय में सामाजिक आधार पर खोज कार्य करने वाले विद्वान 'गीध' को कोल-भील और किरात जाति के समान जंगली जाति का बताते हैं ।

कुछ भी हो भगवान राम ने उससे मित्रता की थी—

गीधराज से भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाय ।
गोदावरी निकट प्रभु रहे परण गृह छाय ॥

गोदावरी के निकट गीधराज से भेंट होना और बहुत प्रकार से उसमें प्रीति बढ़ाने की बात कुछ विशेष महत्व की प्रतीत होती है । चाहे गीध को पक्षी मानें, चाहे उसे किसी जंगली जाति का राजा, लेकिन भगवान राम द्वारा उससे मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करना एक बहुत बड़ा क्रान्तिकारी कदम माना जा सकता है, जिसके सामने वर्तमान समय के क्रान्तिकारी सुधारकों के साहसपूर्ण सुधार फीके पड़ जाते हैं । साम्यवाद के विचारक-सुधारक कार्लमार्क्स और लेनिन आदि को हम इस हद तक पहुँचते नहीं पाते । मनुष्यों के विभिन्न वर्गों में ही उन्होंने समानता लाने की चेष्टा की । लेकिन राम तो क्रान्तिकारी परिवर्तन के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यावहारिक आदर्श में मनुष्यों के विभिन्न वर्गों से भी आगे बढ़कर पशु-पक्षियों तक को समानता का अधिकार देने में संकोच नहीं करते । इस दृष्टि से राम संसार के सर्वश्रेष्ठ क्रान्तिकारी समाज सुधारक माने जा सकते हैं ।

निषाद को समानता का अधिकार देकर राम सफल हो गये थे । वह उनका इतना बड़ा हितैषी और शुभचिन्तक बन गया था कि भरत के वाहिनी समेत चित्रकूट की ओर प्रस्थान के अवसर पर बाह्य दृश्य के अवलोकन से वह भरत को राम का शत्रु समझ कर अपने और अपने साथियों तक की आहुति देकर राम की उदारता का बदला चुकाने को तैयार हो गया था—

समाचार सब सुने निषादा ।
हृदय विचार करइ सबिषादा ॥
कारन कवन भरतु बन जाहीं ।
है कछु कपट भाव मन माहीं ॥
जौ पे जियँ न होति कुटिलाई ।
तो कत लीन्ह संग कटकाई ॥

भरत की मनोदशा को समझकर निषादराज चुप नहीं बैठा—

अस बिचारि गुहँ ग्याति सन कह्येउ सजग सब होहु ।
हथबाँसुह बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु ॥
होहु संजोयल रोकहु घाटा ।
ठाटहु सकल मरै के ठाटा ॥
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ ।
जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ ॥
समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा ।
राम काजु छनभंगु सरीरा ॥
भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू ।
बड़े भाग अस पाइअ मीचू ॥
स्वामि काज करिहउँ रन रारी ।
जस धवलिहउँ भुवन दस चारी ॥

ऐसा निश्चय करके वह अपने साथियों से कहता है -

बिगत विषाद निषादपति सबहि बढ़ाइ उछाहु ।
सुमिरि राम माँगेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु ॥

उसकी निष्ठा और राम के प्रति अनन्य प्रेम की परीक्षा हो चुकी थी । भ्राता की सत्य स्थिति का पता चल जाने के बाद उनके प्रति द्वेष प्रेम में बदल जाता है । वह भरत की हर प्रकार की सेवा के लिये तैयार हो गया ।

शुभ कार्य से निषादराज की सामाजिक स्थिति इतनी अधिक ऊँची हो जाती है कि भरत उसे राम-सखा मान कर गले लगाते हैं । माताएँ लक्ष्मण के समान उनके प्रति प्रेम प्रकट करती हैं और गुरु वशिष्ठ चित्रकूट में बरबस निषादराज को घसीट कर गले लगाते हैं—

राम सखा ऋषि बरबस भेंटा ।
जनु महि परत सनेहु समेटा ॥

सम्पूर्ण अवधवासियों का वह प्रीतभाजन बन गया । गीध के प्रति मित्रभाव प्रकट करने का भी परिणाम ऐसा ही निकला । यहाँ पर रहीम का उद्देश्यात्मक दोहा चरितार्थ होता है—

रहिमन देखि बड़ेन कहुँ लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवे सुई कहा करै तलबारि ॥

परीक्षा की घड़ी में छोटे कहे जाने वाले लोग अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं । गीध के प्रति मित्र भाव प्रदर्शित करने का सत्परिणाम निकला । राम ने उससे अनेक प्रकार से मित्रता जोड़ी । अत: जब सीता को हरण करके रावण लिए जा रहा था और माता सीता के विलाप से चारों दिशाएँ करुणामय हो रही थीं—

सीता कै बिलाप सुनि भारी ।
भए चराचर जीव दुखारी ॥

तब गीधराज ने इस अवसर पर मित्रता का कितना सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया -

गीधराज सुनि आरत बानी ।
रघुकुल तिलक नारि पहिचानी ॥
अधम निसाचर लीन्हें जाई ।
जिमि मलेछ बस कपिला गाई ॥
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा ।
करिहउँ जातुधान कर नासा ॥
धावा क्रोधवंत खग कैसे ।
छूटइ पवि परबत कहुँ जैसे ॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही ।
निर्भय चलेसि न जानेहि मोही ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चोचन्ह मारि बिदारेसि देही ।
दंड एक भइ मुरुछा तेही ॥
तब सक्रोध निसिचर खिसिआना ।
काढ़ेसि परम कराल कृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरनी ।
सुमिरि राम करहि अद्भुत करनी ॥

सीता की खोज करते हुये राम उसी मार्ग से निकलते हैं—

आगे परा गीधपति देखा ।
सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा ॥
कर सरोज सिर परसेउ कृपासिंधु रघुवीर ।
निरखि राम छबि धाम मुख बिगत भई सब पीर ॥

अपनी अन्तिम श्वाँस तक गीध ने उपकार का बदला प्रत्युपकार से दिया । उसने भगवान राम को सीताहरण का पूरा समाचार बताकर अन्तिम श्वाँस तोड़ी—

तब कह गीध बचन धरि धीरा ।
सुनहु राम भंजन भब भीरा ॥
नाथ दसानन यह गति कीन्हीं ।
तेहि खल जनक सुता हर लीन्हीं ॥
लै दच्छिनि दिसि गयउ गोसाईं ।
बिलपति अति कुररी की नाईं ॥

राम की मित्रता और समान व्यवहार किसी प्रकार के अवसरवादी भावना से प्रेरित नहीं थे । अपनी ओर से वे प्रत्येक अवसर पर पूर्ण थे । अपने लिए प्राणों तक की आहुति देने वाले गीध के प्रति उनका व्यवहार अति उत्तम रहा । राम को रावण द्वारा सीता को दक्षिण दिशा में ले जाने का समाचार मिल गया लेकिन अपनी परम प्रेयसी के प्रति कर्तव्य की उपेक्षा करके भी राम परोपकारी गीध का अन्तिम संस्कार अपने हाथों करके उसके प्रति कर्तव्य का निर्वाह करने में पूरे उतरते हैं—

अबिरल भगति मांगि बर गीध गयउ हरि धाम ।
तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम ॥

गोस्वामी जी इस घटना के सन्दर्भ मे भगवान राम के गुणों और स्वभाव की प्रशंसा करते हुए कितनी सुन्दर चौपाई लिखते हैं—

कोमल चित अति दीनदयाला ।
कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ॥
गीध अधम खग आमिष भोगी ।
गति दीन्ही जो जाँचत जोगी ॥

भगवान राम दीनदयाल हैं। दीनजन उनके स्वाभाविक मित्र हैं । उनके प्रति उदार व्यवहार करना राम का स्वभाव था ।

शबरी के बेर खाना

इस सन्दर्भ में राम द्वारा भीलनी शबरी के जूठे बेर खाना विशेष महत्व की घटना है । वनवास कालीन राम के क्रान्तिकारी कामों में यह तीसरी उल्लेखनीय घटना है । सामाजिक रूढ़ियों और प्रचलित अन्ध मान्यताओं के प्रति जनसाधारण भगवान कृष्ण को तो आन्दोलनकारी मानते हैं लेकिन राम को मर्यादाओं से युक्त पुरुषोत्तम मानकर ही लोग सन्तुष्ट हो जाते हैं । वास्तव मे देखा जाए तो राम कृष्ण की तुलना में अधिक क्रान्तिकारी और प्रगतिशील थे । वर्ग विहीन समाज की स्थापना में उन्होंने कृष्ण भगवान से भी अधिक साहसपूर्ण कदम उठाये हैं । अपने प्रति सच्चा अनुराग रखने वाली बूढी भीलनी शबरी के आश्रम में जाकर उसके जूठे बेर खाना तथा अपनी विचारधारा से अवगत कराना राम का उपेक्षित वर्ग के प्रति ठोस स्नेह था और पुरानी रूढ़ियों पर करारी चोट थी—

ताहि देइ गति राम उदारा ।
सबरी के आश्रम पगु धारा ॥
सबरी देखि राम गृहँ आए ।
मुनि के बचन समुझि जिये भाए ॥
प्रेम मगन मुख बचन न आवा ।
पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा ॥
सादर जल लै चरन पखारे ।
पुनि सुन्दर आसन बैठारे ॥
कंदमूल फल सरस अति दिए राम कहँ आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारम्बार बखानि ॥
पानि जोरि आगे भइ ठाढ़ी ।
प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी ॥
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी ।
अधम जाति मैं जड़ मति भारी ॥

इस स्थल पर राम अपने क्रान्तिकारी सिद्धान्तों की घोषणा करते हुए शबरी से कहते हैं—

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता ।
मानउँ एक भगति कर नाता ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाति पाँति कुलधर्म बड़ाई ।
धन बल परिजन गुन चतुराई ॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा ।
बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ॥

शबरी को लोग निरी भीलनी मानते हैं, लेकिन वास्तव में वह विवेकशीला तपस्विनी थी और साथ ही तात्कालिक सामाजिक और राजनैतिक गतिविधियों की पूर्ण और विवेकसंगत जानकारी रखती थी । नवधा भक्ति के लिए अनधिकारी होने पर भगवान उसे परम तत्वमय ज्ञानोपदेश कदापि न देते । सीता की खोज में रत श्रीराम ने शबरी से परामर्श किया है और उसी के कथनानुसार पम्पापुर को जाकर राम ने सुग्रीव से मित्रता की -

जनक सुता कइ सुधि भामिनी ।
जानहि कहु करिवर गामिनी ॥

भगवान के ऐसा प्रश्न करने पर शबरी धीर बुद्धि से कितने सुन्दर और स्पष्ट शब्दों में समयोचित परामर्श देती है -

पंपासरहि जाहु रघुराई ।
तहँ होइहि सुग्रीव मिताई ॥
सो सब कहहि देव रघुवीरा ।
जानतहूँ पूँछहु मतिधीरा ॥
बार-बार प्रभु पद सिरु नाई ।
प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

उपरोक्त चौपाइयाँ तात्कालिक राजनीति पर शबरी की सही जानकारी की पुष्टि करती हैं जो वनवासिनी और तपस्विनी होते हुए भी कूपमण्डूक नहीं थी ।

नये समाज की रचना के प्रयास में रत भगवान राम का यह परीक्षण भी सफल रहा । उन्हें वनवास काल में धीरे-धीरे अनुभव होने लगा कि बड़े-बड़े तिलकधारी विख्यात तपोधनी ऋषि-मुनियों से भी अधिक उपयोगी ये नीच और उपेक्षित कहे जाने वाले लोग सिद्ध हो सकते हैं । शबरी ने जितनी सूचना और युक्ति बताई किसी ऋषि ने नहीं बता पाई थी । भगवान राम का परीक्षण यहाँ भी सफल हुआ । शबरी भगवान के लिए आशा से कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हुई ।

संसार के इतिहास में ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिलेंगे । प्राय: सभी महान उद्देश्यों की पूर्ति में जीवन को खपाने वाले महापुरुषों ने उपेक्षित और दलित वर्ग से अधिक सहयोग पाया है । हिन्दू-पद पादशाही की स्थापना करने के लिये मुगल साम्राज्य पर करारी चोटें करने वाले शिवाजी ने नीलगिरि पर्वत के अशिक्षित और असभ्य कहे जाने वाले मावले जाति के लोगों को अपना सहयोगी बनाया । उन्हीं में से तानाजी सूर्याजी, बाजीप्रभु देशपाण्डेय आदि प्रसिद्ध सेनानायक निकल आये जिनके सामने विधिपूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त कर आधुनिक शस्त्रों से लैस ख्याति प्राप्त मुगल जनरल घुटने टेक देते थे ।

गुरु गोविन्दसिंह के प्रथम पाँच शिष्य 'पंचप्यारे' नाई, धोबी आदि जातियों के थे । ईसाई धर्म के संस्थापक ईशु पुत्र ईसामसीह के प्रथम सहयोगी मछुए और व्याधि जाति के लोग बने थे । ऐसे ही प्रमाण मुसलमान धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद साहब के बारे में भी मिलते हैं ।

भगवान राम को तो इन सबका अग्रगामी माना जा सकता है । समाज के विभिन्न क्षेत्रों में मर्यादाओं की स्थापना के लिए ही उनका जन्म हुआ था ।

दलित वर्ग को गले लगाने और उसे समानता के अधिकार से विभूषित करने की राम की नीति एक सफल फार्मूला का स्वरूप धारणा कर रही थी वर्ग विद्वेष से युक्त आधुनिक समय में भी पंचशील और सह अस्तित्व के फार्मूले मानव को प्राण देने के लिए खोजे जा रहे हैं । यद्यपि ये सब भगवान राम के युक्तिपूर्ण सिद्धान्त की तुलना नहीं कर सकते ।

सुग्रीव की मित्रता

दशरथ नन्दन श्रीराम के परीक्षण आशातीत रूप से सफल हो रहे थे । वास्तव में राम यदि उदारवादी और अपने समय की प्रचलित मान्यताओं से ऊपर न होते तो सम्भवत: युग-पुरुष अपना अवतार न बन पाते । उनके समस्त कार्य उस समय के चक्रवर्ती सम्राटों की स्थापित रूढ़ियों की बेड़ियों को तोड़कर आगे बढ़े हुए थे । इसी में राम की महानता निहित थी और उनके सब कार्य अलौकिक और रहस्यमय माने जाते थे। भक्त हनुमान को सेवक बनाने और सुग्रीव को मित्र बनाने में उन्हें देर न लगी । निष्कपट व्यवहार अपना बड़ा प्रभाव रखता है । सुग्रीव के भेजे हुए हनुमान जब विप्र वेष में आकर राम से पूछते हैं—

बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ ।
माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा ।
क्षत्री रूप फिरह वन वीरा ॥

राम अपनी दास्तान एक अपरिचित व्यक्ति से बताने में संकोच नहीं करते । उन्हें विश्वास था कि निष्कपट भाव से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यवहार का प्रतिफल भी वैसा ही होता है। राम का उत्तर कितना सरल व सुबोध था—

कौसलेस दशरथ के जाए ।
हम पितु बचन मानि बन आए ॥
नाम राम लछमन दोउ भाई ।
संग नारि सुकुमारि सोहाई ॥
इहाँ हरी निसिचर बैदेही ।
बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई ।
कहहु बिप्र निज कथा बुझाई ॥

हनुमान की विनम्रतायुक्त वाणी को सुनकर राम उन्हें अपने भाई लक्ष्मण से भी उच्च स्थान दे देने में संकोच नहीं करते—

सुन कपि जियँ मानसि जनि ऊना ।
तै मम प्रिय लछिमन ते दूना ॥
समदरसी मोहि कह सब कोऊ ।
सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ ॥

प्रभु राम द्वारा उदारतापूर्ण इतना उच्च पद हनुमान को दिया जाना निष्प्रयोजन न सिद्ध हुआ। वीर हनुमान राम के परम भक्त बन गये। उनके चरित्र को वर्णन करना पाठकों के लिये नई बात न होगी। लेकिन यहाँ दर्शनीय केवल एक बात है कि निम्न वर्ग के सुपात्र व्यक्तियों को ऊपर उठाने में उच्च वर्ग को घाटे में नहीं रहना पड़ता। साथ ही वर्ग-संघर्ष के विद्वेष से बचकर समाज संगठित और शक्तिशाली बनता है। भक्त हनुमान का पुरुषार्थ और सेवा युग-युग तक आने वाली पीढ़ियों द्वारा गाई जाती रहेगी। प्रथम मिलन के अवसर पर राम द्वारा प्रकट की गई उदारता को हनुमान जीवन भर भूल न सके और उसी समयोचित व्यवहार ने हनुमान के पुरुषार्थ को जगाया। अन्यथा शत-योजन सागर को लांघने वाले हनुमान राम के सम्पर्क में अपने से पूर्व कहीं अन्यत्र इतने वीर प्रमाणित न हो सके थे। राम की महानता और उनके सम्पर्क से स्वयं के उच्च बनने की बात वे छिपाते नहीं। लंका में जाकर विभीषण से कहते हैं—

सुनहु विभीषन प्रभु कै रीती ।
करहिं सदा सेवक पर प्रीति ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना ।
कपि चंचल सबही बिधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा ।
तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥
अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा कि "हमारे समाज के दुर्दिन उस दिन शुरू हुए जब एक बड़े वर्ग को शूद्र कह कर उससे घृणा करना प्रारम्भ किया।" स्वामी जी की वाणी बिल्कुल सत्य थी। राम का शासन काल प्रत्येक रूप से आदर्श इसीलिये माना जाता है कि उसमें सभी को अपनी प्रतिभा और शक्ति के विकास का समान अवसर प्राप्त था। हनुमान को राम ने पहले लक्ष्मण से भी प्रिय भाई बताया और जब उन्होंने सीता की खोज में अमिट पुरुषार्थ और विवेकशीलता का परिचय दिया तो उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने में संकोच नहीं किया और यहाँ तक कह दिया कि—

सुनि कपि तोहि समान उपकारी ।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनु धारी ॥
प्रति उपकार करौं का तोरा ।
सनमुख होय न सकइ मन मोरा ॥

सुग्रीव की मिताई

हनुमान को सेवक बनाने के समान सुग्रीव को सखा बनाने में राम ने उसी नीति को अपनाया जिस पर वे चल रहे थे और इस स्थल पर भी वे पूर्ण सफल रहे। राम को हनुमान के साथ आते हुए दूर से देखकर सुग्रीव को विश्वास हो गया कि ये हमारे साथ मित्रता करेंगे—

कपि कर मन विचार एहि रीती ।
करिहहिं बिधि मो सन ए प्रीती ॥

भगवान राम ने सुग्रीव के साथ निष्कपट और निश्छल प्रेम का परिचय दिया—

कीन्ह प्रीति कछु बीच न राखा ।
लछिमन राम चरित सब भाषा ॥

लेकिन इसका परिणाम भगवान के पक्ष में कितना हितकर होता है। लक्ष्मण जी ने भगवान की सारी कथा सुग्रीव को सुनाई तो उसके नेत्रों में आँसू भर आये और अपनी पूरी शक्ति से सुग्रीव राम की सहायता के लिए पहले तैयार हो गया—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कह सुग्रीव नयन भरि बारी ।
मिलिहि नाथ मिथिलेस कुमारी ॥

गगन पथ से विलाप करती हुई माता सीता द्वारा गिराये गये पट-भूषणों को देखकर सोच करते हुए राम को सुग्रीव पूरी तरह सांत्वना देता है—

कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा ।
तजहु सोच आनहु मन धीरा ॥
सब प्रकार कहिउँ सेवकाई ।
जेहि बिधि मिलिहि जानकी आई ॥

सुग्रीव के प्रति उदारता दिखाने में और मित्र को सहायता करने में राम ने उचित-अनुचित का तनिक भी संकोच नहीं किया । बालि-बध के प्रसंग को लेकर तर्क और सिद्धान्तवादी भगवान राम पर छींटें उछालने की चेष्टा करते हैं । लेकिन व्यावहारिक जगत में राम ने जो कुछ किया वही उचित था ।

निर्वासित अवस्था में रहने के कारण राम सुग्रीव से पूछते हैं—

कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव ॥

जब वह अपना वृतान्त बता चुकता है तो राम निःसकोच भाव से उसकी सहयता के लिये तैयार हो गये—

सुनि सेवक दुख दीन दयाला ।
फरकि उठीं द्वै भुजा बिसाला ॥
सुनु सुग्रीव मारिहउं बालिहि एकहि बान ।
ब्रह्म रुद्र सरनागत गएं न उबरिहिं प्रान ॥

सहज भाव से दूसरे के लिए इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने वाले नर-नाहर विश्व-इतिहास में बिरले ही देखे जाते हैं । राम ने जो प्रतिज्ञा की उसे पूरी करके दिखा दिया ।

वानरपति होने के बाद राज और नारी के मोह में मदमत्त सुग्रीव राम की सहायता में शिथिल हो गया । राम उस पर क्रोधित अवश्य होते हैं लेकिन स्वप्न में भी सुग्रीव का अहित नहीं चाहते, लक्ष्मण धनुष की प्रत्यंचा पर बाण चढ़ाकर सुग्रीव को मारने के लिए चले—

सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी ।
पावा राज कोस पुर नारी ॥
जेहि सायक मारा मैं बाली ।
तेहि सर हतौं मूढ़ कह काली ॥

लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना ।
धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

इस अवसर पर राम कितनी अनूठी सीख लक्ष्मण को देते हैं । एक सच्चे अन्वेषक में धैर्य की प्रबल आवश्यकता होती है । राम सुग्रीव के ढीलेपन से निराश नहीं होते । वे जानते थे कि किया गया उपकार कभी निष्फल नहीं जा सकता—

तब अनुजहि समझावा, रघुपति करुना सींव ।
भय देखाइ लै आवहु, तात सखा सुग्रीव ॥

धैर्य के साथ निम्न वर्ग के लोगों को ऊँचा उठाने की शृंखला में सुग्रीव के साथ किए गये व्यवहार का प्रतिफल कितना महत्वपूर्ण रहा यह कहने की बात नहीं । दक्षिण भारत की एक अपूर्व शक्ति बानर और रीछों के रूप में उठ खड़ी हुई और आर्य संस्कृति की प्रबल समर्थक बन लंका तक धर्म-ध्वजा फहराने में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम को अनुपमय सफलता मिली । सुग्रीव की मित्रता से एक ऐसे समाज की रचना हुई जिसमें अनेक उपेक्षित व्यक्ति संसार के अद्वितीय योद्धा बनकर क्षितिज पर जगमगाये । उत्तर और दक्षिण भारत के सामाजिक सम्बन्ध का सूत्रपात राम और सुग्रीव की मित्रता से होता है । सुग्रीव ने राम के लिए क्या नहीं किया ? लंका विजय के बाद भी रामराज्य के प्रबल स्तम्भ के रूप में सुग्रीव युग-युग तक याद किये जाते रहेंगे । नर-बानर की मित्रता एक विचित्र अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करती है जिसके ऊपर सबको आश्चर्य हो सकता है । हनुमान द्वारा अशोक वाटिका में विरहिणी सीता के सामने मुद्रिका गिराने के बाद प्रकट होने पर अपने को राम का सेवक बताने पर स्वयं माता सीता को आश्चर्य हुआ —

राम दूत मैं मातु जानकी ।
सत्य सपथ करुना निधान की ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी ।
दीन्हि राम तुम कहँ सहदानी ॥
नर बानरहि संग कहु कैसे ।
कही कथा भइ संगति जैसे ॥
कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्बास ।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥

दूसरों के साथ स्नेह सम्बन्ध जोड़कर उनसे घुल-मिल जाना राम का स्वाभविक गुण था। इसी विशेषता ने उन्हें प्रत्येक कार्य में सफलता दी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूरदर्शी लोगों के विचारों की अद्भुत शक्ति को कभी कभी उसके निकटतम संगी-साथी भी नहीं समझ पाते। उदारतापूर्वक सहयोग का हाथ बढ़ाने एवम् सन्देहास्पद व्यक्तियों पर भी विश्वास करके उन्हें अपना बनाने की कला में सिद्धहस्त भगवान राम के रहस्य को स्वयं लक्ष्मण भी नहीं समझ पाते थे।

सागर तट पर राम की विशाल वानरी सेना का पड़ाव पड़ा था। विभीषण रावण से अपमानित होकर राम की शरण में आता है। मुख्य शत्रु के सहोदर भ्राता और फिर राक्षस पर किसको विश्वास हो सकता था—

कपिन्ह बिभीषनु आबत देखा।
जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा॥
ताहि राखि कपीस पहिं आए।
समाचार सब ताहि सुनाए॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई।
आवा मिलन दसानन भाई॥
कह प्रभु सखा बूझिए काहा।
कहइ कपीस सुनहु नरनाहा॥

विभीषण पर सुग्रीव को विश्वास नहीं होता वे राम को विभीषण को शरण न देने की सलाह देते हैं—

जानि न जाइ निसाचर माया।
कामरूप केहि कारन आया॥

गोस्वामी तुलसीदास जी भगवान की इस उदारता का वर्णन करते हुए कहते हैं—

रावण क्रोध अनल निज, स्वास समीर प्रचंड।
जरत बिभीषनु राखेउ, दीन्हेउ राज अखंड॥
जो सम्पति सिब रावनहिं, दीन्हि दिए दस माथ।
सेइ सम्पदा बिभीषनहिं, सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥

राक्षस परिवार से निश्छल प्रेम का सत्परिणाम निकला। यह कहना अनुचित न होगा कि यदि राम को विभीषण का सहयोग न मिलता तो उनकी विजय में सन्देह रहता। रावण मेघनाद, कुम्भकरण सबकी मृत्यु का रहस्य विभीषण ने बताया। इन्द्रजीत मेघनाद यदि निकुम्भला में अपना आसुरी यज्ञ पूर्ण कर लेता तो निश्चय ही अबध्य हो जाता। इस रहस्य को केवल विभीषण जानता था। उसने राम की विजय के लिये यज्ञ विध्वन्स करने का परामर्श भगवान को देने में संकोच न किया -

मेघनाद कै मुरछा जागी।
पितहि बिलोकि लाज अति लागी॥
तुरत गयउ गिरिवर कन्दरा।
करौं अजय मख मन अस धरा॥
इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा।
सुनहु नाथ बल अतुल उदारा॥
मेघनाद मख करइ अपावन।
खल मायावी देव सतावन॥
जौ प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि।
नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि॥

विभीषण के मन्त्र से प्रभु राम प्रसन्न होकर तत्काल लक्ष्मण के नेतृत्व में अंगद और हनुमान समेत विशेष योद्धाओं को मेघनाद का यज्ञ विध्वन्स करने के लिए भेजते हैं—

सुनि रघुपति अतिसय सुख माना।
बोले अंगदादि कपि नाना॥
लछिमन संग जाहु सब भाई।
करंहु बिधंस जग्य कर जाई॥

इसी प्रकार युद्धभूमि से जब रावण मूर्च्छित अवस्था में लंका में लौटता है तो शक्ति संचय के लिए आसुरी यज्ञ का सहारा लेता है—

उहाँ दसानन जागि करि करै लाग कछु जग्य।
राम बिरोध बिजय चह सठ हठ बस अति अग्य॥

विभीषण को सारा समाचार मिल जाता है। वे राम को शीघ्रातिशीघ्र बताने में संकोच नहीं करते—

इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई।
सपद जाइ रघुपतिहि सुनाई॥
नाथ करइ रावन एक जागा।
सिद्ध भएँ नहिं मरिहि अभागा॥
पठवहु नाथ बेगि भट बन्दर।
करहिं बिधंस आव दसकंधर॥

विभीषण और प्रभु राम के मिलन प्रसंग में एक और घटना का उल्लेख अप्रासंगिक न होगा। विभिन्न जातियों के एक सूत्र में बद्ध होने के बाद पारस्परिक हित पर दोनों पक्षों को कितना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ध्यान देना चाहिये इसका भी आदर्शानुकरण प्रभु राम और विभीषण की मित्रता में मिलता है ।

युद्धस्थल में विभीषण को रामपक्ष से लड़ते देखकर रावण का क्रोध वेगवती सरिता के समान सीमा लाँघ जाता है। राम को मारने का प्रयत्न छोड़ वह प्राणघातक शक्ति से विभीषण पर वार करता हैं—

पुनि दसकण्ठ क्रुद्ध होइ छाँड़ी सक्ति प्रचंड ।
चली बिभीषन सन्मुख मनहुँ काल कर दंड ॥

भगवान राम विभीषण पर उपस्थित संकट को देखकर उसे बचाने और अपने को मृत्यु के मुख मे डालने में क्षणमात्र भी विलम्ब नहीं करते —

आवत देखि सक्ति अति घोरा ।
प्रनतारित भंजन पन मोरा ॥
तुरत विभीषन पाछे मेला ।
सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ॥
लागि शक्ति मुरछा कछु भई ।
प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई ॥

ऐसे अवसर पर विभीषण भी चुप नही बैठता । जिस प्रतापी ज्येष्ठ भ्राता रावण के सामने उसने जीवन भर बात करने का साहस न किया था, राम को मूर्च्छित देख वह गदा उठाकर उसी को मारने के लिए उद्यत हो जाता है—

देखि बिभीषन प्रभु श्रम पायो ।
गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायो ॥
रे कुभाग्य सठ मन्द कुबुद्धे ।
तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे ॥
सादर सिव कहुँ सीस चढ़ाये ।
एक एक के कोटिन्ह पाए ॥
तेहि कारन खल अब लगि बाँच्यो ।
अब तब काल सीस पर नाँच्यो ॥
राम बिमुख सठ चहिस सम्पदा ।
अस कहि हनेसि माँझ उर गदा ॥

गोस्वामी जी विभीषण के इस आशातीत साहस को भगवान शंकर के मुख से पार्वती जी से इस प्रकार कहलवाते हैं—

उमा बिभीषनु रावनहि सन्मुख चितव कि काउ ।
सो अब भिरत काल ज्यों श्री रघुवीर प्रभाउ ॥

महाबली रावण का वध भगवान के हाथों से युद्धभूमि में हो जाता है । जिन माता जानकी के लिए सागर पर सेतु बाँधने से लेकर युद्ध तक का भगीरथ प्रयत्न हुआ था वह पूर्ण हुआ और माता सीता अग्नि परीक्षा में खरी उतर कर भगवान की वामांगी बन गईं । महाविजेता के रूप में भगवान देवताओं से वन्दित हुए । विजय के बाद उनकी मनोदशा में परिवर्तन हो सकता था लेकिन हम देखते हैं कि प्रभु राम ने जो नाते जोड़े थे वे सब वैसे के वैसे बने रहे । स्वर्णमयी लंका की एक पाई भी वे अपने साथ अयोध्या न ले गये । विभीषण आकर भगवान से लंका की सम्पत्ति का निरीक्षण करने का अनुरोध करता है क्योंकि विजेता के रूप में नियमत: राम का उस पर अधिकार हो गया था —

करि बिनती जब संभु सिधाए ।
तब प्रभु निकट बिभीषन आए ॥
नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी ।
बिनय सुनहु प्रभु सारंग पानी ॥
सकल सदल प्रभु रावन मार्‌यो ।
पावन जस त्रिभुवन बिस्तार्‌यो ॥
दीन मनीन हीन मति जाती ।
मो पर कृपा कीन्ह बहु भाँती ॥
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे ।
मज्जन करिउ समर श्रम छीजे ॥
देखि कोस मन्दिर संपदा ।
देहु कृपाल कपिन्ह कहुँ मुदा ॥
सब बिधि नाथ मोहि अपनाइअ ।
पुनि मोहि सहित अवधपुर जाइअ ॥

लेकिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम तो देने की रीति जानते थे, लेने की नहीं । लंका की अतुल सम्पत्ति की ओर उन्होंने आँख उठाकर ताका तक नहीं —

तोर कोस गृह मोर सब सत्य बचन सुनु भ्रात ।
भरत दसा सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात ॥

राम का संकेत अयोध्या को शीघ्र पहुँचाने की व्यवस्था के लिए तीव्रगामी वाहन के प्रबन्ध की ओर था । विभीषण लंका जाकर पटभूषण और मणि-अम्बर से भर कर पुष्पक विमान लाए और प्रभु के चरणों में वह सम्पदा समर्पित कर दी । लेकिन राम उसे विभीषण के द्वारा ही वानर भालुओं में वितरित कराते हैं । अपने हाथों नहीं ताकि प्रत्येक पाने वाला यह अनुभव करे कि लंकापति विभीषण द्वारा वे पुरस्कृत हो रहे हैं—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बहुरि बिभीषन भवन सिधायो ।
मनि मन बसन बिमान भरायो ॥
लै पुष्पक प्रभु आगें राखा ।
हँसि करि कृपासिंधु तब भाषा ॥
चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन ।
गगन जाइ बरषहु पट भूषन ॥
नभ पर जाइ बिभीषन तब ही ।
बरषि दिए मनि अम्बर सबही ॥

अयोध्या से प्रस्थान करने के समय से लेकर चौदह वर्षों की लम्बी अवधि में भगवान ने विभिन्न जतियों और वर्गों की मित्रता से जिस नए समाज की रचना की थी, उसके प्रत्येक प्राणी के प्रति त्रिभुवन विजेता के रूप में भी वे उसी प्रकार सचेष्ट, कर्तव्य-परायण और आत्मीय रहे जैसे पहले थे । वन को वे पैदल गये थे, परन्तु वन से अयोध्या को विमान से लौटे । लेकिन अपने धरती के साथियों को भूले नहीं । सबसे मिलकर कुशल प्रेम पूछते गए और कइयों को साथ लेते गयें । वानर और रीछपतियों के प्रेम को देखकर उन्हें भी अपने साथ विमान में बैठाया—

अतिसय प्रीति देखि रघुराई ।
लीन्ह सकल बिमान चढ़ाई ॥

और फिर—

तुरत बिमान तहाँ चलि आवा ।
दण्डक बन जहँ परम सुहावा ॥
कुंभजादि मुनिनायक नाना ।
गए रामु सबके अस्थाना ॥
सकल रिषिन्ह सन पाइ आसीसा ।
चित्रकूट आए जगदीसा ॥
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा ।
चला बिमानु तहाँ ते चोखा ॥
मुनि पद बन्दि जुगल कर जोरी ।
चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी ॥
इहाँ निषाद सुना प्रभु आए ।
नाव नाव कहँ लोग बुलाए ॥
सुरसरि नाघि जान तब आयो ।
उतरे तट प्रभु आयसु पायो ॥
सुनत गुहा धायउ प्रेमाकुल ।
आयउ निकट परम सुख संकुल ॥
प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही ।
परेउ अवनि तन सुधि नहिं तेही ॥
प्रीति परम बिलोकि रघुराई ।
हरषि उठाइ लियो रघुराई ॥

चौदह वर्षों पूर्व विशाल देश में और विभिन्न जातियों पर प्रारम्भ किया हुआ भगवान का प्रयोग इस प्रकार सफल सिद्ध हुआ । एक नए समाज की रचना का प्रथम सौपान भगवान के अयोध्या वापसी से समाप्त होता है । अब हमें यह देखना है कि इन परीक्षणों को राम ने राजा के रूप में किस प्रकार लागू किया और उनके क्या परिणाम निकले ।

समाज की सुव्यवस्था और मनुष्य की सुरक्षा का श्रेय राज्य को है। मनुष्य जीवन की समस्त गतिविधियों पर राज्य का अप्रत्यक्ष रूप से इतना नियन्त्रण रहता है कि उसका कोई भी कार्य राज्य की शक्ति से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । वर्तमान समय मे प्रजातन्त्र शासन प्रणाली की लहर विश्व के प्राय: अधिकांश देशों में फैली है, लेकिन प्राचीन काल से अब तक राज्य का संचालन प्राय: सभी देशों में राजा के आधीन रहता था । राजा पृथ्वी पर देवता के रूप में माना जाता था ।

कोई भी प्रणाली क्यों न हो, राजा का मुख्य कर्तव्य उस राज्यान्तर्गत निवास करने वाले जन समुदाय को सुख, शान्ति एवम् सुव्यवस्था अथवा न्याय प्रदान करना होता है । इसी उद्देश्य को लेकर आदि काल में राज्य का संगठन हुआ ।

रामायण में स्थान-स्थान पर राजा के कर्तव्यों पर विशेष बल देने वाले प्रसंगों का उद्धरण मिलता है—

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी ॥

राजा के लिए प्रजा प्राणों के समान प्यारी होती हैं । जिस राजा के राज्य में प्रजा कष्ट पावे उस राजा को नरक भोगने क दण्ड मिलना चाहिये ।

पिछले पृष्ठों पर कहा जा चुका है कि चक्रवर्ती सम्राट बनने के पूर्व तपस्वी और साधारण जीवन मे रहकर नई सामाजिक संरचना के क्रान्तिकारी विचारों को कार्य रूप में परिणत करने के पश्चात् राम अयोध्या को लौटे थे । अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परीक्षण में उन्हें पूर्ण सफलता मिली थी और समाज के दलित तथा उपेक्षित समझे जाने वाले निषाद, बानर, भालू तथा राक्षस राम के मित्र और सहयोगी बनकर अयोध्या को आये थे ।

हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध संहारकर्ता देवता शंकर को अपने गणों के साथ देखने पर हँसी आती है । शिवजी का समाज कितना विचित्र था ? शिव पार्वती विवाह के प्रसंग में इसका पूर्ण वर्णन मिलता है—

सिव अनुसासन सुनि सब आए ।
प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाए ॥
नाना बाहन नाना वेषा ।
बिहँसे सिव समाज निज देखा ॥
कोउ मुखहीन बिपुल मुख काहू ।
बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू ॥
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना ।
रिष्ट पुष्ट कोउ अति तन खीना ॥
तन खीन को अति पीन पावन,
कोउ अपावन गति धरे ।
भूषन कराल कपाल कर सब,
सद्य सोनित तन भरे ॥
खर स्वान सुअर सृगाल मुख,
गन वेष अगनित को गनै।
बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि,
समाज बरनत नहीं बनै ॥

शंकर-जी के ऐसे विचित्र समाज को देखकर हँसी आना स्वाभाबिक है लेकिन साथ ही एक गम्भीर विचारणीय सामाजिक पहलू भी है जो यह सिद्ध करता है कि शिव केवल एक पक्षीय अथवा एक जातीय देवता नहीं हैं । वे सुन्दर,कुरूप,अच्छे-बुरे, आर्य-अनार्य सबके देवता हैं । अपने देवता से हमें यही प्रेरणा मिलती है ।

इसी प्रकार भगवान राम के दरबार की झाँकी उनके पूर्वजों के दरबार की झाँकी से विचित्र अवश्य लगेगी । राम से पूर्व कौशल के चक्रवर्ती सम्राटों हरिश्चन्द्र, भगीरथ , दिलीप तथा दशरथ आदि के दरबारों में एक ही प्रकार के परिचित दरबारी दीख पड़ते थे - वशिष्ठ, जाबालि, सुमन्त आदि । लेकिन राम के दरबारियों में राक्षस विभीषण,बानरराज सुग्रीव, रीछपति जामवन्त, निषादराज गुह सभी प्रकार के आर्य और अनार्यों को समान अधिकार प्राप्त था । राम राज्य आदर्श राज्य क्यों बना ? इसके अनेक कारणों में एक मुख्य कारण यह भी था कि इस शासन में आर्यों और अनार्यों का, ऊँच-नीच का और जाति-पाँति का भेद व्यवहारत: समाप्त हो गया था । वही राज अच्छा माना जाता है जिसमें बहुसंख्यक समुदाय के साथ अल्पसंख्यक जातियों को भी समान अधिकार प्राप्त हों । पिछले दिनों में अंग्रेजों और मुसलमानों के शासनकाल में इसी भेदभावना को लेकर पर्याप्त चर्चा चली है । राम का राज्य जाति और लिंग पर आधारित समस्त प्रकार के भेदभावों से रहित था । राज्य में पद प्रदान करने की नीति सर्वथा योग्यता और अनुभव पर आधारित थी ।

बानर हनुमान चक्रवर्ती सम्राट भगवान राम के निकटतम सेवक और वस्तुत: भरत जैसे त्यागी और लक्ष्मण जैसे परम सेवक भाई से भी अधिक अधिकार सम्पन्न थे। जो भरत त्याग, अध्यात्म तथा शासन में सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित हो चुके थे । वशिष्ठ जैसे प्रभावशाली पुरोहित की गम्भीर विवेक बुद्धि भी जिस भरत के त्याग के सामने अबला बन चुकी थी—

भरत महा महिमा जलरासी ।
मुनि मति ठाढ़ तीर अबला सी ॥

माता कौशल्या और अयोध्यावासी तथा भगवान राम अपने श्रीमुख से जिन भरत की अनेकों बार भूरि-भूरि प्रशंसा कर चुके थे। अवध के राज्य और विपुल सम्पत्ति की ओर जिन्होंने तिरछी निगाह से भी नहीं देखा था—

लखन राम सिय कानन बसहीं ।
भरत भवन रह तप तन कसहीं ॥
दोउ दिस समुझ कहत सब लोगू ।
सब विधि भरत सराहन जोगू ॥

वही भाई भरत चक्रवर्ती सम्राट अपने भाई राम से कुछ कहने के लिए हनुमान की सिफारिश करवाते हैं। क्या अधिकार सम्पन्नता का इससे बड़ा कोई दूसरा प्रमाण अन्यत्र कहीं मिल सकता है ? उत्तरकाण्ड में अंवराई में सनकादि मुनीश राम से मिलने आते हैं । उनके जाने के बाद भरत के प्रश्न को हनुमान जी बताते हैं—

अन्तरजामी प्रभु सब जाना ।
बूझत कहहु कहा हनुमाना ॥
जोरि पानि कह तब हनुमंता ।
सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥
नाथ भरत कछु पूंछन चहहीं ।
प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ ।
भरतहि मोहि कछु अन्तर काऊ ॥

राम के राज्य में प्रत्येक महत्वपूर्ण युद्धों और समारोहों में विभीषण और सुग्रीव को उपस्थित पाते हैं । यदि दीर्घकाल तक के राम-राज्य में कभी तनिक भी भेद होता तो सम्भवत: ऐसी स्थिति न होती । इन उदाहरणों से राम के राज्य को सच्चे अर्थों में लोक-कल्याणकारी राज्य की संज्ञा दे सकते हैं । जिसमें सभी को फलने फूलने और विकास करने का समान अधिकार प्राप्त था ।

वर्ग-विहीन समाज की स्थापना

वर्तमान काँग्रेस सरकार ने सन् १९५८ ई० के अवाड़ी अधिवेशन में 'समाजवादी समाज' की स्थापना का लक्ष्य बनाया था । जिसका उद्देश्य था अमीर और गरीबों के बीच की खाई कम करना, समाज के समस्त वर्गों में यथासम्भव समानता लाना । यदि हम काँग्रेस शासन की अब तक की उपलब्धियों पर दृष्टि डालें तो यह कहने में तनिक भी सन्देह न होगा कि समाजवादी समाज की स्थापना का लक्ष्य अभी एक अंश में भी पूरा नहीं हुआ है । अमीर अधिक अमीर होता जा रहा है और गरीब अधिक गरीब बनता जा रहा है । स्वभावत: प्रश्न उठता है कि देश के कर्णधारों द्वारा प्रयत्न के बावजूद भी ऐसा क्यों ?

समाजवाद और साम्यवाद का नारा विश्व को कार्लमार्क्स से मिला है । उसी के सिद्धान्तों पर विश्व के कम्युनिस्ट संसार में साम्यवाद का प्रसारण करके प्राणीमात्र को सुखी और सन्तुष्ट देखने का स्वप्न देखते हैं । प्रत्यक्ष रूप से रूस और चीन दो बड़े देशों में कार्लमार्क्स के सिद्धान्तों का व्यावहारिक प्रयोग हुआ । इसके लिए मार्क्स की यह कल्पना थी कि साम्यवादी प्रथा के द्वारा धीरे-धीरे राज्यविहीन समाज की स्थापना होगी । सबों के समान होने पर जब विषमता नहीं रहेगी तो आपसी कलह न होगी । परिणामस्वरूप न्याय व सुरक्षा के लिए राज्य की कोई आवश्यकता न होगी । परिणामस्वरूप न्याय व सुरक्षा के लिए राज्य की कोई आवश्यकता न होगी । तब जनसाधारण राज्य-व्यवस्था को अनावश्यक समझकर त्याग देगा । लेकिन व्यवहार में हम इसका उल्टा पाते हैं । वास्तव में रूस और चीन दोनों देशों में साम्यवादी प्रथा जनता की स्वेच्छा पर नहीं वरन पार्टी के कड़े आतंकपूर्ण नियन्त्रण में चल रही है। इन दोनों देशों के व्यक्तियों का कोई अस्तित्व नहीं है । छीना-झपटी और हर प्रकार के नैतिक अथवा अनैतिक उपायों द्वारा शासन को अपना लेना ही आधार है। रूस मे ट्राटस्की, स्टैलिन, खुश्चेव बुलगानिन आदि समय के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों की प्रतिष्ठा रातों सत धूल में मिलने की घटनाएँ इसकी प्रमाण हैं । दूसरी ओर चीन में जहाँ थोड़े ही समय का साम्यवाद है हम गृह युद्ध की स्थिति देख रहे हैं ।

वर्तमान पद्धतियों में यह दोष क्यों है ? क्योंकि बलपूर्वक व्यक्ति की सम्पत्ति छीन कर उसे समाज की घोषित करने की प्रथा से समानता लाने का प्रयत्न स्वयमेव ठीक नहीं है ।

महात्मा गाँधी यही कहते थे कि हृदय परिवर्तन के आधार पर पवित्र साधनों द्वारा समाज में समानता लाने का प्रयत्न ही भारत के लिए उपयुक्त है । उनके शिष्य आचार्य विनोबा भावे इसी आधार पर सर्वोदय आन्दोलन के अन्तर्गत भूदान और ग्रामदान का आन्दोलन चला रहे हैं और हम देखते हैं कि गैर सरकारी व्यक्ति के रूप में शासन शक्ति से सर्वथा विहीन होने पर भी वे अपने उद्देश्य में बहुत अंशों तक सफल हुए हैं और उनका प्रयत्न उपर्युक्त वर्णित दोषों से मुक्त है ।

इस सन्दर्भ में हम भगवान राम द्वारा स्थापित वर्ग-विहीन समाज की नीतियों पर यदि ध्यान दें तो अधिक लाभकारी होगा —

राम राज्य बैठे त्रैलोका ।
हर्षित भए गये सब सोका ॥
बैर न कर काहू सन कोई ।
राम प्रताप विषमता खोई ॥

विषमता मिटाने का जो कार्य बीस वर्षों में काँग्रेस सरकार नहीं कर सकी, राम के गद्दी पर बैठने के बाद अल्पावधि में ही वह लक्ष्य पूरा हो गया । विषमता समाप्त हो गई और तीनों लोकों के लोग हर्ष और सुख का अनुभव करने लगे । ऐसा क्यों हुआ ? क्योंकि भगवान राम ने सही ढंग से वर्ग-विद्वेष मिटाने का प्रयत्न किया था । वास्तव में समाज से वर्ग-विद्वेष को मिटाने का मूलाधार है-आपसी प्रेम निर्वैरता । केवल आर्थिक सम्पन्नता हमारी समस्त समस्याओं का समाधान नहीं है। वर्ग विहीनता का आधार नागरिकों का चरित्र है । विषमता हमारे मन की स्थिति है, शरीर का स्वरूप नहीं । हर काल में शारीरिक, बौद्धिक और आर्थिक दृष्टि से लोगों का असमान होना स्वाभाविक और नैसर्गिक है । शरीर से कोई मोटा होता है कोई दुबला । किसी की बुद्धि तीव्र और कुशाग्र होती है तो अनेकों महामूर्ख या बुद्धिहीन होते हैं । कोई राज्य का प्रधानमन्त्री होता है तो कोई चौकीदार । दोनों का प्रभाव, व्यक्तित्व तथा रहन-सहन भला समान कैसे हो सकता है ? प्रधानमन्त्री के लिए मोटर की अनिवार्य आवश्यकता है लेकिन चौकीदार के पद के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह अनुपयोगी है । हाथ की पाँचों उंगलियाँ यदि बराबर कर दी जाएँ तो काम ही रुक जायेगा । छोटी बड़ी होना उनके लिए आवश्यक है । इस प्रकार समाज में शारीरिक, बौद्धिक और आर्थिक दृष्टि से थोड़ी-बहुत विषमता रहना अनिवार्य है । लेकिन प्रश्न उठता है कि तो फिर समानता लाने का प्रयत्न ही बेकार है ? वास्तव में समानता का अर्थ है— अपनी-अपनी स्थिति में सबको विकास और प्रगति का अवसर प्रदान करना । किसी की हस्ती को मिटाकर दूसरे को बड़ा बनाना वर्ग-विहीन समाज के सिद्धान्त के विपरीत है। राम ने इस बात को जाना था । सुखी समाज का आधार निर्वेरता है । इसलिए विषमता मिटाने के लिए उन्होंने समाज से वैर-भाव को मिटाया । वह सारी प्रणालियाँ जिनसे प्रजा-वर्ग में आपसी कलह और द्वेष पैदा हो, राम ने समाप्त कर दीं ।

आज हम गाँव-गाँव मे फूट और परिवार-परिवार में कलह का दर्शन करते हैं। चुनावों में आपसी प्रतिकूलता में अपने भाई को नीचा दिखाने में हमारी शक्ति व सम्पत्ति और बौद्धिक क्षमता का बड़ा भाग व्यय होता है। क्या भारतीय किसान मुकद्दमे में गरीब नहीं होता ? उसका पैसा पानी की तरह बहता है । इन सब बुराइयों का जड़ दलगत राजनीति है । केन्द्र तथा प्रान्तों में पार्टीबन्दी के आधार पर विधान सभाओं का निर्माण, स्वायत्त शासन में पार्टीबन्दी, पंचायत-राज्य ऐक्ट बनाकर गाँव-गाँव में दलबन्दी, कलह और वर्ग-विद्वेष का जहर पूरी तरह से फैला दिया गया है । हमारी अशान्ति और समानता का यही मुख्य कारण है । भगवान राम के शासन को एकात्मक अवश्य कहा जा सकता हैं, लेकिन सभी को विकास का समानाधिकार था । इसलिये राम के शासन को हम सच्चे अर्थों में प्रजातन्त्र शासन प्रणाली पर आधारित शासन कह सकते हैं ।

स्वधर्म अथवा अपने कर्तव्यों पर आरूढ़ रहना

निर्वेरता की बात कह कर समाज में विषमता मिटाना अधिक व्यावहारिक तभी हो सकता है जब निर्वेरता का कोई ठोस आधार हो । यह ठोस आधार क्या हो सकता है ? इसका उत्तर आगे के दोहा में मिलता है—

वर्णाश्रम निज-निज धरम निरत वेद पथ लोग ।
चलहिं सदा पावहिं सुख नहिं भय शोक न रोग ॥

चार वर्ण हैं— ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र और चार आश्रम माने गये हैं— ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। मनुष्य तभी सुखी हो सकता है जब अपने वर्ण तथा आश्रम के अनुसार विहित कर्तव्य कर्म के अनुसार चले । श्रुति द्वारा प्रतिपादित यही राजमार्ग है । राम राज्य में समाज के सभी लोगों के सुख, निर्भयता और नीरोगता का यही रहस्य था कि वे अपने धर्म-कर्तव्य के अनुसार चलते थे । इसीलिए सब में प्रेम था और लोग एक-दूसरे से द्वेष रहित रहते थे ।

आज संसार में अनेक पथ, सम्प्रदायों और मतमतान्तरों का उद्भव हो गया है । ढाई चावल की खिचड़ी सभी पकाते हैं और अपने मन को अन्यों की तुलना में श्रेष्ठ समझते हैं। इसीलिए आपसी कलह, द्वेष व्याप्त है ।

गोस्वामी जी ने कलियुग की सामाजिक स्थिति का जो चित्रण किया है वह पूर्णतया घटित होता है—

कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सद् ग्रन्थ ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि कर प्रकट किए बहु पंथ ॥
भए लोग सब मोह बस लोभ ग्रसे शुभ कर्म ।
सुनु हरिजान ग्यान निधि कहउं कलुक कलिधर्म ॥
बरन धर्म नहिं आश्रम चारी ।
श्रुति विरोध रत सब नर नारी ॥

वर्तमान स्थिति ऐसी ही है, फिर लोग किस प्रकार सुखी हों और कैसे नीरोग और निर्भय रहें ? विद्यार्थी अपने आश्रम कर्तव्य को छोड़ कर हड़ताल आन्दोलन और यूनियन बनाने में अपनी साधना कर रहे हैं। गृहस्थ धर्म के झंझट से बचकर लोग साधु-संन्यासी बन कर समाज पर बोझ बनने और भिक्षा माँग कर पेट पालने में तनिक भी हिचक नहीं करते । परिणामत: भारतवर्ष में भस्म लगाए, कमंडल धारण करने वाले तथाकथित साधुओं की एक भारी जमात बन गई है जिनकी संख्या चौअन लाख से अधिक अनुमान की जाती है । वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों का तो प्राय: लोप होता जा रहा है । उठने-बैठने में विवश बूढ़े भी पोते-नाती के मोह में फँसे घर-गृहस्थों में चिपके रहते हैं। सभी आश्रम और सब धर्म उलट पुलट गये हैं—

द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन ।
कोउ नहि मान निगम अनुशासन ॥
मारग सोइ जा कहँ जोइ भावा ।
पण्डित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्यारम्भ दम्भ रत जोई ।
ता कहुँ संत कहइ सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधन हारी ।
जो कर दम्भ सो बड़ आचारी ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो कह झूँठ मसखरी जाना ।
कलियुग सोइ गुनवंत बखाना ॥
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी ।
कलियुग सोइ ग्यानी सो बिरागी ॥
जाके नख अरु जटा बिसाला ।
सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥
असुभ बेष भूषन धरे भच्छाभच्छ जे खाहि ।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलयुग माहि ॥
जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान बहु ।
मन क्रम बचन सबार तेइ बकता कलिकाल महु ॥
नारि मुई गृह सम्पत्ति नासी ।
मूड़ मुडाय होहिं संन्यासी ॥
विप्र निरक्षर लोलुप कामी ।
निराचार सठ वृषली स्वामी ॥

वर्ण और आश्रम-धर्म के उलट-फेर के कारण ही समाज में अव्यवस्था, कलह, द्वेष और भेदभाव का बोलबाला होता है। भगवान राम के वर्ग-विहीन समाज की सफलता की कसौटी प्रत्येक व्यक्ति द्वारा आश्रम और वर्ण के अनुसार अपने कर्तव्य कर्म में रत रहना था । मर्यादा पुरुषोत्तम ने इसी पर अधिक बल दिया । फलत: वे आदर्श समाज स्थापना के लक्ष्य में पूरी तरह से सफल हुए। मानस के समाज का आदर्श यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए कार्य न करके सामाजिक नियम और मर्यादा पालन के लिए कार्य करता था। इससे समाज का आदर्श संगठन भी रहता है और व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ण प्रयत्न किए बिना ही सभी लोग सम्पत्तिमान, प्रसन्न और सुखी रहते थे ।

वर्तमान समय में वर्ण-व्यवस्था का रूप बहुत अंशों में भ्रष्ट हो गया है । गुण तथा कार्य के स्थान पर जन्म के आधार पर वर्ण अब जातियों और उपजातियों में विभक्त हो गए हैं । रूढ़िवाद और अन्धविश्वास ने उसमें डेरा जमा लिया है । लेकिन इन सब कमियों और दोषों के बावजूद भी वर्ण-व्यवस्था ने समाज को जीवित और विकसित रहने में अमूल्य सहयोग प्रदान किया है । इसे मिटाने का प्रयत्न करना हिन्दू समाज और संस्कृति को मिटा देना होगा ।

समाज में सुख-शान्ति लाने के लिए भगवान राम के चरण चिन्हों पर चलने की इच्छा रखने पर हमें इसी नीति को अपनाना पड़ेगा । आज की परिस्थितियों में भी वही मार्ग सही है जिस पर भगवान् राम ने वर्ग-विहीन समाज की स्थापना की थी—

सब नर करहिं परस्पर प्रीति ।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति ॥

श्रुति की नीति के अनुसार स्वधर्म पर चलने के कारण सब लोग एक दूसरे से प्रीति करते थे । आज भी हम यदि आपस में प्रेम प्रीति करने लगें तो राम राज्य आने में देर नहीं । उस काल में आपसी प्रेम और संगठन के कारण दैहिक और दैविक शक्तियाँ बस में थीं —

दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
राम राज नहिं काहुहि व्यापा ॥

धार्मिक दशा

धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मेण विधृतता प्रजाः ।
यत्स्याद्धारण युक्तस्य स धर्म इति निश्चयः ॥
प्रभवार्थाय भूतानां धर्म प्रवचनं कृतम् ।
यत्स्यात्प्रभव युक्तस्य स धर्म इति निश्चयः ॥

अर्थात् जिससे समाज, प्रजा या सब प्राणियों की धारणा तथा उन्नति हो, वही धर्म है । धर्म केवल यज्ञ-हवन नहीं लौकिक, पारलौकिक, सामाजिक, वैयक्तिक सभी का अस्तित्व उसमें मिलता है । धर्म मर्यादा का वह बन्धन है जिसमें कल्याण निहित रहता है तथा मर्यादा स्थिर रहती है । धर्म प्राण हैं, नियम उसका वाहक या शरीर है । धर्म की रक्षा से प्राणी की रक्षा होती है और धर्म के नाश से सबका नाश होता है । धर्म के व्यापक सिद्धान्त सब सम्प्रदाय अथवा वर्गवाद से ऊपर उठकर सबके लिए समान होते हैं ।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के आदर्श शासन कालीन समाज में जाति-पाति, ऊँच-नीच तथा अमीर-गरीब का भेद मिटाकर बस लोग एक प्रेमसूत्र में इसलिए बंधे थे क्योंकि धर्म के अनुसार सबका आचरण होता था । धर्म की समाज में प्रतिष्ठापना रही—

चारिउ चरन धर्म जग माहीं ।
पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं ॥
राम भगति रत नर अरु नारी ।
सकल परम गति के अधिकारी ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्य, शौच, दया और दान धर्म के चार चरण अथवा चार आधार माने गये हैं। सच्चा धार्मिक कहलाने का वही अधिकारी है जिसमें ये चारों विशेषताएँ हों। राम कालीन समाज का धर्म कुछ सिद्धान्तों का प्रचार मात्र नहीं था वरन् वेदवेदांगों से मुखरित सार्वभौमिक सिद्धान्तों को जनसाधारण के आचरण में प्रवेश करा देना धर्म की व्यापकता का प्रमाण था। तत्कालीन समाज में समस्त संसार में धर्म-भावना का व्यापक प्रसार रहा। धार्मिक नियमों और बन्धनों से राजा-प्रजा, पण्डित और मूर्ख सा बँधे हुए थे। नियमों और मर्यादाओं का उल्लंघन करना किसी के लिए सम्भव नहीं था।

सत्याचरण, पवित्रता, दयालुता और दान का जिस समाज के नागरिकों में महत्वपूर्ण स्थान हो वहाँ किसी प्रकार के पाप भला कैसे टिक सकते हैं ? धर्म के व्यापक प्रसार से पाप कर्म अन्याय, असत्य, अशौच और निर्दयता का इस सीमा तक लोप हो चुका था कि गोस्वामी जी कहते हैं कि 'पूरि रहा सपनेहूँ अघ नहीं।' स्वप्न में भी पापाचरण के दर्शन नहीं हो पाते थे।

यदि हम समाज से अनीतिज्ञों, अन्यायों और पाप कर्मों को नष्ट करना चाहते हैं तो बहुत-सी अदालतें खोल देने, वकीलों की संख्या बढ़ा देने अथवा कानून बना देने मात्र से इसमें सफलता प्राप्त करना संभव नहीं है। वही मार्ग अपनाना पड़ेगा जिसे भगवान राम ने अपनाया था। धर्म, धार्मिक नियमों और सद्प्रवृत्तियों का प्रजा वर्ग में प्रसारण करना और लोगों का आस्तिक अथवा ईश्वरवादी बनने की प्रेरणा देना भगवान राम के शासन का अनिवार्य अंग था। उनके काल में केवल कानून बनाने अथवा राजनैतिक मामलों पर विचार करने के लिए बड़ी-बड़ी सभाओं या दरबारों का आयोजन नहीं होता था, स्वयं राम विशिष्ट प्रजाजनों, कर्मचारियों, प्रतिनिधियों और राजपुरोहितों को बुलाकर धार्मिक उपदेश देते थे। इस प्रकार के एक प्रसंग का वर्णन रामायण में मिलता है—

एक बार रघुनाथ बोलाए।
गुरु द्विज पुरबासी सब आए॥
बैठे गुरु मुनि अरु द्विज सज्जन।
बोले बचन भगत भय भंजन॥
सुनहु सकल पुरजन मम बानी।
कहउँ न कछु ममता उर आनी॥
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई।
सुनहु करहु जो तुम्हहिं सोहाई॥
सोई सेवक प्रियतम मम सोई।
मम अनुशासन माने जोई॥
जो अनीति कछु भाषौं भाई।
तौ मोहि बरजहु भय बिसराई॥
बड़े भाग मानुष तन पाबा।
सुर दुर्लभ सब ग्रन्थन्हि गावा॥
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा।
पाइ न जेहि परलोक सँवारा॥
सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि-धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ॥
एहि तन कर फल विषय न भाई।
स्वर्गउ स्वल्प अन्त दुःखदाई॥
नर तन पाइ बिषय मन देहीं।
पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं॥
ताहि कबहु भल कहइ न कोई।
गुंजा गहइ परस मनि खोई॥
आकर चारि लच्छ चौरासी।
जोनि भ्रमत यह जिव अविनासी॥
फिरत सदा माया कर प्रेरा।
काल कर्म सुभाव गुन घेरा॥
कबहुँक करि करुना नर देही।
देत ईस बिनु हेत सनेही॥
नर तन भव बारिधि कहँ बेरो।
सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो॥
करनधार सद्गुरु दृढ़ नावा।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा॥
जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ।
सो कृत निंदक मन्दमति आत्माहन गति जाइ॥

प्रजा प्रतिनिधियों के सन्मुख दरबार में राम का यह उपदेश विशुद्ध धार्मिक और आध्यात्मिक है। राम केवल राजनेता नहीं थे। वे समाज के प्रत्येक व्यक्ति को लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के सुख प्रदान करने के लिए जो भी सम्भव उपाय थे, सभी का करना राजा के रूप में अपना कर्तव्य मानते थे। यही कारण था कि उस काल में पाप का स्वप्न में भी दर्शन नहीं होता था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राम भगति रत नर अरु नारी

राम भक्ति का अर्थ है— आस्तिकता, ईश्वरपरायणता। मनुष्य को सीधे मार्ग पर चलाने के लिए किसी अंकुश की आवश्यकता है। स्वच्छन्दता और निरंकुशता भले से भले और सद्विचार सम्पन्न व्यक्ति को भी बलात् बुराई की ओर प्रेरित कर देती है।

ईश्वर की सत्ता से भययुक्त रहने वाला प्राणी मनुष्य से भय नहीं खा सकता। ईश्वरपरायणता अथवा आस्तिकता जहाँ एक ओर व्यक्ति में उस परम शक्ति से सशंकित रहने की प्रेरणा देती है, वहाँ दूसरी ओर संसार की समरस्थली में कर्तव्यरत रहने की प्रेरणा और शक्ति दोनों प्रदान करती है। इसीलिए आदि काल से आस्तिकता, ईश्वर भक्ति भारतीय संस्कृति का प्राण रही है। भारत एक धर्मप्रधान देश माना जाता रहा है।इस पवित्र भूमि के कण-कण में ईश्वर परायणता ओत-प्रोत है। इस भूमि पर अनेक अवतारों की लीलाएँ वायुमण्डल को गुंजारित कर रही हैं। गंगा, यमुना-सी पवित्र नदियों, हिमालय और विन्ध्याचल आदि पर्वतों से आध्यात्मिकता की सूक्ष्म ध्वनि प्रतिध्वनित हो रही हैं यहाँ के नागरिक जब तब धर्मपरायण रहे उनमें सदाचार और मानवोचित गुणों की कमी न रही। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक प्रबल उत्साह, उमंग एवं जीवन का दर्शन मिलता था। यह दुर्भाग्य की बात कही जा सकती है कि भारत जैसे देश में बाहरी हवा के प्रभाव से नास्तिकता ने डेरा जमाया। हमारे कष्टों और दु:खों का एक कारण ईश्वरी शक्ति पर अश्रद्धा प्रकट करना भी है।

आस्तिकता वह पथ है जिस पर चलने से समस्त मानवोचित गुणों की उपलब्धि सहज में हो जाती है। जनसाधारण को प्रेम, संगठन व अनुशासन के सूत्र में बाँधने के लिए आस्तिकता से बढ़कर दूसरा कोई उपाय है ही नहीं। किसी व्यक्ति विशेष के प्रति जनसाधारण में निष्ठा और श्रद्धा के भाव यदि न पैदा किए जाएँ तो समाज के बिखर जाने की आशंका रहती है। रूस और चीन जैसे साम्यवादी देशों में इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सका। साम्यवाद विचारधारा के अनुसार सरकार बनाने पर भावावेश में ईश्वर का जनाजा इन देशों में निकाला गया, लेकिन व्यक्ति पूजा को हटाया न जा सका। रूस में लेनिन के मजार पर हजारों व्यक्ति नित्य फूलमाला चढ़ाते है और नाना प्रकार की प्रार्थनाऐं करते हैं। चीन के समस्त् रेडियो और प्रचार-तन्त्र माओत्सेतुंग की प्रशंसा और वन्दना में रत रहते हैं। उन देशों के बहुसंख्यक लोगों के लिए वे भगवान स्वरूप हैं।

अवतारों की पूजा और उनके प्रति श्रद्धा इन कोरे राजनीतिज्ञों के चरणों में शीश झुकाने से हजार गुना श्रेष्ठ है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम आस्तिकता और ईश्वरपरायणता की सूक्ष्म शक्ति को भली प्रकार जानते थे। इसलिए उनके समय में समाज का कोई व्यक्ति नास्तिक नहीं हो सकता था। ईश्वर भक्त होने के कारण वे सब परम गति के अधिकारी थे।

स्वयं भगवान राम भी अपना आचरण धार्मिक पुरुष की भाँति रखते थे। राजपरिवार के किसी व्यक्ति को अधार्मिक और मनमाने ढंग से जीवन बिताने की अनुमति न थी। उनकी राजोचित दिनचर्या प्रसंग में आया है कि —

प्रात काल सरऊ करि मज्जन।
बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन॥
वेद पुराण बसिष्ठ बखानहिं।
सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं॥

धार्मिक ग्रन्थों का पठन-पाठन प्राय: विश्व के समस्त धर्मों में धार्मिक आचरण का आवश्यक अंग माना गया है। ऐसा करने से हमारे हृदय में धार्मिक भाव स्थिर रहते हैं और ईश्वरीय निर्देशों पर चलने की प्रेरणा मिलती है।

भगवान राम यद्यपि धर्म के समस्त रहस्यों को जानते थे, परन्तु लोक मर्यादा की दृष्टि से उन्होंने कभी उसकी उपेक्षा नहीं की। नित्य प्रात: सरयू स्नान के बाद दरबार के संभ्रान्त व्यक्तियों, भाइयों एवम् राज्य के उच्चाधिकारियों के साथ बैठकर वेद-पुराणों के कथा प्रसंगों को सुनना उनके दैनिक कार्यक्रम का आवश्यक अंग था। इन्हीं कुछ विशिष्ट नियमों और उपायों के कारण उनके भाइयों और राजकर्मचारियों में स्वार्थ अथवा पदलोलुपता के भाव जाग्रत नहीं हो पाते थे। उस काल की प्रजा के सदाचारी होने का यही रहस्य रहा।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आर्थिक स्थिति

उदार और उन्नतिशील नीति का अनुसरण करने वाले राज्य में समाज की आर्थिक दशा कैसी होती है और प्रजा का जीवन कितना सुखी तथा समुन्नत होता है, यह रामराज्य की प्रजा की आर्थिक दशा तथा वैभवपूर्ण राजधानी अयोध्या नगरी के विपुल सम्पदा के वर्णन से हम भली प्रकार समझ सकते हैं।

आर्थिक कष्ट से समाज की सुख-शान्ति विनष्ट हो जाती है। परस्पर घृणा, ईर्ष्या, लोभ का तांडव ऐसे समाज में देखने को मिलता है परधनहारी भी उसी समाज में मिलते हैं जहाँ आर्थिक कष्टों का बराबर सामना करना पड़ता है। उत्तरकांड में गरुड़ के सप्त प्रश्नों के उत्तर में काकभुशुण्ड जी ने दरिद्रता को सबसे बड़ा दुःख बताया है—

नहि दरिद्र सम दुख जग माहीं।
संत मिलन सम सुख जग नाहीं॥

दरिद्रता में मनुष्य का दीन धर्म सब नष्ट हो जाता है। कहावत है—

"आरत काहि न करै कुकरमू।"

दुःखी व्यक्ति नीच से नीच कर्म करने में संकोच नहीं करता। आर्थिक संकट और दरिद्रता के समय में चोरी, डकैती, कत्ल, खून और इसी प्रकार की घटनायें बहुत बढ़ जाती हैं। जिस देश अथवा समाज में जरायम पेशा की अधिकता हो वहाँ निःसंकोच रूप से आर्थिक संकट का अनुमान लगा लेना चाहिए। किसी राष्ट्र अथवा समाज के आर्थिक संकट का यही सबसे बड़ा कारण होता है।

भगवान राम के शासन काल में सम्पूर्ण अयोध्या का राज्य धन-धान्य से परिपूर्ण था।

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥

अवध के विशाल साम्राज्य में एक भी व्यक्ति दरिद्र नहीं था। भला ऐसे सम्पन्न समाज में कोई दुःखी अथवा दीन कैसे रहे ? लेकिन —

राम राज्य विहगेश सुनु सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाय गुन कृत दुख काहुहि नाहिं॥

राम राज कर सुख सम्पदा।
बरनि न सकइ फनीस सारदा॥

अयोध्यापुरी का वर्णन करते हुए गोस्वामी जी लिखते हैं—

अवधपुरी बासिन्ह कर सुख सम्पदा समाज।
सहस सेष नहि कहि सकहिं जहँ नृप राम बिराज॥
नारदादि सनकादि मुनीसा।
दरसन लागि कोसलाधीसा॥
दिन प्रति सकल अजोध्या आवहिं।
देखि नगरु बिरागु बिसरावहिं॥
जात रूप मनि रचित अटारी।
नाना रंग रुचिर गच ढारी॥
पुर चहुँ पास कोट अति सुन्दर।
रचे कंगूरा रंग रंग वर॥
नवग्रह निकर अनीक बनाई।
जनु घेरी अमरावति आई॥
महि बहु रंग रचित गच काँचा।
जो बिलोकि मुनिवर मन नाचा॥
धवल धाम ऊपर नभ चुम्बत।
कलस मनहुँ रवि ससि दुति निंदत॥
बहु मनि रचित झरोखा भ्राजहिं।
गृह गृह प्रति प्रति दीप बिराजहिं॥
मनि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी बिद्रुम रची।
मनि खंभ भीति बिरंचि बिरची कनक मनि मरकत खची॥
सुन्दर मनोहर मन्दिरायत अजिर रुचिर फटिक रचै।
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे॥
चारु चित्र साला गृह गृह प्रति लिखे बनाइ।
राम चरित जे निरख मुनि ते मन लेहि चोराइ॥

हमें यह स्मरण रखना है कि अकेले एक व्यक्ति द्वारा आदर्श समाज नहीं बन सकता। आदर्श समाज के निर्माण में सबका सहयोग होता है और सबके मिलजुल कर ठीक ढंग से कर्तव्य पालन करने पर समाज आदर्श बनेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'सब सुखी सब सच्चरित्र सुन्दर नारि ।'

वे सब सुखी इसलिए थे क्योंकि चरित्रवान् थे । वणिक-वर्ग जब समाज को सुख-सुविधा पहुँचाने की दृष्टि से, सेवा भाव से अपना उद्यम और व्यवसाय चलाता है तभी वह स्वयं भी सुखी बनता है और समाज में शान्ति तथा प्रेम रहता है ।

कम तोल-नाप कर अधिक नफे का लोभ, असली माल के भाव में घटिया माल देना, नकली वस्तुओं की तैयारी और असली का लेबिल लगाना,कम परिश्रम करके अधिक लाभ लेने की चेष्टा,चोरबाजारी आदि अनैतिक व्यापार व्यापारी समाज को अल्पकाल के लिए धनी तो बना सकते हैं लेकिन उस धन के द्वारा उन्हें सच्चे सुख और सुन्दर स्वास्थ्य की उपलब्धि नहीं हो सकती । अनैतिक ढंग से धन-संग्रह से समाज में अशान्ति और कलह बढ़ती है । राम-राज्य में समस्त स्त्री-पुरुष और बाल-वृद्ध सब कोई धन-सम्पन्न होने के साथ सुखी और स्वस्थ रहते थे ।

भारत एक कृषि-प्रधान देश है । कृषि की उपज पर समाज के धनी और निर्धन होने की बात निर्भर करती है । आदि काल से खेती एक अंश तक कृषकों के परिश्रम और चतुरता पर तथा तीन अंशों में प्राकृतिक शक्तियों – वर्षा, वायु, प्रकाश आदि के सहयोग पर निर्भर करती है । प्रकृति का समुचित सहयोग लिए बिना केवल अपने परिश्रम के बूते पर खेती की पैदावार में वृद्धि करना सम्भव नहीं है । यही कारण है कि भारतीय किसान ईश्वरवादी रहा । उसकी ईश्वर पर अटूट श्रद्धा रही– यज्ञ परम्परा और इन्द्र, वरुण, कुबेर आदि प्राकृतिक शक्तियों के पूजन की अनेक परिपाटियों का प्रचलन करके इन शक्तियों को अपने अनुकूल करने की चेष्टा की गई है । इस तथ्य को वर्तमान समय में कम समझा जाता है । यही कारण है कि रूस और अमेरिका से ट्रैक्टर तथा अनेक कृषि यन्त्रों को प्रति वर्ष भारी संख्या में मँगाकर कृषि को यन्त्रीकृत करने के प्रयत्न के बावजूद भी हम वांछित सफलता नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं । दैवी प्रतिकूलता के कारण प्रति वर्ष हमारे उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ता है और भारी मात्रा में विदेशों से अन्न मँगाने के कारण हमारी आर्थिक व्यवस्था बुरी तरह नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है । भगवान राम के काल में समाज सामूहिक,व्यक्तिगत और राजनैतिक रूप में प्राकृतिक शक्तियों को अनुकूल करने की पूरी चेष्टा करता था । परिणामत: प्राकृतिक शक्तियाँ पूरी तरह समाज के अनुकूल थीं–

फूलहिं करहिं सदा तरु कानन ।
रहहिं एक संग गज पंचानन ॥
खग मृग सहज बयरु बिसराई ।
सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥
कूजहिं खग मृग नाना वृन्दा ।
अभय चरहिं बन करहिं अनन्दा ॥
सीतल सुरभि पवन बह मन्दा ।
गुन्जत अलि लै चलि मकरन्दा ॥
लता बिटप माँगे मधु चबहीं ।
मन भावतो धेनु पय स्रवहीं ॥
ससि सम्पन्न सदा रह धरनी ।
त्रेता भइ कृतजुग कै करनी ॥
प्रगटी गिरिन्ह बिबिध मनि खानी ।
जगदातमा भूप जग जानी ॥
सरिता सकल बहहिं बरबारी ।
सीतल अमल स्वाद सुखकारी ॥
सागर निज मरजादा रहहीं ।
डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं ॥
सरसिज संकुल सकल तड़ागा ।
अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा ॥
बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तपजेतनेही काज ।
माँगे बारिद देहिं जल रामचन्द्र के राज ॥

लेकिन यह शक्तियाँ राम के शासन काल में क्यों अनुकूल रहती थीं और आज प्रतिकूल क्यों हैं ? उत्तर बिल्कुल स्पष्ट है । भगवान् राम के समय में नागरिकों ने उन्हें अपने अनुकूल करने का उपाय किया था । स्वयं भगवान् राम सचेष्ट रहते थे और उनकी प्रजा भी उन्हीं के आचरण तथा चेष्टा का अनुसरण करती थी ।

आर्थिक सम्पन्नता का वर्णन करने वाली चौपाइयों के ठीक आगे उन्हें वश में करने वाले प्रयत्नों को प्रतिपादन करने का रहस्य बताने वाली चौपाइयाँ आती हैं–

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे ।
दान अनेक द्विजन्ह कहुँ दीन्हे ॥
श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर ।
गुनातीत अरु भोग पुरन्दर ॥

इसीलिए सभी के घरों में धार्मिक कृत्य होते रहते थे । यज्ञ की धूम्र सभी के घरों से निकल कर अयोध्या नगरी पर चौबीसों घण्टे बादल के समान छाई रहती थी –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सबके गृह गृह होहिं पुराना ।
राम चरित पावन बिधि नाना ॥

हम भी यदि प्राकृतिक शक्तियों को अपने अनुकूल करने की सही चेष्टा करें तो अपने व्यापार ,खेती ,उद्योग धन्धे आदि सबको समुन्नत कर राष्ट्र को आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी और सम्पन्न बना सकने में समर्थ हो सकते हैं ।

खेती और व्यापार के साथ-साथ उस काल के लोग बाग बगीचों के बड़े प्रेमी होते थे । सुन्दर ढ़ंग से जीवन जीने की कला वे जानते थे । उद्यानों और वाटिकाओं का लगाया जाना आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद है । इस रहस्य को नागरिक गण जानते थे, इसीलिए –

सुमन बाटिका सबहि लगाई ।
बिबिध भाँति कर जतन बनाई ॥
लता ललित बहु जाति सुहाई ।
फूलहिं सदा बसन्त की नाई ॥
गुन्जत मधुकर मुखर मनोहर ।
मारुत त्रिबिधि सदा बह सुन्दर ॥

पक्षियों और पशुओं का किलोल करना सुख-शान्ति का द्योतक होता है । पालतू पक्षी पारिवारिक सुख का प्रतीक माना जाता है । उस काल में यह दृश्य चारों ओर दिखाई पड़ते थे ।

नाना खग बालकन्हि जिआए ।
बोलत मधुर उड़ात सुहाए ॥
मोर हंस सारस पारावत ।
भवननि पर सोभा अति पाबत ॥
जहँ तहँ देखहिं निज परिछाँही ।
बहु बिधि कूजहिं नृत्य कराही ॥
सुक सारिका पढ़ावहिं बालक ।
कहहु राम रघुपति जन पालक ॥

तुलसीदास जी ने जनता के सामने राम राज्य का आदर्श रखा और जनता की मनोवृत्तियों को इस ओर झुकाया कि ईति-भीतियों को विनष्ट करने वाली शक्ति राम के नाम में विद्यमान है । बिगड़ी हुई आर्थिक परिस्थिति में धैर्य और विवेक से काम लेने पर उसे बदला जा सकता है ।

साथ ही इस बात की भी पुष्टि होती है कि जब राजा अथवा राजतन्त्र सत्यव्रती, न्यायपरायण एवं धार्मिक हो जायेगा, तब दैविक शक्तियाँ भी समय-समय पर आवश्यकतानुसार अपना दान देकर देश में सुख समृद्धि का साम्राज्य विस्तृत करेंगी । तभी खेती उत्तम होगी तथा अकाल की आशंका दूर होगी और तभी आर्थिक कठिनाईयों से मुक्ति मिलेगी । मनुष्य के पास जब क्षुधा शांत करने के साधन होंगे तभी सब उद्योग धन्धों की उन्नति होगी और पुनः राम राज्य के स्थापित हो सकने की आशा की जा सकेगी ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामाजिक स्वच्छता

मनु द्वारा प्रतिपादित धर्म लक्षणों में शौच एक मुख्य लक्षण है। बौद्ध और जैन धर्मों ने भी अपने धर्म सिद्धान्तों में भीतरी बाहरी स्वच्छता को प्रधान स्थान दिया है। समाज में आर्थिक सम्पन्नता बहुत हो लेकिन यदि वह गन्दगी, अस्वच्छता और फूहड़पन से युक्त हो तो वह सम्पन्नता समाज के सभी लोगों के लिए वरदान के स्थान पर अभिशाप ही बनेगी।

आज परिस्थिति कुछ ऐसी ही है। आर्थिक योजनाएँ आवश्यकता से अधिक चल रही हैं, लेकिन किसी भी शहर अथवा गाँव की गलियों में निकल जायें तो जी मिचलाने लगेगा। चारों और गन्दगी के दर्शन होंगे। तथाकथित सम्भ्रान्त व्यक्ति भी अपने घरों से कूड़ा बाहर कर सामने की सड़क पर फेंक देंगे। चलते-फिरते घर में चारों ओर दीवारों और फर्श पर थूकना, नाक छिनकना तो बहुत सामान्य बात है। पत्ती, तम्बाकू खाने वाले लोग तो अपने चारों और थूक की पिचकारी छोड़ते रहते हैं। किसी स्टेशन के प्लेटफार्म अथवा गाड़ी के डिब्बे में देखिये, सर्वत्र गन्दगी के दर्शन होंगे। सरकारी कार्यालय पान की पीकों और बीड़ी-सिगरेट के टुकड़ों से भरे मिलेंगे।

जहाँ सर्वत्र अस्वच्छता का वातावरण हो उस समाज को अच्छा समाज कहने में सभी संकोच करेंगे। विदेशी लोग जो भारत भ्रमण करने आते हैं कहते हैं कि 'भारत के गाँव गोबर के घूरों पर बसे हैं।'

हमें अपने देश को बदलना है। बुराईयों के स्थान पर अच्छाइयों की प्रतिष्ठापना करनी है तो राम-शासनकालीन समाज के आदर्श को देखना चाहिये। स्वयं राम अवतार लेकर आदर्श समाज की स्थापना नहीं करेंगे वरन् जब हम सब लोग सही ढंग से जीवन जीने की प्रक्रिया अपना लेंगे तो समाज स्वत: आदर्श बन जायेगा। हर काम के लिए दूसरों पर भरोसा करना और हर बुराई के लिए अन्यों पर दोषारोपण करने की प्रवृत्ति हमें ऊँचा नहीं उठा सकती।

नदियों के किनारे बड़ी श्रद्धा भक्ति से लोग स्नान करने जाते हैं, लेकिन दातून और कीचड़ से चारों ओर के घाटों को गन्दा करने में तनिक भी संकोच नहीं करते। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के समय में सर्वत्र स्वच्छता एवम् पवित्रता का लोग कितना ध्यान रखते थे इसे जरा देखिये। सरयू नदी के किनारे जहाँ नित्य हजारों व्यक्ति स्नान करते थे कीचड़ कहीं देखने को नहीं मिलता था —

उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गम्भीर।
बांधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर॥

पशुओं के पीने पीने का स्थान दूर था, पानी भरने के स्थान पर कोई स्नान नहीं कर सकता था—

दूरि फराक रुचिर सो घाटा।
जहँ जल पिअहि बाजिगन ठाटा॥
पनिघट परम मनोहर नाना।
तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना॥

नदी के किनारे ऋषि-मुनियों ने अति सुन्दर वातावरण बना दिया था—

तीर तीर देवन्ह के मंदिर।
चहुँ दिसि तिन्ह के उपवन सुन्दर॥
कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी।
बसहिं ग्लान रत मुनि संन्यासी॥
तीर तीर तुलसिका सुहाई।
बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई॥

ऋषि मुनिगण भी इस प्रकार नदियों के किनारे केवल साधनारत नहीं रहते थे वरन् वातावरण को स्वच्छ बनाने में अपना सहयोग प्रदान करते थे।

आज हम बड़े-बड़े शहरों में मुख्य सड़कों के किनारे तो आकर्षण और स्वच्छता देखते हैं लेकिन उन्हीं नगरों के पीछे की गलियों या बस्तियों में वातावरण बिल्कुल बदला हुआ दीखता है। नगर के बाहर तो गन्दगी का ऐसा होना एक परम्परा है।

इसके विपरीत रामकालीन अयोध्या नगरी में कैसा वातावरण था—

पुर सोभा कछु बरनि न जाई।
बाहर नगर परम रुचिराई॥
देखत पुरी अखिल अघ भागा।
बन उपबन बापिका तड़ागा॥
बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं।
सोपान सुन्दर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं॥
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजा रहीं।
आराम रम्य पिकादि खग खंजनु पथिक हंकारहीं॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समाज को आदर्श बनाने के लिए बड़े-बड़े सिद्धान्तों और योजनाओं को कार्यान्वित करने के पूर्व हमें जनसाधारण को स्वच्छतापूर्वक रहने का अभ्यस्त बनाना होगा ।

सभ्य समाज की यही पहचान है कि उसमें सर्वत्र स्वच्छता के दर्शन हों । पाश्चात्य देशों में हमें इतनी गन्दगी नहीं मिलती जितनी अपने देश में। रामकालीन व्यवस्था से प्रेरणा लेकर इस दिशा में प्रयत्नशील होना समाज सुधारकों के लिए प्रथम कर्तव्य है ।

स्वास्थ्य की दशा

निरोगी मनुष्य ही अपने लोक और परलोक का हित साधन करने में समर्थ हो सकता है । जिस समाज के लोग स्वस्थ और संयमी होते हैं वही समाज सच्चे अर्थों में सभ्य कहलाने का अधिकारी है । स्वास्थ्य समस्त प्रकार की उन्नतियों का प्रथम सोपान है । सुन्दर स्वास्थ्य वैयक्तिक और सामाजिक सुखी जीवन का दर्पण है । प्राचीन कालीन समाज को हम आदर्श इसलिए मानते हैं क्योंकि उस काल में लोग उद्यमी और पुरुषार्थी होते थे । रामायणकालीन भगवान राम, बन्धुगण बानर समूह और उस काल के लोग तथा महाभारतकालीन अर्जुन, भीम व भीष्म पितामह आदि की कहानियाँ हम इसीलिये बड़े चाव से सुनते पढ़ते हैं क्योंकि वे स्वास्थ्य और शक्ति प्राप्त करने का पूरा पूरा ध्यान रखते थे ।

यह दुख की बात है कि वर्तमान समय में खान-पान की गड़बड़ी के कारण हमारा स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरता जाता है । १०० में से २० बच्चे, तरुण और प्रौढ़ किसी न किसी रोग से ग्रसित मिलेंगे । अल्पमृत्यु की संख्या का प्रतिशत बढ़ता जाता है । नाना प्रकार के रोगों की चिकित्सा के लिए अस्पताल खुलते जाते हैं । चिकित्सकों की संख्या और उनका व्यवसाय सब व्यवसायों से अधिक लाभदायक हो गया है । लेकिन इन सबसे हम वर्तमान समाज को स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम नहीं मान सकते ।

स्वास्थ्य की दशा रामायण काल में कितनी आदर्श थी, इसे हम गोस्वामी तुलसीदास जी की इस एक ही चौपाई से जान सकते हैं—

अल्प मृत्यु नहिं कबनिउ पीरा ।
सब सुन्दर सब निरुज सरीरा ॥

उस काल में अल्प-मृत्यु होती ही नहीं थी । पिता के जीवित रहते यदि पुत्र की मृत्यु हो जाए तो राजा पापी माना जाता था । इसका अर्थ यही था कि समाज के स्वास्थ्य की जिम्मेदारी उस काल में राजा पर होती थी । यह मान्यता और व्यवस्था बहुत दिनों तक चली । महाभारत काल में जब पांडव इन्द्रप्रस्थ में राज कर रहे थे तो एक ब्राह्मण के शिशु की मृत्यु हो गई थी । पुत्र-मृत्यु के शोक से संतप्त ब्राह्मण ने अपने मृतक बेटे को उठाकर पांडवों के द्वार पर डाल दिया और राजा को इस अनहोनी घटना का अपराधी बताने लगा । वास्तव में महाराज युधिष्ठिर और समस्त पाण्डवों को इससे महान कष्ट पहुँचा । अर्जुन धनुष बाण लेकर यमराज से लड़ने को उद्यत हो गये और उससे ब्राह्मण पुत्र की आत्मा को छुड़ाकर पुत्र को जीवित कर देने पर ही राजा के रूप में उन्हें सन्तोष हुआ ।

स्वास्थ्य की इस मान्यता का परिणाम यह था कि प्रायः सभी नागरिक सुन्दर और नीरोग शरीर के होते थे ।

आज सरकार स्वास्थ्य के प्रति दायित्व-निर्वाह के निरोधात्मक उपाय तो करती है, लेकिन लोग रोगी न हों इसके लिए रचनात्मक उपाय नहीं करती । खान-पान और रहन-सहन पर संयम बरतने वाले उपायों की ओर उपेक्षा बरती जाती है । बाजार में बर्फ, आइसक्रीम, गन्दी चाट और डालडा तथा मूंगफली के तेल में बनी अस्वास्थ्यकर मिठाई, नमकीन खाने वाले युवकों का स्वास्थ्य भला कैसे ठीक रह सकता है ? इस प्रकार के अस्वास्थ्यकर खान-पान में पले बच्चों को भावी राष्ट्र निर्माता कहकर उनके द्वारा उन्नतिशील भावी भारत की कल्पना कोरी कल्पना ही रहेगी, साकार न होगी ।

परिवार नियोजन

आज की बढ़ी हुई जनसंख्या देश के लिए अभिशाप सिद्ध हो रही है । यदि जनसंख्या इसी गति से बढ़ती रही तो इस बीस वर्ष में खाद्य समस्या आज से दूनी विकट हो जाएगी । इससे आतंकित होकर वर्तमान सरकार परिवार नियोजन योजना पर करोड़ों रुपये प्रतिवर्ष खर्च कर रही है । लेकिन नसबन्दी और विदेशों से लूप मँगाकर उनका प्रचार केवल भ्रष्टाचार और शासन के प्रति असन्तोष को ही बढ़ावा देता है । इन प्रयासों से किसी ठोस उपलब्धि की सम्भावना नहीं है ।

रामायण काल में भी परिवार नियोजन था क्योंकि जन-संख्या का नियन्त्रित होना हर कार्य के लिए आवश्यक है । इस दिशा में भगवान राम ने स्वयं आदर्श उपस्थित किया था ।

विवाह के बीसों वर्षों पश्चात् जब वे वनवास काल से वापस आकर अयोध्या की गद्दी पर विराजमान हो गये और उनके समस्त सामाजिक दायित्व पूरे हो गये, तभी उन्होंने अपने को सन्तान उत्पादन के योग्य समझा और वैसा ही किया । हम भगवान के प्रति ऐसा नहीं कह सकते कि इससे पूर्व वे सन्तान पैदा नहीं कर सकते थे अथवा भाग्य से उनके सन्तानें नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुईं । पर उन्हें समाज में आदर्श मर्यादा स्थापित करनी थी, इसलिए जीवन की प्रत्येक दिशा में उन्होंने वही किया है । जैसा करने के लिए वे अपने अनुयाइयों से आशा करते थे महारानी सीता के उदर से केवल दो पुत्र उत्पन्न हुए । कम सन्तानों के होने का कितना सुन्दर फल होता है— उसका भी आदर्श रामायण में देखिये —

दोउ बिजई बिनयी गुन मंदिर ।
हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुन्दर ॥

दोनों पुत्र रूप-गुण निधान थे । वे सब प्रकार से भगवान राम के प्रतिबिम्ब हुए ।

राम के जीवन का अनुकरण उनके भाइयों और प्रजा ने किया । लगभग इसी काल में जबकि महारानी सीता के दो पुत्र उत्पन्न हुए प्राय: शेष भाइयों की रानियों से दो-दो पुत्र उत्पन्न हुए —

दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे ।
भए रूप गुन सील घनेरे ॥

केवल एक व्यक्ति के अच्छा करने से समाज का हित नहीं हो सकता । समाज तो सबका समूह है और सबकी जिम्मेदारी समाज को अच्छा बनाने में समान रूप से है । हमारा सबसे बड़ा दोष यही है कि हर प्रयास के लिये हम दूसरों का मुँह ताकते हैं । रामायणकालीन समाज में यह बात नहीं थी । छोटे बड़े सभी अपने दायित्व को निभाते थे, इसलिए सभी सुखी रहते थे । सन्तानोत्पादन में संयम बरतने का काम भाइयों ने ही किया, प्रजावर्ग ने भी एकनारी-व्रत का पालन किया है—

एकनारि ब्रत रत सब झारी ।
ते मन बच क्रम पति हितकारी ॥

अयोध्या के सभी नागरिक राम के समान एकनारि-व्रती रहे और उसी प्रकार स्त्रियाँ मन, वचन और कर्म से पति की हितकारिणी होती थीं ।

इस प्रकार स्वास्थ्य और परिवार नियोजन के विषय में रामायण में जो आदर्श मिलता है हमारे लिए वह अनुकरणीय होना चाहिए ।

नारी की दशा

रामायण काल में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे । उनकी शिक्षा-दीक्षा तथा सुख पहुँचाने के उचित साधन उपलब्ध करना पुरुषों का कर्तव्य माना जाता था । वनगमन के समय यद्यपि राम की इच्छा सीता को अपने साथ ले चलने की नहीं थी लेकिन पत्नी के आग्रह पर राम को साथ ले चलना पड़ा । कैकेयी द्वारा युद्ध स्थल में वीरोचित प्रदर्शन के साथ महाराज दशरथ के प्राण बचाना और दो वर प्राप्त करना तत्कालीन स्त्री समाज के साहस और सामाजिक जीवन में पुरुष के समान कार्य करने का प्रमाण प्रस्तुत करता है । आगे चलकर कैकेयी के दो वरों द्वारा महाराज दशरथ और समस्त अयोध्यावासियों की इच्छाओं और मनोरथों को पलट देने की घटना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि रामायण काल में स्त्री को व्यवहारत: असीमित अधिकार प्राप्त थे ।

राजपरिवारों के इन उदाहरणों से हमें साधारण वर्ग के लोगों की स्त्रियों की सामान्य दशा का दिग्दर्शन मिलता है । रामायण में प्राय: समस्त प्रमुख मांगलिक अवसरों पर अधिकांश कार्य स्त्रियों द्वारा सम्पादित किए जाने के वर्णन मिलते हैं । राम के वनवास से लौटने पर उनका जो अभूतपूर्व स्वागत किया गया उसमें स्त्रियों का योग और भी अधिक दर्शनीय था । सैनिक और उनकी पत्नियाँ सूत और मागध वारबनिताएँ, राजकुल की नारियाँ सभी उनके सत्कारार्थ चल पड़ीं । कौशल्या और सुमित्रा को आगे करके दशरथ की सब रानियाँ सवारियों पर बैठकर चलीं । राम के आगे-आगे कन्याएँ चल रहीं थीं । प्रसन्नमना ब्राह्मणकुपारिकाएँ स्थान-स्थान पर उन्हें फल अर्पित करके प्रदक्षिणा कर रही थीं । उनके अभिषेचन में भी कन्याओं ने भाग लिया था ।

समाचार पुरबासिन्ह पाए ।
नर अरु नारि हरषि सब धाए ॥
दधि दुर्बा रोचन फल मूला ।
सब तुलसी दल मंगल मूला ॥
भरि भरि हेम थार भामिनी ।
गावत चलि सिंधुर गामिनी ॥
बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह निरखहिं गगन बिमान ।
देखि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान ॥

लेकिन अधिकार-सम्पन्नता से हमें कर्तव्यहीनता का अर्थ नहीं लगाना चाहिए । रामायणकालीन समाज की यही विशेषता रही कि सभी को उचित अधिकार प्राप्त थे, लेकिन अधिकार सम्पन्नता उनके कर्तव्यपालन में बाधक नहीं साधक थी ।

प्राय: लोग नारी को पुरुषोचित अधिकार प्राप्त होने के प्रसंग में अधिकार सम्पन्नता वाले प्रसंगों को अधिक विस्तार से वर्णन करते हैं लेकिन उसके साथ जो कर्तव्य का पुट होना चाहिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस और उतना ध्यान नहीं देते । अधिकारों की शोभा कर्तव्य पालन से है । रामायण काल में नारी को उचित अधिकार प्राप्त थे, लेकिन वह गृह-लक्ष्मी थीं । इस रूप में शास्त्र मर्यादा और कुल परम्परा के साथ पति तथा परिवार की जैसी सेवा उनके द्वारा की जाने की अपेक्षा है यदि नारी उसे पूरा नहीं करती तो वह निन्दा की पात्र है ।

आज हमने पर्दा-प्रथा और अशिक्षा के चंगुल में नारी समाज को जकड़ दिया है । उसकी प्रगति इन्हीं कारणों से कुण्ठित हो गई है । जो नारी ध्रुव, प्रहलाद जैसे वीरों को जन्म देने वाली थी वही अब कुटुम्ब की कैदी मात्र बन गई है । इस स्थिति में हम अपने समाज को भला कैसे उन्नतिशील देख सकते हैं ?

रामायण हमें प्रेरणा देती है कि नारी समाज के उत्थान के लिए हमें प्रयत्नशील होना है । वास्तव में नारी के जागरण से भारत का जागरण होगा । उसे समाज-निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करने के लिए सक्षम बनाना ही रामायण के प्रति श्रद्धा रखने वालों का कर्तव्य होना चाहिए ।

व्यक्ति-व्यक्ति के कर्तव्यनिष्ठ बनने पर ही समाज आदर्श बनता है

भगवान राम का राज्य आदर्श माना गया है । राजा के रूप में इस आदर्शवाद को लाने के मूल प्रेरक भगवान राम थे, लेकिन सांगोपांग रूप से राज्य के नागरिकों के सहयोग की उपेक्षा पर उस आदर्श की प्राप्ति में सन्देह रहता है । वास्तव में कोई भी समाज तभी आदर्श बनता है जब उसके अधिकांश सदस्य अपने-अपने निहित कर्तव्यों को पालन करने की दिशा में सचेष्ट रहते हैं । उस काल के समाज में हम यही विशेषता पाते हैं । नागरिकों का गुण सम्पन्न होना समाज के सुख का आधार बनता है । रामायण कालीन नागरिक वैयक्तिक गुणों के धनी थे । उनका वर्णन करते हुए गोस्वामी जी ने लिखा हैं –

सब निर्दम्भ धर्म रत पुनी ।
नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥

सब गुनग्य पण्डित सब ज्ञानी ।
सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ॥

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् बीस वर्षों के अन्दर भारत की साक्षरता केवल २० प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकी । प्रजातन्त्र की सफलता के लिए शिक्षा के व्यापक प्रसार को हम आधार मानते हैं । लेकिन भगवान राम के समय में सभी नागरिक गुण सम्पन्न, विद्वान और ज्ञानी होते थे । उनका आचरण धर्मानुकूल होता था । वे निरभिमानी होते थे । छल कपटयुक्त व्यवहार उनका नहीं था वरन् सभी कृतज्ञ थे । केवल पुरुष ही गुण और व्यवहार कुशलता के धनी नहीं थे, उस काल की स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान चतुर और गुण सम्पन्न होती थीं ।

यही स्थिति लाने का हम आज प्रसास कर रहे हैं । समाज के आधे भाग पुरुषों के शिक्षित और नागरिकोचित गुणों से विभूषित होने पर ही समाज आदर्श नहीं बन सकता । स्त्रियों की शिक्षा और सदाचार तथा व्यवहार कुशलता पर अधिक बल देकर जब उन्हें भी समान रूप से ऊपर उठाने का प्रयास किया जायेगा तभी समाज अच्छा बन सकता है ।

स्वामी विवेकानन्द जी ने लिखा है कि 'भारत के पतन का इतिहास उस दिन से प्रारम्भ होता है जब से स्त्रियों को उनके अधिकारों से वंचित कर दिया गया । ' उन्नतिशील देशों में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति बड़ी सन्तोषजनक मिलेगी ।

उस काल के नागरिक व्यक्तिगत गुणों से विभूषित थे । समाज को सुखमय बनाने वाले सारे तत्व उनके अन्दर विद्यमान रहते थे –

सब उदार सब पर उपकारी ।
विप्र चरन सेवक नर नारी ॥

उदारतापूर्ण व्यवहार से समाज की अनेक उलझी हुई समस्याएँ सुलझ जाती हैं वर्तमान काल में अपनी अनेक समस्याओं का मूल कारण हम अनुदारतापूर्ण व्यवहार पायेंगे । दूसरे जिस समाज के लोग परोपकार रूपी पुण्य में रत रहते हैं, वहाँ कलह और द्वेष को आने का अवसर ही नहीं मिलता ।

रामायण काल में 'उदारता ' और 'परोपकारिता' यह दोनों गुण समाज के समस्त नागरिकों में पाये जाते थे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राजनैतिक स्थिति

समाज का संचालन बहुत अंशों तक तत्कालीन राजतन्त्र पर निर्भर करता है । शासन-तन्त्र समाज का आवश्यक महत्वपूर्ण अंग रहता है, उसके प्रभाव से कोई भी अंग अछूता नहीं बच सकता । गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में इसीलिये राम से कहलाया है —

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ।
सो नृप अबसि नरक अधिकारी ॥

रामायणकालीन समाज आदर्श न बन पाता यदि भगवान राम जैसे उदारमना, धर्मपरायण कर्तव्य पालक और प्रजा को पुत्र के समान स्नेह करने वाले शासक न होते । जिस समय राम वन को गये थे, मामा के यहाँ से भरत के आगमन पर गुरु वशिष्ठ, सुमन्त तथा माता कौशल्या भी उनसे राजसिंहासन पर बैठने का आग्रह कर रहे थे, तो शोक विह्वल भरत ने अपने को राजभार सँभालने के लिए असमर्थ बताते हुए एक बड़ा सुन्दर प्रमाण प्रस्तुत किया था । सबको सम्बोधन कर उन्होंने कहा था —

कहहुँ साँच सब सुनि पतिआहू ।
चाहिअ धरम सीसु नर नाहू ॥

'उसी राजा के राज में प्रजा सुखी और सन्तुष्ट रह सकती है जो धर्मशील हो ।' भगवान राम तो धर्म की धुरी को धारण करने वाले थे । धर्मपालन के निमित्त राज-वैभव और समस्त सुख भोगों को तृणवत् त्याग कर चौदह वर्षों तक वन की अपरिमित असुविधाओं को सहन करने में उन्होंने संकोच न किया । यही कारण था कि उन जैसे धर्मपरायण व्यक्ति के सिंहासनारूढ़ होते ही विद्युतधारा के समान चारों दिशाओं में सुख-शान्ति की लहर फैल गई —

राम राज बैठे त्रैलोका ।
हरषित भए गए सब सोका ॥
राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं ।
काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं ॥

आदर्श राजा के रूप में राम

राजकुमार के रूप में राम आदर्श रहे और राजत्याग में भी आदर्श बने रहे उसी प्रकार अवध के टीकाधारी चक्रवर्ती सम्राट बनने के बाद भी वे समान रूप से आदर्श बने रहे । राजा की दिनचर्या का प्रजा पर व्यापक प्रभाव पड़ता है । राजा के चरित्र का अनुसरण राजकर्मचारी, प्रजावर्ग सभी करते हैं । मुगल शासन काल में सम्राटों के विलासी जीवन का प्रभाव राजकर्मचारियों पर भी पड़ा । निम्न श्रेणी के मुसलमानों में बहुपत्नी प्रथा चल पड़ी । भगवान राम की एक सुनियोजित दिनचर्या थी —

प्रातःकाल सरउ करि मज्जन ।
बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन ॥
वेद पुरान वसिष्ठ बखानहिं ।
सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं ॥

यद्यपि राजा सर्वशक्तिशाली होता है, लेकिन श्रेष्ठ मर्यादाओं और परम्पराओं का । उसे इसलिए पालन करना चाहिए ताकि प्रजा उनका अनुसरण करे । राजा बनकर राम ने समानता के सिद्धान्त का त्याग नहीं किया । खान-पान और रहन-सहन में अपने तथा भाइयों के बीच भेदभाव नहीं किया । वे नित्य भाइयों के साथ ही भोजन करते थे —

अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं ।
देखि सकल जननी सुख भरहीं ॥
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती ।
नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥

संयुक्त दायित्व, खान पान में समानता तथा सच्चा प्रेम और प्रत्येक अवसर पर भाइयों को आगे बढ़ाने की उत्कट अभिलाषा का यह परिणाम था कि जिस तरह बालपन में तीनों भाई राम के आज्ञाकारी बने रहे, प्रौढ़ावस्था में भी उसी भाव से राम के सेवक बने रहे —

सेवहिं सानुकूल सब भाई ।
राम चरन रति अति अधिकाई ॥
प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं ।
कबहुँ कृपाल हमहिं कछु कहहीं ॥

इसी प्रकार प्रजा की सुख-सुविधा के लिए हर सम्भव उपाय राम किया करते थे । खाद्य पदार्थ और भोग-विलास की सामग्री का अभाव नहीं था । सब प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी । जीवनोपयोगी वस्तुओं का अभाव यदि बना रहे तो केवल उपदेश से प्रजा सुखी और सन्तुष्ट नहीं रह सकती । राम के शासन काल में किसी चीज का अभाव नहीं था —

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवध पुरी बासिन्ह कर सुख सम्पदा समाज ।
सहस सेस नहिं सकहिं कह जहँ नृप राम विराज ॥

जब यह स्थिति थी और सभी को अपनी इच्छाओं तथा सामर्थ्य के अनुसार आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध होती थीं तो लोग राम राज से सन्तुष्ट क्यों न रहें —

हरषित रहहिं नगर के लोगा ।
करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥
अहनिसि बिधिह मनावत रहहीं ।
श्री रघुबीर चरन रत रहहीं ॥

देश में शान्ति व्यवस्था बनाए रखना, ताकि सबल, दुर्बल के साथ अत्याचार न कर सके, बाह्य आक्रमण से राज्य की रक्षा करना और प्रजा को सस्ता तथा सुलभ न्याय देना राजा अथवा किसी भी सरकार का मुख्य कर्तव्य होता है । मौर्य-साम्राज्य, गुप्तकाल तथा अफगान बादशाह शेरशाह सूरी के शासन काल को हम उत्तम इसलिए कहते हैं क्योंकि इन शासनकालों में प्रजा को व्यवस्था, न्याय तथा सुरक्षा सुलभ रहती थी । लोग अपने घरों में ताला नहीं लगाते थे, निर्भीक होकर जंगलों में भी यात्रा करते रहते थे । शासन की सुव्यवस्था तथा कठोर दण्डविधान के कारण चोर, डाकुओं और बदमाशों का भय बहुत कम रहता था ।

राम के शासन काल में सुव्यवस्था, सुरक्षा तथा न्याय की तीनों सुविधाएँ सम्पूर्ण प्रजा को प्राप्त थी —

जब ते राम प्रताप खगेसा ।
उदित भयउ अति प्रबल दिनेसा ॥
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका ।
बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका ॥
जिन्हहि सोक ते कहउँ बखानी ।
प्रथम अविद्या निसा नसानी ॥
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने ।
काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
बिबिध कर्म गुन काल सुभाऊ ।
ए चकोर सुख लहहिं न काऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा ।
इन्ह कर हुनर न कवनिहुँ ओरा ॥
धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना ।
ए पंकज बिकसे बिधि नाना ॥
सुख सन्तोष बिराग बिबेका ।
बिगत सोक ए कोक अनेका ॥
दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र के राज ॥

प्रशासनिक सुव्यवस्था के परिणामस्वरूप जब राज्य में विधि व्यवस्था बनी रहती है तो सामान्य नागरिकों का जीवन सुखी एवं सदाचारी बनता है । राजा का आचरण धर्मानुकूल होने पर प्रजा उसका अनुकरण करती है, फलस्वरूप प्राकृतिक शक्तियाँ जनसाधारण के अनुकल प्रतीत होती हैं ।

खग मृग सहज बयरु बिसराई ।
सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥

प्राकृतिक शक्तियाँ प्रजा के अनुकूल होकर सब प्रकार का सहयोग प्रदान करती थीं —

सीतल सुरभि पवन बह मंदा ।
गुन्जत अलि लै चलि मकरंदा ॥
लता बिटप मांगे मधु चवहीं ।
मन भवतो धेनु पाय श्रवहीं ॥
ससि सम्पन्न सदा रह धरनी ।
त्रेता भइ कृत जुग कै करनी ॥

प्रजा के हित में रहना

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम सदैव प्रजा के हित साधन में लगे रहते थे । उनकी सम्पूर्ण राज-शक्ति संसार में सत्प्रवृत्तियों के प्रसार की दिशा में लगती थी । दान का चक्र सदैव चलता रहता था । सदाचरण की प्रेरणा देना राजा का आवश्यक कर्तव्य होता था । राम समय-समय पर प्रजा के प्रतिनिधियों को बुलाकर उन्हें नीति और धर्म के अनुकूल आचरण करने की प्रेरणा देते रहते थे —

एक बार रघुनाथ बोलाए ।
गुरु द्विज पुर बासी सब आए ॥
बैठे गुरु द्विज मुनि अरु सज्जन ।
बोले बचन भगत भव भंजन ॥
सुनहु सकल पुरुजन मम बानी ।
कहहुँ न कुछ ममता उर आनी ॥
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई ।
मम अनुसासन मानइ जोई ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यहाँ 'मम अनुशासन मानइ जोइ' का अर्थ ईश्वरीय आज्ञाओं एवं नियमों के पालन से लिया जा सकता है, साथ ही राजनैतिक दृष्टि में भी इसका अर्थ हितकारक है। जो प्रजा, राजा अथवा राजतन्त्र के नियमों और निर्देशों के अनुसार चलती है, वही राज्य से वांछित सहयोग प्राप्त कर सुखी बनने में समर्थ हो पाती है। इस दिशा में राजा की ओर से प्रेरणा देना अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होता है।

यह सर्व प्रसिद्ध बात है कि भगवान के दरबार में कुत्ते को भी न्याय मिलता था। न्याय सिंहासन पर जब भगवान राम विराजित होते थे तो स्वयं लक्ष्मण जी द्वारपाल का कार्य करके कार्यार्थियों की शिकायतों को महाराज राम तक पहुँचाते थे। परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि भगवान तक न्याय के मामले ले जाने वाले बहुत कम लोग मिलते थे —

रामस्य भाषितं श्रुत्वा लक्ष्मणः शुभ लक्षणः ॥
द्वारदेशमुपागम्य कार्यिणश्चहहत् स्वयम् ।
न कश्चिद्ब्रवीत् तत्र मम कार्यमिहाद्य वै ॥

"श्रीराम जी का आदेश सुनकर शुभ लक्षण लक्ष्मण ने द्वार-देश पर आकर स्वयं ही कार्यार्थियों को पुकारा, परन्तु कोई भी वहाँ यह न कह सका कि यहाँ मुझे कोई कार्य है।"

दृश्यते न च कार्यार्थी रामे राज्यं प्रशासति ।
लक्ष्मणः प्राणजलिभूर्त्वा रामायैवेन्यवेदयत् ॥

"श्रीराम के राज्य शासन काल में सभी कोई कार्य अभियोग लेकर अपने वाला व्यक्ति दिखाई नहीं देता था। लक्ष्मण ने हाथ जोड़ कर श्रीरामचन्द्र जी के राज्य की ऐसी स्थिति बतायी।" न्यायप्रिय राम के द्वार पर एक कुत्ता अपनी शिकायत लेकर उपस्थित हुआ। लक्ष्मण के द्वारा सूचित करने पर भगवान राम ने उसकी उपेक्षा नहीं की और न्याय प्रदान करने के लिए दरबार में बुलाया।

कुत्ते ने भगवान के सामने निवेदन किया कि सर्वार्थसिद्ध नाम से प्रसिद्ध एक भिक्षु ने उसे अकारण सिर पर डंडा मारकर खोपड़ी घायल की। भगवान राम ने तुरन्त उस भिक्षु को बुलाया और श्वान को मारने की पुष्टि करके उसे यथोचित रूप से दण्ड दिया।

इस घटना को हम आदर्श मान सकते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जीवन सर्वगीण रूप से पूर्ण और आदर्श था। राजनीति में प्रशासन, व्यवस्था, समता, राजदण्ड, न्याय तथा निष्पक्ष नीति का जितना सुन्दर और व्यावहारिक उदाहरण भगवान ने प्रस्तुत किया वह संसार के समस्त राजनीतिज्ञों द्वारा अनुकरणीय होना चाहिए।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सद्गुण वैयक्तिक जीवन का मानदण्ड

मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से हाड़ माँस का पुतला है, लेकिन सूक्ष्म रूप से वह अनेक प्रकार की आन्तरिक विशेषताओं एवं अवगुणों का पुंज है। अपनी अच्छाइयों और बुराइयों के आधार पर व्यक्ति ऊँचा-नीचा बनता है। जिस व्यक्ति ने जितना अधिक सद्गुणों का विकास अपने में कर लिया हो उसी स्तर तक वह महान महामानव और अन्त में अवतार तक कहलाने का अधिकारी बन जाता है। हिन्दू धर्म के अनेक अवतार 'कलाओं' के आधार पर ऊँचे-नीचे माने गये हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम बारह कला के अवतार माने जाते हैं। जबकि योगीराज श्रीकृष्ण सोलह कला के। 'कला' से तात्पर्य 'गुण' अथवा 'विशेषता' से लेना चाहिये। जो अवतार जितनी कला का माना जाता है उसमें उतनी प्रकार के श्रेष्ठ गुणों का पूर्ण विकास मानना चाहिए।

श्रीमद्भगवत् गीता में सद्गुणों को दैवी सम्पत्ति तथा अवगुणों को आसुरी सम्पत्ति कहा गया है। प्रथम को मोक्ष प्रदायनी और द्वितीय को बन्धनकारक बताया गया है –

''दैवीसम्पद्विमोक्षाय निबन्धयासुरी मता''।

''दैवी सम्पत्ति मोक्ष देने वाली और आसुरी बन्धन में डालने वाली मानी गई हैं।''

वास्तव में 'सद्गुण' व्यक्ति के सच्चे आभूषण, सच्चा धन तथा लौकिक और पारलौकिक कल्याण के निमित्त होते हैं। गीता में इनका विशद् वर्णन है। उस आधार पर निम्नलिखित दैवी सम्पत्तियाँ मानी गई हैं –

अभयं सत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोग व्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥
अहिंसा सत्यं क्रोधस्त्याग : शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीचापलम्॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचं द्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पद दैवीमभिजातस्य भारत॥

''हे भारत ! अभय, अन्तःकरण की शुद्धि, ज्ञान और योग में निष्ठा, दान, दम, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, सरलता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, अपैशुन, भूतदया, अलोलुपता, मृदुता, मर्यादा, अचंचलता, तेज, क्षमा, धृति, शौच, अद्रोह निरभिमानता उतने गुण उसमें होते हैं जो दैवी सम्पति को लेकर जन्मा है।''

रामायण के प्रथम रचयिता आदि कवि बाल्मीकि जी थे। एक लाख श्लोकों की रचना करके परम तपस्वी बाल्मीकि ने अवतार, देवपुरुष अथवा मनुष्येतर शक्ति की कीर्तिगाथा नहीं गाई वरन् वे एक श्रेष्ठ मनुष्य की कृतियों को समाज के सामने प्रस्तुत करना चाहते थे जिसमें अनेक प्रकार के सद्गुण विद्यमान हों।

आदि कवि बाल्मीकि जी की इच्छा राम को अवतार रूप प्रस्तुत करने को नहीं थी। किसी देवपुरुष अथवा मनुष्येतर दिव्यात्मा की अलौकिक और अमानवीय लीलाओं का वर्णन करने की उनकी अभिलाषा कदापि न थी। वरन् वे ऐसे व्यक्ति के चरित्र को समाज के सामने प्रस्तुत करने को तत्पर थे जो आदर्श और व्यावहारिक हो, सर्वगुण सम्पन्नता से साधारण से महान् बना हो। उनकी इच्छाओं के अनुरूप व्यक्ति उन्हें दशरथनन्दन राम के रूप में प्राप्त हुआ। इसीलिए बाल्मीकि जी ने उनके गुणों और कार्यों को प्रकाश में लाने के लिए बुद्धि और लेखनी का उपयोग कर ''रामायण'' जैसे महाकाव्य की रचना की, जिससे प्रेरणा लेकर कोटि-कोटि मानव युग-युग तक प्रकाशमान होते हैं।

मानस-कवि गोस्वामी तुलसीदास राम-भक्ति शाखा के प्रतिपादक माने जाते हैं। राम को अवतार रूप में प्रस्तुत करना ही उनकी काव्य साधना थी, लेकिन गुण सम्पन्नता के महत्व को उन्होंने दृष्टि से ओझल कदापि न किया। मानस की भूमिका में ही उन्होंने लिखी –

कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दम्भ पाषंड।
दहन राम गुन ग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड॥

''प्रचण्ड अग्नि जिस प्रकार अपने में पड़ी हुई समस्त वस्तुओं को जला डालने की शक्ति रखती है, राम के गुण-समूह कलियुग की सभी बाधाओं, दम्भ, पाषण्ड और शंकाओं को नाश करने में समर्थ हैं।

दूसरे स्थल पर एक दोहे में उन्होंने इस तथ्य को और स्पष्ट कर दिया है ताकि लोग केवल जप के भ्रम में न रह कर गुणसमूहों के अनुकरण की ओर भी अभिमुख हों –

स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सबपान।
गिरा ग्राम्य सीय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान॥

''गौ काली क्यों न हो लेकिन उसका दूध गुणकारी जान कर सभी लोग पान करते हैं।''

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लंकाकांड में रावण राम युद्ध के अवसर पर विभीषण के मुख से विरथी राम के विजय में सन्देह उत्पन्न कराकर भगवान के स्वमुख से विजय रथ का वर्णन गोस्वामी जी कराते हैं। संसार रूपी महासमर में विजय के लिए बाह्य साधनों की तुलना में आन्तरिक गुण ही अधिक सहायक हो सकते हैं –

रावन रथी बिरथ रघुबीरा ।
देखि बिभीषनु भयउ अधीरा ॥
अधिक प्रेम मन भा सन्देहा ।
बन्दि चरन कहि सहित सनेहा ॥
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना ।
केहि बिधि जितब बीर बलबाना ॥
सुनहु सखा कहि कृपानिधाना ।
जेहि जय होय सो स्यन्दनु आना ॥

विजय प्रदान करने वाला रथ दूसरा ही है ।

वर्तमान समय के अनुकूल विशेष गुण

काल की गति के अनुसार आवश्यकताएँ और मान्याएँ बदला करती हैं । यद्यपि अनेक प्रकार के गुण-समूहों की विद्यमानता हर काल में समान महत्व रखती है , लेकिन समय और परिस्थिति के अनुसार उनके महत्व में अन्तर पड़ जाना स्वाभाविक है । उदाहरण के लिए प्राचीन काल में प्रत्यक्ष युद्ध होते थे तब शारीरिक बल का महत्व बहुत अधिक था, लेकिन बीसवीं सदी में विज्ञान की उन्नति के साथ युध्द प्रणाली में आमूल परिवर्तन हो गया है । अब शरीर को स्वस्थ रखना तो आवश्यक है, लेकिन युद्ध में विजय के लिए शारीरिक बल की तुलना में बौद्धिक और वैज्ञानिक शक्ति का महत्व अधिक है ।

गीता में दैवी सम्पत्तियों के प्रसंग में २६ प्रकार के गुण समूहों का वर्णन किया गया है । लेकिन विजय-रथ के प्रसंग में इनकी संख्या घट कर सोलह रह गई है । जो इस प्रकार है –

सुनहु सखा कह कृपा निधाना ।
जेहि जय होइ सो स्यन्दन आना ॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका ।
सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल विवेक दम परिहित घोरे ।
क्षमा कृपा समता रजु जोरे ॥
ईस भजन सारथी सुजाना ।
बिरति चर्म सन्तोष कृपाना ॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा ।
बर बिग्यान कठिन को दंडा ॥
अगल अचल चले त्रोन समाना ।
सम जम नियम सिलीमुखनाना ॥
कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा ।
एहि सम विजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्म मय अस रथ जाके ।
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥
महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर ।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥

शौर्य और धैर्य

साहस मनुष्य का सबसे बड़ा संबल है । इसे धर्म का पहला लक्षण माना गया है। तुलसीदास जी ने साहस को धर्मचक्र का पहिया माना है। गाड़ी पहिये के सहारे चलती है । इसी प्रकार व्यक्ति साहस रूपी धुरी पर टिक कर संसार में सफलतापूर्वक गतिशील होता है । साहसी व्यक्ति अन्धकार में भी अपना मार्ग ढूँढ़ लेता है । कोई उसे आगे बढ़ने से रोक नहीं सकता ।

भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम तो दैवी सम्पत्तियों के पुंज थे । राम तथा रामायण के अन्य पात्रों के साहसपूर्ण कार्य ही रामायण के अन्य मुख्य विषय हैं । सच तो यह है कि बालपन से राम ने अपने शौर्य का परिचय देकर महानता की स्थिति प्राप्त की । यदि वे पुरुषार्थी न होते तो हम सब उनका गुणानुवाद कदापि न करते ।

विश्वामित्र की यज्ञ रक्षा

शान्तिपूर्ण ढंग से ईश्वर भजन और चिन्तन-मनन में लगे रहने वाले ऋषियों-मुनियों को बलवान आततायी राक्षस परेशान करते रहते थे । पुरुषसिंह राम-लक्ष्मण ने अकेले जाकर उनके यज्ञ की रक्षा की । ताड़का, मारीच और सुबाहु जैसे महाबली राक्षस नायकों को राम-लक्ष्मण ने अपने पुरुषार्थ से रौंद डाला –

पुरुष सिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन ।
कृपा सिंधु मति धीर अखिल विश्व कारन करन ॥
चले जात मुनि दीन्हि दिखाई ।
सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एकहि बान प्रान हरि लीन्हा ।
दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥
प्रात कहेउ मुनि सन रघुराई ।
निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई ॥
होम करन लागे मुनि झारी ।
आपु रहे मख की रखवारी ॥
सुनि मारीच निसाचर कोही ।
लै सहाय धावा मुनि द्रोही ॥
बिनु फर बान राम तेहि मारा ।
सत जोजन गा सागर पारा ॥
पावक सर सुबाहु पुनि मारा ।
अनुज निसाचर कटुक संघारा ॥
मारि असुर द्विज निर्भयकारी ।
अस्तुति करहिं देव मुनि झारी ॥

सीता स्वयंवर के अवसर पर प्रदर्शित शौर्य

जनकपुर में सीता स्वयंवर भारत तथा इतर देशों के वीरों का शौर्य-प्रदर्शन स्थल था । जनकराज के यहाँ रखा हुआ शिव-धनुष क्षत्रियों के पुरुषार्थ का परीक्षक रहा । जहाँ रावण, वाणासुर सहस्रबाहु जैसे पूर्व ख्याति प्राप्त वीर योद्धा असफलता की लज्जा का मुख देख चुके थे, विश्वामित्र के संग गये राम-लक्ष्मण ने यदि उस स्थल पर अपने अमित शौर्य का परिचय न दिया होता तो क्या जनसमुदाय पर वे अपनी धाक जमाने में सफल हो पाते ।

सब समस्त नरेश शिव-धनुष उठाने के प्रयास में व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से असफल होकर अपने आसनों पर बैठ जाते हैं तो चारों ओर निराशापूर्ण वातावरण छा जाता है । स्वयं महाराज जनक करुणा से आतुर होकर अपनी वेदना प्रकट करते हैं । विश्वामित्र जी के संकेत पर जब राम धनुष तोड़ने के लिए आगे बढ़ते हैं तो स्वयं माता सुनयना जी को भी उनकी सफलता पर सन्देह होता है –

रामहिं प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ ॥
सखि सब कौतुक देखिनि हारे ।
जेउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहइ गुरु पाहीं ।
ए बालक असि हठ भल नाहीं ॥
रावन बाण छुआ नहिं चापा ।
हारे सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राजकुंअर कर देही ।
बाल मराल कि मन्दर लेहीं ॥
भूप सयानप सकल सिरानी ।
सखि विधि गति कछु जाति न जानी ॥

माता सुनयना के सन्देह युक्त वचनों को सुनकर एक चतुर सखी कितना सुन्दर उत्तर देती है –

बोली चतुर सखी मृदु बानी ।
तेजवंत लघु गनिअ न रानी ॥
कहँ कुम्भज कहँ सिंधु अपारा ।
सोषेउ सुजसु सकल संसारा ॥
रबि मंडल देखत लघु लागा ।
उदयँ तासु त्रिभुवन तम भागा ॥
मंत्र परम लघु जासु बस विधि हरिहर सुर सर्व ।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्व ॥
काम कुसुम धनु सायक लीन्हें ।
सकल भुवन अपने बस कीन्हें ॥
देव तजिय संसउ अस जानी ।
भंजव धनुष राम सुनु रानी ॥

लक्ष्मण के वीरोचित बचन

महाराज जनक के निराशापूर्ण धिक्कारजनक बचनों को युवक लक्ष्मण सहन न कर सके । उनकी भुजायें फड़क उठी और त्यौरियाँ चढ़ गईं एक सच्चा वीर अपमानजनक शब्द कैसे सह सकता है –

जनक बचन सुनि सब नर नारी ।
देखि जानकिहि भए दुखारी ॥
माखे लखनु कुटिल भईं भौंहें ।
रदपट फरकत नयन रिसौंहें ॥
कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान ।
नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई ।
तेहि समाज अस कहइ न कोई ॥
कही जनक जसि अनुचित बानी ।
विद्यमान रघुकुल मनि जानी ॥
सुनहु भानुकुल पंकज भानू ।
कहउँ सुभाउ न कछु अभिमानू ॥
जो तुम्हारि अनुसासन पावौं ।
कदुंक इव ब्रह्माण्ड उठावौं ॥
काचे घट जिमि डारौं फोरी ।
सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना ।
को बापुरो पिनाक पुराना ॥
नाथ जानि अस आयसु होई ।
कौतुक करौं बिलोकिअ सोई ॥
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं ।
जोजन सत प्रमान लै धावौं ॥
तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ ।
जौ न करों प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ ॥

जो साहसी और कर्मठ होता है, विषम परिस्थिति में भी अपना मार्ग खोज लेता है । समस्त राजाओं के सामने रघुकुल शिरोमणि लक्ष्मण जी की वाणी ने सूर्यवंश की प्रतिष्ठा चारों ओर स्थापित कर दी –

लखन सकोप बचन जब बोले ।
डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥
सकल लोग सब भूप डराने ।
सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने ॥

प्रभु राम द्वारा धनुष भंजन से जो हर्षोल्लास जनकपुर में फैल गया था, वह परशुराम के कोप से विषाद और निराशा में परिवर्तित हो गया। इस स्थल पर आकस्मिक रूप से आई हुई इस विपत्ति को राम के शौर्य ने टाला । यदि राम समयोचित वीरता न दिखाते तो सम्भवत: परिस्थिति अन्य प्रकार की होती –

राम कहे मुनि कहहु बिचारी ।
रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥
छुअतहि टूट पिनाक पुराना ।
मैं केहि हेतु करौं अभिमाना ॥
जौं हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ ।
तौ अस को जग सुभटु जेहि भय बस नावहिं माथ ॥
देव दनुज भूपति भट नाना ।
सम बल अधिक होउ बलबाना ॥
जो रन हमहिं प्रचारे कोई ।
लरहिं सुखेन काल किन होई ॥
क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना ।
कुल कलंकु तेहि पाँवर जाना ॥
कहउँ सुभाउ न कुलहिं प्रशंसी ।
कालहु डरहिं न रन रघुबंसी ॥
बिप्र बंस कै असि प्रभुताई ।
अभय होइ जो तुम्हहिं डेराई ॥

राम की वाणी के रूप में तत्कालीन भारत की आत्मा बोल रही थी । आर्य जाति को उस समय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए हम इसीलिए पाते थे क्योंकि युवक समाज जीवन उत्साह और शौर्य से भरा था । अभयता को प्रथम दैवी सम्पत्ति माना गया है। ब्राह्मण गुरु तथा बड़े लोगों के चरणस्पर्श करना तथा उनके सामने विनम्र रहना हमारी मर्यादा-शिष्टाचार तथा श्रेष्ठ कुल परम्परा का प्रतीक है, कायरता अथवा भय का नहीं ।

सदण्ड होना दूसरी बात है और शौर्य से युक्त होना उससे सर्वथा भिन्न । जवाहरलाल नेहरू को प्राय: लोग युवक सम्राट कहते थे, बहुधा वे युवकों के प्रतिनिधि माने जाते थे । ऐसा इस कारण से था कि पंडितजी सदैव उत्साह से भरे रहते थे । भगवान राम उनकी तुलना में अनेक गुना शौर्य युक्त थे। उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। आज के युवकों को इसी प्रकार मर्यादित शौर्य से सम्पन्न होने की आवश्यकता है ।

वनगमन के पूर्व जनकपुर और अयोध्या में प्रदर्शित राम के शौर्य को यह कहकर हम मन्द कर सकते हैं कि उनके पीछे दशरथ जैसे पिता, वशिष्ठ जैसे आत्मज्ञानी पुरोहित और विश्वामित्र जैसे राजर्षि की नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति विराजित थी । वे चारों दिशाओं से संरक्षित और सुरक्षित थे । लेकिन वनवास काल में राम अकेले थे । राजसेना और पुरोहित किसी का सम्बल उन्हें प्राप्त नहीं था । लेकिन इस अवसर पर अपने अदम्य उत्साह और अद्वितीय वीरता से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवान ने उत्तर से दक्षिण तक एक अपूर्व शक्ति का सृजन करके दिखा दिया। इसी में राम की महानता और अलौकिकता निहित है।

पंचवटी में खर तथा दूषन जैसे राक्षस सरदारों को उनकी सेना सहित अकेले मार डालना क्या सरल था ?

अकेले राम को वीरोचित वेष में अपने सामने खड़े धनुष की टंकार करते देख उनकी अपूर्व सुन्दरता पर खर-दूषन मोहित हो जाते हैं। अपने सचिवों को बुलाकर वे राम के पास सन्धि का प्रस्ताव भेजते हैं। यदि इस अवसर पर राम थोड़ी विनम्रता दिखा देते तो युद्ध टल सकता था, लेकिन शौर्य से युक्त भगवान राघवेन्द्र का उत्तर कितना ओजस्वी था —

जद्यपि भगिनी कीन्हि कुरूपा।
बध लायक नहि पुरुष अनूपा॥
देहु तुरत निज नारि दुराई।
जीवत भवन जाहु द्वौ भाई॥
मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु।
तासु बचन सुनि आतुर आवहु॥
दूतन्ह कहा राम सन जाई।
सुनत राम बोले मुसुकाई॥
हम क्षत्री मृगया बन करहीं।
तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं॥
रिपु बलबंत देखि नहिं डरहीं।
एक बार कालहु सन लरहीं॥
जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक।
मुनि पालक खल सालक बालक॥
जो न होइ बल घर फिरि जाहु।
समर बिमुख मैं हतउँ न काहू॥
रन चढ़ि करिअ कपट चतुराई।
रिपु पर कृपा परम कदराई॥

राम के धनुष से निकले तीव्र वाणों ने कुछ घण्टों में राक्षस समूह नष्ट कर डाला।

सीताहरण के समय राम घोर विषाद और अपमानजनित क्लेश से व्यथित थे। लेकिन उनका रुदन अबला का रुदन न होकर पुरुषार्थी का रुदन था। जटायु से रावण द्वारा सीताहरण के समाचार को प्राप्त कर सुरधाम पधारने वाले गीध से उन्होंने कहा —

सीताहरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ।
जो मैं राम तो कुल सहित कहिहि दसानन आइ॥

जटायु का दिया गया राम का सन्देश महान प्रतिज्ञा स्वरूप था। उन्होंने झूंठी प्रतिज्ञा नहीं की थी। रावण अपने समय का महान वैज्ञानिक, युद्ध-कला में नवीनतम अस्त्रों से लैस युग का अद्वितीय योद्धा था। दूसरी ओर वनवासी राम के पास कुछ नहीं था। लेकिन आन्तरिक गुण बाह्य परिस्थितियों को अपने अनुकूल कर लेते हैं। साधनहीन राम ने अपने शौर्य और आत्मशक्ति के बल पर कुछ महीनों के अन्दर बानर और भालुओं जैसी उपेक्षित जाति में अद्भुत शौर्य का संचार करके महाबली रावण का कुल सहित सत्यानाश कर डाला।

सीताहरण से रावण-विजय तक का राम का प्रत्येक कार्य अद्भुत शौर्य से युक्त था। अथाह सागर को भी राम ने अपने बाणों की शक्ति से चरणों पर लोटने के लिए विवश कर दिया —

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीत।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति॥
लछिमन बान सरासन आनू।
सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू॥
सठ सन विनय कुटिल सन प्रीति।
सहज कृपन सन सुन्दर नीति॥
ममता रत सन ज्ञान कहानी।
अति लोभी सन बिरत बखानी॥
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा।
ऊसर बीज बएँ फल जथा॥
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा।
यह मत लछिमन के मन भावा॥
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला।
उठी उदधि उर अन्तर ज्वाला॥
मकर उरग झख गन अकुलाने।
जरत जंतु जल निधि जब जाने॥
कनक थार भरि मनि गन नाना।
बिप्र रूप आयउ तजि माना॥
सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे।
छमहु नाथ सब अवगुन मेरे॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वनवास की अवधि में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के अद्वितीय शौर्य ने उनका कंटकाकीर्ण मार्ग प्रशस्त किया उन्हें अनेक वीर और निष्ठावान सहयोगी दिये, जिन्होंने उनकी अचल कीर्ति पताका को चारों ओर फहराया ।

हनुमान का शौर्य

रामायण में सुन्दरकाण्ड का पाठ अन्य कांडों के पाठ और रामायण की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण और फलदायक माना जाता है । इस तथ्य पर हमने कई रामायणियों से वार्ता की । प्रायः सभी का उत्तर यही था कि इस कांड में हनुमान जी के पुरुषार्थ का वर्णन है इसीलिए यह कांड श्रेष्ठ माना जाता है ।

वास्तव में एक कपि के असाधारण पुरुषार्थ की लम्बी कहानी रामायण के सुन्दरकांड में वर्णित है । इससे पूर्व हनुमान सुग्रीव के सचिव के रूप में एक सामान्य कपि से उच्च श्रेणी का नहीं थे । यदि वे अमित शक्तिशाली होते तो स्वामी सुग्रीव के परम शत्रु बन्धु बालि को परास्त कर अपने स्वामी के परम कष्टों का निवारण कर सकते थे । लेकिन ऐसा वे कर न सके । राम की समीपता और सान्निध्य से पवन पुत्र हनुमान का पुरुषार्थ जागृत होता है ।

समुद्र को लाँघ कर सीता की खोज करना, रावण की स्वर्णमयी लंका को भस्मसात करना, लक्ष्मण के शक्तिबाण लगने पर आधी रात तक ही हिमालय पर्वत पर जाकर संजीवनी बूँटी वाले पहाड़ को उठा लाना महावीर हनुमान के पुरुषार्थ के अविस्मरणीय उदाहरण है, जिनका वर्णन करके भारतवासियों की नस-नस में प्राण और जीवन का संचार किया जा सकता है —

जामवंत के बचन सुहाए ।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई ।
सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा ।
चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ॥
सिंधु तीर भूधर एक सुन्दर ।
कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
बार बार रघुबीर संभारी ।
तरकेउ पवन तनय बल भारी ॥
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता ।
चलेऊ सो गा पाताल तुरन्ता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना ।
एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी ।
तैं मैनाक होहि श्रम हारी ॥
हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।
राम काज कीन्हें बिन मोहि कहाँ विश्राम ॥
जात पवन सुत देवन्ह देखा ।
जानैं कहुँ बल बुद्धि विसेषा ॥
सुरसा नाम अहिन कै माता ।
पठइन्हि आइ कही तेहि बाता ॥
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा ।
सुनत बचन कह पवन कुमारा ॥
राम काजु करि फिरि मैं आवौं ।
सीता की सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥
तब तव बदन पैठिहउं आई ।
सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥
कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना ।
ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥
बदन पइठ पुनि बाहर आवा ।
माँगी बिदा ताहि सिरु नावा ॥
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा ।
बुधि बल मरमु तोर मैं पावा ॥
राम काजु सब करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥

गगन पथ से सत योजन समुद्र पार कर हनुमान ने अपने अपूर्व बल तथा विवेक का परिचय दिया । इसी अपौरुषेय कार्य ने कल्प-कल्प तक के लिए पवन तनय हनुमान को महावीर और बजरंगबली बना दिया । चारों दिशाओं में उनकी कीर्ति युग-युग तक फैली रहेगी और वे कोटि-कोटि मानवों द्वारा सदैव पूजित होते रहेंगे । सृष्टि का अटल नियम कोई काट नहीं सकता । शौर्य युक्त प्राणी अपने के लिए यश, कीर्ति, धन सब कुछ अपने बल से अर्जित कर लेता है । संसार को उसे अटल स्थान देना ही पड़ेगा ।

महावीर हनुमान का गुणानुवाद करके भला कितने व्यक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मलाभ नहीं करते ? सीता की खोज करके अपने बल और पौरुष का परिचय राक्षस राज रावण तथा उसके सेनानायकों को देने में उन्होंने कोई कसर उठा न रखी। कितने सुन्दर तथा स्वाभाविक रूप से वे इसे करते हैं। माता जानकी से वे अनूठे ढंग से अनुमति प्राप्त करते हैं –

सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा ।
लागि देख सुन्दर फल रूखा ॥

माँ सन्देह प्रकट करती है –

सुनु सुत करहिं बिपिन रखबारी ।
परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं ।
जो तुम्ह सुख मानहुँ मन माहीं ॥
देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपति चरन हृदय धरि तात मधुर फल खाहु ॥

अनुमति मिल जाने पर हनुमान चल पड़ते हैं –

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा ।
फल खाएसि तरु तोरै लागा ॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे ।
कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी ।
तेहि असोक बाटिका उजारी ॥
खाएसि फल अरु बिटप उपारे ।
रक्षक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
सुनु रावन पठए भट नाना ।
तिन्हहि देखि गर्जउ हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संहारे ।
गये पुकारत कछु अधमारे ॥

रावण का दरबार अपने वैभव के लिए सर्व प्रसिद्ध था। इन्द्र, वरुण आदि समस्त देवगण वहाँ हाथ जोड़े मस्तक नीचा किए खड़े रहते थे। लेकिन बन्दीवेष में उसी दरबार में पहुँचने पर भी वीर हनुमान नि:शंक ही रहते हैं –

दसमुख सभा दीखि कपि जाई ।
कहि न जाई कुछ अति प्रभुताई ॥
कर जोरै सुर दिसिप बिनीता ।
भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥
देखि प्रताप न कपि मनसंका ।
जिमि अहिगन महुँ गरुड़ अशंका ॥

लंका दहन

एक वानर द्वारा वीर शिरोमणि राक्षस समुदाय के दर्प को पैरों से कुचल डालने का इतना बड़ा उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलेगा जैसा कि पवन तनय ने लंका को भस्म करके किया –

बाजहि ढोल देहिं सब तारी ।
नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥
पावक जरत देखि हनुमंता ।
भयउ परम लघु रूप तुरंता ॥
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारी ।
भई सभीत निसाचर नारी ॥
हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास ॥
देह बिसाल परम हरुआई ।
मन्दिर ते मन्दिर चढ़ि जाई ॥
जरइ नगर भा लोग बिहाला ।
झपट लपट बहु कोटि कराला ॥
जारा नगर निमिष एक माहीं ।
एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी ।
कूदि परा पुनि सिंधु मँझारी ॥
पूँछ बुझाइ खोइ श्रमु धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥
जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥
चलत महा धुनि गर्जसि भारी ।
गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी ॥
नांघि सिंधु एहि पारहिं आवा ।
सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा ॥
हरषे सब बिलोकि हनुमाना ।
नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक अपौरुषेय कार्य करके महाबली शत्रु पर अपने बल तथा पौरुष की अमिट छाप डाल कर बानर समूह को हर्ष प्रदान करने वाले हनुमान भला क्यों न पूजनीय बनें ? कार्य द्वारा अपने को श्रेष्ठ प्रमाणित करने वाला कोई भी व्यक्ति सबके लिए आदरणीय बनता है । प्रशंसा यश और अमिट कीर्ति केवल पवन तनय हनुमान तक सीमित नहीं है, वैसा ही करने वाले सभी के पास वह जा सकती है । हनुमान के अद्भुत शौर्य की प्रशंसा तो स्वयं श्रीमुख से भगवान ने ही की ।

जामवन्त जी भगवान को हनुमान जी के कार्यों का परिचय देते हैं –

नाथ पवन सुत कीन्हि जो करनी ।
सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥
पवन तनय के चरित सुहाए ।
जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥
सुनत कृपानिधि मन अति भाए ।
पुनि हनुमान हरषि हिय लाए ॥
सुनु सुत तोहि समान उपकारी ।
नहिं कोउसुर नर मुनि तनु धारी ॥

पवन तनय हनुमान जी ने परमार्थ एवम स्वामी की सेवा में एक नहीं अनेक बार अपने अतुलित बल व शौर्य का परिचय दिया है । लक्ष्मण के शक्तिबाण लगने के अवसर पर भला उनके प्राण बचाने का श्रेय क्या पवन तनय को नहीं है ? संजीवनी बूँटी सहित उस पहाड़ को उखाड़ कर आधी रात तक लंका में पहुँच जाने का प्रसंग राम के अनुयायियों में यदि शौर्य का संचार न करे तो उनके रामायण के पठन-पाठन को दुर्भाग्य मानना ही उचित होगा । जब तक हम अपनी पूरी शक्ति से कोई कार्य नहीं करते उसमें सफलता संदिग्ध रहती है । बीस वर्षों से लगातार अन्नोत्पादन के लिए प्रयत्न करने पर भी हम आत्मनिर्भर नहीं बन सके है, फिर रामायण अथवा उसके पात्रों के शौर्य से हम क्या प्रेरणा लेते हैं ?

मरणासन्न लक्ष्मण के लिए सुखेन वैद्य हिमालय से संजीवनी बूँटी लाने के लिए कहता है । यह विचारणीय है कि युद्धस्थल में हनुमान जी भी दिन भर अथक परिश्रम से लड़ते रहे थे और वे थकान से चूर थे –

राम पदारविंद सिर नायउ आइ सुखेन ।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवन सुत लेन ॥
राम चरन सरसिज उर राखी ।
चला प्रभंजन सुत बल भाषी ॥
देखा सैल न औषध चीन्हा ।
सहसा कपि उपार गिरि लीन्हा ॥
गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ ।
अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥

भरत के बाणों से धोखे से घायल होने के बाद भी वे अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं छोड़ते और उसी के सहारे चलते हैं । भरत के बाण के सहारे लंका तक पहुँचने का प्रस्ताव वे अस्वीकार कर देते हैं –

तात गहरु होइहि तोहि जाता ।
काज नसाइहि होत प्रभाता ॥
चढ़ि मम सायक सैल समेता ।
पठवौं तोहि जहँ कृपानिकेता ॥
सुन कपि मन उपजा अभिमाना ।
मोरे भार चलिहि किमि बाना ॥
राम प्रभाव विचारि बहोरी ।
बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥
तब प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरंत ।
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत ॥

वे ठीक समय तक लंका में पहुँचकर शोकातुर राम के बन्धु-जनों अपार क्लेश को दूर करने में सफल हो जाते हैं ।

हिन्दू जनता के लिए अपने शौर्यपूर्ण कार्यों के कारण ही वीर हनुमान युग-युग तक पूजे जाते रहेंगे । मनुष्य का शौर्य रथ के पहिए के समान उसे यश, कीर्ति तथा सम्पन्नता के पथ पर अग्रसर करता है ।

अंगद का शौर्य

रामायण की महिमा का रहस्य यही है कि राम की प्रेरणा से जंगल की उपेक्षित और अज्ञात जातियों, बानर और रीछों तक का शौर्य समाज के सम्मुख प्रदर्शित हुआ । अंजनीनन्दन हनुमान तो अपने अद्भुत शौर्य से राम के अनन्य सेवक बन गये । बालि तनय अंगद भी वीरता में किसी से पीछे न रहे । सुबेल पर्वत पर सेना सहित पड़ाव डाले हुए भगवान राम के दूत के रूप में अंगद ही उपयुक्त रहे –

बालि तनय बुधि बल गुन धामा ।
लंका जाहु तात मम कामा ॥
बहुत बुझाइ तुम्हहिं का कहऊँ ।
परम चतुर मैं जानत अहऊँ ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काजु हमार तासु हित होई ।
रिपु सन करेहु बतकही सोई ॥

राम के इस निर्देश के अनुसार अंगद ने रावण-दरबार में केवल वाक्यचातुरी ही नहीं दिखाई वरन् अपने अद्वितीय शौर्य की अमिट छाप भी राक्षस वीरों के हृदय पटल पर डाल दी। हनुमान जी के लंका विध्वंस कृत्य से राक्षसों को यह विश्वास हो चला था कि वानरी सेना में हनुमान सर्वश्रेष्ठ बलशाली थे ।

रावण दरवार में जाकर अंगद ने राक्षसों की इस धारणा का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया और तत्पश्चात यही उचित समझा कि रावण के दरबार पर राम की सम्पूर्ण सेना के वीर होने का प्रमाण प्रस्तुत करके वे राम की विजय को सुनिश्चित कर सकते हैं क्योंकि शारीरिक विजय से पूर्व मानसिक विजय प्राप्त करना आवश्यक होता है । जो लोग इस तथ्य की उपेक्षा कर जाते हैं । उनकी वीरता निष्फल चली जाती है ।

शत्रु दरबार में राम की ओर से पराजित होने पर सीता को हार जाने जैसा संकल्प करके पैर जमा देना उस काल के भारत सन्तानों की वीरता का सबसे बड़ा प्रमाण है जबकि उस दरबार में मेघनाद जैसे सैकड़ों योद्धा उपस्थित थे । जिन्होंने देवराज इन्द्र को पराजित करके 'इन्दजीत' की पदवी धारण की थी ।

रावण भगवान राम तथा लक्ष्मण की निन्दा करने लगा तो अंगद से सहन न हो सका –

जब तेहिं कीन्ह राम कै निंदा ।
क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा ॥
कटकटान कपि कुंजर भारी ।
दुहु भुजदंड तमकि महि मारी ॥
डोलत धरनि सभासद खसे ।
चले भाजि भय मारुत ग्रसे ॥
गिरत संभारि उठा दसकंधर ।
भूतल परे मुकुट अति सुन्दर ॥
कछु तेहि लै निज सिरन्हि सँवारे ।
कछु अंगद प्रभु पास पबारे ॥

अंगद का क्रोध इतना करके शान्त नहीं होता वे और भी कुछ करने को उद्यत हो उठते हैं –

मैं तब दसन तोरिबे लायक ।
आयसु मोहिन दीन्ह रघुनायक ॥
अस रिस होति दसउ मुख तोरौं ।
लंका गहि समुद्र महँ बोरौं ॥
गूलरि फल समान तव लंका ।
बसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका ॥
मैं बानर फल खात न बारा ।
आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥

अंगद की इन बातों को रावण ने लवारिता मात्र माना तो उन्होंने व्यावहारिक रूप से अपने वास्तविक शौर्य का प्रदर्शन कर दिखाना ही उचित समझा –

समुझि राम प्रताप कपि कोपा ।
सभा मांझ पन करि पद रोपा ॥
जो मम चरन सकहि सठ टारी ।
फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कह दससीसा ।
पद गहि धरनि पछारहु कीसा ॥
इन्द्रजीत आदिक बलवाना ।
हरसि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई ।
पद न टरह बैठहिं सिरु नाई ॥
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती ।
टरइ न कीस चरन एहि भाँती ॥
पुरुष कुयोगी जिमि उर गारी ।
मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी ॥
कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ ।
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहि सिरु नाइ ॥
भूमि न छाड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग ।
कोटि बिघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग ॥
कपि बल देखि सकल हियँ हारे ।
उठी आपु कपि के परचारे ॥
गहत चरन कह बालि कुमारा ।
मम पद गहे न तोर उबारा ॥
रिपु बल धरषि हरषि कपि बालि तनय बल पुंज ।
पुलक सरीर नयन जल गहे राम पद कंज ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अंगद का शौर्य हम सबके लिए अनुकरणीय क्यों न बने ?

बानर-भालुओं का शौर्य

स्वतंत्र भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत अनेक बड़ी-बड़ी निर्माण योजनाऐं की गई हैं । सन् १९६२ ई० में चीनी अतिक्रमण के समय केन्द्रीय सरकार को सीमावर्ती भागों को राजधानी से सम्बन्धित करने की आवश्यकता तीव्र रूप से अनुभव हुई । उस समय सैनिक महत्व को दृष्टि से अनेक सड़कों का निर्माण किया गया इन्हीं सड़कों में एक बड़ी सड़क दिल्ली आसाम रोड़ का निर्माण है जो लेखक के स्थान से होकर जाती है। उसी राज पथ पर घाघरा नदी पर एक पुल का निर्माण हो रहा है । पुल निर्माण का ठेका हिन्दुस्तान निर्माण कम्पनी ने ले रखा है । करीब दो वर्ष से पुल का निर्माण कार्य बड़े तीव्र बेग से हो रहा है । निकट होने के नाते लेखक को पुल-निर्माण के प्रयास को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर मिला । हजारों मजदूर, कारीगर, मशीन क्रेन तथा इन्जीनियर दिनरात चौबीसों घंटे काम करते रहते हैं । पुल के पास मीलों दूरी के क्षेत्र में एक बड़ा नगर जैसा बस गया है । करीब चार सौ ट्रक सामान ढोने और नदी पर साइड बाँध बांधने के लिए बड़े -बड़े ढोने का काम कर रहे हैं । सुदूर स्थानों से इतना पत्थर लाकर डाल दिया गया है जो चारों ओर ढेर का ढेर दिखाई पड़ता है । सामान का संग्रह चारों दिशाओं की हलचल तथा हजारों व्यक्तियों के दिन-रात अथक परिश्रम के पश्चात तीन वर्ष में उसके बन कर पूरा होने की सम्भावना है ।

इस पुल निर्माण के प्रयास को प्रत्यक्ष देखकर मैं सोचने लगा एक छोटी नदी पर पुल निर्माण में यदि तीन वर्ष लग सकते हैं तो शत् योजन महासागर पर सेतु निर्माण में जबकि केवल नौ दिन लगे थे तो बानर और भालुओं को कितना श्रम करना पड़ा होगा ? इस कार्य को ईश्वर कृपा का एक चमत्कार मानकर भगवत भजन से संन्तुष्ट हो जाने वाले राम के अनुयायियों को यह भी सोचना है कि राम का सच्चा भजन श्रम के पसीने से होता है जैसा कि बानर और भालुओं ने किया । नल-नील उस समय के महानतम् इंजीनियर थे ।

सेतु रचना में कपि और रीछों के प्रयास और उत्साह का वर्णन देखिये । जामवन्त जी नल-नील को सेतु रचना के लिए प्रेरित करते भगीरथ प्रयत्न प्रारम्भ हो जाता है –

जामवंत बोले दोउ भाई ।
नल नीलहिं सब कथा सुनाई ॥
राम प्रतापु सुमिरि मन माहीं ।
करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
बोलि लिए कपि निकर बहोरी ।
सकल सुनहु बिनती कछु मोरी ॥
राम चरन पंकज उर धरहू ।
कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
धावहु मर्कट विकट बरूथा ।
आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा ॥
सुनि कपि भालु चले करि हूहा ।
जय रघुवीर प्रताप समूहा ॥
अति उतंग गिरि पादप लीलहि लेहिं उठाई ।
आनि देहिं नल नीलहिं रचहिं ते सेतु बनाई ॥
सैल बिसाल आनि कपि देहीं ।
कंदुक इव नल नील ते लेहीं ॥

बानर भालुओं की उत्साहपूर्ण श्रमयुक्त सेवा से प्रभु राम शीघ्र प्रसन्न होते हैं –

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा ।
देखि कृपा निधि के मन भावा ॥

काश ! बानर-भालुओं के सदृश उत्साह भर कर आर्य जाति ईश्वर पूजा में लगे तो देश की भला कौन-सी समस्या नहीं सुलझ सकती ? खाद्य स्थिति, निर्धनता और नव-निर्माण के अनेक विशाल कार्य पचास करोड़ व्यक्तियों के सौ करोड़ हाथों से भला बिना सुलझे रह सकते हैं । लेकिन दु:ख केवल इस बात का है कि जिस उत्साह से परिश्रम में हमें डटना चाहिए वही हम अपने में नहीं लाते । अर्द्धमन से, ढीले ढालेतरीके से काम करने के कारण ही हमारी दशा दयनीय है ।

रामायण हमें शौर्य से युक्त होने की प्रेरणा देती है ।

धैर्य

'सौरज धीरज तेहि रथ चाका ' जीवन रूपी महान् रथ का यदि एक पहिया 'शौर्य' है तो दूसरा धैर्य माना गया है । धैर्य की कसौटी है विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत न हारना और आशावादी बने रहना । जिस प्रकार एक पहिए के छोटे या टूटे रहने से गाड़ी का चलना सम्भव नहीं हो पाता, धैर्य के अभाव में शौर्य नष्ट प्राय: हो जाता है । धैर्य रहित शौर्य अपने स्वामी के लिए सुख और सफलतादायक न बनकर उल्टे अनेक विपत्तियों में फँसा देने का हेतु बन जाता है । बहुतेरे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोगों में शौर्य तो आवश्यकता से अधिक होता है लेकिन 'धैर्य' बिलकुल नहीं। थोड़ी सी विपरीत परिस्थिति आई कि हिम्मत हार कर अबला के समान सिर पीटने लगे। वास्तव में ऐसे व्यक्ति उपयोगिता की दृष्टि से मिट्टी के घोंघे मात्र होते हैं।

रामायण में जहाँ 'शौर्य' के पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं धैर्य के भी उतने ही। अमित धैर्य के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम स्वयं थे। निरन्तर चौदह वर्षों तक उन्हें विपरीत परिस्थितियों का सामना करते रहना पड़ा। चौदह वर्ष की अवधि बड़ा लम्बा समय होता है। दो दिन के व्रत और फलाहार से हम ऊब उठते हैं। भगवान को तो पूरे चौदह वर्षो तक केवल कन्दमूल पर निर्वाह करके रहना पड़ा और जीवन के अन्य अंशों की तुलना में शक्ति का अधिक प्रयोग करना पड़ा। नित्य नई-नई परिस्थितियों और संकट सामना करने के लिए खड़े रहते थे। राज्य गया, अयोध्या छूटी, पिता का स्वर्गवास हुआ, रघुकुल पर विपत्ति का पहाड़ टूटा, प्रिय पत्नी सीता का हरण हुआ, यश और कीर्ति पर भी बट्टा लगा, लेकिन राम हिमालय के सदृश अचल और अडिग बने रहे। उनकी स्वाभाविक प्रसन्नता जैसी राजकुमारावस्था में रहती थी, बनवासी अवस्था में भी बनी रही। राज्य पाने के समय जिस आनन्द का वे अनुभव करते थे, वन जाते समय भी उसी स्वाभाविक प्रसन्नता को वे धारण किये रहे।

कैकेयी के महल में जाकर वे भरत को राज्य देने और अपने लिए चौदह वर्षों तक वन में रहने का आदेश सुनते हैं, लेकिन राम के चेहरे पर रंचमात्र भी परिवर्तन नहीं आता। इस बड़े परिवर्तन को अति अल्प और यों कहा जाए कि अधिक प्रसन्नतादायक स्वीकार करते हैं। गोस्वामी जी भगवान राम की स्वाभाविक प्रसन्नता और कैकेयी की कठोरता कितने सुन्दर ढंग से वर्णन करते हैं। कैकेयी राम को महाराज दशरथ के बेहोश होने का कारण बता रही हैं –

निधरक बैठि कहइ कटु बानी।
सुनत कठिनता अति अकुलानी॥
जीभ कमान बचन सर नाना।
मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना॥
जनु कठोर पनु धरें सरीरू।
सिखइ धनुष विद्या बर बीरू॥
सबु प्रसंग रघुपतिहि सुनाई।
बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई॥

लेकिन इतने बड़े विपरीत आघात को सुनते रहने पर भी राम की अवस्था कैसी रहती है –

मन मुसुकाइ भानुकुल भानू।
राम सहज आनन्द निधानू॥

धैर्यशाली व्यक्ति पारसमणि के समान होता है जो लोहे को स्पर्श मात्र से सोना बना लेता है। कैकेयी की बात को सुनकर भगवान राम केवल मुस्कराते ही नहीं रहे। शोक-विह्वल पिता के समीप जाकर वे अपने लिए कैकेयी द्वारा प्रस्तुत दुःखपूर्ण आदेश को कितनी हल्की बात स्वीकार करते हुऐ उसे हँसते-हँसते चुटकी बजाते काट आने के लिए कहते हैं –

तात कहऊँ कछु करउँ ढिठाई।
अनुचित छमब जानि लरिकाई॥
अति लघु बात लागि दुखु पावा।
काहुँ ने मोहि कहि प्रथम जनावा॥
देखि गोसांइहि पूछिउँ माता।
सुनि प्रसंगु भए सीतल गाता॥
मंगल समय सनेह बस सोच परिहरिअ तात।
आयसु देइअ हरषि हियँ कहि पुलके प्रभु गात॥

धैर्यशाली व्यक्ति कर्तव्य पथ से कभी विचलित नहीं होता। एक बार निश्चय कर लेने के पश्चात् कितनी ही बाधायें क्यों न आयें परन्तु धैर्य के साथ ऐसा व्यक्ति सबको सहन कर लेता है। भगवान राम के वनगमन के निश्चय को पुत्र विषयक मोह में आसक्त पिता भी न बदल सके। उन्होंने राम को वन न जाने देने के लिए अनेक प्रकार से समझाया –

रायँ राम राखन हित लागी।
बहुत उपाय किए छलु त्यागी॥
लखेउ राम रुख रहत न जाने।
धरम धुरन्धर धीर सयाने॥

प्रजा, परिवार तथा गुरुजनों का अपार स्नेहयुक्त आग्रह राम को वन जाने से रोक न सका। महाराज दशरथ तो उन्हें अन्त तक रोकने का प्रयास करते रहे लेकिन सभी असफल हुए। राम के चले जाने के पश्चात् वे सुमंत जी को कुछ दूर तक रथ लेकर पहुँचाने और फिर लौट जाने का आदेश देते हैं –

सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु फिरहु गएँ दिन चारि॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भरत जैसे स्नेही और कर्तव्यशील भाई का स्नेह चित्रकूट से भगवान को वापस करने में सफलता न प्राप्त कर सका। अयोध्या का विशाल जनसमूह जिसमें वशिष्ठ, जाबालि आदि गुरुजनों सहित तीनों माताऐं भी थीं चित्रकूट में राम को वापस लाने के लिए गया था। विदेहराज जनक और विश्वामित्र भी वहाँ पहुचे थे। धैर्य और दृढ-निश्चयता में चोली-दामन का संग होता - पिता की मृत्यु के बाद राजनैतिक परिस्थितियाँ भी अयोध्या वापस होने के औचित्य को सिद्ध कर रही थीं, लेकिन राम का धैर्यरूपी बाँध न टूटा। वे ध्रुवतारे के समान अविचल बने रहे। उनके संकल्प को यदि बाह्य परिस्थितियाँ प्रभावित कर देतीं तो सम्भवत: भगवान राम आर्य जाति द्वारा पूज्य न बन पाते।

वनवास की अवधि में उनके ऊपर कितनी विपत्तियाँ आईं ? पग पग पर नई कठिनाई। कहीं कबन्ध मुंह बायें खड़ा है, तो कही मारीच कपट मृग बन कर आया है। रावण द्वारा सीताहरण हो गया। राम की शक्ति क्षीण हुई लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। जटायु को रावण के कृपाण से लथ-पथ पड़ा देखकर उससे सीताहरण का समाचार पाकर अमित धैर्य को धारण करने वाले राम ने रावण को कुलसहित नष्ट करने की प्रतिज्ञा कर डाली।

अयोध्याकांड से लंकाकांड तक का इतिहास मर्यादा पुरुषोत्तम राम के अमित धैर्य का इतिहास माना जा सकता है। कठोर से कठोर परिस्थितियाँ इस अवधि में भगवान के सामने सुरसा के समान मुँह बनाकर आई लेकिन अमित धैर्य को धारण करने वाले राम का वे कुछ भी बिगाड़ न सकीं। राम के यश रूपी स्वर्ण को चमकाने के लिए वे अग्नि की भट्टी मात्र सिद्ध हुईं।

अयोध्या से चलकर गंगातट पर शृंगबेरपुर में शिंशुपा वृक्ष के नीचे कुशासनी पर सोने वाले राम सीता की इस स्थिति को देखकर निषादराज गुह के नेत्रों में आँसू डबडबा आते हैं। लक्ष्मण जी मे वह अपनी हृदय-व्यथा को प्रकट करते हुए राम के वैभवशाली राजसी सुख का वर्णन करता है –

सोवत प्रभुहिं निहारि निषादू।
भयउ प्रेम बस हृदयँ विषादू॥
तनु पुलकित जलु लोचन बहई।
बचन सप्रेम राम सन कहई॥
भूपति भवन सुभायँ सुहावा।
सुरपति सदनु न पटतर पावा॥
मनिमय रचित चारु चौबारे।
जनु रतिपति निज हाथ सँवारे॥
सुचि सुविचित्र सुभोग मय सुमन सुगन्ध सुबास।
पलंग मंजु मनि दीप जँह सब विधि सकल सुपास॥
बिबिध बसन उपधान तुराई।
छीर फेन मृदु बिसद सुहाई॥
तहँ सिय राम सयन निसि करहीं।
निज छवि रति मनोज मृदु हरहीं॥
ते सिय राम साथरी सोए।
श्रमित बसन बिनु जाहिं न जोए॥
मातु पिता परिजन पुर बासी।
सखा सुसील दास अरु दासी॥
जोगवहिं जिन्हहिं प्रान की नाईं।
महि सोवत तेइ राम गोसाईं॥
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ।
ससुर सुरेस सखा रघुराऊ॥
रामचंद्र पति सो वैदेही।
सोवत महि विधि बाम न केही॥

प्रत्येक के जीवन में विधाता कभी-कभी विपरीत अवश्य होते हैं। अवतार कहे जाने वाले भगवान राम, लक्ष्मी की अवतार जगतजननी सीता, धर्मराज के अवतार युधिष्ठिर राजा नल आदि को तो साधारण व्यक्तियों की तुलना में अपार कष्ट समूहों की सीमा पार करनी पड़ी थी। फिर हम सब लोगों की क्या विसात ? अनुकूलता और प्रतिकूलता के झूले में सभी को झूलना पड़ता है। लेकिन धैर्यशाली व्यक्ति अपने कष्टों को मुस्कराहट के साथ खिलाड़ी की भाँति स्वीकार करता है जैसा कि भगवान राम तथा रामायण के अन्य पात्रों ने किया –

बाल्मीकि रामायण के प्रथम सर्ग में मुनिश्रेष्ठ नारद जी भगवान राम के गुणों का वर्णन करते हुए बाल्मीकि जी से कहते हैं –

स च सर्वगुणोपेत: कौशल्यानन्द वर्धन:।
समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव॥

''सम्पूर्ण गुणों से युक्त वे श्रीरामचन्द्र जी अपनी माता कौशल्या के आनन्द को बढ़ाने वाले हैं। गम्भीरता में समुद्र और धैर्य में हिमालय के समान है।''

भगवान राम तो सर्वगुण सम्पन्न और अलौकिक थे ही परन्तु रघुकुल कमल दिवाकर रामानुज भरत को भी हम भगवान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राम से कम धैर्यशाली नहीं पाते ।

राम वनगमन और दशरथ जी की मृत्यु के बाद वशिष्ठ जी द्वारा भेजा गया दूत कैकेयी नरेश के यहाँ पहुँच कर भरत को वापस लाता है । माता द्वारा सम्पूर्ण उत्पातों का वर्णन सुनकर और फिर अपने को समस्त उत्पातों का निमित्त पाकर कुम्हार के अबा के समान भरत हृदय धधकने लगता है –

पितु सुरपुर बन रघुवर केतू ।
मैं केवल सब अनरथ हेतू ॥
धिग मोहि भयउँ बेनु बन आगी ।
दुसह दाह दुख दूषन भागी ॥

कौशल्या के महल में सम्पूर्ण रजनी भरत बिलाप करते हुए और सौगन्ध खाते-खाते व्यतीत करते हैं । लेकिन प्रातःकाल बामदेव और वशिष्ठ जी जब आकर उन्हें धैर्य धारण कराते हैं तो वे उठकर सामयिक कर्तव्य में जुट जाते हैं –

करत बिलाप बहुत एहि भाँती ।
बैठहिं बीति गई सब राती ॥
बामदेव बसिष्ठ तब आए ।
सचिव महाजन सकल बोलाए ॥
मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे ।
कह परमारथ वचन सुदेसे ॥
तात हृदयँ धीरजु धरहु करहु जो अवसर आजु ।
उठे भरत गुरु बचन सुनि करन कहेउ सबु साजु ॥

विपत्ति में ढाढस बंधाकर कर्तव्याकर्तव्य की प्रेरणा देने वाला एक मात्र धैर्य ही है । यदि वह मनुष्य का साथ छोड़ दे तो वह बेसहारा हो जायेगा । इसीलिए कहा गया है कि –

संकट परे परखिए चारी ।
धीरज धरम मित्र अरु नारी ॥

चित्रकूट परिसंवाद के बाद चौदह वर्षों तक राम के वियोग में भरत को प्रत्यक्ष अविलम्ब के रूप में राम की चरणपादुका थीं, परन्तु परोक्ष और सच्चा अवलम्वन उनका धैर्य ही था जिसके सहारे वे चित्रकूट से लौटे और चौदह वर्षो तक जीवन धारण किये रहे । राम से विदा लेते समय उन्हें विशेष धैर्य धारण करना पड़ा –

भरत सुजान राम रुख देखी ।
उठि सप्रेम धरि धीर विसेषी ॥
करि दण्डवत कहत कर जोरी ।
राखो नाथ सकल रुचि मोरी ॥

लेकिन गोस्वामी जी ने कहा है कि जो अपने मन को ज्ञानरूपी अग्नि में सोने के समान कस लेते हैं वही धीर धुरन्धर बन पाते हैं । मुनिगण, गुरु वसिष्ठ जी और विदेहराज जनक इसी कोटि में आते हैं –

मुनि गन गुर धुर धीर जनक से ।
ग्यान अनल मन कसे कनक से ॥

विवेकशीला माता कौशल्या जी भी इसी कोटि में आती हैं। राम जैसे पुत्र की जननी बनने का सौभाग्य साधारण स्त्रियों को नहीं मिल सकता। माता के रूप में राम जैसे पुत्र और जानकी जैसी बहु को अपार कष्ट उठाने के लिए वन को भेज देने पर भी उनका धैर्य टूटा नहीं । राम वियोग की चोट को महाराज दशरथ सहन न कर सके । उन्होंने राम के बिछुड़ते ही क्षणभंगुर शरीर को त्याग दिया, लेकिन विवेकशीला कौशल्या का धैर्य नहीं टूटा । अपने महल में मछली के समान राम विरह रूपी जल से बिछुड़ने वाले महाराज दशरथ को धर्मपथ का साधन करने वाले सुमन्त जी और विवेकशीला माता कौशल्या को समझाते हैं और धैर्य धारण की आवश्यकता बताते हैं –

सचिव धीर धरि कह मृदु बानी ।
महाराज तुम पण्डित ज्ञानी ॥
बीर सुधीर धुरन्धर देवा ।
साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा ॥
जनम मरन सब दुख सुख भोगा ।
हानि लाभु प्रिय मिलन बियोगा ॥
काल करम बस होहि गोसाईं ।
बरबस राति दिवस की नाईं ॥
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं ।
दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ॥
धीरजु धरहु विवेक बिचारी ।
छाड़िअ सोच सकल हितकारी ॥

चक्रवर्ती साम्राज्य के वयोवृद्ध प्रधानमन्त्री सुमन्त जी ने धैर्य की आवश्यकता और महिमा को कितने सुन्दर ढंग से समयोचित अवसर पर महाराज दशरथ को समझाया । उनकी सीख न मानने से ही महाराज के प्राण गये । इसी प्रकार यदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हम लोग भी रामायण की इस सीख को न मानेंगे तो कष्टों से पार जाना कैसे सम्भव होगा ?

माता कौशल्या का धैर्य लोप नहीं हुआ था इसीलिए उन्होंने मरणासन्न दशरथ को समायोचित सीख दी –

प्रान कण्ठ गत भयउ भुआलू ।
मनि बिहीन जनु व्याकुल व्यालू ॥
इन्द्री सकल बिकल भई भारी ।
जनु सर सरसिज बनु बिनु बारी ॥
कौशल्या नृप दीख मलाना ।
रविकुल रवि अंथयअ जियँ जाना ॥
उर धरि धीर राम महतारी ।
बोली बचन समय अनुसारी ॥
नाथ समुझि मन करिअ बिचारू ।
राम बियोग पयोधि अपारू ॥
करनधार तुम्ह अवध जहाजू ।
चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू ॥
जो जिय धरिउ बिनअ प्रिय मोरी ।
रामु लखनु सिय मिलहिं बहोरी ॥
प्रिया बचन मृदु सुनत नृप चितउ आँखि उघार ।
तड़फत मीन मलीन जनु सींचत सीतल बारि ॥

इस प्रकार रामायण के उपरोक्त उदाहरणों से हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि धैर्यरूपी सद्गुण मनुष्य का सच्चा अवलम्बन, सामान्य अवस्था में प्रगति पथ पर अग्रसरित करने वाला, विपत्ति में सद्मार्ग पर आरूढ रहने को प्रेरणा देने वाला और प्रत्येक अवस्था में हमारे लिए कल्याणकारी सिद्ध होता है। रामायण की कहानी ''धैर्य रूपी स्याही से शौर्यरूपी लेखनी द्वारा लिखी गई है ।''

वर्तमान परिस्थिति में आर्य जाति में पुन: नवचेतना पैदा हो इसके लिए शौर्य और धैर्य का सबल अपनाना चाहिए । मानस के पाठक यदि भगवान के इन महान् गुणों को धारण करने और विकसित करने की दिशा में कुछ सोचें तो गोस्वामी तुलसीदास जी का परिश्रम सार्थक होगा और उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति मिलेगी ।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम हमें इन गुणों से विभूषित करें ।

सत्य और शील

''सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ।''

विजय रथ में सत्य को ध्वजा और शील को पताका कहा है । जिस प्रकार युद्धस्थल में चारों ओर से घिरे रहने पर भी ध्वज फहराते रहने के कारण दूर से ही रथी की उपस्थिति का भान होता है, संसार में व्यक्ति की ख्याति 'सत्य' के आधार पर होती है । प्राय: समस्त प्राणी किसी न किसी प्रकार के कर्मों में रत रहते हैं, क्योंकि कर्म करना मनुष्य का सद्भाव है । वह चाहे जंगल में जाकर बैठ जाए फिर भी कुछ न कुछ खट-पट अवश्य करेगा । भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में इसी रहस्य को बताया –

नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवश: कर्म सर्व: प्रकृतिजैर्गुणै: ॥

''वास्तव में कोई एक क्षण भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता । प्रकृति से उत्पन्न हुए परवश पड़े प्रत्येक मनुष्य से कर्म कराते हैं ।''

लेकिन सभी को संसार में ख्याति प्राप्त का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो पाता । यह सुअवसर तो प्रत्येक काल और युग में उंगलियों पर मिले जाने वाले केवल उन लोगों को मिल पाता है जिनके कर्म 'सत्य' से जीवित होते हैं । सत्यतापूर्ण आचरण वाले व्यक्ति कही लोक में सुख्याति प्राप्त करते हैं और उन्हीं की सद्गति भी होती हैं ।

सत्याचरण पर ही संसार का सुसंचालन टिका है । जिस व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र में सत्यभाषी लोग होते हैं वहाँ प्रत्येक प्रकार का ऋद्धि सिद्धि तथा सुख-समृद्धि विराजती है । सामान्य लोगों का जीवन शान्तिमय रहता है लेकिन झूठ, छल, कपट का अवलम्ब लेने वाले समाज में चारों ओर अशान्ति व्याप्त हो जाती है ।

रावण के राज्यसिंहासनारूढ होने पर चारों ओर इसी प्रकार के लोगों की वृद्धि हो गई ।

बाढ़े खल बहु चोर जुआरा ।
जे लम्पट परधन परदारा ॥

इसके ठीक विपरीत भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के राज्य को आदर्श माना गया है। क्योंकि राम के गद्दी पर बैठते ही चारों ओर सुख-शान्ति छा गई । पाप का नामोनिशान न रह गया –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राम राज बैठे त्रैलोका ।
हरषित भए गए सब सोका ॥

ऐसी स्थिति इस कारण से आयी थी कि सामान्य लोगों का आचरण सत्यपूर्ण था –

चारिउ चरन धर्म जग माहीं ।
पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं ॥

धर्म के चार चरण, सत्य, शौच, दया और दान पूरी तरह से विकसित अवस्था में थे । इसी कारण पाप का अस्तित्व समाप्त प्रायः हो गया था ।

'जो बात जैसी हो, जैसे देखे, सुने वैसे ही माने और कहे यही सत्य है ।' इस सत्य का माहात्म्य श्रुति तथा पुराणों में पूरी तरह गाया गया है ।

सत्यमेव जयते नानृतं
सत्येन पंथा बितते देवयानम् ॥

(मुण्डकोपनिषद्)

भगवान राम ने केवल सत्य का प्रतिपादन ही नहीं किया वरन् अपनी वंश परम्परा के अनुकूल आचरण करके उन्होंने अमर कीर्ति प्राप्त की । वे सूर्य कुल के भूषण थे । उनका आचरण उस कुल मर्यादा के अनुसार था जिसमें सत्यवादी हरिश्चन्द्र उत्पन्न हुए थे जिन्होंने सत्य के पालन के लिए राज-पाट खोने में संकोच न किया, वरन् अपने को एक डोम के हाथों बिकवा कर श्मशान में मुर्दा जलाने वालों तक से कर उगाहने की नीच टहल स्वीकार की । अपनी राजमहिषी और पुत्र को साहूकार के हाथों बिकवा दिया । सत्य को कसौटी पर परीक्षण के समय भीषणतम् आघात को उन्होंने सहर्ष सहन किया, लेकिन सत्य-पथ से विचलित न हुए । सर्प के डसने से मृत्यु को प्राप्त रोहित को उसकी माँ रोती-बिलखती श्मशान में जलाने लाती है । हरिश्चन्द्र को सत्यता का ज्ञान होता है । पुत्र के लिए फूट-फूट कर वे बिलखते हैं, लेकिन बिना कर लिए उसे भी जलाने नहीं देते । माता जब अपनी आधी साड़ी फाड़ कर दे देती हैं तभी पुत्र को जलाने की अनुमति उसे मिलती है ।

अपने पिता महाराज दशरथ की सत्यनिष्ठा पर आँच न आये, वे पुत्र विषयक मोह में फँसकर कहीं सत्याचरण से डिग न जाऐं इसीलिए राम ने राज पाट त्याग कर वन जाने में क्षणमात्र भी विलम्ब न किया । उनके सामने अपने महान पूर्वजों का आदर्श था जिसका वे अनुसरण कर रहे थे । गंगातट पर नीति निपुण तथा धर्मधुरन्धर सुमन्त जी से वे रघुकुल की इसी मर्यादा की ओर संकेत करते हैं । चरणों पर लोट कर बालक के समान बिलखते हुए पितातुल्य वयोवृद्ध एवं सम्माननीय सुमन्त जी को राम उठाकर सान्त्वना देते हुऐ यही बात कहते हैं –

मन्त्रिहि राम उठाइ प्रबोधा ।
तात धरम मत तुम सब सोधा ॥
सिबि दधीच हरिश्चन्द्र नरेसा ।
सहे धरम हित कोटि कलेसा ॥
रंतिदेव बलि भूप सुजाना ।
धरमु धरेउ सहि संकट नाना ॥
धरमु न दूसर सत्य समाना ।
आगम निगम पुरान बखाना ॥
मैं सोइ धरम सुलभ करि पावा ।
तजें तिहूँ पुर अपजसु छावा ॥
संभावित कहुँ अपजस लाहू ।
मरन कोटि सम दारुन दाहू ॥

सत्य ही धर्म है और सच्चा धर्म सत्याचरण को माना गया है । सत्य के समान कोई दूसरा धर्म नहीं, यह बात भगवान ने केवल अपनी सम्मति से नहीं कही वरन् उसे वेद, शास्त्र और पुराणों से समर्पित बताया । रघुकुल की आदि मर्यादा सत्याचरण की थी –

रघुकुल रीति सदा चलि आई ।
प्राण जायँ बरु बचन न जाई ॥

कुल परिवार परिजन तथा गुरु-मण्डली सहित राम को मनाने के लिए जाने वाले भरत के निष्कपट प्रेम से राम पूरी तरह अवगत थे । भरत जैसे भाई की बात ठुकराने में पितामरण से भी अधिक क्लेश होता था । भरत की प्रशंसा करते हुए राम ने स्वयं कहा –

करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात ।
गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहिजात ॥

लेकिन भरत को राम रघुकुल की परम्परागत रीति को कष्ट सह कर भी निभाने के लिए कहते हैं –

जानहु तात तरनि कुल रीती ।
सत्यसंध पितु कीरति प्रीती ॥
समउ समाजु लाज गुरुजन की ।
उदासीन हित अनहित मन की ॥
तुम्हहि बिदित सब ही कर करमू ।
आपन मोर परम हित धरमू ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मातु पिता गुरु स्वामि दिनेसू ।
सकल धरम धरनीधर सेसू ॥
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू ।
तात तरनि कुल पालक होहू ॥
साधक एक सकल सिधि देनी ।
कीरति सुगति भूतिमय बैनी ॥
सो बिचारि सहि संकटु भारी ।
करहु प्रजा परिवार सुखारी ॥

इस प्रकार राम और भरत के चौदह वर्ष तक कष्टपूर्ण जीवन बिताने में आपसी आधार सत्य पर टिका रहा और उसी से दोनों का प्रेम एक-दूसरे के प्रति निरन्तर बढ़ता गया । यह भी भली-भाँति विदित है कि महाराज दशरथ ने सत्य के लिए राम को त्यागा था और उनके प्रति प्रेम निर्वाह के लिए प्राण तक दे दिये । भगवान राम भरत के बचन के पालन में इसीलिए आनाकानी करते रहे –

तात तुम्हहि मैं जानउँ नीके ।
करौं काह असमंजस जीके ॥
राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी ।
तनु परिहरेउ प्रेम पन लागी ॥

महाराज दशरथ के 'सत्य पालन' के लिए किए गए महान् बलिदान को राम निरर्थक सिद्ध होने देना नहीं चाहते थे । ऐसा करने से ही मानसकवि और आदिकवि दोनों ने उन्हें सत्यसंध कहा है –

मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सोइ आजु ।
सत्यसंध रघुबर बचन सुनि भा सुखी समाजु ॥

अरण्यकाण्ड में भगवान श्रीरामचन्द्र जी चित्रकूट से दण्डकारण्य की ओर चलते हैं । वे मार्ग के समस्त ऋषि-आश्रमों में जा-जाकर ऋषि-मुनियों से मिलते हैं और उनके दुख-सुख के भागी बनते हैं । मिलने वाले मुनिगण सामूहिक रूप से भगवान के साथ चलते हुये राक्षस समूहों द्वारा सताए जाने के कष्टों को भगवान को सुनाते हैं। राक्षसों द्वारा खाये गये मुनियों के अस्थि समूहों को साक्षी रूप से दिखाते हैं । दीनजनों की पीड़ा भला भगवान कैसे देख सकते थे । सज्जनों को सताने वाले निशाचरों के बध की प्रतिज्ञा उन्होंने कर डाली –

निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह ।
सकल मुनिन्ह के आश्रमहिं जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥

आगे का इतिहास बताता है कि प्रभु राम ने इस प्रतिज्ञा को पूरा करके देवताओं और सज्जनों के प्रति अपने कर्तव्य का पालन किया । दण्डकारण्य में जनस्थान के सीमावर्ती शासक खर-दूषन और उसकी सेना का सत्यानाश कर डाला । सूर्पणखा के नाक-कान काटने में यद्यपि प्रत्यक्ष बात तो विवाह के प्रस्ताव की थी लेकिन सत्य यह था कि प्रतिज्ञा करने के बाद निशाचरों को देखने मात्र से भगवान को क्रोध प्रज्वलित हो उठता था । एक-एक को बीन-बीन कर मारना उनके लिए अभीष्ट था –

हमने देखा कि भगवान की प्रतिज्ञा अक्षरशः पूरी हो गई । धरती निशाचरहीन हो गई ।

सत्य के ऊँचे सिद्धान्तों का महान् पुरुषार्थ द्वारा पालन करना सबके लिए सम्भव नहीं है। लेकिन दिन प्रतिदिन के जीवन में सरल, निष्कपट और खरे बनना सत्यता का सर्वग्राह्य व्यावहारिक स्वरूप है जो सामान्य जनों के लिए पालनीय है । बड़े सत्यों और प्रतिज्ञाओं के पालन की तुलना में हमारे सामाजिक जीवन को सुखमय बनाने के लिए इसकी आवश्यकता अधिक है ।

इस पहलू से जब हम रामायण का अध्ययन करते हैं भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम और रामायण के अन्य पात्रों में हमें पर्याप्त शालीनता मिलती है । राम ने जिसको जिस भाव से एक बार देखा, फिर परिस्थिति बदल जाने के बाद भी उसके लिए वैसे ही बने रहे । वनवास अवस्था में गंगातट पर निषाद को उन्होंने सखा कहकर सम्बोधित किया –

कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना ।
मोहि दीन्ह पितु आयसु आना ॥

वनवास से वापस आने पर चक्रवर्ती सम्राट बन जाने के पश्चात् भी निषाद की स्थिति में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आने दिया । अयोध्या से विदा करते समय भी भगवान उससे उसी प्रकार आत्मीयता का भाव प्रकट करते हैं –

तुम मम सखा भरत सम भ्राता ।
सदा रहेउ पुर आवत जाता ॥

इसी प्रकार सुग्रीव को भगवान ने अपना मित्र बना लिया था –

तब हनुमान उभय दिस की सब कथा सुनाय ।
पावक साक्षी देय कर दीन्हीं प्रीति दृढाय ॥

सुग्रीव राजपुर और स्त्री के मोह मे फँस कर राम के प्रति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने कर्तव्य को भूल गया। राम को उस पर क्रोध करना पड़ा, फिर भी मित्रता के भाव की उन्होंने रक्षा की –

तब अनुजहिं समुझायउ रघुपति करुणा सींव ।
भय देखाय लै आबउ तात सखा सुग्रीव ॥

ऐसा ही सरल और निष्कपट व्यवहार हम रावण बन्धु विभीषण के साथ पाते हैं। सागरतट पर आते ही उसे लंकेश्वर कह कर भगवान को सम्बोधित किया था और समुद्रजल से उसका राज्याभिषेक भी किया –

कहु लंकेस सहित परिवार ।
कुशल कुठाहर बास तुम्हारा ॥
खल मण्डली बसहु दिन राती ।
सखा धरम निबहइ केहि भाँती ॥

लंका विजय के पूर्व भगवान का यह व्यवहार गहरी राजनैतिक चाल कही जा सकती थी लेकिन लंका विजय के बाद प्रभु राम की स्थिति में बड़ा फेर बदल आ गया। लंका की सम्पत्ति, कोष भवन और सेना पर विजेता के रूप में उनका पूरा अधिकार था, लेकिन उस विपुल सम्पत्ति की ओर राम ने फूटी आँखों भी नहीं ताका।

प्रभु राम तथा रामायण से सत्याचरण की व्यावहारिक शिक्षा हमें मिलती है। यदि उस पर हम चलें तो हमारा सामाजिक जीवन पुनः आदर्श बन सकता है।

शील

जिस प्रकार शौर्य धैर्य के बिना संकटप्रद है उसी प्रकार शील के अभाव में सत्य पल्लवित और पुष्पित नहीं हो सकता। विजय-रथ में शील को सत्यरूपी ध्वजा का पताका माना गया है। केवल सत्य से सत्यभाषी के हृदय में अंहकार उत्पन्न होता है। सत्यभाषी यदि शील का सहारा न ले तो वह अहंकारी हो जाता है। नग्न सत्य प्रायः कटु होता है, इस प्रकार का सत्य सत्य भाषी को श्रेयमार्ग पर ले जाने के बजाय उसे नाना प्रकार के कलहों में फँसा देता है। वह व्यक्ति अपने पास पड़ोस वालों की आँखों में खटकने लगता है। सभी लोग उसके विरुद्ध एक मोर्चा जैसा बना लेते हैं। फिर उसका सारा समय आपसी प्रतिद्वन्द्वों में ही लगने लगता है और सत्य भाषण का पूरा-पूरा लाभ उसे नहीं मिल पाता। इसीलिये कहा गया है कि 'सत्यं ब्रूयात् प्रिय ब्रूयात्'। सत्य बोलो लेकिन प्रिय बोलो, ऐसा सत्य न बोलों जो प्रिय न हो।

मानस के प्रधान पात्र भगवान श्रीरामचन्द्र जी का सत्य शील से ओत-प्रोत सत्य था। जीवन भर उन्होंने सत्य की साधना की। वे अपनी सत्यता पर हिमालय के समान दृढ़ और अचल बने रहे, भारी से भारी विपत्तियों और बाधाएँ उन्हें अपने पथ से विचलित न कर सकीं, लेकिन व्यवहार में वे सदैव विनीत, शीलवान और संकोची रहे। किसी को कठोर शब्दों में उत्तर देना उन्होंने सीखा ही नहीं था। बचपन से ही राम आदि चारों भाई विनीत थे –

बीर बिनीत धरम ब्रत धारी ।
गुन सागर बर बालक चारी ॥

जनकपुर में परशुराम संवाद के अवसर लक्ष्मण तो कुछ कटु अवश्य हो गये लेकिन राम ने शीलयुक्त वाक्यों से परशुराम को निरस्त्र कर दिया। निम्नलिखित चौपाइयाँ इसका प्रमाण है।

नाथ संभु धनु भंजनिहारा ।
होइहि कोउ एक दास तुम्हारा ॥

लक्ष्मण के प्रति उत्तर से परशुराम जी के आपे से बाहर हो जाने पर राम उन्हें शीलयुक्त वचनों से शान्त कर देते हैं –

नाथ करहु बालक पर छोहू ।
सूध दूध मुख करिअ न कोहू ॥
जो पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना ।
तौ कि बराबरि करत आयाना ॥
जो लरिका कछु अचगरि करहीं ।
गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं ॥
करिअ कृपा सिसु सेवक जानी ।
तुम्ह सम सील धीर मुनि ज्ञानी ॥

लक्ष्मन के मुस्कराने पर और अधिक क्रोधित हुए परशुराम जी को राम अपने शीलयुक्त शिष्ट आचरण से पुनः शान्त कर देते हैं –

अति बिनीत मृदु सीतल बानी ।
बोले रामु जोरि जुग पानी ॥
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना ।
बालक बचनु करिअ नहिं काना ॥
बररै बालकु एक सुभाऊ ।
इन्हहि न संत बिदूषहिं काऊ ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तेहि नाहीं कछु काज बिगारा ।
अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोपु बध बँधव गोसाई ।
मो पर करिअ दास की नाई ॥
कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई ।
मुनिनायक सोई करौं उपाई ॥

अन्त में राम ने अपनी गूढ़ बात को मृदु वचनों में कह कर अभीष्ट की सिद्धि भी कर ली और कटु भी नहीं बने। परशुराम ने जब कहा –

भजंउ चापु दापु बढ़ बाढ़ा ।
अहमिति मनहुँ जीति जगु ठाढ़ा ॥

तो राम ने विनम्र उत्तर देकर उनकी आँखें खोल दीं –

राम कहा मुनि कहहु बिचारी ।
रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥
छुअ तिहिं टूट पिनाक पुराना ।
मैं केहि हेतु करौं अभिमाना ॥
जो हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ ।
तौ अस को जग सुभट जेहि भय बस नावहिं माथ ॥
देव दनुज भूपति भट नाना ।
सम बल अधिक होउ बलबाना ॥
जो रन हमहिं प्रचारै कोऊ ।
लरहिं सुखेन कालु किन होऊ ॥
क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना ।
कुल कलंकु तेहि पाँवर जाना ॥
कहउँ सुभाउ न कुलहिं प्रशंसी ।
कालहु डरहिं न रन रघुवंसी ॥
बिप्रबंस कै असि प्रभुताई ।
अभय होइ जो तुम्हहिं डेराई ॥
सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के ।
उघरे पटल परसुधर मति के ॥

सत्य हमारे आचरण से सम्बन्ध रखता है और शील शिष्ट, संकोची तथा विनम्रतापूर्ण व्यवहार से शील वाणी को नियंत्रित रखता है ।

रामायण में चित्रकूट प्रसंग में शील के निर्माण के बड़े सुन्दर उदाहरण मिलते हैं । राम सत्यव्रती थे । बड़ी-से-बड़ी बाधाएँ उन्हें अपने पथ से डिगा सकने में समर्थ नहीं थीं, लेकिन अपने व्यवहार में उन्होंने लेशमात्र भी कटुता नहीं आने दी । गुरुमण्डली, परिजन, पुरजन और सेनासहित भरत राम को चित्रकूट से अयोध्या वापस लौटाने गये । भरत के त्यागयुक्त प्रेमपूर्ण दवाब से राम दृढ़निश्चयी होते हुए भी पूरी तरह से दबे । जिस परिस्थिति में वे वन को आये थे, उसके औचित्य का निर्णय वे भरत पर ही छोड़ देते हैं । गुरु वसिष्ठ से भरत के त्याग की प्रशंसा सुनकर उनका हृदय गद्‌गद् हो उठता है। इस अवसर पर भरत को सम्बोधित करते हुए वे अपनी दृढ़ निश्चयता और शील दोनों का निर्वाह कितने सुन्दर ढंग से करते हैं –

तात तुम्हहिं मैं जानउँ नीके ।
करौं काह असमंजस जीके ॥
राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी ।
तनु परिहरेहु प्रेम पन लागी ॥
तासु बचन मेटत मन सोचू ।
तेहि ते अधिक तुम्हार संकोचू ॥
ता पर गुरु मोहि आयसु दीन्हा ।
अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा ॥

इस अवसर पर भरत को पूरा अधिकार मिल जाता है । वे बहुत बड़े समाज को लेकर राम को अयोध्या वापस लेने के लिए पूरी योजना बना कर आये थे, यहाँ तक कि राजतिलक की सामग्री भी साथ थी । लेकिन शील से आवृत्त सत्य के फांस से भरत छूट नहीं सके । उनकी योजना बदल गई ।

अपनी व्यथा वेदना और इच्छा को भरत ने प्रकट तो किया, लेकिन अन्त में राम पर ही निर्णय को छोड़ दिया । राम ने भरत से संकोच त्याग कर मन की बात कहने को कहा तो भरत कहते हैं –

अब कृपाल मोहि सो मत भावा ।
सकुच स्वामि मन जाइ न पावा ॥
प्रभु पद सपथ कहउँ सति भाऊ ।
जग मंगल हित एक उपाऊ ॥
प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देव ।
सो सिर धरि धरि करहिं सबु मिटिहि अनट अवरेव ॥

राम और भरत दोनों सत्य का पालन कर रहे हैं लेकिन शील को त्याग कर नहीं । अपने सत्यपालन के औचित्य को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाँचने का दायित्व राम भरत पर छोड़ते हैं और भरत राम पर ।

सत्यपालन को हठवादिता से परे रखना शीलयुक्त आचरण होता है । रामायण के प्राय: समस्त प्रमुख पात्रों को इसी प्रकार के आदर्श आचरण से युक्त पाते हैं । महारानी सीता जी वनवासिनी वेश में राम के साथ वन में थीं । भरत के चित्रकूट आगमन के थोड़े समय पश्चात् ही महाराज जनक और माता सुनैना जी सहित जनकपुर का राजपरिवार भी चित्रकूट आ गया था । माता-पिता और नैहर के लोगों को अपने अति निकट आया देखकर पुत्री की स्वाभाविक इच्छा उनसे मिलने और साथ रहने की होती है। सीता में उसका होना अनुचित नहीं माना जा सकता । लेकिन चित्रकूट प्रसंग में सीता जी अपनी सासुओं की सेवा छोड़कर माता-पिता के डेरे में उस समय तक नहीं गईं जब तक स्वयं सुनैना जी ने माता कौशल्या के पास आकर उन्हें कुछ समय के लिए अपने डेरे में ले जाने को स्वीकृति प्राप्त न कर ली ।

अस कहि पग परि प्रेम अति सिय हित बिनय सुनाइ।
सिय समेत सिय मातु तब चली सुआयसु पाइ ॥

सीता माता-पिता के डेरे में जाकर सबसे यथायोग्य रूप से मिलीं । उनके पतिव्रत-धर्म पालन की उच्च स्थिति देखकर जनक जैसे धीर व्यक्ति भी पवित्र पुत्री स्नेह से गद्‌गद् हो उठते हैं और सीताजी की प्रशंसा करते हैं –

जनक राम गुरु आयसु पाई ।
चले थलहिं सिय देखी आई ॥
लीन्हि लाय उर जनक जानकी ।
पाहुनि पावन प्रेम प्रान की ॥
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू ।
भयउ भूप मनु मनहुँ पयागू ॥
मोह मगन मति नहिं बिदहे की ।
महिमा सिय रघुबर सनेह की ॥
तापस वेष जनक सीय देखी ।
भयउ प्रेम परितोषु विसेषी ॥
पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ ।
सुजस धवल जगु कह सब कोऊ ॥
पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई ।
सिख आसिष हित दीन्हि सुहाई ॥

इतने प्रेमपूर्ण वातावरण में भी सीता ने पिता के डेरे में रात्रि निवास अपनी साधना में बाधक माना और सासुओं के पास जाना ही उचित समझा, लेकिन उसे वे स्पष्ट रूप से माता-पिता से कह नहीं सकतीं –

कहति न सीय सकुचि मन माहीं ।
इहाँ बसब रजनी भल नाहीं ॥
लखि रुख रानि जनायउ राऊ ।
हृदयँ सराहत सीलु सुभाऊ ॥

अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहते हुए भी वाणी और आचरण में विनम्रता और कोमलता रखना सीताजी के शील स्वभाव का द्योतक था ।

अयोध्या और जनकपुर का राजपरिवार महीनों तक चित्रकूट में निवास करते हुए केवल कन्द-मूल पर निर्वाह कर रहा था । राम के लिए यह असहनीय परिस्थिति थी । वे नहीं चाहते कि अनिर्णीत अवस्था में उनके निमित्त सभी लोग वन के कष्टों को सहन करें । लेकिन हृदय की इच्छा का स्पष्ट रूप से बिना दूसरों की भावनाओं का आदर किये कह देना अशीलता थी । राम जैसे महापुरुष भला ऐसा कैसे कर सकते थे ? अन्त में बड़े संकोच के साथ राम इस बात को गुरु वशिष्ठ से निवेदन करके उचित निर्णय का दायित्व उन्हीं पर सौंप देते हैं –

गे नहाइ गुर पहिं रघुराई ।
वंदि चरन बोले रुख पाई ॥
साथ भरत पुर जन महतारी ।
सोक बिकल बनबास दुखारी ॥
सहित समाज राउ मिथिलेसू ।
बहुत दिवस भए सहत कलेसू ॥
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा ।
हित सबहीं कर रौरें हाथा ॥
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ ।
मुनि पुलके लखि सील सुभाऊ ॥

राम का संकेत सब को वापस अयोध्या और जनकपुर को भेजने की ओर था । इसी बात को उन्होंने अत्यन्त मर्यादित शब्दों में कहा था फिर भी अपने यहाँ से लोगों को विदा कर देने की बात स्वमुख से कहना मर्यादा के प्रतिकूल समझ कर राम ने बड़े भारी संकोच के साथ कहा । राम के इसी शीलयुक्त आचरण से वशिष्ठ पुलकित हो उठे । राम का 'शील' ही वह वशीकरण मन्त्र था जिससे वे सबको अपना बना लेते थे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुलकित होकर वशिष्ट जी जनक जी के पास जाते हैं और राम के इस व्यवहार की प्रशंसा करते हुए निर्णय का दायित्व् उन पर सौंपते हैं –

करिं प्रनामु तब रामु सिधाए ।
रिषि धरि धीर जनक पहिं आए ॥
राम बचन गुरु नृपहिं सुनाए ।
सील सनेह सुभायँ सुहाए ॥
महाराज अब कीजिअ सोई ।
सब कर धरम सहित हित होई ॥
ज्ञान निधान सुजान सुचि धरम धीर नरपाल ।
तुम्ह बिनु असमंजस समन को समरथ एहि काल॥

समस्या के समाधान में सर्वत्र शील का राज छाया हुआ दिखाई पड़ता है । सभी सामर्थ्यशाली लोग निर्णय का दायित्व दूसरे पर छोड़ते हैं । राम वशिष्ट पर, वशिष्ट जी जनक पर और फिर जनक भरत के मुँह से उचित बात कहलवाने में अपनी सफलता मानते हैं। वशिष्ठ के सहित सभी विद्वत् मण्डली को लेकर वे भरत के डेरे में गये –

समउ समुझि धरि धीरजु राजा ।
चले भरत पहिं सहित समाजा ॥

राम की सत्यनिष्ठा को बताते हुए वे उनके शील और स्नेहयुक्त स्वभाव को कहते हैं –

तात भरत कह तेरहुति राऊ ।
तुम्हहिं बिदित रघुबीर प्रभाऊ ॥
राम सत्यब्रत धरम रत सब कर सीलु सनेहु ।
संकट सहत सकोच बस कहिअ जो आयसु देहु ॥

निर्णय के लिए इतने मनीषी लोगों को अपनी ओर ताकते देखकर भरत का हृदय भर गया । राम के प्रति उनकी भक्ति तथा प्रेम और भी बढ़ा । वे तुरन्त कह देते हैं कि –

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ।
सेवा धरम कठिन जनु जाना ॥
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू ।
बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू ॥
राखि राम रुख धरमू बतु पराधीन मोहि जानि ।
सबके संमत सर्व हित करिअ पेमु पहिचान ॥

निर्णय का दायित्व राम से भरत तक पहुँचने का एक तारतम्य हम देखते हैं । लेकिन सबके एकत्रित हो जाने पर पुन: उसकी पुनरावृत्ति होती है । सब लोग राम के पास गये जनक और भरत की सम्मति जान लेने के बाद वशिष्ठ जी राम को अपना मत बताते हैं –

तात राम जस आयसु देहू ।
सो सबु करैं मोर मत एहू ॥

लेकिन फिर राम अपना निश्चय अपने मुँह से स्पष्ट रूप से न कह कर सभी से कहलवाते हैं –

सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी ।
बोले सत्य सरल मृदु बानी ॥
विद्यमान आपुनि मिथलेसू ।
मोर कहब सब भाँति भदेसू ॥
राउर राय रजायसु होई ।
राउरि सपथ सहिअ सिर सोई ॥

शीलयुक्त राम के आचरण ने उनके पक्ष को और सबल बना दिया । सभी उनके समर्थक हो गये –

राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत ।
सकल बिलोकत भरत मुखु बनइ न उतरु देत ॥

सभी भरत की ओर ताकने लगे क्योंकि उन्हीं के मुँह से निर्णय की घोषणा करवाना चाहते थे । भरत का हठ राम के शील के सामने निरस्त्र हो गया । वे अपने मुँह से राम के सत्य पालन का समर्थन करके वन में रहने के औचित्य को स्वीकार करते हैं –

राखा मोर दुलार गोसांई ।
अपने सील सुभायँ भलाई ॥
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई ।
स्वामि समाज सकोच बिहाई ॥
अबिनय बिनय जथा रुचि बानी ।
छमिहि देव अति आरति जानी ॥
सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि ।
आयसु देइअ देव अब सबहि सुधारी मोरि ॥

यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि राम के शीलयुक्त सत्य ने भरत के निश्चय को बदला । गुरु मण्डली और माता कौशल्या तथा जनक जैसे विवेकनिधि को अपने पक्ष में करके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दल-बल सहित भरत राम के निश्चय को बदलने गये थे। राम ने किसी की बात नहीं मानी, लेकिन कोई उनसे रुष्ट नहीं हुआ उल्टे उनके प्रति प्रेम, निष्ठा, अनुराग और हित भावना लेकर वापस लौटे। इस सम्पूर्ण परिवर्तन में कहीं रंचमात्र भी कटुता नहीं आई। इसका सारा श्रेय हम राम के शील युक्त व्यवहार को ही दे सकते हैं।

शील की शक्ति अपार है। शील से युक्त सत्य ही शोभा पाता है। इसीलिए गोस्वामी जी ने सत्य रूपी ध्वजा के लिए शील को पताका माना है।

बल और विवेक

संसार में जो शक्तिशाली है वही जीवित रह सकता है। गतिमान् सृष्टि में सभी वस्तुएँ अपनी गति से आगे बढ़ती हैं। जिसमें शक्ति होती है, वह दौड़ के आगे बढ़ पाता है और निर्बल दम तोड़ देता है। संसार में जीवित रहने, सुखी और समृद्धिशाली बनने तथा लौकिक और पारलौकिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बल की आवश्यकता है। निर्बल व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र पराधीन रहता है। उसे स्वाधीनता का आनन्द नहीं मिल पाता।

बल कई प्रकार के होते हैं। शारीरिक बल, नैतिक अथवा मनोबल और तपोबल आदि। सृष्टि की समस्त गतिविधि का आधार किसी न किसी प्रकार का बल ही है।

शारीरिक बल

शारीरिक बल सब बलों का आधार है। जो शरीर से निर्बल है उसकी सारी मनोकामनाएँ अधूरी रह जाती हैं। बलशाली को पुरुषों में सिंह की उपमा दी जाती है। यदि राम शारीरिक बल से सम्पन्न न होते तो विश्वामित्र जैसे परम तपस्वी मुनि अपनी रक्षा के लिए राजा दशरथ के पास उनकी याचना करने क्यों आते ?

असुर समूह सतावहिं मोही।
मैं जाचन आयउँ नृप तोही॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा।
निसिचर बध मैं होब सनाथा॥
देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अज्ञान।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कहँ इन्ह कहँ अति कल्यान॥

उनकी याचना इसलिए की गई थी क्योंकि –

पुरुष सिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन।
कृपासिंधु मति धीर अखिल विस्व कारन करन॥
अरुन नयन उर बहु बिसाला।
नील जलज तनु स्याम तमाला॥
कटि पट पीत कसें बर भाथा।
रुचिर चाप सायक दुहँ हाथा॥

राम लक्ष्मण का वीरोचित स्वरूप इस प्रकार का था। अपने अद्वितीय शारीरिक बल के आधार पर ही युवावस्था में उन्होंने समूह सहित ताड़का, मारीचि और सुबाहु जैसे निशाचर नायकों का पलक मारते ही प्राण हरण कर लिया।

जनकपुर में त्रिभुवन के वीरों और परशुराम तथा जनक से राम इसलिए समादृत और पूजित हुए क्योंकि अपनी भुजाओं के बल से उन्होंने अपौरुषेय कार्य करके दिखा दिया। उनके वीरोचित प्रदर्शन को वर्णन धनुष भंग के पश्चात् विवाह का सन्देश लाने वाले जनक के दूतों ने कितने सुन्दर ढंग से किया है –

तब नृप दूत निकट बैठारे।
मधुर मनोहर बचन उचारे॥
भैआ कहहु कुशल दोउ बारे।
तुम्ह नीके निज नयन निहारे॥
स्यामल गौर धरें धनु भाथा।
बय किसोर कौसिक मुनि साथा॥
पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ।
प्रेम बिबस पुनि पुनि कह राऊ॥
जा दिन ते मुनि गए लवाई।
तब तें आजु साँचि सुधि पाई॥
कहहु बिदेह कावनि बिधि जाने।
सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने॥
सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह सम धन्य न कोउ।
रामु लखनु जिनके तनय बिस्व विभूषन दोउ॥
पूछन जोगु न तनय तुम्हारे।
पुरुष सिंह तिहुँ पुर उजिआरे॥
जिन्ह के जस प्रताप के आगे।
ससि मलीन रबि सीतल लागे॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तिन्ह कहँ कहिउ नाथ किमि चीन्हे ।
देखिअ रबि कि दीप कर लीन्हे ॥
सीय स्वयंवर भूप अनेका ।
सुमिटे सुभट एक तें एका ॥
संभु सरासन काहु न टारा ।
हारे सकल बीर बरियारा ॥
तीन लोक महँ जे भट मानी ।
सब कै सकति संभु धनु भानी ॥
सकइ उठाइ सरासर मेरू ।
सोउ हियँ हारि गयऊ करि फेरू ॥
जेहि कौतुक सिव सैल उठाया ।
सोउ तेहि सभा पराभव पावा ॥
तहाँ राम रघुबंस मनि सुनिअ महा महिपाल ।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल ॥
सुनि सरोष भृगुनायक आए ।
बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाए ॥
देखि राम बलु निज धनु दीन्हा ।
करि बहु बिनय गवनु बन कीन्हा ॥
राजन राम अतुल बल जैसे ।
तेज निधान लखनु पुनि तैसे ॥
कंपहिं भूप बिलोकत जाके ।
जिमि गज हरि किसोर के ताके ॥
देव देखि तब बालक दोऊ ।
अब न आँखि तर आवत कोऊ ॥
दूत बचन रचना प्रिय लागी ।
प्रेम प्रताप बीर रस पागी ॥

राम लक्ष्मण के अतुल बल के उपर्युक्त वर्णन से यह भली प्रकार प्रकट होता है कि बलशाली सबसे स्वत: परिचित हो जाता है । उसका सम्मान और आदर सभी करते हैं,राम लक्ष्मण यदि बल सम्पन्न न होते तो भला उन्हें ऐसा सम्मानपूर्ण गौरव कैसे प्राप्त होता ?

बलशाली व्यक्ति, बलशाली समाज, बलशाली राष्ट्र ही संसार में अपनी स्थिति बनाये रखने में समर्थ हो सकता है। वीरभोग्या वसुन्धरा, वसुन्धरा का भोग वीर पुरुष ही करता है, निर्बल नहीं । अमित बल से सम्पन्न होने के कारण ही राम ने युवावस्था में ही दसों दिशाओं में ख्याति प्राप्त करनी प्रारम्भ की ।

बुद्धि से कितने ही उच्च वे क्यों न होते लेकिन शारीरिक दृष्टि से निर्बल होने पर वे वन में महाबली राक्षसों का सामना कैसे कर पाते ? ऐसी स्थिति में क्या उनकी सत्य साधना और पितृ-भक्ति सफल हो पाती ?

बालि को मारने और फिर केवल एक ही बाण से, की बात राम के मुख से सुनकर सुग्रीव को सन्देह होने लगा । बालि की वीरता की उसे पूरी जानकारी थी । उसने अपने बड़े भाई बालि को रावण के लिये छ: मास तक कोख में दबाये रखते देखा था । बड़े-बड़े राक्षसों और क्षत्रियों को बालि द्वारा पराजित होते हुए तो देखा ही था। बालि के भय से उसे सम्पूर्ण एशिया में भागते फिरना पड़ा । कोई भी उसकी सहायता न कर सका । पम्पापुर में केवल ऋषि शाप से बालि का प्रवेश नहीं हो पाता था इसीलिए सुग्रीव प्राण बचाये था । हनुमान और जामवन्त बालि की वीरता के आगे आँख भी न उठा सकते थे । उसी बालि को केवल एक बाण से मारना ? सुग्रीव को सन्देह होना स्वाभाविक था । वह राम से कहता है –

कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा ।
बालि महाबल अति रनधीरा ॥

सुग्रीव ने केवल कहा ही नहीं, राम के बल की परीक्षा के लिए उसने दुंदभि राक्षस का हड्डियों का विशाल ढेर और ताड़ के वृक्ष दिखा दिये । उसका संकेत था कि राम इन पर अपने बल का प्रदर्शन करके बालि से अधिक बलशाली होने का प्रमाण दें –

दुदुंभि अस्थि ताल देखराए ।
बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए ॥
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती ।
बालि वधब इन्ह भइ परतीती ॥
बार बार नावइ पद सीसा ।
प्रभुहिं जानि मन हरष कपीसा ॥

बलशाली के बल का परिचय मिलने पर उसके प्रति प्रेम होना स्वाभाविक था । वास्तव में राम अपने अमित बल के आधार पर ही प्रभु बने । रावण और कुम्भकरण का राम द्वारा बध, लक्ष्मण द्वारा इन्द्रजीत का बध आदि ऐसी घटनाएँ हैं जो शारीरिक बल के महत्व को प्रदर्शित करती हैं ।

हनुमान और अंगद का बल प्रदर्शन

पवन तनय महावीर हनुमान आर्य जाति द्वारा सदैव-सदैव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तक पूजे जाते रहेंगे। इस चिर सम्मान प्राप्ति का आधार उनका बलवान होना था। बानरी सेना अंगद, हनुमान और जामवंत के नेतृत्व में दक्षिण दिशा में सीता की खोज में चप्पा-चप्पा छान डालती है। अन्त में सागर तट पर पहुँच कर निराश होकर बैठ गई। सबके चेहरों पर उदासी है। उसी समय गीधराज जटायु का भाई सम्पाती आकर लंका की अशोक वाटिका में सीता के होने का पता बताता है। लेकिन वहाँ प्रश्न था शत योजन सागर लाँघने का –

जो नाघइ सत जोजन सागर।
करइ सो राम काज मति आगर॥

जिसमें शक्ति वही तो इतने बड़े अमानवीय पुरुषार्थ को कर दिखायेगा। बानर सेना के समस्त नायक अपने-अपने बल को तौल रहे हैं और सागर लांघने में हिचकते हैं –

निज निज बल सब काहू भाषा।
पार जाइ कर संसय राखा॥
जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा।
नहिं तन रहा प्रथम बल लेसा॥
जबहिं त्रिबिक्रम भए खरारी।
तब मैं तरुन रहेउँ बल भारी॥
बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ।
उभय धरी महँ दीन्हीं सात प्रदच्छिन धाइ॥
अंगद कहइ जाउँ मैं पारा।
जियँ संसय कछु फिरती बारा॥

पवनपुत्र हनुमान को उनके बल का स्मरण जामवन्त द्वारा दिलाया जाता है –

कहइ रीछ पति सुनु हनुमाना।
का चुप साधि रहेहु बलवाना॥
पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि विवेक विज्ञान निधाना॥

हनुमान सत् योजन समुद्र को लांघ गये। लंका में जाकर उन्होंने अपने बल का पूरा परिचय शत्रु को दे दिया। लंका के बड़े-बड़े राक्षस नायकों के देखते-देखते उन्होंने स्वर्णमयी लंका को भस्म कर डाला।

सीता का सन्देश भगवान के पास ले आये। रावण हनुमान को सामान्य कोटि का बन्दर समझ रहा था। अंगद ने उसके इस दृष्टिकोण को महावीर के बल की महिमा बताते हुए कितने सुन्दर ढंग से खण्डन किया है –

सेनं सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि।
कसरे सठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि॥

इतना महान् कार्य करने वाला सामान्य कपि नहीं हो सकता। वास्तव में बलशालीनता ने पवन पुत्र को रामभक्त और आर्य जाति के लिए पूज्य बनाया।

राम-रावण युद्ध में मेघनाद द्वारा लक्ष्मण के शक्तिबाण लगता है। वे मरणासन्न अवस्था में राम के पास लाये गये। शेषावतार की यह गति देखकर राम का व्याकुल होना स्वाभाविक था। लंका का सुषेन वैद्य बुलाया जाता है। वह बताता है कि हिमालय पर लगी औषधि संजीवनी बूँटी से लक्ष्मण के प्राण बच सकते हैं, लेकिन आधी रात तक वह आ जानी चाहिए। सभी लोग हनुमान की ओर आशाभरी दृष्टि से ताकते हैं। दिन भर के युद्ध से वे भी थके थे। लंका से हिमालय की दूरी २००० मील से अधिक थी, परन्तु वायु वेग से उड़कर हनुमान हिमालय पर पहुँचे। पहचानने में सन्देह उत्पन्न होने पर उस पर्वत शृंखला को ही उखाड़ कर आकाश मार्ग से चल देते हैं –

देखा सैल न औषध चीन्हा।
सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा॥

अपने अद्वितीय बल पराक्रम के आधार पर ही हनुमान पूज्य बने।

इसी प्रकार अंगद को भी हम पाते हैं। बानरी सेना में हनुमान के समान अंगद भी बलशाली माने जाते थे। सागर लांघ कर जब राम की बानरी सेना सुबेल पर्वत पर पहुँची तो पुनः किसी को दूत बनाकर रावण के पास भेजने की आवश्यकता अनुभव हुई। उस समय अंगद इस कार्य के लिए उपयुक्त ठहरा कर चुने गये।

अचलता और दृढ़ निश्चय के लिये अंगद के चरण प्रसिद्ध है। समस्त राक्षस नायकों के सामने रावण के कटु वचनों से क्रोधित होकर अपने बल का वर्णन करते हुए वे यहाँ तक कह जाते हैं –

दसमुख मैं न बसीठीं आयउँ।
अस बिचारि रघुबीर पठायउँ॥
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे।
सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे॥
नाहिं ते करि मुख भंजन तोरा।
लै जातेउँ सीतहि बर जोरा॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तोहि पटकि तब सेन हति चौपट करि तब गाउँ ।
तब जुबतिन्ह समेत सठ जनकसुतहि लै जाँउ ॥

केवल वाक्य चातुरी से ही अंगद ने अपने बल का प्रदर्शन नहीं किया वरन् उसका प्रत्यक्ष स्वरूप भी रावण के दरबारियों को दिखा दिया –

समुझि राम प्रताप कपि कोपा ।
सभा मांझ पन करि पद रोपा ॥
जो मम चरन सकसि सठ टारी ।
फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥

अपने अमित बल के आधार पर ही अंगद रावण-सभा के बड़े-बडे महारथियों का दर्प चूर्ण कर सके थे ।

शारीरिक बल के महत्व को किसी भी काल में घटाया नहीं जा सकता । हम यह कह सकते हैं कि यह युग प्रत्यक्ष लड़ाई का नहीं है । इसमें शारीरिक बल की उतनी अधिक आवश्यकता नहीं जितनी रामायण काल में थी । इस तर्क में कुछ सार हो सकता है लेकिन पूर्ण सत्य इसे नहीं मान सकते । दिन प्रतिदिन के कामों में शारीरिक बल की नितान्त आवश्यकता है । उसके महत्व की अपेक्षा नहीं की जा सकती । दुबले-पतले क्षीणकाय शरीर वाले लोग न तो अपना ही भला कर पाते हैं और न समाज का । शारीरिक बल समय और ब्रह्मचर्य से उत्पन्न होता है । असंयमी ब्रह्मचर्यहीन लोग बलहीन होते हैं ।

भारत की सन्तानों को इसी मार्ग का अनुसरण करके बलशाली बनना चाहिए तभी वे राम के सच्चे अनुयायी बन सकते हैं ।

आत्मबल अथवा मनोबल

इस बल का सम्बन्ध हमारे सदाचरण से बहुत अधिक है । सदाचारी व्यक्ति ही मनोबल का धनी हो सकता है । रामायण के प्राय: समस्त पात्र चरित्रबल के धनी थे । धनुष यज्ञ के अवसर पर जब प्रातः राम लक्ष्मण जनक वाटिका में पुष्प लेने जाते हैं तो गौरी-पूजन के लिए आई हुई जनकतनया को देख उनका मन अलौकिक प्रेम से सीता की ओर आकर्षित होता है । अपने स्वभाव के विपरीत अविवाहित कन्या के प्रति स्नेह दृष्टि से अवलोकन की अपनी क्रिया को स्वयं राम अनुचित ठहराते हुए लक्ष्मण से कहते हैं –

तात जनक तनया यह सोई ।
धनुष जग्य जेहि कारन होई ॥
जासु बिलोकि अनौकिक सोभा ।
सहज पुनीत मोर मनु छोभा ॥
सो सबु कारन जान विधाता ।
फरकहिं सुभग अंग सुन भ्राता ॥

अपने चरित्र की पवित्रता का प्रमाण देते हुये वे अपनी कुल की परम्परा का भी वर्णन करते हैं –

रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ ।
मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ ॥
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी ।
जेहिं सपनेहुँ परनारि न हेरी ॥
जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी ।
नहिं पावहिं परतिय मनु डीठी ॥
मंगल लहहिं न जिन्ह कै नाहीं ।
ते नरबर थोरे जग माहीं ॥

वास्तव में चरित्र के धनी व्यक्ति ही संसार में कुछ कर सकते हैं । रामायण के पात्रों की चारित्रिक पुनीतता ने ही उन्हें संसार के इतिहास का श्रेष्ठ पात्र और पूजनीय बनाया ।

तप बल

शरीर बल से भी अधिक शक्ति तपोबल में होती है। तपश्चर्या का अर्थ किसी विशेष उद्देश्य अथवा अभीष्ट की सिद्धि के लिए पूर्ण मनोयोग से क्रियाशील होना है। तपोबल की प्रशंसा रामायण के बालकाण्ड में पार्वती विवाह के प्रसंग में आई हैं –

मातु पितहि पुनि यह मत भावा ।
तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा ॥
तप बल रचइ प्रपंचु विधाता ।
तप बल बिष्नु सकल जग त्राता ॥
तप बल संभु करहिं संघारा ।
तप बल सेषु धरहि महि भारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भवानी ।
करहि जाइ तप अस जियँ जानी ॥

बलशाली व्यक्ति ही सामर्थ्यवान बनता है । असमर्थों की भला दुनिया में क्या पूछ ? जो शक्ति सम्पन्न है यदि कुछ अनुचित भी कर डाले तो उसे दोष नहीं लगता, लेकिन निर्बल तो अच्छा करने के बाद भी दोष का भागी बनता है –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो अहि सेज सयन हरि करहीं ।
बुध कुछ तिन्ह कर दोष न धरहीं ॥
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं ।
तिन्ह कहँ मन्द कहत कोउ नाहीं ॥
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई ।
सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ॥
समरथ कहुँ नहिं दोषु गोसाईं ।
रबि पावक सुरसरि की नाईं ॥

राम ने स्वयं चौदह वर्षों तक तपश्चर्यापूर्ण जीवन बिताया तभी तो वे आदर्श राज्य की स्थापना में सफल हो सके ।

कहने को हम स्वतंत्र है लेकिन वैयक्तिक, सामाजिक और राजनैतिक दृष्टि से हम शक्तिशाली नहीं हैं । यही कारण है कि कहीं चीन और कहीं पाकिस्तान हमारी भूमि हड़पने के लिए वक्रदृष्टि लगाये बैठे रहते हैं । शक्तिहीन नागरिकों और दुर्बल सेना से देश की स्वाधीनता की रक्षा नहीं की जा सकती ।

राम की उपासना शक्ति और बल की पूजा है । विजयादशमी का पर्व हमें पुनः अपने समाज और देश को शक्ति सम्पन्न बनाने की प्रेरणा देता है । वस्तुतः इसी मार्ग से हम मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की सच्ची पूजा कर सकते हैं ।

विवेक

जिस प्रकार धैर्य, शौर्य का तथा शील, सत्य का पूरक है, उसी प्रकार विवेक बल की शोभा बढ़ाता है । विवेकहीन बल को बर्बरता की संज्ञा दी जाती है । राजपूतों के शासन-काल में भारत के राजपूत राजाओं दिल्ली के चौहान, कन्नौज के परमार, मौहबा के आल्हा-ऊदल आदि के पास बल की कमी नहीं थी । राजपूतों की वीरता, उनका अदम्य उत्साह शत्रु सेना के सामने नतमस्तक न होने का स्वाभिमान एवं हँसते-हँसते प्राणोत्सर्ग की प्रबल इच्छा विश्व के इतिहास में बेमिसाल है। लेकिन भारत की यह अविजित शक्ति 'विवेक' के अभाव में आपसी कलह से नष्ट हो गई । परिणामतः वे भी नाश को प्राप्त हुए और बहुत शताब्दियों के लिए देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ गया । इतिहास के पिछले अनुभव हमें बताते हैं कि विवकेहीन बल क्रूरता, अज्ञानता, पराधीनता आदि का निमित्त बनता है ।

रामायण इस विषय में सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं ।

पवनपुत्र हनुमान अतुल बलशाली माने जाते थे । सुन्दरकाण्ड उनके बल-पुरुषार्थ का वर्णन करने वाला काण्ड है । भक्तगण इसका पारायण विशेष श्रद्धा से करते हैं । इस कांड के आरम्भ में ही सागरतट पर जामवन्त द्वारा स्मरण एवं प्रेरणा दिये जाने पर वीर हनुमान का वीरोचित बलशाली स्वरूप प्रकट होता है –

कनक बरन तन तेज बिराजा ।
मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा ॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा ।
लीलहिं लाघउँ जलनिधि खारा ॥
सहित सहाय रावनहिं मारी ।
आनउँ यहाँ त्रिकूट उपारी ॥

लेकिन सागर लांघ कर, रावण की स्वर्णमयी लंका को भस्म कर देना ही हनुमान का उद्देश्य नहीं हो सकता था । सीता का पता लगाना उनका लक्ष्य था जिसके लिये बल के साथ विवेक का सम्पुट होना आवश्यक था । इसीलिए जामवन्त ने उन्हें स्मरण दिलाया –

पवन तनय बल पवन समाना ।
बुधि विवेक विज्ञान निधाना ॥

वायु के समान तीव्र बेग से हनुमान सागर के ऊपर छलांग मार कर आकाश मार्ग से उड़ने लगे –

सिंधु तीर भूधर एक सुन्दर ।
कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
बार बार रघुबीर सँभारी ।
तरकेउ पवन तनय बल भारी ॥
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता ।
चलेउ सो गा पाताल तुरन्ता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना ।
एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥

लेकिन महान् कार्य के सम्पादन के लिए महान् बल के साथ महा विवेक की भी आवश्यकता होती है । राक्षस समूह के वध में देवताओं का विशेष स्वार्थ निहित था । उन्होंने ही मन्थरा की बुद्धि को सरस्वती देवी से प्रेरित कराकर कैकेई को राम विरोधी बतलाकर वरदान द्वारा राम को वन में भिजवाया, चित्रकूट में भरतागमन के अवसर पर ऐसी माया रची जिससे भरत के प्रेम के वशीभूत होने पर भी राम अयोध्या न लौट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सके। सीताहरण के पश्चात् निशाचर वध का कार्य और विकट हुआ।

हनुमान को लंका जाते उन्हीं देवताओं ने देखा और विचार करने लगे कि राम का यह कपि-दूत महान् बलशाली तो हैं लेकिन क्या विशेष विवेक भी उसके पास है ? क्योंकि लक्ष्य की सिद्धि तो विवेकयुक्त बल से होनी सम्भव है। हनुमान के विवेक की परीक्षा लेने के लिए सर्पों की माता सुरसा को भेज दिया –

जात पवन सुत देवन्ह देखा।
जानें कहुँ बल बुद्धि विसेषा॥
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता।
पठइन्हि आइ कही तेहि बाता॥

सुरसा आकर शत्रुतापूर्ण ढंग से हनुमान के सामने भयंकर बाधा के रूप में खड़ी हो गई और हनुमान को निगल जाने का स्वांग करने लगी –

'आज सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा।'

हनुमान पहले उसे सीधे तरीके से समझाते हैं और राम काज करने का अवसर चाहते हैं –

सुनत बचन कह पवन कुमारा॥
राम काज करि फिरि मैं आवौं।
सीता कइ सुधि प्रभुहिं सुनावौं॥
तब तव बदन पैठिहउँ आई।
सत्य कहउँ मोहि जान दे माई॥

लेकिन सुरसा का उद्देश्य तो हनुमान का खाना नहीं वरन् उनके विशेष बुद्धिबल की परीक्षा लेना था –

कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना।
ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना॥
जोजन भर तेहि बदन पसारा।
कपि तनु कीन्हि दुगुन बिस्तारा॥

सुरसा तो मायावी थी। अपने मुँह को बहुत बड़े क्षेत्र में बढ़ाती जाकर हनुमान को लक्ष्य की ओर बढ़ने में बाधा पहुँचाने लगी। लेकिन हनुमान भी अपना स्वरूप दूना करते गये –

जस जस सुरसा बदनु बढ़ाया।
तासु दून कपि रूप देखावा॥

अभी तक तो दोनों में बल के आधार पर नोंक-झोंक हो रही थी। लेकिन पहले ही कहा जा चुका है कि सुरसा का उद्देश्य हनुमान के विशेष बुद्धि बल की परीक्षा लेना था। इसलिए उसने –

सत जोजन तेहि आनन कीन्हा।
अति लघु रूप पवन सुत लीन्हा॥
वदन पइठ पुनि बाहेर आवा।
माँगी विदा ताहि सिरु नावा॥

सुरसा की परीक्षा में हनुमान विशेष बुद्धि से युक्त सिद्ध हो गये। अपनी चातुरी से उन्होंने उस पर विजय पा ली। सुरसा प्रसन्नता से उन्हें आशीर्वाद देकर सीता की खोज में सफल होने की भविष्यवाणी कर देती है –

मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा।
बुधि बल मरम तौर मैं पावा॥
राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान॥

लंका में हनुमान द्वारा सम्पादित कार्यों का अवलोकन कर हम देखते हैं कि बल के साथ विवेक की कितनी अधिक आवश्यकता थी। लंका के प्रथम द्वार पर लंकिनी को मुष्टि प्रहार करने में बल की आवश्यकता थी –

नाम लंकिनी एक निसिचरी।
सो कह चलोसि मोहि निंदरी॥
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा।
मोर अहार जहाँ लगि चोरा॥
मुठिका एक महा कपि हनी।
रुधिर बमत धरनी ढनमनी॥

परम वीर हनुमान बल को प्रधानता देते हुए आवेश में लंका की ओर जा रहे थे। लंका में कोई निर्बल जाति नहीं बसती थी। रावण का परिवार और सेनानायक सभी महासुभट थे। केवल बल का आधार लेकर उनसे जीतना सरल नहीं था। इसीलिए हनुमान के लंका प्रस्थान से ही उनका ध्यान विवेक की ओर आकर्षित करने के अनेक प्रयत्नों का वर्णन हम पाते हैं।

लंका में प्रवेश करने पर सीता का पता लगाने के लिए बल का नहीं चतुरता का अवलम्बन लेना था। इसलिए –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अति लघु रूप धरेउ हनुमाना ।
पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥

लंका के मन्दिर-मन्दिर में खोज करते हुए विभीषण के महल के समीप पहुँच कर शयन से जागने वाले विभीषण को राम नाम स्मरण करते हुए सुनकर तुरन्त अपनी विवेकशीलता से हनुमान जी ने अनुमान कर लिया कि इनसे हठपूर्वक मित्रता करने से हमारा काम बनेगा –

लंका निसिचर निकर निवासा ।
इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥
मन महुँ तरक करैं कपि लागा ।
तेही समय विभीषनु जागा ॥
राम नाम तेहि सुमिरन कीन्हा ।
हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥
एहि सन हठि करिहउँ पहचानी ।
साधु ते होइ न कारज हानी ॥

उनका अनुमान सही निकला । विभीषण द्वारा सीता के अशोक वाटिका में होने का पता लग गया, लेकिन वहाँ भी राम का सन्देश सीता की सुनने के लिए बल के स्थान पर, विवेक का आश्रय लेने की आवश्यकता थी । रावण के त्रास से प्राणान्त कर देने का निश्चय कर लेने वाली सीता जब अग्नि की चाह में अशोक वृक्ष की ओर ताकती हैं तभी वृक्ष पर दुबक कर बैठे हनुमान राम नाम अंकित मुद्रिका ऊपर से गिरा देते हैं –

सुनहि बिनय मम बिटप असोका ।
सत्य नाम करु हर मम सोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना ।
देहि अगिनि जनि करहिं निदाना ॥
कपि करि हृदय बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ॥

हनुमान सीता जी के लिए स्वयं अपरिचित थे । सहसा अपने को रामदूत कहकर प्रकट होने पर सीता उन्हें रावण का कोई मायावी अनुचर जानतीं । हनुमान ने दूसरे के मन की इस मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझा । इसीलिए सीता के मन में पहले अपने प्रति विश्वास जमाने के लिए ही हनुमान ने भयभीत और सशंकित सीता को राम-कथा सुनाना प्रारम्भ किया । यह बड़े उच्चकोटि की मनोवैज्ञानिक विधि थी जिसे केवल सामान्य बलशाली व्यक्ति नहीं समझा सकते –

सीता मन बिचार कर नाना ।
मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥
रामचन्द्र गुन बरनै लागा ।
सुनतहि सीता कर दुख भागा ॥
लागी सुनै श्रवन मन लाई ।
आदिहु ते सब कथा सुनाई ॥

रामकथा सुनकर सन्तुष्ट होने वाली सीता जब स्वयं कथा सुनाने वाले को अपने सम्मुख प्रकट होने की इच्छा करती है, हनुमान वृक्ष से नीचे उतरते हैं –

श्रवनामृत जेहिं कथा सुनाई ।
कहाँ सो प्रगट होत किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ ।
फिरि बैठी मन बिसमय भयऊ ॥

हनुमान जी अतुल बलशाली होने के साथ ही बुद्धिमान, विवेकशील और मनोवैज्ञानिक रहस्यों के पूर्ण ज्ञाता थे । तभी उन्हें सफलता मिली, केवल बल के अधार पर नहीं । जामवन्त ने इसी हेतु उन्हें कहा था –

पवन तनय बल पवन समाना ।
बुधि विवेक विज्ञान निधाना ॥

सुन्दरकाण्ड के प्रारम्भ में उनकी वन्दना की गई हैं जिसमें अतुल बलधाम के साथ पवनसुत को ज्ञानियों में अग्रणी बताया गया है –

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं ।
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥
सकलगुणनिधानं बानराणामधीशं ।
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातंनमामि ॥

"अतुल बल के धाम, सोने के पर्वत के समान कान्तियुक्त शरीर वाले, दैत्यरूपी वन के लिए अग्निरूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुणों के निधान, बानरों के स्वामी, श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त पवन पुत्र श्री हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूँ ।"

विवेकी होने के कारण ही उन्होंने अपने बल से अशोक वाटिका का विध्वन्स करके, राक्षस समूह के समस्त मनोरथों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को उलट कर उनके विनोद को सम्पूर्ण लंकावासियों के कष्ट में बदल दिया। जब हनुमान की पूँछ में जलाने के लिए वस्त्र व तेल-घृत लपेटा जा रहा था, तो धीरे-धीरे वे उसे बढ़ाते जा रहे थे। इधर लंकावासी मनोरंजन के लिए एकत्रित हो रहे थे। वस्त्र लपेटकर कपि को जलाने की प्रक्रिया उनके लिए एक कौतुक थी –

रहा न नगर वसन घृत तेला।
बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला॥
कौतुक कहँ आए पुरबासी।
मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी॥

लेकिन अपनी चतुरता से करोड़ों बुद्धिजीवियों को चक्कर में डाल कर लंका को भस्मसात करके पुरवासियों के मनोरंजन को दुर्भाग्य में परिवर्तित कर देने वाले हनुमान भला कैसे न विवेकी माने जाएँ –

पावक जरत देखि हनुमंता।
भयउ परम लघु रूप तुरन्ता॥
हरि प्रेरित तेहि अवसरु चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास॥
देह बिसाल परम हरुआई।
मन्दिर ते मन्दिर चढ़ि धाई॥
जरइ नगर भा लोग बिहाला।
झपट लपट बहु कोटि कराला॥
जारा नगरु निमिष एक माहीं।
एक विभीषण कर गृह नाहीं॥

विवेक का आश्रय ग्रहण करने के कारण हनुमान के बल की शोभा बढ़ी और प्रमुख शत्रु रावण तक ने राम सेना में सबसे अधिक बलशाली उन्हीं को बताया। अंगद से राम-सेना के प्रमुख वीरों का वर्णन करते हुए रावण कहता है –

तुम्हरे कटक मांझ सुनु अंगद।
मो सन भिरिहि कवन जोधा बद॥
तब प्रभु नारि विरह बलहीना।
अनुज तासु दुख दुखी मलीना॥
तुम्ह सुग्रीव कूल द्रुम दोऊ।
अनुज हमार भीरु अति सोऊ॥
जामवन्त मन्त्री अति बूढ़ा।
सो कि होइ अब समरारूढ़ा॥
सिल्पि कर्म जानहिं नल नीला।
है कपि एक महाबल सीला॥
आवा प्रथम नगरु जेहि जारा।
सुनत बचन कह बालि कुमारा॥

हनुमान यदि अपनी चतुरता से सभी निशाचर सुभटों को धोखा देकर लंका दहन करके समस्त नर-नारियों को भयभीत न कर देते तो सम्भवतः सागर लांघने के बाद भी रावण के मुँह से वे बलशाली न कहे जाते।

इसी प्रकार लक्ष्मण के शक्तिबाण लगने के अवसर पर जब हनुमान हिमालय पर्वत पर संजीवनी बूँटी लेने जाते हैं तो मार्ग में रावण कालनेमि को उन्हें छल कर मार डालने के लिए भेजता है। कालनेमि कपट वेष बनाकर हनुमान को मोहित करने का जी तोड़ प्रयास करता है –

उहाँ दूत एक मरमु जनावा।
रावनु कालनेमि गृह आवा॥
अस कहि चला रचेसि मग माया।
सर मन्दिर बर बाग बनाया॥
राच्छस कपट वेष तहँ सोहा।
मायापति दूतहि चह मोहा॥

लेकिन कालनेमि की कपटपूर्ण माया को हनुमान मकरी के सहयोग से समझ जाते हैं और उसके छल के पूर्व ही उसे मार डालते हैं –

मुनि न होइ यह निसिचर घोरा।
मानहु सत्य बचन कपि मोरा॥
अस कहि गई अपछरा जबहीं।
निसिचर निकट गयउ कपि तबहीं॥
कह कपि मुनि गुरुदछिना लेहू।
पाछें हमहिं मन्त्र तुम्ह देहू॥
सिर लंगूर लपेटि पछारा।
निज तनु प्रगटेसि मरती बारा॥

भगवान राम अद्वितीय बलशाली होने के साथ ही विवेकशीलता के परमधाम थे। सम्पूर्ण सद्गुण उनमें साकार हो गये थे। ऐसे महान सम्पन्न युगपुरुष के किसी एक गुण की ओर विशेष रूप से इंगित करना उचित प्रतीत नहीं होता। अंगद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को दूत पठाते समय जामवन्त जो भगवान राम के प्रति यही कहते हैं ।

सुनु सर्बग्य सकल उर बासी ।
बुधि बल तेज धर्म गुन रासी ॥

भगवान का सम्पूर्ण कार्य विवेक से सम्पन्न था । बल से अयोध्या पर शासन करने की क्षमता रखते हुए भी उन्होंने बल का सहारा न लेकर 'विवेक' के आश्रय से उसे त्यागना अपने लिये समझा ।

कैकेई के वरदान में उन्होंने सोच लिया था कि वन न जाने से पिता कलंकित होंगे, उनकी विमल कीर्ति पर धब्बा आयेगा और भाइयों में आपसी कलह का सूत्रपात होगा जिसके परिणाम स्वरूप राजसुख विषतुल्य कष्टकारक बनेगा । यह विवेक की बात थी । सबों के समझाने पर भी उन्होंने यही किया और उसका परिणाम भी उत्तम निकला ।

चौदह वर्ष के वनवासी जीवन में यदि उन्होंने बल के साथ विवेक का आश्रय न लिया होता तो वे इतनी महान सफलता के अधिकारी न बन पाते ।

रामायण की शिक्षा है कि मनुष्य को विवेकशील बनना चाहिए । विवेक के अभाव में हमारा बल पुरुषार्थ सब व्यर्थ और हानिकारक सिद्ध हो सकता है। बल तथा विवेक को रथ के घोड़ों की उपमा इसीलिए दी गई है कि जिस प्रकार घोड़े रथ को बढ़ाते हैं बल और विवेक का अवलम्बन लेकर हम सब अपनी उन्नति और नवनिर्माण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। भगवान राम ने इन्हीं दोनों का सहारा लेकर अवध के राज्य को विश्व इतिहास का प्रसिद्ध साम्राज्य बनाया । तीनों भाइयों सहित स्वयं आदर्श सम्राट बने और आर्य संस्कृति की ध्वजा को उत्तर भारत से सुदूर दक्षिण तक ही नहीं लंका सहित हिन्दमहासागर के अनेक द्वीपों और महाद्वीपों में फैलाया । वृहत्तर भारत की संरचना का श्रीगणेश भगवान राम के कर-कमलों से ही हुआ था ।

समय भले ही बदल जावे लेकिन मान्यताएँ एवं नीतियाँ अपरिवर्तित होती हैं । वर्तमान में भी हमें इन गुणों को अपने राष्ट्रीय तथा सामाजिक जीवन के सुविकास का आधार बनाना है ।

दम तथा परहित भावना

जोश के साथ होश रखना 'दम' हैं । दम का अर्थ दमन करना अर्थात् अपनी शक्तियों को अपव्यय होने से रोकना हैं । बलशाली व्यक्ति को जिस प्रकार विवेकशीलता की आवश्यकता है उसी प्रकार दम की भी । विवेकशीलता का सम्बन्ध हमारे विचारों से हैं और 'दम' उसका व्यावहारिक, क्रियात्मक रूप है । विचार जब तक क्रिया का रूप धारण नहीं करते, वे व्यर्थ है । उत्तम विचारों को उत्तम कार्यों में परिवर्तित कर देने पर ही सुमनोरथों की सिद्धि सम्भव है । भगवान श्रीराम महाबली और परम विवेकी थे । साथ ही सुअवसर आने पर आपसी महान् शक्तियों को नियन्त्रण में रखने की अद्भुत शक्ति उनमें थी ।

जनकपुर में शिव-धनुष को भंग करके उन्होंने अपने से पूर्व ख्याति प्राप्त महारथियों रावण, वाणासुर, सहस्रबाहु आदि का दर्प चूर किया था । वे त्रिभुवन विजेता थे । अपने शील स्वभाव से वे समस्त अवधवासियों को प्राणों से भी अधिक प्यारे थे। लेकिन उन्हों राम के राज्याभिषेक में जब कैकेई के स्वार्थपूर्ण वरदान से बाधा पड़ी तो राम केवल चुप रह कर अपने स्वरूप और अधिकार को प्राप्त कर सकते थे । लक्ष्मण को विमाता कैकेई के कुटिलतापूर्ण कुचक्र का जैसे ही पता चला उन्होंने अवध को उलट-पलट कर रख देने और बल के आधार पर राम को अवध के राज्य-सिंहासन पर बिठाने का प्रस्ताव किया था । कैकेई और मन्थरा को छोड़ कर अवध का कोई भी प्राणी राम के विरुद्ध नहीं था । राम की चुप्पी मात्र पर सब लोग राम के हित में सक्रिय हो सकते थे लेकिन इस विषम दुविधापूर्ण कसौटी के अवसर पर राम अभूतपूर्व ढंग से शान्त बने रहे। अपने आवेश, उद्वेगों को खून की घूँट की तरह पी गये । लक्ष्मण के क्रोध को शान्त किया और चलते-चलते पुरवासियों से हाथ जोड़ कर राजा तथा रानी के विरुद्ध कोई भी अशिष्ट व्यवहार करने के लिए मना करते गये । त्रिभुवन की राज्यलक्ष्मी के सुखोपभोग की ओर उन्मुख राम बिना किसी प्रतिक्रिया के वन के कष्टों की ओर मुड़ गये । उनके आगे की थाली उठा ली गई थी लेकिन किसी प्रकार की प्रतिक्रिया या विकलता उन्होंने प्रकट नहीं की । 'दमन' का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है ? उनके तनिक से संकेत पर अवध में अनर्थ हो सकता था । लेकिन स्वयं राम ने उसे होने से रोका । अपनी सारी व्यवस्था क्षण मात्र में बदल डाली । आभूषणों और अलंकारों से सुसज्जित राम सब कुछ त्याग कर तुरन्त वनवासी बन गये —

राम तुरत मुनि वेषु बनाई ।
चले जनक जननिहि सिरु नाई ॥
सजि बनु साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत ।
बन्दि विप्र गुरु चरन प्रभु चले करि सबहिं अचेत ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुचित और अत्याचार को अपनी आँखों के सामने होते देख अपने पर निय न्त्रण रखना बहुत ही कठिन होता है। कोई जितेन्द्रिय पुरुष ही ऐसा कर सकता है।

युवराज राम को वनवासी वेष में पैदल ही वन की ओर जाते देखकर अयोध्या का शोकाकुल जन-समुदाय समुद्र के समान उमड़ कर राजपथ के दोनों ओर खड़ा था। समस्त नर-नारियों के नेत्रों से अश्रुधारा अविरल गति से बह रही थी। उन सबका हृदय दु:खपूर्ण क्रोध से धधक रहा था। पता नहीं उस समय वे क्या कर डालते। राम ने अपनी अक्रोधपूर्ण शीतल वाणी से सबके क्रोध पर नियंन्त्रण लगा दिया –

निकसि बसिष्ठ द्वार भए ठाढे ।
देखे लोग बिरह दब दाढ़े ॥
कहि प्रिय बचन सकल समुझाए ।
बिप्र बृन्द रघुबीर बोलाए ॥
गुरु सन कहि बरषासन दीन्हे ।
आदर दान बिनय बस कीन्हे ॥
जाचक दान मान सन्तोषे ।
मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
बारहि बार जोरि जुग पानी ।
कहत राम सब सन मृदु बानी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ।
जेहि ते रहैं भुआलु सुखारी ॥
मातु सकल मोरे बिरहँ जेहि न होहिं दुख दीन।
सोइ उपाय तुम्ह करेहु सब पुरुजन परम प्रबीन॥

ऐसा राम ने केवल इसलिए किया था ताकि कैकेई और महाराज के प्रति कोई अशिष्ट घटना न घट सके। यह था राम का 'दंम' 'नियंन्त्रण' जो इतिहास के पन्नों पर अपनी मिसाल नहीं रखता।

सुमन्त अवध के प्रधानमंत्री और प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनका सम्मान कम नहीं था। राम भी उन्हें पिता तुल्य आदर देते थे। गंगातट पर उनसे भी राम अवध में किसी प्रकार का अनिष्ट न होने देने के लिए सतर्क रहने का आग्रह करते हैं।

तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरे ।
बिनती करउँ तात कर जोरे ॥
सब बिधि सोई कर्तव्य तुम्हारे ।
दुख न पाव पितु सोच हमारे ॥

इसी प्रकार जब सेना और प्रजा की अपार भीड़ लिए हुए भरत चित्रकूट में राम को मनाने के लिए प्रवेश करते हैं तो अपार जनसमुदाय घोड़े-हाथियों व रथों की टापों से चित्रकूट का शांन्त वातावरण अत्यन्त कोलाहलपूर्ण बन जाता है। सेना के आगमन से पशु-पक्षी भागने लगते हैं, और सब विकल होकर प्रभु के आश्रम की ओर रक्षा के लिए भागते हैं –

सनमानि सुर मुनि बंदि बैठि उतर दिसि देखत भए ।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रमगए ॥
तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे ।
सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे ॥
सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर ।
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥

बहुरि सोच बस भे सिय रवनू ।
कारन कवन भरत आगवनू ॥
एक आइ अस कहा बहोरी ।
सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहिं भा अति सोचू ।
इत पितु बच इत बन्धु सकोचू ॥

सेना सहित भरतागमन के समाचार से राम को भरत की नीयत पर संदेह होना स्वाभाविक था, लेकिन फिर भी उनका मन भरत के विरुद्ध शस्त्र ग्रहण करने को नहीं होता है। भरत को निमित्त बनाकर यद्यपि इतना बड़ा उत्पात हो गया, लेकिन राम के विशाल हृदय ने भरत की नीयत पर कभी शंका न की।

भरत सुभाउ समुझि मन माही ।
प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं ॥
समाधान तब भा यह जाने ।
भरत कहे महुँ साधु सयाने ॥

ऐसे अवसर पर लक्ष्मण अपने पर नियन्त्रण रखने में असफल हो जाते हैं। भगवान राम को दुविधा में देखकर उनका हृदय भरत को उचित दण्ड देने के लिए तत्पर हो गया –

लखन लखेउ प्रभु हृदयँ खभारू ।
कहत समय सम नीति बिचारू ॥
बिनु पूँछे कछु कहउँ गोसाईं ।
सेवकु समयँ ढीठ ढिठाईं ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान।
सब पर प्रीति प्रतीति जियँ जानिअ आपु समान॥
बिषई जीव पाइ प्रभुताई ।
मूढ़ मोह बस होहिं जनाई ॥
भरतु नीति रत साधु सुजाना ।
प्रभु पद प्रेमु सकल जग जाना ॥
तेऊ आजु राज पद पाई ।
चले धरम मरजाद मेटाई ॥
कुटिल कुबन्धु कुअवसरु ताकी ।
जानि राम वनवास एकाकी ॥
करि कुमन्त्रु मन साजि समाजू ।
आए करैं अकंटक राजू ॥
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई ।
आए दल बटोरि दोउ भाई ॥
जो जिय होति न कपट कुचाली ।
केहि सोहाति रथ बाजि गजाली ॥

राम ने तो अपने दुविधापूर्ण विचारों को भरत को साधु स्वीकार करके शान्त कर लिया, लेकिन लक्ष्मण के मन में जैसे ही उपरोक्त विचार आये वे नीति भूल गये। युद्ध का रस जागृत हो उठा –

एतना कहत नीति रस भूला ।
रन रस बिटपु पुलक मिस फूला ॥
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी ।
बोले सत्य सहज बलु भाषी ॥
अनुचित नाथ न मानव मोरा ।
भरत हमहिं उपचार न थोरा ॥
कहँ लगि सहिउ रहिअ मन मारे ।
नाथ साथ धनु हाथ हमारे ॥
छत्रि जाति रघुकुल जनम राम अनुज जग जान।
लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ॥
उठि कर जोरि रजायसु माँगा ।
मनहुँ बीर रस सोवत जागा ॥
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा ।
साजि सरासनु सायकु हाथा ॥
आजु राम सेवक जसु लेऊँ ।
भरतहिं समर सिखावन देऊँ ॥
राम निरादर कर फलु पाई ।
सोवहु समर सेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकल समाजू ।
प्रगट करऊँ रिस पाछिल आजू ।
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू ।
लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसेहि भरतहिं सेन समेता ।
सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥
जो सहाय कर सँकरु आई ।
तौ मारउँ रन राम दोहाई ॥
अति सरोष भाखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान।
सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान ॥

राम-वनगमन की घटना के दिन से आज तक अपने रोष को लक्ष्मण राम के डर के मारे रोके रहें लेकिन अब वह असहनीय हो गया। राम की शपथ लेकर वे दोनों भाइयों को मारने चल दिये। राम के 'दमशीलता' के महत्व को यही आँका जा सकता है कि यदि वे लक्ष्मण को न रोकते तो सम्भवत: अर्थ का अनर्थ हो जाता। स्नेही भरत या तो मार डाले जाते या घायल हो जाते। तब सम्पूर्ण प्रेम कटुता में बदल जाता। लेकिन एक जितेन्द्रिय और उद्वेगरहित राम ने पुन: इस भारी अनर्थ से सबको बचा लिया। लक्ष्मण को समझाते हुए राम कितनी सुन्दर बात कह कर उन्हें भी औचित्य का ज्ञान करा शान्त कर देते हैं। वीरता प्रकट करने का यह अवसर नहीं था –

कही तात तुम्ह नीति सुहाई ।
सब तें कठिन राजमदु भाई ॥
जो अचँवत नृप मातहिं तेई ।
नाहिन साधु सभा जेहिं सेई ॥
सुनहु लखन भल भरत सरीरा ।
बिधि प्रपंच महँ सुना न दीसा ॥
भरतहिं होइ न राजमदु बिधि हरिहर पद पाइ ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ॥

रामायण के उपरोक्त प्रसंग दमशीलता की महत्ता को प्रकट करते हुए मनुष्य को बलशाली और विवेकी बनने के साथ अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्ति और सामर्थ्य का अनुचित ढंग से प्रयोग न करने के लिए रोकते हैं। काश ! हम लोग ऐसा कर सकते तो हमारी सीमित शक्ति, साधन और सामर्थ्य समाज और देश के उत्थान के लिए पर्याप्त होते। हमें दूसरों का मुँह न ताकना पड़ता।

शक्ति के सदुपयोग और दुरुपयोग पर हमारी सफलता तथा निष्फलता निर्भर करती है। राम ने अपनी शूरता का प्रदर्शन केवल वहाँ किया जहाँ उसके प्रदर्शन का औचित्य था, जैसे धुनष भंग के अवसर पर, यज्ञ-रक्षा के समय, बालि-बध एवं राक्षसों के नाश के लिए लेकिन वहाँ शक्ति प्रदर्शन का औचित्य नहीं था वहाँ उन्होंने अपने धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने की चेष्टा तक न की। धनुष-भंग के पश्चात् बार-बार परशुराम ने उन्हें आवेश दिलाया, लेकिन वे विनम्र ही बने रहे, अपनी युक्ति से उन्हें प्रभावित किया। पुष्टि के लिए कह भी दिया –

सुर महिसुर हरिजन अरु गाई।
हमरे कुल इन्ह पर न सुराई॥
जेहि रिस जाइ करिअ सोई स्वामी।
मोहि जानिउ आपन अनुगामी॥
प्रभुहि सेवकहि समर कस तजहु बिप्रवर रोसु।
बेषु बिलोकें कहेसि कछु बालक हू नहिं दोसु॥

अन्त में बहुत प्रकार से परशुराम जी द्वारा आवेश दिलाये जाने पर उन्होंने केवल इतना कहा –

हमहि तुम्हहि सरिबरि कस नाथा।
कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा॥
जो हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ अस को जग सुभट जेहि भयबस नावहि माथ॥
कहउँ सुभाउ न कुलहि प्रशंसी।
कालहु डरहिं न रन रघुबंसी॥
बिप्र बंस कै असि प्रभुताई।
अभय होइ जो तुम्हहिं डेराई॥

विषम से विषमतर परिस्थिति आ जाने पर भी राम ने कभी अपने परिवार के लोगों पर बल-प्रदर्शन करने की नहीं सोची। उनका धनुष अत्याचारियों, असुरों और निशाचरों के बध के लिए उठता था, सज्जनों के सामने तो उनके हाथ ही जुड़ते थे। 'दम' का सच्चा स्वरूप यही है।

परहित भावना

विकास पथ पर सफलता की ओर जीवन रूपी रथ को बढ़ाने वाले चार घोड़ों में से एक 'परहित भावना' है। सबके हित में अपना कल्याण देखने की वृत्ति परहित भावना है। इसका विपरीत अवगुण स्वार्थ माना जाता है। अपने ही लाभ की बात सोचने वाला स्वार्थी मनुष्य बड़े से बड़ा विद्वान् अथवा साधन सम्पन्न क्यों न हो उसे समाज में आदर, प्रतिष्ठा और सम्मान नहीं प्राप्त हो सकता। परमार्थ एक बहुत बड़ा सद्गुण है। दूसरों के हित में रत रहने वाला प्राणी ही सच्चे अर्थों में मनुष्य, मानव और महामानव कहलाने का अधिकारी बनता है।

उत्तरकांड में भरत के पूछने पर संत और असंत के लक्षण बताते हुए श्री रामचन्द्र जी ने बताया था –

परहित सरसि धर्म नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई॥
निर्भय सकल पुरान वेद कर।
कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर॥

समस्त धर्मों का सार परहित भावना है और दूसरों को पीड़ा पहुँचाने वाला व्यक्ति भले ही वह जप-तप, पूजा-पाठ बहुत अधिक करे, सच्चे अर्थों में धार्मिक कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता। इन्हीं को असंत कहा गया है –

परद्रोही परदार रत परधन पर अपवाद।
ते नर पाँवर पापमय देह धरैं मनुजाद॥
लोभइ ओढ़न लोभइ डासन।
सिस्नोदर पर जमपुर त्रासन॥
काहू की जो सुनहिं बड़ाई।
स्वास लेहिं जो जूड़ी आई॥
बिप्रद्रोह परद्रोह विसेषा।
दम्भ कपट जियँ धरे सुवेषा॥

ऐसे स्वार्थी लोगों की दुर्दशा बताते हुऐ आगे कहा गया है –

नर सरीर धरि जे परपीरा।
करहिं ते सहहिं महा भवभीरा॥

सम्पूर्ण रामचरित्र 'परहित भावना' पर आधारित है। ईश्वर का अवतार ही सज्जनों का त्राण करने और दुष्टों का दमन करने के लिए होता है –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब जब होइ धरम की हानी ।
बाढ़हिं असुर महा अभिमानी ॥
तब तब धरि प्रभु मनुज सरीरा ।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

यदि पूछा जाए कि राम वन को क्यों गये ? तो यही उत्तर निकलेगा कि देवताओं का कार्य सम्पादन करने के लिए। सरस्वती देवी ने मन्थरा की बुद्धि फेर कर राम को वन भिजवाया । राम के राज्याभिषेक की तैयारी देख कर देवगण घबड़ा गये थे –

सकल कहहिं कब होइहि काली ।
बिघन मनावहिं देव कुचाली ॥
तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा ।
चोरहि चंदिनि राति न भावा ॥
सारद बोलि बिनय सुर करहीं ।
बारहिं बार पाय लै परहीं ॥
विपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आज ।
रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुर काज ॥

अपने व्यवहार में राम ने कभी और कहीं भी स्वार्थ को नहीं आने दिया । बालि का बध करके सुग्रीव को राजा और अंगद को युवराज बनाया । रावण का बध कर स्वर्णमयी लंका का स्वामी विभीषण को बनाया । लंका अथवा किष्किन्धा का एक पैसा भी अवध ले जाना राम के महापाप माना था । भरत की दशा का स्मरण कर शीघ्र अयोध्या पहुंचने की अभिलाषा से पुष्पक विमान का आश्रय तो उन्होंने लिया लेकिन अवध की भूमि पर उतरते ही प्रथम आदेश पुष्पक विमान को कुबेर के पास जाने का होता है –

उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहिं तुम्ह कुबेर पहिं जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो हरषु बिरह अति ताहु ॥

सज्जनों का स्वाभाविक कर्म परोपकार होता है ।

पर उपकार बचन मन काया ।
संत सहज सुभाउ खगराया ॥
संत सहहिं दुख परहित लागी ।
पर दुख हेतु असंत अभागी ॥

परोपकारी व्यक्ति की सम्पत्ति, विद्या ,परिवार सभी शोभा पाते हैं । परोपकार जीवन का श्रेष्ठतम् लक्ष्य है । किष्किन्धाकांड में वर्षा ऋतु का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान राम से कहलवाया है कि वर्षा ऋतु में हरी भरी धरती वैसे ही शोभा पाती है जैसे परोपकारी की सम्पत्ति –

ससि पम्पन्न सोह महि कैसी ।
उपकारी कै सम्पति जैसी ॥

परहित एक ऐसा व्यापार है जिसमे घाटे की सम्भावना ही नहीं दूसरे के हित में स्वार्थ और छल रहित होकर लगाया गया, श्रम साधन, सम्पत्ति सब अनेक गुना लाभ पहुँचाते हैं। इसीलिए 'परहित भावना' को विजय रथ का घोड़ा माना गया है । समाज की सामूहिक व्यवस्था को सुसंचालित करने के लिए परहित भावना से प्रेरित होकर कार्यरत होने की परमावश्यकता है ।

बिप्र धेनु सुर सन्त हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तन माया गुन गो पार ॥

क्षमा तथा दया

रथ के घोड़े यदि रथ में जुते न हों तो वे अलग भाग जायेंगे और रथ पड़ा रह जायेगा । बल, विवेक, दम तथा परहित-भावना को विजय-रथ से जोड़ने के लिए रस्सियों की भी आवश्यकता होती है । वैसे ही बल और विवेक की शोभा क्षमा से हैं और दम तथा परिहत-भावना कृपा रूपी फल से सुशोभित होते हैं ।

वास्तव में क्षमाशीलता बलशाली को ही शोभा देती है। जो निर्बल है वह भला दूसरों को क्या क्षमा करेगा ?

चित्रकूट में माता जानकी के साथ स्फटिक शिला पर बैठे हुए भगवान राम से इन्द्रसुत जयन्त ने अशिष्टता की । सीता के शरीर पर चौंच से प्रहार कर भागा । बल सम्पन्न राम ने सीक का बाण मन्त्रों से प्रेरित करके उसके अभिमान को चूर कर दिया –

सुरपति सुत धरि बायस वेषा ।
सठ चाहिय रघुपति बल देखा ॥
सीता चरन चोंच हति भागा ।
मूढ़ मन्दमति कारन कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना ।
सींक धनुष सायक संधाना ॥
प्रेरित मन्त्र ब्रह्मसर धावा ।
चला भाजि बायस भय पावा ॥
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राम बिमुख राखा तेहि नाहीं ॥
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका ।
फिरा श्रमित व्याकुल भय सोका ॥
काहू बैठन कहा न ओही ।
राखि को सकइ राम कर द्रोही ॥
नारद देखा बिकल जयंता ।
लागि दया कोमल चित संता ॥
पठवा तुरत राम पहिं ताही ।
कहेसि पुकारि प्रनत हित पाही ॥
आतुर सभय गहेसि पद जाई ।
त्राहि त्राहि दयालु रघुराई ॥
निज कृत कर्म जनित फल पायउँ ।
अब प्रभु पाहि सरन तकि आयउँ ॥
सुनि कृपाल अति आरत बानी ।
एक नयन करि तजा भवानी ॥
कीन्हि मोह बस द्रोह जद्यपि तेहि कर बध उचित।
प्रभु छाँड़ेउ करि छोह को कृपाल रघुबीर सम ॥

राम बलशाली थे। दुष्टता करने वाले जयन्त की एक आँख फोड़ कर उन्होंने उसे जीवनदान दे दिया। उनकी इस क्षमा की सर्वत्र ख्याति है। यदि वे दुर्बल होते तो चाहे जीवनदान भी दे देते पर कोई प्रशंसा न होती। साथ ही यह भी सिद्ध है कि बलशाली को निर्दयी और क्रूर न होकर क्षमाशील बनना चाहिये। इससे उसकी ख्याति बढ़ती है।

अपार वानरी सेना सहित राम ने लंका की ओर प्रस्थान किया। गगनचुम्बी सागर को सेना सहित पार करना एक बड़ी समस्या थी। राम ने विभीषण से परामर्श करके सागर से ही पार जाने का उपाय पूछने का निश्चय किया –

अस कहि प्रभु अनुजहिं समुझाई ।
सिंधु समीप गए रघुराई ॥
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई ।
बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥

तीन दिन तक धरना देने के बाद राम का अपने मनोरथों में सिद्धि नहीं मिली। तब उनका वीरोचित क्रोध उभर पड़ा और वे समुद्र को अपने आग्नेयास्त्रों से सोख लेने को तत्पर हो गये –

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥
लछिमन बान सरासन आनू ।
सोषों बारिधि बिसिख कृसानू ॥

राम के पौरुष को देखकर सागर भयभीत होकर उनके सामने आया और अनुनय-विनय करने लगा। तब भगवान ने उसे क्षमा कर दिया। क्षमा वीरों की शोभा है। वह ऐसी भावना है जो शक्तिशाली नैतिक और भावनापूर्ण नियन्त्रण रखती है। लेकिन क्षमा के साथ विवेक और परहित भावना दोनों का होना आवश्यक है। विवेक न होने से क्षमा का रूप विकृत होगा। विवेकहीन बलशाली व्यक्ति की क्षमा उसकी मूर्खता सिद्ध होकर उसी के लिए घातक बनेगी। शत्रु उसका अनुचित लाभ लेगा। जैसा बीस बार पृथ्वीराज द्वारा गौरी को क्षमा का दुष्परिणाम निकला। उसी प्रकार परहित भावना के अभाव में क्षमा निर्दयता और बर्बरता का रूप ग्रहण करेगी।

कृपा

अपराधी के अपराध के प्रति शक्ति रखते हुए भी दण्ड न देना या बदला न लेकर उसे माफ कर देना क्षमा है। लेकिन कृपा इससे भिन्न है। निर्बल अथवा सुपात्र को अपनी शक्ति से ऊँचे उठाना या उनके कष्टों व दुःखों को दूर करना कृपा है।

कृपा का सम्बन्ध हमारी नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों से अधिक है। ऋषियों, मुनियों, महापुरुषों और गुरुजनों के द्वारा ही 'कृपा' हो सकनी सम्भव है।

ईश्वर को कृपालु कहा गया है। वह सब पर कृपा करता है। संसार में अपनी शक्तियों से पूरी तरह से प्रयत्न करने के बाद भी ईश्वर की कृपा के बिना सफलता मिलना सम्भव नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है –

मति कीरति गति भूति भलाई ।
जब जेहि जतन जहाँ जेहि पाई ॥
सो जानव सतसंग प्रभाऊ ।
लोकहु वेद न आन उपाऊ ॥
बिनु सतसंग विवेक न होई ।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥

भगवत कृपा होने पर ही मनुष्य में सद्बुद्धि का संचार होता है, तब वह अच्छे व्यक्तियों की संगति की इच्छा करता है और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिणामस्वरूप उसे लौकिक और पारलौकिक उपलब्धियाँ मिलती हैं। जो व्यक्ति सबके प्रति हित की भावना रखता है, कृपालुता की शक्ति उसमें प्रस्फुटित होती है। उसकी दृष्टि, कर, चरण, वाणी सब में विशेष प्रकार की शक्ति उत्पन्न हो जाती है। युवावस्था से राम ने आध्यात्मिक एवं नैतिक रूप से अपने को शक्ति सम्पन्न बनाने की साधना की थी। इसीलिए एक चक्रवर्ती सम्राट के रूप में उनकी जितनी प्रतिष्ठा है इससे कहीं अधिक व आध्यात्मिकता तथा धार्मिक के रूप में अपने समय के उच्चकोटि के ऋषियों, मुनियों और सन्तों द्वारा समाहुत होते रहें हैं। इसका कारण यही था कि वे प्राणीमात्र के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहने लगे थे। कुमारावस्था में ही उनकी क्रियाशीलता इसी दिशा में लगने लगी थी –

जेहि बिधि सुखी होंइ सब लोगा।
करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा॥

यही राम अपने पुनीत आचरण से समस्त नागरिकों को प्रजा को प्राणों से भी अधिक प्यारे बन गये थे –

कौसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल।
प्राणहु ते प्रिय लागहिं सब कहुँ राम कृपाल॥

ज्यों-ज्यों वे बड़े हुए परहित भावना की शक्ति और सक्रिय हुई। उन्होंने अपने समस्त जीवन, सुख, वैभव को देव-कार्यों के लिए समर्पित कर दिया। लाड़ प्यार से पाले हुए महाबली राम परमार्थ अथवा देव कार्यों के लिए अनेक प्रकार के असहनीय कष्टों और विपदाओं को झेलते हुए वन-वन की खाक छानते रहे। उच्चकोटि की कृपालता की शक्ति इसी कारण उनमें उत्पन्न हो गई थी।

बालि और सुग्रीव के मल्लयुद्ध के अवसर पर प्रथम बार जब सुग्रीव बालि से भिड़ा तो सुग्रीव उसके मुष्टि प्रहार से विह्वल होकर राम के पास भागता आया। राम ने स्पर्शमात्र से उसकी पीड़ा हर ली –

तब सुग्रीव बिकल होइ भागा।
मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा॥
एक रूप तुम्ह भ्राता दोऊ।
तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ॥
कर परसा सुग्रीव सरीरा।
तनु भा कुलिस गई सब पीरा॥

रावण से युद्ध के समय अनेकों बार राक्षसों की मार से जब बानरी सेना घायल और पीड़ित अवस्था में राम के सम्मुख आती थी तब दृष्टिमात्र से समस्त बानरों की पीड़ा को वे दूर कर देते थे –

भए बिगत श्रम बानर सबहीं।
राम कृपा करि चितवा जबहीं॥

राम की कृपालुता कुछ अंशों में हम सब में आ सकती है, लेकिन इसके लिए प्राणीमात्र के प्रति मंगल कामना से प्रेरित होकर अपने कर्म को नियोजित करने की आवश्यकता है।

आस्तिकता अथवा ईश्वर भक्ति

महाभारत में कौरवों की ग्यारह अक्षौहणी सेना के सामने अर्जुन की विजय इसलिए हुई क्योंकि उन्हें भगवान कृष्ण जैसा सारथी मिला था। दानवीर महारथी कर्ण को शल्य जैसा कपटी सारथी मिल गया। परिणामत: अर्जुन से अधिक बली और दिव्यास्त्रों से विभूषित होने पर भी कर्ण को युद्धभूमि में अपने प्राण अर्जुन के बाणों से गँवाने पड़े।

नदी में उतरते समय यदि नाव कहीं मँझाधार में फँस जाये तो कुशल नाविक नाव में बैठे समस्त यात्रियों के प्राण बचा सकता है परन्तु अकुशल या अल्हड़ नाविक नाव के सभी यात्रियों को जल में डुबा देगा और स्वयं भी डूब जाएगा। मनुष्य अपने साधनों से चलता है। अपने सद्गुणों और शक्तियों पर विश्वास करने की उसे नितान्त आवश्यकता है। फिर भी अपना संचालन वह स्वयं नहीं कर सकता। अपनी शक्तियों के साथ जब जगत नियन्ता महाप्रभु की कृपा का समन्वय होता है तभी वांछित उद्देश्य की ओर मनुष्य बढ़ सकता है। दैवीशक्ति पर विश्वास करना और उसे अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करना ईश्वर भक्ति है।

उत्तरकाण्ड में काकभुसुण्डजी ने पक्षिराज गरुड़ को बताया है –

सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धान्त बिचारि॥
जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य।
अस समर्थ रघुनाथ कहिं भजहिं जीव ते धन्य॥

वास्तव में वही लोग धन्य है जो ईश्वर की भक्ति में लीन है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह संसार प्रबल माया का परिवार है। विशालकाय जहाज के रखने से लक्ष्य की सिद्धि जिस प्रकार उस समय तक नहीं हो सकती जब तक उस पर चढ़कर मनवांछित स्थान तक न जाए। संसार के समस्त सुखोपभोग के साधन साधनमात्र है, वह स्थायी सत्य नहीं है। मानस सुनाते हुए प्रसंगानुसार इसीलिए शंकर जी ने पार्वती जी को बताया –

उमा कहहुँ मैं अनुभव अपना।
सत् हरि भजन जगत सब सपना॥

जीव काम, क्रोध, लोभ, मोह, ममता, ईर्ष्या, अहंकार, दम्भ, लालच आदि अनेक असाध्य मानसिक रोगों से ग्रसित रहता है। साधारण रोग से पीड़ित व्यक्ति उससे छूटने के अनेकों प्रयत्न करने के पश्चात् भी कठिनता से छूटते हैं, फिर मानसिक रोग से मुक्ति पाना तो बड़ा कठिन है –

एक व्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु व्याधि।
पीड़हि संतति जीव कहुँ सो किमि लहै समाधि॥

विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे।
मुनिहि हृदय का नर बापुरे॥
राम कृपा नासहिं सब रोगा।
जो एहि भाँति बनै संजोगा॥

शारीरिक, मानसिक समस्त प्रकार के रोग ईश्वर की कृपा से नष्ट हो सकते हैं क्योंकि –

रघुपति भगति सजीवन मूरी।
अनूपान श्रद्धा मति पूरी॥

भगवान की भक्ति रोगों को नष्ट करने के लिए संजीवनी बूँटी के समान सिद्धिदाता हैं लेकिन दवा के साथ पथ्य की आवश्यकता होती है। रामनाम रूपी दवा श्रद्धापूर्वक ग्रहण करने से वांछित लाभ की सम्भावना हो सकती। अश्रद्धालु मन से, बिना विश्वास के और वे मन से ग्रहण करने से रोगों का शमन सम्भव नहीं। संसार के प्राय: समस्त धर्मों में आस्तिकता की अपार शक्ति का वर्णन किया गया है। ईश्वर का भजन ही एक ऐसा माध्यम है जिससे प्राणी भय अथवा प्रेम के नियम में बंधा रह कर सीधे मार्ग पर चल सकता है। अन्यथा मानसिक रोगों के चक्कर में पड़ कर मनुष्य, मनुष्य को खा जाए।

ईसाई धर्म के मानने वाले एक उच्चकोटि के विद्वान प्रधानाचार्य ने ईश्वर-भजन की महिमा पर अपनी श्रद्धा का रहस्य बताते हुए बताया कि बहुत दिनों से उनके पेट में भयंकर पीड़ा उठा करती थी। उन्होंने अनेक अच्छे चिकित्सकों से इलाज करवाया, लेकिन उन्हें लाभ न हुआ। अन्त में अपने प्रयत्नों से हताश हो गये तब ईश्वर पर विश्वास के अतिरिक्त उनके पास कोई उपाय न रहा। उन्होंने पादरी को बुलाकर अपने घर पर दुआ कराई और स्वयं भी प्रार्थना की। उनके पेट का दर्द बिल्कुल ठीक हो गया। ईश्वर के भजन में अपार शक्ति है, उससे कुछ भी असम्भव नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में काकभुसुण्ड जी ने खगनायक ने कहा –

सब कर मत खगनायक एहा।
करिअ राम पद पंकज नेहा॥
श्रुति पुरान सब ग्रन्थ कहाहीं।
रघुपति भगति बिना सुख नाहीं॥
कमठ पीठ जामहिं बरु बारा।
बन्ध्या सुत बरु काहुहि मारा॥
फूलहिं नभ बरु बहु बिधि फूला।
जीवन लह सुख हरि प्रतिकूला॥
तृषा जाई बरु मृग जल पाना।
बरु जामहिं सस सीस बिषाना॥
अन्धकार बरु रबिहि नसावै।
राम बिमुख न जीव सुख पावै॥
बारि मथें घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल।
बिन हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल॥
मसकहि करइ बिरंचं प्रभु अजहि मसक ते हीन।
अस बिचारि तजि संयम रामहि भजहिं प्रवीन॥
विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे।
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते॥

मैं आपसे भली-भाँति निश्चित किया हुआ सिद्धान्त कहता हूँ। मेरे वचन अन्यथा (मिथ्या) नहीं हैं कि जो मनुष्य श्रीहरि का भजन करते हैं वे अत्यन्त दुस्तर संसार सागर को पार कर जाते हैं।

अपने मित्रों, सुहृदों, स्वजनों अथवा हितैषियों द्वारा किए गये सामान्य कोटि के अहसानों के लिए हमें उनके प्रति कृतज्ञ बनना पड़ता है। इस दृष्टि से ईश्वर द्वारा प्रदत्त कृपा का अनुमान हम लगायें। हमारे जीवन के लिए हवा, पानी, प्रकाश उसने उपलब्ध किया, जिसके अभाव में हम पाँच मिनट भी जीवित नहीं रह सकते। हमें हाथ पैर और बुद्धि दी। इस प्रकार समस्त साधन उसने उपलब्ध किये। अपने चौबीस घंटों वाले दिन में हम दिन-रात सांसारिक गोरखधन्धों में फँसे रह कर १०५ मिनट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि उसके नाम स्मरण के प्रति न लगा सकें तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है ?

उस महान् शक्ति पर विश्वास रखने से अपनी स्थिति का सही ज्ञान हमें बना रहता है। मनुष्य को मानसिक रोग उस समय ग्रसित नहीं कर पाते । ईश्वर भक्ति का आसरा छोड़ने वाले लोग बहक कर बर्बर, आततायी, दुष्ट और कुमार्गगामी बन जाते हैं । शक्तियों को सही दिशा में संचालित होने देने के लिए ईश्वर के नाम और गुणों का चिन्तन व स्मरण आवश्यक है ।

ईश्वर की उपासना कई प्रकार से हो सकती है । नाम जप से तथा कर्तव्य-पूजा से । नाम जप एक अंश तक आवश्यक है, लेकिन कर्तव्यहीन होकर केवल रामनाम की चादर ओढ़ना और केवल इसी को जीवन का मुख्य धन्धा मान लेने से नाम जप भी नहीं हो पाता । ऐसे लोग पथ-भ्रष्ट माने जा सकते हैं । हमारे समाज में इस प्रकार राम नाम की चादर ओढ़ने वाले कई लाखों निष्क्रिय व्यक्ति मिलेंगे जो पैसे-पैसे की भीख राहगीरों से माँगा करते हैं । समाज कहीं भूल से उनको राम भजनी न समझ ले । गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है —

जै बरनाधम तेलि कुम्हारा ।
स्वपच किरात कोल कलवारा ॥
नारि मुई गृह सम्पति नासी ।
मूड़ मुड़ाइ होहिं सन्यासी ॥
सब नर कल्पति करहिं अचारा ।
जाई न बरनि अनीति अपारा ॥

इस कल्पित आचरण को ईश्वर-भक्त की संज्ञा नहीं दी जा सकती। सच्ची ईश्वर-भक्ति के साथ कर्तव्य का पुट होना चाहिए । अपने विहित कर्तव्यों को पूरा करते हुए ईश्वर के भजन में मन लगाने की शिक्षा रामायण से हमें मिलती है। प्रात:काल तथा सायंकाल दिन व रात के सन्धि का समय ईश्वराधन अथवा सन्ध्या करने के लिए निश्चित किया गया है। यह समय इसी कार्य के लिए निश्चित है और उत्तम माना गया है। रामायण और महाभारत दोनों महाकाव्यों में आर्यो के पुनीत आचरण के सन्दर्भ में प्रात: सायं दोनों समय सन्ध्या का वर्णन आया है। जिस प्रकार शरीर की स्वच्छता के लिए स्नान को भारतीय जीवन में प्रमुख स्थान दिया गया है, उसी प्रकार मानसिक स्वच्छता के लिए संध्या को अनिवार्य रूप से महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है । प्राचीन भारत का कोई भी व्यक्ति प्रात:सांय सन्ध्या से अपने को वंचित नहीं रख सकता था । उसके लिए यह महापातक माना जाता था । राम और कृष्ण दोनों माहपुरुषों द्वारा दोनों समयों में सन्ध्या का वर्णन मिलता है ।

भगवान राम के संध्या करने का वर्णन जनकपुर के प्रंसग में आया है । गुरु की अनुमति से लक्ष्मण के साथ जनकपुर की शोभा देखने के पश्चात् जब दोनों भाई गुरु के निवास पर लौटे तब सन्ध्या हो चली थी रात्रि के प्रवेश के समय पर तुरन्त उन्हें गुरु ने सन्ध्या करने की अनुमति दी —

सभय सप्रेम विनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ ।
गुरु पद पकंज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ ॥
निसि प्रवेश मुनि आयस दीन्हा ।
सबही सन्ध्या बंदनु कीन्हा ॥
कहत कथा इतिहास पुरानी ।
रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी ॥

संकटपूर्ण अवस्था में सन्ध्या की उपेक्षा नहीं की जा सकती थी । महाभारत युद्ध के पन्द्रहवें दिन जबकि गहारथी कर्ण कौरव सेना का सेनापति था, महाभारत में केवल दिन में ही युद्ध करने के नियम के विपरीत रात्रि हो जाने पर भी कौरव और पाण्डवों की सेना का घोर युद्ध होता रहा, क्योंकि उस दिन भीमपुत्र घटोत्कच आकाश में स्थित होकर मायावी युद्ध कर रहा था, आवेश में दोनों सेनाओं के सेनापतियों ने युद्ध में रात्रि के समय भी रत रहना निश्चय किया । सम्पूर्ण रात्रि घोर युद्ध होता रहा । घटोत्कच के मायावी युद्ध से कौरव सेना के प्राण निकलने लगे । विवश होकर महारथी कर्ण को इन्द्र का दिया हुआ वह अस्त्र जिससे वह अर्जुन को मारना चाहत थे, घटोत्कच पर चलाना पड़ा । युद्धस्थल में घटोत्कच ने भयंकर नाद के साथ प्राण छोड़े । पाण्डव सेना के लिए यह क्षति अभिमन्यु वध से कम शोकप्रद नहीं थी ।

दोनों सेनाएँ पूरी रात्रि युद्ध में रत रहीं, लेकिन ब्रह्म महूर्त के लगते ही दोनों पक्षों के सेनापतियों ने शंखनाद करके अपने सैनिकों को युद्ध से रोक दिया । रथ, अश्व, गजसवार तथा पैदल सभी पूर्वाभिमुख होकर पूरे दो घण्टे तक सन्ध्या करने में लीन रहे । तत्पश्चात् सेनापतियों के शंखध्वनि करने के पश्चात् पुन: सभी लोग घोर युद्ध में रत हो गये ।

यह थी प्राचीन आर्यों की सन्ध्या के प्रति निष्ठा, उनके सब कार्य स्थगित हो सकते थे। लेकिन सन्ध्या न करना अक्षम्य अपराध माना जाता था । यही कारण था कि प्राचीन आर्यों को हम कर्तव्यनिष्ठ, उत्साहपूर्ण तथा कर्मठ पाते हैं । जीवन के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक,धार्मिक एवम् नैतिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्रों में उन्होंने आशातीत उन्नति की ।

युवराज पद से वंचित होकर राम वन को जा रहे थे । अवध में एक महान् परिवर्तन हो गया था । हर्ष और उल्लासपूर्ण वातावरण शोक और दु:ख में बदल गया था । महाराज दशरथ राम:वियोग में तड़प-तड़प कर जान दे रहे थे । इस भारी परिवर्तन का राम के ऊपर प्रभाव था, लेकिन अपने दूसरे विश्राम में ही श्रृंगबेरपुर में वे जब निषादराज के यहां सायंकाल थके मांदे पहुँचे तो अल्प विश्राम के पश्चात् तुरन्त संध्या वन्दन किया ।

तब निषादपति उर अनुमाना ।
तरु सिंसुपा मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहि ठाउँ देखाबा ।
कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
पुरजन करि जोहारु घर आए ।
रघुवर सन्ध्या करन सिधाए ॥

श्रृंगबेरपुर के निषादों से मिल भेंट कर राम ने सर्वप्रथम काम सन्ध्या-वन्दन ही किया । यह चौपाई राम की आस्तिकता के प्रति अटूट निष्ठा को प्रकट करती है । दूसरे दिन सबेरे जैसे ही राम उठे उन्होंने नित्य क्रिया से निवृत्त होने का अपना पहला कार्य सम्पादित किया –

कहत राम गुन भा भिनुसारा ।
जागे जग मंगल सुखदारा ॥
सकल सौच कर राम नहावा ।
सुचि सुजान बट क्षीर मँगावा ॥

जनकपुर में भी राम लक्ष्मण के धनुष-यज्ञ के दिन भोर से संध्या करने का वर्णन आता है –

बन्धु बचन सुनि प्रभु मुसकाने ।
होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥
नित्य क्रिया करि गुरु पहिं आए ।
चरन सरोज सुभग सिर नाए ॥

विश्वामित्र मुनि तो राजर्षि थे ही । राम उन्हीं की सन्ध्या हेतु जनक-वाटिका में फूल लाने के लिए गए थे, लेकिन उससे पहले वे स्वयं सन्ध्या कर चुके थे –

सकल सौच करि जाइ नहाए ।
नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए ॥
समय जानि गुरु आयसु पाई ।
लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥

इस प्रकार सुख-दु:ख, हर्ष-विषाद, संकट-विपत्ति समस्त प्रकार की अवस्था में हम आस्तिकता का आधार पाते हैं । ईश्वर के प्रति निष्ठा रखकर हमें भी अपनी गतिविधियों को सुसंचालित करना चाहिए । जीवनरूपी रथ के लिए अनेक सारथी मिल सकते हैं, लेकिन सुजान सारथी एक मात्र ईश्वर का भजन ही है। उसका पल्ला पकड़ कर हम अपने को निर्विघ्न, निष्कंटक, निर्द्वन्द और सुखी बना सकते हैं ।

वैराग्य और सन्तोष

सांसारिक वस्तुओं, व्यक्तियों और सम्बन्धों में आवश्यकता से अधिक मोह या आसक्ति न रखने को वैराग्य कह सकते हैं । हमारे द्वारा दु:ख और कष्ट मोह शक्ति के कारण उत्पन्न होते हैं । यहाँ की प्राय: सभी वस्तुएँ अनित्य हैं, उनमें चिपके रहने से छूटते समय दु:ख होना स्वाभाविक है। श्रीमद्भागवत गीता में बुद्धिमान पुरुष के निम्नलिखित लक्षण बताए गये हैं –

य: सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठता ॥

जो सर्वत्र स्नेह से रहित हो, सुख पाकर अधिक फूले न और दु:ख के अवसर पर किंचित् भी खिन्न न हो, उसे धीरबुद्धि कहते हैं।

सर्दी-गर्मी, सुख-दुख, हर्ष-विषाद आदि शरीर की अवस्थाएँ है । इसमें कोई भी व्यक्ति छुटकारा नहीं पा सकता । लेकिन अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार की परिस्थितियों में मन की स्थिति का बिगड़ने न देना ही एक अच्छे पुरुष के लक्षण माने जा सकते हैं । संसार की सत्यता को समझ लेने के बाद ही यह स्थिति आ पाती है ।

कबीरदास जी ने कहा है कि –

वही हमें जोगिया मन भावे ।
जो भोग में जोग रमावे ॥

सांसारिक सुखों में लिप्त दिखाई पड़ने वाला वह प्राणी जो भावना से उन सुखों से सर्वथा अलिप्त रहता है, वास्तव में वही सच्चा बैरागी है। भगवान श्री रामचन्द्र जी तो इस भावना के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण थे । महारानी सीता, लक्ष्मण जी भरत तथा शत्रुघन सभी वैराग्य-साधना के सच्चे साधक थे । जन्म के प्रथम दिन से जिन राम ने कभी दु:ख देखा नहीं था, वही राम पिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के वचनों को सत्य करने के लिए पल भर में वनवासी बन गये, राजसुख का लोभ उन्हें व्यथित और प्रभावित न कर सका। सम्राट बनने के स्थान पर वनवासी बनने के सन्देश से उनके चेहरे की मन्द मुस्कान धुमिल न हो सकी। उनके हृदय की प्रफुल्लता पूर्ववत् बनी रही। गंगातट पर निषाद ने इसका कितना स्वाभाविक चित्र खींचा है –

सोवत प्रभुहिं निहारि निषादू।
भयउ प्रेम बस हृदयँ विषादू॥
तनु पुलकित जलु लोचन बहई।
बचन सप्रेम लखन सन कहई॥
भूपति भवन सुभायँ सुहावा।
सुरपति सदनु न पटतर पावा॥
मनिमय रचित चारु चौबारे।
जनु रतिपति निज हाथ सँवारे॥
सुचि सुविचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुवास।
पलंग मंजु मनि दीप जहँ सब बिधि सकल सुपास॥
बिबिध बसन उपधान तुराई।
क्षीरफेन मृदु बिसद सुहाई॥
तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं।
निज छबि रत मनोज मृदु हरहीं॥
ते सिय रामु साथरी सोए।
श्रमित बसन बिनु जाहिं न जोए॥
मातु पिता परिजन पुरबासी।
सखा सुसील दास अरु दासी॥
जोगवहिं जिन्हहिं प्रान की नाईं।
सोबत महि तेइ राम गोसाईं॥
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ।
ससुर सुरेस सखा रघुराऊ॥
रामचन्द्र पति सो बैदेही।
सोबत महि बिधि बाम न केही॥
सिय रघुबीर कि कानन जोगू।
करम प्रधान सत्य कह लोगू॥

रामं की अमलिन मुखमुद्रा भक्तों के लिए पूजनीय बनी।

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा नमम्ले वनवास दुःखतः।
मुखाम्बुज श्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु सा मंजुलमंगलप्रदा॥

"रघुकुल को आनन्द देने वाले रामचन्द्र जी के मुखारबिन्द की शोभा राज्याभिषेक की बात सुनकर न तो प्रसन्नता को प्राप्त हुई और न वनवास के दु:ख से मलिन ही हुई, वह मेरे लिए सदा सुन्दर मंगलों की देने वाली है।"

यह स्थिति वैराग्य और सन्तोषरूपी सद्गुणों को भली प्रकार धारण करने से होती है। वैराग्य और सन्तोष के अभाव में संसार की समस्त प्रकार की सम्पदाऐं भी व्यक्ति को सुखी नहीं बना सकती। कौशल के साम्राज्य के सुख सम्पन्नता के विषय में गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा हैं –

अवध राज सुरराज सिहाई।
दशरथ धन सुनि धनद लजाई॥

लेकिन राम ने उसे अनीतिपूर्वक ग्रहण करने की तुलना में अपने को वनवासी बनाना उत्तम स्वीकार किया और वही दशा भरत की रही। चौदह वर्ष तक भरत को उस राज्यलक्ष्मी के भोग और साम्राज्य के प्रभावपूर्ण प्रशासन का सुअवसर मिला, लेकिन वे उससे जल के कमल के समान अलिप्त बने रहे।

तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा।
चंचरीक जिमि चंपक बागा॥

राम सदैव राग से वैरागी बने रहे। किष्किन्धा पर विजय स्वर्णमयी लंका पर एकाधिकार ऐसी महत्वपूर्ण विजय थी जिनका मूल्यांकन यदि आज की विजयों के सन्दर्भ में किया जाए तो हजार गुना अधिक सिद्ध होगा। लेकिन राम ने अपनी सफलताओं में कभी लालच अथवा अनुराग का पुट नहीं लगने दिया। वैभवशाली स्वर्णमयी लंका की एक फूटी कौड़ी भी वे अयोध्या नहीं लाये। उनके विजित समस्त आश्रित उनके लिए भाई, पुत्र और परिवार के स्वजनों के समान प्यारे बने रहे। राम उनके लिए संरक्षक के रूप में थे, उसी रूप में अपने कर्तव्यों का पालन राम जीवन भर करते रहे। किष्किन्धाकाण्ड में कहा गया है –

उदित अगस्ति पंथ जल सोषा।
जिमि लोभहिं सोषइ संतोषा॥

"जिस प्रकार वर्षा के अन्त में अगस्त्य तारे के उदय से मार्ग का जल सूख जाता है, वैसे ही लोभ मनुष्य के सन्तोष को सोख लेता है। जो लोभी नहीं है वही सन्तोषी है। राम ने इसीलिए लोभ को अपने में कहीं आश्रय नहीं दिया।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानी पुरुषों को एक ही मार्ग बताया गया है –

रस रस सूख सरित सर पानी ।
ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी ॥

संसार का मोह मायाजाल बड़ा प्रबल है। ऋषि-मुनि कोई विरला ही इससे बच पाता है । जैसा कि कबीरदास जी ने कहा है कि –

"या ठगनी सब का बौराये" ।

धीरे-धीरे अभ्यास के द्वारा ममता के त्याग का क्रम बताकर मनुष्य को ज्ञानपंथ पर अग्रसारित होने का मन्त्र रामायण में बताया गया है । कोई एक ही दिन में संसार की माया के प्रति आसक्ति को त्याग नहीं कर सकता –

मोह सकल व्यधिन्ह कर मूला ।
तिन्ह ते पुन उपजहिं बहु सूला ॥

संसार के समस्त रोगों की जड़ 'मोह' है । मोहासक्त व्यक्ति अनेक रोगों में स्वत: अपने को फँसाता जाता है । जो माया के परिवार के प्रति भावना से निर्मोही है वही इन रोगों से बच सकेगा । संसार में सुखी रहने के लिए लालच को त्याग करना, सन्तोष वृत्ति से काम लेकर भावना से वैरागी बनने की आवश्यकता है ।

दानशीलता

दानशीलता की परम्परा का रामायण में बहुत महत्व दिया गया है। वास्तव में 'दान' की परम्परा से करुणा और दया के आधार पर सच्चा साम्यवाद स्थापित किया जा सकता है । दान की प्रक्रिया में दाता और लेने वाले के मध्य सौहार्द बना रहता है, इसके विपरीत छीनझपट कर दूसरे की सम्पत्ति व धन को अन्य को दिलवाने की चेष्टा से लाया हुआ साम्यवाद स्थायी नहीं रहता । उसका टिकाव हिंसा पर होता है ।

यह हम सभी जानते हैं कि समाज में यदि कुछ लोग अमीर हो जाएँ और शेष लोग गरीब ही रहें तो चोरी, डाकाजनी, हत्या आदि अनेक प्रकार के छोटे स्तर के जरायम तो होंगे ही, बड़े-बड़े विद्रोह और क्रान्तियों का होना भी आवश्यक है । इन सबके परिणाम स्वरूप समाज में सुख-शान्ति नहीं रह सकेगी । इस अवस्था को लाने के लिए धन-सम्पत्ति का सचल रहना नितान्त आवश्यक है ।

रामायण कालीन सम्राटों के विरुद्ध वर्तमान जैसा जन-असन्तोष देखने को नहीं मिलता । राजा के विरुद्ध क्रान्ति की बात प्रजा नहीं सोचती थी । इसका सबसे बड़ा ज्वलंत प्रमाण यही था कि महाराज रामचन्द्र जी चौदह वर्षों के लिए वन को चले गये, दशरथ की मृत्यु से सिंहासन रिक्त हो गया, भरत ने ही गद्दी लेने से इन्कार किया । अन्यमनस्क मन से उन्होंने नन्दीग्राम में रहकर चौदह वर्षों तक अयोध्या की गद्दी पर राम की खड़ाऊँ रख कर राजसंचालन किया । लेकिन इस लम्बी अवधि में एक भी विद्रोह न हुआ । इससे सिद्ध होता है कि प्रजा आर्थिक दृष्टि से सुखी थी और इस सुख का कारण था उस समय की दानशीलता की पुण्य परम्परा । सुख-दु:ख संकट-विपत्ति समस्त अवस्थाओं में दान को व्यावहारिक रूप से महत्व दिया जाता है । हर्ष को प्रकट करने के लिए और दु:ख में सन्तोष धारण करने के लिए दान को आधार माना जाता रहा है ।

पुत्र जन्म के हर्षातिरेक को महाराज दशरथ अपनी सम्पदा लुटा कर प्रकट करते हैं । पुत्र जन्म के प्रथम संस्कार 'नान्दी मुख' को गुरु वशिष्ठ से सम्पन्न कराकर महाराज दशरथ दान पर जुट जाते हैं –

नन्दी मुख सराधि करि जात करम सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह ॥
सर्वस दान दीन्ह सब काहू ।
जेहिं पावा राखा नहिं ताहू ॥

राजा ने इस अवसर पर विप्रों को गौ, वस्त्र, मणि, सोना आदि दक्षिणा स्वरूप भरपूर दिया, लेकिन दान की परम्परा को केवल विशिष्ट वर्ग तक सीमित नहीं किया । सर्वसाधारण को उन्होंने अपना सर्वस्व दान कर दिया और पाने वालों ने भी दूसरों को वह सब दे दिया । इससे बड़ी बात क्या हो सकती है ?

संकट के अवसर पर दान से शान्ति और कष्ट निवारण

दानशीलता की पुण्य परम्परा हर्ष और सुख को प्रकट करने के अवसर के लिए नहीं है। बड़ी से बड़ी विपत्ति में , मृत्यु के अवसर पर दान से शान्ति मिलती है । ननिहाल से लौट कर अयोध्या आने पर भरत जी ने अपने मृतक पिता स्वर्गीय दशरथ जी की अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न की और विपुल दान देकर स्वर्ग में उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोधि सुमृति सब वेद पुराना ।
कीन्ह भरत दस गात बिधाना ॥
जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हा ।
तँह तस सहस भाँति सबु कीन्हा ॥
भए बिसुद्ध दिए सब दाना ।
धेनु बाजि गज वाहन नाना ॥
सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम ।
दिए भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरन काम ॥

भगवान राम जब वन को चलने लगे तो अपनी समस्त निजी सम्पत्ति को उन्होंने गरीबों, अनाथों और ब्राह्मणों को दान कर दिया था –

कहि प्रिय बचन सकल समुझाए ।
बिप्र बृंद रघुवीर बोलाए ॥
गुरु सन कहि बरषासन दीन्हे ।
आदर दान बिनय बस कीन्हे ॥
जाचक दान मान संतोषे ।
मीत पुनीति प्रेम परितोषे ॥

तीर्थस्थलों में दान की परम्परा

पवित्र स्थानों में दान की प्राचीन पुनीत परम्परा है । बाल्यावस्था में विश्वामित्र जी के साथ जनकपुर की ओर जाते हुए भगवान रामचन्द्र जी अहिल्या आश्रम से आगे जब गंगातट पर पहुँचे तो स्नान करके दान दिया –

चले राम लछिमन मुनि संगा ।
गए जहाँ जग पावनि गंगा ॥
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाए ।
बिबिध दान महिदेवन्हि पाये ॥

स्वाभाविक अवस्था में दान

विशेष अवसरों पर दान का विधान कर प्राचीन मनीषियों ने सम्पत्ति को किसी एक स्थान पर संग्रहीत न होने देने से बचा लिया है । स्वाभाविक अवस्था में हर व्यक्ति को अपनी आय का दसवाँ अंश दान करने के लिए कहा गया है इस सिद्धान्त का समर्थन विश्व के प्रायः समस्त धर्मों ने किया है हिन्दू धर्म में धर्म के चार चरणों सत्य, दया, दान, शौच में से एक चरण दान माना गया । इस्लाम धर्म में खैरात-जकात को बहुत महत्व प्राप्त है । ईद और मुहर्रम दोनों अवसरों पर गरीबों व यतीमों का बड़े स्तर पर दान दिये जाने की परम्परा है इसी प्रकार ईसाई धर्म में भी है । दानशीलता से वास्तव में सम्पत्ति उसी प्रकार बढ़ती है जैसे बहते रहने से नदी का पानी । बहाव के कारण जल निर्मल रहता है और धन अदोष ।

लक्ष्मी तो बड़ी चंचला है वह एक के ही पास बहुत दिनों तक ठहरना पसन्द नहीं करती । उसे रोकने की एक ही युक्ति है कि दान द्वारा उसे आगे बढ़ाते रहा जाए तब वह दाता के यहाँ बहुत समय तक आती रहेगी । इसके विपरीत जो लोग संचय और संग्रह द्वारा उसे अपने यहाँ रोकने और बाँधने की चेष्टा करते हैं उनके यहाँ से वह जाती तो है लेकिन नाराज होकर चोरों, डाकुओं अथवा अन्य दैवी प्रकोपों के माध्यम से वह दाता पर अनेक विपत्ति ढहा देती है ।

नाव में पानी का संचय नाव को जल में डुबोने का हेतु बनता है, उसी प्रकार संचित धन परिवार के नाश का कारण बन जाता है ।

भगवान राम वनवास से लौट कर सिंहासन पर जैसे ही बैठे तो अनेक प्रकार के दान दिये गये –

बिप्रन्ह दान बिबिध बिधि दीन्हे ।
जाचक सकल अजाचक कीन्हे ॥

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अपने शासनकाल में करोड़ों अश्वमेघ यज्ञों का आयोजन किया था और अनेक प्रकार के दान वे सदैव करते रहते थे । उत्तरकाण्ड में बिना किसी विशेष अवसर के दिये गये एक दान का वर्णन आता है –

हनुमान भरतादिक भ्राता ।
संग लिए सेवक सुखदाता ॥
पुनि कृपालु पुर बाहेर आए ।
गज रथ तुरग मगाँवत भए ॥
देखि कृपा कर सकल सराहे ।
दिए उचित जिन्ह जिन्ह तेइ चाहे ॥

हमें भी दानशीलता को जीवन में महत्व देना चाहिए, लेकिन यह ध्यान रहे कि दान सदैव सुपात्र को दिया जाए, तभी उससे वांछित मनोरथ की सिद्धि होती है ।

बुद्धिमानता अथवा ज्ञानशीलता

मनुष्य बुद्धिजीवी प्राणी होने के कारण ही चौरासी लाख योनियों में श्रेष्ठ और ईश्वर के अधिक निकट माना गया है उसका विकास श्रेष्ठता और अस्तित्व बुद्धिमानता में तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विनाश, निकृष्टता एवं मृत्यु कुबुद्धिता में निहित है गीता में कहा गया है कि -

ध्यायते विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते ।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद्भवति संमोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

"बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्ति के नाश हो जाने से पुरुष अपने श्रेय साधन से गिर जाता है।" बुद्धिहीन अथवा अल्पबुद्धि वाले लोग पशु और कीट पतंगों से भी अति नीच माने जाते हैं गीता में जो बात सिद्धान्त रूप से कही गई है, रामचरित-मानस में उसी बात को व्यावहारिक रूप दिया गया है। रामचरित-मानस में गीता के उपरोक्त श्लोक का रूपान्तरण निम्न प्रकार है –

जाको हरि दारुन दुख देहीं ।
ताकी मति पहिले, हरि लेहीं ॥

समाज के व्यापक हित में अपना हित देखना सद्बुद्धि है, किसी का अहित किये बिना अपने हित में रत रहना बुद्धि है और सबके हितों को हनन करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना कुबुद्धि है ।

महाराज दशरथ की तीन रानियाँ कौशल्या, सुमित्रा और कैकेई क्रमशः सद्बुद्धि, बुद्धि और कुबुद्धि की प्रतिनिधि मानी जा सकती है इसे ठीक प्रकार से समझने के लिए कुबुद्धि की ओर से सद्बुद्धि की ओर चलना पड़ेगा ।

महाराज दशरथ के शासन काल में अवध में चारों ओर सुखशान्ति छाई थी । विशेषतया राम,लक्ष्मण,भरत,शत्रुघन चारों भाइयों के विवाह के बाद अवध की प्रतिष्ठा में चार चाँद लग गये। वहाँ दिन-रात शहनाइयाँ बजती थीं। चौथापन समीप आने पर महाराज दशरथ द्वारा राम को युवराज पद दिये जाने के संकल्प से अवध की परिस्थिति में एक मोड़ आता है। दशरथ का यह निश्चय मन्थरा को अच्छा नहीं लगता क्योंकि देवताओं द्वारा सरस्वती की प्रेरणा से उसकी सुबुद्धि कुबुद्धि में बदल जाती है-

नामु मन्थरा मन्दमति चेरी कैकेई केरि ।
अजस पेटारी ताहि करि गई गिरमति फेरि ॥

मन्थरा की बुद्धि उलट गई थी, इसलिए राम जैसे जनप्रिय व्यक्ति को राज दिये जाने सम्बन्धी अयोध्या की प्रसन्नता में उसे अपनी स्वामिनी कैकेई का अहित दिखाई पड़ने लगा वह चारों दिशाओं में व्याप्त प्रसन्नता को दुखः और विषाद में परिवर्तित करने का उपाय सोचने लगी -

करइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती ।
होइ अकाजु कवनि बिधि राती ॥
देखि लागि मधु कुटिल किराती ।
जिमि गवँ तकइ लेउँ केहि भाँती ॥

अपने कुटिलतापूर्वक चतुर बचनों से वह कैकेई की बुद्धि को फेरने में सफल हो गई । उसने सिद्ध कर दिया कि राम के राजा बनते ही भरत और कैकेई दोनों पर विपत्ति के पहाड़ टूटेंगे –

रामहिं तिलक कालि जौं भयऊ ।
तुम्ह कहँ बिपति बीजु बिधि बयऊ ॥
रेख खँचाई कहउँ बलु भाषी ।
भामिनि भइहु दूध कइ माखी ॥

बुद्धि के फिरते ही कैकेई को समस्त सीधी बातों और घटनाएँ उल्टी दिखाई पड़ने लगीं उसने निश्चय कर लिया कि चाहे जितनों का अहित क्यों न हो जाए, चाहे हरा-भरा अवध उजड़ जाए, लेकिन उसका हित होना चाहिए ।

तसि मति फिरी अइह जस भाबी ।
रहसी चेरि घातु जनु फाबी ॥
बिपति बीजु बरषा रितु चेरी ।
भइँ भइ कुमित कैकेई केरी ॥

बुद्धिहीनता का भूत सवार होने के पश्चात् मनुष्य अपने आदर्शों, परम्पराओं एवम् मर्यादाओं से किस सीमा तक गिर जाता है । महारानी कैकेई ने इसका अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है वे भी 'श्रेष्ठ आर्य' महिला थीं । देवासुर संग्राम में अपनी बहादुरी एवम् चतुरता से मरणासन्न महाराज दशरथ के प्राण उन्होंने बचा लिये थे, तभी प्रसन्न होकर महाराज ने उन्हें दो बरदान माँगने को कहा था । अपनी पति-परायणता तथा सेवा से वे महाराज की विशेष प्रियपात्र थीं । तीनों पटरानियों में वे सबसे छोटी थीं, लेकिन गुणों के आधार पर कौशल्या व सुमित्रा भी उनका आदर करती थीं । राजपरिवार में तथा साम्राज्य में महारानी कैकेयी का विशिष्ट स्थान था। स्वयं मन्थरा महारानी कैकेई को वर माँगने की प्रेरणा देते हुए इस तथ्य को बताती हैं-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भामिनी करहु त कहौं उपाऊ ।
हैं तुम्हरी सेवा बस राऊ ॥

लेकिन आदर्शों के वातावरण में रहने वाली इसी आर्य ललना पर जब कुमति सवार हो जाती है तो वह किस सीमा तक नीचे गिर गई ? सायंकाल महाराज दशरथ रानी के महल में जाकर उसे कोपभवन में पाते हैं तो प्रसन्न करने हेतु सब कुछ करने का आश्वासन महाराज ने दिया –

बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि ।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निज कोप कर ॥
अनहित तोर प्रिया केइं कीन्हा ।
केहि दुइ सिर केहि जम चह लीन्हा ॥
कह केहि रंकहि करौ नरेसू ।
कहु केहि नृपहि निकासों देसू ॥
सकउ तोर अरि अमरउ मारी ।
काह कीट बपुरे नर नारी ॥
प्रिया प्रान सुत सरबसु मोरे ।
परिजन प्रजा सकल बस तोरे ॥

लेकिन पति के सच्चे बचन कुमति कैकेई को छलपूर्ण और झूठे लगे, उसे इसमें अपना हित दिखाई नहीं पड़ा । अन्त में राम की शपथ दिला कर वह दोनों वर माँग लेती है-

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का ।
देहु एक बर भरतहि टीका ॥
मागउँ दूसर बर कर जोरी ।
पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥
तापस वेष विसेषि उदासी ।
चौदह बरष राम बनबासी ॥

कैकेई के भवन में इस अवसर पर निष्ठुरता, कटु बचन, नीचता, हठवादिता और आदर्शहीनता के अनेकों दृश्य दीख पड़ते हैं ।

सबके हित का बलिदान करके अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाली कैकेई की दुर्दशा हम सभी ने देखी । राम, राजा, प्रजा और अयोध्या का सत्यानाश करने की उसने ठानी । प्रथम प्रभाव सब पर पड़ा, लेकिन आगे चलकर हम देखेंगे कि बुद्धि और सद्बुद्धि के फलस्वरूप यह विनाश रचना में बदल गया । केवल कैकेई को बैधव्य और स्थायी कुख्याति मिली ।

बुद्धि

महाराज दशरथ की धर्मपत्नी महारानी सुमित्रा के कार्य सामान्य बुद्धि से प्रेरित माने जा सकते हैं । उन्होंने एक रास्ता पकड़ा और उसी को जीवन नीति बनाया । उनके पुत्र लक्ष्मण राम के अनुगामी थे । सुख के समय में वे राम के पीछे रहे जब राम पर वनवास की विपत्ति आई तो उस समय भी माता सुमित्रा ने राम की सेवा का उपदेश उन्हें दिया । कैकेई के दुष्कृत्यों से प्रेरणा लेकर अपने पुत्र के विशेष स्वार्थ साधन की ओर उनकी बुद्धि नहीं दौड़ी । यदि वे चाहतीं तो ऐसा कर सकती थीं, लेकिन सुख और दुःख दोनों अवस्थाओं में एक मार्ग पर चलते रहने की नीति का पालन करके सुमित्रादेवी ने रामायण महाकाव्य में अपना सम्माननीय स्थान बना लिया ।

राम के साथ वन जाने की अनुमति माता सुमित्रा से प्राप्त हो सकने में लक्ष्मण को सन्देह हो रहा था । क्योंकि राम के पास से माता के महल की ओर जाते हुए लक्ष्मण सोच रहे थे कि कहीं उनकी बुद्धि ने भी कैकेई की बुद्धि के समान करवट न ले ली हो –

मागत बिदा सभय सकुचाहीं ।
जाइ संग बिधि कहिहिं कि नाहीं ॥

लेकिन देवी सुमित्रा की बुद्धि तो अपरिवर्तनीय, दृढ़ निश्चयी और सन्देह से परे थी । पुत्र लक्ष्मण से सारी बात सुनकर वे कितने सुन्दर और नीतियुक्त शब्दों से उसे अपने मार्ग पर चलते रहने का उपदेश देती हैं-

धीरज धरेउ कुअबसर जानी ।
सहज सुहृद बोली मृदु बानी ॥
तात तुम्हार मातु बैदेही ।
पिता रामु सब भाँति सनेही ॥
अवध तहाँ जहँ राम निवासू ।
तहई दिवसु जहँ भानु प्रकासू ॥
जो पै सीय रामु बन जाहीं ।
अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं ॥
गुरु पितु मातु बंधु सुर साईं ।
सेइअहिं सकल प्रान की नाईं ॥
अस जियँ जानि संग बन जाहू ।
लेहु तात जग जीवन लाहू ॥
उपदेशु यहु जेहिं तात तुम्हते राम सिय सुख पावहीं ।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई ।
रति होउ अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित नितनई ॥

सुमित्रा की बुद्धि ने कुअवसर से अनुचित लाभ उठाने की बात नहीं सोची । देव कार्यों के लिए जाने वाले राम को हर प्रकार से सहयोग और सेवा देने में उन्होंने अपनी सार्थकता मानी । मनुष्य की विमल बुद्धि से इसी प्रकार की आशा की जानी चाहिए । जहाँ इस प्रकार की बुद्धियों की बहुलता होती है, दुर्भाग्य, सौभाग्य में बदलते हैं ।

सद्बुद्धि की प्रतीक माता कौशल्या

क्रोध को अक्रोध से, हिंसा को अहिंसा से दुष्टता को सज्जनता से जीतने का उपदेश हमने प्राय: धर्म के ज्ञाताओं से सुना है, लेकिन व्यावहारिक जीवन में उसे साकार करने वाले कम लोग मिलते हैं । कैकेई ने कौशल्या की नीयत पर सन्देह किया था । भरत की अनुपस्थिति में महाराज से राम को राजतिलक दिलवाने का षड़यन्त्र उसे कौशल्या देवी द्वारा रचा जान पड़ा था –

चतुर गंभीर राम महतारी ।
बीचु पाई निज बात सँवारी ॥
पठए भरतु भूप ननिअउरे ।
राम मातु मत जानब रउरे ॥

कौशल्या के प्यारे पुत्र जनप्रिय निर्दोष राम को वल्कल वस्त्र धारण कराकर कैकेई ने वन की ओर भिजवा दिया था । पिता महाराज दशरथ ने वज्र के समान इस महान विपत्ति को न सह सकने पर प्राण दे दिये । माता का हृदय तो पिता से अनेक गुना कोमल और भावुक होता है । लेकिन धीरबुद्धि देवी कौशल्या तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम की जननी थीं । भला वे अपने आदर्श से कैसे च्युत हो जाती ? राम-वनगमन, दशरथ मरण, अवध के हाहाकार और नर-नारियों के चीत्कार से उनका हृदय प्रज्वलित अग्नि के समान धू-धू कर जल रहा था, लेकिन उसकी लपटों पर शान्ति एवम् मर्यादा का आवरण पड़ा था । अपने पुत्र और पुत्रवधु को अपार कष्ट सहने के लिए भिजवाने वाली सौत कैकेई के प्रति उनके मन में रंचमात्र भी प्रतिशोध नहीं उठा । जब कैकेई की कुटिलता के परिणाम से उत्पन्न अनर्थ को बताया गया तो देवी कौशल्या ने अपनी नीति और धीर बुद्धि का त्याग इस विषम परिस्थिति में भी नहीं किया । नारी बात सुनकर उन्होंने जिस प्रकार से सारे घटनाक्रम पर विचार किया और अपने पुत्र राम को अनुमति दी वह इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है -

निरखि राम रुख सचिव सुत कारन कहेउ बुझाइ ।
सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहिं जाइ ॥
राखि न सकइ न कहि सक जाहू ।
दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू ॥
राखऊं सुतहि करउँ अनुरोधू ।
धरमु जाइ अरु बंधु बिरोधू ॥
कहऊँ जान बन तौ बड़ हानी ।
सकंट सोच बिबस भइ रानी ॥
बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी ।
रामु भरतु दोउ सुत सम जानी ॥
सरल सुभाउ राम महतारी ।
बोली बचन धीर धरि भारी ॥
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका ।
पितु आयसु सब धरमक टीका ॥
राज देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेसु ।
बिनु तुम्ह भरति भूपतिहि प्रजहि प्रचंडु कलेसु ॥
जौ केवल पितु आयसु ताता ।
तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ॥
जौ पितु मातु कहेउ बन जाना ।
तौ कानन सत अवध समाना ॥

ऐसे आदर्श शब्द निकालते समय कौशल्या के उर में क्या पुत्र का स्नेह नहीं था ? पर वे अपने पुत्र से अधिक पति, भरत और प्रजा के क्लेशों को महत्व देती थीं । सबके हित में अपनी भलाई देखना ही सुबुद्धि का परिचायक है । पुत्र से उन्हें अपार स्नेह था, लेकिन मिथ्या आसक्ति और झूठे प्रेम में वे फँसना नहीं चाहती थीं ।

राम भरत के सुसम्बन्ध स्थापन में कौशल्या माता के योगदान को न तो कम किया जा सकता है और न महत्व को घटाया जा सकता है । कौशल्या देवी ने सम्पूर्ण विवाद के सम्बन्ध में कैकेई को न तो दोषारोपित किया और न भरत से तनिक भी दुभाव प्रकट किया । ननिहाल से वापस आकर अपनी माता के सब कुसमाचार सुनकर भरत सीधे कौशल्या के महल में जाते हैं । दु:ख और विपत्ति से सूख कर काँटा बनने वाली कौशल्या देवी भरत से अपने उदर से उत्पन्न पुत्र से कम स्नेह नहीं करती –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भरतहि देखि मातु उठि धाई ।
मुरछित अवनि परी झइ आई ॥

भरत अनेकों प्रकार से अपने को धिक्कारते हुए माता के सन्मुख विषाद प्रकट करने लगे । होश आने पर वे पुन: भरत से भेंट करती हैं -

मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि ।
लिए उठाइ लगाइ उर लोचन मोचित बारि ॥
सरल सुभाय मायँ हियँ लाए ।
अतिहित मनहुँ राम फिरि आए ॥
भेटेउ बहुरि लखन लघु भाई ।
सोकु सनेहु न हृदयँ समाई ॥
देखि सुभाउ कहत सब कोई ।
राम मातु अस काहे न होई ॥
माता भरतु गोद बैठारे ।
आँसु पोछि मृदु बचन उचारे ॥

कुबुद्धिता के कारण भरत की माता कैकेई को राम राज्याभिषेक में अपना अहित दीख पड़ा था और सद्बुद्धि के कारण माता कौशल्या को भरत के राजगद्दी पर बैठने में अपना, राम का और सम्पूर्ण अयोध्यावासियों का परम हित दीख रहा था । पिता का अन्तिम संस्कार समाप्त होने के पश्चात् दरबार लगा । भरत गुरु के समीप बैठाये गये । वे राज लेने से कतरा रहे हैं । गुरु वसिष्ठ और सुमन्त सब उन्हें समझा रहे हैं । माता कौशल्या भी भरत पर राज्य स्वीकार करने के लिये सबसे अधिक दबाव डाल रही हैं –

कौसल्या धरि धीरजु कहई ।
पूत पथ्य गुरु आयसु अहई ॥
सो आदरिअ करिअ हित मानी ।
तजिअ बिषादु काल गति जानी ॥

लोग विमाता अथवा सौतेली माता के विषय में कैकेई का उदाहरण लेते हैं । सौत के दोषों को देखते हैं, लेकिन क्या देवी कौशल्या भरत की सौतेली माता नहीं थीं जिन्होंने सगी माँ से भी अधिक उत्तम व्यवहार किया ? वास्तव में जहाँ सुमति अथवा सद्बुद्धि होती है वहाँ सम्बन्ध मधुर हो जाते हैं और कुबुद्धि के व्याप्त होते ही उनमें कटुता, भेदभाव और ईर्ष्या-द्वेष फैलते देर नहीं लगती –

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ।
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥

कैकेई में कुमति व्यापते ही अवध उजड़ गया, महाराज मर गये, राम-लक्ष्मण वन को गये, लेकिन कैकेई की कुमति पर जब देवी सुमित्रा और महारानी कौशल्या की सद्बुद्धि ने प्रभाव फैलाया, सबों ने घटनाओं के प्रति सही और सर्वहितकारी दृष्टिकोण अपनाया तो अवध का विनाश रचना में बदल गया । राम का वनगमन अवध के साम्राज्य और भारतीय संस्कृति के लिए वरदान सिद्ध हुआ । चारों भाइयों में स्नेह का ऐसा अटूट बन्धन बँध गया जो मृत्यु पर्यन्त नहीं टूटा । अयोध्या का साम्राज्य विश्व का सर्वश्रेष्ठ साम्राज्य बना और रामराज्य आदर्श राज्य बना । इसी प्रकार जब हम परिस्थितियों के प्रति सही दृष्टिकोण अपनाते हैं तो चारों दिशाओं में मंगल छा जाना स्वाभाविक है ।

विज्ञान की महिमा और आवश्यकता को स्वीकार किया जाए

विजय रथ के प्रसंग में श्रेष्ठ विज्ञान को कठिन धनुष से उपमा दी गई है ।

ज्ञान की विशेष शाखा जिसमें क्रमबद्ध रूप से अध्ययन और नई खोज सम्मिलित हो, को विज्ञान कहते हैं, वास्तव में बीसवीं शताब्दी को वैज्ञानिक युग कहा जाता है । यूरोप की अनेक जातियाँ विज्ञान की शक्तियों से विभूषित होने के कारण अनेक वर्षों तक एशिया और अफ्रीका के अनेक देशों की प्रभुता बनी रहीं । देश के उत्थान-पतन में विज्ञान का विशेष योगदान रहता है वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैज्ञानिक शक्तियों से दुर्बल होने के कारण ही विशाल देश भारतवर्ष को शताब्दियों तक पराधीनता व दासता की नारकीय अवस्था में रहना पड़ा ।

प्राकृतिक शक्तियों वायु, जल, विद्युत आदि को मानव की उपयोगिता के अधिक अनुकूल बनाने और उनसे मनुष्यों की आवश्यकताओं को पूरी करने का प्रयास करना विज्ञान का कार्य है । बीसवीं शताब्दी में रेल, तार, रेडियो, टेलीफोन, टेलीविजन, द्रुतगामी वायुयान, इंजीनियरिंग व युद्ध-क्षेत्र में अनेक घातक अस्त्र-शस्त्रों, एटम बम, हाइड्रोजन बम तथा अणु बम आदि के आविष्कारों ने संसार को बदल दिया है । किसी देश की वास्तविक शक्ति वास्तव में आज उस देश में रहने वाले उच्चकोटि के वैज्ञानिकों में निहित है । जो देश वैज्ञानिक आविष्कारों से सुसज्जित हैं । वही उन्नतिशील और शक्तिशाली माने जाते हैं, शेष पिछड़े अथवा अविकसित ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रामायण कालीन भारतवर्ष संसार के देशों में वही स्थान रखता था जो आज अमेरिका और रूस को प्राप्त है । देश की उन्नति में हम केवल ज्ञान को ही आधार नहीं मान सकते हैं । मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम यदि कोरे ज्ञानी होते और युद्धकला में प्रत्यक्षशस्त्रों मात्र से सुसज्जित होते तो सम्भवत: उन्हें इतनी उपलब्धियाँ न मिल पातीं । रामायण को केवल परमार्थ और परलौकिक कल्याण तथा ईश्वर-भक्ति के दृष्टिकोण से पढ़ने के कारण वास्तव में रामायणपाठियों व राम के अनुयायियों का ध्यान इस ओर नहीं गया । अन्यथा आज राम को मानने वाले सांसारिक जीवन में अन्य देशों से पिछड़े हुए न माने जाते । रामायणकालीन विज्ञान बीसवीं शताब्दी से अनेक गुना उन्नतिशील था । इस शताब्दी के जो नवीन आविष्कार विज्ञान के चमत्कार माने जाते हैं, रामायण काल में आज से अधिक उन्नत दशा में थे ।

यातायात के तीव्रगामी साधन

रेल, मोटर, हवाई जहाज आदि तीव्रगामी वाहनों के आविष्कार से वर्तमान संसार छोटा हो गया है । रामायण काल में पुष्पक विमान की चर्चा पर पहले लोग कम विश्वास करते थे । लेकिन जब आधुनिक खोजों की उपलब्धि स्वरूप विमान आकाश मण्डल में घड़घड़ाने लगे तब लोगों को रामायण में लिखी विमान चर्चा पर विश्वास हुआ ।

पुष्पक विमान रावण के पास था । उसे वह अपने भाई यक्षपति कुबेर को पराजित करके छीन लाया था ।

एक बार कुबेर पहिं धावा ।
पुष्पक जान जीति लै आवा ॥

राम ने जब लंका-विजय किया तो बानरी सेना सहित पुष्पक विमान पर चढ़ कर लंका से अयोध्या आये थे । इस विमान की शक्ति बहुत अधिक थी । कई हजार व्यक्तियों और सामान को लादकर उड़ान भरने की क्षमता इसमें थी –

कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान ।
सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान ॥
अतिसय प्रीति देखि रघुराई ।
लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई ॥
रुचिर बिमान चलेउ अति आतुर ।
कीन्ही सुमन बृष्टि हरषे सुर ॥

लेकिन केवल पुष्पक विमान की चर्चा ही पर्याप्त नहीं मानी जा सकती है । प्राय: सभी धन सम्पन्न लोग जो साधनों से युक्त थे, विमान का उपयोग करते थे । इन्हीं धनी लोगों को देवता कहा जाता था । सती प्राण -त्याग प्रसंग में उनके पिता दक्ष प्रजापति ने बड़ा भारी यज्ञ किया था । उस यज्ञ में किन्नर, नाग, सिद्ध, गन्धर्व और देवगणों को सपरिवार सजधज कर आकाश मार्ग से जाते देख कर सती के पति से पूछा था तब उन्हें ज्ञात हुआकि सब दक्ष के यज्ञ में जा रहे हैं ।

किन्नर नाम सिद्ध गन्धर्वा ।
बधुन्ह समेत चले सुर सर्वा ॥
विष्नु बिरंचि महेसु विहाई ।
चले सकल सुर जान बनाई ॥
सती बिलोके ब्योम बिमाना ।
जात चले सुन्दर बिधि नाना ॥
पूछेउ तब सिवँ कहेउ बखानी ।
पिता जग्य सुनि कछु हरषानी ॥

रामायण में अनेक अवसरों पर गगन मण्डल से पुष्प वर्षा का वर्णन मिलता है । राम जन्म, विवाह, राम-रावण युद्ध आदि अनेक अवसर हैं जब आकाश से पुष्प वर्षा हुई है ।

रेल और मोटर का वर्णन तो नहीं मिलता, लेकिन एक स्थान से दूसरे स्थानों को लोग अति-शीघ्रता से पहुँचते थे । इस कार्य में एक तो रामदूत हनुमान, अंगद, जामवन्त आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । दूसरे ऋषियों में नारद जी का । नारद जी तो कुछ ऐसी विद्या जानते थे जिससे वे इच्छित स्थान पर तुरन्त पहुँच जाते थे । आकाश मार्ग में लम्बी यात्रा करने का वर्णन सीता की खोज के प्रसंग में मिलता है । जटायु के भाई सम्पाती ने जब सागरतट पर वानरों और रीछों को लंका में सीता के होने का पता वताया तो सत् योजन समुद्र लाँघने की बात आई । प्राय: समस्त प्रमुख वानरों ने उड़ान भरने की बात अस्वीकार नहीं की, यद्यपि सबसे अधिक बलशाली होने के कारण हनुमान जी ही गये –

अस कहि गरुड़ गीध जब गयऊ ।
तिन्ह के मन अति बिसमय भयऊ ॥
निज निज बल सब काहू भाषा ।
पार जाइ कर संसय राखा ॥
अंगद कहइ जाउँ मैं पारा ।
जियँ संसय कछु फिरती बारा ॥

सागर पर जब सेतु बँध गया तो उसके दर्शनार्थ जलचर जीवधारियों तक की अपार भीड़ लग गई । विवश होकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिकांश बानरों को आकाश मार्ग से सेतु के ऊपर-ऊपर उड़ना पड़ा –

सेतु बंध भइ भीर अति कपि नभ पंथ उड़ाहिं ।
अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहिं जाहिं ॥

दिव्य अस्त्र-शस्त्र

युवावस्था में विश्वामित्र जी के साथ जाते हुए जब मार्ग में मिली ताड़का का वध उन्होंने किया तो विश्वामित्र जी ने उन्हें राक्षसों के बध का अधिकारी मानकर अनेक वैज्ञानिक अस्त्र दिये –

चले जात मुनि दीन्हि देखाई ।
सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ॥
एकहि बान प्रान हरि लीन्हा ।
दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥
तब रिषि निज नाथहिं जियँ चीन्ही ।
विद्यानिधि कहुँ विद्या दीन्ही ॥
जाते लाग न क्षुधा पिपासा ।
अतुलित बल तनु तेज प्रकासा ॥
आयुध सर्व समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि ।
कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि ॥

विश्वामित्र जी ने राम को ऐसी विद्या बता दी थी जिसके प्रयोग से युद्धकाल में कई-कई दिन तक राम बिना भोजन के पूरी शक्ति से युद्ध कर सकते थे । शरीर में बल भी बढ़ जाता था और चेहरे पर प्रकाश और अधिक हो जाता था । इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के गुप्त घातक अस्त्रों के संचालन की विधि विश्वामित्र जी ने राम को बताई थी । उन्हें एक ऐसा तूणीर (तरकस) दिया था । जिसमें बाण कभी कम ही नहीं होते थे । वह सदैव भरा रहता था । रावण जैसे महान वैज्ञानिक को राम से परास्त कराने के लिए उस काल के ऋषियों ने राम को अनेक दिव्य अस्त्र प्रदान किये थे और बचपन से अनेक स्थलों पर उन छोटे प्रदर्शनों द्वारा उनके संचालन की ट्रेनिंग दी थी । उत्तर भारत में विश्वामित्र ने अनेक अस्त्र दिये । वसिष्ठ जी ने तो बचपन में उन्हें युद्धकला में निपुण ही बना दिया था –

लंका की ओर युद्ध की नियत से बढ़ते हुए राम को दक्षिण के समस्त ऋषि-मुनियों (उस काल की शोधशालाएँ) ने अनेक अस्त्र प्रदान किये थे । राम इसी इच्छा से चित्रकूट से चलकर दक्षिण पथ के समस्त ऋषि आश्रमों में गये थे । वशिष्ठ और विश्वामित्र जी के दिये हुए दिव्यास्त्र रावण का सामना करने के लिए पर्याप्त नहीं थे, क्योंकि वह और उसका पुत्र मेघनाद उससे भी अधिक घातक दिव्यास्त्रों का प्रयोग जानते थे । ऐसा प्रतीत होता है कि दक्षिण भारत उस समय उत्तर भारत की तुलना में वैज्ञानिक शोधों में अधिक बढ़ा-चढ़ा था । उस काल के सबसे बड़े वैज्ञानिक अगस्त्य जी थे, जिन्होंने समुद्र के जल को सुखा दिया था । रावण बध के लिए पूर्ण समर्थ बनने हेतु राम अगस्त्य जी के आश्रम में गये । उनसे अपना मन्तव्य बताया –

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं ।
तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥
तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ ।
ताते नाथ न कहि समुझायउँ ॥
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही ।
जेहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही ॥

गोस्वामी तुलसीदास जी तो इसे भक्ति की ओर मोड़ ले गये हैं लेकिन आदि कवि बाल्मीकि जी ने लिखा है कि अगस्त्य जी ने उस समय राम को अनेक दिव्यास्त्रों का भेद बतलाकर उनके संचालन की विधि बताई –

इदं दिव्यं महच्चापं हेमवजबिभूषितम् ।
वैष्णवं पुरुष वयाघ्र निर्मितं विश्वकर्मणा ॥
अमोघः सूर्यसंकाशो ब्रह्मदत्तःशरोत्तमः ।
दत्तौ ममं महेन्द्रेणतूणी चाक्षरुयसायकौः ॥
सम्पूर्णे निशितैर्बाणैर्ज्वलद्भिखि पावकैः ।
महाराजकोशोऽयमसिहंमविभूषितः ॥

पुरुष सिंह - यह महान् दिव्य धनुष विश्वकर्मा जी ने बनाया हैं इसमें स्वर्ण और हीरे जड़े हैं । यह भगवान विष्णु का दिया हुआ है तथा यह जो सूर्य के समान दैदीप्यमान अमोघ उत्तम वाण है, ब्रह्मा जी का दिया हुआ है । इनके सिवा इन्द्र ने ये दो तरकस दिये हैं जो तीखे तथा अग्नि के समान तेजस्वी बाणों से सदा भरे रहते है । कभी खाली नहीं होते । साथ ही यह तलवार भी है जिसकी मूठ में सोना जड़ा हुआ है । इसकी म्यान भी सोने की है ।

इन अस्त्रों के अतिरिक्त विज्ञान की शक्ति से युद्ध-क्षेत्र में अनेक प्रकार की विषम स्थिति पैदा की जा सकती थी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्त में राम-रावण के प्रत्यक्ष युद्ध के समय जब रावण ने देखा कि उसकी अधिकांश सेना समाप्त हो चुकी है तो उसने माया युद्ध का सहारा लेकर राम-सेना के प्रत्येक महारथी को चक्कर में डाल दिया –

रावण हृदय बिचारा भा निसिचर संघार ।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करों अपार ॥
सो माया रघुबीरहि बांची ।
लछिमन कपिन्ह सो मानी सांची ॥
देखी कपिन्ह निसाचर अनी ।
अनुज सहित बहु कोसल धनी ॥

राम-रावण युद्ध के अन्तिम चरण में रावण ने अपने पूरी शक्ति से मायावी युद्ध का प्रदर्शन किया था लेकिन भगवान श्रीराम ने उसकी माया को अपने अस्त्रों से काट दिया ।

लेकिन उपरोक्त प्रसंगों को उदाहरण रूप में प्रस्तुत करने का पाठक यह अर्थ कदापि न लगायें कि हमारा उद्देश्य केवल प्राचीन महानता की ढपली पीटना मात्र है । वास्तव में राम के सच्चे अनुयायी बनने के लिए हमें भी वर्तमान समय में देश की वैज्ञानिक उन्नति की ओर अधिक रुचि लेनी चाहिये । विज्ञान को धार्मिक चेतना का एक अंग मानना चाहिये तभी 'वर विज्ञान कठिन कोदण्डा' की मान्यता को हम चरितार्थ कर सकेंगे । पिछड़े देश की उन्नति के लिए समय की गतिविधि के अनुरूप अपना रंग-ढंग बनाना एक बड़ी आवश्यकता की पूर्ति होगी।

मन की निर्मलता और दृढ़ता

अमल अचल मन त्रोन समाना ।

विजय-रथ के प्रसंग में भौतिक जगत में सफलता के लिए विज्ञान की आवश्यकता और महत्व को स्वीकार किया गया है । विज्ञान तभी मानव के लिए कल्याणप्रद सिद्ध हो सकता है जब वह जितेन्द्रिय लोगों के नियंत्रण में हो । अजितेन्द्रिय और चंचल मन:स्थित वाले लोग संसार की बड़ी से बड़ी भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों से कोई लाभ नहीं उठा पाते । मन की निर्मलता और दृढ़ता पर हमारी भावी समृद्धि बहुत अंशों तक निर्भर करती है । एक कहावत है –

मन के हारे हार है मन के जीते जीत ।
पारब्रह्मम् को पाइये मन ही की परतीत ॥

ब्राह्य संसार मन की स्थिति के अनुकूल दिखाई पड़ता है । जहाँ मन लगेगा मनुष्य की कर्मेन्द्रियाँ वहीं कुछ कर सकेंगी । सर्वांगीण विकसित व्यक्ति के मन की दो विशेषताए इस प्रसंग में बताई हैं –

१- मन निर्मल होना चाहिए । २- मन दृढ़ अथवा अचल होना चाहिए ।

रामायण इसी दिशा में मार्गदर्शन करती है । निर्मल मन का प्रतिफल सरलता और निष्कपटता है । कैकेई को छोड़ कर रामायण के शेष समस्त पात्रों में हम निर्मल मन:स्थिति का दर्शन करेंगे । मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम सरल, संकोची और निष्कपट थे । इसका एक बहुत बड़ा उदाहरण बाल्यावस्था में जनकपुर के प्रसंग में मिलता है । जनकबाटिका में जब वे गुरु के लिए पुष्प लेने जाते हैं तो जनकतनया कुमारी सीता को देखकर स्वाभाविक रूप से पवित्र रहने वाला उनका मन उद्वेग को प्राप्त करता है । अपनी मन:स्थिति को वे अपने अनुज लक्ष्मण से कह देने में तनिक भी संकोच नहीं करते –

सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि ।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥
तात जनक तनया यह सोई ।
धनुष जग्य जेहि कारन होई ॥
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा ।
सहज पुनीत मोर मनु छोभा ॥
रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ ।
मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ ॥
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी ।
जेहि सपनेहुँ परनारि न हेरी ॥

अपने मन की परिवर्तित स्थिति का वर्णन उन्होंने अनुज से ही नहीं किया वरन् जनक वाटिका में हुई सम्पूर्ण घटना को पुष्प लेकर गुरु विश्वामित्र के पास पहुँच कर उन्होंने अक्षरश: बता दिया । उसमें तनिक भी छिपाने की चेष्टा नहीं की –

हृदय सराहत सीय लोनाई ।
गुरु समीप गबने दोउ भाई ॥
राम कहा सबु कौसिक पाहीं ।
सरल सुभाउ छुअत छल नाहीं ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन की दृढ़ता

निर्मलता के साथ एक सज्जन पुरुष को दृढ़ निश्चयी होना चाहिए । बार-बार अपने निश्चय को बदलने वाला व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से हल्का बेपेंदी का लोटा माना जाता है ।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अपने पिता महाराज दशरथ को कलंक से बचाने और भाइयों में प्रेम भाव बनाये रखने के उद्देश्य से राज्य त्यागकर और जब वन जाने का निश्चय कर लिया तो उस निश्चय पर वे अन्त तक हिमालय के समान डटे रहे । कोई भी उन्हें उनके निश्चय से डिगा न सका । यहाँ तक कि स्वयं महाराज दशरथ अनेक प्रकार की उक्तियाँ बताकर उन्हें वन जाने से रोकते हैं, लेकिन राम रुके नहीं –

रायँ राम राखन हित लागी ।
बहुत उपाय किए छलु त्यागी ॥
लखी राम रुख रहत न जाने ।
धरम धुरंधर धीर सयाने ॥

मन की निर्मलता और दृढ़ निश्चयता के कारण राम महान कहे गये - सद्गुण हर मनुष्य को श्रेष्ठ बनाते हैं । जीव ईश्वर का अंश हैं, लेकिन माया के वश में होने के कारण वह कीर मरकट के समान बँधा है –

ईश्वर अंस जीव अविनासी ।
चेतन अमल सहज सुखरासी ॥
सो माया बस भयउ गोसाईं ।
बँध्यो कीर मरकट की नाईं ॥

विमल बुद्धि प्राप्त करने के लिए मन को निर्मल करना पड़ेगा –

नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा ।
निर्मल मन अहीर निज दासा ॥
परम धर्ममय पय दुहि पाई ।
अवटै अनल अकाम बनाई ॥

मानसिक रोग मन की मलीनता के कारण बनते हैं, उन्हीं रोगों से सारा संसार दुःखी होकर नाना प्रकार के कष्ट सहन करता है । उत्तरकाण्ड में काकभुसुण्ड जी ने पक्षिराज गरुड़ से उनका वर्णन किया है –

सुनहु तात अब मानस रोगा ।
जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा ॥
मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला ।
तिन्ह तें पुनि उपजहिं बहु सूला ॥
काम बात कफ रोग अपारा ।
क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥
प्रीति करहि जौ तीनिउ भाई ।
उपजइ सन्यपात दुखदाई ॥

रोगरहित मन ही निर्मल और दृढ़ हो सकता है । यह व्यक्ति की साधना, आत्म-कल्याण तथा सबसे बड़ी तपश्चर्या है । इसीलिए ऐसे मन को त्राण की उपमा दी गई है जिसमें दूसरों पर विजय पाने वाले वाण सुरक्षित रूप से रखे जाते हैं । नवधा भक्ति के प्रसंग में भगवान् राम ने स्वयं अपने श्रीमुख से मन की निर्मलता को भक्ति का सर्वोच्च सोपान और अपने को प्राप्त करने का सरलतम मार्ग बताया है –

नवम सरल सब सन छलहीना ।
मम भरोस हियँ हरष न दीना ॥

संयम और नियम

'संयम नियम सिलीमुख नाना ।'

विजय रथ के प्रसंग में यम और नियमों को बाणों से उपमा की बात को हम वर्तमान समय के उदाहरणों से अक्षरशः सत्य मान सकते हैं । तरकस के बाण, रखने वाले की रक्षा और उसके द्वारा युद्धस्थली में विजय के लिए होते हैं । पाँच यम और पाँच नियम इन दस की साधना करने वाला व्यक्ति संसार को विजय करने की शक्ति रखता है । राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने इन दसों में से केवल दो - सत्य और अहिंसा को भारत को स्वतन्त्र कराने वाले संग्राम में अपना अस्त्र बनाया था । हमने देखा कि दस में से केवल दो का पूरी तरह अवलम्बन लेकर महात्मा जी ने संसार भर पर छाई अंग्रेज जाति को भारत से हट जाने के लिए विवश कर दिया । उन्होंने केवल भारत को स्वतंत्र ही नहीं कराया वरन् अपनी शक्ति से सम्पूर्ण विश्व को हिला दिया । वे विश्वमानव और अमित शक्तिशाली बने । पैदल, वायु तथा समुद्री शक्ति के प्रभु इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री और सम्राट के भारतीय प्रतिनिधि वायसराय साबरमती के छोटे झोंपड़े में बैठे निहत्थे गाँधी की ओर आशा और कामना भरी दृष्टि से निहारा करते थे । महात्मा गाँधी पर अनेकों चोटें आईं, प्रहार हुए, विपत्तियाँ पड़ी, लेकिन अहिंसा और सत्य की ढाल से वे सदैव बचे रहे । विजय उन्हीं की हुई ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब दस दिव्यास्त्रों में से दो को धारण कर महात्मा राष्ट्रपिता और युगपुरुष गाँधी बन सकता है तो यम और नियम के दसों दिव्यास्त्रों को धारण करने वाला व्यक्ति कितना महान बन सकता है, इसकी कल्पना पाठक स्वयं कर सकते हैं –

गुरु तथा ब्राह्मणों के प्रति पूज्य भावना रखना

कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा ।
एहि सम विजय उपाय न दूजा ॥

एक सैनिक के पास अस्त्र शस्त्रों के साथ शरीर के बचाव के साधन होने की अनिवार्य आवश्यकता होती है । इसके लिए वह लोहे का कवच धारण करके अपने कोमलांगों को ढक लेता है ताकि शत्रु की चोटों को उन्हीं पर रोक कर शरीर को क्षत-विक्षत होने से बचा ले ।

संसार रूपी समर-स्थली में लोहे की कवच से अपने को नहीं बचाया जा सकता । यहाँ का युद्ध तो सप्त-वर्षीय नहीं वरन् शत वर्षीय होता है । जन्म से मृत्यु पर्यन्त व्यक्ति को चोबीसों घण्टे मोर्चे पर डटा रहना पड़ता है । बचाव के लिए ऐसे कवच की आवश्यकता है जो संसार की विभिन्न प्रकार की चोटों से रक्षा करता रहे । इसके लिए समाज का बुद्धिजीवी विचारक वर्ग ब्राह्मण तथा गुरु ये दो मुख्य रूप से उत्तरदायी और समर्थ माने गये हैं । जिन्हें सौभाग्य से श्रेष्ठ प्रकार के इन दो का सहयोग और संरक्षकता मिल जाती है, वे संसार की समरस्थली में विभिन्न प्रकार की चोटों को सहते हुए अपने को बचाते जाते है ।

वास्तव में रामायण-काल में यह बात सत्य थी और वर्तमान काल में भी उसी भाँति सत्य है कि –

जो गुरु पद अंबुज अनुरागी ।
ते लोकहु वेदहु बड़भागी ॥

गुरु के चरणों में सच्चा अनुराग रखने वाला व्यक्ति संसार में सफल जीवन व्यतीत करता है, उसके आचरण वेदानुकूल होते हैं और सच्चे अर्थों में वहीं मनुष्य शरीर धारण करने का सच्चा लाभ प्राप्त करता है । गुरु के प्रति अशिष्ट भावना के जन्म के साथ सुख, सम्पत्ति और सफलता हमसे कोसों दूर भाग जाती है ।

लंका-विजय पर वानर, भालु और राक्षस सम्राटों के साथ पुष्पक विमान पर बैठकर अयोध्या वापस आने वाले राम की स्थिति बदल चुकी थी । रावण-बध के साथ उन्हें संसार का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति होने का स्थान प्राप्त हो चुका था । चौदह वर्ष पूर्व बल्कल वस्त्र धारण करके वन की ओर जाने वाले राम, चौदह वर्षो के बाद संसार विजेता बनाकर आकाश मार्ग से अयोध्या की ओर लौट रहे थे । उनकी स्थिति कितनी बदल चुकी थी? करोड़ों की संख्या में अवध के नर नारी दीप आरती लेकर सरयू के किनारे खड़े होकर आकुल हृदय और सजल नेत्रों से दक्षिण दिशा की ओर ताक रहे थे ।

अवध भूमि पर स्वागत के लिए उमड़े जन-समुद्र की अगली पंक्ति में गुरु वशिष्ठ, वामदेव आदि पूज्यगण खड़े थे । पुष्पक विमान से कपीश और लंकेशों के साथ उतरने वाले प्रभु राम की दृष्टि जैसे ही सम्मुख खड़े गुरुजनों पर पड़ी, वे प्रभुता का आवरण दूर फेंक कर बालक के समान गुरुजनों के चरणों में लोट जाते हैं । गुरु के चरणों स्पर्श के समय उनकी स्थिति में तनिक भी अहम् भाव नहीं था । राम के स्वागत में खड़ा अपार जनसमुद्र इस प्रकार था –

राका ससि रघुपति पुर सिन्धु देखि हरषान ।
बढ्यों कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान ॥

लेकिन गुरुजनों को देखकर राम की अवस्था बदल गई -

बामदेव वसिष्ठ मुनिनायक ।
देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥
धाइ धरे गुरु चरन सरोरुह ।
अनुज-सहित अति पुलक तनोरुह ॥

राम धनुष-बाण फेंक कर दौड़ कर गुरु के चरणों पर लोट गये थे । सब से मिल भेंट कर राम ने अपने साथ आये हुए सब सखाओं को गुरु के चरणों पर शीश धरने को कहा और उनकी महानता का वर्णन किया –

लंकापति कपीस नल नीला ।
जामबन्त अंगद सुभसीला ॥
हनुमदादि सब बानर बीरा ।
धरे मनोहर मनुज सरीरा ॥
पुनि रघुपति सब सखा बोलाए ।
मुनि पद लागहु सकल सिखाए ॥
गुरु वसिष्ठ कुल पूज्य हमारे ।
इन्ह की कृपा दनुज बन मारे ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

राम ने जो कुछ भी अद्वितीय कार्य वन में किया था, वह सब गुरु की कृपा से किया था। इसीलिए भगवान श्रीराम ने विजय-रथ के प्रसंग में विप्र और गुरुजनों की पूजा को अभेद कवच की उपमा दी है। अभेद कवच धारण करने वाला सैनिक सब प्रकार के घातक प्रहारों से सुरक्षित रहता है—

सखा धर्ममय अस रथ जाके।
जीतन कहुँ न कतहु रिपु ताके॥
महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सोई बीर।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर॥

जिसका आचरण उपरोक्त सद्गुणों के अनुकूल होता है जो व्यक्ति धर्म की मर्यादा में आन्तरिक रूप से सद्गुण सम्पन्न हो उसके लिए यदि सम्पूर्ण जगत भी शत्रु बन जाये तो वह उसको जीत सकने की सामर्थ्य रखता है। इसलिए भौतिक रूप से धन और संग्रह के प्रलोभन में अधिक न पड़ कर हमें अपनी सन्तानों को सद्गुणी और धर्मानुकूल आचरण वाली बनाना चाहिये। राम के जीवन से हमें यही शिक्षा और प्रेरणा मिलती है। भारतवासी ऐसा करके ही श्रेष्ठता के सोपान को स्पर्श कर सकेंगे।

प्रभु राम हमें सामर्थ्य और शक्ति प्रदान करें।

ooo

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भक्तियोग

अरण्यकाण्ड में एक प्रसंग आता है -

एक बार प्रभु सुख आसीना ।
लछिमन बचन कहे छलहीना ॥
सुर नर मुनि सचराचर साईं ।
मैं पूछउँ निज प्रभु की नाईं ॥
मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा ।
सब तजि करौं चरन रज सेवा ॥
कहहु ग्यान बिराग अरु माया ।
कहहु सो अगति करहु जेहि दाया ॥
ईश्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौ समुझाई ।
जातें होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ ॥

लक्ष्मण ने सुखासीन भगवान राम से छलरहित होकर कुछ प्रश्न पूछे कि "हे प्रभु ! मुझे समझाकर वही कहिए जिससे मैं सर्वभाव से आपके चरणों की सेवा करूँ । ज्ञान-विज्ञान और माया का वर्णन कीजिए और उस भक्ति को कहिये जिससे आप दया करते हैं ।"

प्रभु राम ने विस्तार से लक्ष्मण को समझाते हुए बताया कि –

धर्म ते बिरति जोग ते ग्याना ।
ग्यान मोच्छप्रद वेद बखाना ॥
जाते बेगि द्रवउँ मैं भाई ।
सो मम भगति भगत सुखदाई ॥

"अनुकूल आचरण से वैराग्य भाव उत्पन्न होता है और योग से ज्ञान होता है । ज्ञान मोहप्रद है । लेकिन भक्ति से प्रभु शीघ्र द्रवीभूत होते हैं ।" रामायण पर विश्वास रखने वाले पाठकगण भक्ति पर विशेष बल देते हैं । गोस्वामी तुलसीदास जी ने भक्ति पक्ष का समर्थन करने के लिए ही रामायण की रचना की । मानस का सर्वोपरि स्वर 'ईश्वर-भक्ति' ही है लेकिन जिससे प्रभु शीघ्र प्रसन्न होते हैं उस भक्ति का स्वरूप क्या है ? वह कैसे प्राप्त की जा सकती है ? लक्ष्मण को उत्तर देते हुए भगवान ने अपनी भक्ति का स्वरूप बताया –

सो सुतन्त्र अवलम्ब न आना ।
तेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना ॥

"यद्यपि ज्ञान मोक्षप्रद है, लेकिन भक्ति स्वतन्त्र है, ज्ञान और विज्ञान सब उसके आधीन हैं ।" इसका अर्थ यह हुआ कि एक सच्चे भक्त को पूर्ण ज्ञानी और विज्ञानी दोनों बन जाना चाहिए । जो भक्त है वह ज्ञानवान भी होगा । भक्ति मूढ़ता संकुचित बुद्धि अथवा केवल राम नाम जप करना मात्र ही नहीं है । ज्ञान और विज्ञान पर प्रभुता रखने वाली भक्ति ही कल्याणकारी हो सकती है –

भगति तात अनुपम सुखमूला ।
मिलइ जो संत होईं अनुकूला ॥

जिस भक्ति से ज्ञान और विज्ञान रूपी दो नेत्र खुल जाते हैं जिस भक्ति से मनुष्य त्रिकालदर्शी और प्रज्ञाचक्षु बन जाता है, उसकी प्राप्ति से वाणी पर सरस्वती विराजती है, हृदय कपाट खुल जाते हैं मस्तिष्क पर तेज आ जाता है । भक्त की चाल-ढाल बात-चीत, रहन-सहन समस्त प्रकार के क्रिया-कलापों में एक प्रकार का अद्वितीय आकर्षण पैदा हो जाता है । लोग स्वभावतया लोहे के समान उस भक्त के चुम्बकत्व की ओर खिंचने लगते हैं । उसी को अनुपम सुखमूल कहा है । ऐसी भक्ति पारसमणि और अमृत से अधिक मूल्यवान हैं, जिसके कारण वास करेगी वही स्वप्रकाशित, सुखनिधान, ज्ञानभण्डार और भीतर-बाहर से पवित्र रहेगा । गोस्वामी जी ने इसी भक्ति को सर्वश्रेष्ठ बताया है ।

नवधा भक्ति में शबरी को उपदेश देते हुए भगवान ने प्रथम साधन सत्संगति को बताया है –

प्रथम भगति संतन कर संगा ।

संतों की संगति भक्ति प्राप्ति का प्रथम साधन है । प्रश्न आता है संत किनको माना जाए जिनकी संगति से भक्ति मिलती है ? क्या संन्यासी अथवा साधु वेषधारियों को संत मान लिया जाए अथवा गुण या लक्षण के आधार पर उन्हें पहिचाना जाए ?

भक्ति की पहली कक्षा - सत्संग

सन्त की पहिचान करना बड़ा कठिन है । नारद जैसे सिद्ध और सच्चे सन्त भी उनकी पहिचान नहीं कर पाते । सीताहरण के पश्चात् जब श्रीरामचन्द्र जी शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश देकर पम्पा सरोवर पर पहुँचे तो नारद जी ने आकर उनकी स्तुति की और भगवान से स्वयं सन्त के लक्षण पूछे–

संतन्ह के लच्छन रघुबीरा ।
कहहु नाथ भव भंजन भीरा ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवान ने सन्त के उन लक्षणों को नारद जी को बताया जिनके वंश होकर वे सन्त के आधीन रहते हैं –

सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ ।
जिन्ह ते मैं उन्ह के बस रहऊँ ॥
षट बिकार जित अनघ अकामा ।
अचल अकिंचन सुचि सुखधामा ॥
अमित बोध अनीह मित भोगी ।
सत्यसार कबि कोबिद जोगी ॥

सन्त काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर इन छः विकारों या दोषों को जीतकर पापरहित, कामनारहित, निश्चल (स्थिर बुद्धि), अकिंचन बाहर-भीतर से पवित्र, सुख के धाम, असीम ज्ञानवान,इच्छा रहित, मिताहारी, सत्यनिष्ठ, कवि, योगी तथा –

सावधान मानद मदहीना ।
धीर धर्मगति परम प्रबीना ॥
गुनागार संसार दुख रहित बिगत संदेह ।
तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहुँ देह न गेह ॥

सावधान, दूसरों को मान देने वाले, अभिमानरहित, धैर्यवान, धर्म के ज्ञान और आचरण में अत्यन्त निपुण, गुणों के घर, संसार के दुःखों से रहित और सन्देहों से सर्वथा छूटे हुए होते हैं । मेरे अर्थात् ईश्वर के चरणों में निष्ठा के अतिरिक्त उन्हें देह और गेह की भी सुधि नहीं रहती ।

उपर्युक्त वर्णन में सन्त में संसार के आदर्श व्यक्ति के समस्त गुणों का समावेश हो जाता है । काम, क्रोध और मोह पर विजय प्राप्त करना सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ है । जिस व्यक्ति में इतने गुणों का समावेश हो जाएगा वह तो पारसमणि के समान लोहे को सोना कर देने की शक्ति रखेगा । इतने गुणों से सम्पन्न व्यक्ति का आचरण कैसा होता है, यह आगे की चौपाईयों में बताया गया है –

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं ।
पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं ॥
सम सीतल नहि त्यागहिं नीती ।
सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती ॥
जप तप ब्रत दम संजम नेमा ।
गुरु गोबिन्द बिप्र पद प्रेमा ॥
श्रद्धा क्षमा मयत्री दाया ।
मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥
बिरत बिवेक बिनय बिग्याना ।
बोध जथारथ बेद पुराना ॥
दंभ मान मद करहिं न काऊ ।
भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ॥
गाबहिं सुनहिं सदा मम लीला ।
हेतु रहित परहित रत सीला ॥

सन्त कानों से अपनी प्रशंसा सुनने में सकुचाते हैं, लेकिन दूसरों के गुण सुन कर विशेष हर्षित होते हैं । वे सदैव शान्त भाव से मृदु रहते हैं, लेकिन कठिन से कठिन परिस्थिति में भी नीति का त्याग नहीं करते । सरल स्वभाव के होते हैं और सभी से उनका स्वाभाविक प्रेम होता है। वे सदैव शुभ आचरण जप, तप, व्रत, दम, संयम और नियम में रत रहते हैं । गुरु, ईश्वर तथा ब्राह्मणों के चरणों में उनका स्वाभाविक अनुराग होता है । उनमें श्रद्धा, क्षमा, मैत्री, दया, मुदिता, प्रसन्नता और निष्कपट व स्वार्थरहित प्रेम होता है । उन्हें वैराग्य, विवेक, विनय, विज्ञान और वेद पुराणों का यथार्थ ज्ञान रहता है । दम्भ, अभिमान और मद कभी नहीं करते और भूल कर भी कभी कुमार्ग पर पैर नहीं रखते । सदा ईश्वर के गुणों और लीलाओं को गाते-सुनते हैं और बिना कारण ही स्वभाव से दूसरों के हित में लगे रहते हैं । इतने से ही सन्तों के गुणों की इतिश्री नहीं होती । भगवान कहते हैं कि –

मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते ।
कहि न सकहिं सारद श्रुति तेते ॥

श्रेष्ठ जनों के गुणों की कोई सीमा नहीं बाँधी जा सकती । हजार फनों वाले शेषनाग जी और बुद्धि की देवी सरस्वती भी उनके गुणों का वर्णन नहीं कर सकती । सज्जनों के गुण जन्मजात नहीं होते, वे तो साधन से क्रमशः अर्जित किये जाते हैं, फिर उनकी सीमा कैसे बाँधी जाए ? व्यक्ति साधना करते-करते ईश्वर तक बन जाता है ।

सन्तजन अपने प्रति अहित करने वाले को भी हानि पहुँचाने अथवा अपनी सेवाओं के लाभ से वंचित रखने की चेष्टा नहीं करते । परहित-भावना उनका स्वाभाविक गुण होता है –

संत बिटप सरिता गिरि धरनी ।
परहित हेतु सबन्ह कै करनी ॥

सन्त, वृक्ष, नदि, पहाड़ और धरती की स्वाभाविक क्रियाएँ परहित के लिये होती हैं । जो इन पर ईंट और रोड़े फैंकते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं, नाना प्रकार के उत्पात करते हैं, डंडे मारते हैं, उन्हें भी अपना फल देने में वे लोग संकोच नहीं करते –

बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे ।
खल के बचन संत सहँ कैसे ॥

जिस प्रकार बूँदों के आघात को पहाड़ शान्त भाव से सह लेते हैं । सच्चे संत दुष्टों के दुर्वचनों को अप्रभावित होकर सह लेते हैं । वे अपनी मर्यादा का त्याग कभी नहीं करते ।

संत हृदय नवनीत समाना ।
कहा कविन्ह परि कहै न जाना ॥
निज परिताप द्रवइ नवनीता ।
परहित द्रवहिं संत सुपुनीता ॥

सन्तों का हृदय मक्खन के समान होता है, ऐसा कवियों ने कहा है, परन्तु उलकी उपमा ठीक नहीं उतरती, क्योंकि मक्खन तो अपने को ताप मिलने से पिघलता है, परन्तु पवित्र सन्तों के हृदय दूसरे के दुःख से पिघलते हैं । श्रेष्ठ कर्म का परिणाम भी श्रेष्ठ होता है । सन्त अपने कर्म से सदैव के लिये श्रेष्ठ माने जाते हैं और दुष्ट सदैव के लिये नीच । जिस प्रकार चन्दन तो देवताओं के शीश पर चढ़ता है, लेकिन कुल्हाड़ी अग्नि में डालकर पीटी जाती है –

ताते सुर सीसन्ह चढ़त जग बल्लभ श्रीखंड ।
अनल दाह पीटत घनहिं परसु बदन यह दंड ॥

सन्त मानव समाज के मुकुट होते हैं और नीच लोग समाज के कलंक । कहावत है –

तीन सजावत देश को सती संत और सूर ।
तीन लजावत देश को कपटी कायर क्रूर ॥

संत कैसे होते हैं –

विषय अलम्पट सील गुनाकर ।
परदुख दुख सुख सुख देखे पर ॥
सम अभूत रिपु बिमद बिरागी ।
लोभामरष हरष भय त्यागी ॥
कोमल चित दीन्हह पर दाया ।
मन बच क्रम मम भगति अमाया ॥
सबहिं मान प्रद आपु अमानी ।
भरत प्रान सम सम ते प्रानी ॥
बिगत काम मम नाम परायन ।
सांति बिरती बिनती मुदितायन ॥
सीतलता सरलता मयत्री ।
द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री ॥
ए सब लच्छन बसहिं जासु उर ।
जानेहु तात संत संतत फुर ॥
सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं ।
परुष बचन कबहूँ नहिं बोलहिं ॥
निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पदकंज ।
ते सज्जन मम प्रानप्रिय गुन मंदिर सुखपुंज ॥

सन्त विषयों में लिप्त न होकर शील और सद्गुणों की खान होते हैं । उन्हें पराया दुःख देखकर दुःख और पराया सुख देखकर सुख होता है । वे प्रत्येक स्थिति में ममता रखने वाले होते हैं । किसी को वे अपना शत्रु नहीं समझते, मद से रहित और वैराग्यवान होते हैं तथा लोभ, क्रोध, हर्ष और भय का सर्वथा त्याग किए होते हैं । उनका चित्त बड़ा कोमल होता है। वे दीनों पर दया करते हैं तथा मन, बचन, कर्म से ईश्वर की भक्ति में रत रहने वाले होते हैं । स्वयं तो मानरहित परन्तु सबको सम्मान देने वाले होते हैं । भगवान कहते हैं कि ऐसे ही स्वभाव वाले प्राणी उन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय होते हैं। वे कामनारहित, ईश्वर के सहारे पूर्ण शान्ति वैराग्य विनय और प्रसन्ता के घर होते हैं । उनमें शीतलता सरलता सबके प्रति मित्रभाव और ब्राह्मणों के चरणों में प्रीति होती है, जो धर्मों को उत्पन्न करने वाली है ।

जिन लोगों में ये लक्षण पाये जाएँ उन्हीं को सच्चा सन्त मानना चाहिए । सन्त शम, दम, नियम और नीति से कभी विचलित नहीं होते और मुख से कभी कठोर बचन नहीं बोलते । उन्हें निन्दा और स्तुति दोनों समान रहते हैं । ऐसे ही सद्गुणों के धाम और सुख की राशि सन्तजन भगवान को प्राणों के समान प्रिय होते हैं ।

भरत ने तुलनात्मक दृष्टि से सन्त और असन्त के भेद जानने की कामना भगवान से प्रकट की थी । उपर्युक्त पंक्तियों में भगवान ने सन्तों के लक्षण तो बता दिये, लोकिन जब तक असन्तों के स्वभाव से उनकी तुलना न की जाए इन गुणों का महत्व प्रकट न होगा । असन्त के लक्षण –

सुनहुँ असंतन्ह केर सुभाऊ ।
भूलेहु संगति करिउ न काऊ ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तिन्ह कर संग सदा दुखदाई ।
जिमि कपिलहिं घालइ हरहाई ॥
खलन्ह हृदय अति ताप बिसेषी ।
जरहिं सदा पर संपति देखी ॥
जहँ कहुँ निंदा सुनहिं पराई ।
हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई ॥
काम क्रोध मद लोभ परायन ।
निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥
बयरु अकारथ सब काहू सो ।
जो कर हित अनहित ताहू सो ॥
झूठइ लेना झूठइ देना ।
झूठइ भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा ।
खाइ महा अहि हृदय कठोरा ॥
परद्रोही परदार रत परधन पर अपबाद ।
ते नर पाँवर पापमय देह धरें मनुजाद ॥

भगवान ने असन्तों के लक्षण बताते हुए कभी भूल कर भी उनकी संगत न करने को कहा है क्योंकि उनका संग सदा दुःख देने वाला होता है जैसे हरिहा या बुरी जाति की गाय कपिला (श्रेष्ठ और दुधार) गाय को अपने संग में नष्ट कर डालती है ।

असन्तों अथवा दुष्टों की सबसे प्रथम विशेषता यह है कि उनके हृदय में बहुत अधिक संताप रहता है वे परायी सम्पत्ति या सुख देख कर सदा जलते रहते हैं । जहाँ कही दूसरों की निन्दा होते सुनें उन्हें इतना हर्ष होता है मानों मार्ग में पड़ी निधि पा ली हो । अपना सब काम छोड़ कर वहीं रुक जाएँगे । निन्दा सुनते ही उनके चेहरे पर प्रसन्नता छा जायेगी वे सांगोपांग रूप से काम, क्रोध, मद और लाभ के परायण तथा निर्दयी कपटी कुटिल और पापों के घर होते हैं । अकारण सबसे बैर करना उनका स्वभाव होता है । यहाँ तक कि जो उनके साथ भलाई का व्यवहार करे, उसके प्रति भी बुराई करने में नहीं चूकते । मोर की तरह उनकी बोली तो मधुर होती है पर हृदय अत्यन्त कुटिल और कठोर होता है । दूसरों से द्रोह करना, परायी स्त्री, पराये धन तथा परायी निन्दा में आसक्त रहना उनका कर्म होता है । ऐसे नीच और पापी मनुष्य नर-शरीर धारण किए हुए राक्षसों के समान होते हैं —

लोभइ ओढ़न लोभइ डासन ।
सिस्नोदर पर जमपुर त्रासन ॥
काहू की जो सुनहिं बड़ाई ।
स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
जब काहू कै देखहिं बिपती ।
सुखी भए मानहु जग नृपती ॥
स्वारथ रत परिवार बिरोधी ।
लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥
मातु पिता गुरु बिप्र न मानहिं ।
आपु गए अरु घालहिं आनहिं ॥
करहिं मोह बस द्रोह परावा ।
सत संग हरि कथा न भावा ॥
अवगुन सिंधु मंदमति कामी ।
वेद विदूषक परधन स्वामी ॥
बिप्रदोह परद्रोह बिसेषा ।
दंभ कपट जियँ धरे सुवेषा ॥

असन्तगणों का लोभ ही ओढ़ना और लोभ ही बिछौना होता है । अर्थात् वे सदैव लोभ से घिरे रहते हैं । पशुओं के समान आहार और मैथुन में पूरी तरह से मग्न, मृत्यु के बाद यमपुर में होने वाले अशुभ कर्मों के लिए त्रास अथवा दण्ड का उन्हें तनिक भी भय नहीं होता । यदि किसी की बड़ाई उनके कानों में पड़ जाय तो वे ऐसे दुःखी होकर लम्बी-लम्बी साँसें भरने लगेंगे मानो जूड़ी आ गयी हो । लेकिन जब किसी की विपत्ति देखें या कानों से सुन लें तो ऐसे सुखी होते हैं मानो जगत भर का राज्य उन्हें मिल गया हो । ऐसे लोग स्वार्थ के परायण होते हैं, परिवार के लोगों के साथ भी विरोध करने में संकोच नहीं करते । काम और क्रोध के वशीभूत होने के कारण वे लंपट और अत्यन्त क्रोधी होते हैं ।

ऐसे अवगुणों की खान दुष्टजनों से केवल भरत को बचने के लिए भगवान ने उपदेश नहीं दिया वरन् उनके माध्यम से संसार की दैवी प्रवृत्तियों के उपासक सभी श्रेष्ठजनों को सन्मार्ग का ज्ञान कराया । मानव शरीर धारण का लक्ष्य उससे पूरा नहीं होता । परहित में रत रहना सबसे बड़ा धर्म है —

परहित सरिस धरम नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अघमाई ॥
निर्भय सकल पुराण वेद कर ।
कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समस्त पुराणों और वेदों का यह निश्चित प्रतिपाद्य सिद्धान्त है कि दूसरों की भलाई के समान कोई दूसरा धर्म नहीं और दूसरों को दुःख पहुँचाने के समान कोई नीचता या पाप नहीं। इस तथ्य को पंडित अथवा ज्ञानी लोग समझते हैं। समस्त जीवधारियों में श्रेष्ठ मानव शरीर पाकर उससे शुभ कर्म ही करना चाहिए अशुभ नहीं –

नर सरीर धरि जे पर पीड़ा ।
करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ॥
करहिं मोह बस नर अघ नाना ।
स्वारथ रथ परलोक नसाना ॥

मनुष्य का शरीर धारण करके जो लोग दूसरों को दुःख पहुँचाते हैं, उन्हें जन्म मृत्यु के महान संकट सहने से मुक्ति नहीं मिल सकती ।

मनुष्य मोह के वशीभूत होकर स्वार्थपरायणता से अनेकों पाप करते हैं, इसी से उनका परलोक नष्ट होता है –

काल रूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता ।
सुभ अरु असुभ कर्म फल दाता ॥

उन्हीं के लिए ईश्वर का भयंकर रूप प्रकट होता है । सबको अच्छे-बुरे कर्मों का फल अवश्य मिलता है। कोई निर्णय के परिणाम से बच नहीं सकता। "अश्वमेघ भोक्तव्यं कृत कर्म शुभाशुभम् ।" शुभ और अशुभ कर्मों के परिणामों से कोई बच नहीं सकता । उनका फल भुगतना ही पड़ेगा -

साईं पक्का बानिया सहज करै व्योपार ।
बिन डाँड़ी बिन पालड़ा तोलै सब संसार ॥

सुजन समाज सकल गुन खानी ।
करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥

जिस देश में ऐसे सन्तों का समाज होता है, वह देश धन्य है। गोस्वामी जी ने रामायण लिखने के पूर्व इन लोगों की वन्दना की है -

साधु चरित सुभ चरित कपासू ।
निरस बिसद गुनप्रद फल जासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा ।
बंदनीय जेहिं जग जस पावा ॥

सन्तों का चरित्र कपास के समान ऊपर से तो नीरस, परन्तु भीतर से स्वच्छ, पवित्र, निर्मल और लाभप्रद होता है। वे मीठी और चिकनी चुपड़ी बातें भले ही करें, लेकिन ठोस रूप से समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होते हैं । अपने को अनेक कष्टों में डाल कर ऐसे लोग दूसरों के दोषों को छिपाते हैं। उनके दूर करने का प्रयास करते है परन्तु उन्हें दूसरों के सामने बदनाम नहीं होने देते । इसीलिए ऐसे लोग संसार में यश और कीर्ति पाते हैं, सम्पूर्ण संसार उनकी पूजा करता है ।

भक्ति-पथ की प्रथम कक्षा ऐसे श्रेष्ठ लोगों की संगति करना है जिन लोगों ने अपने को साधना, सेवा, परोपकार तथा तपश्चर्या की भट्टी में तपा कर पूर्ण मानव बना लिया हो । भला उनके सम्पर्क में आने से कलुषित से कलुषित हृदय वाला व्यक्ति भी अप्रभावित हुए बिना कैसे रह सकता है ? पवित्रता की ज्योतिपुंज ऐसे व्यक्ति के चारों ओर छिटकी रहती है। जो भी उनके समीप जाएगा, अप्रभावित नहीं रह सकता । ऐसे ही समाज की संगति की महान् महिमा रामायण में मुक्तकण्ठ से गायी गई है और उसे चलता-फिरता तीर्थराज प्रयाग बताया गया है –

मुद मंगल मय संत समाजू ।
जो जग जंगम तीरथ राजू ॥
बदु विश्वास अचल निज धरमा ।
तीरथराज समाज सुकरमा ॥
अकथ अलौकिक तीरथराऊ ।
देह सद्य फल प्रकट प्रभाऊ ॥
सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ॥

सत्संग की महिमा पर किसी को आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं। श्रेष्ठता के आकर्षण में पारसमणि के समान शक्ति होती है जो लोहे को स्पर्शमात्र से सोना बना देती है । गोस्वामी जी ने कहा है –

मज्जनु फल देखिअ तत्काला ।
काक होहिं पिक बकउ मराला ॥

भगवान बुद्ध के सम्पर्क में आने वाला अंगुलिमाल डाकू बौद्ध जगत का श्रेष्ठ महात्मा बन गया । गाँधी जी के सम्पर्क में आने वाले न जाने कितने दुष्ट प्रकृति के लोग स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी, देशभक्त तथा उच्चकोटि के समाज-सुधारक बन गये ।

इस प्रकार के सत्संग करने के लिए रामायण में भक्तियोग के प्रसंग में कहा है जिसकी एक छींट एक कण मिल जाने से प्राणी तुच्छ से महान्, अणु से विभु, लघु से उच्च और आत्मा से परमात्मा बन जाता है –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक घरी आधी घरी आधी में पुनि आधि ।
तुलसी संगत साधु की कटइ कोटि अपराध ॥

क्षणमात्र के ऐसे सत्संग से अनेक जन्मों के पाप कट जाते हैं ।

सत्संग की महिमा से पुराणों, दर्शनों और महाकाव्यों के पन्ने के पन्ने भरे पड़े हैं । सत्संग की महिमा का प्रतिपादन करने वाली एक कथा विश्वामित्र और वशिष्ठ जी के सम्बन्ध में आती है । एक बार वशिष्ठ जी विश्वामित्र जी के यहाँ गये । उन्होंने वशिष्ठ जी को अपना पूज्य अतिथि मानकर बड़ा स्वागत-सत्कार किया और विदा होते समय अपने जीवन भर की तपश्चर्या को उन्हें भेंट स्वरूप प्रदान कर दिया ।

कुछ समय बाद विश्वामित्र जी वशिष्ठ जी के अतिथि बने । स्वागत-सत्कार तो वशिष्ठ जी ने खूब किया, लेकिन चलते समय उन्हें केवल अपने एक दिन के सत्संग का पुण्य फल ही भेंट किया । वह तुच्छ भेंट विश्वामित्र जी को बहुत अखरी । उन्हें वशिष्ठ जी द्वारा अपमान हुआ जान पड़ा । उन्होंने अपने जीवन भर के तप को दे डाला और मिला केवल एक दिन के सत्संग का फल ।

वशिष्ठ जी इसे ताड़ गये । वे विश्वामित्र जी को लेकर इसका निर्णय कराने शेषनाग जी के पास गये । दोनों ने अपने मन की बात शेष जी को सुनायी । वे चुपचाप सुनते रहे । तत्पश्चात् दोनों को सम्बोधित कर कहा कि मैं तो पृथ्वी के भार को रोके हूँ, दबा जा रहा हूँ । आप दोनों में से कोई अपनी स्वार्जित शक्ति से इसे थोड़ी देर के लिए ले लेवें तो मैं निर्णय कर दूँ । विश्वामित्र जी अपनी जीवन भर की तपश्चर्या से बढ़ कर पृथ्वी को रोकने चले, परन्तु कुचलने लगे । तब वशिष्ठ जी की ओर शेष जी ने ताका । एक दिन के सत्संग की शक्ति को लेकर वे आगे बढ़े तो पृथ्वी को शेष जी के शीश से उठा कर अपने हाथों पर थाम लिया ।

इसे देख कर शेषनाग जी ने पुनः उसे अपने शीश पर उठा कर कहा— तुम दोनों में बड़े छोटे होने का निर्णय हो गया ।

कहानी कहाँ तक सत्य है यह हम नहीं कह सकते, लेकिन यह अवश्य कह सकते हैं कि सत्संग के बिना किया गया जप-तप और अन्ध-विश्वास अपूर्णता का ही द्योतक होता है ।

इतने विस्तार से कहे जाने के बाद हम सच्चे सन्तों को पहिचानने में अवश्य सफल हो सकते हैं । गुण सम्पन्न, परहित में निरत महान् पुरुष के सत्संग के औचित्य का रामायण ने स्वीकार किया है । लेकिन सत्संग के नाम पर गंजेड़ी, भंगेड़ी, बमभोला, काहिली, अपाहिजी आलस्य तथा उन्माद से ग्रसित निकम्मे स्वभाव वाले परन्तु ऊपर से विरक्त साधुओं जैसे देष बना कर, दाढ़ी रखा कर भोले-भाले लोगों को धर्म के नाम पर ठगने वालों से बचने के लिए रामायण ने पुनः-पुनः चेतावनी दी है । आजकल ऐसे लोगों की कमी नहीं है । ऐसे ही लोग कलियुग के नामधारी सन्त कहलाते हैं ।

मिथ्यारंभ दंभरत जोई ।
ता कहुँ संत कहइ सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधन हारी ।
जो कह दंभ सो बड़ आचारी ॥
जो कह झूँठ मसखरी जाना ।
कलियुग सोइ गुणवंत बखाना ॥
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी ।
कलियुग सोइ ग्यानी सो बिरागी ॥
जाके नख अरु जटा बिसाला ।
सोइ तापस प्रसिद्ध कलि काला ॥
असुभ वेष भूषन धरे भच्छाभच्छ जे खाहिं ।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलियुग माहिं ॥

दूसरे का धन हरण करने वाला बुद्धिमान, दम्भ करने वाला आचारी, झूँठ बोलने तथा हँसी-दिल्लगी करने वाला समय का गुणवान माना जाता है । आचरणहीन यथा वेदमार्ग को त्यागने वाला ज्ञानी और वैराग्यवान माना जाता है । जिसके बड़े-बड़े नख और लम्बी-लम्बी जटाएँ हैं वही प्रसिद्ध तपस्वी है । विचित्र और कौतुकी वेष धारण करने वाले और भक्षाभक्ष पदार्थों का सेवन करने वाले लोग सिद्ध जोगी माने जाकर पूजे जाते हैं । उनके चारों तरफ दर्शकों, चरण छूने वालों, स्तुतिगान करने वाले नर-नारियों की भीड़ लगी रहती है ।

क्या ऐसे लोगों का सत्संग करने से भक्ति मिलेगी ? कभी नहीं रामायण इस विषय में हमें स्पष्ट रूप से चेतावनी देती है कि इनकी संगति सत्संग नहीं है कुसंग है। इनके सम्पर्क से लोक और परलोक दोनों का नाश होगा । इसलिए सावधान ! धर्म सत्संग अथवा भक्ति के नाम पर कहीं कपटजाल में न फँस जाना सन्तों की परख गुणों के आधार पर करो जो स्वयं प्रकाशित होंगे, वही दूसरों को प्रकाश दे सकेंगे । जिनमें ज्ञान होगा वही दूसरों को ज्ञान दे पायेंगे । नेत्र वाले ही नेत्रहीनों को मार्ग बता सकेंगे जब अन्धा अन्धे को मार्ग दिखाने का काम करेगा तो दोनों गड्ढे में गिरेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भक्ति की दूसरी कथा – कथा श्रवण

दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ।

भगवान ने भक्ति का दूसरा सोपान कथा-श्रवण को बताया है । सत्संग का प्रतिपाद्यविषय कथा श्रवण होना चाहिए । इसके भी दो भाग हैं, प्रथम– कथा तथा द्वितीय– प्रेरणादायक प्रसंग ।

भारतीय संस्कृति और धर्म में कथा-श्रवण को बड़ा महत्व दिया गया है । रामायण कथा, महाभारत कथा, सत्यनारायण कथा, भागवत पुराण कथा, सुखसागर और विश्रामसागर के रूप में अनेकों साप्ताहिक और मासिक कथाओं के सुनने की परिपाटी अति प्राचीन काल से चली आ रही है । प्राय: अधिकाँश हिन्दू परिवारों में पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण-व्रत कथा नियमित रूप से अवश्य सुनी जाती है । फाल्गुन, ज्येष्ठ तथा वैशाख के महीनों में गाँव-गाँव और नगर-नगर में साप्ताहिक भागवत-कथाओं के मण्डप लगे हुए दीख पड़ेंगे । रामायण-कथा का प्रचलन तो हर मास और हर दिन रहता है ।

धार्मिक ताने-बाने में कथा-श्रवण का इतना महत्व क्यों रखा गया है ? यह एक विचारणीय विषय है । हम सब जानते हैं कि मानव मस्तिष्क पर कहानियों और कथाओं के माध्यम से अधिक प्रभाव डाला जा सकता है। शुष्क उपदेश सब प्रकार के लोगों के लिए ग्राह्य नहीं हो पाते । उन्हें तो केवल कुछ प्रबुद्ध मस्तिष्क के लोग समझ सकने में समर्थ होते हैं ।

वेद मानव-जीवन के आचार संहिता, ज्ञान-विज्ञान के भण्डार और ईश्वरवाणी हैं । उन्हें सरल रूप देकर सैकड़ों की संख्या में उपनिषदों का निर्माण किया गया लेकिन जनसंख्या के विकास, खान-पान में परिवर्तन के साथ वह उपनिषदें भी लोक-शिक्षण के लिए उपयुक्त नहीं रहीं । तब दर्शनों की रचना हुई । तत्पश्चात् पुराणों का युग आया । जिनमें अनेक प्रकार की कथाओं का समावेश किया गया । राम, कृष्ण और अन्य अवतारों के चरित्र को माध्यम मानकर रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की रचना हुई ।

हमारे कान कुछ न कुछ सुनने के अभ्यस्त हैं । श्रवण का प्रभाव मानस पर पड़ता है, तदर्थ हमारी सम्पूर्ण क्रियाएँ वैसी ही बनती हैं । राम और कृष्ण की लीलाएँ भारतीय जन-जीवन पर व्यापक प्रभाव रखती हैं । क्वार के महीने में स्थान-स्थान पर रामलीलाएँ होती हैं । सावन भादों में कृष्ण-जन्माष्टमी और उनकी बाल-लीलाओं के आयोजन सर्वत्र देखने को मिलते हैं । प्राचीन काल में इन लीलाओं के प्रचलन का यही उद्देश्य था कि जनसाधारण इनके उदात्त चरित्रों के निकट सम्पर्क में रहें, उनका श्रवण करें। इन अवतारों के चरित्रों में युग परिवर्तन की सम्भावनाएँ छिपी हैं । राम और कृष्ण दोनों अपने बाल जीवन से ही प्रचलित रूढ़िवादी परम्पराओं, सर्वत्र व्याप्त आसुरी प्रवृत्तियों के विरुद्ध खड़े हुए । धर्म और परमार्थ की स्थापना उनकी लीलाओं का उद्देश्य रहा । इनके जीवन की एक-एक लीला और कहे गये प्रत्येक शब्द में मनुष्य की असीम शक्ति को जागृत और झंकरित करने की शक्ति भरी पड़ी है ।

यह दुर्भाग्य का विषय है कि इस भौतिकवादी युग में अधिकांश लोग सिनेमा, उपन्यास और चरित्र को पतन की ओर ले जाने वाले जीवन कृत्यों के सम्पर्क में तो रहते हैं लेकिन इस अवतारों की लीलाओं में छिपे रहस्य को जानने की चेष्टा नहीं करते । जो थोड़े लोग भक्ति भावना से प्रेरित होकर कथा-श्रवण करते हैं । वे केवल लीलाओं के चमत्कार अंग पर अधिक प्रेम दर्शाते हैं ।

हम इनके गुणों और कार्यों की ओर ध्यान नहीं देते, केवल अवतार मान कर उनका नाम जप करने की भूल कर बैठे हैं । यही कारण है कि हमारी जाति की प्रगति अवरुद्ध हो गई है । राम और कृष्ण के महान् चरित्रों को हमें इस रूप में श्रवण करने की आवश्यकता है। महापुरुषों के चरित्रों में भगवान के दर्शन कीजिए –

प्रभु व्यापक सर्वत्र समाना ।

संसार में जहाँ कहीं भी अच्छाईयाँ हैं वहाँ ईश्वर की शक्ति का उसी प्रकार दर्शन करना चाहिए । जैसे जहाँ कहीं भी प्रकाश है, सूर्य की उपस्थिति अवश्य है । हर देश के उन महान् नेताओं, धर्माचार्यों, वीरों, वैज्ञानिकों, समाज सुधारकों और किसी भी क्षेत्र में अपने कार्यकलापों से सामान्य लोगों को लाभ पहुँचाने वाले युगपुरुषों में ईश्वर का विशेष अंश विद्यमान रहा है । उनके चरित्रों को श्रवण करना भी भक्ति का द्वितीय सोपान मानना चाहिए । ईश्वर का अवतार किन्हीं विशेष और बड़े उद्देश्यों की पूर्ति के लिए होता है । उनके उद्देश्यों की पूर्ति में जो लोग सहायक बनें अथवा प्राणिमात्र को सतपथ की ओर ले जाने के लिए जो लोग बढ़े हैं, उनकी जीवन कथा में अलौकिक शक्ति रहती है । अपने जीवन की अनेक गुत्थियों, कठिनाइयों और आपदाओं को सुलझाने की प्रेरणा विश्वास और शक्ति हमें उनसे मिल जाती है ।

सिव दधीच हरिचन्द नरेसा ।
सहेउ धरम हित कोटि कलेसा ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रन्तिदेव बलि भूप समाना ।
धरम धरेउ सहि संकट नाना ॥
मैं सोइ धरम सुलभ करि पावा ।
तजेउ तिहुँ पुर अपजस छाया ॥

हरिश्चन्द्र, बालि, दधीचि आदि के उदाहरणों ने राम को धर्म के लिए अपार कष्टों को हँसते-हँसते सहन करने की प्रेरणा दी थी ।

रामायण में काकभुसुण्ड और पक्षिराज गरुड़ के प्रसंग को हम सभी जानते हैं । रावण के साथ युद्ध में नागपाश में बँधे हुए भगवान को जब पक्षिराज गरुड़ ने नागों से मुक्त किया तो सदैव से भगवान के पार्षद के रूप में रहने पर भी उन्हें भगवान की सर्वशक्तिमानता पर महान सन्देह हो गया —

जब रघुनाथ कीन्ह हरि क्रीड़ा ।
समुझत चरित होति अति बीड़ा ॥
इन्द्रजीत कर आपु बंधायो ।
तब नारद मुनि गरुड़ पठायो ॥
बन्धन काटि गयो उरगादा ।
उपजा हृदय प्रचण्ड बिषादा ॥
प्रभु बन्धन समुझत बहु भाँती ।
करत बिचार उरग आराती ॥
व्यापक ब्रह्म बिरजबा गीसा ।
माया मोह पार परमीसा ॥
सो अवतार सुनुउँ जग माहीं ।
देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं ॥
भव बन्धन ते छूटहिं नर जप जाकर नाम ।
खर्व निसाचर बाँधेउ नागपास सोइ राम ॥
नाना भाँति मनहिं समुझावा ।
प्रगट न ग्यान हृदयँ भ्रम छावा ॥
परमातुर बिहगपति तब आयउ मोपास ।
जात रहेउँ कुबेर गृह रहिहु उमा कैलास ॥
तेहि मम पद सादर सिरु नावा ।
पुनि आपन सन्देह सुनावा ॥
सुनि ताकर बिनती मृदु बानी ।
प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी ॥
बिनु सतसंग न हरिकथा तेहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गएँ बिनु रामपद होइ न दृढ़ अनुराग ॥
उत्तर दिसि सुन्दर गिर नीला ।
तहँ रह काकभुसुण्डि सुसीला ॥
राम कथा सोइ कहइ निरन्तर ।
सादर सुनहिं बिबिध बिहंगवर ॥
जाइ सुनहु तहँ हरिगुन भूरी ।
होइहि मोह जनित दुख दूरी ॥

गरुड़ जी काकभुसुण्ड जी के पास नीलगिरि पर्वत पर गये और सादर रामकथा सुनी, तभी उनका सन्देह दूर हुआ —

कथा समस्त भुसुंड बखानी ।
जो मैं तुम्ह सन कही बखानी ॥
सुनि सब रामकथा खगनाहा ।
कहत बचन मन परम उछाहा ॥
गयउ मोर संदेह सुनेउ सकल रघुपति चरित ।
भयउ रामपद नेह तब प्रसाद बायसतिलक ॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि धर्म, अर्थ, लोक, परलोक, जीव, ब्रह्म और अनेक प्रकार के सन्देहों का समाधान सही ढंग से कथा श्रवण से होता है । मानस की कथा ने करोड़ों की बुद्धि को सन्मार्ग पर लगाया । असंख्यों पतितों का उद्धार किया । करोड़ों कुमार्गगामियों को सन्मार्ग पर लगाया । इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास ने रामकथा श्रवण की अपार महिमा बताई है —

निज सन्देह मोह भ्रम हरनी ।
करउँ कथा भव सरिता तरनी ॥
बुध बिश्राम सकल जन रंजनि ।
रामकथा कलि कलुष बिभंजनि ॥
संत समाज पयोधि रमा सी ।
विश्वभार भर अचल छमा सी ॥
जमगन मुँह मसि जग जमुना सी ।
जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ॥
रामचरित चिन्तामनि चारू ।
संत सुमति तिय सुभग सिंगारू ॥
जग मंगल गुन ग्राम राम के ।
दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥
समन ताप संताप सोक के ।
प्रिय पालक परलोक लोक के ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सचिव सुभट भूपति बिचार के ।
कुभंज लोभ उदधि अपार के ॥
मन्त्र महामनि विषय व्याल के ।
मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
हरन मोह तम दिनकर कर से ।
सेवक सालि पाल जलधर से ॥
कुपथ कुरतक कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड ।
दहन राम गुन ग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड ॥

रामचरित्र सुन्दर चिन्तामणि और जगत् का कल्याण करने वाले और मुक्ति, धन, धर्म और परमधाम के देने वाले हैं। ज्ञान, वैराग्य और योग के लिए सद्गुरु है, संसार रूपी भयंकर रोग का नाश करने के लिए देवताओं के वैद्य के समान हैं। भगवान के प्रति प्रेम उत्पन्न करने के लिए माता-पिता और सम्पूर्ण व्रत-धर्म और नियमों के बीज है। पाप-सन्ताप और शोक की नाशिनी, ज्ञान प्रदायनी, लोभरूपी समुद्र को सोखने के लिए अगस्त्य मुनि हैं।

रामकथा सम्पूर्ण पुण्यों के फल महान भोगों के समान है। जगत को छल रहित करने में साधु सन्तों के समान है। सेवकों के मन को निर्मल करने के लिए मानसरोवर के हंस और पवित्र करने में गंगा की तरंगमाला है।

भगवान के गुण समूह कुमार्ग, कुतर्क, कुचाल और कपट, दम्भ व पाखण्ड के जलाने के लिए प्रचण्ड ईंधन है। चन्द्रमा की किरणों के समान सभी को सुख देने वाले सर्वहितकारी और महान लाभदायक हैं।

उपरोक्त चौपाइयों में रामकथा की महान् महिमा गाई गई है। सम्पूर्ण मानस सुना देने के पश्चात् शंकर ने माता पार्वती से यही कहा कि —

रामचरित जे सुनत अघाहीं ।
रस विसेष जाना तिन्ह नाहीं ॥
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ ।
हरिगुन सुनहिं निरन्तर तेऊ ॥

रामकथा सुनने से जिनको तृप्ति मिल जाए समझना चाहिए कि उसका विशेष रसपान वे नहीं कर सके। जो जीवनमुक्त महामुनि हैं, वे भी भगवान के गुण निरन्तर सुनते रहते हैं।

रामकथा सबके मनोरथों को पूर्ण करने वाली है। लोक और परलोक दोनों की चाह रखने वालों के लिए सम्बल है —

श्रवनवंत अस को जग माहीं ।
जाहि न रघुपति चरित सोहाहीं ॥
ते जड़ जीव निजात्मक घाती ।
जिन्हहिं न रघुपति कथा सोहाती ॥

जगत में कौन ऐसा है जिसे सर्वहितकारिणी रामकथा न अच्छी लगे ? रामकथा में रुचि न रखने वाला मूर्ख अपनी आत्मा का हनन करने वाला है।

इसी महिमा के कारण सत्संग का प्रतिपाद्य विषय हरिचरित्र और उनके प्रसंगों को श्रवण करना माना गया है —

एहि कलिकाल न साधन दूजा ।
जोग जग्य जप तप व्रत पूजा ॥
रामहि सुमिरिय गाइय रामहिं ।
सन्तत सुनिअ राम गुन ग्रामहिं ॥

भक्तिभाव से कथा-श्रवण करने से मन में आस्तिकता व ईश्वर के चरणों में सच्चा अनुराग उत्पन्न होता है। भगवान शंकर से बड़ा भला कौन है ? जो आदि देव और सर्वेश्वर कहलाते हैं। परन्तु सती के प्राणत्याग के पश्चात् उनका मन उद्विग्न हो उठा। भगवत्-चरित्र से हीं उन्हें पुनः शान्ति मिली। उन्होंने हंस का शरीर धारण कर काकभुसुण्ड के पास जाकर रामकथा सुनी थी —

तब अति सोच भयउ मन मोरे ।
दुखी भयउँ बियोग प्रिय तोरे ॥
तब कछु काल मराल तनु धरि तहँ कीन्ह निबास ।
सादर सुनि रघुपति गुन पुनि आयउँ कैलास ॥
मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की ॥
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी ।
भव अंग भूत मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ॥
प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस संग ।
दारु बिचारि कि करइ कोउ बंदिय मलय प्रसंग ॥

गोस्वामी तुलसीदास जो कहते हैं कि श्रीरघुनाथ जी की कथा मंगलकारिणीं और समस्त पापों का हरण करने वाली है लेकिन गोस्वामी जी ने यह भी कहा है कि -

जे एहि सुनिहहिं समुझ सचेता ।

राम की कथा को चैतन्य होकर और समझ के साथ श्रवण करने से उसका पूरा लाभ मिलेगा। प्रभु की कथा पारसमणि के समान है, जो दुष्ट से दुष्ट और पापी से अति पापी को भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सन्मार्ग पर लगा देने वाली है। क्यों न हो जिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने अपने लौकिक जीवन को परमार्थ के लिए समर्पित किया समर्थ होते हुए भी अनीति मार्ग से राजसुख प्राप्त करना नहीं चाहा, जिन्होंने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक और अन्तर्राष्ट्रिय जीवन में मर्यादा की स्थापना की। प्रजातन्त्र के उच्च आदर्शों को स्वीकार कर प्रजा की इच्छामात्र पर जिन्होंने अपने वैयक्तिक सुख का त्याग कर परम पवित्र जनक दुलारी का त्याग किया। दीन और अनाथ जिन्हें प्राणों से भी अधिक प्यारे थे प्रजा रंजन जिनके राज्य का आदर्श था। जिनकी शासन प्रणाली और राज्य के आदर्शों की समता आज तक संसार के किसी शासन द्वारा न हो। जो चक्रवर्ती और सर्वशक्तिशाली सम्राट होते हुए भी प्रजातन्त्र के सच्चे प्रतिनिधि थे जिनके शौर्य, धैर्य, बल, विवेक और मर्यादा की समता होनी सम्भव नहीं। ऐसे सद्गुण सम्पन्न महाप्रभु श्रीराम के गुणगान को आदर और प्रेमसहित श्रवण करने से भला किसका कल्याण न होगा ?

हमें ध्यान रखना चाहिए कि राम लीलाएँ, सम्प्रदाय, जाति, वर्ग आदि के पक्षपात से रहित थीं। वे विश्व-मानव थे। उनके शासन में संसार की प्राय: ऊँची-नीची सभी जातियों और वर्गों को अयोध्यावासियों के समान अधिकार प्राप्त थे। कथा-श्रवण से ऐसे महाप्रभु के समग्र गुणों से हम अपने को स्नान करा लें ओत-प्रोत कर लें तो भगवत् कृपा से जन्म-धारण के उद्देश्य को पूरा करेंगे। भक्ति की दूसरी कक्षा में महाप्रभु के उदात्त चरित्र से हमें अपने को प्रकाशित और प्रतिबिंबित करना पड़ेगा। तब उनकी भक्ति की ओर बढ़ा जा सकेगा।

भक्ति की तीसरी कक्षा — गुरुसेवा

गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भक्ति अमान।
चौथ भगति मम गुन गन करहिं निरंतर गान ॥

गुरु का अर्थ है — युक्ति, विधि और गुरु कहते हैं — युक्ति या विधि बताने वाले को। माता-पिता के रज और वीर्य से बालक के शरीर की रचना होती है। जन्म से वह शूद्र होता है, लेकिन उसे ज्ञान देकर संसार समरस्थली में युद्ध करने के योग्य बनाने का कार्य गुरु वहन करता है। इसीलिए माता-पिता के समान गुरु का पद उच्च और पूजनीय माना गया है।

संसार के प्राय: सभी धर्मों और सम्प्रदायों से गुरु की महत्ता को स्वीकार करके उसे पूज्य माना है। कबीरदास जी ने तो यहाँ तक कह दिया कि —

गुरु गोविंद दोनों खड़े काके लागों पाइ।
बलिहारी गुरुदेव की जो गोविंद दीन्ह मिलाइ ॥

गुरु और गोविंद दोनों की उपस्थिति में उन्होंने सर्वप्रथम गुरु के चरणों पर शीश नवाना उचित माना, क्योंकि बिना गुरु भगवत् साक्षात्कार होना अथवा भवसागर से तरना सम्भव नहीं है। सिक्ख धर्म तो पूरी तरह से गुरु की महिमा पर खड़ा है। वे भगवान को गुरु के रूप में मानते हैं। 'वाह गुरु की जै' उनका नारा है। गुरु नानकदेव से लेकर गुरु गोविन्द सिंह तक सिक्ख-धर्म को चलाने और पनपाने वाले दस गुरुओं की गद्दी समाप्त होते ही दसों गुरुओं के उपदेश गुरु ग्रन्थ साहब के नाम से पूजे जाते हैं।

भगवान ने शबरी को भक्ति के प्रसंग में भक्त की साधना के लिए तीसरे सोपान के रूप में गुरुसेवा को इसीलिए महत्व दिया कि सत्संग और कथा-श्रवण से साधना की इतिश्री नहीं हो जाती। सिद्धान्त सुन लेने के पश्चात् उसे व्यवहार में लाए बिना वह सिद्धान्त व्यर्थ और उल्टा हानिकारक है। भगवान की लीलाओं से सारतत्व और महत्वपूर्ण शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारना पड़ेगा। तीसरी कक्षा एक प्रकार थ्योरी (सिद्धान्त) पूर्ण करके प्रैक्टिकल (व्यवहार) की तैयारी की है। साधक को सब कुछ सुनकर स्वयं वैसा करने के लिए उठ खड़ा होना है। 'थ्योरी' तो पुस्तकों से पढ़ी जा सकती है, लेकिन उसे व्यवहार में लाते समय अध्यापक या गाइड का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन लेना अत्यन्त आवश्यक होता है। इससे भी और गम्भीर स्थिति धर्मपथ के साधक होती है। भक्ति-पथ अथवा कल्याण-पथ पर चलना कोई सरल कार्य नहीं है। उसमें पग-पग पर बाधाएँ आती हैं। साधना का पथ कंटकाकीर्ण है जितने प्रकार का अनुष्ठान, जप, तप, तपश्चर्या अथवा योग साधनाएँ बताई गई हैं। उन सब में सर्वप्रथम गुरु का वर्णन करके उसके मार्गदर्शन में आगे बढ़ने का निर्देश किया गया है।

जीवन पथ भी एक महान साधना है। इसमें किसी कुशल मार्ग दर्शक और संचालक की आवश्यकता होती है। अकुशल मार्ग दर्शन के कारण शिष्य के जीवन के महान् लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाते। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को गुरु करने की सलाह दी गई है। गुरु न करने वाला व्यक्ति 'निगुरा' कहलाता था जो एक प्रकार की गाली थी, जैसे किसी के 'पिता' का पता न होना गाली है।

गुरु की महिमा

रामायण की रचना से पूर्व गोस्वामी जी ने गुरु की वन्दना निम्न चौपाइयों में की है -

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बंदउँ गुरु पद कंज कृपासिंधु नर रूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबिकर निकर ॥
बंदउ गुरु पद पदमु परागा ।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥
अमिअ मूरिमय चूरन चारू ।
समन सकल भव रुज परिवारू ॥
सुकृति संभु तन बिमल बिभूती ।
मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी ।
किएँ तिलक गुन गन बस करनी ॥
श्रीगुरु पद नख मनिगन ज्योती ।
सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती ॥
गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन ।
नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन ॥
तेहि कर बिमल बिवेक बिलोचन ।
बरनउँ राम चरित भव मोचन ॥

गुरु की महिमा में लिखी गई ऊपर की चौपाइयों से यह तथ्य भली भाँति प्रकट होता है कि गुरु पृथ्वी पर ईश्वर के प्रत्यक्ष प्रतिनिधि के समान है उसकी सेवा से विवेक रूपी ज्ञान चक्षु खुलते हैं, फिर संसार में कोई भी पदार्थ दुर्लभ नहीं रह जाता । गुरु की सेवा से प्रकृति के सम्पूर्ण रहस्य खुल जाते हैं । यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है । रावण जैसे महाबली राक्षस को उसके कुल सहित नाश करने की शक्ति श्रीरामचन्द्र को गुरुसेवा के द्वारा ही मिली थी । लंका-विजय से लौट कर आने पर कपिपति सुग्रीव और लंकापति विभीषण सहित आये हुए बानर-भालुओं को वशिष्ठ जी के चरण छूने के लिए प्रेरित करते समय यही बात कही थी -

तब रघुपति सब सखा बोलाए ।
गुरु पद लागव सकल सिखाए ॥
गुरु वसिष्ठ कुल पूज्य हमारे ।
इन्हकी कृपा दनुज रन मारे ॥

यदि राम-लक्ष्मण को महाराज वसिष्ठ जैसे त्रिकालदर्शी और विश्वामित्र जैसे उदारचित्त व विश्वहितैषी गुरुजनों की शिक्षा तथा मार्ग प्राप्त न होता तो राम द्वारा इतने महान् कार्यों के सम्पादन में सन्देह हो सकता था । सच्चे गुरुजनों का आशीर्वाद उच्चकोटि का फल देने वाला होता है । रामायण में हमें गुरुसेवा के व्यावहारिक और अनूठे उदाहरण मिलते हैं ।

राम को तो गुरुचरणों में अगाध श्रद्धा थी । वन की ओर प्रस्थान करते समय अयोध्या की दशा आन्तरिक और बाह्य दृष्टि से अत्यन्त शोचनीय थी । क्योंकि भरत शत्रुघन ननिहाल में थे, महाराज अपार शोक से मृत्यु शय्या पर पड़े थे, प्रजा और पुरजन कैकेई के कुकृत्य से अप्रसन्न होकर या तो विद्रोह और अशान्ति उत्पन्न करने की स्थिति में थे या शासन के प्रति उपेक्षा भाव रखने लगे थे । लेकिन इस विषम परिस्थिति में राम को पूर्णरूप से विश्वास था कि जब तक वशिष्ठ जी अवध में हैं राजपरिवार के हितों पर कुठाराघात नहीं हो सकता । सत्ता के सत्व पर आँच नहीं आ सकती । गुरु वशिष्ठ जी द्वारा रघुकुल रक्षा की परम्परा को चित्रकूट में भरत जी ने भी कहा था —

भानुबंस भय भूप घनेरे ।
अधिक एक तें एक बड़ेरे ॥
जनम हेतु सब कहँ पितु माता ।
करम सुभासुभ देइ बिधाता ॥
दलि दुख सजइ सकल कल्याना ।
अस असीस राउरि जगु जाना ॥

गुरु के चरणों में अनुराग रखने वाला सच्चा धर्मात्मा और लोक तथा वेद दोनों में बड़ा भाग्यशाली माना जाने का अधिकारी है । स्वयं भगवान ने इस सिद्धान्त का निरूपण किया है —

जे गुरु पद अंबुज अनुरागी ।
ते लोकहु वेदहु बड़ भागी ॥

गुरु का सच्चा आशीर्वाद प्राप्त करने वाले सचमुच सौभाग्यशाली हैं और गुरु की आज्ञाओं के विपरीत कार्य करने वालों का जीवन शोचनीय माना जा सकता है ।

वर्तमान युग में विद्यालयों में चारों ओर उच्छृंखलता अनुशासनहीनता और उद्दण्डता व्याप्त हो रही है । शिक्षकों की आज्ञाओं के विपरीत आचरण करना वर्तमान काल में विद्यार्थियों का फैशन सा बनता जा रहा है । मामूली-सी बात को लेकर आन्दोलन खड़ा कर देना तो व्यसन और सस्ती नेतागीरी का प्रतीक है । बाहर से कोई आन्दोलनकारी लड़का आया, विद्यार्थी नेताओं से मिला और थोड़ी देर में एक बिजली-सी सारे कमरों में फैल गई । देखते-देखते सभी विद्यार्थी कक्षाओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से निकल कर सड़कों पर नारे लगाने लगे। शिक्षक बेचारे अपना सा मुँह लिए कक्षाओं में खड़े रह जाते हैं। यह है आज के गुरु-शिष्य के सम्बन्ध की बात। जिन शिक्षकों को अपना मार्गदर्शक मानकर उनके प्रति श्रद्धान्वित होना चाहिए और कम से कम शिक्षा सम्बन्धी समस्त कार्यों में उनके परामर्श को वरीयता देनी चाहिए, वही शिक्षक विद्यार्थियों के पीछे दबी बिल्ली जैसे लगे रहते हैं। फिर भला देश का कल्याण कैसे हो सकता है ? शिक्षा का स्तर अनेकों प्रयत्नों के बावजूद निरन्तर गिरता जा रहा है। बढ़ती हुई शिक्षा के फलस्वरूप उद्दण्ड और उच्छृंखल वर्ग का जन्म हो रहा है। समाज में चारों ओर हाहाकार सा मच रहा है। ऐसे विद्यार्थी भला कैसे सन्मार्ग पर चल सकते हैं ?

अपनी मर्यादाओं और श्रेष्ठ परम्पराओं के प्रति निष्ठाहीन होने के कारण जगतगुरु कहलाने वाली आर्य जाति पतन की ओर जा रही है। गुरु की कृपा के बिना भवसागर से पार उतरना कठिन है। मार्ग-दर्शक के नेतृत्व के बिना हमारी जीवन-नौका बिना नाविक के नाव में बैठे हुए यात्रियों के समान बन जाती है।

अपने पूर्व जन्म की कथा सुनाते हुए काकभुसुन्ड जी ने गरुड़ जी से गुरु के प्रति अवमानना का दुष्परिणाम बताकर वर्तमान समय के तथाकथित सभ्य परन्तु अनुशासनहीनता का चोला धारण करने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा दी है –

एक बार गुरु लीन्ह बोलाई ।
मोहि नीति बहु भाँति सिखाई ॥
अधम जाति मैं विद्या पाएँ ।
भयउँ जथा अहि दूध पिआएँ ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती ।
गुरु कर द्रोह करउँ दिन राती ॥

उपरोक्त चौपाइयों से स्पष्ट होता है कि गुरु के प्रति अपमान अथवा उपेक्षा की भावना अभिमान के कारण उत्पन्न होती है। अभिमान से नाश होना स्वाभाविक है। गुरु के प्रति अशिष्टता या उनका अपमान करना 'अति अघ' अर्थात् महान् पाप है। हमारे दुर्भाग्य, मूढ़ता और अभिमान का सूचक है। शंकर जी ने इस आचरण को नीति विरुद्ध मानकर काकभुसुण्ड को श्राप दिया। गुरु के प्रति सम्मान तथा पूज्य भाव रखना वेदमार्ग और श्रेष्ठमार्ग है। विपरीत आचरण करने वाले काकभुसुण्ड ही को नहीं वरन् सभी को ईश्वर की ओर से दंड मिलता है।

भक्ति के सोपान में सद्गुरु का मिलना सफलता का चिन्ह है। गुरु के चरणों में श्रद्धा रखने वाले ही संसार-समर से सफलतापूर्वक निकलेंगे –

नर तन भव बारिधि कहूँ बेरो ।
सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥
करनधार सद्गुरु दृढ़ नावा ।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥

मानव शरीर भवसागर से पार उतरने के लिए बेड़ा (जहाज) है। भगवत्कृपा अनुकूल वायु है। सद्गुरु इस मजबूत जहाज के कर्णधार हैं। तभी कठिनता से मिलने वाले साधन सुलभ होंगे। साधन-पथ पर चलने वाले को सद्गुरु के चरणों में श्रद्धा रखनी आवश्यक हैं –

सद्गुरु बैद बचन बिस्वासा ।
संजम यह न विषय कै आसा ॥

गुरु सच्चा वैद्य और उसके वचन साधक के लिए औषधि स्वरूप हैं, जिस साधक को सद्गुरु के वचन रूपी औषधि पर विश्वास नहीं, उसका मानस रोग भला कैसे दूर होगा ? सफलता उस साधक के समीप तक न पहुँचेगी, साधना के समय अनेक भ्रम और संशय उत्पन्न होते हैं। भक्तियोग के साधन में साधक के मन में अनेक तर्क-वितर्क शंकाएँ, प्रलोभन व्यर्थ कष्ट उठाने के लिये झंझट की भावना और अनेकों प्रकार की मानसिक दुर्बलताएँ उठती हैं। कभी-कभी ऐसा लगता है कि यह सब व्यर्थ है। नीचे की ओर ढुलकना अत्यन्त सरल है। श्रेय-पथ से हट कर सांसारिक वासनाओं, प्रलोभनों, आकर्षणों आदि में लिप्त हो जाना बड़ा सरल है, लेकिन उच्चता के सोपान की ओर चढ़ना पहाड़ पर चढ़ने जैसा कठिन है। यदि आप किसी वाहन पर हैं तो उसकी ब्रेक आपकी मुट्ठी में मजबूती से होना चाहिए। पैदल है तो अपने पैरों पर हर दम विश्वास करना पड़ेगा। उस ओर बढ़ने के लिये हर समय सही मार्गदर्शक की नितान्त आवश्यकता है। इसीलिए गोस्वामी जी ने कहा है कि –

भूमि जीब संकुल रहे, गए सरद रितु पाइ ।
सद्गुरु मिले ते जाहिं जिमि, संयम भ्रम समुदाइ ॥

बाल्मीकि जी ने भगवान का निवास उन्हीं लोगों के हृदय में बताया है जो गुरु को भगवान से भी अधिक पूज्य मानते हैं -

तुम्ह तें अधिक गुरुहि जियँ जानी ।
सकल भायँ सेवहिं सनमानी ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होउ ।
तिन्ह के मन मन्दिर बसहु सिय रघुनन्दन दोउ ॥

जो कबीरदास के समान गुरु को गोविन्द से भी अधिक मान कर सर्वभाव से उनकी सेवा करते हैं, प्रभु का सच्चा निवास उन्हीं के हृदय में होता है ।

चतुर्थ सोपान – ईश्वर का गुणगान

तीसरी कक्षा में मार्गदर्शक का वरण करके प्रथम और द्वितीय सोपानों में सीखे गये ज्ञान को व्यवहार में लाने की तैयारी बताई गई थी । साधक को सावधान होकर अपने उपकरणों के साथ प्रैक्टीकल अथवा प्रयोगात्मक प्रशिक्षण के लिए तत्पर होना था । वास्तविक प्रयोग चौथी कक्षा से प्रारम्भ होता है ।

मन को एकाग्र करके भगवत् चरणों में लगा देना अथवा सर्वभाव से समर्पण की स्थिति तुरन्त नहीं आ सकती । अपनी इन्द्रियों चित्त् और मन को पूर्णरूप से भावनायुक्त करना पड़ेगा। इसके लिए सबसे प्रथम साधना है– भगवान के गुणों का मान करना । वाणी के माध्यम से ही हम तदर्थ भावों को ग्रहण करते हैं । भगवान के गुणों का निष्कपट और अनन्य भाव से गान करने से उनके महान् गुणों का अवरतण साधक में होता है। यही कारण है कि श्रेष्ठ महात्माओं, सन्तजनों और विद्वानों ने भगवान के गुणगान को अपने जीवन का प्रमुख कार्य माना ।

रामकथा कहकर गोस्वामी तुलसीदास जी अमर पद पा गये । वे भक्त शिरोमणि अमर-कवि ओर प्रभु के चरणों के अनन्य दास के रूप में युग-युग तक ख्याति तथा वन्दना प्राप्त करते रहेंगे । वे रामचरित मानस की रचना करते समय स्वयं लिखते हैं –

कवि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ ।
मति अनुरूप राम गुन गावउँ ॥
कहँ रघुपति के चरित अपारा ।
कहँ मन मोह निरत संसारा ॥
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं ।
कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥
समुझत अमित राम प्रभुताई ।
करत कथा मन अति कदराई ॥
सारद सेस महेस बिधि आगम निगम पुरान ।
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान ॥

भगवान का चरित्र अपार है । सांसारिक वासनाओं में आसक्त बुद्धि द्वारा भगवान के गुणों का गान करना वैसा ही है जैसे सुमेरु जैसे पर्वत को उड़ाने वाली वायु के सामने रुई ।

बुद्धि की देवी सरस्वती जी, हजार फणों वाले शेषनाग जी , चतुरानन ब्रह्मा जी शास्त्र वेद और पुराण – ये सब नेति-नेति कहकर सदा जिनका गुणगान किया करते हैं, उस विशाल चरित्र को प्रारम्भिक अल्पबुद्धि वाले भक्तों द्वारा कैसे कहा जा सकता है ? कथा कहते समय ऐसा विचार आना स्वाभाविक है । राम की प्रभुता अनन्त है -

महिमा नाम रूप गुन गाथा ।
सकल अमित अनन्त रघुनाथा ॥
निज निज मति मुनि हरिगुन गावहिं ।
निगम सेष सिव पार न पावहिं ॥
तुम्हहि आदि खग मसक प्रजंता ।
नभ उड़ाहि नहिं पावहिं अंता ॥
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा ।
तात कबहुँ कोउ पाब कि थाहा ॥

ऐसे विशाल चरित्र को कहना भला क्या आसान है ? लेकिन गोस्वामी जी राम-गुणगान की महिमा बताते हुए लिखते हैं कि –

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई ।
तदपि कहे बिनु रहा न कोई ॥
तहाँ वेद अस कारन राखा ।
भजन प्रभाउ भाँति बहु भाषा ॥
एक अनीह अरूप अनामा ।
अज सच्चिदानन्द परधामा ॥
व्यापक बिस्व रूप भगवाना ।
तेहि धरि देह चरित कृत नाना ॥
सो केवल भगतन हित लागी ।
परम कृपाल प्रनत अनुरागी ॥
बुध बरनहिं हरि जस अस ज्ञानी ।
करहिं पुनीत सुफल निज बानी ॥

राम का गुण बुद्धिमान लोग कहते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि राम का गुणगान करने से कहने वाला भक्त बुद्धि का वरण करता है । उसकी बौद्धिक शक्ति का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विकास होता है। सम्मार्ग या कल्याण की ओर जाने के लिए विवेक बुद्धि की आवश्यकता होती है। गीता में भगवान ने बुद्धि के नाश के साथ मनुष्य का नाश होना बताया है - 'बुद्धिनाशात्प्रणश्यति'। राम-गुणगान से बुद्धि निर्मल होती है और वाणी सुफल सार्थक तथा पुनीत बनती है। सूक्ष्म रूप से देखा जाए तो निर्मल बुद्धि और सार्थक वाणी ही सदाचार की कुंजी है। इन दो के अभाव में व्यक्ति का चरित्र आदर्श अथवा श्रेष्ठ नहीं बन सकता। कथा-श्रवण एक प्रकार से सद्बीज वचन है। उसका अंकुरण गुणगान से प्रारम्भ होता है। यहीं से अपने को भगवान का दास अथवा भक्त कहलाने वाला साधक श्रेयमार्ग और ज्ञान-पथ की ओर प्रस्थान करता है। चारों दिशाओं में दूषित वातावरण के प्रसार का एकमेव कारण यही है कि निरन्तर लाउडस्पीकरों से सभा, सोसाइटियों जुलूसों के रूप में अथवा सामूहिक तरीकों से व्यर्थ की बकबास व अपवित्र वचनों का उच्चारण होता रहता है। यही कारण है कि सर्वत्र दूषित वृत्तियों का प्रसार एवम् प्रचार तीव्र गति से होता जा रहा है।

बुद्धि को निर्मल और वाणी को पवित्र करने के लिए भगवान के गुणगान से सरल और कोई दूसरा मार्ग नहीं है –

जे एहि कथहिं सनेह समेता।
कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता॥
होइहहिं राम चरन अनुरागी।
काल मल रहित सुमंगल भागी॥

प्रेम और सावधानी के साथ भगवान के चरित्र को कहने और सुनने वाले समस्त प्रकार के पापों से रहित होकर सुन्दर कल्याण के भागी बनेंगे। श्रीराम के चरणों में उनका सच्चा अनुराग उत्पन्न होगा।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस कथा को निर्मल बताया है। रामकथा-वाचक राम-चरित्र रूपी सरोवर के रखवाले माने जाते हैं –

जे गावहिं यह चरित संभारे।
तेइ एहि ताल चतुर रखवारे॥
राम कथा ससि किरन समाना।
संत चकोर करहिं जेहि पाना॥

भगवान की लीलाएँ बड़ी विचित्र हैं इनमें गरुड़ जैसे पार्षद भी कभीं-कभी भ्रम में पड़ जाते हैं। इसे वही समझते हैं जो परम सुजान हैं –

अति विचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान।
जे मति मंद बिमोह बस हृदयँ धरें कछु आन॥

भगवान के गुणों का गान करना बड़े-बड़े सन्तों, मुनियों तपस्वियों तथा संन्यासियों ने अपना परम कर्तव्य माना है। नारद जी सदैव राम का गुणगान किया करते हैं। जिनकी जिह्वा से राम के गुणों का गान नहीं होता, वे मेढ़क की जीभ के समान है। व्यर्थ की बकवास में अपनी वाणी को खर्च करते हैं –

जे नहिं करहीं राम गुन गाना।
जीह सो दादुर जीह समाना॥
महिमा नाम रूप गुन गाथा।
सकल अमित अनन्त रघुनाथा॥
निज निज मति मुनि हरिगुन गावहिं।
निगम सेष सिव पार न पावहिं॥
ब्रह्मा पयोनिधि मन्दर, ग्यान संतसुर आहिं।
कथा सुधा मथि काढ़हिं, भगति मधुरता जाहिं॥

ब्रह्म समुद्र है, ज्ञान मन्दराचल है और सन्त देवता हैं, जो उस समुद्र को मथ कर कथारूपी अमृत निकालते हैं, जिसमें भक्ति रूपी मधुरता बसी रहती है।

भक्तिरूपी मधुरता कथा में रहती है। उसे दही से मथ कर घी निकालने के समान कार्य करने वाले सन्त बन जाते हैं। प्रथम सोपान में सन्तजनों की संगति के लिए प्रेरित किया गया था। चौथी स्थिति में स्वयं सन्त बनने के लिए शर्त लगाई गई है। सन्तों के मानस में भगवान रहते हैं। राम के उदात्त और निर्मल चरित्र का गुणगान करने से सन्त बना जा सकता है।

कपट भाव को त्याग कर पूर्ण निष्ठा और भक्ति से जो इस कथा को गाते हैं उनकी सम्पूर्ण लौकिक कामनाएँ पूरी होती हैं –

मन कामना सिद्धि नर पावा।
जो यह कथा कपट तजि गावा॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं।
ते गोपद इव भवनिधि तरहीं॥

राम के गुणों के प्रचार व प्रसार की आवश्यकता इस समय अधिक है। निर्मल चरित्र को आदर्श मान कर लोग जब इसका अनुसरण करेंगे तभी लोगों में शौर्य, धैर्य, पुरुषार्थ जागेगा। यह बात निर्विवाद है कि गोस्वामी जो न मुगल काल में जबकि हिन्दू समाज अनेक भ्रमों में पड़कर अवलम्बनहीन हो गया था वह श्रेय मार्ग से गिर कर आदर्शहीनता की ओर ढुलक रहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था, राम जैसे आदर्श पुरुष के गुणों का गान करके समाज को अवलम्बन दिया। उन्होंने करोड़ों देशवासियों को पथ-भ्रष्ट होने से बचाया। समाज का अभ्युदय उस समय तक नहीं हो सकता जब तक हम श्रेष्ठ पुरुषों का सहारा न लें। यह बड़ी विडम्बना की बात होगी यदि राम और कृष्ण जैसे महापुरुषों के चरित्रों के प्रति आस्था रखने वाले हम लोग पथभ्रष्ट विहीन हो जाएँ।

भक्ति के पथ पर बढ़ने वाले साधक के लिए आवश्यक है कि वह निरन्तर और निर्बाध गति से भगवान के गुणों का गान करे। गायन कई प्रकार से हो सकता है। झाँझ, ढोलक, मजीरा और करताल लेकर नाम कीर्तन ही गुणगान नहीं है। इसके लिए मंगल और शनिवार के दिन ही निश्चित नहीं माने जाने चाहिए। धूप, दीप, आरती के अभाव में मंगल मीटिंग को स्थगित नहीं करना चाहिए।

सभा-सोसाइटियों में भगवान के महान गुणों की चर्चा करना आपसी वार्ता में उसे वार्तालाप का विषय बनाना, चलते-फिरते प्रेरणादायक प्रसंगों को कहना भी गुणगान करने की सीमा में आता है।

भगवान के सुन्दर स्वरूप या चमत्कारिक प्रसंगों को कहना सुनना गुणगान नहीं है वरन् उन महान् गुणों को जिनका प्रतिपादन भगवान ने किया, सामान्य और जन-भाषा में सबके सामने रखना कथा कहना है –

जे गावहिं यहि चरित संभारे।
तेहि यह सरित चतुर रखवारे॥

इसे कहने में सावधानी की आवश्यकता है। असावधानीपूर्वक कहा हुआ चरित अर्थ को अनर्थ कर देता है कथा कहने में विवेक और बुद्धिमानी की आवश्यकता है। चरित्र को संभाल कर कहना चाहिए। जिन उद्देश्यों के लिए राम का जन्म हुआ और जिन उपायों में उन उद्देश्यों की पूर्ति हुई यह सब कथा गाने का विषय बनना चाहिए। इसी से भक्ति मार्ग की ओर बढ़ा जा सकेगा।

पंचम कक्षा – नाम-जप एवं दृढ़ विश्वास

भगवत् चरित्र के गान से साधक में तन्मयता, विश्वास एवम् उच्च भावों का सृजन होता है बुद्धि निर्मल ओर पवित्र होती है लेकिन बाह्य प्रकाश से काम चलने वाला नहीं, जब तक अन्तरपट न खुलें। प्रभु के चरणों में आत्मसमर्पण और विश्वास से तदाकारिता आती है। यह स्थिति निरन्तर जप से आती है।

भवगत् नाम-जप की महिमा सभी धर्मों में मानी गई है।

राम राम कहि जे जमुआहीं।
तिन्हहि न पाप पुंज समुआहीं॥

राम-राम करके जमुहाई लेने वाले के समीप पाप नहीं आते। सन्त, महात्मा, त्यागी, वैरागी, गृहस्थी ,संन्यासी, हिन्दू मुसलमान ,ईसाई ,पारसी, सिक्ख सब नाम का आधार मानते हैं। नाम जप की अपार महिमा मानी गई है। धर्म-विधान के अन्दर प्रातःसायं दोनों समय दिन और रात्रि की मिलन बेला में सन्ध्या का समय नाम-जप के लिए रखा गया है। भगवत् नाम-जप किये बिना किसी का उद्धार नहीं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने उत्तरकाण्ड के अन्त में लिखा है –

सिव अज सुक सनकादिक नारद।
जे मुनि ब्रह्म बिचार बिसारद॥
सब कर मत खगनायक एहा।
करिअ राम पद पंकज नेहा॥
श्रुति पुरान सब ग्रन्थ कहाहीं।
रघुपति भगति बिना सुख नाहीं॥

प्रभु का भजन उसके नाम उच्चारण और गुणगान से होता है ईश्वर साकार है अथवा निराकार ? यह भी हमारे मतभेद का विषय है। लेकिन साकार और निराकार दोनों की सन्धि नाम के माध्यम से होती है। निराकार ब्रह्म नाम के जप से प्रकट होता है –

नाम निरूपन नाम जतन तें।
सोउ प्रगटक जिमि मोल रतन तें॥

नाम को भली भाँति जानने और श्रद्धापूर्वक उसका जप करने से ब्रह्म ऐसे प्रकट होता है जैसे रत्न के जानने से उसका मूल्य। नाम की महिमा अपार है। गोस्वामी जी लिखते हैं –

बंदउँ नाम राम रघुवर को।
हेतु कृसानु भानु हिमकर को।
बिधि हरि हरमय वेद प्रान सो।
अगुन अनूपम गुन निधान सो॥
महामन्त्र जोइ जपत महेसू।
कासी मुकुति हेतु उपदेसू॥
महिमा जासु जान गनराऊ।
प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ॥

बाल्मीकि जी ने नाम का उल्टा जप करके सिद्धि प्राप्त की -

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जान आदि कवि नाम प्रतापू ।
भयउ शुद्ध करि उलटा जापू ॥
सहस नाम सम सुनि सिव बानी ।
जपि जेई पिय संग भवानी ॥
नाम प्रभाउ जान सिव नीको ।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥
बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥
आखर मधुर मनोहर दोऊ ।
बरन बिलोचन जन जिय जोऊ ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू ।
लोक लाहु परलोक निबाहु ॥

नाम और रूप दोनों ईश्वर की उपाधि हैं । ये दोनों अनिर्वचनीय हैं, अनादि हैं और सुन्दर बुद्धि से ही इनका स्वरूप जाना जा सकता है —

देखिअहिं रूप नाम आधीना ।
रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना ॥
रूप विशेष नाम बिनु जानें ।
करतल गति न परहिं पहिचानें ॥
सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखे ।
आवत हृदयँ सनेह बिसेषे ॥

रूप नाम के आधीन है। नाम के बिना रूप का ज्ञान नहीं किया जा सकता । कोई-सा विशेष रूप बिना उसका नाम जाने हथेली पर रक्खा हुआ भी पहचाना नहीं जा सकता और रूप के बिना देखे भी नाम का स्मरण किया जाय तो विशेष प्रेम के साथ वह रूप हृदय में आ जाता है ।

नाम रूप गति अकथ कहानी ।
समुझत सुखद न परति बखानी ॥
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी ।
उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ॥

नाम और रूप की गति की कहानी अकथनीय है । वह समझने में सुखदायक है, परन्तु उसका वर्णन नहीं किया जा सकता । निर्गुण और सगुण के बीच में नाम सुन्दर साक्षी है और दोनों का यथार्थ ज्ञान कराने वाला चतुर दुभाषिया है ।

राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौ चाहसि उजिआर ॥

अन्दर और बाहर दोनों ओर या यों कहा जाए कि लौकिक और पारलौकिक दोनों सुखों के लिए अपने मुखरूपी द्वार के जीभ रूपी देहली पर राम नाम रूपी मणि-दीपक को रखो ।

परमात्मा के गूढ़ रहस्यों को समझने की इच्छा रखने वाले भी नाम का जप करके उसे जानते हैं —

जपहिं नामु जन आरत भारी ।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
राम भगति जग चारि प्रकारा ।
सुकृति चारिउ अनघ उदारा ॥
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा ।
ग्यानी प्रभुहि विसेषि पिआरा ॥

महान कष्टों में नाम-जप से संकट कट जाते हैं और जापक को सुख मिलता है। चार प्रकार की इच्छा रखने वाले— धन की चाह रखने वाले, संकटों का निवारण चाहने वाले जिज्ञासु और ज्ञानी सभी को नाम का आधार है ।

चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ ।
कलि विसेषि नहिं आन उपाऊ ॥

चारों युगों औद वेदों में नाम का प्रभाव है, लेकिन, कल युग में नाम जप का विशेष प्रभाव है ।

सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन ।
नाम सप्रेम पियूष ह्रद तिन्हहु किए मन मीन ॥
निरगुन तें एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार ।
कहऊ नामु बड़ राम ते निज विचार अनुसार ॥

निर्गुण ब्रह्म से भी नाम का प्रभाव बड़ा है और नाम स्वयं राम से भी बड़ा है ।

राम भगति हित नर तनु धारी ।
सहि संकट किए साधु सुखारी ॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा ।
भजत होहिं मुद मंगल बासा ॥

बहुत से लोग प्रश्न कर बैठते हैं कि यदि राम-नाम ही सर्वोगरि मन्त्र है तो राम स्वयं भी क्या इसी का जप करते थे ? इस प्रश्न को अनुचित नहीं कहा जा सकता । जप के लिए 'राम-नाम' मन्त्र है, लेकिन वेदों में अन्य मन्त्रों का वर्णन आया है। महामृत्युञ्जय मन्त्र, गायत्री मन्त्र आदि । मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की शक्ति महामत्युन्जय मन्त्र के जप में है । गायत्री का चौबीस अक्षरी मन्त्र तो गुरुमन्त्र और मन्त्रराज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कहा गया है। उपनयन संस्कार के समय प्रत्येक विद्यार्थी को गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी जाती है। इसी को सर्वश्रेष्ठ अथवा बुद्धिप्रदाता मन्त्र बताया गया है। सन्ध्या के समय इसी मन्त्र का जप करना चाहिए। आदिकाल से अब तक अनेक ऋषियों मुनियों, सद्गृहस्थों और संन्यासियों ने इस मन्त्र का जितना जप किया है उतना किसी दूसरे मन्त्र का नहीं। संसार का समस्त ज्ञान-विज्ञान बीजरूप से गायत्री मन्त्र में समाया हुआ है। चारों वेद गायत्री के चार चरणों की व्याख्या स्वरूप है। गायत्री मन्त्र को ही जपनीय बतलाया गया है। प्राचीन और आधुनिक सभी महा-पुरुषों ने गायत्री मन्त्र की महानता को एक स्वर से स्वीकार किया है। राम नाम जप की बात करने पर समाज का वह वर्ग जो कि राम पर आस्था नहीं रखता, कृष्ण को मानता है या निराकार पर विश्वास रखने वाले इसे अपने लिए नहीं मानते। इसलिए व्यापक रूप में राम का अर्थ लेना चाहिए माता पार्वती के समान अनेकों को शंका हो सकती है कि –

राम सो अवध नृपति सुत सोई।
की अज अगुन अलखपति कोई॥
जौं नृप तनय तौ ब्रह्म किमि नारि बिरह मति भोरि।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि॥

महादेवी पार्वती की शंकाओं का समाधान तो भगवान शंकर जैसे आदिदेव ने किया। अर्जुन की शंकाओं का समाधान कृष्ण जी ने किया। लेकिन समाज के सामान्य जनों की शंकाओं का समाधान कैसे होगा ? इसके लिए भगवान के व्यापक रूप को शंकर जी की व्याख्या के अनुसार स्वीकार करना चाहिए –

राम सच्चिदानन्द दिनेसा।
नहिं तहँ मोह निसा लबलेसा॥
सहज प्रकास रूप भगवाना।
नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना॥
हरष बिषाद ग्यान बिग्याना।
जीवधर्म अहमिति अभिमाना॥
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना।
परमानन्द परेस पुराना॥

जप, ध्यान और चिन्तन के लिए प्रभु राम के इसी स्वरूप को स्वीकार करना चाहिए। इसके लिए गायत्री मन्त्र से अधिक श्रेष्ठ जप किसी दूसरे मन्त्र का नहीं है। गायत्री मन्त्र को हिन्दू धर्म के प्रायः समस्त सम्प्रदाओं ने स्वीकार किया है। आर्य समाज, सनातन धर्म, नानक पंथी सिक्ख, कबीर पंथी सभी ने गायत्री मन्त्र द्वारा ब्रह्म की साधना को माना है। आदि काल से वर्तमान काल तक के महापुरुषों ने इसकी महत्ता को स्वीकार किया है।

मन्त्रराजु नित जपहिं तुम्हारा।
पूजहिं तुम्हहिं सहित परिवारा॥
तरपन होम करहिं बिधि नाना।
बिप्र जेवाईं देहिं बहु दाना॥
सब करि माँगहि एक फलु राम चरन रति होउ।
तिन्ह के मन मन्दिर बसहु सिय रघुनन्दन दोउ॥

मन्त्रराज गायत्री का जप करने वाले के हृदय में ही भगवान का सच्चा निवास होता है। मन्त्र-जप की अपार महिमा है। वह भाग्य के कलंक को मिटा देती है। गोस्वामी जी कहते हैं कि -

मन्त्र महामणि बिषम ब्याल के।
मेटत कठिन कुअंक भाल के॥

मन्त्र-जप पूर्णरूप से विज्ञान पर आधारित है। मन्त्रविद्या के वैज्ञानिक जानते हैं कि जीभ से जो भी शब्द निकालते हैं। उनका उच्चारण कण्ठ, तालु, मूर्धा ,ओष्ठ, दन्त, जिह्वा मूल आदि मुख के विभिन्न अंगों द्वारा होता है। उन अंगों के नाड़ी तन्तु शरीर के विभिन्न भागों तक फैलते हैं। इस फैलाव क्षेत्र में कई ग्रन्थियाँ होती हैं, जिन पर उस उच्चारण का प्रभाव पड़ता है। शरीर में अनेकों छोटी-बड़ी, दृश्य-अदृश्य ग्रन्थियाँ होती हैं। उनके कोषों में कोई विशेष शक्ति भण्डार छिपा रहता है। सुषुम्ना से सम्बधित षट्चक्र प्रसिद्ध हैं ऐसी अगणित अनेकों ग्रन्थियाँ शरीर में हैं। विविध शब्दों का उच्चारण इन विविध ग्रन्थियों पर अपना प्रभाव डालता है और उस प्रभाव से उन ग्रन्थियों का शक्ति भण्डार जागृत होता है। मन्त्रों का गठन इसी आधार पर हुआ है। गायत्री मन्त्र के चौबीस अक्षरों का सम्बन्ध चौबीस ग्रन्थियों से हैं। मन्त्र के उच्चारण से सूक्ष्म शरीर का विस्तार चौबीस स्थानों से झंकार देता है, उससे एक ऐसी स्वर लहरी उत्पन्न होती हैं, जिसका प्रभाव अदृश्य जगत के महत्वपूर्ण तत्वों पर पड़ता है। यही साधना के प्रभाव का हेतु है।

मन्त्र का और अधिक सूक्ष्म तथा प्रभावकारी कारण है – साधक का 'श्रद्धामय विश्वास'। विश्वास की शक्ति से सभी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनोवैज्ञानिक परिचित हैं साधक के विश्वास के आधार पर सिद्धि मिलती है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में सर्वप्रथम शंकर तथा पार्वती की वन्दना श्रद्धा और विश्वास के रूप में की है –

भवानीशंकरौवन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां बिना पश्यन्ति सिद्धा स्वान्तः स्थमीश्वरम् ॥

श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्रीशंकर जी और श्रीपार्वती जी की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके बिना सिद्धजन अपने अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख पाते ।

पार्वती जी विश्वास की प्रतीक इसीलिए मानी गई कि भगवान को पति रूप में प्राप्त करने के लिए उन्होंने अपनी कौमार्यावस्था में घोर तप किया । उनके प्रेम और निष्ठा की परीक्षा के लिए सप्तऋषि भेजे गये । उन्होंने पार्वती की निष्ठा एवं विश्वास की कठोर परीक्षा ली । पर वे अपने निश्चय पर अटल रहीं ।

अधैर्य की साधना कभी सफल नहीं होती । साधना की स्थिति में कभी निराशा, अन्धकार, शंकाएँ और पस्तहिम्मती का आना स्वाभाविक है। संसार में जिन्होंने साधना की, उन्हें अनेक कठिनाइयों और परीक्षणों से गुजरना पड़ा । भगवान बुद्ध की साधना में अनेकों बाधाएँ आई थीं । उनके पाँच साथी हिम्मत छोड़कर विलग हो गये लेकिन गौतम ने अपनी टेक नहीं छोड़ी अन्त में उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ ।

काकभुसुण्ड जी कहते हैं कि –

बिनु बिग्यान कि समता आवइ ।
कोउ अवकाश कि नभ बिनु पावइ ॥
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई ।
बिनु महि गंध कि पावइ कोई ॥

साधना से एक विशेष दिशा में मनोभूमि का निर्माण होता है। श्रद्धा, विश्वास तथा साधना विधि के अनुसार आन्तरिक क्रियाएँ उसी दिशा में प्रवाहित होने लगती हैं । भावनाओं के संस्कार अन्तर्मन में गहराई तक प्रवेश कर जाते हैं। साधक की गतिविधि में आध्यात्मिकता एवम् सात्विकता का प्रमुख स्थान बन जाता है । सूक्ष्म दैवीचेतना का आविर्भाव होता है। इसलिए भक्ति-पथ का पंचम सोपान श्रद्धा और विश्वास के साथ सही ढंग से मन्त्र जप को बताया गया है ।

साधना काल में गोस्वामी जी के निम्नलिखित दोहे को अपना सम्बल मान कर भगवत् कृपा पर विश्वास रखना चाहिए –

सठ सेवक प्रीति रुचि रखहिं राम कृपालु ।
उपल किए जल जान जिमि सचिव सुमति कपि भालु ॥

छठवीं कक्षा – सज्जनोचित आचरण

साधना की सफलता का परिचय बाह्य क्रिया-कलापों और सदाचरण से होता है । सच्चे साधक के रहन-सहन बोल-चाल, चाल-ढाल, हाव-भाव सब में उत्तमता, परिवर्तन एवम् सौजन्यता का दर्शन होने लगना ही उसकी साधना का द्योतक है । भक्ति मार्ग की पाँचवीं मंजिल श्रद्धा और विश्वास के साथ जप करके अन्तर्मन को निर्मल करने के लिए रखी गई है और छठी कक्षा का कोर्स आन्तरिक उत्तमता को अपने आचरण का अंग बना कर उसे समाज के सामने परीक्षण रूप में रखने का रखा गया है। इसीलिए भगवान ने बताया है कि –

छठ दम सील बिरत बहु कर्मा ।
निरत निरन्तर सज्जन धर्मा ॥

अपनी उच्छृंखल वृत्तियों पर संयम लाना दम है । खाने-पीने में भक्ष्याभक्ष्य का विचार रखना, सात्विक भोजन का आहार ग्रहण करना, भूख के अनुसार पवित्र भोजन करना, भोजन का संयम है । कहावत है –

जैसा खाय अन्न, वैसा बने मन ।

हमारे मन की रचना पेट में गये भोजन के अनुसार होती है । भोजन में संयम लाये बिना मन को एकाग्र करना संभव नहीं है ।

एक उच्चकोटि के महात्मा थे । वे एक दिन एक राजा के यहाँ पधारे । राजपरिवार में उनका सम्मान पहले से होता था, उस दिन भी हुआ । महल के अन्दर के भाग में वे ठहराये गये । सुन्दर और सुखद भोजन कराया गया । रात्रि में जब लोग खा-पीकर सो गये तो महात्मा की नीयत खराब हुई । वे महारानी का नौलखा हार चुराकर चम्पत हो गये । सबेरा होने पर पता चला तो चारों ओर खोज के लिए सिपाही छोड़े गये । यह बात राजा के यकीन में नहीं पड़ रही थी कि ऐसे महात्मा हार की चोरी भी करेंगे, लेकिन एक ही रात्रि में हार की चोरी और उनके गायब होने की घटना महात्मा पर सन्देह प्रकट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर रही थी । खोजते-खोजते सिपाहियों ने जंगल में महात्मा को पा लिया, तब उनसे हार का पता पूछा ।

महात्मा जी को दस्त आने लगे थे । उन्होंने सच बता दिया कि हार की चोरी उन्होंने की हैं । बड़े पश्चाताप् और लज्जा के साथ वे स्वयं हार लेकर राजा को देने आये । महाराज ने फिर उनका सम्मान करते हुए कहा कि महाराज ! यदि हार की इच्छा थी तो संकेत मात्र से वह सेवा में अर्पित कर दिया जाता । महात्मा ने बड़ी लज्जा से अपनी भूल स्वीकार करते हुए कहा — महाराज रात्रि में भोजन करने के बाद जाने क्यों मेरा मन चोरी की ओर प्रेरित होने लगा । यह पता लगाओ कि आपके भोजनालय में कल रात्रि को मेरे लिए कहाँ से आया हुआ खाद्य पदार्थ बना था ?

महाराज ने पूछ-ताछ की तो पता चला कि अति उत्तम प्रकार के कुछ बोरे चावल चोर चोरी करके लिए जा रहे थे । उन्हें सिपाहियों द्वारा पकड़ा गया । राजा के खाने योग्य समझ कर उन्हें भोजनालय में जमा कर दिया गया । वही कल महात्मा जी को भी खिलाया गया ।

इस घटना से हमें एक सीख मिलती है । भोजन की प्रकृति, उसके बनाने का ढंग तथा किस ढंग से वह अर्जित किया गया है इन सबका प्रभाव खाने वाले पर पड़ता है । भगवान के भक्त को खुली छूट नहीं हैं । उसे कठोर नियमों में अपने को बांधना पड़ेगा । बिना ऐसा किए उसे भगवत् चरणों की प्राप्ति सम्भव नहीं है ।

रामकथा सुनकर पक्षिराज गरुड़ जी कृतकृत्य होकर काकभुसुण्ड जी से सात प्रश्न पूछते हैं । उनमें से एक यह है —

मानस रोग कहहु समुझाई ।
तुम्ह सर्वग्य कृपा अधिकाई ॥
सुनहु तात अब मानस रोगा ।
जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा ॥
मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला ।
तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला ॥
काम बात कफ लोभ अपारा ।
क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥

सब रोगों की जड़ मोह है । उन व्याधियों से फिर और बहुत से शूल उत्पन्न होते हैं । काम वात है, लोग अपार कफ है और क्रोध पित्त है, जो सदा छाती जलाता रहता है ।

प्रीति करहिं जो तीनिउ भाई ।
उपजइ सन्यपात दुखदाई ॥
विषय मनोरथ दुर्गम नाना ।
ते सब सूल नाम को जाना ॥

तीनों भाई वात, पित्त और कफ यदि प्रीति कर लें तो दुखदायक सन्निपात रोग उत्पन्न होता है । कठिनता से प्राप्त होने वाले विषयों के मनोरथ कष्टदायक शूल हैं । वे अपार हैं ।

ममता दादु कंडु इरषाई ।
हरष बिषाद गरह बहुताई ॥
पर सुख देखि जरनि सोई छई ।
कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई ॥

ममता दाद है, ईर्ष्या (डाह) खुजली है, हर्ष-विषाद गले के रोगों की अधिकता है (गलगंड, कण्ठमाला या घेंघा आदि), पराये सुख को देखकर जो जलन होती है वही क्षय रोग है । दुष्टता और मन की कुटिलता ही कोढ़ है ।

अहंकार अति दुखद डमरुआ ।
दम्भ कपट मद मान नेहरुआ ॥
तृस्ना उदर वृद्धि अति भारी ।
त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी ॥

अहंकार अत्यन्त दुख देने वाला गांठ का रोग है । दम्भ, कपट, मद और मान , नेहरुआ (नसों का रोग) है । तृष्णा बड़ा भारी उदरवृद्धि अर्थात् जलोदर रोग है । पुत्र, धन और मान की तीन प्रकार की इच्छाएँ प्रबल तिजारी हैं ।

जुग बिधि ज्वर मत्सर अविवेका ।
कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका ॥

मत्सर और अविवेक दो प्रकार के ज्वर हैं । इस प्रकार अनेकों बुरे रोग हैं जिन्हें कहाँ तक कहा जाय ।

इसलिए भगवान ने बताया कि बहुमुखी मनोरथों की ओर से अपने मन को हटाओ । दो प्रकार के कार्य एक साथ नहीं हो सकते —

दुह कि होइ एक समय भुआलू ।
हँसब ठठाब फुलाउब गालू ॥

आप सांसारिक मनोरथों के मृगतृष्णा जाल में अपने को फँसाये रखना भी चाहते हैं और ईश्वरपरायण भी बनना चाहते हैं । यह दोनों काम भला एक साथ कैसे हो सकते हैं ? भगवान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ने बताया कि सारे मिथ्या मनोरथों को छोड़कर सज्जनोचित आचरण में अपने को लगाओ। संसार में कर्म के बिना कोई रह नहीं सकता। स्वरूप से कर्म का त्याग नहीं वरन् भावनाओं से उसका त्याग करना चाहिए। जब तक जीवन है, कुछ न कुछ करे बिना रहा नहीं जाएगा तो अच्छे और बुरे में सत् और असत् में, सात्विक और तामस अन्धकार और प्रकाश में भेद करो। बुरे कर्मों, आशाओं और मनोरथों की ओर से अपने को हटाओ और अच्छे कामों की ओर लगाओ। इसी को सज्जनोहित आचरण की संज्ञा दी गई है। भगवान के भक्त कहलाने वालों की बुद्धि एक दिशा की ओर लगी रहनी चाहिए –

बिनु घन निर्मल सोह अकासा।
हरिजन इव परिहरि सब आसा॥

"जिस प्रकार बादलों के बिना निर्मल आकाश शोभा देता है, वैसे ही भगवत् भक्त जब सब आशाओं का त्याग कर देता है तो उसकी शोभा होती है।"

पुत्र, धन, मुकंदमे में विजय, परीक्षा मे सफलता के लिए भगवान की पूजा करना, भक्ति का स्वांग करना अथवा मनौती मानना भक्ति नहीं है। सफलता-असफलता, हानि-लाभ, सुख-दुख और मान-अपमान सब में साधक को एकरस रहना पड़ेगा। जब ये बाह्य परिस्थितियाँ साधक को प्रभावित न कर सकें तभी वह ईश्वरपरायणता की स्थिति में पहुँचेगा।

उसका हृदय भगवान का निवास बनेगा। गोस्वामीजी कहते हैं –

काम कोह मद मान न मोहा।
लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिन्ह के कपट दम्भ नहिं माया।
तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया॥
सब के प्रिय सबके हितकारी।
दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
सरगु नरकु अपबरगु समाना।
जहँ तहँ देख धरें धनु बाना॥
करमबचन मन राउर चेरा।
राम करहु तेहि के उर डेरा॥
जाहि न चाहिअ कबहुँ कुछ तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरन्तर तासु मन सो राउर निज गेह॥

अब प्रश्न आता है कि सज्जनोचित धर्म क्या है? किस प्रकार के आचरण को सज्जनों के धर्म की संज्ञा दी जायेगी?

गोस्वामी जी इस विषय में संक्षेप में बड़े सुन्दर ढंग से बताते हैं –

जननी सम जानहिं परनारी।
धन पराव बिष ते विष भारी॥
जे हरषहिं पर सम्पति देखी।
दुखित होहिं पर बिपति विशेषी॥
जिन्हहि राम तुम प्रान पिआरे।
तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे॥

सज्जनों के चरित्र की सबसे बड़ी कसौटी है – सच्चरित्रता। पराई स्त्री, बहू, बेटी को माता के समान मानना सर्वप्रथम धर्म है।

पराये धन को विष के समान मानना

दूसरी विशेषता पराये धन को विष के समान मानना है। इसका अर्थ है कि अपने पुरुषार्थ, परिश्रम तथा न्यायपूर्ण कमाई पर अपनी जीविका बिताने का ताना-बाना बुनना चाहिए। संसार का इतिहास बताता है कि दूसरे के धन को चोरी, डकैती अथवा बलपूर्वक छीन कर उससे अपने सुख की आशा बाँधने वाले लोगों की आशा दुराशा में परिवर्तित हुई है। उन्हीं का बढ़ाव और विकास हुआ है, जिनने अपनी कमाई पर भरोसा किया है। संसार के अधिकांश झगड़े-झंझट स्वार्थपरता और बेईमानी के कारण होते हैं। यह रास्ता सज्जनों का नहीं है। सज्जन पुरुषों की पहचान यह है कि वे कभी दूसरों की बढ़ोत्तरी देख कर डाह नहीं करते। किसी की सम्पदा देख कर मुँह में पानी नहीं लाते। जो हमारा है उसी से निर्वाह करना अभीष्ट है यह उनका आदर्श होता है। बेईमानी से प्राप्त लाखों रुपये की सम्पत्ति सज्जनों के लिए मिट्टी के ढेले के समान मूल्यहीन ही होती है।

लोभ को वासना मात्र के आते ही भगवत्-भक्त अपने पथ से भ्रष्ट हो जाता है। साधु बनकर जमीन-जायदाद के पचड़े में पड़ने वाले विरक्त लोग भगवत्-भक्ति के महान पथ से गिरते हुए देखे जाते हैं।

ईश्वराधन के पथ पर चलने वाले भक्त को सन्तोषी और ईमानदार होना चाहिए –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जे हरषहिं पर सम्पति देखी ।
दुखी होहिं पर बिपति बिसेषी ॥
जग बहु नर सर सरि सम भाई ।
जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई ॥
सज्जन सुकृत सिन्धु सम कोई ।
देखि पूर बिधु बाढ़इ जोई ॥

जगत् में तालाबों और नदियों के समान मनुष्य ही अधिक हैं जो जल पाकर अपनी ही बाढ़ से बढ़ते हैं अर्थात् अपनी उन्नति से ही प्रसन्न होते हैं । समुद्र-सा तो कोई एक बिरला ही सज्जन होता है जो चन्द्रमा को पूर्ण देख कर उमड़ पड़ता है अर्थात् दूसरों के उत्कर्ष से जिसे स्वाभाविक प्रसन्नता मिलती हो । संसार में उन्हीं को सज्जन कहते हैं जो दूसरों को सुखी देखकर सुखी और दूसरों को दुःखी देखकर दुःखी होते हैं । राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर स्वामी, महात्मा गाँधी आदि पूज्य महापुरुषों ने संसार के दुःखों को देख कर प्राणिमात्र को त्राण दिलाने के लिए अपने राजसी सुख का परित्याग किया था –

परहित सरिस धर्म नहिं भाई ।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई ॥

सज्जन का चरित्र कपास के समान निर्मल और गुणकारी होता है। भगवान की भक्ति रूपी पुनीत सरिता वहाँ निरन्तर प्रवाहित होती है –

साधु चरित सुभ चरित कपासू ।
निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा ।
वंदनीय जेहि जग जस पावा ॥
मुद मंगल मय संत समाजू ।
जो जग जंगम तीरथ राजू ॥
राम भगति जहँ सुरसरि धारा ।
सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा ॥

राम-भक्ति का वास्तविक प्रकटीकरण सन्तों के पास होता है । उनका स्वरूप परोपकार के लिए होता है –

पर उपकार बचन मन काया ।
संत सहज सुभाउ खगराया ॥
संत सहहिं दुख परहित लागी ।
परदुख हेतु असंत अभागी ॥
भूर्ज तरू सम संत कृपाला ।
परहित नित सह बिपति बिसाला ॥

अपने गुणों के आधार पर सन्त संसार के द्वारा वन्दनीय माने गये हैं । गोस्वामी जी ने उनकी वन्दना निम्न प्रकार से की है –

बंदउ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।
अंजलि गति सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ॥

सन्त लोग दूसरों के लिए दुःख सहते हैं । अपने स्वार्थ के लिए उनके हाथ नहीं फैलते । परन्तु असन्त के लक्षण इसके विपरीत होते हैं । वे तो परअपकार के लिए ही शरीर धारण करते हैं –

सन इव खल पर बंधन करई ।
खाल कढ़ाइ बिपति सहि मरई ॥
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी ।
अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
पर संपदा बिनासि नसाहीं ।
जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं ॥

दुष्ट लोग सन की भाँति अपनी खाल खिंचवाकर भी दूसरों को बाँधने का काम करते हैं । वे साँप और चूहों के समान अकारण ही दूसरों का अपकार करते हैं । परायी सम्पत्ति का नाश करके स्वयं नष्ट होते हैं, जैसे खेती का नाश करके ओले नष्ट हो जाते हैं ।

अधर्म ग्रह केतु के समान दुष्ट का अभ्युदय जगत के लिए दुःखदायी होता है और सन्तों का अभ्युदय चन्द्रमा और सूर्य के समान संसार भर के लिए सुखदायक होता है । सज्जनोचित का आचरण यह है कि सन्त सबसे अच्छाई लेते हैं और बुराई का त्याग करते हैं –

दुष्ट उदय जग आरति हेतू ।
जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥
संत उदय संतत सुखकारी ।
बिस्व सुखद जिमि इन्दु तमारी ॥
अवगुन तजि सबके गुन गहहीं ।
बिप्र धेनु हित संकट सहहीं ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्याचरण, संयमी जीवन, गुणसम्पन्नता, परोपकारी वृत्ति, संसार के हित में निरत रहने की स्वाभाविक इच्छा, श्रेष्ठजनों की सेवा आदि ऐसे गुणों वाले व्यक्ति ही सज्जन कहलाते हैं । यही सब सज्जनों का धर्म है ।

नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका ।
घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ॥

भगवान का भक्त बनने के लिए अपने को अनेक निरर्थक कर्मों की ओर से हटाकर सज्जनोचित धर्म में लगाने का अभ्यास करना चाहिए । भगवान ने इस कक्षा के कोर्स में निरन्तरता को विशेष महत्व दिया है –

'निरत निरन्तर सज्जन धर्मा ।'

केवल एक बार किसी का हित कर देना, एक-दो बार सत्य बोलना या परोपकार अथवा सत्य की कसौटी पर कोई बाजी लगाकर खरा उतरना ही पर्याप्त नहीं है। सज्जनोचित आचरण भक्त के दैनिक जीवन का आवश्यक अंग बनना चाहिए । जीवन की समस्त गतिविधियों की चूल भले आचरण के ताने बाने में इस प्रकार बुन देनी चाहिए कि जीवनपर्यन्त उससे निकला न जा सके । हमारी इन्द्रियाँ बड़ी चंचल और पतनोन्मुख होती हैं । ढाल की ओर जाना उनकी स्वाभाविक वृत्ति होती है । बुरे विचार नाना प्रकार के प्रलोभनकारी रूप धारण करके साधक को छलने और श्रेष्ठपथ से डिगाने के लिए आया करते हैं । उनमें बड़ी शक्ति होती है । जिस प्रकार शत्रु की दृष्टि हमारे कमजोर अंगों की ओर होती है, तनिक भी चूकने पर वह वहीं आक्रमण करता है, ठीक उसी भाँति उच्च से उच्च साधक को धर पटकने के लिए वह अवसर की खोज किया करते हैं । नारद जैसे भगवत्-भक्त मनीषी ने कामदेव के प्रयासों को चूर-चूर कर दिया था । लेकिन उसने दूसरा रूप धारण करके नारद जी को पुन: पटक दिया । ऐसे ही अनेक उदाहरण हमें मिलते हैं ।

इसलिए अपने भले आचरण में निरन्तरता, निर्बाधता और गतिशीलता की आवश्यकता सर्वोपरि है । भगवान की भक्ति की ओर बढ़ने वाले साधक को कठोर परीक्षण और साधना से गुजरना पड़ता है । यह साधना पाँचवीं कक्षा में तो आन्तरिक होती है और छठी कक्षा बाह्य बन जाती है । अब साधक की परीक्षण स्थली सम्पूर्ण विस्तृत समाज बन जाता है । मन की एकाग्रता, भगवत्जप केवल जंगलों या गुफाओं में बैठकर करने से पुष्ट नहीं होता । व्यापक समाज में ही उसके खरे खोटेपन की परख होती है ।

सातवीं कक्षा – भगवान के विराट रूप का दर्शन

सातवँ सम मोहि मय जग देखा ।
मोतें संत अधिक करि लेखा ॥

भक्ति के नौ सोपान ईश्वर तक पहुँचने को नौ महत्वपूर्ण सीढ़ियाँ अथवा कक्षाएँ हैं । ऊपर की ओर चढ़ते समय जो पहली सीढ़ी से टाँग बढ़ाकर चौथी अथवा पाँचवीं पर एक बारही पहुँचने की चेष्टा करते हैं, उनकी टाँग फट जाती है । ऊपर चढ़ने के बजाय नीचे गिर जाते हैं और अंग भंग हो जाता है लेकिन जो लोग एक से दूसरी, फिर तीसरी और तब चौथी पाँचवीं पर चढ़ते रह कर ऊपरी मंजिल पर जाने का तरीका अपनाते हैं, वे सरलतापूर्वक ऊपर पहुँचते हैं ।

ईश्वर के स्वरूप को समझना, भगवत् साक्षात्कार करना जीवन का परम पुरुषार्थ माना गया है । मुसलमान धर्म में कहा गया है कि अल्लाह का निवास आसमान के सातवें मंजिल पर है । ईसाई धर्म में भी उसे आसमानी बाप कहा गया है । इन सबका तात्पर्य यही है कि वह बहुत ऊँचे पर है, वहाँ तक जादू-टोने से चुटकी बजाते हुए किसी चमत्कारिक रूप से थोड़े दिनों में नहीं पहुँचा जा सकता । निरन्तर अभ्यास के द्वारा अपने को क्रमश: एक मंजिल से दूसरी मंजिल पर ले जाना पड़ेगा ।

नवधा भक्ति के प्रसंग में वर्णित नव सोपान नौ महत्वपूर्ण कक्षाएँ हैं, जिन्हें क्रमश: पार करके ही आगे बढ़ा जा सकता है ।

प्रारम्भिक कक्षा के विद्यार्थी को 'अ' माने अमरुद, 'ब' माने बतख, 'स' माने स्याही और 'ट' माने टट्टू पढ़ाया लिखाया और हृदयंगम कराया जाता है । यदि ऐसा न किया जाए और बालक को उचित रूप से वर्णमाला का ज्ञान कराये बिना ही उसकी कुशाग्रबुद्धिता या बुद्धिलब्ध के आधार पर दसवीं अथवा बारहवीं कक्षा में प्रवेश दे दिया जाए तो परिणाम प्रतिकूल होगा । बालक की बुद्धि कुण्ठित हो जाएगी, उसकी प्रगति रुक जायेगी और सम्पूर्ण श्रम व्यर्थ चला जाएगा ।

बिल्कुल ठीक इसी प्रकार साधना की निचली कक्षाओं में सत्संग कथा-श्रवण, जप और कथा कहने की बात भगवान ने बताई । कक्षाओं के कोर्स को पूरा करके परीक्षा में सफल होने और अगली कक्षाओं में पहुँचने का प्रतिफल यह है कि हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन होता जाए। एम०ए० में पहुँचने के बाद भी यदि लड़का 'अ' माने अमरुद कहे तो लोग उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हँसी उड़ाएँगे। अब उसे कुछ बड़ी और विवेक की बातें करनी चाहिए।

केवल मन्दिर में, मूर्ति में, चित्र में अथवा किन्हीं विशिष्ट स्थानों पर भगवान की स्थिति का आभास करना प्रारम्भिक कक्षाओं का विषय है। उसे विस्तृत दृष्टिकोण नहीं माना जा सकता। लेकिन साधना या भक्ति के उच्च सोपानों पर पहुँचने के साथ हमारे विचारों में उदारता और विशालता अवश्य आनी चाहिए।

सातवीं कक्षा में पहुँचते ही अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाकर सम्पूर्ण चर-अचर में प्रभु के निवास की स्थिति को स्वीकार करने के लिए भगवान ने स्वयं निर्देश दिया है।

यह एक विचारणीय प्रश्न है कि क्या भगवान केवल अच्छे लोगों में ही हैं ? दुष्ट दुर्जन और बुरे लोगों को किसने बनाया ? अच्छाई-बुराई का मूल्यांकन तो हम अपने स्वार्थ और हित के दृष्टिकोण से करते हैं।

वस्तुत: कोई चीज बुरी नहीं है। जब वह हमारे लिए उपयोगी सिद्ध होने लगती है तो उसे हम अच्छा कहते हैं और अनुपयोगी को बुरा।

रामायण इस विषय में कहती है –

भलेउ पोच सब बिधि उपजाए।
गनि गुन दोष बेद बिलगाए॥
कहहिं वेद इतिहास पुराना।
बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना॥
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती।
साधु असाधु सुजाति कुजाती॥
दानव देव ऊँच अरु नीचु।
अमिअ सजीवन माहरु मीचू॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसा।
लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा॥
कासी मग सुरसरि क्रम नासा।
मरु मालब महिदेव गवासा॥
सरग नरक अनुराग बिरागा।
निगमागम गुन दोष बिभागा॥
जड़ चेतन गुन दोष मय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहि पय परिहर बारि बिकार॥

भले और बुरे सभी ब्रह्मा के पैदा किए हुए हैं। समय-समय पर सबकी उपयोगिता है। वृक्ष की रक्षा के लिए काँटों की आवश्यकता होती है। थल के लिए जल और जल के लिए थल, इस प्रकार अच्छे और बुरे दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। महाप्रभु का निवास सब में है, उसकी स्थिति का भास सर्वत्र करना चाहिए।

रामायण में भगवान को व्यापक रूप में देखने के लिए अनेक बार विभिन्न प्रसंगों के उदाहरण से शिक्षा दी गई है। पूर्वजन्म में माता सती को राम को नारि-विरह में व्याकुल और रोदन करते देख कर मोह हुआ। कौशल्या को बालक राम को देखकर मोह हुआ और पक्षिराज गरुड़ को नागपाश में बँधे असमर्थ राम को देख कर मोह हुआ। लेकिन इन सबको अपने मोह का प्रायश्चित भुगत कर उसका समाधान करना पड़ा।

मोहजनित सती को भगवान ने अपना विराट् रूप दिखलाया –

जाना राम सती दुख पावा।
निज प्रभाव कछु प्रगटि जनावा॥
सती दीख कौतुक मग जाता।
आगे रामु सहित श्री भ्राता॥
फिर चितवा पाछे प्रभु देखा।
सहित बन्धु सिय सुन्दर बेषा॥
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना।
सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना॥
देखे सिव बिधि बिस्नु अनेका।
अमित प्रभाउ एक तें एका॥
बंदत चरन करत प्रभु सेवा।
बिबिध वेष देखे सब देवा॥
जीव चराचर सब संसारा।
देखे सकल अनेक प्रकारा॥
अवलोके रघुवर बहुतेरे।
सीता सहित न वेष घनेरे॥

कौशल्या को भी पालना में लेटे बालक राम को देख कर मोह हुआ था। सती और कौशल्या माता दोनों के माध्यम से हम सबको यह सीख दी गई कि प्रभु को शरीरगत् देखने का संकुचित दृष्टिकोण मत अपनाओ, वे जगत पिता हैं, सर्वव्यापक है। उन्हें कौशल्या अथवा दशरथ जी का पुत्र अथवा अयोध्या के चक्रवर्ती सम्राट मात्र मानना सही दृष्टिकोण न होगा। भगवान शंकर ने प्रभु को इसी रूप में मानने की प्रेरणा पार्वती को दी –

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राम सच्चिदानन्द दिनेसा ।
नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा ॥
सहज प्रकास रूप भगवाना ।
नहि तहँ पुनि बिग्यान बिहाना ॥
हरष विषाद ग्यान विज्ञाना ।
जीवधर्म अहमिति अभिमाना ॥
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना ।
परमानन्द परेस पुराना ॥

काकभुसुण्ड जी भी भगवान का यही स्वरूप बताते हैं –

जो माया सब जगहि नचावा ।
जासु चरित लखि काहु न पावा ॥
सोइ प्रभु भ्रू बिलास खगराजा ।
नाच नटी इव सहित समाजा ॥
सोइ सच्चिदानन्द घन रामा ।
अज विज्ञान रूप बलधामा ॥
व्यापक व्याप्य अखंड अनंता ।
अखिल अमोघ सक्ति भगवंता ॥

संकुचित दृष्टिकोण से किन्हीं विशिष्ट स्थानों पर प्रभु का दर्शन पाने की चेष्टा करना हमारे मोहजनित दृष्टिकोण का परिणाम मात्र है -

जे मति मलिन विषय बस कामी ।
प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
जब जेहि दिस भ्रम होइ खगेसा ।
सो कह पश्चिम उयउ दिनेसा ॥
हरि विषयक अस मोह बिहंगा ।
सपनेहु नहिं अग्यान प्रसंगा ॥
माया बस मति मंद अभागी ।
हृदयँ जमनिका बहु बिधि जागी ॥
ते सठ हठ सब संसय करहीं ।
निज अज्ञान राम पर धरहीं ॥
काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुख रूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं मूढ़ परे भव कूप ॥

तम, रज और सत तीनों से ऊपर ब्रह्म की धारणा की स्थिति है। किसी में गुण देखना और दूसरे में अवगुणों की विद्यमानता का आभास करना हमारी प्राकृतिक स्थिति है। साधक जब इस स्थिति से ऊपर उठ जाता है तो उसे सर्वत्र और सब में भगवान के दर्शन होने लगते हैं।

सन्त और असन्त दोनों के लक्षण भगवान ने भरत को बताकर अन्त में कहा कि गुण और दोष दोनों मायाकृत हैं। दोनों का भास करना हमारे अविवेक की निशानी है। अपनी दोषदृष्टि का परिमार्जन करके सर्वत्र भगवान की स्थिति परिलक्षित करनी पड़ेगी। बाल्मीकि जी ने भगवान का निवास ऐसे व्यक्ति का हृदय बताया है जो जाँति-पाँति, ऊँच-नीच कुलधर्म की बड़ाई की विद्यमानता की स्थिति से ऊपर उठकर भगवान का भास करता है –

जाति पाँति धनु धरम बड़ाई ।
प्रिय परिवार सदन सुखदाई ॥
सब तजि तुम्हहिं रहइ उर लाई ।
तेहि के हृदय रहहु रघुराई ॥
जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु ।
बसहु निरन्तर तासु मन सो राउर निज गेहु ॥

भगवान जाति-पाँति, धन-बल, गुण और चतुरता के वशीभूत नहीं होते। गरीबों की झोंपड़ियों, दुखियों की कराहों और दीनजनों की दीनता में वही प्रभु हैं। जो विशाल मन्दिर की मूर्ति में माने जाते हैं। अपने को साधना के उच्च सोपान पर पहुँचाने के साथ हीन और संकुचित भावनाओं से ऊपर उठकर सम्पूर्ण जगत् के प्राणिमात्र में भगवान के दर्शन का अभ्यास करना पड़ेगा। यह भाव लाने पड़ेंगे कि जिस भगवान ने हमें बनाया है उसी ने मुसलमान, ईसाई पादरी, यहूदी आदि विश्व के समस्त धर्मावलम्बियों को बनाया है। फिर जाति और सम्प्रदाय के नाम पर झगड़े उठाने से क्या लाभ ? मेरे राष्ट्र भारतवर्ष और साथ ही विश्व के अन्य राष्ट्र-अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, रूस के वासी भी उसी महाप्रभु की सन्तान हैं। अपने देश के स्वार्थ के लिए दूसरे देशवासियों पर बम गिराना, तलवार से सिर काटना अथवा उससे घृणा करना ईश्वरभक्ति नहीं है। भगवान के भक्त में सब जीवधारियों, सब जातियों और सब राष्ट्रों के नागरिकों के प्रति समान प्रेम और आदर का भाव होना चाहिए।

मुद मंगल मय संत समाजू ।
जो जग जंगम तीरथ राजू ॥
बंदउ संत असज्जन चरना ।
दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं ।
मिलत एक दारुन दुख देहीं ॥
भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरता गरल सराहिअ मीचु ॥
खल अघ अगुन साधु गुन गाहा ।
उभय अपार उदधि अवगाहा ॥

अपने दृष्टिकोण से किसी के दोषों को न देखकर प्रभु की सृष्टि का अमूल्य प्राणी मानना चाहिए । महात्मा गाँधी ने कहा कि "पाप से घृणा करो, पापी से नहीं ।" बुरे कर्मों और बुरे विचारों से द्वेष होना चाहिए, लेकिन मनुष्य से नहीं । यह स्थिति लाने के लिए हमें ईश्वर से भी अधिक सम्मान और पूज्य पद जगत के उन मनीषियों, महापुरुषों विचारकों, तत्वदर्शियों और सेवाभावियों को देना पड़ेगा जिन्होंने अपना बूँद-बूँद रक्त देकर मानवता का त्राण किया । अपने को तिल-तिल जला कर जगत् को प्रकाश दिया । अपने सुख, वैभव, विलास, आनन्द और सम्पन्नता को दूसरों के हित के लिए न्यौछावर किया ।

जिस देश में महापुरुषों और देवियों की पूजा होती है उसके नागरिकों का चरित्र ऊँचा होता है कहते हैं कि इंग्लैंड के कैम्ब्रिज और हैरो विश्वविद्यालयों में सीढ़ियों पर उन स्थानों को सुरक्षित कर दिया गया है जहाँ महाकवि शैक्सपीयर या उस देश की महान विभूतियों के चरण पड़े थे । राम, कृष्ण, गौतम, महावीर, महाराणा प्रताप, समर्थ गुरु रामदास आदि की पूजा करके हम लोग महान् बनेंगे । अच्छे बनने का मार्ग यही है कि हम महापुरुषों की पूजा का प्रचलन करें । आदर, मान और प्रतिष्ठा देने की परम्परा चलायें ।

भगवान के गुणानुवाद का पाठ दूसरी और चौथी कक्षा में बताया गया था, लेकिन सातवीं कक्षा में पहुँचते-पहुँचते हमें ईश्वर के रूप के प्रति उदारता लाने के साथ उन समस्त श्रेष्ठ पुरुषों में महाप्रभु के दर्शन करने चाहिए जिनने संसार की फुलवाड़ी को हरी-भरी रखने के लिए अपना समय, श्रम और सहयोग प्रदान किया ।

सन्तजनों की रक्षा के लिए भगवान अपनी प्रतिज्ञा त्याग कर उनकी रक्षा करते हैं । हमें उनको आदर देना चाहिए । विभीषण से कहा था कि —

समदरसी इच्छा कछु नाहीं ।
हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसे ।
लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसे ॥
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें ।
धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥

आठवीं कक्षा — सन्तोष-वृत्ति

रामायण के उत्तरकाण्ड में काकभुसुण्ड जी पक्षिराज गरुड़ को अपना पूर्वकालिक अनुभव सुनाते हुए कहते हैं कि —

कोउ विश्राम कि पाव तात सहज सन्तोष बिनु ।
चलै-कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ ॥

"हे तात ! स्वाभाविक सन्तोष के बिना किसी को शान्ति नहीं प्राप्त हो सकती । जैसे पच-पच मरने पर भी जल के बिना नाव नहीं चल सकती ।"

बिनु सन्तोष न काम नसाहीं ।
काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं ॥

"सन्तोष के बिना कामना का नाश नहीं होता और कामनाओं के रहते स्वप्न में भी सुख नहीं मिल सकता ।"

सुख और शान्ति की प्राप्ति मानव-जाति की सर्वोत्तम इच्छा है । वैयक्तिक जीवन में चारों दिशाओं में दौड़-धूप, प्रयत्न और दिन-रात परिश्रम करने वालों से यदि पूछा जाय कि तुम ऐसा क्यों कर रहे हो ? किसान, व्यापारी, नौकरी पेशा वालों से उनके अथक परिश्रम का कारण पूछा जाए तो यही उत्तर मिलेगा कि— "ताकि हम और हमारे बच्चे सुख-शान्तिपूर्वक जीवन-निर्वाह कर सकें ।" चोर-डाकू भी इसीलिए चोरी-डकैती करते हैं कि सुख-चैन से जीवन व्यतीत करें । सामाजिक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में शान्ति के बड़े लम्बे-लम्बे प्रयास हम नित्यप्रति समाचार-पत्रों में पढ़ते हैं । वियतनाम, स्वेज नहर और चीन-पाकिस्तान के मसलों को लेकर जहाँ एक ओर तलवारें खिंचती हैं वहाँ हम शान्ति की आवाजें भी प्रबल बेग से सुनते हैं । वास्तव में शान्ति के अभाव में सृष्टि का सारा व्यापार अस्त-व्यस्त हो जाएगा । जिस देश के प्रदेश में अशान्ति आई वहाँ का जन-जीवन दु:खी हो गया, वहाँ की सारी प्रगति-उन्नति आदि रुक जाती है । मनुष्य, समाज, परिवार, राष्ट्र प्राणिमात्र का विकास शान्तिकाल में होना सम्भव है । इसलिए शान्ति का हमारे जीवन में सर्वश्रेष्ठ स्थान है प्रगति रूपी विशाल भवन की नींव शान्ति रूपी धरातल पर ही रखी जा सकती है ।

इच्छाएँ प्रबल हैं, उनकी दौड़ अपार है । अपनी समस्त इच्छाओं की पूर्ति कोई कर नहीं सकता । "जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई ।" लाभ से लोभ बढ़ता है, इच्छाओं और मनोकामनाओं की उपमा सुरसा रूपी राक्षसी से करना अनुचित न होगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हनुमान जी लंका की ओर आकाश मार्ग से विशाल सागर को जिस समय वायुवेग से पार कर रहे थे, देवताओं ने उनकी चतुरता और बल की परीक्षा लेने के लिए सर्पों की माता सुरसा को भेजा ।

आकाश में पहुँच कर सुरसा ने अपना भीमकाय मुँह फैला कर हनुमान के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया । पहले तो पवनतनय ने विजय का सहारा लिया, फिर शक्ति-प्रदर्शन होने लगा । हनुमान जी ने अपना शरीर सुरसा के मुँह से अधिक बड़ा कर लिया । सुरसा ने तुरन्त उससे दूना मुँह किया । यह प्रतिद्वन्द्विता बहुत देर तक चलती रही —

जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा ।
तासु दुगुन कपि रूप देखावा ॥

लेकिन फिर भी हनुमान जी को मार्ग नहीं मिल सका, उसने अपना मुँह सत योजन आकार का बना लिया —

सत जोजन तेहि आनन कीन्हा ।
अति लघु रूप पवन सुत लीन्हा ॥

वहाँ सुरसा 'प्रबल इच्छाओं' और हनुमान जी जीव के प्रतीक माने गये हैं । इच्छाएँ बड़ी प्रबल, शक्तिशाली और तीव्रगामी होती हैं, चाल में कोई उनसे आगे नहीं बढ़ सकता । सामान्य रूप से जीवन-निर्वाह करने वाला धीरे-धीरे लखपती, करोड़पती और फिर अरबपति बनकर भी सन्तुष्ट नहीं होता । लोभ की दीवार टूटने के बाद इच्छा रूपी बाढ़ का पानी निरन्तर बहता रहता है । मनुष्य की इच्छाएँ कामनाएँ कभी तृप्त नहीं हो सकतीं । यह निरन्तर बढ़ती रहेंगी । करोड़पतियों से यदि पूछा जाए कि क्या तुम धन से सन्तुष्ट हो तो वे एक गरीब से कहीं अधिक आठ-आठ आँसू रोकर अपनी निर्धनता का चित्र खीचेंगे । सुरसा रूपी लोभ पर तभी विजय मिलेगी जब हनुमान के समान अतिलघु रूप धारण किया जाए । सुन्दर मकान, घोड़ागाड़ी, प्रतिष्ठा, पद, राज्य धन से भला किसको सन्तोष हुआ है ? इन सब में सुख की खोज करना बालू पर भीत उठाने के समान है । यहाँ सुख शान्ति है ही नहीं ।

फिर सुख कहाँ मिलेगा ? रामायण इसी का उत्तर देती है कि —

कोउ विश्राम कि पाव तात सहज सन्तोष बिनु ।

सुख शान्ति की चाह सबको होती है, लेकिन उसके आने का एक ही मार्ग है । वह सन्तोष रूपी देहली से प्रवेश करती है । यदि उसे पुनः पद, प्रतिष्ठा आदि के चोर दरवाजों से किसी प्रकार लाने की चेष्टा की जाए तो कदापि नहीं आयेगी । संसार का इतिहास बताता है कि बड़े-बड़े वीर चक्रवर्ती सम्राटों और धनपतियों आदि का बड़ा दुखमय अन्त हुआ ।

यह सर्वमान्य बात है कि कामनाओं की पूर्ति में सुख ढूँढ़ना अपने को धोखा देना मात्र है । वह सन्तोष से ही मिल सकता है । 'हरि अनन्त हरिकथा अनन्ता' के समान कामनाओं का मायाजाल बड़ा विस्तृत है उसकी उपमा मकड़ी के जाले से दी जा सकती है । ज्यों-ज्यों मकड़ी उससे भाग कर अपने को जाल से निकालने की चेष्टा करती है, तागा उसी के पेट से निकलते रहकर उसे बाँधता रहता है । यही दशा लोभ-ग्रस्त मनुष्य की होती है ।

सन्तोष से कामनाओं का नाश होता है और कामनाओं से रहित होने के पश्चात् अन्तरमन में सुख का प्रवेश होता है जो जीवन का परम लक्ष्य है ।

भगवान का भक्त कामनाओं से रहित होकर सुख के स्वर्ग में प्रवेश करता है ।

एक बार लखनऊ की विधान-सभा में दर्शकदीर्घा का पास लेकर मैं सत्र की कार्यवाही देखने गया । गर्मी के दिन थे, कड़ाके की धूप पड़ रही थी । धूप से बचाव के लिए छाता लेकर जाना स्वाभाविक था । मेरे पास छाता था । ऊपर की सीढ़ियों पर पहुँचते ही संतरी ने मुझे रोका, श्रीमान् ! छाता रख कर ऊपर जाइये । मैंने कहा, क्यों ? उसका उत्तर था, आदेश नहीं है । पहनने के कपड़ों को छोड़ कर और कोई भी ठोस वस्तु लेकर आप ऊपर नहीं जा सकते हैं । मुझे विवश होकर अपने ठहरने के स्थान पर आना पड़ा । जब छाता रख कर गया तभी ऊपर जाने की अनुमति मिली ।

सरकार की छोटी-सी सभा में यदि यह नियम है तो महाप्रभु के बड़े दरबार की स्थिति का अनुमान इसी से लगाया जाये । काम, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष आदि की अनेक पोटलियाँ बाँध कर उसके दरबार तक पहुँचना असम्भव है । यह सब माया के परिवार हैं, इन्हें यही त्यागना पड़ेगा । भक्त अब अपनी साधना की अन्तिम ड्योढ़ी के बिल्कुल समीप पहुँच गया है । अब उसे केवल एक कक्षा और उत्तीर्ण करनी है । सड़क पर शस्त्र या सामान लेकर मंजिल तै की जा सकती है । उस समय उसकी उपयोगिता भी है । लेकिन दरबार के समीप पहुँच कर उसे अलग रखकर जाना पड़ेगा । इसीलिए आठवीं कक्षा में यथार्थ लाभ सन्तोष की बात बताई गई है ।

भक्त को सदैव इसी वृत्ति का होना चाहिए —

साई इतना दीजिए जाते कुटम अघाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवान जितना दे उसी से अपने को सन्तुष्ट रख कर प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए । यदि वह सुख देता है तो प्रसन्नता से उसका उपभोग करना चाहिए और यदि दुःख मिला तो भी उसे प्रभु का वरदान समझ कर हँसते-हँसते सहन करना चाहिए ।

भगवान राम ने सुख और दुःख दोनों परिस्थितियों में प्रसन्नता को नहीं त्यागा । जो मधुर मुस्कान राज्य प्राप्ति के समाचार को सुनते समय उनके होठों पर विराजती रही वही वनगमन के समय में भी मन्द-मन्द मुस्कान प्रभु के होठों पर चौदह वर्षों तक निर्बाध और अविचल गति से अठखेलियाँ करती रही । बाल्मीकि जी भगवान की उसी मुख मुद्रा की वन्दना करते हैं -

प्रसन्तां यः न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुखतः ।
मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्य मेसदास्तु सामंजुलमंगलप्रदा ॥

रघुकुल को आनन्द देने वाले श्रीरामचन्द्र जी के मुखारबिन्द की जो शोभा राज्याभिषेक से न तो प्रसन्नता की प्राप्त हुई और न वनवास के दुःख से मलिन ही हुई, वह मेरे लिए सदा सुन्दर मंगलों की देने वाली हो ।

भगवान ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मर्यादित आचरण का आदर्श प्रस्तुत किया है । भक्त के लिए वही अनुकरणीय होना चाहिए । उसे प्रभु की इच्छा में अपनी इच्छा माननी चाहिए —

'' राजी हूँ मैं उसी में जिसमें तेरी रजा है ।''

''हे प्रभु जैसी तेरी इच्छा है मैं उसी में प्रसन्न हूँ ।'' यह भाव निरन्तर भक्त के हृदय तन्त्र में प्रवाहित होते रहने चाहिए । गोस्वामी जी ने इसी को निम्न ढंग में कहा है —

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु ।
बसहु निरन्तर तासु मन सो राउर निज गेहु ॥
उदित अगस्त्य पंथ जल सोषा ।
जिमि लोभहि सोषइ सन्तोषा ॥

''जिस प्रकार अगस्त्य तारे के उदय होते ही मार्ग का जल सूख जाता है, उसी प्रकार लोभ का अंकुर सन्तोष को सोख लेता है । ''

लेकिन इच्छाओं को समेटने और उन्हें कम करके ''यथालाभ सन्तोषा'' के सिद्धान्त को स्वीकार करने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम कर्म से विरति ले लें । कुछ न करें और सबसे कहते फिरें कि जो कुछ भगवान देगा वही हमारे लिए बहुत है । दुनिया भर की हाय-हाय करने से क्या लाभ । मन में निष्क्रियता और कर्महीनता लाना भक्ति पथ का आठवाँ सोपान नहीं है । गीता में भगवान ने स्थितप्रज्ञ के जो लक्षण बताए हैं, भक्त के लिए वही निर्देश हैं । भक्त को कर्तव्यनिष्ठ और कर्मशील होना चाहिए । कर्म के बिना एक क्षण भी नहीं रहा जा सकता । लेकिन कर्म के बन्धनों से अपने को बाँधना अभीष्ट नहीं । सन्तोष हमारे मन की भावना स्थिति है । कर्म-पथ पर आरूढ़ रहने पर लाभ और हानि दोनों स्थितियों का वास्तविक और व्यावहारिक अनुभव होता है तभी दोनों स्थितियों में समान रूप से सन्तोष लाने की सच्ची साधना बन पड़ती है । कर्म को स्वरूप से त्याग देने का अर्थ है — साधना-पथ से हट जाना । इसलिए ऐसा कदापि नहीं करना चाहिए ।

नवीं और अन्तिम कक्षा — सरलता तथा ईश्वरपरायणता

भक्ति की अन्तिम और सर्वोच्च कक्षा है — सरलता व ईश्वर परायणता । समस्त प्रकार के योग, जप सत्संग आदि साधनों का प्रतिफल यह है कि साधक अधिकाधिक रूप से सरल बनता जाए । माया के प्रबलतम जाल से वह ज्यों-ज्यों छूटता जाएगा । अन्दर और बाहर दोनों से पूर्ण सरल बनेगा ।

सरलता से तात्पर्य है अपने को बाहरी सजावट से आवश्यकता से अधिक न ढकना । आडम्बरपूर्ण जीवन सरलता का विरोधी है । बड़प्पन हमारे हृदयगत विचारों और गुणों से सम्बन्धित है, बाहरी दिखावे मात्र से नहीं । सात्विक आहार, सादे वस्त्र, सरल व्यवहार एक भक्त के लिए सदैव आवश्यक माने गये हैं । भगवान भाव के भूखे रहते हैं, दिखावे के नहीं ।

मुनियों की स्तुतियों, वेद के वचनों और शास्त्रीय लोकाचारों से न रीझने वाले प्रभु राम ने सरल हृदय भीलनी, निषाद केवट और कोल भीलों के सामान्य व्यवहार और प्रेम के वशीभूत होकर अधिक सुख अनुभव किया ।

चित्रकूट में जाकर भगवान राम निवास करने लगे तो कोल भीलों ने उनके आगमन का समाचार सुना । वे प्रेममग्न हो गये और दोनों में जंगली फल-फूल ले-लेकर भगवान से मिलने चले —

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई ।
हरषे जनु नव निधि घर आई ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कंद मूल फल भरि भरि दोना ।
चले रंक जनु लूटन सोना ॥
कहत सुनत रघुबीर निकाई ।
आइ सबन्हि देखे रघुराई ॥
करहिं जोहारु भेंट धरि आगे ।
प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे ॥
चित्र लिखे जनु जँह तँह ठाढ़े ।
पुलक शरीर नयन जल बाढ़े ॥
राम सनेह मगन सब जाने ।
कहि प्रिय बचन सकल सनमाने ॥

कोल-भीलों का आडम्बरहीन सरल व्यवहार भगवान को अत्यन्त प्रिय लगा । अपनी जंगली भाषा में प्रेमाकुल होकर वे बार-बार राम जी को सेवा करने का आश्वासन दे रहे थे –

प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी ।
बचन बिनीत कहहिं कर जोरी ॥
अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय ।
भाग हमारे आगुमनु राउर कोसल राय ॥
हम सब धन्य सहित परिवारा ।
दीख दरस भरि नयन तुम्हारा ॥
हम सब भाँति करब सेवकाई ।
करि केहरि अहि बाघ बराई ॥
बन बेहड़ गिरि कन्दर खोहा ।
सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥
तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब ।
सर निरझर जल ठाउँ देखाउब ॥
हम सेवक परिवार समेता ।
नाथ न सकुचब आयसु देता ॥

यह थी कोल-भीलों की सरल भाषा । भगवान इसी पर रीझ जाते हैं –

वेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन ।
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन ॥
रामहि केवल प्रेम पिआरा ।
जानि लेउ जो जाननिहारा ॥

भगवान को केवल मात्र प्रेम प्यारा है । वे प्रेम से रीझते हैं । अन्य पूजन-विधियों से भक्ति इसीलिए श्रेष्ठ मानी गयी है कि इसमें सरलता का जामा पहन कर भक्त अपना हृदय पूर्ण रूप से ईश्वर के चरणों में समर्पित कर देता है ।

सरलता का द्योतक है निष्कपट व्यवहार । केवल भगवान की स्तुतियों में ही अपने अपार पापों और दोषों का वर्णन न करना वरन् प्राणिमात्र के साथ व्यवहार में किसी प्रकार का भीतर-बाहर का अन्तर न आने देना । ' मन में राम बगल में छुरी' वाली कहावत से सदैव और स्वाभाविक घृणा होनी चाहिए । सन्तों का कथन है कि किसी को ठगिए मत् वरन् अपने को ठग जाने दीजिए । यदि आपको कोई धोखा देता है तो उसे देने दीजिए, उस धोखे से आपकी तात्कालिक हानि भले ही हो, लेकिन अन्त भला होगा । परन्तु आप किसी को ठगने की चेष्टा मत करिये । पक्षियों में कौआ सबसे अधिक चतुर माना जाता है और गौरैया नामक छोटा पक्षी अत्यन्त बेबकूफ । मनुष्य को ढेला, पत्थर छड़ी या कोई अन्य छोटा-बड़ा हथियार उठाते देख कर कौआ तुरन्त उड़ जाएगा । जहाँ बैठेगा अपनी निगाह चारों ओर घुमाता रहेगा कि किसी ओर से उस पर आक्रमण तो नहीं हो रहा है । इसके विपरीत गौरैया चुगत-चुगत मनुष्यों के ऊपर बैठ जाएगी, लोगों के अति समीप पहुँच जाएगी और सदैव निर्भीक रहेगी । दो गौरैया आपस में लड़ते-लड़ते लोगों के ऊपर गिर पड़ती हैं ।

इन दोनों की उपलब्धियों का अन्तर सबको ज्ञात है कौआ सबेरे उठकर विष्ठा खाता है और गौरैया गेहूँ चुगती है ।

इसलिए कहा गया है कि आप अपने मन में किसी के प्रति हानि की भावना मत लाइये -

तुलसी यहि संसार में बदला कहूँ न जाए ।

जैसा हम करते हैं वैसा ही प्रतिफल हमें मिलता है । दूसरों के साथ छल-कपटपूर्ण व्यवहार करने वाले बदले में वहीं सब पाते हैं । वे अपने को अनेक प्रकार से शत्रुता, द्वेष, भय और धोखे की कंटीली झाड़ियों में फँसा लेते हैं । उनमें से निकलना उनके लिए दुर्लभ हो जाता है इसके विपरीत निष्कपट व्यवहार वाला व्यक्ति सदैव निर्द्वन्द और सुखी रहता है । वह अपनी सरलता के कारण अजातशत्रु बन जाता है । लोग स्वाभाविक रूप से उससे प्रेम करने लगते हैं । निरर्थक कार्यों में या विचारों में उसको अपनी शक्ति का अपव्यय नहीं करना पड़ता । उसके शत्रु भी उससे प्रेम करते हैं । यदि कभी वह किसी संकट में पड़ भी जाएँ तो आप से आप उससे छूट जाता है । दैवी सहायता उपलब्ध होती है । संसार विकराल और मायाजाल भी है, जहाँ पग-पग पर कठिनाइयाँ और आपदायें हैं और सुख तथा कल्याण का घर भी है । जैसे हम होते हैं, हमें संसार उसी प्रकार का दिखाई पड़ता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने व्यवहार में सरलता व निष्कपटता लाना एक बड़ी साधना है, यह अन्तिम और सर्वोच्च कक्षा का ही विषय है। समस्त साधनों का प्रतिफल यही है कि हम सरल बन जाएँ –

'निज प्रभुमय देखउ जगत का सन करौं बिरोध ।'

सम्पूर्ण संसार के प्राणिमात्र में उस प्रभु के दर्शन की भावना लाते ही निष्कपटता आने लगती है । हम जैसा व्यवहार अपने साथ चाहते हैं, वैसा ही दूसरों के साथ करना चाहिए । मनुष्य की समस्त साधनाओं का फल यह है कि वह पूर्ण रूप से सरल बन जाए । मन, वचन और कर्म तीनों में सरलता की झलक होनी चाहिए । हमारा कोई काम किसी अन्य को हानि पहुँचाने की दृष्टि से न हो, दूसरों के प्रति किसी प्रकार का कपटपूर्ण व्यवहार न हो और अपने रहन-सहन में सादगी हो ।

लेकिन सरलता का अर्थ कभी फूहड़पन से न लेना चाहिए । वस्त्रों को इधर-उधर गन्दी दशा में फेंके रहना, शरीर को मैला-कुचैला रखना बाह्य सरलता का प्रतीक नहीं है ।

हमारे जीवन में सरलता का विशेष महत्व है । सरल और सीधे-सादे कहलाने वाले भक्त संसार की अगणित कठिनाइयों को हँसते-हँसते पार कर जाते हैं । वे ईश्वर के बहुत निकट होते हैं ।

ईश्वरपरायणता

''मम भरोस हिय हरष न दीना ।''

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का विस्तृत उपदेश अर्जुन को देकर अन्त में कहा है -

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यमामि मा शुचः ॥

''सब धर्मों को और सम्पूर्ण कर्मों के आश्रय को त्याग कर केवल एक मुझ सच्चिदानन्दघन भगवान की शरण को प्राप्त हो, मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर ।''

शरण लेने की आवश्यकता सबको पड़ती है लेकिन उस प्रभु की शरण लेना सर्वश्रेष्ठ है । संसार नाशवान है, इसके समस्त सहारे अनित्य हैं, जीवन क्षणभंगुर है, फिर उसका सहारा लेने से कैसा भला हो सकता है ? रामायण, गीता, वेद, शास्त्र सब पुकार-पुकार कर कहते हैं – हे जीव ! उस भगवान की शरण में जाओ जो सबको सहारा देने वाला है, सबका पालन और रक्षक है ।

रामायण कहती है -

सुखी मीन जहिं नीर अगाधा ।
जिमि हरि सरन न एकउ बाधा ॥

जैसे अथाह जल में मछली सुखी रहती है, वैसे ही भगवान की शरण में जाने से भक्त समस्त प्रकार की बाधाओं से रहित और निर्द्वन्द्व हो जाता है, उसे कोई व्याधि नहीं रहती । जो भगवान की शरण में है, उसी कुशल-क्षेम के लिए भगवान दौड़े आते हैं । अम्बरीश, अर्जुन आदि की रक्षा के लिये भगवान को ही चिन्ता थी । प्रभु का चक्र सुदर्शन अनन्य भक्त की रक्षा के लिये पीछे-पीछे चलता है । माता-पिता भाई बन्धु जिनका सर्वस्व एक ईश्वर ही है, वही भक्त भगवान का सजीव मन्दिर है । बाल्मीकि जी कहते हैं कि –

स्वामि सखा पितु मातु गुरु जिन्हके सब तुम्ह तात ।
मन मन्दिर तिन्ह के बसहु सीय सहित दोउ भ्रात ॥

अपनी पदावली में तुलसीदास जी ने कहा है कि –

नाता नेह राम के मनियत सुदृढ़ सुसेव्य जहाँ लौं ।
अंजन कहा आँखि जेहिं फूटै बहुतक कहौं कहाँ लौं ॥

संसार के समस्त नाते राम के माध्यम से हैं सब नाते उसी से जुड़े हैं ।

परन्तु इसे दुर्भाग्य ही माना जा सकता है कि हमें ईश्वर की सत्ता पर विश्वास नहीं होता । ईश्वरपरायणता की स्थिति आना बड़ी कठिन साधना का विषय है । भगवान स्वयं हनुमान जी से कहते हैं कि –

मोर दास कहाय नर आसा ।
कहु कपि केहि प्रकार बिसवासा ॥

'मेरा दास कहाकर जो मनुष्यों का आसरा ले उसके विश्वास में दृढ़ता की कमी है ।'

सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि ।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धान्त बिचारि ॥
जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़इ करइ चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनाथकहिं भजहिं जीव ते धन्य ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूरदास जी कहते हैं -

चरण कमल बंदउँ हरि राइ ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघइ अन्धे को सब कुछ दरसाइ ॥
बहिरो सुनै मूक पुनि बोलइ रंक चलइ सिर छत्र धराई ।
चरण कमल बंदउँ हरि राई ॥

महात्मा गाँधी जैसे महापुरुष ईश्वरपरायणता की अपार शक्ति के सहारे राष्ट्रपिता बने और देश को स्वतन्त्र कराया। वे सदैव ईश्वर की सत्ता पर अटूट विश्वास रख कर अपना राजनैतिक आन्दोलन चलाते थे। गाँधी जी नित्य प्रार्थना में प्रातः सायं भजन गाते थे —

सुने रे मैं तो निर्बल के बल राम ।
अप बल तप बल और बाहु बल चौथी है बल दाम ।
सूरदास प्रभु संत कृपाते हारे के बल राम ॥

संसार धोखा दे सकता है, परन्तु ईश्वर सच्चा सहारा है। उस महाप्रभु के चरणों में हमारा सच्चा विश्वास जगे —

राम भगति मनि उर बल जाकें ।
दुख लवलेस न सपनेहु ताकें ॥

श्रीराम-भक्ति रूपी मणि जिसके हृदय में बसती हैं, उसे स्वप्न में भी लेशमात्र दुख नहीं होता।

भक्ति-पथ का उपसंहार

निर्मल मन जन सो मोहि पावा ।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥

जीव और ब्रह्म के बीच का अन्तर माया का आवरण है। मलविक्षेप आवरण का पर्दा पड़ा है, इसी से जीव अपने स्वाभाविक स्वरूप को नहीं देख पाता।

बालकाण्ड में कहा है कि —

ईश्वर अंश जीव अविनासी ।
चेतन अमल सहज सुखरासी ॥

सत्, चित, आनन्द के स्वाभाविक स्वरूप भगवान का यह जीव अंश है। उसके समस्त गुण अंशों में विद्यमान हैं। प्रश्न आता है कि फिर जीव इतना निर्बल, दुःखी और अपंगु क्यों है ?

सो माया बस परेऊ भुलाई ।
बँधेऊ कीर मरकट की नाई ॥

माया के वशीभूत होने के कारण कीड़े-मकोड़ों जैसी उसकी गति हो रही है।

आत्मा पर पड़ा हुआ मल का आवरण जिस दिन हट जाता है, परमात्मा के स्वरूप का दर्शन अपने में ही होने लगता है। भगवान कबीर के शब्दों में कहते हैं —

मो कहँ कहाँ ढूँढ़े वन्दे मैं तो तेरे पास हूँ ।

मस्जिद, मन्दिर अथवा गिरजाघर में या पहाड़ की गुफाओं में भगवान को ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं, वह सर्वव्यापक और सबके पास है।

नवधा भक्ति के नौ साधन-पथ अभ्यास के लिए रखे गये हैं। वे मन को निर्मल करने के उपाय मात्र हैं। बरतन को साफ करने के लिए जूना और राख है। साधना की कठोर भट्टी में तप कर जब भक्त का मन निर्मल हो जाता है तो उसकी पहुँच भगवान के चरणों में हो जाती है। अपनी कामनाओं का परित्याग करके वह दरबार में पहुँचता है। उस समय द्वैत भाव मिट जाता है भगवान और भक्त का चिरअनन्त मिलन हो जाता है।

इस प्रकार राम-कथा मानव मात्र को अनेक सद्गुरु और सत्प्रवृत्तियों की प्रेरणा देने वाली है। भगवान राम ने सर्वसाधारण के सम्मुख एक ऐसा उच्च और व्यावहारिक आदर्श उपस्थित किया है, जिससे भारतीय समाज चिरकाल से लाभान्वित हो रहा है। उनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है — धन धान्य सम्पदा राज्य आदि से निर्मोह-अनासक्ति। जरा से संकेत पर वे अवध के भरे पूरे राज्य को छोड़कर वन को चले दिये। सोने की लंका को विजय कर लेने के बाद भी उसकी सम्पति को आँख उठा कर देखा तक नहीं इस प्रकार उन्होंने अपने चरित्र द्वारा लोगों को यह शिक्षा दी कि सब प्रकार की लौकिक उन्नति और वैभव प्राप्त करते हुए भी मनुष्य को उनमें आसक्त नहीं होना चाहिये, क्योंकि आसक्ति ही दुःख और पतन का मूल है।

दूसरी विशेषता है सत्यमार्ग पर दृढ़ श्रद्धा और तदनुसार आचरण भगवान राम जंगल में एकाकी है राज्य और परिवार से दूर हैं, पत्नी भी हर ली गई है। त्रेतायुग के सबसे बड़े सैन्याधिपति रावण से टक्कर लेनी है। पर एकमात्र सत्य-पक्ष पर आरूढ़ रहने के बल पर वे इनमें से किसी बात की चिन्ता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं करते और थोड़ी-सी वन जातियों को इकट्ठा करके रावण की अजेय सेना को पराजित कर देते हैं ।

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा वर्णित राम-कथा निःसन्देह लोक शिक्षण की दृष्टि से एक महान निधि है। यद्यपि रामलीला के रूप में यह अब भी गाँव-गाँव में प्रचलित है, पर खेद है कि अधिकांश लोग उसकी महान् शिक्षाओं पर ध्यान देने के बजाय उसे मनोरंजन का एक साधन ही समझने लगे हैं । इस उद्देश्य से हमने इस ग्रन्थ में भगवान राम के चरित्र पर उपयोगिता और मानव-जीवन की सार्थकता की दृष्टि से ही विचार किया है । आशा है रामायण-कथा का यह रूप सर्वसाधारण के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा ।

मानस चतुःशती के सन्दर्भ में -

सन्त तुलसी ने मानस क्यों रचा ?

हे प्रभु ? मानसकार के मानस को हमारा मानस कब छू सकेगा ? क्या हमारी मान्यता सही है ?

मानस रचना के उद्देश्य का प्रश्न उठते ही चट से कह दिया जाता है 'यह तो सन्त तुलसी ने स्वान्तः सुखाय लिखी थी ।' इस कथन को गलत भी नहीं कहा जा सकता । किन्तु स्वान्तः सुखाय का जो अर्थ हमारे स्वार्थी मन किया करते हैं वह तो सन्त तुलसी का उद्देश्य किसी भी स्थिति में नहीं हो सकता । यदि उसका अर्थ अपने मजे के लिए समझा जाये तो फ़िर तुलसीदास के सन्त होने पर भी प्रश्न वाचक चिन्ह लग जाता है । स्वयं उन्हीं ने लिखा है कि सन्त हृदय की तुलना मक्खन से भी करना अनुचित है । नवनीत श्वेत स्नेहिल पौष्टिक तो होता है किन्तु —

निज परिताप द्रवहि नवनीता ,
पर दुख द्रवहिं सन्त सुपुनीता ।

इस मान्यता के अनुसार पीड़ित मानवता के कष्टों से मुख मोड़कर अपने आन्तरिक सुख के लिए परम स्वार्थी की तरह सारा जीवन एक ही काम में लगा दे तो वह कैसा सन्त ? भले ही वह काम अपनी जायदाद खड़ी करना हो या कोई ग्रन्थ लिखना उसमें अन्तर क्या पड़ता है ? फिर सन्त और संसारी में भेद ही क्या रह गया ?

इतने पर भी यह मान लें कि उन्होंने केवल अपने ही सन्तोष के लिए यह रचना की थी, जनहित से उसका कोई सम्बन्ध नहीं तो अगला प्रश्न सामने आ जाता है । उन्होंने संस्कृत में काव्य रचना की परिपाटी तोड़कर जन भाषा में काव्य रचना क्यों की ? वे स्वयं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे । रामचरित गाने में उनको रस आता था तो संस्कृत में ही गा लेते । उस काल में भाषा में काव्य रचना करना संस्कृत भाषा का अपमान माना जाता था— उसे पाप की संज्ञा दी जाती थी । विदित है कि सन्त तुलसी ने भाषा में रामचरित मानस लिखकर जीवन भर कितना कठोर विरोध तत्कालीन विद्वानों का सहा । अपमानजनक शब्दों से लेकर गुण्डागर्दी तक का सामना उन्हें करना पड़ा । अपने सन्तोष का लक्ष्य तो संस्कृत में भक्ति गीत गाकर भी पाया जा सकता था — उसके लिए इतना कष्टकारी, क्रान्तिकारी, कदम उठाने की क्या आवश्यकता थी क्या तुलसी दास सनकी थे — कि जो मन में आ गया उसकी क्रिया प्रतिक्रिया पर विचार किये बिना ही अन्धी दौड़ दौड़ने लगते ।

उद्देश्य कुछ अन्य ही था

स्पष्ट है कि इतना बड़ा विचारक निस्पृह सन्त ऐसी विवेक हीन चाल न चलेगा । सन्त स्वभाव के अनुरूप ही कोई कारण रहा होगा जिसके कारण 'भाषा निबन्धमति मंजुल मातनोति' की आवश्यकता पड़ी । निश्चित ही जनता उसे समझे और लाभान्वित हो यह उनका उद्देश्य था ।

यह तथ्य किसी एक बात पर अड़े रहने से नहीं समझे जा सकते । रामचरित मानस में ही स्वयं सन्त ने बार बार अपना उद्देश्य प्रकट किया है कुछ उदाहरण संकेत रूप में बालकांड से यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं । सन्दर्भ गीता प्रेस के संस्करण के आधार पर है —

दोहा क्रम २९ ग के बाद दूसरी चौपाई में लिखा है -

कहहु सोई संवाद बखानी ।
सुनहु सकल सज्जन सुख मानी ॥

लेखक का सीधा आग्रह है कि सभी सज्जन इसे सुनें । इसी प्रकार दोहा क्र० ३५ के पूर्व यही भाव है ।

कहहु कथा सोइ सुखद सुहाई ।
सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥

केवल सुन लेने से ही उनका संतोष नहीं होता वह चाहते हैं कि लोग अपने चित्त और चरित्र का सुधार इस चरित्र के आधार पर करें । देखिये -दोहा ३५ के बाद दूसरी चौपाई में लिखा है —

सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्पष्ट है कि जो इसे सुन कर अपने चित्त को सुधार सके वहीं उनकी दृष्टि में सज्जन है। यही भाव आगे भी प्रकट किया गया है। मानस को 'सरोवर' - 'ताल' की उपमा में बांधकर कहते हैं जो इसका गान करते हुए अपना चरित्र सम्भालते हैं वहीं इसकी पवित्रता के चतुर रक्षक हैं — दोहा ३७ के तुरन्त बाद की चौपाई —

जे गावाहिं यह चरित सँभारे ।
तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ॥

रामचरित मानस के उपयोग के अनेक ढंग उसके प्रभाव सहित उन्होंने बताये हैं। फिर भी यदि कोई अपनी पूर्व मान्यताओं से ऊपर उठकर अपना चित्त शुद्ध न कर सके उसके लिये मानसकार ने कायर शब्द का प्रयोग किया है -

दोहा ४२ के बाद ७ वीं चौपाई में

जिन्ह एहि वारि न मानस धोये ।
ते कायर कलिकाल बिगोये ॥

अगली चौपाई में उन्हें मृग तृष्णा में भटकने वाले दुखी जीव कहकर दु:ख प्रकट किया है।

यह सब क्यों —

सन्त तुलसी यह सब क्यों चाहते थे ? इसका स्पष्टीकरण भी है। वे चाहते थे रामचरित से प्रेरणा लेकर लोग दुखों से मुक्ति पायें। राम कथा में यह तत्व है — यह उन्होंने बार बार लिखा है देखिये दोहा ३० ख के बाद पाँचवीं चौपाई —

बुध विश्राम सफल जनरंजनि ।
राम कथा कलि कलुष विभंजनि ॥

दोहा ३५ के पूर्व चौथी चौपाई —

त्रिविधि दोष दुख दारिद दावनि ।
कलि कुचालि कुलि कलुष नसावनि ॥

पैंतीसवें दोहे में तो एकदम स्पष्ट प्रयोजन लिख दिया है कि 'जस मानस जेहि विधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु' वही सनातन उद्देश्य संत तुलसी का है।

फिर स्वान्त सुखाय का क्या अर्थ

प्रश्न उठता है फिर उन्होंने स्वान्त: सुखाय क्यों लिखा है। स्पष्ट है कि वे संत थे और उसी भाव से सब अभिव्यक्ति करते गये लोग लौकिक यश अथवा सम्पन्नता के लिए काव्य रचना करते हैं उनका उद्देश्य यह नहीं था। जन कल्याण के लिए लिखा तो भी क्या पुण्य कमाकर स्वर्ग मुक्ति की कामना से यह किया ? नहीं उनका भाव तो 'कामये दुखतप्तानां प्राणिनां आर्तनाशनम' ही था इसी में उन्हें आत्म संतोष मिलता था। सन्त की अपनी कामनायें तो समाप्त हो जाती हैं सब कुछ प्रभुमय हो जाता है, और संत तुलसी तो सिया राम मय जग देखते थे। फिर यदि लोकान्त: सुखाय को उन्होंने स्वान्त: सुखाय अनुभव किया तो यह उनकी गरिमा के अनुकूल ही था। सचमुच सन्त का सुख समाज के वास्तविक सुख संतोष से भिन्न हो भी क्या सकता है। इस आन्तरिक सद्भाव को भी उन्होंने प्रभु प्रसाद माना है —

सम्भु प्रसाद सुमति हिय हुलसी ।
रामचरित मानस कवि तुलसी ॥

सन्त तुलसी ने अपने भाव जगह-जगह प्रकट किये हैं उनको सही रूप में समझा जाना चाहिये। मानस केवल पाठ का नहीं जीवन साधना और भावसाधना का ग्रन्थ है। उसका वही उपयोग हो तभी उसके द्वारा जन संतापों का निवारण होगा और तभी सन्त भी स्वान्तः सुखाय अनुभव करेंगे।

राम कथा का उद्देश्य लोक मंगल

राम कथा भारतवर्ष में ही नहीं विदेशों में भी दूर-दूर तक प्रचलित है। भारत में तो जन जन में उसके प्रति अगाध आस्था है। तुलसीकृत रामचरित मानस के राम तो भारतीय नागरिकों के जीवन में विभिन्न पक्षों से घुल मिल गये हैं। रामकथा का पाठ, कथन और श्रवण नित्य नियमित विषय है। यह है भी उचित क्योंकि भगवान राम के जीवन वृत्तान्त से उनकी लीलाओं से हर स्तर का व्यक्ति प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है।

परन्तु राम जैसे सर्वतोमुखी व्यक्तित्व के चरित्र से इतना निकटतम होते हुए भी भारतीय जनमानस उनके गुणों से जीवन दर्शन से लाभ नहीं उठा पाते। यह आश्चर्य और दुख का ही विषय है। उसका मुख्य कारण यह है कि लोग केवल उसके, कथन, श्रवण आदि से ही पुण्यार्जन की बात सोचते हैं। उसे समझने, आत्मसात करने, अपनाने की ओर ध्यान ही नहीं देते। जब कि राम कथा तो क्या राम जन्म के पीछे भी यह उद्देश्य जुड़ा है कि लोग उनके चरित्र से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को उसी के अनुसार बनाकर धन्य हो जावें। हर व्यक्ति को उसे समझने और अपनाने का अवसर मिले। इसलिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तुलसीदासजी ने संस्कृत में ही रामचरित्र की परिपाटी तोड़कर हिन्दी में उसे लिखा और प्रचारित किया । स्वयं भगवान भी मनुष्य देह में इसीलिये अवतरित होते हैं कि उनके उदाहरण से हर व्यक्ति जीवन के उच्च आदर्श के व्यवहार में लाना सीख ले ।

अत: उनके दिव्य चरित्र का प्रचार विस्तार हो, तभी उनके जन्म के उद्देश्य, लोक मंगल की पूर्ति होती है । लोक मंगल ही उनके जन्म का उद्देश्य है । यह तथ्य गुरु वशिष्ठजी चित्रकूट में सभी के बीच इन शब्दों को प्रकट करते हैं ।

सत्य सिंधु पालक श्रुति सेतू ।
राम जन्म जग मंगल हेतू ॥

"वे सत्य प्रतिज्ञ और वेद की मर्यादा का पालन करने वाले हैं । श्रीरामजी का अवतार संसार के कल्याण के लिये हुआ है ।"

राम कैसे जग मंगल करते हैं ? जिस काल में अवतरित होते हैं, उसमें तो ये स्थूल रूप से कुछ कर भी सकते हैं ? किन्तु उसके बाद क्या उनकी लोक मंगल की क्षमता समाप्त हो जाती है ? ऐसा सोचना भ्रामक है । वस्तुत: भगवान अपने अवतार काल में जिन गुणों को चरितार्थ करके दिखा देते हैं, उनसे प्रेरणा प्राप्त करके उन्हें अपनाने से लोक मंगल का क्रम चलता रहता है । लौकिक से लेकर पारलौकिक सफलतायें उन गुणों के वरदान स्वरूप पाई जा सकती है यह भाव रामकथा की उपयोगिता का वर्णन करते हुए मानस के प्रारम्भ में ही तुलसीदास जी ने व्यक्त किये हैं ।

जग मंगल गुन ग्राम राम के ।
दानि सुकृति धन-धर्म धाम के ॥

"राम के गुण समूह लोक मंगल करने वाले, तथा धन धर्म, आश्रय और मुक्ति देने वाले हैं ।"

वस्तुत: यह गुण और विशेषतायें भगवान अपने साथ कहीं से लेकर नहीं आते । वे सब स्वत: हैं । किन्तु मनुष्य उनका स्वरूप और उपयोग का ढंग भूल जाते हैं ।

अपने अवतार में भगवान् उन्हीं गुणों और सद्वृत्तियों को पुनः प्रकाश में ले आते हैं । इस प्रकार वे लुप्त प्राय: कल्याणकारी माध्यम पुन: जन सुलभ हो जाते हैं ।

श्रीराम अपने आचरण से सिद्ध कर देते हैं कि व्यक्ति की सुख शान्ति में परिस्थितियाँ बाधक नहीं बन सकतीं । यह सिद्धान्त लोग भूल जाते हैं और जड़ परिस्थितियों के उतार चढ़ाव में पत्ते की तरह डोलने लगते हैं । भरत ने भी राम के आचरण को अपनी भावनाओं से जन सामान्य के सामने निखार कर रख दिया ।

प्रभु स्वयं सर्व हितैषी हैं तो उनके भक्त भी वैसे ही होंगे तथा उनकी कथा का उद्देश्य भी निश्चित रूप से सबका हित ही होना चाहिये । तुलसीदासजी की भी यही मान्यता थी । कविता ही नहीं मनुष्य को प्राप्त यश और अन्य विभूतियों की भी उपयोगिता लोकहित में लग जाने में ही है । मानस के बन्दना प्रसंग में ही उन्होंने स्पष्ट लिखा है -

कीरति भनिति भूति भलि सोई ।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥

"कीर्ति (कविता या साहित्य) और विभूति (ऐश्वर्य) वही अच्छी है जो गंगा के समान सबका हित करने वाली हो ।"

काव्य रचना का यह मापदण्ड सामने रखकर उन्होंने रामचरित मानस की रचना उद्देश्यपूर्ण ढंग से योजनाबद्ध रूप में की है । मात्र अपने मन की तरंग में यह सब नहीं लिख डाला है । रामचरित मानस विशेष रूप में विशेष ढंग से तथा विशेष उद्देश्य के लिए रचा गया है । तुलसीदास जी ने देखा कि लोग संसार में भ्रमित होकर ही अनेक प्रकार के दु:ख उठाते हैं, पतन से नर्क में गिर जाते हैं । भगवान श्रीराम के प्रेरक चरित्र से उनके जीवन में चरितार्थ होने वाले उदाहरणों को देख कर लोगों का भ्रम दूर हो सकता है तथा वे अपने कल्याण का मार्ग पकड़ सकते हैं । इसलिए उन्होंने रामकथा का सहारा लिया । किन्तु लोगों को सही दिशा मिल सकें, इसलिए अपनी विवेक दृष्टि उन्हें ठीक करना आवश्यक लगी । इसके लिए उन्होंने गुरु का सहारा लिया । गुरु के प्रसाद से अपनी विवेक दृष्टि परिष्कृत करके उन्होंने संसार के कष्ट से मुक्ति दिलाने वाली राम कथा लिखी । बन्दना प्रसंग में ही उन्होंने लिखा है–

तेहि कर विमल विवेक विलोचन ।
बरनउँ राम-चरित भव मोचन ॥

"गुरु-पद-रज से विवेक नेत्र निर्मल बनाकर मैं अज्ञान को दूर करने वाले व संसार रूपी बन्ध से छुड़ाने वाले श्रीराम के चरित्र का वर्णन कर रहा हूँ ।"

श्रीराम के उज्ज्वल चरित्र में वह क्षमता उन्होंने देखी कि वह भवरोग से जन-जन को मुक्त करा सकता है । सद्गुरु की तरह भटकते हुओं को मार्गदर्शन देकर उन्हें लक्ष्य की ओर गतिशील बना सकता है । इसलिए उन्होंने इसको माध्यम बनाया । वे चाहते हैं कि श्रीराम चरित्र गंगा जल की तरह प्रवाहित हो । उनका विश्वास है कि इस जल का ठीक प्रकार उपयोग किया जाय तो वह मनुष्य को ताप पहुँचाने वाले तापों-दोषों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को दूर कर सकता है और सुख शान्ति देने वाले निर्मल विवेक और बैराग को बढ़ा सकता है ।

रामचरित्र मानस के सुधी अध्येताओं की दृष्टि में रामकथा का विकास और विस्तार लोग कल्याण की पुण्य भावना से ही किया गया है इस प्रयास में तुलसीदासजी को अनेक परम्परागत रुढ़ि मान्यताओं का खण्डन करना पड़ा और उस कारण उपहास और विरोध का भी सामना करना पड़ा । परन्तु वे अविचलित रहे । रामकथा के लोकमंगलकारी उद्देश्य को न समझने वाले उनकी दृष्टि में मूर्ख या दुष्ट हैं । उनके उपहार से वे निरुत्साहित नहीं और उत्साहित ही हुए । उनकी भावना की झलक नीचे की चौपाई में मिलती है—

खल परिहास होइ हित मोरा ।
काक कहहिं कल कंठ कठोरा ॥

''यदि दुष्ट मेरे लोग मंगल के कार्य की निन्दा करते हैं, तो इससे मेरी भलाई ही होगी । क्योंकि कौआ मधुर कंठ वाली कोयल को कठोर बोलने वाली कहता ही है ।''

इसीलिए उन्होंने कथा के माध्यम से संसार के हित के अपने प्रयास में कमी नहीं की । कथाओं का प्रयोग बहुधा इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर होता ही रहा है । जीवन कला के विशेषज्ञ ऋषि महर्षि उपयुक्त अवसरों पर सामूहिक रूप से योजनाबद्ध ढंग से यह कार्य किया करते थे ।

स्पष्ट है कि वह चर्चा मात्र मनोरंजन या पुण्यार्जन की दृष्टि से नहीं होती थी । बल्कि जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों का उसमें व्यावहारिक समावेश होता था । जीवन के सिद्धान्तों को घटना क्रम में बांध कर कथा रूप में प्रस्तुत करने से उसे सामान्य बुद्धि के व्यक्ति भी भली प्रकार समझ लेते हैं । इसलिए कथा का माध्यम विशेष रूप से पकड़ा जाता था । किसी भी घटना या पात्र को आधार बनाकर संसार के हित को दृष्टि से कथा कही जाती थी । कथा की इस विधि का स्पष्ट उल्लेख वन प्रसंग में सती अनुसुइया और सीता के सम्वाद में मिलता है । अनुसुइया जी कहती है —

सुनु सीता तव नाम सुमिरि, नारि पतिव्रत करहिं ।
तोहि प्रान प्रिय राम, कहिउँ कथा संसार हित ॥

''सुनो सीता तुम्हारा आचरण तो ऐसा है कि उसका स्मरण करके संसार की महिलायें अपने कर्तव्य को समझेंगी । श्रीराम तुम्हें प्राण के समान प्रिय हैं । किन्तु मैंने संसार के हित के लिए यह कथा कही है ।''

रामचरित मानस के एक एक प्रसंग में जन मंगल की - लोकशिक्षण की प्रेरणायें भरी पड़ी हैं । अमृतोदधि के पास बैठकर उसके गुणगान करना, उसकी विशेषताओं की चर्चा करना रत्ती भर भी लाभ नहीं पहुँचा सकता । जबकि उसकी एक बूँद को भी उदरस्थ करने का प्रयास व्यक्ति का कल्याण करने में समर्थ है । रामकथा भी श्रवण नहीं जीवन में आत्मसात करना ही उसे लाभदायक बना सकता है ।

ooo

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँच स्थापनाएँ

युगदृष्टा के स्तर की अवतारी सत्ता के रूप में परमपूज्य गुरुदेव ने अपने अस्सी वर्ष के जीवनकाल में जितना भी कुछ किया, उसकी मिसाल कहीं देखने को नहीं मिलती। करोड़ों व्यक्तियों के मनों का निर्माण, उनके सोचने के तरीके में बदलाव एवं युग निर्माण की पृष्ठभूमि बनाकर रख देने का कार्य इन्हीं के स्तर की सत्ता कर सकती थी, जो लाखों वर्षों में कभी-कभी धरती पर आती है। उनके द्वारा की गयी स्थापनाओं का जब प्रसंग आता है तब ईंट-गारे-चूने-सीमेंट से बने भवनों से पहले उनकी स्नेह-संवेदना से सिक्त हुए, ममत्व में स्नानकर उनके अपने हो गये लाखों व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं, जिनने उनके एक इशारे पर अपना सब कुछ उनको अर्पित कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में कभी ऐसा ही वातावरण भारत के कोने-कोने में दिखाई देता था, जब हर घर से सत्याग्रही निकलकर आ रहे थे। भावनाओं का आवेग चिरस्थायी नहीं रहता। वे ही लोग जो कभी राष्ट्र निर्माण के लिए अपना सब कुछ छोड़, पढ़ना-लिखना छोड़ देश को आजाद बनाने के लिए कूद पड़े थे, कभी गड़बड़ाने न पाएँ, उसी के लिए बापू ने आजादी के बाद काँग्रेस भंग कर देने व सभी को एक आदर्श स्वयं-सेवक की तरह दरिद्र नारायण का उत्थान कर राष्ट्र निर्माण में लग जाने की सलाह दी थी।

सभी इस तथ्य को जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ, राष्ट्र का कीर्ति-स्तम्भ रूपी वह महापुरुष भी एक वर्ष के अंदर ही शहादत को प्राप्त हो चला गया। गिने-चुने उनके आदर्शों पर चलने वाले रह गये, अवसरवादियों को राजनेतृत्व भाने लगा एवं राष्ट्र आजाद होकर भी उनके हाथ में आ गया जो ब्रिटिश तो नहीं थे किन्तु, उसी रंग में रँगे सत्ता के उन्माद में काम करने वाले शासक थे- सृजेता नहीं। जिंदा रहा तो मात्र बापू का दर्शन बुनियादी आधार पर टिका- मानव को बनाने का तंत्र-आश्रम तंत्र जो सेवाग्राम-साबरमती आश्रम के रूप में कार्य करता रहा और वह भी शीर्ष-पुरुष के न रहने, बिनोवाजी के चले जाने के बाद अस्तित्व व महत्व की दृष्टि से गौण हो गया। परमपूज्य गुरुदेव ने अपनी दिव्य-दृष्टि से यह सब पूर्व में ही देख लिया था कि कोई भी भव्य निर्माण, आश्रम या तंत्र बनाने से पूर्व राष्ट्र को सांस्कृतिक, भौतिक, आध्यात्मिक आजादी दिलाने वाले अगणित व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे। १९११ में आज से ८४ वर्ष पूर्व वि.संवत् २०८६ में जन्मे, राष्ट्र की आजादी में उन्मत्त बने श्रीराममत्त कहलाने वाले, आचार्यश्री ने पहले स्वयं को तपाया, वैचारिक क्रान्ति के निर्माण का आधारभूत तंत्र स्वयं व परमवंदनीया माताजी के रूप में खड़ा किया, 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका अपनी लेखनी से लिखी, ममत्व भरी चिट्ठियों व छोटी-छोटी एक आने की किताबों से जन-जन के मन को छुआ, तब जाकर अपने एक लक्ष के २४ गायत्री महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर उन्होंने गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्थापना की बात १९५२-५३ में सोची। सबसे पहली मंत्र दीक्षा वहीं पर १९५३ में दी व यह मानते हुए कि बिना आध्यात्मिक आधार बनाये, मनोभूमि में, भावनाओं के स्तर पर बदलाव लाये कोई क्रान्ति सफल नहीं हो सकती, धीमी खुराक देते हुए हर व्यक्ति को गायत्री व यज्ञ के तत्त्वदर्शन से जोड़ते हुए चले गये। गायत्री परिवार रूपी विराट वृक्ष का मूल आधार वह स्थापना है जो जन-जन के मनों में पहले हुई- उनकी भाव संवेदनाओं के उदात्तीकरण के रूप में सम्पन्न हुई व उनके अंदर अपनी गुरुसत्ता को त्याग करने की, यज्ञीय जीवन अपनाने की प्रेरणा बलवती होने लगी। उन्होंने सर्वमेध के रूप में अपना सर्वस्व बलिदान एवं नरमेध के रूप में अपने आप को समाज के हित न्यौछावर करने की भावना से दो यज्ञ किये। अपनी जमींदारी के बाण्ड बेचकर एवं परमवंदनीया माताजी के कीमती सोने के जेवर (ढाई सौ तोले) बेचकर जो स्वेच्छा से सम्पन्न हुआ, एक स्थापना भवन के रूप में जो हुई- वह थी **गायत्री तपोभूमि, मथुरा** जो वृन्दावन रोड पर ऋषि दुर्वासा की जन्मस्थली पर बनी आज से ४२ वर्ष पूर्व १९५३ में। प्रारंभिक स्थापना यों अखण्ड ज्योति संस्थान को माना जा सकता है जहाँ अखण्ड दीपक अपनी जन्मभूमि आँवलखेड़ा से जो वहाँ से मात्र ४० मील दूर थी, स्थापित किया गया था एवं प्रारंभिक तप-तितिक्षा वहीं पर १९४१ से, तपोभूमि की स्थापना से भी १२ वर्ष पूर्व आरम्भ हो गयी थी। इस प्रकार जन-जन के मनों का निर्माण उनके अंत:स्थल में प्रवेश कर उनके अंदर देवत्व के जागरण की ललक पैदा करने वाली पृष्ठभूमि पर स्थापनाओं का क्रम बना। किराये की ऐसी हवेली जिसे भुतहा हवेली कहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जाता था, में अखण्ड दीपक की स्थापना, उसके समक्ष तप, **अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा** के रूप में विकसित हुआ एवं एक और दूसरा निर्माण मथुरा में ही गायत्री तपोभूमि के रूप में हुआ जो कि ३ मील दूर वृन्दावन रोड पर १९५३ में बनाई गई। १९५३ में क्रमशः सुसंगठित गायत्री परिवार के बनने की प्रक्रिया चल पड़ी।

इस प्रारंभिक भूमिका को समझने के बाद ही परमपूज्य गुरुदेव की पाँच मूल स्थापनाओं एवं बाद में देश के कोने-कोने में बनी भव्य इमारतों के रूप में शक्तिपीठों, प्रज्ञा संस्थानों, भारत व विश्वभर में घर-घर में स्थापित स्वाध्याय मण्डलों व गायत्री परिवार की शाखाओं, प्रज्ञापीठों, चरणपीठों का महत्त्व समझा जा सकता है। नहीं तो जैसे अन्यान्य आश्रम-संस्थान बनते हैं, ऐसे इनका भी वर्णन किया जा सकता था व यह कहा जा सकता था कि यह वैभवपूर्ण स्थापनाएँ पूज्यवर ने कीं। उनमें यदि प्राण फूँके गये हों, प्राणवान व्यक्ति वहाँ रहते हों व उस शक्ति के महा-अवसान के बाद भी वे सतत् उसी दिशा में चल रहे हों तो माना जाना चाहिए कि प्रारंभिक पुरुषार्थ जो किया गया, वह औचित्यपूर्ण था।

परमपूज्य गुरुदेव की महत्त्वपूर्ण पाँच स्थापनाएँ इस प्रकार हैं–

(१) युगतीर्थ आँवलखेड़ा (२) अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा (३) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (४) शान्तिकुंज, गायत्री तीर्थ, सप्तसरोवर, हरिद्वार तथा (५) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, सप्तसरोवर, हरिद्वार ।

युगतीर्थ आँवलखेड़ा का नाम सबसे पहले इसलिए लिखा कि यहीं पर वह युगपुरुष संवत् १९६८ की आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन, ब्राह्ममुहूर्त में, जो अँग्रेजी तारीख से २० सितम्बर, १९११ के दिन आती थी, में जन्मा। एक श्रीमंत ब्राह्मण परिवार में, जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा परिवार संस्कारों से अनुप्राणित, पिता भागवत के प्रकाण्ड पंडित, बहुत बड़ी जागीर के मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्व रूपी शिलालेखों की स्थापना हुई है- वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो काल प्रवाह के क्रम में गिर सी गयी थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गयी हैं- जैसी उनके समय में थीं। जन्मभूमि का कण-कण उस दैवीसत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुँआ जिसे पूरे गाँव का एकमात्र मीठे जल वाला कुँआ माना गया- वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़ एवं वह बैठक जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है जहाँ दीपक के प्रकाश में से सूक्ष्म शरीरधारी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशाधारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। यह सब देखकर मस्तिष्क-पटल पर वह दृश्य उभर आता था, जिसे गुरुसत्ता ने कभी देखा था व जो गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इण्टर कालेज है जो उनके द्वारा दान दी गयी जमीन में प्रदत्त धनराशि द्वारा विनिर्मित है। १९६३ से चल रहे इस इंटर कालेज से कई मेधावी छात्र निकल कर आत्म-निर्भर बने हैं व उच्च पदों पर पहुँचे हैं।

१९७९-८० में गायत्री शक्तिपीठ एवं कन्या इंटर कॉलेज की स्थापना का ताना-बाना बुना जाने लगा जो एक विशाल शक्तिपीठ तथा आसपास के दो सौ ग्रामों की बालिकाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था करने वाले, उन्हें सुशिक्षित, संस्कारवान, आत्मावलम्बी बनाने वाले कन्या महाविद्यालय का अब रूप ले चुका है। प्रथम पूर्णाहुति हेतु इसी भूमि को जो शक्तिपीठ-जन्मभूमि-ग्रामीण क्षेत्र के चारों ओर है, इसीलिए चुना गया कि यहाँ से उद्भूत प्राण ऊर्जा से यहाँ आने वाला हर संकल्पित साधक अनुप्राणित होकर जाए व राष्ट्र के नव-निर्माण की सांस्कृतिक व भावनात्मक क्रान्ति की पृष्ठभूमि रख सके। यहाँ पूज्यवर १९३६-३७ तक ही रहे, कुछ दिन आगरा रहकर १९४०-४१ में मथुरा चले गये, जहाँ दो-तीन मकान बदलने के बाद वर्तमान मकान किराये पर लिया जिसे आज अखण्ड-ज्योति संस्थान कहते हैं।

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा में स्थित है। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ यहीं रहने लगे एवं यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन-जन तक अपने क्रान्तिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरम्भ कर दी गयी थी, की 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ व अन्यान्य लेखों की पंक्तियों के माध्यम से सम्पन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतःस्थल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यहीं पर अगणित दुःखी, तनावग्रसित

व्यक्तियों ने आकर उनके स्पर्श से नये प्राण पाये तथा उनके व परमवंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गये। हाथ से बने कागज पर छोटी ट्रेडिल मशीनों द्वारा यहीं पर अखण्ड ज्योति पत्रिका छापी जाती थी व छोटी-छोटी किताबों द्वारा लागत मूल्य पर उसे निकालने योग्य खर्च निकलता था। बगल की एक छोटी-सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, आज पूजाघर विनिर्मित है। पूरी बिल्डिंग को खरीद कर उनके सुपुत्र ने एक नया आकार व मजबूत आधार दे दिया है किन्तु यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गयी है जैसी पूज्यवर के समय में १९४२-४३ में रही होगी। तब से लेकर आगामी ३० वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का इसी घीयामण्डी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी, १९५८ में सहस्र कुण्डी यज्ञ की आधारशिला यहीं रखी गयी, यहीं सारी योजना बनी एवं विधिवत-गायत्री परिवार बनता चला गया। रोज आने वाले पत्रों को स्वयं परमवंदनीया माताजी पढ़ती जातीं एवं पूज्यवर इतनी ही देर में जवाब लिखते जाते, यही सूत्र संबंधों के सुदृढ़ बनने का आधार बना। हर परिजन को तीन दिन में जवाब मिल जाता, शंका-समाधान होता चला जाता एवं देखते-देखते एक विराट गायत्री परिवार बनता चला गया। गायत्री महाविज्ञान के तीनों खण्ड, युग निर्माण परक साहित्य, आर्ष-ग्रन्थों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं सम्पन्न हुआ। जनसम्मेलनों, छोटे-बड़े यज्ञों एवं १००८ कुण्डी पाँच विराट् यज्ञों में पूज्यवर यहीं से गये एवं विदाई सम्मेलन की रूपरेखा बनाकर स्थायी रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर चले गये। इस संस्थान के कण-कण में जहाँ आज १० लाख से अधिक संख्या में हिन्दी सहित सभी भाषाओं में अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन, विस्तार, डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र स्थापित है, परमपूज्य गुरुदेव की चेतना संव्याप्त अनुभव की जा सकती है। भले ही बहिरंग का कलेवर बदल गया हो, अंदर प्रवेश करते ही परमपूज्य गुरुदेव व परमवंदनीया माताजी की सतत विद्यमान प्राणचेतना के स्पन्दन वहाँ विद्यमान हैं, यह प्रत्यक्षतः देखा जा सकता है।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा को परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गयी स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया, एक छोटी किन्तु भव्य यज्ञशाला में अखण्ड अग्नि स्थापित की गयी तथा एक गायत्री महाशक्ति का मन्दिर विनिर्मित किया गया। चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया था, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है। पू. गुरुदेव की साधनास्थली व प्रातःकाल की लेखनी की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी तो उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्म-भूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहीं पर १०८ कुण्डी गायत्री महायज्ञ में १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्रकुण्डी यज्ञायोजन सम्पन्न हुए। श्रेष्ठ नररत्नों का चयन कर गायत्री परिवार को विनिर्मित करने का कार्य यहीं व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा सम्पन्न हुआ। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्यश्री ने युग निर्माण योजना के शत-सूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युग निर्माण विद्यालय के एक स्वावलम्बन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरम्भ होने की घोषणा की। यह विधिवत् १९६४ से आरम्भ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है। जिस कक्ष में परमपूज्य गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अभी भी यहाँ देखा जा सकता है। भव्य निर्माण परमपूज्य गुरुदेव की १९७१ की विदाई के बाद यहाँ हो गया है किन्तु, कण-कण में उनकी प्राणचेतना का दर्शन किया जा सकता है। विराट प्रज्ञानगर, युग निर्माण विद्यालय, साहित्य की छपाई हेतु बड़ी-बड़ी ऑफसेट मशीनें तथा युग निर्माण साहित्य जो पूज्यवर ने जीवन भर लिखा, उसका वितरण-विस्तार तंत्र यहाँ पर देखा जा सकता है।

शान्तिकुंज, हरिद्वार ऋषि परम्परा के बीजारोपण केन्द्र के रूप में १९७१ में स्थापित किया गया था, जब परमपूज्य गुरुदेव मथुरा स्थायी रूप से छोड़कर परमवंदनीया माताजी को अखण्ड ज्योति दीपक की रखवाली हेतु यहाँ छोड़कर हिमालय में चले गये। गुरुसत्ता के निर्देश पर वे पुनः एक वर्ष बाद लौटे व तब शांतिकुंज को उनने एक बड़ा विराट रूप देने, सभी ऋषिगणों की मूलभूत स्थापनाओं को यहाँ साकार बनाने का निश्चय किया। इससे पूर्व परमवंदनीया माताजी ने २४ कुमारी कन्याओं के साथ अखण्ड दीपक के समक्ष २४० करोड़

गायत्री मंत्र का अखण्ड अनुष्ठान आरंभ कर दिया था। पूज्यवर ने प्राण प्रत्यावर्तन सत्र, जीवन साधना सत्र, वानप्रस्थ सत्र आदि के माध्यम से विभिन्न क्षेत्र में सक्रिय कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता यहीं गढ़े। यह सत्र शृंखला कल्प साधना, संजीवनी साधना सत्रों के रूप में तब से ही ९ दिवसीय सत्रों व एक माह के युग शिल्पी प्रशिक्षण सत्रों के रूप में चल रही है, अभी भी अनवरत उसमें आने वालों का ताँता लगा रहता है। पहले से ही सब अपनी बुकिंग इसमें करा लेते हैं।

शांतिकुंज को गायत्री तीर्थ का रूप देकर सप्तऋषियों की मूर्तियों की स्थापना १९७८-७९ में की गयी, एक देवात्मा हिमालय विनिर्मित किया गया एवं यहाँ सभी संस्कारों को सम्पन्न करते रहने का क्रम बन गया जो सतत् चल रहा है। नित्य यहाँ दीक्षा, पुंसवन, नामकरण, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह, श्राद्ध-तर्पण आदि संस्कार सम्पन्न होते हैं। इस बीच परमवंदनीया माताजी ने जागरण सत्र शृंखलाएँ सम्पन्न करना आरम्भ रखा। देव कन्याओं को प्रशिक्षित कर पूरे भारत में जीप टोलियों में भेजा गया। इनके माध्यम से तीन वर्ष तक भारत के कोने-कोने में तुमुलनाद होता रहा।

शांतिकुंज का गायत्री नगर जो आज एक विराट स्थापना के रूप में, एक एकेडमी के रूप में नजर आता है व जिसमें एक बार में एक साथ दस हजार व्यक्ति एक साथ ठहर सकते हैं, १९८१-८२ में बनना आरम्भ हुआ । विलक्षण, दुर्लभ जड़ी-बूटियों के पौधे यहाँ लगाये गये तथा प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा रूपी तीर्थस्थली का पूज्यवर ने अपने सामने निर्माण कराया। यहीं उनके निर्देशानुसार उनके शरीर छोड़ने पर दोनों सत्ताओं को अग्नि समर्पित की जानी थी। स्वावलम्बन विद्यालय से लेकर एक विशाल चौके का निर्माण एवं गायत्री विद्यापीठ से लेकर भारत के सभी सरकारी विभागों के प्रशिक्षण के तंत्र की स्थापना यहाँ पर की गयी है एवं यह एक जीता-जागता तीर्थ अब बन गया है, जहाँ पर उज्ज्वल भविष्य की पूर्व झलक देखी जा सकती है। कम्प्यूटरों से सज्जित विशाल कार्यालय से लेकर पत्राचार विद्यालय जहाँ नित्य हजारों पत्रों के द्वारा पूरे तंत्र का मार्गदर्शन किया जाता है, यहाँ की विशेषता है।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँचवीं स्थापना है, जहाँ पर विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का अभिनव शोध कार्य चल रहा है। इसे १९७१ की गायत्री जयंती पर आरम्भ किया गया था। वर्तमान शांतिकुंज- गायत्री तीर्थ से आधा किलोमीटर दूरी पर गंगातट पर स्थित यह संस्थान अपनी आकर्षक बनावट के कारण सहज ही सबके मनों को मोहकर आमंत्रित करता रहता है। इसमें तीन मंजिलों में प्रथम तल पर एक विज्ञान के उपकरणों से सुसज्जित यज्ञशाला विनिर्मित है तथा चौबीस कक्षों में गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्तियाँ बीजमंत्रों व उनकी फलश्रुतियों सहित स्थापित हैं। द्वितीय तल पर एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ ऐसे उपकरण स्थापित हैं जो यह जाँच-पड़ताल करते हैं कि साधना से पूर्व व पश्चात्, यज्ञादि मंत्रोच्चारण के पूर्व व पश्चात् क्या-क्या परिवर्तन शरीर-मन की गतिविधियों व रक्त आदि संघटकों में देखने में आये। इनके आधार पर साधकों को साधना संबंधी परामर्श दिया जाता है। यहाँ पर वनौषधियों का विश्लेषण भी किया जाता है तथा यज्ञ ऊर्जा-मंत्र शक्ति का क्या प्रभाव साधक की मस्तिष्कीय तरंगों, जैव विद्युत आदि पर पड़ा, यह देखा जाता है। विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी यहाँ किये जाते हैं। तृतीय तल पर एक विशाल ग्रंथागार स्थापित है, जहाँ विश्वभर के शोध प्रबंध वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर एकत्रित किये गये हैं। यहाँ प्राय: ४५००० से अधिक ग्रंथ हैं, जिनमें कई पुरातन पाण्डुलिपियाँ हैं। यह अपने आप में एक अनूठा संकलन है जो और कहीं एक साथ देखने में नहीं मिलता।

परमपूज्य गुरुदेव की उपरोक्त पाँच स्थापनाएँ किसी को भी यह परिचय दे सकती हैं कि किस विलक्षण दृष्टास्तर की वह महासत्ता थी जो हम सबके बीच अपना लीली संदोह रचकर चली गयी। प्रत्यक्ष तो यह केन्द्रीय पाँच स्थापनाएँ नजर आती हैं किन्तु ४८०० से अधिक अपने भवनों वाले प्रज्ञा संस्थान ४०००० से अधिक प्रज्ञामण्डल व स्वाध्याय मण्डल तथा अगणित गायत्री परिवार की शाखाएँ यदि इनमें मिलाई जाएँ तो इनका मूल्य राशि में आँका नहीं जा सकता। यही वह सब है जो उस महापुरुष को एक अवतारी स्तर की सत्ता के रूप में प्रतिष्ठापित करता है व जिसके कर्तृत्व पर श्रद्धावनत होने का मन करता है। ❑❑❑

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२
(सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६.ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे—

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवन: एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org